THE
WORLD
OF
TANTRA
B. BHATTACHARYA

# तंत्र की दुनिया

यह एक समर्पित व्यक्ति के निजी अनुभवों की सच्ची प्रस्तुति है, जो अपने पूरे 76 वर्षों के जीवन में उन रहस्यमय घटनाओं के पीछे की तार्किक व्याख्या की खोज में रहे हैं, जिनके आगे तर्क भी स्तब्ध रह जाता है। ये व्यक्तिगत अनुभव—गुप्त, चौंकाने वाले, रहस्यमय—फिर भी पाठकों को एक अविश्वसनीय नहीं, बल्कि एक भरोसेमंद अहसास कराते हैं। यहाँ मनुष्य उस रहस्य के आमने-सामने खड़ा है जो मन को भौतिक जगत से ऊपर ले जाता है, और विस्मय की सांसें रुक जाती हैं, भले ही हैमलेट के से आश्वासन समय पर आकर यह संकेत दे देते हैं कि 'स्वर्ग और पृथ्वी के बीच कहीं अधिक रहस्य छिपे हैं।'

अध्याय दर अध्याय, लेखक तंत्र की दुनिया के रहस्यों की परतें खोलते जाते हैं—जैसे उन्होंने स्वयं उन्हें अनुभव किया। कभी यह उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए होता है, तो कभी यह किसी आशीर्वाद की किरण के रूप में उन्हें मिला होता है।

इन पृष्ठों में निहित व्यक्तिगत अनुभूतियाँ और तांत्रिक साधनाओं की शिक्षाएँ—कुछ मधुर और आश्चर्यजनक, तो कुछ भयावह और रोंगटे खड़े कर देने वाली—इस पुस्तक को तंत्र के इस अक्सर गलत समझे जाने वाले, परंतु उतने ही गूढ़ और अंतरंग संसार की एक प्रमाणिक रिपोर्ट बना देती हैं। जो लोग तंत्र के वास्तविक स्वरूप और उसकी संभावनाओं को समझना और जानना चाहते हैं, उनके लिए *The World of Tantra* एक अनमोल खजाना है, जो उन्हें इस गूढ़ विद्या से सीधे परिचित कराता है।

बी. भट्टाचार्य का जन्म 1910 में वाराणसी में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पारंपरिक संस्कृत 'टोले' में प्राप्त की और बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. किया। उन्होंने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय शिक्षाविद् के रूप में गुयाना और त्रिनिदाद (वेस्ट इंडीज़) में बिताया।

उनकी अन्य कृतियाँ—*शैवमत और लिंगोपासना* (दो खंड, 1993) और *वाराणसी पुनः खोज* (1999)—जो हमारी ही प्रकाशन श्रृंखला से प्रकाशित हुई हैं, व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत ग्रंथ तंत्र की रहस्यमयी दुनिया में उनकी गहरी अंतर्दृष्टि को दर्शाता है।

# The World of Tantra

B. Bhattacharya

# तंत्र की दुनिया

अनुवादक –रमेश चौहान

# Contents

# भूमिका (Foreword)

बी. भट्टाचार्य एक प्रतिष्ठित और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध विद्वान हैं, जो शैव दर्शन और इससे संबंधित अन्य विषयों के गहन अध्येता हैं। वह एक विश्वयात्री हैं और साधारण ज्ञान की सीमाओं से परे, उन रहस्यमय अनुभवों के खोजी हैं, जो प्रकाश और अंधकार की सीमारेखा पर स्थित हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि *द वर्ल्ड ऑफ़ तंत्र* उस संध्या-भाषा (twilight-language) की खोज करता है, जिसे भारत और विदेशों में कई अपूर्ण ज्ञान रखने वाले लोगों द्वारा गलत तरीके से प्रस्तुत और व्याख्यायित किया गया है।

तंत्र के विषय में दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों और आम लोगों द्वारा कई प्रश्न पूछे गए, जो अब तक मिस्र के स्फिंक्स की रहस्यमयी मुस्कान या सिंधु घाटी की मुहरों पर लिखे गूढ़ चित्रलिपि की तरह अनसुलझे बने हुए थे।

इन प्रश्नों को केवल उठाया और संबोधित ही नहीं किया गया है, बल्कि इस अत्यंत पठनीय व्यक्तिगत यात्रा-वृत्तांत में सहानुभूति के साथ उनके उत्तर भी दिए गए हैं, जहाँ गुप्त पथ की खोज को अत्यंत प्रामाणिक रूप से समझाया गया है।

जब समय ठहर जाता है और जीवन अतीत और भविष्य तक विस्तार पाता है, तब लेखक-दार्शनिक, ध्यानमग्न साधक और देवताओं के प्रियजन आत्मा की प्रसन्नता के लिए एक दीप प्रज्वलित करने हेतु स्वयं के लिए एक विशेष स्थान तैयार करते हैं।

रहस्यवाद को पारंपरिक रूप से द्विमुखी कहा गया है। एक मुख अज्ञात और गूढ़ अंधकार की ओर देखता है, जबकि दूसरा सत्य के प्रकाशमान चेहरे की ओर।

जैसा कि लेखक सही कहते हैं: *"सत्य भय उत्पन्न करता है। स्वयं अर्जुन भी भयभीत हो गए थे।"*

*मित्रता, निकटता, प्रेम, त्याग, और शरीर से शरीर के संपर्क के माध्यम से प्रकृति की खोज—ये वे महत्वपूर्ण विषय हैं जो शाश्वत आनंद की अनुभूति कराते हैं, जो न तो कभी पुराना पड़ता है और न ही क्षणिक भौतिक वासना की तरह समाप्त होता है। ये वे अवधारणाएँ हैं, जो हमारी सोच को घंटों की बजाय क्षणों में समेट देती हैं।*

*इस पुस्तक का एक और अनमोल उद्धरण है: "मित्रता एक रत्न है; और रत्न की तरह, इसे दिखावे में लाना अशोभनीय होता है।"*

*तंत्र में मणि और पद्म जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिनका कठोर और कोमल दोनों ही अर्थ होते हैं। ये शब्द ठोस और विस्तारशील अर्थों को दर्शाते हैं, जो समय और स्थान की सीमाओं से परे हैं।*

*भौतिक और आध्यात्मिक दो अलग-अलग धाराएँ नहीं रहतीं। पवित्रता और इंद्रिय-सुख एक ही अस्तित्व में विलीन हो जाते हैं। यह तर्क से परे है, इसलिए इसमें कोई भ्रम नहीं होता। यह एक सीधा संवाद और आत्मसंशोधन की प्रक्रिया है।*

*शेली की लव्स फिलॉसफी (प्रेम का दर्शन) जलालुद्दीन रूमी की लहर और सागर के मिलन के साथ नृत्य करती प्रतीत होती है।*

*टैगोर ने रूप और सुगंध के बारे में गाया:*

*"रूप चाहता है सुगंध में मिलना,*

*और सुगंध रूप में समाहित रहना चाहती है।"*

*पृथ्वी को गंधवती कहा गया है, जो सुगंध से भरपूर है, जबकि श्वास और अंतरिक्ष रंगहीन हैं। पाँच इंद्रियों और पंचतत्त्वों का उत्सव मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है।*

*इंद्रिय-सुख की सीमाएँ पार हो जाती हैं। जो यात्री इस कठिन मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, वे सूरज की रोशनी से चमकते क्षितिज की चाँदी जैसी चोटियों के आकर्षण से प्रेरित होते हैं और चुनौतियों, सीमाओं और गलत समझे जाने के जोखिम के बावजूद निरंतर आगे बढ़ते रहते हैं।*

*तंत्र में भैरवी को एक विशेष स्थान दिया गया है। धन्वंतरि-तंत्र-शिक्षा में उन्हें इस प्रकार वर्णित किया गया है:*

*"उद्यद्भानु-सहस्र-कांतिमरुणं क्षौमं-शिरोमालिकाम्"*

*"वह हजारों उगते सूर्यों के समान लाल रंग की हैं, उनके वस्त्र लाल हैं, उनके गले में खोपड़ियों की माला है (बंगाल की काली के पास 52 खोपड़ियाँ होती हैं, जो संस्कृत वर्णमाला के 52 अक्षरों का प्रतीक हैं—यह दर्शाता है कि सभी लिखित ज्ञान प्रतीकात्मक रूप से मृत होते हैं), उनके स्तन रक्त से सने हुए हैं, और उनके हाथ में एक माला और एक पुस्तक है।"*

*लेखक को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उन्होंने अपने युवावस्था में वाराणसी में भगवा वस्त्रधारी स्त्री से दीक्षा प्राप्त की।*

*इस आत्मकथात्मक-दार्शनिक ग्रंथ में नारद, डच लड़की और अन्य स्त्री-रूपों जैसे सभी पात्र, मानवीय आकर्षण और रहस्यमय सौंदर्य की अनंत संभावनाओं का प्रतीक हैं, जिसका वर्णन ग्योथे ने अपनी कृति फाउस्ट (भाग II) की अंतिम पंक्तियों में किया है:*

*"Das Ewig Weibliche Zieht uns hinan" (शाश्वत स्त्री हमें ऊपर की ओर खींचती है)।*

*यदि तंत्र के दर्शन को सही ढंग से समझा और अपनाया जाए, तो यह पश्चिमी आत्म-संवेदन, मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतों और शेल्ड्रेक के 'मेमोरी-पूल' की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है।*

*मानव शरीर में ऐसी मॉर्फोजेनेटिक (आकृति-निर्माण करने वाली) ऊर्जा-क्षेत्र होते हैं, जिन्हें उचित संपर्क के माध्यम से मुक्त और जागृत किया जा सकता है।*

*पुराने नियम (Old Testament) के नीतिवचन (Proverbs) में कहा गया है: "पुरुष और स्त्री का संबंध उतना ही रहस्यमय है, जितना कि आकाश में उड़ते हुए गरुड़ का मार्ग, चट्टान पर रेंगते हुए सर्प का मार्ग, और समुद्र में चलते हुए जहाज का मार्ग।"*

*थॉमस मूर ने लिखा—"मेरी एकमात्र पुस्तक एक स्त्री की आँखें थीं," और उन्होंने मुझे केवल मूर्खता सिखाई।*

*वास्तव में, वह रहस्यमयी स्त्री, शेक्सपियर के शब्दों में, स्वर्ग से इतनी कृपा प्राप्त करती है कि स्कॉट के लिए वह पीड़ा और वेदना से घिरे व्यक्ति के लिए एक 'स्वर्गीय दूत' बन जाती है।*

*ये योगिनियाँ और मातृकाएँ भारतीय दिव्य उपासना में अत्यंत सम्मानित स्थान रखती थीं। तंत्र में श्री-पूजा उसी परंपरा का चरम बिंदु थी।*

*बौद्ध मान्यताओं के अनुसार, कामरूप (असम), फूर्णगिरि (नेपाल), उड्डियान (ओडिशा), और जलंधर (पंजाब) महत्वपूर्ण योगिनी-पीठ थे।*

*बी. भट्टाचार्य ने इन धार्मिक स्थलों में अपने प्रत्यक्ष अनुभवों और कई अन्य स्थलों का उल्लेख किया है। ऐतिहासिक और पुरातात्विक अनुसंधान से पता चला है कि तांत्रिक प्रथाओं में ऑस्ट्रिक, स्किथियन और मंगोलियाई तत्व और प्रभाव समाहित हैं। लेकिन इस ग्रंथ के लेखक ने इसमें अनावश्यक विद्वत्ता-प्रदर्शन और फुटनोट्स का बोझ नहीं डाला है। लेखक का प्रयास पूर्वाग्रहों को तोड़ना है और संकोची व्यक्ति को कुछ समय के लिए उस दिव्य रहस्य के बंद द्वारों के सामने खड़ा करना है। जीवन का स्रोत (योनि) और मृत्यु में जीवन का अंत, दोनों को समान रूप से निष्पक्षता और संतुलित दृष्टिकोण से देखा गया है।*

*यहाँ कल्पना और यथार्थ, मिथक और भौतिकवाद, एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। द्वैतभाव का पर्दा हट जाता है, और वास्तविकता तथा अलौकिकता एक-दूसरे को आलिंगनबद्ध कर लेते हैं। भारतीय कामशास्त्र (कामसूत्र) में आठ प्रकार के शारीरिक आलिंगन मुद्राओं का वर्णन किया गया है। लेकिन इस ग्रंथ ने यह सिद्ध किया है कि कामुकता रहस्यमय हो सकती है, भयानकता आनंददायक हो सकती है, और मायावी तत्व शाश्वत रूप से मोहक और आकर्षक हो सकते हैं। "हे देवी! तुम कितनी विचित्र और अनगिनत रूपों में प्रकट होने वाली हो!"*

*तंत्र की दुनिया को चरणबद्ध रूप से, घटना-दर-घटना, और स्थान-दर-स्थान अनुभव किया जाना चाहिए। यहाँ साधारण पुरुष और महिलाएँ असाधारण रूप धारण कर लेते हैं, और आंतरिक रहस्य बाह्य रूप से प्रकट होता है। संत और देवदूत यहाँ भक्ति, भय, और रहस्यमयी तत्वों से स्पर्शित होते हैं। मांसाहारी, मदिरापान करने वाले, बौने जैसे पात्र, मधुर संगीतकारों, चमत्कारी संन्यासियों, और रहस्यमयी स्त्रियों (ह्लादिनी—अर्थात, शाश्वत आनंद, राधा की छवि) के साथ मिलते हैं। वह स्त्री-शक्ति केवल शक्ति ही नहीं, बल्कि प्रकृति की सबसे सुंदर पुष्प-गंध भी है। गोल्डस्मिथ ने सही कहा है, "स्त्रियाँ और संगीत कभी पुराने नहीं होते।" इस ग्रंथ की मुख्य पात्र, केसरिया वस्त्रधारी स्त्री, में ऐसा व्यक्तिगत आकर्षण, गरिमा, ज्ञान और आध्यात्मिकता है कि वह लेखक के लिए एक मार्गदर्शक देवदूत बन जाती हैं। "उन्होंने लेखक को ऐसी संवेदनशीलता प्रदान की है, जिससे वह प्रत्येक घटना को सटीकता और सौंदर्यबोध के साथ उकेर सके, जबकि बौद्धिक वातावरण की सुगंध प्रशंसा उत्पन्न करती है।"*

*यह ग्रंथ विशेषज्ञों और आम पाठकों, दोनों द्वारा समान उत्साह और रुचि के साथ पढ़ा और सराहा जाएगा, क्योंकि इसे आत्मीय और सजीव भाषा में लिखा गया है। "इस ग्रंथ की एक और विशेषता यह है कि लेखक ने कई घटनाओं और परिस्थितियों को इतने संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है कि, यद्यपि वे किसी की संवेदनाओं को झकझोर सकती हैं और समाज के स्थापित वर्जनाओं को तोड़ सकती हैं, फिर भी वे पाठक के भीतर एक अलग तरह की सहानुभूति जगाती हैं—एक मिश्रित भावना, जिसमें श्रद्धा, विस्मय, आकर्षण, जिज्ञासा और एक गहन उदासी, ये सब एक ही झलक में समाहित हो जाते हैं।" "लेखक में विनम्रता है, और वह कहीं भी सर्वज्ञ या श्रेष्ठ होने का दावा नहीं करते, न ही वह उपदेशात्मक या पूर्वाग्रह से ग्रसित दृष्टिकोण अपनाते हैं।"*

*पश्चिमी पाठकों के लिए, जो विशेष रूप से मूल पाप ग्रंथि और शरीर-मन के सिद्धांतों से प्रभावित हैं, यह ग्रंथ संतुलन स्थापित करने वाला सिद्ध होगा। "मूल पाप की अवधारणा और शरीर तथा मन के सिद्धांतों के संदर्भ में, यह ग्रंथ एक संतुलन स्थापित करने वाला सिद्ध होगा।" स्वयं को तर्कवादी और क्रांतिकारी कहने वाले पश्चिम ने दुनिया को ऑशविट्ज़,*

*परमाणु बम, और एड्स की ओर धकेल दिया। अब हमें पूर्व की वह कोमल, शांत, लेकिन सुकूनदायक कथा सुननी चाहिए, जो धीरे-धीरे फैल रही है (तंत्र शब्द का मूल अर्थ ही 'फैलाना' और 'बुनना' है) — जो तंत्र, योग, ज़ेन और समाधि की नई चेतना के माध्यम से प्रसारित हो रही है।*

*"अभी और अधिक शोध की आवश्यकता है, ताकि ग्रंथियों के स्राव (ग्लैंड-सेक्रिशन) के अंतःस्रावी केंद्रों (एंडोक्राइन सिस्टम) और पतंजलि के योग-सार में वर्णित षट्चक्रों के बीच समानता को समझा जा सके; आत्म-प्रेरणा (ऑटो-सजेशन) और प्रत्याहार की साधना के बीच संबंध को देखा जा सके; यौन ऊर्जा के चक्र और वासना-उन्मुक्ति (लिबिडो की मुक्ति) की प्रक्रिया तथा कुंडलिनी के धीरे-धीरे जागरण और मेडुला ऑब्लोंगाटा (मस्तिष्क तंत्रिका केंद्र) के माध्यम से प्रमस्तिष्क (सिर के ऊपरी हिस्से) तक पहुँचने की प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके।"*

*"हमारी धारणा (Dharana) वही है, जिसे आधुनिक मनोवैज्ञानिक एकाग्रता (Concentration) कहते हैं। पौराणिक कथाएँ, वनस्पतियों और जीवों की आकृति और संरचना का अध्ययन, और संपूर्ण विज्ञान की मूल अवधारणाएँ—इन सभी का प्रतिपादन तंत्र में भूत-शुद्धि के रूप में किया गया है।" "मॉर्फिक रेज़ोनेंस (आकृति-सामंजस्य) ऊर्जा-सामंजस्य के समान है, जो सभी प्रकार के जीवों में अंतर्निहित होता है। इस ब्रह्मांड में सभी जीवित प्राणी एक सामूहिक अचेतन (collective unconscious) या स्मृति-पूल (memory pool) में योगदान देते हैं, जो किसी व्यक्ति की मृत्यु या किसी प्रजाति के नष्ट हो जाने के बाद भी बना रहता है।" "प्राच्य (पूर्वी) दर्शन इस शाश्वतता पर केंद्रित है—एक अनंत प्रेम, जिसमें बाह्य भौतिकता के विस्मरण का गहनतम आंतरिक क्षण चेतना को जीवंत कर देता है। उपनिषद में सृष्टि के विषय में कहा गया है—'कामस्तदग्रे' (सृष्टि के आरंभ में इच्छा थी)।" "फ्रायड ने अपनी पुस्तक बियॉन्ड द प्लेज़र प्रिंसिपल (Beyond the Pleasure Principle) में बृहदारण्यक उपनिषद का उल्लेख किया है, और कार्ल जंग ने पतंजलि की चर्चा की है—और यह संयोगवश नहीं हुआ है।"*

*"मैं व्यक्तिगत रूप से इस महान कृति और इसके लेखक के महान साहस को नमन करता हूँ, जो बंगाली और अंग्रेज़ी के कवि और उपन्यासकार होने के साथ-साथ भारतीय और पश्चिमी दर्शन, धर्म और साहित्य के गहरे अध्येता भी हैं।" "छिहत्तर (76) वर्ष की इस परिपक्व आयु में भी लेखक ने इतनी ऊर्जा के साथ इस गहन आध्यात्मिक अध्ययन को सहज और संक्षिप्त शैली में प्रस्तुत किया है—यह उनकी विद्वत्ता, विशाल अनुभव और प्रभावी अभिव्यक्ति को दर्शाता है।" "निश्चित रूप से उन्हें किसी तांत्रिक (रहस्यमय ज्ञान से युक्त) गुरु का आशीर्वाद प्राप्त है। भारतीय परंपरा में गुरु पुरुष या स्त्री दोनों हो सकते हैं। जैसा कि चौसर ने कहा है—'और वह खुशी-खुशी सीखता था और खुशी-खुशी सिखाता था।'" "प्लेटो ने कहा था—'जिन्होंने प्रकाश प्राप्त किया है, वे उसे दूसरों तक पहुँचाएँगे।' लेकिन तंत्र की समस्या यह है कि यह दर्शन से अधिक अनुभव पर आधारित है। यह शब्दों से अधिक मौन है। यह सिद्धांत से अधिक क्रिया पर केंद्रित है। इसलिए, मैं यहीं रुकता हूँ।"*

*"11 नवंबर 1987 — प्रभाकर माचवे"*

# प्रस्तावना (Preface)

तंत्र एक गूढ़ और अंतरंग विषय है; तंत्र एक खुला और सार्वभौमिक विषय भी है। तंत्र को न तो सुनाया जा सकता है, न ही इसका संपूर्ण वर्णन किया जा सकता है। तंत्र केवल अनुभव किया जाता है, संप्रेषित किया जाता है और साझा किया जाता है। तंत्र कोई कहानी, गपशप या सुनी-सुनाई बात नहीं है; यह इतिहास है, परंपरा है, आदि काल से चली आ रही साधना है। तंत्र व्यक्तिगत है, व्यावहारिक है, अनुभवजन्य है; तंत्र सामाजिक है, सामुदायिक है, जनजातीय है। तंत्र वस्तुपरक भी है और आत्मपरक भी। तंत्र भौतिकवादी आदर्शवाद है; यथार्थवादी रहस्यवाद है। तंत्र माँ है, मैडोना है, गाया (पृथ्वी) है; तंत्र चामुंडा है, काली है, सर्सी है, एरजुली है।

तांत्रिक अनुभवों को संप्रेषित करना अत्यंत कठिन है, क्योंकि तंत्र की रहस्यमयी बारीकियों को सत्य रूप में व्यक्त करने के लिए अभी तक मनुष्य द्वारा कोई प्रभावी भाषा विकसित नहीं की गई है। इसी कारण, विशेष रूप से प्रथम पुरुष में इस विषय को व्यक्त करने को लेकर मैं अत्यधिक संकोच में था। आत्मकथात्मक प्रस्तुति में सटीकता, स्पष्टता और प्रमाणिकता अक्सर बाधित होती है। इस मामले में भी, वास्तविक तथ्यों को कहीं न कहीं विकृत होना ही था।

लेकिन मेरे मित्र लगातार मुझसे इस कथा को कहने का आग्रह कर रहे थे, क्योंकि उनके अनुसार, यह तंत्र के गंभीर साधकों के लिए अत्यंत लाभकारी होगी। मुझे इस बात का तनिक भी ज्ञान नहीं कि वास्तव में ऐसा होगा या नहीं, या कोई इससे सचमुच लाभान्वित होगा या नहीं। लेकिन अब इस आग्रह को और अधिक अस्वीकार कर पाना संभव नहीं था। इसे और अधिक रोककर रखना व्यर्थ प्रतीत हुआ। अंततः मैंने इस मार्ग पर चलने का निर्णय लिया।

इस कथा में वर्णित घटनाओं की कालावधि और मेरे स्वयं के वृद्धावस्था में प्रवेश करने के साथ-साथ, इसमें शामिल कुछ व्यक्तियों की जीवन लीला समाप्त हो चुकी है, जिसने मुझे एक प्रकार से सुरक्षा का कवच प्रदान किया है। इससे मुझे इस चुनौती को स्वीकार करने और इस प्रयास को पूरा करने की प्रेरणा मिली। प्रथम पुरुष में अपने जीवन की अंतरंग घटनाओं को प्रस्तुत करना अत्यंत कठिन कार्य है, विशेष रूप से जब वे घटनाएँ अन्य व्यक्तियों से भी जुड़ी हों। यह प्रयास कभी-कभी असहज भी प्रतीत होता है, किंतु मैं पूर्णतः पाठकों की उदारता पर निर्भर हूँ।

मुझे केवल इतनी आशा है कि इन संचित रहस्यों को उजागर करने का मेरा निर्णय उन जिज्ञासुओं के लिए सार्थक सिद्ध हो, जो तंत्र के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए हर संभव सहायता की तलाश में रहते हैं।

परमाणु बम के विस्फोट के बाद, विशेष रूप से वियतनाम युद्ध की असफलता के बाद, तथाकथित समृद्ध, आक्रामक और युद्धप्रिय राष्ट्रों पर परमाणु प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ हावी हो गई है। इन स्वयंभू "विश्व शांति के रखवालों" को एक अविश्वास की अस्पष्ट, लेकिन प्रबल भावना, हताशा और निराशा की खतरनाक सीमा तक ले जा रही है।

आश्चर्य की बात यह है कि इन समृद्ध और शक्तिशाली देशों की निर्ममता और संवेदनहीनता ने उनकी ही युवा पीढ़ी के उज्ज्वल मन-मस्तिष्क पर गहन निराशा का अंधकार फैला दिया है। अपनी समृद्धि, शक्ति, प्रगति और वैज्ञानिक उन्नति के दावों के बावजूद, धीरे-धीरे इन राष्ट्रों का युवा वर्ग इन खोखले वादों से मोहभंग की स्थिति में पहुँच गया है। वे भली-भांति जानते हैं कि ये दावे केवल बूढ़े शिकारी कुत्तों की गरज की तरह हैं, जो अंततः स्वयं को ही नष्ट करने पर आमादा हैं।

यहाँ इस भयावह स्थिति के कारणों की विस्तृत विवेचना और विश्लेषण करना हमारा उद्देश्य नहीं है, क्योंकि यह विषय पहले से ही समाजशास्त्रियों और दार्शनिकों के चिंतन का केंद्र बना हुआ है।

लेकिन हमारा विषय इस बदलते समय की इसी अवस्था से जुड़ा हुआ है। निराशा और कटुता के इस बढ़ते दौर के साथ-साथ, रहस्यवाद और गूढ़ विद्याओं के प्रति आकर्षण भी तीव्र होता गया है। यह आकर्षण न केवल मानसिक जिज्ञासा को दर्शाता है, बल्कि यह आध्यात्मिक खोज और शारीरिक पतन का भी संकेत देता है। हमारे समय के युवा वर्ग में एक अनियंत्रित लालसा जाग्रत हो गई है—एक आंतरिक मुक्ति की प्यास, जिसे वे अपने शब्दों में 'ट्रिप' कहकर व्यक्त करते हैं। यह मानसिक और आत्मिक संघर्ष उन्हें कहीं दूर, किसी रहस्यमयी दुनिया की खोज में धकेल रहा है।

वह किसी सरल मार्ग की तलाश में है, जो उसे एक ऐसे रोमांचक और रहस्यमयी संसार में पहुँचा दे, जहाँ जाकर वह अपने सामने खड़ी वास्तविक समस्याओं को पूरी तरह भूल सके।

अन्य पलायन के साधनों के साथ, पश्चिमी युवा अब उस प्रसिद्ध पूर्वी रहस्यवाद की ओर आकर्षित हो रहा है, जिसने प्राचीन काल में ग्रीक और रोमन युवाओं को भी अपनी ओर खींचा था—तब तक, जब तक कि अंधकार युग (डार्क एज) ने उस स्वर्णिम शास्त्रीय युग (क्लासिकल एज) की महिमा को धूमिल नहीं कर दिया। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो, जब भी पश्चिम ने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबल की आवश्यकता महसूस की है, उसकी दृष्टि पूर्व की ओर ही उठी है।

इस ऐतिहासिक परंपरा के अनुरूप, आज के परमाणु-युग के बाद का युग भी एक आध्यात्मिक शून्यता के संकट का सामना कर रहा है और इस संकट का समाधान पाने के लिए फिर से पूर्व की ओर देख रहा है। न तो विज्ञान और व्यापार की प्रगति, न ही परमाणु युग की कल्पनाएँ और उसके विनाशकारी प्रभाव, और न ही नव-साम्यवाद (नियो-सोशलिज्म) के क्रांतिकारी विचार इस गहन खोज को रोक पाए हैं। यह एक त्वरित समाधान की तलाश है, जो उस संकट को हल कर सके, जिसने मनुष्य के मन और शरीर को पूरी तरह से अपने चंगुल में जकड़ लिया है।

धोखेबाजों ने स्वयं को संत और जादूगरों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। वे अपनी संदिग्ध युक्तियों के माध्यम से मन और आत्मा से जुड़े सभी संकटों के लिए तत्काल समाधान देने का वादा करते हैं।

पूर्व के कई तथाकथित "विशेषज्ञ" संपूर्ण मुक्ति की एक रेडीमेड पैकेज यात्रा की पेशकश करते हैं। इतिहास को एक बार फिर यह दर्ज करना पड़ेगा कि इन दिखावटी ठगों में सबसे अधिक छल करने वाले वे आध्यात्मिक ढोंगी हैं, जो समाज में अपने शिकारों को बड़ी आसानी से भ्रमित कर, उन्हें एक निरर्थक बलिदान की वेदी पर चढ़ा देते हैं।

पश्चिमी देशों की लगभग हर राजधानी में आज समृद्ध रूप से फलती-फूलती "आध्यात्मिक दुकानें" देखने को मिलती हैं, जहाँ भोले-भाले युवा अपनी व्यक्तिगत मुक्ति की खोज में जलते रहते हैं।

इस स्थिति ने एक ऐसे "आध्यात्मिक बाज़ार" को खुला छोड़ दिया है, जो किसी भी रोक-टोक के बिना फल-फूल रहा है। इस बाज़ार में पुस्तकों, चार्टों, आरेखों, तांत्रिक यंत्रों और नकली गुरुओं की बाढ़ आ गई है, जो शांति और संतोष को बेचने का व्यापार कर रहे हैं। जितना गूढ़, उतना आकर्षक; जितना रहस्यमयी, उतना अधिक वांछनीय; जितना विचित्र, उतना ही आनंददायक।

जो लोग वास्तव में आत्मिक शांति और आंतरिक शक्ति की खोज में होते हैं, वे उस वादित शांतिपूर्ण लक्ष्य की ओर दौड़ पड़ते हैं—जहाँ जीवन में संतोष है, जहाँ विश्व के प्रति प्रेम है; जहाँ वरिष्ठ लोग दोहरे मापदंड स्थापित नहीं करते, न ही अपने कनिष्ठों को धोखा देते हैं, और न ही उन्हें शांति के नाम पर वैश्विक युद्धों की ओर धकेलते हैं।

मनुष्य की आत्मा के इस संकट का भरपूर लाभ सस्ते आध्यात्मिक व्यापारियों ने उठाया है। जब धूर्त ठग मनुष्य की आत्मिक पीड़ा को अपने व्यक्तिगत लाभ और शक्ति के लिए सौदेबाज़ी की वस्तु बना लेते हैं, तब मनुष्य की आत्मा सबसे निम्न स्तर पर पहुँच जाती है।

दुर्भाग्यवश, तंत्र भी उन गिने-चुने उत्पादों में से एक बन गया है, जिसे इन आध्यात्मिक व्यापारियों ने अपनी दुकानों में सजा रखा है। इस प्राचीन और गूढ़ साधना पद्धति पर असंख्य पुस्तकें बाज़ार में भरी पड़ी हैं, और उनमें एक और पुस्तक जोड़ना शायद न्यायसंगत नहीं होगा। सतही तौर पर देखा जाए तो, यह प्रयास संदिग्ध प्रतीत होता है।

जब ये विचार मेरे मन में आते हैं, तो मुझे एहसास होता है कि मैंने अब तक अपने मित्रों के लगातार आग्रह के बावजूद इन अनुभवों को लिपिबद्ध करने से खुद को सख्ती से रोके रखा था। उनके अनुसार, ये अनुभव तंत्र के साधकों के लिए अनमोल खजाने के समान हैं, क्योंकि इनमें उन लोगों के लिए प्रत्यक्ष अनुभवों की जानकारी समाहित है, जो तंत्र की वास्तविकता को स्वयं समझना चाहते हैं।

अब जब मैं इस आग्रह के आगे झुक रहा हूँ (और शायद एक लेखक के रूप में सार्वजनिक संवाद की उस व्यग्रता के कारण भी), तो मुझे तुरंत एक चेतावनी देना आवश्यक प्रतीत होता है।

जो लोग तंत्र या तांत्रिक घटनाओं के सैद्धांतिक मार्गदर्शन या दार्शनिक व्याख्या की अपेक्षा कर रहे हैं, वे इस पुस्तक को पूरी तरह निराशाजनक पाएँगे। यह पुस्तक किसी प्रकार का आध्यात्मिक उद्धार या संकटग्रस्त आत्माओं के लिए कोई दैवीय समाधान प्रस्तुत करने का दावा नहीं करती।

*"तंत्र की दुनिया"* कुछ सिखाने का दावा नहीं करती और न ही कोई संदेश देने का प्रयास करती है। यह शांति तक पहुँचने के किसी शॉर्टकट मार्ग का नक्शा प्रदान नहीं करती। यह किसी भी प्रकार की आत्ममुग्धता में लिप्त नहीं है—न तो आचार्यों की कला की चतुराई का दावा करती है, न ही दार्शनिकों की विद्वत्ता का, और न ही जादूगरों या रहस्यवादियों के गुप्त रहस्यों का।

यह पुस्तक एक साधारण साधक के कुछ जटिल व्यक्तिगत अनुभवों को प्रथम पुरुष में प्रस्तुत करती है—एक ऐसे साधक के जो तंत्र के मार्ग पर चला, उस मार्ग पर जो एक मादा सर्प के घातक कुंडल के समान है। यह पुस्तक किसी विशेष प्रशंसा या सम्मान का दावा नहीं करती। वास्तव में, इसका उद्देश्य केवल असाधारण घटनाओं को साझा करने और समझने की एक सच्ची, हृदय से हृदय तक पहुँचने वाली भावना को उजागर करना है—एक ऐसी भावना, जो आध्यात्मिक यात्रा में मिले सहधर्मियों के बीच अनुभवों के आदान-प्रदान की पवित्र भावना से ओत-प्रोत हो।

इसलिए, पाठक से निवेदन है कि वह इस पुस्तक में वर्णित घटनाओं की सच्चाई पर विश्वास करे। समय और दूरी के प्रभाव से निश्चित रूप से कुछ विवरण धुंध और कोहरे में खो गए होंगे।

कई घटनाएँ, जो अब धुंधली स्मृतियों के कोहरे के पार देखी जा रही हैं, निश्चित रूप से वास्तविकता से बड़ी, अस्पष्ट, अनुपातहीन या विकृत प्रतीत हो सकती हैं। वे कभी भी अपनी मूल शुद्धता में प्रकट नहीं हो सकतीं। कुछ घटनाएँ अनकही

रह गई हैं, कुछ समय के साथ फीकी पड़ गई हैं, और कुछ की छायाएँ और रंग गहरे हो गए हैं। लेकिन कुल मिलाकर, लेखक ने अपनी पूरी कोशिश की है कि वह उन्हीं तथ्यों के निकट रहे, जिन्हें उसने तब देखा था और जिन्हें अब स्मरण कर रहा है।

यह स्वीकार करना होगा कि यहाँ वर्णित घटनाओं पर विश्वास करना कठिन है। वास्तव में, यदि उन्हें सतही रूप में लिया जाए तो वे मानव समझदारी को चुनौती दे सकती हैं। यदि पाठक इन्हें मात्र कल्पना या गप्प समझे, तो मुझे तनिक भी आश्चर्य या दुख नहीं होगा। एक कथावाचक के रूप में, सच कहूँ तो, मुझे इस बात से कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता।

क्योंकि मैंने इन अविश्वसनीय घटनाओं को अपनी आँखों से देखा है, और इनमें से कुछ बातों को स्वयं सुना है, इसलिए मुझे इन्हें वर्णित करने की बाध्यता महसूस हुई। इन घटनाओं की सत्यता को प्रमाणित करना या उनके लिए कोई तर्कसंगत व्याख्या देना मेरा कार्य नहीं है, और न ही मेरे पास वह मानसिक या बौद्धिक क्षमता है कि मैं ऐसा कर सकूँ। इस प्रकार की व्याख्या का कार्य तो थियोसॉफिस्टों और दार्शनिकों के क्षेत्र में आता है।

चूँकि मैं इस पुस्तक में वर्णित घटनाओं की सत्यता को प्रमाणित करने का कोई प्रयास नहीं कर रहा हूँ, इसलिए मैं अपने पाठकों को यह अधिकार देता हूँ कि वे इस संपूर्ण पुस्तक को अविश्वसनीय मान सकते हैं और इसे केवल कल्पना का एक कोरा ताना-बाना घोषित कर सकते हैं।

इसलिए, यदि कोई इसे कल्पना माने तो मुझे कोई अपमान नहीं होगा; न ही मैं अपने इस प्रयास को निरर्थक मानूँगा, जैसे कि बिना हवा वाले रेगिस्तान में बीज बोना।

इन घटनाओं को वर्णित करके, और इन विवरणों को योग्य जिज्ञासुओं तक पहुँचाकर, मैं अपने जीवन के अंतिम चरण में अपनी एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को पूरा कर रहा हूँ।

मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसे कई लोग हैं जो इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष अनुभवों की ऐसी रिपोर्टों की आवश्यकता महसूस करते हैं—एक ऐसा क्षेत्र, जो आज भी, तथाकथित 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' के इस दिखावटी शोरगुल के बीच, एक खोज, पुनः खोज और आत्म-खोज के लिए अत्यंत रोचक बना हुआ है।

तंत्र और तांत्रिक सत्य आज भी रहस्य के एक गूढ़ कक्ष में बंद हैं, जिसकी कुंजियाँ पाना अत्यंत कठिन है। अज्ञात का रहस्य अभी भी अपनी ओर आकर्षित करता है।

प्राचीन और आधुनिक काल की सबसे गहरी वैज्ञानिक खोजों ने तंत्र के रहस्यमय द्वारों को भेदने का साहस दिखाया है—चाहे वह अतीश श्रीज्ञान और नागार्जुन हों, या थेल्स और एंपेडोकल्स; शंकराचार्य और अभिनवगुप्त हों, या फाउस्ट, शोपेनहावर, ब्लेक, ब्लावात्स्की, ओलिवर लॉज और रवींद्रनाथ टैगोर।

ऐसे जिज्ञासु और शोधपरक मस्तिष्कों के लिए यह पुस्तक शायद पूरी तरह निरर्थक न हो। आखिरकार, तंत्र हमें उन्हीं पारंपरिक अभिलेखों और अनुभवों की श्रृंखला के माध्यम से सौंपा गया है, जिनमें इसे पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रखा गया है।

जो कुछ भी कहा जाए या किया जाए, सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद समय अपनी छाप छोड़ता ही है। निश्चित रूप से, कुछ विवरणों को कम आँका गया होगा, कुछ को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया होगा, और कहीं-कहीं गलत जोर देने या अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा के कारण यह वर्णन असहज लग सकता है।

एक लेखक भी आखिरकार एक इंसान ही होता है; भले ही वह पूरी वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का संकल्प ले, उसकी अपनी भावनात्मक दृष्टि जीवन की घटनाओं के दर्पण पर अपनी छाया डाल ही देती है—विशेष रूप से तब, जब विषय स्वयं इतना विस्तृत हो कि वह रोमांच और रहस्य के बीच झूलता दिखाई दे।

इन कथनगत त्रुटियों और साहित्यिक अलंकरणों को छोड़ दें, तो जो कुछ भी घटना-दर-घटना, अध्याय-दर-अध्याय प्रस्तुत किया गया है, वह केवल सत्य ही है—परंतु अफसोस, संपूर्ण सत्य नहीं।

पूरा सत्य हमेशा ही उस रहस्यमयी गुफा (*nihitam guhāyām*) के अंधकार में छिपा रहेगा, जिसके बारे में किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। और तंत्र का आकर्षण साधकों को सदैव अपनी ओर खींचता रहेगा, उन्हें उस पौराणिक 'स्वर्ण कुंजी' को पाने के लिए व्याकुल करता रहेगा, जिससे इस 'रहस्यमयी गुफा' का द्वार खुल सके।

यदि पाठक एक कृपा कर सकें—यानी कि इस पुस्तक में वर्णित घटनाओं की वास्तविकता को स्वीकार कर लें—तो वह यह भी सुनिश्चित कर सकते हैं कि प्रस्तुत किए गए विवरण अपेक्षाकृत सत्य हैं। ये घटनाएँ उस व्यक्ति की आँखों के सामने घटी थीं, जिसने अपने बचपन से ही रहस्यमय जगत की दूरस्थ सीमाओं से आने वाले संकेतों को ग्रहण करने के लिए अपनी दृष्टि और श्रवणशक्ति को प्रशिक्षित किया था।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा, मैं इन घटनाओं की कोई 'वैज्ञानिक' या मनोवैज्ञानिक व्याख्या करने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ, और न ही ऐसा करने का कोई इरादा है। ये घटनाएँ जैसे घटीं, वैसे ही चरण-दर-चरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यदि कोई व्याख्या संभव भी हो, तो वह उन लोगों की पहुँच से परे रहेगी जो इन घटनाओं की व्याख्या की आवश्यकता महसूस करते हैं। संदेह का मूल्य मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन की दृष्टि से कहीं अधिक महँगा पड़ता है, विशेष रूप से तब, जब कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ प्रवेश करने के लिए विश्वास और अहंकार का समर्पण ही एकमात्र कुंजी हो।

जो लोग यहाँ प्रस्तुत कथनों से सहमत नहीं हो सकते, वे—और मैं इसे दोहराता हूँ—पूरी तरह स्वतंत्र हैं कि वे इस पूरे प्रयास को एक ऐसी कथा मान लें, जो कहीं के भी नहीं, बल्कि मात्र कल्पना के जगत से आई हो।

यदि उनके लिए तंत्र और तांत्रिक जगत का यह गंभीर विषय केवल एक कल्पना की दुनिया बना रहे, तो ऐसा ही सही। इससे न कोई तारा शोक करेगा और न कोई कुत्ता आंसू बहाएगा।

यह लेख केवल उन लोगों के लिए है जो विश्वास रखते हैं, जो परिश्रमी हैं, जो दृढ़ हैं, और जो इस मार्ग पर संकल्पबद्ध होकर खोज में लगे हुए हैं। यह एक पूर्ण हुआ मिशन है और इसे किसी वकालत या प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

यदि इस आध्यात्मिक समुदाय का कोई एक भी साधक इन पृष्ठों में अपने आगे बढ़ने के लिए कोई मार्गदर्शन प्राप्त कर सके, कोई ऐसी हल्की-सी रोशनी पा सके, जो घोर अंधकार के बीच भी अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने का संकेत दे सके, तो लेखक को अपना श्रम सफल प्रतीत होगा और वह स्वयं को परिपूर्ण रूप से पुरस्कृत महसूस करेगा।

पाठक ने अब तक इन पृष्ठों को पढ़ते हुए यह अवश्य ही देखा होगा कि इन घटनाओं की पृष्ठभूमि मुख्य रूप से वाराणसी और गंगा नदी तक सीमित रही है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ दर्ज अधिकांश घटनाएँ उसी नगर में घटी थीं, जहाँ लेखक का जन्म हुआ और जहाँ उसने अपनी युवावस्था बिताई। स्वाभाविक रूप से, यह स्थान और वह कालखंड विशेष ध्यान का पात्र रहा है।

ऐसा नहीं है कि अन्य स्थानों का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन मुख्य रूप से यह घटनाएँ इस शताब्दी की दूसरी से लेकर चौथी दशक के अंत तक के समय को दर्शाती हैं, और इनका केंद्र वाराणसी ही रहा है।

इसी प्रकार, लेखक के जीवन में और भी अनेक विविधतापूर्ण घटनाएँ घटित हुई हैं, जब उसने विश्व के दूरस्थ देशों की यात्राएँ कीं—जापान और मेक्सिको, थाईलैंड और हैती, कंबोडिया और जमैका, ग्रीस और सूरीनाम, त्रिनिदाद और पेरू।

यह अभी निश्चित नहीं है कि वे विचित्र कथाएँ कभी सुनाई जाएँगी या नहीं, क्योंकि लेखक की बढ़ती उम्र और कई अन्य प्रकार की बाधाएँ इसके आड़े आ सकती हैं।

इस कथानक में अधिकतर स्थानों पर मैंने प्रत्यक्ष संवाद शैली अपनाने का प्रयास किया है। निश्चित रूप से, समय और स्थान की सीमाएँ हमेशा पूरी तरह यथार्थपरक प्रस्तुति में बाधा बनी हैं।

सटीक विवरण प्रस्तुत करने में जो एक प्रमुख बाधा रही है, वह संवाद करने वालों की भाषा रही है। उनमें से अधिकांश केवल अपनी मातृभाषा में ही बोलते थे। अंग्रेज़ी का प्रयोग तो लगभग हुआ ही नहीं

इस कारण, पाठ्य सामग्री को इस बाधा का सामना करना पड़ा है। लेकिन फिर भी, जब मैं उन घटनाओं और उस समय को पुनः अनुभव करने का प्रयास करता हूँ, तो मैंने संवाद करने वाले वास्तविक पात्रों के शब्दों की गर्मजोशी बनाए रखने की पूरी कोशिश की है। मैं आज भी उन शब्दों को जीवंत रूप से स्मरण करता हूँ, और वे आज भी आध्यात्मिक ऊर्जा और तीव्र शक्ति का संचार करते प्रतीत होते हैं।

उन संदेशों की वास्तविकता पर भरोसा करते हुए, जब मैं उन्हें पुनः सजीव करने का प्रयास करता हूँ, तो मैंने उनकी वार्तालाप की आत्मा को बनाए रखने और उनके मूल सार की शुद्धता को यथासंभव संरक्षित रखने की पूरी कोशिश की है।

इसलिए, जहाँ कहीं भी प्रत्यक्ष संवाद शैली का उपयोग किया गया है, मुझे विश्वास है कि वह अपने मूल स्वाद, प्रभाव, तीव्रता, अर्थ और जीवन्तता को बनाए रखती है—भले ही, मैं स्वीकार करता हूँ कि इसमें प्रयुक्त शब्दावली की शुद्धता और उन संवादों की सहजता, जो मूल भाषा में कही गई थी, कहीं-कहीं कम हो गई हो।

'अनपढ़' और 'अकुशल' लोगों की सहज अभिव्यक्ति का जो विशेष आनंद होता है, उसे कोई भी साहित्यिक कौशल या रचनात्मक तकनीक कभी पूरी तरह पकड़ नहीं सकती।

जहाँ भी मुझे प्रत्यक्ष वर्णन की सटीकता को लेकर गंभीर संदेह हुआ—चाहे वह वाक्य संरचना में हो, छवियों और मुहावरों के उपयोग में हो, या उन मूल भाषा के अंशों में, जिनका अनुवाद करना कठिन था—वहाँ मैंने सामग्री और प्रस्तुति की आत्मा को बनाए रखते हुए, एक रिपोर्टर की शैली अपनाई और अपनी भाषा में अप्रत्यक्ष रूप से उन संवादों को प्रस्तुत किया।

इस प्रक्रिया में, कुछ क्षम्य भिन्नताएँ, संभावित असंगतियाँ और व्यक्तिगत शैली की छाप अवश्य ही कहीं-कहीं उभर आई होगी।

इन सीमित स्वतंत्रताओं के बावजूद, मुझे विश्वास है कि इस अनुभूति का मूल स्वाद अपनी प्रामाणिकता को बनाए रखता है।

फिर भी, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह पुस्तक एक प्रकार से नुकसान में रही है, क्योंकि भगवा वस्त्रधारी महिला की भाषा की सहज गरिमा, नारद के शब्दों की तीक्ष्ण और गहरी व्यंग्यात्मकता, और संत जितेन की भाषा की शांत और गूढ़ भव्यता—ये सभी, कथा के वर्णन में अपनी मौलिकता को खो चुके हैं। ठीक वैसे ही, जैसे कोई भी भाषा ईश्वर और उसकी महानता का वर्णन करने में असमर्थ रहती है, क्योंकि मानव की भाषा में असीम को सीमित करने की क्षमता नहीं होती।

लेखक की अपनी योगिक संयम में कमी और विदेशी भाषाओं के प्रति उसकी सीमित जानकारी ने भी निश्चित रूप से मूल कथानक की चमक को कुछ हद तक फीका कर दिया होगा।

इन कमियों के अलावा, कहीं-कहीं अनुचित बल दिया गया होगा, कुछ घटनाएँ नाटकीय रूप से प्रस्तुत हुई होंगी, और कुछ विवरणों में अलंकारिक सजावट की अधिकता भी आ गई होगी।

इन व्यक्तिगत कमियों के बावजूद, मेरे लिए यहाँ प्रस्तुत विवरण मेरे जीवन के ठोस तथ्य ही हैं।

यदि पाठक अब भी इस पूरे प्रयास को केवल एक स्वप्नद्रष्टा का आत्मसंवाद मानकर अस्वीकार करना चाहता है, तो वह ऐसा करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र है और अपने विश्वास की रक्षा करने का उसे पूरा अधिकार भी है।

इस पुस्तक को तैयार करने में मुझे एक प्रिय मित्र से प्रेरणा मिली, जो अब इस संसार में नहीं हैं, लेकिन जिनका नाम (रामप्रसाद जदूनंदन) त्रिनिदाद के हर सज्जन हृदय के लिए एक आदर्श बना रहेगा।

मैं अपने मित्र श्री बी. एन. चटर्जी का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे श्री देवेंद्र जैन से मिलवाया। यदि इन दोनों महानुभावों का सहयोग न मिला होता, तो मैं आज भी एक विश्वसनीय और उत्तरदायी प्रकाशक की तलाश में ही होता।

मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि मेरी पुत्री, श्रीमती अतरेयी कॉर्डियर्स ने अनुक्रमणिका, शब्दकोष तैयार करने और प्रूफ जाँचने में जो अथक श्रम किया है, उसके लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ।

बी. भट्टाचार्य
नई दिल्ली, 2 नवंबर 1987

# 1.रहस्यमयी देवी (The Mystic Lady)

## एक ब्राह्मण परिवार

मेरा तंत्र से जुड़ाव न तो केवल सैद्धांतिक रहा है और न ही मात्र शैक्षणिक। इसे क्रांतिकारी कहा जा सकता है। यह पूरी तरह व्यावहारिक था, धरातल से जुड़ा हुआ और स्वाभाविक। मेरे लिए तंत्र उतना ही सहज था जितना मछली के लिए पानी में तैरना।

1910 में वाराणसी जैसे प्राचीन नगर में एक ब्राह्मण और संस्कृतनिष्ठ परिवार में जन्मे एक बालक के लिए तंत्र केवल एक विषय नहीं था, बल्कि यह उसके चारों ओर व्याप्त वातावरण का हिस्सा था। संस्कृत मेरी लगभग मातृभाषा ही थी। वैदिक मंत्र और स्तुतियाँ मेरे लिए वैसे ही गूंजते थे, जैसे एक शिशु के लिए सैकड़ों धड़कती लोरियाँ। अनुष्ठान और साधनाएँ हमारे जीवन का नियमित हिस्सा थीं, जिन्हें मैंने उसी सहजता और प्रेम से स्वीकार किया, जैसे किसी ईसाई परिवार में क्रिसमस के रहस्यमय रीति-रिवाजों को अपनाया जाता है।

ना तो कोई प्रश्न पूछे जाते थे, ना संदेह किए जाते थे, ना ही उत्तरों की अपेक्षा होती थी और ना ही किसी व्याख्या की आवश्यकता महसूस होती थी। व्याख्या और तर्क की यह भूख आधुनिक तर्कशील विश्व की एक प्रवृत्ति है, जो ऐतिहासिक रूप से अठारहवीं शताब्दी की उपज प्रतीत होती है।

संदेह एक बौद्धिक अभ्यास है, जिसे वह संसार अपनाता है जो किसी भी प्रकार के आधिकारिक नियंत्रण से बचना चाहता है। हिंदू रहस्यवादी परंपरा पूरी तरह "गुरु" की अवधारणा पर आधारित है, जो अपने अनुभव, अपनी व्यक्तिगत निष्ठा और अपने आकर्षक व्यवहार के माध्यम से अपने शिष्यों से पूर्ण समर्पण और अटूट भक्ति प्राप्त करता है। उसकी सर्वोच्चता लगभग उतनी ही पूर्ण और अटल मानी जाती है, जितनी स्वयं ईश्वर की।

उस बालक की पूरी दुनिया इस पूर्ण समर्पण की भावना से भरी हुई थी। यह उसी आंतरिक जिज्ञासा का स्वाभाविक विकास था, जो जीवन में संकेतित, लेकिन स्पष्ट न किए गए, अदृश्य रहस्यों की खोज में लगी रहती है।

जीवन को केवल एक पड़ाव माना जाता था, जो परम सत्य तक पहुँचने की यात्रा का हिस्सा था। वह छोटा बालक इस खोज की रहस्यमयी आकुलता के पीछे छिपी जटिल प्रक्रिया को समझ नहीं सकता था; लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, इस रहस्य की वास्तविकता, इसकी संभावना और किसी अद्भुत शक्ति की उपस्थिति की अनुभूति उसकी स्वयं की चेतना का अभिन्न अंग बन गई।

इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि उसने इस रहस्य की गहराई तक पहुँचने के लिए सब कुछ दाँव पर लगा दिया, और यदि आवश्यकता पड़ी तो किसी अपरिचित या अज्ञात मार्ग से भी गुज़रने को तैयार था।

इसके अतिरिक्त, उसकी ज्ञान की यह तीव्र भूख एक पवित्र और दिव्य आभा से भी युक्त थी, जो न केवल आकर्षक थी, बल्कि अत्यंत शक्तिशाली भी थी। यह रहस्यमयी होते हुए भी एक आंतरिक आशा से भरी हुई थी, जिसकी अपनी एक मौलिक भाषा थी।

यह अनुभव दिव्य रूप से अनूठा था और अपनी अनूठी दिव्यता में संपूर्ण था। यह व्यक्तिगत भी था और सामुदायिक भी। यह रहस्य से ओत-प्रोत था, फिर भी क्रिस्टल की भांति स्वच्छ था। यह सूर्य की भाँति उज्ज्वल था और उतना ही विस्मयकारी था जितना हिमालय की चोटियों को चाँदनी के धुंधले घूँघट के बीच से देखना।

मैं आज भी उन स्मृतियों को देख सकता हूँ, महसूस कर सकता हूँ, और उनके स्मरण मात्र से रोमांचित हो सकता हूँ। जॉन स्टुअर्ट मिल की तरह, मेरा भी कोई साधारण बचपन नहीं था।

## उत्सव और भक्ति

संभवतः यह हमारे जीवन के ढंग से जुड़ा हुआ था। हमारा परिवार देवी काली—रहस्यमयी अंधकारमयी माता—को समर्पित था, जिन्हें हर विशेष पारिवारिक अवसर पर आह्वान किया जाता था। और तारा—जो प्राच्य देवी अष्टार्ते, तिब्बती सरस्वती और करुणामयी किंतु प्रचंड मातृशक्ति का प्रतीक थीं—को हमारे घर के द्वार पर सामुदायिक देवी के रूप में पूजा जाता था। यह एक वार्षिक आयोजन था, जिसमें आधी रात से लेकर सूर्योदय तक अनुष्ठानों से युक्त रात्रिकालीन नृत्य किए जाते थे।

परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए उनके छोटे-छोटे निजी पूजास्थल और विशिष्ट आसन निर्धारित थे। परिवार में सभी—चाहे वे पुरुष हों या स्त्री—माँ (काली) और उनके पूरक रूप शिव की पूजा करने के लिए बाध्य थे। "बिना प्रार्थना के नाश्ता नहीं"—यह एक कठोर नियम था, जिससे कोई भी मुक्त नहीं था, सिवाय उन लोगों के जो गंभीर रूप से बीमार होते या जिन्हें मासिक धर्म के कारण अस्थायी रूप से पूजा से वंचित रहना पड़ता। लेकिन ऐसी स्थितियों में, उनके स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति उनकी पूजा का उत्तरदायित्व संभालता, ताकि उनका पूजास्थल 'सक्रिय' बना रहे। ये नियम अत्यंत कठोर थे, और इन्हें बिना किसी प्रश्न या संदेह के कड़ाई से पालन किया जाता था। मंत्रोच्चारण, जप, प्राणायाम, आसन और मुद्राएँ हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थीं।

## भगवा वस्त्रधारी महिला

लेकिन मैं अलग था। क्यों, यह मैं खुद भी नहीं जानता, पर ऐसा ही था, और हर कोई इस अंतर को पहचानता और स्वीकार करता था। कुछ ने मुझे हठी कहा, कुछ ने समय से पहले परिपक्व बताया; जबकि जो अधिक उदार थे, उन्होंने मुझे दृढ़ निश्चयी माना। मैं स्वाभाविक रूप से एक गलत समझा गया, अपनी ही धुन में रहने वाला, और अपने रास्ते चलने वाला बच्चा था। लेकिन मुझे यह एहसास था कि मैं दूसरों से ध्यान, मान्यता और सम्मान की अपेक्षा करता हूँ—शायद उनसे भी अधिक, जो वास्तव में मुझे यह देने के लिए तैयार थे।

मुझमें हर चीज को जानने, खोजने, समझने और आत्मसात करने की तीव्र इच्छा थी। मैं प्रयोग करने, गलतियाँ करने, और यहाँ तक कि स्थापित नियमों और उबाऊ दिनचर्या की अवहेलना करने की हिम्मत कर सकता था। मुझे इस बात का आनंद मिलता कि लोग मुझे बेकार, उद्दंड, और अराजक बच्चा समझकर ठुकरा देते। आह! विरोधी एकांत और अर्जित एकाकीपन के आनंद!

और जल्द ही मुझे इसका पुरस्कार मिला।

मुझे इसका प्रतिफल मिला एक अजीब तरह की शांत भगवा वस्त्रधारी महिला की मातृसुलभ सहानुभूति के रूप में, जो उसी गली में अपना साधारण व्यवसाय चलाती थीं, जहाँ हम रहते थे। वास्तव में, वह हमारी सबसे करीबी पड़ोसियों में से एक थीं।

वाराणसी की ये गलियाँ गंगा नदी के समानांतर चलती हैं, जिस पर यह प्राचीन शहर एक अर्धचंद्राकार के रूप में बसा हुआ है। वाराणसी इतिहास जितनी पुरानी है—एथेंस या ट्रॉय, पेइचिंग या काहिरा, दमिश्क या नीनवे से भी अधिक प्राचीन। और ये गलियाँ आज भी एक प्राचीन शहर की प्राचीन धमनियों की तरह फैली हुई हैं। अनगिनत युगों से इतिहास इन गलियों से होकर अबाध रूप से बहता आ रहा है।

मोटे-मोटे पत्थर की दीवारें, संकरी गलियाँ, उन पर बिछे विशाल पत्थर के फर्श (जो भारत की सबसे पुरानी भूमिगत जल निकासी प्रणाली को ढँकते हैं), सड़कों पर घूमते साँड़ और गायें, नग्न संन्यासी और भजन गाते फकीर—यह सब मिलकर जीवन की एक रोमांचक और रहस्यमयी धारा प्रवाहित करते हैं। दुनिया में और कहीं भी ऐसा जीवंत विश्वकोश इतने खुले रूप में नहीं देखा जा सकता, जितना कि वाराणसी की इन संकरी गलियों में बिखरा पड़ा है।

और यहीं स्थित थी उनकी छोटी-सी दुकान:

एक संकरी, एक दरवाजे वाली कुटिया, जिसमें भीतर जाने पर एक संकरी अंधेरी गली थी। इस गली में, जहाँ कोयले की कालिख और धूल भरी नमी फैली रहती थी, वहीं बंगाल से आयी नारियल की ढेरों भूसी भी जमा रहती थी।

देखने में, वह एक नारियल विक्रेता थीं।कोई भी व्यक्ति उनसे बहुत ही कम पैसे में नारियल के टुकड़े खरीद सकता था। लेकिन वह सिर्फ नारियल ही नहीं बेचती थीं, बल्कि उसकी रूई, छिलके और उन रेशों से बनी रस्सियाँ भी बेचती थीं। वह स्वयं अपने हाथों से कठोर रेशों को सूत में बदलने का कठिन कार्य करती थीं। और मैं, अपनी बालसुलभ जिज्ञासा से भरी आँखों से, उनकी फुर्तीली उंगलियों को देखते हुए चमत्कृत होता कि कैसे वह लगभग कुछ न होने से कुछ बना रही थीं।

उस मशीन का बड़ा पहिया, जिसे वह अपने बाएँ हाथ से चलाती थीं, लगातार घूमता रहता था और अपनी एकरस संगीतमय ध्वनि निकालता था। अक्सर ऐसा होता कि धीरे-धीरे मेरी आँखें बोझिल हो जातीं, और मैं अपना सिर उनके भरपूर जंघा की कोमल मोड़ में रखकर सो जाता।

उनका मज़बूत, गुदगुदा और सहज शरीर, जो लंबा और आत्मविश्वास से भरा था, मेरे बाल-मन की कल्पना में सुरक्षा और स्थिरता का भाव भर देता था।

हम बच्चों के लिए यह भगवा वस्त्रधारी महिला एक आकर्षक रहस्य थीं। यह रहस्य कभी हल नहीं हुआ, भले ही उनके बारे में तमाम फुसफुसाहटें और किवदंतियाँ सुनाई देतीं—कभी डरावनी, कभी श्रद्धापूर्ण, कभी रहस्यमयी और कभी अति-धार्मिक। लेकिन जो भी हो, वह साधारण मनुष्यों से कहीं ऊँची और विलक्षण थीं।

उनकी यह विशिष्टता लोगों की बातचीत में हर कदम पर झलकती थी। वे हमेशा उनके बारे में चर्चा करते, लेकिन यह चर्चा सिर्फ गपशप नहीं होती—बल्कि उसमें कहीं न कहीं आदर और विस्मय का भाव समाया रहता। यह अप्रत्यक्ष श्रद्धांजलि उन्हें दी जाती थी, लेकिन वह इसे हमेशा पूर्ण संतुलन और निर्मोही भाव से स्वीकार करतीं।

वह हमेशा अपने भीतर डूबी हुई लगतीं, मानो बाहरी दुनिया का उनके लिए कोई विशेष महत्व न हो। जो लोग उनके पास आते थे, या जो उनसे बहुत दूर रहते थे—दोनों के लिए वह समान रूप से अनजान और अप्राप्त थीं।

वह हमारे मोहल्ले की ही नहीं, बल्कि वाराणसी की एक जीवंत किंवदंती थीं।
और मैं ऐसा क्यों न कहूँ? वरना और क्या कारण हो सकता था कि शाम के समय माताएँ (और कभी-कभी पिता भी) अपनी बीमार संतानों और खुद अपनी तकलीफ़ों को लेकर उनके पास आते थे? वे अपने आसपास की दुनिया को भुलाकर, बस उनकी ओर बढ़ते चले आते—सिर्फ इस आशा में कि वह उन पर कुछ जल की बूंदें छिड़क दें। जब वह इस प्रकार विशिष्ट अनुष्ठानों में लीन होतीं, तो ऐसा लगता कि वह किसी अथाह गहराई में उतर गई हों। और जो लोग वहाँ उपस्थित होते, वे भी उनकी इस गहन तन्मयता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे।

लेकिन मैं उनकी ओर किसी रहस्यमय आकर्षण से खिंचता चला गया।

## निर्मल नग्नता (Naked Innocence)

बचपन के वे स्वर्णिम दिन थे, जब मैं पूरे दिन बिना किसी वस्त्र के घूमता-फिरता था, सिर्फ वही पहनकर, जो जन्म के समय मिला था।

मैं अपने इस स्वरूप से इतना प्रसन्न था कि माँ से कपड़े पहनने के बजाय उन्हें उतार फेंकने के लिए संघर्ष करता।

बेचारी माँ! वह स्वाभाविक रूप से इस बेख़ौफ़ स्वतंत्रता से शर्मिंदा होतीं, जबकि मेरे हमउम्र साथी मेरी इन हरकतों से कभी चकित होते, कभी हतप्रभ—क्योंकि बाकी सभी को मैं एक सामान्य, प्यारा बच्चा लगता था।

मैं स्वाभाविक रूप से किसी भी आवरण से घृणा करता था।

मुझे आनंद आता था जब झुलसता हुआ सूरज मेरी नंगी त्वचा को चूमता।

मुझे लगता था कि त्वचा का असली उद्देश्य यही है—सूरज के स्पर्श का आनंद लेना।

मुझे हवा की लहरों को अपने ऊपर महसूस करना अच्छा लगता था, और खुले ज़मीन पर लोटना भी। मेरी नज़र में हरी घास का मेरी त्वचा से सबसे नज़दीकी संबंध था, क्योंकि मुझे लगता था कि शरीर की जड़ें और घास की जड़ें एक ही प्रकृति की थीं।

और पानी मुझे बुलाता था—विशेष रूप से गंगा की वह विशाल, भव्य, प्रवाहमान धारा।

उसकी मखमली, शीतल, तरल लहरों में तैरना, उसमें बिना रुके बार-बार लोटना, जैसे भोर की किरणें उसकी सतह पर थिरकती हैं—यह सब मेरे लिए त्वचा का एक मधुर संगीत था, जो मेरे संपूर्ण स्नायुतंत्र तक पहुँच जाता था।

नग्न होकर इन जलधाराओं में बहने से अधिक सुखद कुछ नहीं था। गंगा का जल हमेशा मुझे स्नेहपूर्वक अपने भीतर समा लेने को तत्पर रहता।

नदी कितनी दयालु थी, जो वस्त्रों से ढके होते हैं, वे प्रकृति को पूरी तरह से आत्मसात नहीं कर सकते। मैं स्वयं को सूर्य, वायु, पृथ्वी और जल का निकटतम साथी मानता था।

प्रकृति के प्रति यह निकटता, और वस्त्रों में बंधे मानव समाज के मानकों के प्रति मेरी घोर उपेक्षा, मुझमें एक निर्भीक स्पष्टवादिता विकसित कर रही थी।

इसी ने मेरे भाषा-शैली, व्यक्तित्व और कल्पना-शक्ति को गढ़ा।

मेरे मित्र मुझे अक्सर निडर और दुस्साहसी कहकर पुकारते थे, परंतु मैं इस बात को लेकर हमेशा संशय में रहता था।

आज, जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे अपना वास्तविक स्वभाव अंतर्मुखी ही प्रतीत होता है।

शायद इस समाज द्वारा मुझ पर थोपे गए 'शैतानी' स्वरूप ने ही भगवा वस्त्रधारी महिला को मेरे प्रति आकर्षित किया।

वह धीरे-धीरे मुझे अपने निकट बुलाने लगीं। जल्द ही, मैंने स्वयं को उनकी छोटी-सी कुटिया के भीतर के एकांत कोने में बैठा पाया— एक ऐसा स्थान, जिसकी कल्पना तो बहुतों ने की थी, परंतु जिसे देखने का अवसर किसी और को नहीं मिला था।

इस 'असाधारण' महिला की स्वीकृति पाकर, मैं मोहल्ले का एक विशिष्ट व्यक्ति बन गया। उनके प्रति जो आदर, रहस्य और विस्मय लोगों के मन में था, उसका एक अंश मुझ पर भी पड़ने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कहीं से कोई दिव्य आभा मुझ पर अचानक उतर आई हो।

लोगों की दृष्टि में, मैं अब साधारण नहीं रहा—मैं 'असाधारण' बन गया।

मेरे साथ सम्बंध जोड़ने की चाहत अब केवल बच्चों तक सीमित नहीं थी—यहाँ तक कि मेरे बड़े भी मेरा साथ चाहते थे।

अब मुझे उस रहस्य की प्रतिछवि माना जाने लगा, जो स्वयं भगवा वस्त्रधारी महिला में मूर्त रूप ले चुका था— वह महिला, जो अपनी एकाकी उपस्थिति से ही जानी जाती थी, न कि अपनी संगति से। लोग उसके शब्दों से अधिक, उसके मौन से परिचित थे।

उसकी आँखें उसकी जीभ से अधिक बोलती थीं। वह बहुत कम नाराज़ होती थी, लेकिन उसकी मुस्कान तो और भी दुर्लभ थी। लोगों ने उसकी उपेक्षाओं को सहजता से स्वीकार किया,

परंतु जब उसने किसी को स्वीकार किया, तो यह सभी के लिए चौंकाने वाली बात थी। वह रहस्यमयी भगवा वस्त्रधारी महिला,

जो हमेशा सबसे दूरी बनाए रखती थी,
जिसने कभी किसी से मित्रता नहीं की,

उसने एक नंग-धड़ंग गली के बच्चे को अपना लिया।

और तब...

सड़क पर खड़े आश्चर्यचकित दर्शकों की नज़रों में, मैं अचानक बहुत बड़ा और ऊँचा दिखने लगा। और मैं स्वयं को अत्यंत धन्य महसूस करने लगा।

## मेरा तांत्रिक चाचा (My Tantrik Uncle)

इसी मोड़ पर वह घटना घटी।

मेरे चाचा को एक प्रतिष्ठित तांत्रिक माना जाता था। तंत्र की साधना में वह सिद्धहस्त थे, और हर कोई उन्हें इस क्षेत्र में एक गुरु का दर्जा देता था। उनकी निजी जीवनशैली अत्यंत सादा और मर्यादित थी, और वह ब्राह्मणीय अनुशासन के प्रति अत्यधिक निष्ठावान थे। इसी कारण जो लोग तंत्र को जानते थे, वे उनकी ओर विशेष रूप से आकर्षित होते थे।

आधुनिक भारत के महानतम तंत्र-विद्वानों और साधकों में से एक थे महामहोपाध्याय डॉ. गोपीनाथ कविराज। वह एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित विद्वान और तांत्रिक थे। मैं स्वयं इस बात का साक्षी हूँ कि वह मेरे चाचा के प्रति अत्यंत श्रद्धाभाव रखते थे।

मेरे चाचा की लंबी, लहराती सफेद केशराशि उनके कंधों से नीचे तक झूलती थी, और उनकी रेशमी सफेद दाढ़ी उनके व्यक्तित्व को और प्रभावशाली बनाती थी।

उनकी चमकदार त्वचा और हलका रंग उन्हें वैदिक ऋषियों या ज़ेन्द-अवेस्ता के पवित्र संतों की तरह प्रतीत कराता था। भगवा वस्त्रधारी महिला के प्रति मेरी निकटता उनकी नजरों से बच नहीं सकी। एक दिन उन्होंने इस बढ़ते संबंध पर एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की—एक ऐसा संबंध, जो उन दिनों एक सच्चे आस्थावान ब्राह्मण परिवार में स्वीकार्य नहीं था।

क्यों?

क्योंकि उसका अतीत संदिग्ध था। लोगों का मानना था कि वह 'स्कारलेट लेटर' वाली स्त्रियों के वर्ग से आती थी। लेकिन क्या यह सच था, या सिर्फ सुनी-सुनाई बातों पर आधारित एक अनुमान?

वास्तव में वह कौन थी?

सामाजिक दृष्टि से, और जाति के अनिवार्य प्रश्न को ध्यान में रखते हुए, उसका क्या स्थान था? उसका अतीत क्या था? भगवा वस्त्रधारी महिला के रूप में उसका जन्म नहीं हुआ था। ऐसा कोई भी जन्म नहीं लेता। भगवा वस्त्रधारी महिला के रूप में उसका जन्म नहीं हुआ था। ऐसा कोई भी जन्म नहीं लेता। या फिर कुछ और भी गंभीर था? क्या वह वास्तव में विवाह के बंधन में बंधी थी, लेकिन बाद में उसे छोड़ दिया गया था? क्या वह समाज से निष्कासित कर दी गई थी? यही सब विचार और घटनाएँ उसे इस मानव महासागर में एक अलग-थलग द्वीप की तरह रहने के लिए मजबूर कर रही थीं। वह एक असाधारण व्यक्ति थीं, जिनका अतीत भी उतना ही असाधारण था। एक ऐसा अतीत, जो उनके रहने की अंधेरी कोठरी से भी अधिक धुंधला और रहस्यमय था। बाद के वर्षों में, मुझे यह पता चला कि वह वास्तव में समाज की दृष्टि में

'पतित' स्त्री थी। (लेकिन मेरे लिए, वह एक 'पतित देवदूत' थी।) उसने अपने विधवा युवावस्था से भागकर एक बहुत ही निम्न जाति के पुरुष के साथ जीवन की तलाश की, लेकिन बाद में वह भी उसे छोड़कर चला गया। कुछ समय तक वह इस संसार की बेरहम सड़कों पर भटकती रही, लेकिन अंततः उसने अपने भीतर की शक्ति को पहचाना, अपनी खोई हुई पहचान को फिर से पाया, और अपने वास्तविक तेज और गरिमा में पुनः स्थापित हुई।

उसने स्वयं को समाज से निर्वासित कर लिया था,और हिमालय की दूरस्थ और अज्ञेय शांति में चली गई। विशेष रूप से हिमालय के पूर्वी छोर में उसने अपनी शरणगाह बनाई, लेकिन अंततः वह वाराणसी की शांत रहस्यमयी गोद में स्थायी रूप से बस गई। यह सब मुझे तब पता चला जब उसने अपनी अंतिम विदाई से कुछ महीने पहले, अपने जीवन के सबसे गहरे रहस्यों को मेरे साथ साझा किया।

निश्चित ही मेरे चाचा इस कहानी के कुछ पहलुओं से परिचित रहे होंगे। शायद इसी कारण उनकी टिप्पणी इतनी तीखी और सारगर्भित थी। यह अपने आप में तांत्रिक जीवन की पूर्ण स्वतंत्रता का प्रमाण है। जहाँ कोई सामाजिक प्रतिबंध नहीं होते, बल्कि साधना और सिद्धि केवल सच्ची उपलब्धि के आधार पर आंकी जाती है। एक तांत्रिक के लिए कोई सीमाएँ नहीं होतीं। वह किसी बंधन को स्वीकार नहीं करता। वह उन सभी सामाजिक जंजीरों को तोड़ देता है, जो मनुष्य की मूल पहचान को दबाने के लिए बनाई गई हैं।

**"**वह हमारी नहीं है**"**

"यह तुम्हारा सौभाग्य है," मेरे चाचा ने कहा, कि उसने तुम्हें चुना है, युवक। लेकिन न तो अपना समय व्यर्थ करो, न ही उसके प्रेम को। इसे समझो, इसे आत्मसात करो, और उसका आभार मानो।" जब मैं यह सोच ही रहा था कि 'समय का सदुपयोग' कैसे करूँ, तो उन्होंने आगे कहा, "उसकी आवाज़ दिव्य है। वह महान स्तुतियाँ गाती है।उन्हें सीखो, और तुम पवित्रता की ओर बढ़ने का एक दिव्य मार्ग सीख जाओगे।"

"इसके अलावा, यह मत भूलो कि उसके भीतर जो आध्यात्मिक गरिमा तुम देखते हो, उसके साथ-साथ वह तांत्रिक अनुष्ठानों और गूढ़ संस्कारों की गहरी जानकार भी है। यदि तुम चाहो, तो यह ज्ञान तुम्हें बहुत आगे तक ले जा सकता है। और सबसे महत्वपूर्ण बात—वह संस्कृत की एक महान विदुषी है।इस बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।"

वह एक क्षण रुके, फिर बोले—
"और यदि देवताओं की कृपा हुई, तो जो कुछ संगीत से प्रारंभ होगा, वह उन खजानों तक पहुँच सकता है, जिनकी खोज में सभी योगी भटकते हैं, लेकिन बहुत कम को वे प्राप्त होते हैं।"

"कैसा खजाना?"
मैं तुरंत पूछ बैठा,
जैसे कोई जंगली शिकारी अचानक अपने शिकार की गंध पाकर चौकन्ना हो जाए। मेरे चाचा कुछ देर तक मौन रहे।
उन्होंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठा दीं, जैसे कुछ खोज रहे हों। फिर उन्होंने गंभीर और गूंजती आवाज़ में कहा—
"वह हमारी नहीं है।
वह अनंत की है।
वह समय और अंतरिक्ष से एकाकार है।" "क्या यह तुम्हें समझ में आता है?"

"यदि वह तुम्हारी मार्गदर्शक बनी, तो वह तुम्हें गूढ़ मौन के महासागर और स्वर्गीय ध्वनियों के संसार में ले जा सकती है। तुम दोनों एक साथ एक ऐसी यात्रा पर निकल सकते हो, जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं और केवल कुछ ही ने इसे सुना या पुस्तकों में पढ़ा है। तुम्हारे पास एक अवसर है। इसे व्यर्थ मत जाने दो।"

## "समय और अंतरिक्ष से एकाकार!"

“अंतरिक्ष और समय के साथ एक!”

शब्द मेरे मस्तिष्क में गूंजने लगे। आने वाली चीज़ों की अजीबोगरीब गड़गड़ाहट ने मेरे वर्षों की शांत मासूमियत को भंग कर दिया।
जल्द ही अंधेरा हो गया। शाम की प्रार्थना का समय हो गया था। लेकिन मेरा मन कहीं दूर था, बहुत दूर। मैं चुपचाप रेलिंग के उस पार बैठा था, उस राजसी नदी को देख रहा था जो कहीं से भी बह कर आती थी, और समय और स्थान के पार कहीं नहीं जाती थी।
मैं भीतर खो गया था। मैंने एक स्पर्श महसूस किया।
यह मेरी प्यारी बहन थी जो हमेशा मेरी दूसरी दुनिया की वजह से चिंतित रहती थी। प्रार्थना में मेरी अनुपस्थिति ने उसे झकझोर दिया था। मैं उसके साथ मंदिर में गया और दूसरों के साथ शामिल हो गया। जल्द ही अनुष्ठानिक प्रार्थनाओं की पीड़ा खत्म हो गई; और रात का खाना खाया गया।
मैं उत्सुकता से अकेले रहना चाहता था। मैं अपने लिए पूरा समय चाहता था। मैंने खुद को फिर से रेलिंग पर अपनी पसंदीदा जगह पर बैठा पाया, अंधेरे में बहते पानी को देख रहा था, और उस अजीब वाक्यांश के आंतरिक अर्थ और महत्व को देख रहा था जिसने मुझे अचानक मेरी परिचित दुनिया से बहुत दूर फेंक दिया था: "अंतरिक्ष और समय के साथ एक!"
मुझे कौन बता सकता था कि इसका क्या मतलब है?

अंतरिक्ष और समय के साथ एकाकार
थोड़ी ही देर में मेरी बहन ने मुझे बिस्तर पर बुलाया।

लेकिन मुझे चैन नहीं था। अंधेरे कमरे में, जहाँ मैं अपने भाइयों और बहनों के साथ फर्श पर सोता था, मेरा शरीर धीरे-धीरे गर्म हो रहा था। “अंतरिक्ष और समय के साथ एकाकार”—ये शब्द मेरे मन में अजीब तरह से गूँजने लगे, मेरी आँखें पूरी तरह खुली थीं, और मेरा दिमाग पूरी तरह जाग्रत था।

“अंतरिक्ष और समय के साथ एकाकार!” ये शब्द गहरे अर्थ से भरे हुए थे। मैंने सोचा, “मुझे अभी, इसी क्षण इनका अर्थ खोजना होगा, एक पल की भी देरी नहीं कर सकता। मुझे आगे बढ़ना होगा। यह मेरा निर्णय होगा।” मैंने प्रतीक्षा की।

जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि मेरे आसपास की दुनिया—मेरे परिवार के सदस्य और मेरे कमरे में सोने वाले सभी लोग—गहरी नींद में थे। मैंने यह सुनिश्चित किया कि कोई मुझे देख नहीं रहा था। बिस्तर मुझे असहज महसूस हो रहा था, और मैं अंधेरे में किसी बिल्ली की तरह चुपचाप उससे बाहर निकल आया।

चुपके से, सावधानीपूर्वक, मैंने दरवाजा खोला और छत पर आ गया, जो तब चाँदी जैसी चंद्रमा की रोशनी में नहाई हुई थी।

शांत बहती हुई गंगा पारे की नदी जैसी लग रही थी। मेरी नसों में एक अजीब-सी सिहरन दौड़ गई। दूर, सात मंज़िला पीले मकान की छत पर, गोपाल—एक आधा पागल तंबाकू बेचने वाला—चाँदनी रात के इस जादुई सौंदर्य का उत्सव मनाने के लिए बांसुरी पर मधुर धुनें बजा रहा था।

मेरे भीतर कुछ हलचल होने लगी। मैं किसी महत्वपूर्ण खोज के कगार पर था।

यह केसरिया वस्त्रधारी स्त्री कौन थी? उसके बारे में बहुत कम ही लोग बात करते थे। फिर भी, जिस श्रद्धा से मेरे चाचा ने उसका ज़िक्र किया था, उससे न केवल उनके गहरे सम्मान का पता चलता था, बल्कि यह भी स्पष्ट होता था कि उन्होंने मुझ पर विश्वास करते हुए मुझे उसका परिचय दिया था।

मुझे चिंता के साथ याद आया कि उन्होंने मुझे आगाह किया था कि मैं उसे हल्के में न लूँ और न ही उसे सामान्य रूप से स्वीकार करूँ।

वह मुझे किसी गुप्त खजाने के समान प्रतीत हुई। जैसे किसी गुफा में सदियों से छुपे हुए रहस्यमय रत्न होते हैं, वैसे ही उसकी कोमल त्वचा और उसके केसरिया वस्त्रों में भी कोई प्राचीन गूढ़ ज्ञान छिपा था, ठीक वैसे जैसे अलादीन के खजाने की गुफा।

"खुल जा सिमसिम!"—जादुई शब्द। "अंतरिक्ष और समय के साथ एकाकार!"—फिर से जादुई शब्द।

और वह मेरी प्रिय बुआ थीं—वही नारियल वाली महिला। समाज से बहिष्कृत, तिरस्कृत, और फुसफुसाहटों में उल्लेखित एक जीवित रहस्य।

अचानक, मुझे एक परिचित स्पर्श का एहसास हुआ।

## मेरे पिता

उन्होंने मेरी ओर देखा और मेरी आँखों में झाँका। अब आँसू रोके नहीं जा सकते थे। उनके स्पर्श में एक विशेष आकर्षण था।

उन्होंने कोई प्रश्न नहीं पूछा। बस प्रतीक्षा की।

मैंने उनके स्नेहमय हाथों को अपने हाथों में लिया, और केवल हल्का सा दबाव दे पाया।

"मेरा बेटा क्यों व्याकुल है?" उनकी कोमल आवाज़ चारों ओर फैली हल्की रोशनी के साथ घुल गई। दूर बांसुरी की धुन अभी भी गूँज रही थी।

"मुझे नहीं पता; मैं बहुत व्याकुल महसूस कर रहा हूँ।"

"तो तुम व्याकुल हो। मैं भी हूँ, हालाँकि उतना नहीं।"

चाँदनी में नहाई हुई बहती नदी को सौ फुट या उससे अधिक ऊँचाई से देखने में कुछ तो रहस्यमय आकर्षण होता है, जैसे कोई सम्मोहन की शक्ति। जब कोई उस प्रवाहित होती प्रकाशमयी शोभा को देखता है, तो वह विस्मय में डूब जाता है।

इसे प्रकृति में कविता कहा जा सकता है—गहनता का आकर्षण, प्रकाश की एक शांति जो मन पर प्रतिबिंबित होती है। क्या यह असीम से असीम तक का आह्वान था?

"तुम बिस्तर पर जाने की इच्छा नहीं रखते?" उनके स्नेहमयी स्वर ने पूछा। उनकी आवाज़ दूध की तरह कोमल, शांत और सांत्वना देने वाली थी।

"बिस्तर?" मैंने चौंककर कहा। "ओह नहीं। लेकिन शायद आप मुझे कुछ बता सकते हैं।

"तुम्हें शांति देने के लिए?"

"हाँ, मुझे शांति देने के लिए, पिताजी।"

उन्होंने मेरी ओर देखा। चाँदनी उनकी चाँदी जैसी चमकती लटों और पैगंबर जैसी दाढ़ी पर पड़ रही थी। उनका पतला शरीर, जो मेरी आँखों के लिए हमेशा से परिचित था, किसी अजीब से आकार में चमक रहा था। वे किसी खोई हुई जाति के कुलपति जैसे प्रतीत हो रहे थे, जैसे वे किसी और युग से प्रकट हुए हों।

"क्या बात है?"

"केसरिया वस्त्रधारी स्त्री... मेरी बुआ..." और मैं रुक गया। मुझे नहीं पता क्यों।

"उसके बारे में क्या?" उन्होंने इस बार थोड़ी उत्सुकता से पूछा। और मैं उस पल की अचानक उत्पन्न हुई गंभीरता को महसूस कर सकता था।

हालाँकि वे मेरे पिता थे, लेकिन इस समय वे अलग ही प्रतीत हो रहे थे, उनका स्वर भी भिन्न था।

मुझे पूरा विश्वास था। वे भी उसके रहस्य को जानते थे।

लगभग युगों की प्रतीक्षा के बाद, मैंने खुद को संभाला और कहा, "वह अंतरिक्ष और समय की है; वास्तव में, वह अंतरिक्ष और समय के साथ एकाकार है। क्या ऐसा नहीं है?"

मेरे लिए यह कहना एक बड़ी बात थी। और मैंने महसूस किया कि मेरे पिता भी तनाव में आ गए थे, जैसे सितार की एक तार जिसे बजाने से पहले खींचा जा रहा हो।

चारों ओर गहरा सन्नाटा छा गया, जब तक कि उनकी कोमल आवाज़ ने नहीं पूछा, "तुमसे यह किसने कहा?"

उन्हें पता था कि मैं खुद से ये शब्द नहीं बना सकता था।

फिर उन्होंने मुझे हल्के से गले लगाया, और उसके बाद एक और गहरे अर्थ से भरा स्पर्श दिया। क्या उनकी आँखें भी नम हो गई थीं? मैं निश्चित नहीं था। उनकी आँखों में किसी अजीब चमक के साथ नमी थी। उस क्षण, वे मेरे लिए किसी और दुनिया के पिता बन गए थे।

"तुम्हारे चाचा तुमसे बहुत प्रेम करते हैं। वह एक दिव्य व्यक्ति हैं। उनके शब्द ईश्वर के शब्दों के समान हैं। इस घर में, इस संसार में, उनके जैसा कोई नहीं है... वह सही हैं। वह सत्य हैं। उन्हें तुम्हारी विशेष चिंता है; इसलिए उन्होंने तुम पर विश्वास किया है। वह इस रहस्यमयी स्त्री की पहचान किसी और को प्रकट नहीं करेंगे..."

"लेकिन तुम इस रहस्य को जानने के लिए व्याकुल हो। तुम इसे समझना चाहते हो। अब सुनो। क्या तुम उस नदी को देख रहे हो? ध्यान से देखो। यह कहाँ से आती है?"

"हिमालय से," मैंने कहा।

"क्या तुमने इसे स्वयं देखा है, या केवल इसके बारे में सुना है? क्या हिमालय तुम्हारे लिए उसी तरह वास्तविक है जैसे यह नदी है? या फिर तुमने अपने मन में बस एक विशाल, पहाड़ी, वनाच्छादित और बर्फ से ढकी भूमि की कल्पना कर ली है?" या यह तुम्हारे लिए केवल एक नक्शे पर खींची गई एक रेखा मात्र है?"

"आपका मतलब है कि क्या मैं पूरे हिमालय को एक ही समय में देख सकता हूँ? नहीं। मैं एक बार आपके साथ वहाँ गया था, और मैंने विशाल पहाड़ देखे थे। लेकिन पूरे हिमालय को एक ही समय में कौन देख सकता है?"

"तो फिर यह तुम्हारी समझ में कहाँ और कैसे मौजूद है?"

"समझ? अस्तित्व?" मैंने बुदबुदाया। लेकिन मैंने हार नहीं मानी और आगे कहा, "समझ ही अस्तित्व है। अस्तित्व भी एक प्रकार की समझ है... मैं उलझ रहा हूँ, पिताजी। मैं कल्पना करता हूँ, और वह अस्तित्व में आ जाता है। मैं समझता हूँ, और वह वास्तव में मौजूद होता है।"

"सही कहा। तुम उलझे हुए नहीं हो। सच्चे बने रहो, और तुम्हें सब कुछ दिखाई देगा। सत्य ही वह अमोघ नेत्र है—तीसरा नेत्र। सत्य का साक्षात्कार करते रहो, और तुम सच्ची समझ को प्राप्त करोगे। तुम सम्पूर्ण रूप से समझ जाओगे..."

"हमारी आँखें समस्त सत्य को देखने योग्य नहीं हैं, न ही वे इसकी पूरी क्षमता रखती हैं। संपूर्णता केवल समझ में ही मौजूद होती है। यदि वह कहीं नहीं होती, तो फिर वह कहीं भी नहीं होती। हमारी इंद्रियाँ संपूर्णता को देखने या समझने में सक्षम नहीं हैं। वे वास्तव में ऐसे कार्य के लिए बनी ही नहीं हैं। इंद्रियाँ केवल सतही रूप से काम कर सकती हैं..."

"सतही रूप से? मैं उलझन महसूस कर रहा हूँ। मेरे लिए तो इंद्रियाँ ही सब कुछ हैं।"

"अभी हाँ, लेकिन हमेशा के लिए नहीं। जैसे-जैसे तुम विकसित और परिपक्व होते जाओगे, तुम समझोगे कि इंद्रियों द्वारा अनुभव किया गया सत्य, वास्तव में सत्य नहीं है। प्रकृति और संसार की सुंदरता भी केवल सतही है। इसके परे भी एक सौंदर्य है, जो इंद्रियों की सीमा से परे है। वही वास्तविकता है।"

"समझ ही अस्तित्व है। वास्तविक अस्तित्व। जो कुछ भी वास्तव में समझता है, वही मूल और सबसे विश्वसनीय इंद्रिय है; न कि वे इंद्रियाँ जिन्हें तुम इंद्रियाँ मानते हो। जब हम अधिक देखना चाहते हैं, तो अपनी आँखें बंद कर लेते हैं... इंद्रियाँ पर्याप्त नहीं हैं। इंद्रियों के माध्यम से सत्य को समझने की कोशिश करना वैसा ही है जैसे किसी सुई से बहती गंगा के जल को जोतने का प्रयास करना..."

"लेकिन निराश मत हो। ईश्वर दयालु हैं। ईश्वर ने मनुष्य को जीवन की सभी आवश्यकताओं से संपन्न किया है, और उससे भी अधिक; यहाँ तक कि उस जीवन के लिए भी जो भौतिक जीवन से परे है, जिसकी हम परवाह नहीं करते। इस जीवन के भीतर एक और जीवन है। जब यह बाहरी जीवन सभी जरूरतों को पूरा कर देता है, तब भी कुछ न कुछ अधूरा रह जाता है। यही जीवन की समस्या है। आज रात तुम उसी अधूरेपन को महसूस कर रहे हो; जबकि तुम्हारे पास जीवन की सभी आवश्यकताएँ मौजूद हैं—भोजन, आश्रय, नींद और संगति।"

"मनुष्य के पास एक और इंद्रिय होती है, जो कहीं अधिक स्थायी होती है—वह इंद्रिय जो आंतरिक प्रकाश के साथ जाग्रत होती है। और उसी के माध्यम से मनुष्य संपूर्ण सत्य को देख सकता है... तुम नहीं जानते कि गंगा कहाँ से आती है, न ही जानते हो कि वह कहाँ जाती है। यह सब केवल 'जानकारी' है, वे विचार हैं जो गढ़े गए हैं... लेकिन यह 'अनुभव' नहीं है। तुम संपूर्ण गंगा का अनुभव नहीं कर सकते, क्योंकि तुम्हारी इंद्रियाँ सीमित हैं।"

"इंद्रियाँ केवल हमारे जीवन के कुछ सतही तथ्यों को ग्रहण करने के उपकरण मात्र हैं। हम इन्हें 'जानकारी' कहते हैं, न कि 'अनुभव'। अनुभव इन इंद्रियों पर निर्भर नहीं होते। अनुभव वह है जिसे केवल तुम स्वयं प्राप्त कर सकते हो, और वह इंद्रियों से परे होता है। उसे आत्मसात करो। वह तुम्हारा एक अभिन्न अंग बन जाएगा।"

"तुम वही हो, जो तुम्हारे अनुभव हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई तुमसे घृणा करता है, तो तुम्हें पीड़ा होती है। और इस अनुभव में कोई भी इंद्रिय-इंद्रिय (जैसे आँख, कान) भाग नहीं लेती। तुम देख रहे हो? एक और इंद्रिय होती है—*अंतःकरण*। तुमने इसके बारे में सुना होगा। इसका अर्थ है 'जो भीतर कार्य करता है'। हमारी भाषा इतनी सत्यपूर्ण और संवेदनशील है कि उसे झूठ बोलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती..."

"यही वह आंतरिक इंद्रिय है—*अंतःकरण*। वह इंद्रिय जिसे तुम केवल महसूस कर सकते हो, लेकिन उसे कहीं देख या छू नहीं सकते, जैसे कि तुम अपनी आँखें, जीभ या कान देख सकते हो। तुमने अपनी समझ के आधार पर कहा कि गंगा हिमालय से आती है और समुद्र में समा जाती है। लेकिन तुमने इसे स्वयं कभी देखा नहीं, फिर भी तुम इसे लेकर इतने निश्चित हो। है ना? यही तुम्हारी अन्य इंद्रिय है। लोग इसे 'तर्क' कहते हैं। यह भी ज्ञान प्राप्त करने का एक उपकरण है, लेकिन इंद्रियों की तरह ही इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। इसे हम आगे समझेंगे..."

"हाँ, तर्क; मैं तर्क को जानता हूँ। लेकिन यह भी सीमित है..." मैंने यंत्रवत दोहराया।

"केवल तर्क ही नहीं, हमारी समझ भी सीमित है। जानते हो क्यों? क्योंकि हम स्वयं अधूरे और सीमित हैं। मनुष्य जन्म से ही अपूर्ण होता है। उसका भाग्य है कि वह स्वयं को पूर्णता की ओर ले जाए। पूर्ण मनुष्य बनना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। संपूर्ण मनुष्य बनना उसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है; और उसका लक्ष्य है इस पूर्णता तक पहुँचना।"

मैं इससे पहले कभी इतना भ्रमित नहीं हुआ था। मैं अपने पिता द्वारा बोले गए हर शब्द को समझ रहा था, लेकिन फिर भी वे मुझे बहुत अपरिचित लग रहे थे; जैसे वे कोई और ही व्यक्ति हों। वे कुछ अजीब और गूढ़ भाषा का उपयोग कर रहे थे।

मुझे एहसास नहीं हुआ कि मैंने वार्तालाप की कड़ी कहाँ खो दी। मैं आगे बढ़ा, फिर उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन फिर खो गया। मैं पूरी तरह उलझन में था। मेरे सामने जो पिता खड़े थे, वे मेरे जाने-पहचाने पिता नहीं लग रहे थे—वे किसी अजनबी की तरह प्रतीत हो रहे थे।

"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा," मैंने किसी तरह कहा।

"फिर भी, तुम्हारा तर्क मौजूद है। क्योंकि तुम खुले विचारों वाले, निष्पाप और ईमानदार हो। क्योंकि तुम मुझसे प्रेम करते हो और मुझ पर विश्वास करते हो। और क्योंकि तुम्हारे भीतर एक गहरी बेचैनी है, इसलिए तुम सीधे और सरलता से यह स्वीकार कर रहे हो कि तुम समझ नहीं पा रहे हो। लेकिन बहुत से लोग ऐसा कहने से डरते हैं।"

"जो भी हो, अब तुम यह जान चुके हो कि तर्क भी असफल हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे आँखें और कान असफल होते हैं। बच्चों में तर्क की असफलता वैसे ही होती है जैसे वृद्धों में आँखों और कानों की। फिर भी, इनकी असफलता यह प्रमाणित करती है कि ये सभी सीमित और अविश्वसनीय हैं।"

"हाँ, वे वास्तव में सीमित हैं। तो अब?"

वे मुस्कुराए, और मेरे कंधे पर हल्का सा दबाव डालकर मुझे मेरी अधीरता की याद दिलाई। मैं अब इस तनाव को और सहन नहीं कर सकता था। मैं और अधिक ज्ञान के लिए लालायित था।

वे आगे बोले।

"कभी भी अधीर मत बनो। अधीरता आत्मबोध की सबसे बड़ी शत्रु है। धैर्य और अभ्यास—ये दो सिक्के के वे पहलू हैं, जिन्हें हमें असीमित ज्ञान, या अनंत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए चुकाना पड़ता है..."

"तुम गंगा को देख रहे हो?... हाँ, तुमने अभी-अभी कहा कि तुम इसे देख सकते हो। और फिर तुमने यह भी कहा कि जो तुम देख रहे हो, वह पूरी गंगा नहीं है, बल्कि केवल उसका एक छोटा सा भाग है, जिसे एक समय में देखा जा सकता है। गंगा और समय दोनों ही बहते जा रहे हैं, और हमें इनका केवल आंशिक अनुभव ही हो सकता है—वह भी एक समय में केवल एक अंश, जबकि दोनों एक साथ प्रवाहित हो रहे हैं।"

"अब तुम देख सकते हो कि हमारी समझ कितनी सीमित है? वास्तविक गंगा की तरह, वास्तविक समय भी असीमित है। जिसे तुम 'सीमा' कहते हो, वह केवल तुम्हारे मन में है, या वह जो तुम्हारे तर्क में समा सकता है।"

"अच्छा। लेकिन तुम यह भी जानते हो कि तुम्हारा मन और तुम्हारा तर्क भी सीमित हैं। दोनों अधूरे और अपूर्ण हैं। क्योंकि तुम भी अधूरे हो; लेकिन अयोग्य नहीं। तुम्हारे पास अपने पूर्ण अस्तित्व की ओर बढ़ने की पूरी योग्यता है। तुम एक मनुष्य हो। यह तुम्हारा अधिकार है।"

मुझे लगा कि मैं कुछ समझने लगा हूँ। लेकिन वे मुझसे कहीं तेज़ थे।

"रुको। अधीर मत बनो। मैं तुम्हें भ्रमित नहीं करना चाहता। ध्यानपूर्वक सुनो। *संगच्छध्वं... संवदध्वं... सं नो मनांसि जानताम्...* (आओ, हम एक साथ चलें; एक साथ बोलें; और एक साथ अपने मन का विकास करें...)। यह *उपनिषद* का वह परिचित मंत्र था, जिसे हम संस्कृत कक्षा में प्रतिदिन पढ़ते थे। लेकिन इस क्षण, जब उन्होंने इसे शांत आकाश के नीचे गाया, तो इसने मेरे लिए एक नया अर्थ ग्रहण कर लिया।"

"तुम भी, मेरी ही तरह, अधूरे हो। लेकिन एक अंतर है—तुम मनुष्य हो। मनुष्य होने के नाते, तुम्हारा भाग्य है कि तुम अपने खोए हुए *स्वयं* को खोजो और पूर्णता प्राप्त करो। तुम्हारे भीतर उसी *स्वयं* का एक अंश सोया हुआ है। सोया हुआ है—खोया नहीं है। अनुपस्थित नहीं है। मृत नहीं है। तुम इसे अपने प्रयासों से पुनः प्राप्त कर सकते हो। मैं भी ऐसा कर सकता हूँ। जैसा कि मैंने पहले कहा, यह तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। क्या तुम समझ रहे हो?"

"तुम इस *स्वयं* को जान सकते हो। तुम समग्रता को, सम्पूर्णता को, *सर्व* को समझ सकते हो। तुम वहाँ बहती गंगा को देख रहे हो; लेकिन इस दृश्य जलधारा से भी अधिक वास्तविक एक और गंगा है। वह गंगा सभी जलधाराओं का स्रोत है—वह स्रोत, जहाँ से सारी नदियाँ जन्म लेती हैं और जिसमें अंततः वे विलीन हो जाती हैं।"

"याद रखना, और यह मत भूलना कि मैं अपने बेटे को ग़लत मार्ग पर नहीं ले जाऊँगा—तुम उस जल में देख सकते हो, तैर सकते हो, उसे महसूस कर सकते हो, पी सकते हो, और उसमें जी सकते हो। उस स्रोत में जीना एक संभावना है; और तुम्हें इसे स्वीकार करना होगा। यही कारण है कि तुम एक मनुष्य हो।"

यह एक लंबा और गहरा संवाद था; और पूरी बातचीत के दौरान मैं अपनी साँसें रोके बैठा रहा, मुश्किल से हिलने-डुलने में सक्षम था। मैं स्तब्ध था।

लेकिन क्या हम विषय से भटक नहीं गए?

मैंने ज़िद भरे स्वर में पूछा, "पर बुआ के बारे में क्या?"

"हाँ, तुम्हारी बुआ! अब मैं उसके बारे में बात कर सकता हूँ। वह वही है जो, जब चाहे, उस स्रोत में रह सकती है, उसमें तैर सकती है, और उसका आनंद ले सकती है।"

"वह उस अनंत से जुड़ी हुई है, जो सीमित में असीमित है। जिस तीव्र प्रवाह को तुम गंगा कहते हो, वह शाश्वत गति है; वह समय के साथ एकाकार है; और वह इसे जानती है। वह उसी में जीती है। वह स्वयं समय है। उसके लिए समय में कोई बाधा नहीं है।"

## खज़ाना

मंत्रमुग्ध होकर मैं केवल दोहरा सका, "वह समय है!"

"और वह केवल समय ही नहीं, बल्कि अंतरिक्ष भी है। वह समय और अंतरिक्ष के साथ एकाकार है! वह निरंतरता है। उसके लिए न जन्म है, न मृत्यु। वह अपने शरीर को केवल एक शरीर के रूप में देखती है, इससे अधिक कुछ नहीं। वह उसकी देखभाल वैसे ही करती है, जैसे हम अपने रहने के कमरे या कपड़ों की करते हैं। हम एक कमरे में प्रवेश करते हैं और उससे बाहर निकलते हैं। उसी तरह, हम इस संसार में आते हैं और इससे चले जाते हैं। लेकिन इसका जन्म और मृत्यु से कोई संबंध नहीं है, जैसा कि हम जन्म और मृत्यु को समझते हैं। कपड़े पहनना या उन्हें उतार देना, जन्म और मृत्यु से संबंधित नहीं है।"

"वह जानती है कि जीवन एक शक्ति है, और यह कभी समाप्त नहीं होता। वह अनंत समय से जुड़ी हुई है, अनंत जीवन से जुड़ी हुई है; वह लहरों का हिस्सा नहीं है। वह उस महासागर से संबंध रखती है, जो कभी नहीं बदलता। वह उसी में है—समय और अंतरिक्ष में। वह स्वयं वही है।"

"वहाँ देखो, चंद्रमा। देखो, वह कैसी रोशनी बिखेर रहा है। तुम चंद्रमा को देख सकते हो, उसे पहचान सकते हो; लेकिन क्या तुम प्रकाश को पहचान सकते हो? फिर भी, दोनों एक ही हैं। एक स्रोत है; और दूसरा उसका गुण, उसकी सक्रियता, उसकी पूर्णता।"

"तुम प्रकाश को ठोस रूप में नहीं देख सकते। यह सब चंद्रमा द्वारा प्रकाशित है, उसका परावर्तन है। लेकिन स्वयं प्रकाश तब तक नहीं देखा जा सकता, जब तक वह किसी ऐसे वस्तु से परावर्तित न हो, जो स्वयं प्रकाश न हो। संभवतः सभी वस्तुएँ स्वाभाविक रूप से अंधकारमय हैं, वे अंधकार की दुनिया से, सीमित विचारों की दुनिया से संबंध रखती हैं। केवल *असीम* ही वास्तविक प्रकाश है।"
"क्या तुम उस प्रकाश को देख सकते हो, जो किसी वस्तु से परावर्तित नहीं हुआ है? यहाँ से बादलों के बीच के स्थान को देखो। क्या तुम वहाँ प्रकाश देख सकते हो? लेकिन जैसे ही तुम उन तैरते हुए बादलों की बाधा तक पहुँचते हो, तुम देखते हो कि वे चाँदनी से आलोकित हैं और आकाश में तैर रहे हैं।"

"मैं देख सकता हूँ; मैं समझ सकता हूँ; लेकिन किसी तरह यह सोचकर डर लग रहा है कि जो कुछ मैं देख रहा हूँ, वह वास्तव में वैसा नहीं है..."

"डर रहे हो?" उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा। "चिंता मत करो। सीखने की प्रक्रिया में यह डर स्वाभाविक है। सत्य डराता है। स्वयं अर्जुन भी डर गए थे। सत्य को समझना और उसका सामना करना, यह बहुतों के लिए भय का कारण बनता है।"

"मुझे यह सोचना भी अच्छा नहीं लगता कि मैं अंधकार की दुनिया में रहता हूँ।"

"तुम ऐसा सोचते हो? लेकिन तुम प्रकाश की दुनिया में भी रहते हो। वास्तव में, तुम प्रकाश की ही संतान हो। हम सभी प्रकाश के पुत्र हैं। सच तो यह है कि अंधकार का कोई अस्तित्व नहीं, जब तक कि हम स्वयं को इस अंधकार के भ्रम में लिप्त न कर लें।"

"वह चाँदनी अंतरिक्ष से संबंधित है। जहाँ भी प्रकाश इस संसार की वस्तुओं से परे फैलता है, जहाँ भी प्रकाश मौजूद होता है..."

लेकिन पिताजी," मैंने अनायास ही बीच में टोक दिया।

"हाँ।"

मैंने इतनी गहन घड़ी में अपने पिता को टोक देने पर एक सिहरन महसूस की। शायद मेरी आवाज़ ने उस विशाल रहस्योद्घाटन के सामने मेरे भय को प्रकट कर दिया था। फिर भी, मैंने हिम्मत नहीं हारी।

"लेकिन वह तो अपार अंतरिक्ष होगा।"

"तुमने बिल्कुल सही कहा!" इस बार मैं उनके संतोषजनक हँसी की गूँज सुन सकता था। उन्होंने मेरी ओर देखा, और मैंने उनकी ओर। वह एक क्षण ऐसा था जैसे कष्टों से भरी दुनिया में एक मोती की बूँद की तरह छुपी हुई शांति टपक पड़ी हो। मैंने उनका हाथ थामा, इस बार पूरी दृढ़ता और विश्वास से, जैसे गहरी मित्रता की मुहर लगा रहा हो।

लेकिन वह आगे बोले, *"वह समय और अंतरिक्ष के साथ एकाकार है। तुम्हारे चाचा बिल्कुल सही थे। और तुम बहुत भाग्यशाली हो कि केसरिया वस्त्रधारी स्त्री ने तुम्हें अपने लिए चुना है और तुम्हें अपने करीब रखा है।"*

*"क्यों, पिताजी?"*

*वह स्वयं सबसे अच्छा जानती है। बस, यह दिव्य स्नेह जो उन्होंने तुम्हें दिया है, उसे खोने मत देना। इसके योग्य बनो, और इसे बनाए रखो।"*

*"शायद मुझे उनकी ज़रूरत है," मैंने झिझकते हुए कहा।*
*"शायद उन्हें तुम्हारी ज़रूरत है। बस देखते रहो और शांति बनाए रखो। इस तरह के आध्यात्मिक संबंधों में व्यक्तिगत गोपनीयता एक परम सम्मान का प्रतीक होती है।"*

*"इसे निभाना बहुत कठिन है।" मैंने स्वीकार किया, और मेरी आवाज़ एक चेतावनी की तरह लग रही थी।*

*"ऐसा नहीं है। मित्रता एक रत्न की तरह होती है; और रत्नों को दिखावा करना अशोभनीय होता है। सभी मूल्यवान वस्तुएँ, जैसे कि सभी मूल्यवान भावनाएँ, गोपनीयता की माँग करती हैं। इस प्रकार की प्राप्तियों का वास्तविक मूल्य हमारे व्यवहार और सामाजिक संबंधों में प्रकट होने वाले आनंद में दिखाई देता है। तुम्हें इस निष्ठा की आवश्यकता होगी। और तुम्हें इसे एक रहस्य बनाए रखना होगा।"*

*मैंने इस निष्ठा को बनाए रखा, और यह रहस्य मेरा था, जब तक कि एक दिन उन्होंने स्वयं मुझे इस बंधन से मुक्त नहीं कर दिया। मैं उन्हें एक खज़ाने की तरह प्यार करता था, जैसे कोई लड़का अपनी सबसे बड़ी खोज को संजोता है।*

*फिर वह दिन आया जब उन्होंने मुझे अपने साथ एक रहस्यमयी यात्रा पर चलने के लिए कहा।*

*मुझे तब एहसास नहीं था कि उस दिन उनका अनुसरण करके मैं एक ऐसी दुनिया की दहलीज़ पर कदम रख रहा था, जिसे कल्पना भी संजोने में असमर्थ है और तर्क भी समझने में असफल हो जाता है।*

*हम एक अजीब से मंदिर पहुँचे, जहाँ मैं पहले कभी नहीं गया था, हालाँकि वह हमारे मोहल्ले के ही पास था।*

*और उन्होंने मुझसे उनके नग्न शरीर पर बैठने को कहा।*
*लेकिन मैं पूरे अनुभव को बहुत जल्दी बता रहा हूँ।*

*ऐसा नहीं होना चाहिए। वह पवित्र थीं, और वह अनुभव दिव्य था।*

*इसलिए, इसे विस्तार से फिर कभी।*

# 2. दीक्षा (Initiation)

## जहाँ अग्नि मांस को भस्म करती है

"यह पहली बार नहीं था जब मैं केसरिया वस्त्रधारी स्त्री के साथ बाहर गया था; मुझे अक्सर उनके साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त होता था। वाराणसी जैसे पवित्र स्थान में ऐसे भ्रमणों के लिए कई अवसर उपलब्ध थे।"

"यदि हम किसी नवागंतुक संत से मिलने नहीं जा रहे होते, तो हम किसी विशेष संगीत समारोह में भाग ले रहे होते, या फिर किसी मेले में जाने के लिए दूर यात्रा पर निकल पड़ते। कभी-कभी यह एक नाव यात्रा भी हो सकती थी, जो हमें नदी के किनारे स्थित किसी दूरस्थ मंदिर तक ले जाती।"

"ऐसा ही एक स्थान वरुणा और गंगा के संगम पर स्थित था। वहाँ आदिकेशव नामक एक प्राचीन स्थल था, जहाँ एक जैन मंदिर स्थित था और उसके आसपास बिखरे हुए कुछ पुराने मंदिरों के खंडहर थे।"
"बहुत समय पहले, यहाँ तक कि भारत पर ग्रीक आक्रमण से भी पहले, *काशी*, जो महाकाव्यों में प्रसिद्ध राज्य था, यहीं अपनी राजधानी स्थापित किए हुए था। आज भी वहाँ किले और दुर्ग की दीवारों के अवशेष देखे जा सकते हैं।" "यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इन खंडहरों के साथ देवताओं ने भी विलुप्त होना स्वीकार नहीं किया। आज भी कई मूर्तियाँ हल की धार से या पुरातत्वविदों के औजारों से बाहर आती रहती हैं।"

"इस उदास और सुनसान वन क्षेत्र पर प्राचीन श्मशान स्थलों का प्रभुत्व था, जो चौड़ी नदी के किनारे स्थित थे। हालाँकि अब ये उपयोग में नहीं थे (क्योंकि नए सम्मानित मणिकर्णिका घाट को प्राथमिकता दी गई थी), फिर भी कभी-कभी कोई चिता जल उठती थी, जिससे यह स्थान एक मूक, सोई हुई धारा के किनारे पुनः सजीव हो उठता था।" "जैसे अतीत में होता आया था, वैसे ही अब भी इन लपटों की छायाएँ शांत जल पर प्रतिबिंबित होकर नृत्य करती थीं।"

"यहीं एक जर्जर, छोटा-सा मंदिर स्थित था, जो प्रसिद्ध भैरव-संत *दत्तात्रेय* को समर्पित था। उनकी जीवनलीला के चमत्कार महाकाव्यों के काल से लेकर संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में गाए जाते रहे हैं।" "वाम तंत्र परंपरा में *वशिष्ठ, परशुराम, दीर्घतमस* आदि नाम अमर इतिहास के रूप में दर्ज हैं। रहस्यमयी और गूढ़ सिद्धांतों, साथ ही उनकी सिद्धियों की बात करें, तो *दत्तात्रेय* का स्थान सर्वोच्च है।"

"अक्सर मैंने केसरिया वस्त्रधारी स्त्री को *दत्तात्रेय मंदिर* के पास एक आसन पर बैठे हुए देखा। अचानक ही वह एकदम दूरस्थ प्रतीत होने लगतीं। मैं उनके बारे में बहुत कम जान पाता। मैंने महसूस किया कि वह हमेशा सुलभ नहीं थीं।"

"संध्या की धुंध में वह एकाकी मंदिर और भी अधिक अकेला, दूरस्थ, उदास और निर्जीव प्रतीत होता था।" "रात्रि विश्राम के लिए संघर्ष कर रहे पक्षियों की कर्कश चहचहाहट इस वातावरण की गंभीरता को और गहराई प्रदान कर रही थी।" "शांत वरुणा नदी ने विनम्रता से गंगा के प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया था; और संध्या का नारंगी आकाश इस दृश्य को देख रहा था।" "उस समय मैं केवल एक छोटा लड़का था, और मैं अपनी *केसरिया वस्त्रधारी* को आसन में बैठे हुए देखता। मैं उनकी मुद्रा की हल्की-फुल्की नकल करता, और इस प्रकार एक गंभीर साधना का एक बालसुलभ, अपरिपक्व अनुकरण प्रस्तुत करता।"

"एक बात स्पष्ट कर देनी चाहिए—मैंने कभी सच में 'ध्यान' नहीं किया, क्योंकि मुझे पता ही नहीं था कि ध्यान वास्तव में होता क्या है।" "या यूँ कहें कि ध्यान की कोई स्पष्ट अवधारणा कभी मेरे मन में नहीं आई। उन क्षणों में जो भी किया, उसे कूपर के शब्दों में सबसे अच्छा इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—'घंटों के विचार को क्षणों में समेट देना।'" "मैं बस वही दोहराता, जो मुझे लगता था कि वह कर रही हैं। ध्यान के वास्तविक अर्थ और उसकी गहराइयों के बारे में मुझे तब कुछ भी पता नहीं था, जैसा कि अब जानता हूँ।"

## योग की दुकानें

"आजकल, मैं जहाँ भी गया हूँ—चाहे पश्चिम में या पूर्व में—मैंने लोगों को ध्यान करने के तरीके जानने की अत्यधिक जिज्ञासा से भरा पाया है।"

"इस तत्काल ध्यान, त्वरित मोक्ष और झटपट आनंद की सनक से लाभ उठाते हुए, कुछ ठगों के एक कारवां ने 'दुकानें' खोल ली हैं, जहाँ वे अपने लाभदायक उत्पादों को आकर्षक चाँदी के चमकदार आवरण में लपेटकर आशा और सफलता के नाम पर बेचते हैं।"

"आजकल ऐसी दुकानें उतनी ही अधिक हो गई हैं, जितने कि सिनेमा हॉल और बीमा एजेंसियाँ।"
"ये दुकानें विशेष रूप से भारत के उन स्थानों पर स्थित हैं, जहाँ भ्रमण पर आए पश्चिमी पर्यटक अंधविश्वास के साथ उमड़ते हैं और सड़कों पर बिकने वाले 'भारतीय स्वाद' की तलाश करते हैं।" "ये दुकानें उन पश्चिमी शहरों में भी तेजी से फैल गई हैं, जो प्राचीन दैत्याकार प्राणियों की तरह लोगों के जीवन से आनंद, स्वतंत्रता के सपने और मानवीय मूल्यों के संगीत को चूस लेते हैं।" "आधुनिक जीवनशैली की कठिन परिस्थितियों से दबे ये लोग अंततः निराश हो जाते हैं और यह भी नहीं जान पाते कि इस स्थिति का सामना कैसे करें।" "वे हमारे युग के विशालकाय महानगरों की एक व्यापक जेल में फँसे हुए हैं।" "ये दुर्भाग्यपूर्ण पीड़ित, इन व्यापारिक और भीड़भाड़ वाले अंधकारमय कारागारों में अपने घुटनभरे अस्तित्व से किसी तरह की मुक्ति पाने के लिए आध्यात्मिक साधनाओं की ओर रुख करते हैं।" "हमारी बीमार सभ्यता में ध्यान (मेडिटेशन) अब लगभग एक चिकित्सीय उपाय का रूप ले चुका है।" "ध्यान अब एक फैशन बन गया है, एक उन्माद। एक टॉनिक? शायद।"

## शांति का अवतरण

लेकिन मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मैं यह भी नहीं जानता था कि क्या मैं ध्यान करता था। मुझे केवल इतना याद है कि मैं वही करता था जो वह महिला करती थी, और मुझे उस तरीके से करना पसंद था जैसा उसने मुझे सिखाया था।

अक्सर मैं खो जाता था। एक विशाल और व्यस्त शहर की उत्तेजित भीड़ के माथे पर उतरते शाम की शांत और गंभीर छवि धीरे-धीरे मुझे अपने भीतर खींच लेती थी; यह भावना मुझे शांत कर देती थी। अगर किसी शाम को संयोग से किसी का अंतिम संस्कार हो रहा होता, तो उसकी लपटें शाम के आकाश को और भी गहरा और रंगीन बना देती थीं। कभी-कभी किसी अज्ञात चिता की बची हुई राख, हवा के झोंके के साथ सांस लेती प्रतीत होती थी। जीवन के इस भव्य दृश्य के प्रति मेरा आश्चर्य मुझे उस स्थान की आत्मीय पुकार में समा जाने के लिए प्रेरित कर देता था। अक्सर मैं गीत गाने लगता था।

वाराणसी के आकाश से उतरती वह शांति, जहां वरुणा और गंगा का संगम होता है, एक आनंदमय आवरण की तरह मुझे ढक लेती थी। धीरे-धीरे, पूरी दुनिया मेरी चेतना से मिट जाती थी; और एक परम पूर्णता का भाव मेरी चेतना को शिखर पर ले जाता था। शांति उसी तरह उतरती थी, जैसे मेसफील्ड की भाषा में 'इनिसफ्री द्वीप' में उतरती है; अक्सर मैं ऋग्वेद के मंत्र को गुनगुनाने लगता था- "हवाएं मधुर हैं; जल मधुर हैं; हरी-भरी धरती मधुर है; रात और सुबह मधुर हैं; धूल मधुर है; हमारे स्वर्गीय पिता मधुर हैं; पेड़, सूरज और पशु मधुर हैं।"

## मन का शून्य बिंदु

क्या यह ध्यान था? परिणामों के आधार पर देखें तो यह और कुछ नहीं हो सकता था। योग पर सबसे प्राचीन और प्रामाणिक ग्रंथ (पतंजलि का योग सूत्र) और वेदांत तथा उपनिषदों में निहित विचारों में, एक बिंदु को अन्य सभी से ऊपर रखा गया है, और वह है संतोष की प्राप्ति। एक प्रकार की संतुष्टिदायक आनंद की अनुभूति ही सफल ध्यान अभ्यास की पहचान रही है।

लेकिन आज मैं सोचता हूं कि आखिर मैं किस पर ध्यान करता था। मैं किस बारे में सोचता था? मैं किस पर ध्यान केंद्रित करता था? उस महिला ने मुझे कुछ सिखाया नहीं था; मैंने पूछने की भी जहमत नहीं उठाई। फिर भी, मन को कभी भी शून्य बिंदु पर स्थिर नहीं किया जा सकता। मन को पूरी तरह से प्राकृतिक नहीं बनाया जा सकता। उसे किसी न किसी चीज़ से जुड़े रहना होता है; उसे स्वयं को व्यस्त रखना होता है। असली चाल यह है कि उसे एक ही, विशिष्ट और स्पष्ट रूप से परिभाषित विचार पर सोचने के लिए प्रेरित किया जाए: दूसरे शब्दों में, उसे अपनी गतिविधि को एक केंद्रीय बिंदु, एक विचार पर केंद्रित करना होता है। इसके बिना, ध्यान संभव नहीं है।

## किस पर ध्यान लगाएं?

फिर, मैं वास्तव में किस पर ध्यान लगाता था? वह क्या था? अक्सर मेरे चचेरे भाइयों और बहनों की छेड़छाड़ और हंसी मेरे धैर्य को चीर देती थी। या फिर, क्या यह अधीरता थी? वे मेरी ध्यान लगाने की कमजोरी का मजाक उड़ाते थे। "तुम सोचते हो कि तुम क्या कर रहे हो? तुम एक ढोंगी हो," वे मजाक में कहते थे। इसलिए मैंने पूछने का साहस किया। मैं केवल उसी से पूछ सकता था जो, मेरे विचार से, मेरी बात सुनता और मुझे संतुष्ट करने वाला जवाब देने के लिए सबसे योग्य व्यक्ति लगता था। केसरिया वस्त्र धारण करने वाली महिला न तो मजाक उड़ाती, न ही धोखा देती थी।

## दूसरे लोकों से आती रोशनी

मेरी इस जिज्ञासा, ध्यान के बारे में पूछने की पहली कोशिश पर, उनके चेहरे पर वही जानी-पहचानी मुस्कान आ गई। जाहिर था, उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि मैं किस पर ध्यान लगाता हूं, या क्या चीज मुझे इतना गहराई से व्यस्त रखती है। "लेकिन एक बात मैं पक्के तौर पर जानती हूं," उन्होंने कहा, "कि ध्यान में मन को व्यस्त रखना चाहिए, और वह भी एक स्पष्ट विचार के साथ। अगर यह एक से अधिक होता, तो तुम्हें वह पूर्ण आनंद महसूस नहीं होता, जिसके बारे में न केवल तुम कहते हो, बल्कि तुम्हारे उत्साह से यह साफ झलकता भी है।

"हर कोई तुम्हारी आंखों की चमक, तुम्हारे सहज और शांत चेहरे, और तुम्हारे मित्रतापूर्ण मुस्कान के बारे में बात करता है। पूर्ण आनंद कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे छिपाया जा सके। अंधेरी रात में भी एक छोटा सा दीपक दिखाई देता है। खुशबू अपने आसपास की दुनिया को अपनी मौजूदगी का एहसास कराती है, भले ही कोई उसे नोटिस करे या नहीं। मैं इसे

नोटिस करती हूं; और मैं तुम्हें विश्वास दिला सकती हूं कि दूसरे भी इसे नोटिस करते हैं। वे देखते हैं कि तुम एक बहुत खुश बच्चे हो; तुम अपने आप में डूबे रहते हो। तुम्हारी उम्र के एक लड़के के लिए यह स्तर प्राप्त करना अपने आप में एक उल्लेखनीय बात है। यह मुश्किल है। यह एक तथ्य है कि 'अंदर की ओर महसूस करना' तुम्हारे लिए एक स्वाभाविक जीवनशैली बन गया है।"

एक योगी का व्यवहार अनोखा होता है। गीता कहती है, 'वह आंतरिक प्रकाश से चमकता है,' और वर्ड्सवर्थ कहते हैं, 'वह अंदरूनी गौरव से सजा हुआ चलता है।'

मैं आश्वस्त नहीं था। मैं उत्साहित भी नहीं था। मैं भूखा था। भूखे को शांत रखना मुश्किल होता है। भूखे को भूसे से संतुष्ट करना कठिन होता है। क्या वह सीधा जवाब देने से बच रही थीं? उन्हें मेरे संदेह का एहसास हुआ। "तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। है ना?," उन्होंने पूछा। मैं उदास और चुप था।

"ठीक है, तुम नहीं मानते। अगर ऐसा है, तो मुझे बताओ कि तुम किस बारे में सोचते हो? क्या तुम इसे स्पष्ट रूप से बता सकते हो?"

इस बार मैं एक सही जवाब ढूंढने में व्यस्त था।

आप जरूर किसी चीज़ के बारे में सोच रहे होंगे; कुछ ऐसा जो पूर्ण हो...कुछ ऐसा जो आपको पूरी तरह से अपने में समेट ले और जिसे आप पसंद करते हों...कुछ ऐसा जिससे एक बार जुड़ जाने के बाद, अलग होना मुश्किल हो जाता है। याद कीजिए, वह क्या है? यह कोई साधारण चीज़ नहीं हो सकती। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं हो सकती जो रोज़ बदलती रहती हो। यह एक ही, स्थिर, प्रिय और आदरणीय विषय होना चाहिए। अब, आपके मामले में यह क्या हो सकता है? यह क्या हो सकता है? याद कीजिए; याद कीजिए और आप इसे ढूंढ ही लेंगे।

## प्रेम जीवन को नया अर्थ देता है

वह सही थीं। मुझे पता चल गया था कि यह क्या था। यह मेरे अंदर एक क्षण में चमक उठा। यह और कुछ नहीं हो सकता था, बस वही था जो था।

"यह क्या है?" उनका जोरदार सवाल आया। "मैं देख रही हूं कि तुमने इसे पहचान लिया है। अब बताओ, यह क्या है? कहो। बिना हिचकिचाहट के।"

मेरे पास तुरंत जवाब नहीं था; लेकिन मैं जानता था कि मुझे क्या कहना है।

मैंने सारा साहस जुटाया और घोषणा की, "आप! मैं आपसे प्यार करता हूं... मुझे आपको आनंद में डूबा हुआ देखना अच्छा लगता है।"

"मैं भी तुमसे प्यार करती हूं, प्रिय," उन्होंने कहा। और एक कोमल, गहरी, अंतरंग आलिंगन के साथ उन्होंने इस विषय पर एक पर्दा डालने की कोशिश की।

उन्होंने ऐसा किया; लेकिन मैं नहीं माना। "मैं कैसे डूब सकता हूं," मैंने पूछा, "यहां तक कि आपसे प्यार करने में भी, बिना ध्यान को जाने? मेरे चचेरे भाई कहते हैं कि गुरु के बिना ध्यान करना असंभव है।"

मैंने शायद ही महसूस किया कि मैं अनजाने में अपनी 'किताबी ज्ञान' को प्रस्तुत कर रहा था, यानी वाराणसी की गपशप और सुनी-सुनाई बातों से इकट्ठा किया गया ज्ञान; लेकिन महिला को यह बात तुरंत भांप ली।

"क्या सचमुच?" उन्होंने मजाकिया स्वर में पूछा, उनकी मजाक भरी चौड़ी आंखें और भी चौड़ी हो गईं। (कैसे मैं, इस उम्र में भी, पैंसठ साल पहले या कल ही हुई घटनाओं को याद करके देख पाता हूं?)

"तो फिर यह कैसे हुआ," उन्होंने जारी रखा, जैसा कि उनकी आदत थी, एक कथा वाचक की तरह, "कि ध्रुव नाम का वह लड़का, जिसने कभी कोई किताब नहीं देखी, कभी कोई अक्षर नहीं सीखा, कभी किसी गुरु से नहीं मिला, फिर भी पूर्ण शांति प्राप्त कर सका, और भगवान को देख सका? और सुकदेव के बारे में क्या?"

"और कपिल और मार्कंडेय...," मैंने विश्वास के साथ जोड़ा, जो मुझे प्रेरित कर रहा था। "तुम मुझसे प्यार करते हो," उन्होंने जारी रखा,

"तुम मुझे प्यार से देखते हो; और प्यार देखने के लिए एक नई आंख देता है, और तुम मुझमें वह देखते हो जो दूसरे नहीं देखते। प्रेम जीवन को नया अर्थ देता है। प्रेम तुम्हें मेरे साथ ऐसे जोड़ देता है जैसे तुम और कुछ कर ही नहीं सकते। प्रेम तुम्हारा ध्यान तीक्ष्ण और गहरा बना देता है; कोई और चीज इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती। तुम्हें इस संदर्भ में 'एक बिंदु' का अर्थ समझना चाहिए।

"एक बिंदु वह जगह है जहां दो के लिए कोई जगह नहीं होती। यह सिर्फ एक होता है। जैसे ही यह दो हो जाता है, या उससे अधिक, यह एक बिंदु नहीं रहता। प्रेम के क्षेत्र में, या योगिक एकाग्रता के क्षेत्र में, किसी 'दूसरे' का विचार एक गंभीर अतिक्रमण है।"

जैसे-जैसे वह बोलती गईं, उनकी आवाज गहराई और ताकत से भरती गई। एक बदलाव आ रहा था। एक परिवर्तन हो रहा था। उनकी आवाज हमेशा मुझ पर जादू सा कर देती थी; उन तीव्रता से व्यक्त किए गए लयबद्ध वाक्यों से, जो प्रेम की धारा की तरह बहते हुए मुझे ढक लेते थे, वह अचानक उन मंत्रमुग्ध कर देने वाले गीतों में से एक गाने लगीं:

मैं तुम्हें कितना ढूंढता रहा,
यहां और वहां;
जबकि तुम तो हमेशा से यहीं थे,
मेरे भीतर...

ये गीत हमेशा मुझे हैरान कर देते थे। जैसे ही वह गातीं, एक देवदूत की तरह वह अपनी धुन के पंखों पर सवार होकर मेरे लिए अज्ञात क्षेत्रों में उड़ जाती लगतीं।

मैं सारे दुख भूल जाऊंगा;
और हार मानकर झुक जाऊंगा;
बिना शिकायत, बिना आंसू के;
मैं खुशी से इस जीवन में मिले
अपने कोने में रहूंगा;
बस तुम दयालु बनो,
और एक दरवाजा खुला रखो,
ताकि यात्रा के अंत में

मैं आशा के साथ उम्मीद कर सकूं
एक मिलन की...

और जल्द ही मैं भी उनके साथ गाने लगता। और जल्द ही मैं खुद को भूल जाता। गीत के अंत में मैं उनके पास उस प्रिय आलिंगन के लिए दौड़ता। वह मुझे अपने सीने से लगा लेतीं।

## शब्द, केवल शब्द

बार-बार वह मुझे इस भक्ति की शक्ति की याद दिलाती थी, जो समर्पण में परिपूर्ण होती है, और यही प्रेम का सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

प्रेम कुछ भी करने से नहीं डरता; प्रेम कुछ भी हासिल कर सकता है; प्रेम कुछ भी छोड़ने से नहीं हिचकता। सच्चे प्रेम में कोई बलिदान, पाप, अपराध, या यहां तक कि प्रायश्चित का भाव भी नहीं होता। वह जोर देकर कहती थीं कि यह एक दिव्य पूर्णता है। ऐसा प्रेम किसी भूख को जन्म नहीं देता; और न ही यह किसी परिणाम की तलाश करता है। यह पीछे कोई पछतावा या निराशा की भावना नहीं छोड़ता। ऐसा प्रेम जितना अधिक दिया जाता है, आत्मा उतनी ही मुक्त होती जाती है।
धीरे-धीरे यह प्रेम व्यक्ति से बहकर पूरे ज्ञात ब्रह्मांड को ढक लेता है, और यहां तक कि अज्ञात ब्रह्मांड को भी, भले ही हम इस परिवर्तन के प्रति सचेत न हों। प्रेम इंसान को संत बना देता है। प्रेम मांस को एक दिव्य उपहार में बदल देता है।

लेकिन ये सब, फिर से, केवल शब्द हैं, शब्द।

## समग्रं प्रविलीयते

महसूस करना अलग बात थी: मैंने कंपन को महसूस किया—उसका कंपन। उसने मुझे गले लगा लिया; और ऐसे एक आलिंगन से मैं समझ सका कि वह क्या कहना चाह रही थी। यह केवल संचार नहीं था, बल्कि एक पूर्ण संप्रेषण था, एक खाली पात्र को भरने के लिए उंडेलने जैसा। वह दिव्य उंडेलना मेरे भीतर गूंजता रहा, और एक आवाज लगातार कहती रही, "ले लो! ले लो! जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब ले लो। गुणा करो; सार्थक करो; दिव्य बनाओ! मुक्त हो जाओ; मुझे मुक्त करो। कुछ भी रुकावट न बने; कुछ भी बाधा न हो। जो कुछ मुझमें है, वह सब तुम्हारा है!"

उस ज़बरदस्त मूक अपील का वर्णन करना असंभव है; उस पूर्ण समर्पण भरे गहरे आलिंगन की मुखरता। यह बिना शब्दों की भाषा थी; यह बिना हिलावट की आग थी। एक बाल भी नहीं हिला; एक नज़र भी नहीं चमकी। आंखें बंद करके, हम शांति के सागर में डूबे हुए महसूस करते थे। आनंद की एक लहर ने अस्तित्व को विद्युतीकृत कर दिया। यह एक सपनों से भरे आकाश पर उन शब्दों से कविता लिखने जैसा था, जो मानवीय ज़ुबान को ज्ञात नहीं हैं। "समग्रं प्रविलीयते (प्रेम में पूर्ण विलय हो जाता है)," गीता कहती है।

मैंने उस प्रेम का स्वाद चखा है। और उस प्रेम का स्वाद चखने के बाद, कुछ और पाने योग्य नहीं रह जाता। "उसमें कुछ भी जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। और जैसे ही मन उस अवस्था में स्थिर हो जाता है, दुःख या शोक की कोई भावना, यहां तक कि सबसे गहरी भी, उस परम शांति में प्रवेश नहीं कर सकती।" (उपनिषद) योग और समाधि की भाषा, भावातीत ध्यान के शिखर का वर्णन इसे सौ उपमाओं में, सौ कविताओं में, सौ तरीकों से करती है। क्योंकि भाषा इसका पूर्ण और सच्चा वर्णन करने में असमर्थ हो जाती है; मन स्वयं स्थिर हो जाता है।

यह सच है कि अनजान लोगों के लिए ये वर्णन केवल शब्द, शब्द, शब्द लगते हैं! और क्या?

निराशावादियों से, जो ज्ञान के स्तंभ हैं लेकिन जीवन के सरल आनंद से वंचित हैं, और अधिक उम्मीद नहीं की जा सकती। जो बंद हरमों के रेगिस्तान में रहते हैं, उनके पास ज्यामितीय रूप से बने फूलों और पत्तियों से आनंद लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। जो वास्तविक आनंद चाहते हैं, उन्हें इसे जीवन की खुली हवा में ढूंढना होगा। "यदि गहराइयां तुम्हें आकर्षित करती हैं, तो ठहरो मत, लड़खड़ाओ मत; गोता लगाओ!" शब्दों की यह आभासी अधिकता संदेह करने वाले के मन को उसकी सच्चाई के खिलाफ कर देती है। यह आध्यात्मिक मधुमेह वाले को मिठाई परोसने जैसा है। केवल दीक्षित ही रहस्यमय आनंद के उन्मादपूर्ण क्षणों की सराहना कर सकते हैं।

## इनिसफ्री (एक द्वीप) की यात्रा

जब मैं इस विषय पर हूँ, तो प्रिय पाठक, मुझे यह कहने की अनुमति दें कि प्रेम के सम्पूर्ण दर्शन को यहाँ स्मरण करूँ, जैसा कि उन्होंने इसे समझाया था। मैंने अपना संपूर्ण यौवन उनके सान्निध्य में बिताया, एक अत्यंत घनिष्ठ संबंध में। मैं यहाँ जो प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ, वह वही शिक्षाएँ हैं, जो उन्होंने वर्षों तक मुझे सावधानीपूर्वक और श्रमसाध्य रूप से दीं।

आज मैं बिना किसी संकोच के कह सकता हूँ कि प्रेम की इस ज्वाला से परिपूर्ण संदेश के बिना कोई तंत्र हो ही नहीं सकता। प्रेमी और प्रेयसी, दो में एक और एक में दो, विषय और वस्तु का पूर्णतः आत्म-सजग अनुभूति में रूपांतरण—यही तंत्र का मूल आधार है।

मूर्ख और पाखंडी ही इस आराध्य प्रेम को अंधभक्ति मानते हैं, जैसे कोई मूर्ख व्यक्ति धातु, मिट्टी, पत्थर, या लकड़ी की मूर्ति के प्रति समर्पित हो। वे इसे उन्माद समझने का दुस्साहस करते हैं और इसे एक असंतुलित काम-जीवन की अभिव्यक्ति मानकर अस्वीकार कर देते हैं। परंतु जब एक भक्त अपनी एकाग्र निष्ठा और प्रेम की अनिवार्यता तथा उसके अजेय आवेग से इस संबंध को दृढ़ करता है, तो उसका प्रेम एक आध्यात्मिक शक्ति में परिवर्तित हो जाता है। यह उसके भावनात्मक अस्तित्व को परिशुद्ध करके एक ऐसी आनंददायी अवस्था में पहुँचा देता है, जो शरीर से परे होती है—जैसे संगीत बिना शब्दों के। यही वह मार्ग है, जो मोक्ष तक पहुँचाने के लिए विख्यात है, जिसकी चर्चा ज्ञानी करते हैं, और जिसकी चाहत पीड़ित मानव करता है। यह वही परम स्वतंत्रता है, जो शरीर और इंद्रियों की दासता से मुक्ति दिलाती है। वह दारुण वेदना, जो कभी संतुष्ट नहीं होती, जो निरंतर जलाती और धीरे-धीरे नष्ट करती है, वह सच्चे प्रेम के स्पर्श से शीतल हो जाती है और तृप्ति को प्राप्त होती है।

यदि कोई आनंद किसी प्रयास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, तो तंत्र के इस मौलिक सत्य के माध्यम से ही वह संभव है। यही वह मार्ग है, जो उस असीम आध्यात्मिक सागर से होकर गुजरता है और अंततः इनिसफ्री के स्वप्निल द्वीप तक पहुँचता है। जो स्वर्ग मनुष्य से विलुप्त हो गया था, वह इस गूढ़ सत्य की समझ और उस साधना के माध्यम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है, जिसे तथाकथित आधुनिक बुद्धिजीवी तंत्र कहकर हँसी में उड़ा देते हैं, और जिसकी साधना को तंत्रवाद कहकर उपेक्षित कर देते हैं!

# मूर्तियाँ और चित्र

लेकिन मूर्तियों और प्रतिमाओं के प्रति इस प्रेम को जारी रखते हुए... प्रतिमाओं को अक्सर 'धर्म के व्यापारियों' के एक वर्ग द्वारा उपहासित किया गया है। सदियों से और दुनिया भर की संस्कृतियों में प्रतिमाओं को नष्ट किया गया है: मिस्र, मैक्सिको, अरब, सीरिया, ग्रीस, रोम, भारत, इंडो-चीन, सियाम, जावा, नाम लीजिए, और प्रतिमाओं को मूर्तिपूजक दुनिया से, काफिरों के गोले से मिटा दिया गया है (!); लेकिन प्रतिमाओं को ईसाई दुनिया में भी तोड़ा गया है, और ईसाइयों द्वारा। हॉलैंड, बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, रोम में ही, एक सच्चे और शुद्ध धर्म के नाम पर किए गए अत्याचारों ने इतिहास के पन्नों को मानवीय पीड़ा, दुःख, अपमान और अवनति के रिकॉर्ड में बदल दिया है। और किस उद्देश्य से? प्रतिमाएँ और मूर्तियाँ टूटती हैं; और पौराणिक स्फिंक्स और सैलामैंडर की तरह अपनी राख से बच जाती हैं, और फिर से उठ खड़ी होती हैं, और बहुतायत में, अतिरिक्त जीवन शक्ति के साथ।

यह उन राजनीतिक अर्थव्यवस्था और व्यावसायिक प्रेरणाओं के विवरण में जाने का स्थान नहीं है जो विभिन्न देशों और काल के लोगों की भावनात्मक रचनाओं के खिलाफ इन संगठित नरसंहारों के पीछे हैं। लेकिन यह विचार करने योग्य एक महत्वपूर्ण प्रश्न है: मनुष्य को अपने देवता बनाने और उनके चरणों में अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ अर्पित करने के लिए क्यों पाया गया है? न केवल धन और स्वतंत्रता, बल्कि किसी भी सांसारिक संपत्ति या हित से कहीं अधिक प्रिय वस्तुएं। क्यों? क्योंकि मूसा से पहले भी, यहां तक कि अपने ही बच्चों की बलि को आराधना और आभार व्यक्त करने का एक सामान्य तरीका माना जाता था।

क्यों? क्यों स्पष्ट रूप से अतार्किक, खुलेआम अंधविश्वासी, विभिन्न देवी-देवताओं की स्पष्ट रूप से भौतिक अभिव्यक्तियों का कार्यकाल समाप्त नहीं होता? क्यों और कैसे वे पुनर्जीवित होते हैं? क्यों? ऐसी 'अर्थहीन' भक्ति के लिए निश्चित रूप से कुछ मनोवैज्ञानिक औचित्य होना चाहिए। पत्थर और लकड़ी, मिट्टी और पीतल से बने ये देवता मनुष्य की कुछ आंतरिक आवश्यकता को पूरा कर रहे होंगे, जिसके बिना मनुष्य अधूरा प्रतीत होता है।

आइए हम इस बात की बार-बार दोहराई गई तर्क में न जाएं कि एक सच्चा देवता क्या है, और अंधविश्वास की दुनिया में दासतापूर्ण समर्पण क्या है, जो चतुर पुजारियों और उनकी कुशल साजिश के जादू की छड़ी से मंत्रमुग्ध है।

ऐसे तर्क लंबे समय से इतिहास के कानों में गूंजते रहे हैं। इस संदर्भ में, उससे अधिक नहीं। मैंने मैक्सिको के जंगलों में आदिवासियों को गुप्त जल स्रोतों (सेनोट) की ओर चोरी-छिपे कदम बढ़ाते देखा है, जहां वे अब भी नग्न होकर अपने अनुष्ठान करते हैं। सच है कि उन्होंने मानव बलि और नरभक्षण को छोड़ दिया है; लेकिन मैक्सिको, ग्वाटेमाला (पूरे अमेरिंडियन दुनिया में, जिसे लैटिन अमेरिका के रूप में जाना जाता है) के चर्चों में मैंने मानव अंगों की लंबी-लंबी मालाएं देखी हैं, जो एक क्राइस्ट के मोम के शव को सजाती हैं, जो संभवतः दफनाने से पहले राजकीय सम्मान के साथ रखा गया है। ये सभी मानव अंग 'भगवान को अर्पित' किए गए हैं! भक्तों ने बलिदान दिया है, और चर्च ने स्वीकार किया है। यह आज तक चल रहा है। फिर भी एक अंतर है, और वही इसे गरिमा बचाता है! अंतर यह है कि ये अंग सुनारों द्वारा बनाए गए हैं, और ये अर्पण एक बुद्धिमान चर्च के खजाने के लिए सोने और चांदी के टनों का मतलब रखते हैं। इसलिए पुरानी शराब को नए सोने के प्यालों में परोसा जाता रहता है, और चर्च फलता-फूलता है।

धर्म की इस दुनिया और धर्म के प्रमुखों के मन में छिपे धोखे और पाखंड की आलोचना करना व्यर्थ है। यह वह नहीं है जिसके लिए हम यहां आए हैं; हम उस जुनून की जांच करना चाहते हैं जो मनुष्य में है, जो दुनिया भर में, सदियों से, अपनी पूरी ताकत झोंक देता है और प्रतिमाएं बनाने के लिए जोखिम उठाता है, और भक्त हृदय को उनकी रचना को अपनी सबसे ईमानदार श्रद्धांजलि देने के लिए पूरी तरह से समर्पित कर देता है।

मान लीजिए कि यह गलत है; मान लीजिए कि इसे सही किया जाना चाहिए। लेकिन क्या गलत का इतना लंबा जीवनकाल हो सकता है? क्या यह दमन, यातना, आग और गंधक के सदियों से बच सकता है? कैसे और क्यों हमें हर ज्ञात मानव समाज में यह श्रद्धांजलि दी जाती है? क्या मानव दुःख का कोई ऐसा कोना है जो ऐसे देवताओं के निर्माण से शांत होता है जो तर्क की चमक को बर्दाश्त नहीं कर सकते? वे इस चमक से कैसे बच सकते हैं? यह एक तथ्य है कि वे बच गए हैं। मैंने पुजारियों को संतों की प्रशंसा में गीत गाते देखा है, विश्वासियों को अंधेरे गलियारों के साथ ले जाते हुए, विभिन्न रोशन (और उपयुक्त रूप से सजाए गए) आलों के साथ जो चर्चों को सजाते हैं। माना जाता है कि प्रत्येक संत में मानवीय बीमारियों से राहत देने के लिए 'बहुत विशेष शक्तियां' होती हैं।

इतनी बाधाओं के बावजूद यह जिद क्यों?

प्रतिमाओं को बुद्धिमान, फैशनेबल, तार्किक और प्रगतिशील लोगों द्वारा उपहासित किया गया है। परिष्कृत लोग उन्हें स्वीकार करने में शर्मिंदा होते हैं; और बुद्धिजीवी उन पर हंसते हैं, और 'आदिम!' चिल्लाते हैं। आलोचक शायद ही कभी इस जिद में शामिल मानवीय तत्व का सहानुभूतिपूर्ण अध्ययन करते हैं। वे स्वयं उतने ही मजबूर, अनुशासित और/या दिमागी धोने वाले प्रतीत होते हैं जितने कि वे जिनकी वे बेशर्मी से आलोचना करते हैं। यह सबसे बड़ा अन्याय है; सबसे बड़ी अतार्किकता। केवल राय आधारित क्लिच पर आधारित बौद्धिकता और प्रगतिशीलता के दावे बौद्धिकता के ईमानदारी और निष्पक्षता के स्वीकृत गुणों का अपमान करते हैं। ये आलोचक स्वयं अपने मन में घृणित रूप से अनुशासित और पूरी तरह से दिमागी धोने वाले हैं; लेकिन वे इसे महसूस नहीं करते, इसे स्वीकार करने की बात तो दूर है। समझ सहानुभूति का संकेत देती है।

## धर्म का शिकार: आस्था

हर कोई जानता है कि विचारों और विचारधाराओं को अनुशासित करने में कोई अच्छाई नहीं हो सकती। मनुष्य अन्य प्राणियों से अलग है; लेकिन यहां तक कि जानवर भी सोचने, अंतर करने, चुनने और याद रखने के लिए रुकते हैं। वे आनुवंशिक रूप से अधिक संवेदनशील होते हैं, और मनुष्यों की तुलना में प्रतिक्रियात्मक रूप से अधिक सतर्क होते हैं। सोचना अपने आप में मनुष्य को जानवरों की दुनिया में प्रकृति का एक श्रेष्ठ  प्राणी नहीं बनाता । यह बुद्धिमत्ता, तर्कशक्ति, और तर्क और भावना का एक अजीब संयोजन है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग बनाता है।

मन में अनुशासन होना मन की स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता को खोना है। दूसरे शब्दों में, यह कम से कम आंशिक रूप से विक्षिप्त होने के समान है; या यदि कोई वर्तमान राजनीतिक रूप से प्रेरित वाक्यांश को पसंद करता है, तो 'ब्रेनवॉश'। ऐसे व्यक्ति के मन को सोच के एक खास सांचे में ढाला गया है, जो उसकी पसंद का नहीं है। ऐसे मन को एक निर्दिष्ट आकार दिया गया है, जैसे किसी हाइड्रोलिक दबाव से यातना से गुजरने वाले स्टील के टुकड़े को। यह दिया गया आकार मनुष्य को अपने लिए सोचने के सर्वोच्च अधिकार से वंचित करता है। लोकतंत्र और अधिनायकवाद की प्रक्रियाओं के बीच बुनियादी अंतर इस अनुशासन के अभिशाप में निहित है। यह घटना आधुनिक राजनीति या बढ़ते वाणिज्यिक अर्थशास्त्र के लिए नई नहीं है। यह धार्मिक संस्थाएँ ही हैं जिन्होंने वास्तव में इसका आविष्कार किया और इसे सफलतापूर्वक लागू किया। आस्था धर्म का शिकार है; और मन अधिनायकवादी राजनीति का शिकार है

# धर्म का आह्वान

धर्म और धार्मिक व्यवस्थाओं का उपयोग एक प्रकार के दैवीय नियमन को लागू करने और निर्देशित करने के लिए किया जाता रहा है, जिस पर भोले-भाले भक्तों को शायद ही कभी संदेह होता है। वे केवल एक धार्मिक रूप को स्वीकार करके किसी प्रकार की मानसिक शांति की शरण पाने के लिए चिंतित रहते हैं।

मानव समाज के निर्माण में धर्म ने अनादि काल से एक ऐसा प्रभाव डाला है, जो शायद ही किसी अन्य सामाजिक प्रलोभन से बेहतर हो। भूख शायद प्रलोभन का सबसे सम्मोहक रूप है जो किसी भी पशु समाज में सबसे शक्तिशाली प्रेरणा के रूप में कार्य करता है, जिसमें मानव शामिल नहीं है। और उस क्रूर और आदिम मजबूरी के बाद संभोग की पुकार से आने वाली जबरदस्त प्रेरणा है। इन दो पशु आवेगों के अलावा, कोई अन्य कारक नहीं है

जिसने मानव समाज को (विशेष रूप से) प्रभावित किया हो, और मनुष्य के धार्मिक दृष्टिकोण जितना संवेदनशील भावुकता, रचनात्मक समर्पण और पवित्र उत्साह पैदा किया हो। इस प्रकार धर्म को 'आत्मा की भूख' कहा गया है। इस भूख से अवगत लोग संगीत, कविता और दिव्य कलाओं का निर्माण करके अपनी आत्मा को संतुष्ट करना चाहते हैं। कलाकारों और कला के लिए, दैवीय और धर्मनिरपेक्ष को अलग-अलग नहीं माना जाता है। कला कलाकार का धर्म है; और सौंदर्य संतुष्टि की चमक उसे दैवीय कृपा के रूप में दिखाई देती है। वास्तव में रचनात्मक कलाओं को अक्सर 'दैवीय उपहार' के रूप में वर्णित किया गया है। कला की पहचान सृजन के कौशल से की गई है; कलाकारों को अपने स्वयं के संदेश से दैवीय रूप से प्रेरित माना जाता है। ईश्वर को अक्सर (वेदों की तरह) सर्वोच्च पूर्ण कलाकार के रूप में चित्रित किया गया है। कला को इस तरह से प्रशंसा नहीं मिली होती, जब तक कि धर्म की तरह यह आत्मा को भरने वाली भागीदारी न हो। मनुष्य को छोड़कर कोई भी प्राणी कला को कला के रूप में नहीं बनाता है, जिसमें एक कामुक व्यक्ति की पूर्ण परिणति की सचेत संतुष्टि होती है। कला की चीज़ बनाने में व्यक्तिपरक आनंद एक भरपूर मार्मिक प्रार्थना करने की संतुष्टि से अलग नहीं है।

# विवेक का संगठित उल्लंघन

जब मैं धर्म में भावनात्मक और रचनात्मक तत्वों को देखता हूं, तो मैं इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं हूं कि मानव आत्मा और अंतरात्मा के क्षेत्र को भी स्वार्थी हितों की विषैली लालसा ने दूषित किया है। कपटपूर्ण पाखंड और भयावह अंधविश्वास ने विश्वास को धूमिल कर दिया, अंतरात्मा को कलुषित किया और श्रद्धालुओं की निष्ठा को कलंकित कर दिया। अग्नि, रक्त और विकृत क्रूरता ने एक साथ मिलकर भक्तों की निष्ठा की परीक्षा ली है। राजनीति के सहारे और सैन्य बल के सहयोग से एक पूरे ढोंग के समूह को भोले-भाले लोगों पर लागू किया गया है। स्वार्थी हितों द्वारा बनाए गए कानूनों का उपयोग स्वतंत्र विचारकों की अंतरात्मा को परखने के लिए किया गया है। अश्लीलता के खिलाफ ईमानदार विरोध, अमानवीयता और अत्याचार के विरुद्ध उठी चीखों को सैडिस्टिक उदासीनता, अनादर और कुशलता के साथ दबा दिया गया है।

लेकिन सामाजिक ढांचे और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर इन सभी दावों का कारण न तो धर्म था, न ही आध्यात्मिकता, और न ही धर्म में किसी अंतर्निहित दोष, तर्क की कमी या अनैतिक तत्व थे; बल्कि यह स्वार्थी हितों, थोपे गए नियमों, संस्थागत अधिकार और जनसाधारण की सरलता के बेरोक-टोक शोषण के कारण हुआ।

संक्षेप में, यह समझने के बाद कि धर्म की सांत्वनादायक छाया मानव विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक तत्व है, संस्थागत तानाशाहों ने उस अंतिम आश्रय को निष्ठुरता से एकाधिकार में ले लिया, जिसे मनुष्य ने अपनी पीड़ा से बचने के

लिए और आत्मिक शून्यता से रक्षा के लिए खोजा था। संस्थागत सत्ता की दुष्ट पकड़ ने मानव अंतरात्मा को जकड़ लिया, जिसका एकमात्र उद्देश्य शोषण और वर्चस्व था। धार्मिकता मनुष्य को असफल नहीं करती, बल्कि ऐसी संगठित और संस्थागत धर्म प्रणालियाँ, जो मनुष्य को प्रगति और मुक्ति की ओर प्रेरित करने के बजाय उसे इस जीवन में आध्यात्मिक गरीबी और अगले जीवन के भय में जकड़े रखती हैं।

कुछ महान आत्माओं जैसे बुद्ध, यीशु, कन्फ्यूशियस ने इस चक्र को सही दिशा में मोड़ने का प्रयास किया; लेकिन सत्ता में बैठे सिस्टम की साजिश इतनी शक्तिशाली थी कि अंततः उनकी शिक्षाओं को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया, और संस्थानों ने सुधारों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को मिटाते हुए अपनी दुष्ट व्यापारिक नीतियों को और भी कठोरता से पुनः स्थापित कर लिया।

## अज्ञात के प्रति प्रेम

मानव इतिहास में अंतरात्मा के अधिकारों की विजय की दुखद और विकृत कथा किसी भी प्रकार से सच्चे धर्म की उस भूमिका को कम नहीं करती, जिसने सामाजिक व्यवस्था में अत्यंत आवश्यक शांति और व्यक्तिगत सांत्वना को लाने में योगदान दिया है। न ही यह धर्म के उस गौरवपूर्ण योगदान को कम करती है जो उसने अपने उत्कृष्ट आध्यात्मिक और भावनात्मक तत्वों के माध्यम से निभाया है।

शब्दों की कविता, संगीत और रंगों की छटा के अलावा, मानव की किसी अन्य लालसा ने अज्ञात के प्रति इस प्रेम (जिसे धर्म के नाम से जाना जाता है) की तरह मानवीय भावनाओं के आकर्षण और मानवीय भावनाओं की तीव्रता का इतना समर्पित अभिव्यक्तिपूर्ण प्रवाह उत्पन्न नहीं किया है।

यह मानना होगा कि संगठित धर्मों के खतरों और असफलताओं के बावजूद मानव हृदय और उसकी आध्यात्मिक दृढ़ता ने अपनी अंतरात्मा की पुकार के प्रति व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पवित्रता को बनाए रखा है। कला के धर्म और धर्म की कला के माध्यम से अपनी भावनात्मक और कल्पनाशील भावनाओं को प्रकट करके इस संघर्ष में अपनी सफलता दर्ज की है।

## सच्चा धर्म अपने ईश्वर को खोजता है

सच्चे धर्म ने स्वयं को सर्वोच्च आत्मिक आनंद का स्रोत साबित किया है। यह संकट, दुःख, हानि और अपमान के समय में मनुष्य को सांत्वना और सहारा देता है।
जीवन की उलझनों और कष्टों को शांत करने के इस महान अधिकार और शक्तिशाली साधन को दूसरों के आदेशों के अनुसार चलकर खो देना, ईश्वर की दिव्य योजना के विरुद्ध कार्य करना है। जैसे हर अन्य अनमोल स्वतंत्रता को मनुष्य संजोकर रखता है, वैसे ही उसे अपनी पसंद के ईश्वर को स्वीकार करने की स्वतंत्रता को भी संजोना चाहिए—एक ऐसा ईश्वर जो उसकी व्यक्तिगत पीड़ा और आवश्यकताओं का उत्तर दे सके।

मनुष्य अपनी पीड़ाओं, कष्टों, शिकायतों, विपत्तियों, रोगों और नुकसानों में अद्वितीय है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चुनौती का सामना करने और अपने ऊपर हावी हो रही स्थिति से निपटने का अपना तरीका खोजना होता है। सुख में मनुष्य की आत्मा समुद्र और आकाश से एकाकार हो सकती है; लेकिन गहन पीड़ा में वह स्वयं में एक द्वीप बन जाता है।

जो उसकी आवश्यकताओं का सर्वाधिक उत्तर देता है, जो निकटता और सांत्वना के साथ प्रतिक्रिया करता है, वही मनुष्य का अपना विशिष्ट धर्म बन जाता है। इस प्रकार वह स्वयं अपना ईश्वर रचता है और उसे खोजता है।

जैसे कलाकार की आत्मा धीरे-धीरे उस माध्यम को खोज लेती है जिसके माध्यम से वह स्वयं को सबसे अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है, वैसे ही किसी रचनात्मक कलाकार को एक थोपे गए मानक या अभिव्यक्ति के तरीके को अपनाने के लिए कहना मूर्खता की पराकाष्ठा होगी। इसी प्रकार, किसी भूखी और टूट चुकी आत्मा पर एक मानकीकृत ईश्वर को थोपना, जो अपने 'उत्तर देने वाले' ईश्वर की खोज में है, अकल्पनीय है।

शरीर स्वयं एक दिव्य मंदिर है; आत्मा एक पवित्र स्थान; आत्मबोध दीपक है, और जो कुछ उस पवित्रतम स्थान में संचित रहता है, वही उसका सबसे प्रिय ईश्वर है, उसका अपना आदर्श है। यही तंत्र का सिद्धांत, विश्वास और उपदेश है। यही कारण है कि तंत्र पद्धति में इतने अधिक देवी-देवता, ध्यान और मुद्राएँ हैं। प्रत्येक साधक आत्मिक और भावनात्मक दबाव के तहत अपने स्वयं के देवता की रचना करता है और उस साकार आदर्श के समक्ष नतमस्तक होता है।

इसीलिए सच्चा तांत्रिक मन कहता है:
"मैं तुझे देखता हूँ, और तू मुझे देखता है;
हमारे बीच कोई और न आए।"

यह हिंदू और तांत्रिक प्रतिमाओं की अंतर्निहित अवधारणा है। असहिष्णु मूर्तिभंजकों को इस दृष्टिकोण को समझकर अपने आक्रोश को शांत करना चाहिए। जितने व्यक्ति, उतने ही व्यक्तिगत विचार; जितने विचार, उतने ही आदर्श; जितने आदर्श, उतने ही ध्यान; जितने ध्यान, उतनी ही मूर्तियाँ। मूर्तियाँ मूर्ति-पूजा की वस्तुएँ नहीं हैं। यदि उनमें से उस दिव्य उपस्थिति के शाश्वत मूल्यों को हटा दिया जाए, तो वे केवल निर्जीव ढेले हैं जिन्हें मनुष्य झूठे आधार पर ऊँचा उठाता है।

हमने ऐसे मूर्तिपूज्यों के बारे में सुना है: सिकंदर और मर्दोक; हेलेन, लैला और क्लियोपेट्रा; कैलिगुला का घोड़ा, हिटलर का स्वस्तिक और राशि-चक्र के चिन्ह। इनमें से प्रत्येक ने कुछ समय के लिए लोगों को मोहित किया। आकर्षण की यह दुनिया आज भी कई ऐसी मूर्तियों को समेटे हुए है। लेकिन आत्मा के धर्मों को 'स्थानीय पहचान और नाम' देने वाली प्रतिमाओं को केवल आकर्षण की इस सीमा से ऊपर उठना चाहिए और आत्मा से एकाकार होना चाहिए।

तांत्रिक प्रतिमाएँ मनोदशा से मनोदशा, प्रेरणा से प्रेरणा, आवश्यकता से आवश्यकता, यहाँ तक कि अवसर से अवसर तक बदलती हैं। चामुंडा, काली और नील सरस्वती के उग्र रूपों से लेकर लक्ष्मी, सरदा और प्रज्ञा-परमिता के कोमल रूपों तक; सूर्यदेव विष्णु से लेकर जलदेव वरुण और स्थिर, निष्पक्ष, पूर्ण तटस्थता के प्रतीक शिव तक—प्रत्येक प्रतिमा में एक आत्मिक आदर्श समाहित होता है, जो यदि सफलतापूर्वक मूर्त रूप ले ले, तो भक्त के भटकते मन को बांधकर उसे वांछित एकाग्रता प्रदान करता है।

यह केवल पूर्व-निर्धारित विचारों से मन को मुक्त करने और इंद्रियों की दुनिया को निष्प्रभावी करने का एक तरीका है। केवल मुक्त आत्माएँ ही अपनी चेतना को भीतर की ओर ले जाने में सक्षम होती हैं। केवल उन्हें ही आत्मबोध की उपलब्धि प्राप्त होती है।

## तस्वीरें अपने आप में एक सुकून लेकर आती हैं

यह तांत्रिकों की अनेक मूर्तियों और साधकों द्वारा संजोए और पूजे जाने वाले अनगिनत आदर्शों के पीछे का गूढ़ रहस्य है। प्रत्येक मूर्ति एक साधक की आत्मा की भूख को मूर्त रूप में साकार करती है, ताकि वह बाहरी रूप और अपनी आंतरिक तृष्णा के बीच एक व्यक्तिगत और तार्किक संबंध स्थापित कर सके।

इस संबंध को कोई बेहतर वर्णन न मिल पाने के कारण, वह इसे भावनात्मक रूप से पिता, माता, यहाँ तक कि पत्नी या उससे भी बेहतर, अपने दूसरे रूप (अल्टर ईगो) के रूप में संबोधित करता है।

यहाँ तक कि वह प्रेमी, जो दिव्य मुक्ति या पूर्ण आत्मसाति के प्रकार की पहचान तक पहुँचना चाहता है, उसे भी यह निर्धारित करना होगा कि उसे कौन सा प्रेम सबसे अधिक आकर्षित करता है और उसकी आंतरिक व्यक्तित्व को सबसे अधिक उत्तर देता है। उस वस्तु को स्वीकारने में कभी संकोच नहीं होना चाहिए जो उसके भीतर की भूख को उपयुक्तता और संतोषजनक उत्तर देती हो।

अपना इष्ट-देवता चुनते समय साधक भ्रमित हो सकता है; लेकिन वह हमेशा किसी महान गुरु से मार्गदर्शन ले सकता है, या प्रतीक्षा कर सकता है, प्रयास कर सकता है और धीरे-धीरे स्वयं खोज सकता है कि उसे वास्तव में क्या चाहिए।

यह स्पष्ट है कि किसी महान गुरु के ज्ञान तक पहुँच साधक के लिए एक आशीर्वाद है। व्यवस्थित विवाह प्रणाली आध्यात्मिक क्षेत्र में इसी विशेषज्ञ मार्गदर्शन की विधि का सामाजिक विस्तार है, जो जीवन के हर मोड़ पर गुरु के महत्व को स्वीकार करती है। जो लोग गुरु की उपस्थिति को महत्व नहीं देते, वे विवाह संबंधों में मार्गदर्शन की भावना को भी समझ नहीं सकते।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यहाँ जिस खोज पर चर्चा हो रही है, वह पूरी तरह से एक व्यक्तिपरक खोज है, जिसमें एक व्यक्तिपरक प्रतिक्रिया शामिल है। यह प्रतिक्रिया वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकती। कविता को उसके वजन, बाइंडिंग या चित्रण से नहीं आंका जा सकता। यदि उसमें कविता है, तो वह स्वयं-प्रतिबिंबित होगी, बिना उन बाहरी आवरणों के जो प्रकाशक या बुक-बाइंडर ने कुशल मंच-प्रबंधकों की तरह उसके निर्माण में लगाए हैं।

## तंत्र की बौद्धिक उपेक्षा

अक्सर तथाकथित बुद्धिजीवी इन तांत्रिक मूर्तियों को उस प्रेरणा की सहानुभूतिपूर्ण भावना के बिना देखते हैं, जिसे केवल आंतरिक भूख से व्याकुल आत्मा ही सराह सकती है। चूंकि तंत्र की मूर्तियों और तांत्रिक अनुष्ठानों के ये सतही आलोचक अक्सर 'शिक्षित और कुशल' माने जाते हैं, इसलिए उनके द्वारा इन निषिद्ध विषयों पर (जो उनकी व्यक्तिगत जानकारी की सीमा से बाहर होते हैं) दिए गए विचारों को मूल्यवान विशेषज्ञ टिप्पणियों के रूप में गलत समझ लिया जाता है।

ये शिक्षित निंदक, अपनी कुंठाओं के कारण (जो अक्सर खराब स्वास्थ्य, असंवेदनशील परवरिश, आर्थिक तंगी, यौन कुंठाओं आदि से उत्पन्न होती हैं), अपनी जटिल लेखनी को विद्वत्ता के आवरण में लपेटकर प्रस्तुत करते हैं और कभी भी विषय की गहराई में गए बिना तंत्र व्यवस्था का मजाक उड़ाते हैं। यह अक्सर उस स्थिति की तरह हो जाता है, जैसे किसी अपच के रोगी को आहार विशेषज्ञ बना दिया जाए।

दुर्भाग्यवश, तंत्र ऐसा विषय नहीं है जिसे केवल किताबों से पढ़कर समझा जा सके। यह उतना ही नीरस और व्यर्थ अभ्यास होगा, जितना कि बिना प्रयोगशाला के रसायन विज्ञान और भौतिकी का अध्ययन करना, या कभी सितारों को देखे बिना खगोल विज्ञान पढ़ना। तंत्र में ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ है उसमें प्रवेश करना और उसे न केवल मन और आत्मा से, बल्कि शरीर से भी साधना; क्योंकि तंत्र का बहुत बड़ा भाग कठोर साधना है, केवल निषेध नहीं; बल्कि इसका अधिकांश भाग आत्म-विश्लेषण और आत्म-समझ की गहराई में उतरना है।

तंत्र व्यक्ति को यह सिखाता है कि कैसे मन, शरीर और मस्तिष्क की लड़ाई में विजयी होना है। यह केवल आध्यात्मिकता या रहस्यवाद नहीं है, बल्कि यह आत्म-साक्षात्कार की यात्रा है, जो अभ्यास, अनुशासन और आत्म-निरीक्षण की मांग करती है।

## तंत्र: एक नकारात्मक दृष्टिकोण

लेकिन बौद्धिक निंदक, जो प्रेम की आत्मिक शक्ति के माध्यम से पूर्ण आध्यात्मिक उत्थान की वास्तविकता से प्रायः अनभिज्ञ होते हैं, इस गहन विषय का उपहास करना एक मनोरंजक काम समझते हैं। तंत्र केवल *वीर* के लिए है—उस साहसी और दृढ़-हृदय वाले व्यक्ति के लिए जो इसकी कठिन साधना का सामना कर सके। आलोचक अपनी राय बाहरी और सतही निरीक्षण पर आधारित करते हैं, और उनकी गलत धारणाओं की पुष्टि उन नकली और ढोंगी तांत्रिकों के उदाहरणों से होती है, जो छद्म कवियों की तरह, अपनी पूर्ण विफलता के कारण, केवल वास्तविक तंत्र के महत्व और अचूकता को सिद्ध करते हैं। कोई भी खोखला दावा पाँच हजार वर्षों के इतिहास में जीवित नहीं रह सकता। मोहभंग के आधार पर की गई सामान्यीकृत धारणाएँ नकारात्मक होती हैं और तथ्यात्मक रूप से गलत होती हैं।

ये विपत्ति के पैग़ंबर तंत्र को ढोंग, व्यभिचार, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र और विभिन्न सामाजिक अपराधों से जोड़ते हैं (हम बाद के चरण में इन 'अपराधों' का विवरण देंगे)। नशेड़ी, शराबी, विकृत मानसिकता वाले और उन्मादी लोग योग और तंत्र की अपरिभाषित छत्रछाया के नीचे अपने क्लब खोल लेते हैं। तंत्र अधोगति को एक आसान रास्ता बन गया है। लेकिन वास्तविक तंत्र सभी इंद्रियजन्य भावनाओं को आत्म-साक्षात्कार के उद्देश्य के लिए आत्मसमर्पित कर देता है।

अहंकार से बंधे स्वयं को निर्लिप्त मुक्त आत्मा में पूर्ण समर्पण के माध्यम से सभी स्वार्थपूर्ण भावनात्मक अतियों को निष्प्रभावी करना तंत्र का उद्देश्य रहा है। तंत्र द्वारा विकसित सभी अनुष्ठान केवल इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्रमिक अभ्यास हैं। *निर्वैयक्तिक उदात्त प्रेम* की साधना इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक और मधुर प्रक्रिया है, जिसमें आत्मा, स्वयं को उस दिव्य प्रेम के चरणों में अर्पित करती है।

इसी कारण तांत्रिक ग्रंथों में प्रेम, काम, और यहाँ तक कि कामुक आनंद की छवियों का भरपूर उपयोग होता है; अर्थात यह उस भाषा का उपयोग करता है जिसे 'संयोग' (अर्थात सांसारिक आत्मा का अद्वितीय उदात्त आत्मा के साथ मिलन) के लिए मनुष्य सबसे आसानी से समझ सकता है।

तंत्र के विवेचन और स्तुतियों में काम-चित्रों का उपयोग करने से दो मनोवैज्ञानिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है:

1. यह संयोग में कामुकता को कुंद करता है और शब्द-चित्रों के प्रभाव को निरंतर परिचय के माध्यम से कम कर देता है।

2. कामुक प्रेरित चित्रों को प्रस्तुत करके, तंत्र साधक के लिए काम-परिवेश के प्रति एक उदात्त दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

यह दोहराना उचित होगा कि तंत्र केवल उसी के लिए है जो सकारात्मक सोच वाला और मानसिक रूप से शक्तिशाली हो। यह केवल उन लोगों के लिए है जो अपनी इंद्रियों और भावनाओं पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए दृढ़-निश्चयी हैं, क्योंकि तंत्र की साधना में मन, शरीर और आत्मा का पूर्ण समर्पण आवश्यक है।

## मानव शरीर की आराधना

मानव शरीर और इंद्रियों को जागृत चेतना की वेदी पर बलिदान की वस्तु के रूप में अर्पित किया जाता है। केवल वही व्यक्ति जो *उदात्त भोगी* (सबल और संवेदनशील आत्मा) होते हैं, इस आनंद की रोमांचक पूर्णता को प्राप्त कर सकते हैं। इस जागृत चेतना (चैतन्य या कुंडलिनी की चित्त शक्ति) के प्रभाव में, वे सृजन के जादू में आनंदित होते हैं। वे अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को शक्तिशाली ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए शेक्सपियर और रवींद्रनाथ टैगोर, लिओनार्डो और पाइथागोरस, माइकल एंजेलो और रेम्ब्रांट, सैफो और मीरा, बीथोवन और रवि शंकर जैसे महान कलाकारों के समान अमर कला-रचनाएँ छोड़ जाते हैं। ये सभी अपने-अपने क्षेत्रों में महान भोगी और महान कलाकार थे।

जो सोफिस्ट (कपटपूर्ण विचारक) बिना अनुभव किए ही निंदात्मक टिप्पणियाँ और समीक्षाएँ करते हैं, वे इन महान आत्माओं के दिव्य उपहारों के मूल्य को कम नहीं कर सकते, जिन्होंने तंत्र योग के एक प्रकार के माध्यम से वह सब कुछ अर्जित किया जिसे वे स्वयं भी पूरी तरह से नहीं समझ पाए होंगे। साधना, या कौशल का अनुप्रयोग, विभिन्न तरीकों से विकसित किया जा सकता है। योग उस कौशल को प्राप्त करने का साधन है।

इनमें से कई वास्तव में रहस्यमय अनुष्ठानों और साधनों में संलग्न रहे हैं। उनमें से कई महान भोगी रहे हैं। उन्होंने शरीर और इंद्रियों के अद्भुत और जीवंत माध्यम की आराधना और पूर्णता को एक जीवंत सामग्री में बदल दिया। उन्होंने शरीर का माध्यम बनाकर उदात्त सत्य को प्राप्त किया, और उनकी रचनाएँ अमर कला और विज्ञान के कार्यों में परिवर्तित हो गईं। गोएथे या रॉडिन, रामकृष्ण या भर्तृहरि, लाओ त्से या त्सांगयांग ग्यात्सो ने शरीर का उपयोग आध्यात्मिक मुक्ति के साधन के रूप में करने के अपने अनुभवों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी दी है।

रवींद्रनाथ टैगोर कहते हैं:
"मेरा प्रेम मेरा ईश्वर बन जाता है,
मेरा ईश्वर मेरा प्रेम बन जाता है;
और कहाँ मैं यह अनुभव कर सकता हूँ?
मैं अपने प्रेम में ईश्वर को देखता हूँ,
अपने ईश्वर में प्रेम को।"

तिब्बती रहस्यवादी त्सांगयांग ग्यात्सो और भी स्पष्ट रूप से कहते हैं:
"मोन भूमि से कोयल पक्षी
वर्षा लाती है,
वह आकाश से उतरती है,

वह धरती को आशीर्वाद देती है;
जीवन पनपता है और फूलता है।
जब मोन से कोयल आती है,
तब मेरा प्रेमी और मैं एक हो जाते हैं,
शरीर, हृदय और मन में।"

यह भक्ति, प्रेम और शरीर के माध्यम से आत्मा और ईश्वर के मिलन की एक अनोखी अभिव्यक्ति है। यह वही तांत्रिक दृष्टिकोण है जो शरीर को पवित्र मंदिर के रूप में देखता है और उसके माध्यम से उच्चतम सत्य की प्राप्ति को संभव बनाता है।

## तंत्र के लिए कठोर हृदय की आवश्यकता

फिर भी यह सब केवल पुस्तक ज्ञान नहीं हो सकता। न ही यह मेरे लिए कभी मात्र किताबों में पढ़ा हुआ ज्ञान था। मेरे बाल्यावस्था के दिनों में जिस *भगवा वस्त्रधारी महिला* ने मुझे जिन साधनों में दीक्षित किया, वे मेरे भीतर हमेशा के लिए आनंद के अनंत स्रोतों की तरह संजोई रहीं। अपने जीवन के दौरान, मुझे अन्य आत्माओं (अल्टर ईगो) के साथ निकट संपर्क में आने का सौभाग्य मिला, जिनकी सहायता, अनुग्रह और आत्मसमर्पण के माध्यम से मैं इस आत्मबोध के शिखर तक पहुँचा।

यह न तो शारीरिक मिलन में भौतिक सुख का आनंद है, और न ही भोग-विलास में लिप्त व्यक्ति की अति-सुखानुभूति। यह अत्यंत संयमित, अनुशासित, अत्यधिक चयनात्मक और विचारशील है। यह अवसरों को अस्वीकार करता है और केवल वही स्वीकार करता है जो आवश्यक और प्रासंगिक हो।

आज मुझे यह ज्ञान है, और मैं यह कह सकता हूँ कि जिस *वाम-तंत्र* को लोग घृणा और पूजा दोनों की दृष्टि से देखते हैं, उसके माध्यम से यह उपलब्धि अन्य किसी भी योग-पद्धति की तुलना में कहीं अधिक सरलता और उत्कृष्टता से प्राप्त की जा सकती है। जो लोग इसे स्वीकार करने के लिए अपने को बहुत कमजोर पाते हैं, उन्हें इससे दूर रहने की पूरी स्वतंत्रता है। लेकिन इसे *नास्तिकता या ढोंग* कहना केवल नकारात्मक पूर्वाग्रह है, जो उनकी अपनी झिझक को छिपाने के लिए अपनाया गया है, क्योंकि यह एक कठिन, चुनौतीपूर्ण और परीक्षात्मक साधना है।

तंत्र उन लोगों के लिए है जिनके पास *साहसी हृदय* हैं। यह साहस, संकल्प और आत्मनियंत्रण की माँग करता है। यह डरपोकों के लिए नहीं है, बल्कि उन योद्धाओं के लिए है जो अपने मन, शरीर और आत्मा की गहराइयों में उतरकर स्वयं को खोजने का साहस रखते हैं।

लेकिन इसके बारे में विस्तार से चर्चा फिर कभी।

## टूटी हुई मंदिर में योग-वासिष्ठ

अब उस रहस्यमय घटना को जारी रखते हैं, जो वाराणसी की एक सुनसान गली में घटी थी, जहाँ *भगवा वस्त्रधारी महिला* मुझे ले गई थीं। मैंने 'ले गईं' कहा क्योंकि यह केवल ले जाना नहीं था, बल्कि ऐसा लगा जैसे मैं किसी अन्य लोक में

खिंचता चला गया था। आज, उस घटना को याद करना (जो पैंसठ साल से भी अधिक पुरानी है) अभी भी मेरे भीतर एक कंपन की लहर पैदा कर देता है।

उत्तर भारतीय जून के आकाश में दोपहर की धूप तप रही थी। सूर्य की निर्दयी किरणें उस संकरी गली के दोनों ओर खड़ी ऊँची पत्थर की इमारतों में फँस गई थीं, जो सबसे चौड़ी जगह पर भी केवल आठ से दस फीट की थी। दोपहर के अलावा, सूर्य की किरणें उस गली की ज़मीन तक नहीं पहुँच सकती थीं। ऐसा लग रहा था जैसे दोपहर के भोजन के बाद की नींद में पूरी दुनिया डूबी हुई हो। केवल आवारा कुत्ते ही मिठाई की दुकानों के आस-पास भटक रहे थे; इधर-उधर कुछ भिखारी भोजन की तलाश में घूम रहे थे; और कहीं-कहीं कोई तीर्थयात्री भजन गुनगुनाते हुए उस सुस्त वातावरण में हलचल ला रहा था।

*भगवा वस्त्रधारी महिला*, जो कोमल स्वभाव की थीं और बहुत कम बोलती थीं, अपनी सहज और शांत चाल में चल रही थीं, जैसे किसी गहन चिंतन में लीन हों (मैं उनकी इस चाल का आदी था); और मेरी बालसुलभ टाँगें उनके पीछे ऐसे चल रही थीं जैसे कोई पालतू कुत्ता अपनी मालकिन के पीछे चलता है।

जैसा कि हमेशा होता था, मेरे शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था; और हमेशा की तरह, उनके चमकीले शरीर को केवल एक लंबी, लगभग पारदर्शी भगवा चादर ढके हुए थी, और उनके विभिन्न मनकों और अस्थियों के हार धीरे-धीरे झनझना रहे थे। उनके एक हाथ में गंगा जल से भरा हुआ पीतल का कलश था, और एक टोकरी जिसमें हवन सामग्री थी। उनके दूसरे हाथ में संस्कृत में लिखित *योग-वासिष्ठ* की एक प्रति थी।

यह गली आज भी वैसी ही है जैसी तब थी—दुनिया की सबसे भीड़-भाड़ वाली गलियों में से एक। वास्तव में यह इतनी भीड़-भाड़ वाली थी और वाराणसी के आवारा साँडों से भरी हुई थी कि किसी ने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया कि उसके पास से कौन गुजर रहा है। लेकिन जैसे ही यह गली पूर्व दिशा की ओर मुड़ती थी, जहाँ गंगा बहती थी, वहाँ अद्भुत शांति थी।

पूर्व की ओर मुड़ते ही एक प्राचीन पत्थर का फाटक था, लगभग बारह फीट ऊँचा; और फाटक के ठीक बगल में एक रहस्यमयी रूप से शांत लम्बा कमरा था, जिसके सामने तीन फीट ऊँचा बरामदा संकरी गली के समानांतर चल रहा था। इस कमरे के भीतर, लोहे की सलाखों के पीछे *काली माँ की मूर्ति* स्थापित थी।

किसी कारणवश, भक्त भी वहाँ अधिक समय नहीं बिताते थे। वे जल्दी-जल्दी उस मूर्ति को प्रणाम करते और यदि संभव हो तो कुछ जल के छींटे या इधर-उधर से मिले कुछ फूल अर्पित कर देते। इस मूर्ति से जुड़ी अजीबोगरीब कथाएँ थीं, और लोगों ने कई बार वहाँ ऐसे लोगों को भी देखा था जो किसी की उपस्थिति के बिना अंदर विचरण करते थे।

इस रहस्यमयी मूर्ति के सामने एक *सज्जित राजद्वार* था। इसके निवासी कभी अतीत में *जेसोर के राजकुमार प्रतापादित्य* से संबंध रखते थे। हम उस इलाके के बच्चे उस घर के निवासियों से दूर रहते थे, जो मुश्किल से ही दिखाई देते थे।

इन दो गंभीर स्थलों को पार करते हुए हम गंगा की ओर बढ़ते गए। इस सुनसान गली के दाईं ओर प्राचीन जर्जर इमारतों की एक पंक्ति थी, जिनमें बूढ़े और बीमार लोग रहते थे। ये लोग हिंदू भारत के विभिन्न हिस्सों से वाराणसी आए थे, और उन्होंने एक या दो कमरों वाले मकानों को किराए पर ले रखा था। इनका एकमात्र उद्देश्य पवित्र वाराणसी में अंतिम साँस लेना था, ताकि उनका अंतिम संस्कार *प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट* पर हो सके।

हमने उन घरों को गंभीरता से देखा, जैसे हम मृतकों की बस्तियों के सामने खड़े हों। उस सुनसान और रहस्यमयी वातावरण में, *योग-वासिष्ठ* और भगवा वस्त्रधारी महिला के साथ मेरी यात्रा ने मुझे आध्यात्मिक रहस्यों के गहरे सागर में डुबो दिया।

## मणिकर्णिका: एक जीवंत संग्रहालय

तांत्रिक साधकों के लिए *मणिकर्णिका* का तंत्र साधना में सर्वोच्च महत्व है। आज भी, दिन हो या रात, विशेष रूप से रात के समय, वहाँ विभिन्न प्रकार के तांत्रिक योगियों को उनकी रहस्यमयी साधनाओं में लीन देखा जा सकता है, जहाँ कोई बंधन या नियम नहीं होते। मणिकर्णिका एक ऐसा संग्रहालय है जहाँ जीवित संतों और घातक ढोंगियों और ठगों का अद्भुत मिश्रण देखा जा सकता है।

यहीं पर मैंने एक रात एक *काले योगी* को देखा, जिसके बाल जटाओं के रूप में साँपों की तरह उसके कंधों पर लहराते हुए बिखरे थे। वह पूर्णतः नग्न था, जैसे प्रकृति और आकाश स्वयं हों। वह बिना रुके चलते हुए अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर अपने शरीर से सहजता से बहने वाले मूत्र को पी रहा था, बिना एक क्षण के लिए भी अपनी गति को रोके।

यहीं पर मेरी मुलाकात एक रहस्यमयी साधक से हुई, जो काले आवारा कुत्तों के साथ वहाँ की गंदी जलधारा में तैरती राख के बीच *जली हुई हड्डियों के टुकड़े* ढूँढ रहा था। यह दृश्य बेहद विचित्र था—मनुष्य और कुत्ते दोनों उन हड्डियों को ढूँढने और उनमें बची हुई किसी भी चीज़ को चबाने में व्यस्त थे। उस संत के साथ एक पूरी रात की बातचीत मेरे आध्यात्मिक जीवन में एक अमूल्य अनुभव बन गई।

इसी मणिकर्णिका में, मैं *एक वृद्ध योगिनी* के भक्तिपूर्ण ध्यान से मंत्रमुग्ध हो गया। मैं कई रातों तक चुपचाप उनसे दूर बैठकर उन्हें देखता रहा, बिना किसी विशेष कारण के, केवल उस अलौकिक आकर्षण के कारण। एक सुबह, उन्होंने मेरे पिता के माध्यम से मुझे बुलवाया। वह एक और महान अनुभव था जिसने मेरे भीतर एक गहरी आध्यात्मिक छाप छोड़ी।

यहीं पर मेरी भेंट एक *महान योगी* से हुई, जो अपनी तपस्या में निरंतर 'माँ! माँ!' चिल्लाते हुए आँसुओं में डूबे रहते थे। उनकी पुकार इतनी मार्मिक और भावपूर्ण थी कि मैं भी उनके साथ रो पड़ता था, जैसे मेरी आत्मा उनकी करुणा से जुड़ गई हो। बाद के जीवन में, मुझे उनके कौशल और अनुग्रह का एक अंश प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

लेकिन मैं इस अध्याय को उन सभी घटनाओं से नहीं भरूँगा। यदि स्थान मिला, तो मैं इन जीवंत अनुभवों को विस्तार से बाद में एक-एक करके वर्णित करना चाहूँगा। मणिकर्णिका में मिली ये असाधारण भेंटें केवल आध्यात्मिकता की गहराइयों में उतरने की तैयारी नहीं थीं, बल्कि जीवन के रहस्यों को समझने के द्वार भी थीं।

## चमत्कार

लेकिन मुझे उन लोगों के लिए एक बात कहनी चाहिए जो समझने की परवाह करते हैं: हम इस जीवन का केवल एक हिस्सा ही जानते हैं। इसका अधिकांश भाग हमारे लिए रहस्य है; और जिन्हें हम चमत्कार समझते हैं, वे वास्तव में सत्य हैं; केवल हमारी जानकारी के आयाम विस्तारित हो जाते हैं, जब हमें यह एहसास होता है कि हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में चेतना के विस्तृत क्षेत्र शामिल हैं, और ऐसी घटनाएँ होती हैं या हो सकती हैं जो हमारी तीन-आयामी अनुभूति

के लिए अविश्वसनीय और असत्य लगती हैं। मेरे विश्वास में, हमारे जीवन की सबसे अवास्तविक चीज़ वह विश्वास और धारणा है जो हम उस पर रखते हैं जिसे हम वास्तविकता मानते हैं।

(यह वास्तव में आयामों के भिन्न दृष्टिकोण का प्रश्न है। जो कुछ लोगों के लिए चमत्कार है, वह दूसरों के लिए तथ्य और वास्तविकता है। एक बार यदि हम यह स्वीकार कर लें कि जिसे हम जीवन और चेतना का क्षेत्र कहते हैं, वह शरीर के साथ शुरू और समाप्त नहीं होता, यद्यपि हम इसे केवल शरीर में रहते हुए ही अनुभव कर सकते हैं। लेकिन एक बार अगर हम यह मान लें कि जीवन-शक्ति और चेतना की शुरुआत और अंत हमारे वर्तमान जागरूकता से परे है, तो हम इन 'चमत्कारों' को हमारी चेतना के विस्तारित क्षेत्र में होने वाली घटनाओं के रूप में देख सकते हैं।

यह न भूलें कि हमारी सभी खोजें और निष्कर्ष हमारी इंद्रियों की सीमित क्षमता पर आधारित हैं, जो तीन-आयामी दुनिया में प्रतिक्रिया करती हैं। हम कभी भी किसी ठोस वस्तु के सभी पहलुओं को एक साथ नहीं देख सकते, हालाँकि जो हम देख रहे हैं, उसके आधार पर हम शेष अदृश्य भाग का अनुमान लगाते हैं। ऐसी सीमाओं में बंधी मानव इंद्रियाँ स्वाभाविक रूप से तीन-आयामी दुनिया से प्रभावित होती हैं, जिसे हम एकमात्र विश्वसनीय और स्वीकार्य वास्तविकता मानते हैं। यही वास्तविकता है। यही कारण है कि हमारा तर्कसंगत मस्तिष्क अक्सर अनुमान, परिकल्पना और उपमाओं पर निर्भर करता है।

लेकिन मानव मस्तिष्क की सुप्त क्षमताओं के सही और वैज्ञानिक विकास से हमारी चेतना का दायरा अवश्य ही विस्तारित हो सकता है। इसी क्षेत्र में *चौथा आयाम* कार्य करता है, जिसे आमतौर पर अनंत (Infinity) या *काल (Time)* के रूप में जाना जाता है। इसी विचार को तिब्बतियों द्वारा अनुष्ठानों में उपयोग की जाने वाली *तीसरी आँख* या हिंदू देवताओं और मूर्तियों पर अंकित *त्रिनेत्र* द्वारा दर्शाया गया है। *तीसरी आँख* की क्षमता को विकसित करना *अधिचेतना (supra-consciousness)* के क्षेत्र में प्रवेश का पासपोर्ट प्राप्त करना है। यह सामान्य रूप से स्वीकृत चेतना के क्षेत्र का केवल एक विस्तार है।

इस विस्तारित चेतना और चौथे आयाम के दृष्टिकोण से तथाकथित 'चमत्कारों' को देखने पर यह महसूस किया जा सकता है कि इन 'चमत्कारों' के तथ्यों में उन तथ्यों की तुलना में अधिक सार्थकता है, जिन्हें हम ठोस वास्तविकता मानते हैं।)**

यह वही प्रसिद्ध और रहस्यमय *मणिकर्णिका* थी, तांत्रिक साधनाओं का केंद्र और सभी तांत्रिकों के लिए *मक्का* के समान पवित्र स्थल। वाराणसी में मरकर मणिकर्णिका पर दाह-संस्कार होना प्रत्येक धर्मपरायण हिंदू की एक महान आकांक्षा होती है। इसी कारण उन प्राचीन पत्थर की इमारतों में भूत-प्रेतों की भीड़ जैसी स्थिति बनी रहती है। वे वहाँ ऐसे इकठ्ठा होते हैं जैसे किसी छत्ते में मधुमक्खियाँ, या शायद जैसे चलती-फिरती ममियाँ।

उन मकानों से थोड़ी दूर, उसी ओर, एक अजीब-सा मंदिर है, जो मंदिरों से भरे वाराणसी में भी सबसे विचित्र है। यह *चतुःषष्टि योगिनी (चौंसठ योगिनियों)* का मंदिर था। इसके पीछे के रहस्य को समझने के लिए हमें तांत्रिक परंपरा और चौंसठ योगिनियों के महत्व को समझना होगा। इसके बारे में मैं आगे विस्तार से बताऊँगा।

# चतुःषष्टि योगिनी

*आठ* संख्या तांत्रिक योगियों के लिए एक रहस्यमय (गूढ़) महत्व रखती है। श्रीकृष्ण ने *गीता* में आठ प्रकार की *प्रकृतियों* का उल्लेख किया है। योग में ध्यान का *कमल* भी आठ पंखुड़ियों वाला होता है। आंतरिक शक्तियों का विकास इन्हीं आठ प्रकृतियों के आठ पहलुओं के क्रमिक नियंत्रण, विकास और अनुग्रह पर निर्भर करता है।

इन आठ पहलुओं के कुल *चौंसठ (64) पहलू* होते हैं, जिन्हें *कला* भी कहा जाता है। ये कला मानव व्यक्तित्व को आकार देने वाली चेतन और अवचेतन प्रवृत्तियों को दर्शाती हैं। इनका संबंध भौतिक जगत में स्थित विभिन्न स्रोतों या स्थानों से भी होता है। *स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण* और उस संसार पर नियंत्रण पाने के लिए, जिसमें आत्मा स्थित है (जैसे यह संसार चेतना के भ्रूणीय द्रव में ढका हुआ एक जीवित प्राणी हो), इन तथ्यों को समझना और फिर एक कुशल घुड़सवार की तरह *चौंसठ दौड़ते घोड़ों* को एक ही लगाम से नियंत्रित करना आवश्यक है।

इसीलिए इन्हें *चौंसठ शक्ति-केंद्र, चौंसठ योगिनियाँ* और *चैतन्य के चौंसठ पहलू* कहा जाता है। इसलिए तंत्र योग में इस मंदिर को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है।

इस मंदिर में मुख्य *मूर्ति* कभी दिखाई नहीं देती। जो दिखता है, वह केवल *महामाता* का *स्वर्ण मुखौटा* है, जबकि शरीर को सावधानीपूर्वक वस्त्रों, आभूषणों और मालाओं से ढका जाता है। वास्तविक मूर्ति *दुर्गा* की है—भैंस का वध करने वाली, सिंह पर सवार देवी, जिनकी शक्ति को भूमध्यसागर और पूर्वी संस्कृतियों में अत्यंत आदर प्राप्त था, जिसमें *मिस्र की संस्कृति* भी शामिल है।

(मैंने इस देवी को *थाईलैंड* और *कंबोडिया* में पहचाना, जिसे मैंने हिंदू तंत्र की सांस्कृतिक विस्तार के रूप में समझा; लेकिन मैंने इसी देवी की मूर्ति और उसके गुणों को *मेक्सिको* और *पेरू* के भूले-बिसरे मंदिरों में भी देखा है, जो अब तक एक सामान्य व्याख्या से परे है।)

इस पवित्र मंदिर के ठीक सामने, छोटे आंगन के दूसरी ओर, और माता के समक्ष एक और *अप्राप्य मंदिर* है। इसमें *माँ काली* की मूर्ति देखी जा सकती है; लेकिन बहुत कम लोग इसके पास पहुँचते हैं। किसी रहस्यमय कारण से, भक्तगण, विशेष रूप से साधारण भक्त, इस मंदिर में प्रवेश करने से बचते हैं।

यह *भद्रकाली* का मंदिर है, जो तांत्रिक साधना की एक उग्र देवी हैं, जिनकी पूजा में अत्यंत चरम प्रकार के बलिदान की आवश्यकता होती है, जिसमें *मृत और जीवित दोनों* ही शामिल होते हैं, साथ ही *रक्त* और *रक्तवर्णी पुष्प* भी अर्पित किए जाते हैं।

कहा जाता है कि भद्रकाली की वेदी *पाँच शवों* पर बनाई जाती है, जिसमें *मानव शव* भी शामिल होता है। एक संत को *सव साधना* (मृत शरीर को आसन बनाकर की जाने वाली तपस्या) को पूरा करना होता है, तभी भद्रकाली मंदिर को *प्राण-प्रतिष्ठित* किया जा सकता है।

यह स्थान केवल एक मंदिर नहीं है, बल्कि यह तंत्र साधना के गहन रहस्यों और शक्तियों का केंद्र है। यह चेतना के सीमाओं को पार करने का मार्गदर्शक है और साधक को चौंसठ योगिनियों के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाता है।

# भद्रकाली मंदिर में संगीत

यह मेरे लिए अत्यंत सुखद और सौभाग्य की बात थी कि मैं अपने *पिता* के साथ संध्या के उस गहन सन्नाटे में, अंधेरी गलियों से गुजरते हुए इस *द्वैत मंदिर* तक पहुँचता, जब कोई साधारण व्यक्ति वहाँ नहीं आता था। पिता धीरे-धीरे संस्कृत में एक मधुर स्तुति गाते थे, जिसके प्रत्येक शब्द मुझे कंठस्थ थे, और मैं उनके साथ उन शब्दों को दोहराता, जिससे वे बहुत प्रसन्न होते थे—यह मैं उस घनी अंधकार में भी महसूस कर सकता था।

मुझे उस महान *स्तुति का अनुवाद* करने की इच्छा है, लेकिन यहाँ स्थान की सीमा है। तांत्रिक स्तुतियाँ, विशेष रूप से शास्त्रीय संस्कृत में, अपने *चित्रात्मक बिंबों*, *भावार्थ* और *लयबद्ध ध्वनि* के कारण मन और कल्पना को प्रभावित करती हैं और एक ऐसी दिव्य कोमलता और संतोष उत्पन्न करती हैं, जो मन को भावविह्वल कर देती है। इन शब्दों और संगीत में निहित भावनात्मक प्रचुरता मन को एक ऐसी कोमलता से भर देती है, जो जीवन को आनंदमय बना देती है। शायद इसे ही *आनंदोत्पत्ति (exhilaration)* कहा जाता है।

ध्वनि लय (सोनिक रिदम) के *तनाव को शांत करने* में निभाए जाने वाले भूमिका को सभी जानते हैं। *लैटिन*, *संस्कृत*, और एक प्रकार से *प्राचीन सेल्टिक मंत्र* इस ध्वनि प्रभाव में विशेष रूप से समृद्ध हैं।

मंदिर के चारों ओर का अंधकार धीरे-धीरे *ठोस* होने लगा; और एक *स्पंदनशील उपस्थिति* की चेतना ने मन और शरीर को ज्ञात दुनिया से बहुत दूर एक उच्चतर लोक में उठा दिया।

लगभग इसी समय *पिता मुझसे ओझल* हो जाते थे। वे हमेशा किसी *अज्ञात कोने* में चले जाते, मुझे *मुख्य मंदिर के द्वार पर रखी पत्थर की चौकी* पर अकेला छोड़कर। उनकी अनुपस्थिति के बावजूद मुझे यह विश्वास रहता कि वे शीघ्र ही मेरे पास आ जाएँगे; लेकिन इस बीच, मैं अपने विचारों में खो जाता था।

मैं हमेशा *माँ (भद्रकाली)* के बारे में सोचता। मैं धीमी आवाज़ में बार-बार मंत्र दोहराता। मंदिर के भीतर *तेल का दीपक* जल रहा था। केवल *झींगुरों और सिकाडों की ध्वनि* उस एकाकी दीपक का साथ दे रही थी।

मैं इस अनुभूति का इतना आदी हो गया था कि बाद के वर्षों में मुझे वहाँ ठहरकर उसी *आंतरिक संसार* में खो जाने से खुद को रोकना बहुत कठिन लगा, जो केवल मेरा था। आज भी, कहीं और मुझे ध्यान का सर्वोच्च फल इतनी *पूर्णता और शीघ्रता* से प्राप्त नहीं होता, जितना कि इस मंदिर में होता है।

उन दिनों मुझे *ध्यान* के बारे में कुछ भी पता नहीं था; न ही मैंने इसके बारे में कभी सुना था। लेकिन आज मैं स्पष्ट रूप से उन *संध्या-सत्रों* को याद कर सकता हूँ और महसूस कर सकता हूँ कि मेरे पिता ने मुझे *ध्यान के रहस्यों* को सबसे व्यावहारिक ढंग से सिखाया, भले ही अप्रत्यक्ष रूप से। यह मेरे लिए उतना ही स्वाभाविक और सहज था, जितना कि *बतख के बच्चों* के लिए तैरना।

आज भी, चाहे यह किसी भी घड़ी में हो या *चाँदनी रात* की गहराइयों में, उस स्तुति का प्रभाव मुझ पर हावी हो जाता है, और मैं उस *आध्यात्मिक ऊर्जा* में समा जाता हूँ, स्वयं को पूरी तरह से *माँ के आलिंगनों* में खो देता हूँ।

## पीएटा का अनुभव

*(एक बार रोम के वेटिकन में, अद्वितीय पीएटा की मूर्ति के सामने घुटनों के बल झुककर, मैं स्वयं को भूल गया और अनायास ही उस स्तुति में खो गया, जो मेरे भीतर से स्वतः ही फूट पड़ी थी। इसके परिणामस्वरूप, वेटिकन के माहौल में प्रतिक्रियाओं की एक शृंखला शुरू हो गई।)*

वाराणसी के उस मोहल्ले के लोगों के लिए, और अधिकांश अन्य लोगों के लिए, मेरी ये *रात्रिकालीन साधनाएँ* तांत्रिक रहस्यों में एक प्रकार के निषिद्ध साहसिक कार्य जैसी थीं। लेकिन पहला कारण यह था कि इसमें *मेरे पिता* की भागीदारी थी, और दूसरा कारण यह था कि एक *विलक्षण बालक* के अजीब व्यवहार के बारे में पहले से ही चर्चाएँ थीं। इसलिए लोगों ने चुप्पी साधे रखी और कानाफूसी तक नहीं की।

मुझे संदेह है कि *भगवा वस्त्रधारी महिला* की उपस्थिति का प्रभाव भी इस पर पड़ा, जिनकी छत्रछाया में मैंने इन साधनाओं को विकसित किया था।

इसके विपरीत, मुझे लोगों से एक प्रकार की *श्रद्धा* ही प्राप्त होती थी। मुझे *एक बूढ़ी दूधवाली* की याद है, जो छोटे-छोटे मिट्टी के कपों में घर का बना मीठा *मावा (घना दूध)* बेचती थी। जब हम घर लौटते थे, तो हमें उसके पास से होकर गुजरना पड़ता था। वह हमेशा मुझे एक भरा हुआ कप देती थी, जिसके लिए उसने कभी भी कुछ भी स्वीकार नहीं किया।

मुझे पता था कि मेरे पिता भी *सद्भावना और विनम्रता* के साथ इस उपहार को स्वीकार करते थे। *वास्तव में आध्यात्मिक व्यक्ति* के लिए, कभी-कभी स्वीकार करने का कार्य *अनुग्रह प्रदान करने* जैसा महत्व प्राप्त कर लेता है। वास्तव में, *स्वीकार करके उपकृत करना* संभव है, जो प्रेम के उपहार को अस्वीकार करने की तुलना में कहीं अधिक *विनम्रता* को दर्शाता है।

यह अनुभव मुझे यह सिखाता था कि *अस्वीकृति में अहंकार* हो सकता है, जबकि *स्वीकार्यता में करुणा* और *विनम्रता* होती है। यह एक साधना ही थी, जिसमें प्रेम और भक्ति के आदान-प्रदान को मैंने प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया।

## खंडहर में मंदिर

हम उस *रहस्यमयी गली* से आगे बढ़ रहे थे। लेकिन जब *भगवा वस्त्रधारी महिला* मुझे एक और विशाल इमारत की ओर ले गईं, जो उस समय *खंडहर* में तब्दील हो चुकी थी, तो मैं चकित रह गया। हम हमेशा उस *विशाल द्वार* को देखते थे, जो हमें दाईं ओर दिखाई देता था। लेकिन उसकी अत्यंत जीर्ण-शीर्ण स्थिति के कारण हम हमेशा इस *विषैले सांपों के कुख्यात बसेरे* से दूर रहना ही समझदारी मानते थे।

यहाँ तक कि उस छोटी उम्र में भी मुझे उस क्षेत्र में *साँप के डसने से हुई दो घातक घटनाओं* के बारे में पता था।

लेकिन आज वह *महिला* अपने कदम उसी *खंडहर* की ओर बढ़ा रही थीं। मैं हमेशा की तरह *मंत्रमुग्ध* होकर उनके पीछे-पीछे चल रहा था, यह जानते हुए कि उनकी *मातृसुलभ सुरक्षा और मार्गदर्शन* मुझे सदा सुरक्षित रखेगा।

भीतर के आँगन में एक विशाल खुला स्थान था, जो *उत्तर भारतीय जून* की *तेज चमकीली धूप* में नहाया हुआ था। कुछ दूरी पर, और जैसा मैंने अनुमान लगाया, शायद *गंगा के किनारे* के पास ही, एक *प्राचीन शिव मंदिर* का *ऊँचा शिखर* आकाश की ओर उठता हुआ दिख रहा था।

उन्होंने *टूटे-फूटे दरवाज़ों* को धक्का देकर खोला। *प्राचीन कुंडियों* ने *जंग लगे विरोध* के साथ कराहते हुए आवाज़ की। और वहाँ, अंदर, *लिंगम* स्थापित था—*काले पत्थर* से तराशा गया एक दिव्य आकार, जो चमक रहा था, दमक रहा था।

वह हमारे सामने कम से कम *पाँच फीट से भी अधिक ऊँचाई* में विशालता से खड़ा था। *गौरी पीठम* पर स्थापित यह *भव्य लिंगम* एक बड़े परिधि में फैला हुआ था। किसी *भक्त* ने उसके चरणों में *फूल चढ़ाए* थे, जो अब *सूख चुके* थे।

वहाँ *पान के पत्ते* भी पड़े थे, जो किसी *मौन भक्ति* के साथ की गई *विनम्र अर्पण* का संकेत दे रहे थे।

उस *खंडहर मंदिर* के उस *विराट लिंगम* के सामने खड़े होकर मुझे *अद्भुत ऊर्जा* का अनुभव हुआ। ऐसा लगा मानो वह *प्राचीन पत्थर* समय और युगों के पार जाकर *चेतना* और *शक्ति* का प्रतीक बन गया हो।

यह स्थान न केवल *खंडहर* था, बल्कि *आध्यात्मिक रहस्य* और *शक्ति* का केंद्र भी था। उस *भव्य लिंगम* की *शाश्वत चमक* में *अद्वितीय दिव्यता* झलक रही थी, जो समय की सीमाओं से परे थी।

## अजीब दीक्षा

यहाँ, उसने दीवार की एक दरार से चौकोर पुआल की चटाई निकाली और उसे पत्थर के फर्श पर बिछाकर बैठ गई। मैं उसके सामने बिना किसी बिछौने के पत्थर पर ही सहजता से बैठ गया। फिर उसने आग जलाई और उसमें धूप डाली। परिचित सुगंध ने तुरंत ही वातावरण को पवित्र और मननशील बना दिया।

उसने अपनी आँखें बंद कीं और तुरंत ही गहन ध्यान में लीन हो गई। उसके चेहरे पर किसी दूसरी दुनिया की रोशनी झलकने लगी। समय बीतता गया। मैंने भी अपनी आँखें बंद कर लीं।

समय का कोई अंदाजा नहीं था, शायद युगों के बाद, मैंने उसका स्पर्श महसूस किया। आँखें खोलते ही जो दृश्य देखा, उससे मैं अचंभित रह गया। तेज प्रकाश इतना चकाचौंध करने वाला था कि मैं समझ ही नहीं पाया कि क्या देख रहा हूँ। मेरी परिचित भगवा वस्त्रधारी महिला! उन्हें क्या हो गया था?

वह पूरी तरह नग्न थीं और पीठ के बल सीधी लेटी हुई थीं। उनके पैर डबल-लोटस मुद्रा में बँधे हुए थे, सिर ज़मीन पर था, और उनके पेट के टीले और ढलान वाले क्षेत्र के बीच, जो जांघों से लेकर एड़ी तक फैला था, एक रहस्यमयी गुहा थी, जहाँ कुछ समय पहले ही फूल चढ़ाए गए थे। पहली बार मुझे पता चला कि शरीर के उस हिस्से में भी बाल उगते हैं।

मेरी उलझन और हैरानी की परवाह किए बिना, उन्होंने मुझे अपने जांघों के बीच उन फूलों पर बैठने का निर्देश दिया, जबकि वह आँखें ऊपर की ओर किए समर्पित मुद्रा में लेटी रहीं। उनकी गोद हमेशा से मेरी शरणस्थली रही थी। लेकिन जो बात मुझे हैरान कर रही थी, वह यह थी कि उन्होंने अपने शरीर से इकलौता वस्त्र भी हटा दिया था, जो अब उनके नीचे बिस्तर की तरह तह करके बिछाया हुआ था।

वह मुझे बिल्कुल अलग रूप में दिख रही थीं। उनमें कुछ भी मानवीय नहीं था। मेरे शरीर पर पसीना आने लगा, जबकि धूप की सुगंध कमरे में फैलती जा रही थी। उनके माथे और त्रिभुजाकार क्षेत्र पर भस्म, लाल और काले टीके लगे हुए थे।

कमरे का वातावरण रहस्यमय और अजीब होता जा रहा था। कीटों की आवाजें तेज़ हो गईं। कहीं से छिपकली की आवाज आई—बार-बार। मुझे ठंडक का एहसास हुआ, जबकि बाहर जून की तपती गर्मी थी। मेरे रोमांच खड़े हो गए, और मैं आश्चर्यचकित रह गया।

उनकी नग्न देह को देखकर ऐसा लग रहा था, मानो वह दूसरी दुनिया की कोई नई सृष्टि हों। (मैं उस महान दीक्षा के प्रत्येक क्षण को याद करने की कोशिश कर रहा हूँ।) उनका माथा पवित्र भस्म से लिपटा था, भौंहों के बीच काले और लाल टीके लगे हुए थे, बाल भगवा वस्त्र के चारों ओर बिखरे हुए थे, और उनके नाभि क्षेत्र के नीचे जो त्रिभुजाकार गुहा थी, वहाँ पौराणिक अंधकार था, जिसके ऊपर मुझे बैठने का निर्देश मिला था।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस स्थिति में कैसे प्रतिक्रिया दूँ। (बाद में मैंने कई बार यह प्रक्रिया पंचगंगा के तैलंग समाधि के भूमिगत काली मंदिर में की, जहाँ औरंगजेब द्वारा ध्वस्त किए गए विष्णु शक्ति मंदिर के स्थान पर बनाई गई मस्जिद आज भी खड़ी है।)

तभी एक गहरी, भारी, और आकर्षक आवाज आई:
**"रुको मत, देरी मत करो, प्रिय। यह तुम्हारा क्षण है। वह लो, जो केवल मैं दे सकती हूँ। बैठो; और योनि को ढँको।"**

उनकी आवाज की गूंज और गहराई से मुझे पता चला कि वह समाधि में हैं। उनकी आँखें आधी बंद थीं, और जो थोड़ा-बहुत दिखाई दे रहा था, वह सफेद था।

मैं उनके पवित्र शरीर पर चढ़ गया और उनके पैरों की गुहा में बैठ गया। पहले स्पर्श में ही मुझे एहसास हुआ कि उनकी त्वचा तप रही थी। गर्मी इतनी तीव्र थी कि सहन करना कठिन था। लेकिन मुझे पता था कि प्रश्न पूछना मेरे अधिकार में नहीं था।

मैंने लोटस मुद्रा में बैठकर ध्यान लगाया। उनके पैर डबल-लोटस मुद्रा में बँधे हुए थे। समय बीतता गया—शायद मिनट, शायद घंटे। किसे परवाह थी?

उन चौरासी हज़ार नाड़ियों में एक अद्भुत प्रवाह महसूस हुआ, जिनके बारे में उन्होंने हमेशा बात की थी। मेरी रीढ़ की हड्डी के आधार पर हल्की गुदगुदी और स्पंदन महसूस होने लगा, जो रीढ़ के ऊपर-नीचे दौड़ने लगा। मैंने आँखें बंद कर लीं।

## दूसरे समयों से आया हुआ

"कोई बात नहीं," मैंने उसकी आवाज़ सुनी। उस समय वह मुझे किसी ठोस रूप में नहीं दिख रही थीं, केवल एक गंभीर रहस्यमय आवाज़ सुनाई दी, "मैं यहाँ हूँ; मैं जो पूरी तरह से तुम्हारी हूँ, जिससे तुम अपनी आवश्यकता के अनुसार ग्रहण कर सकते हो। मेरे लिए यह चौकोर चटाई जो है, वही तुम्हारे लिए यह शरीर है। तुम ब्राह्मण बालक हो, चयनित बालक। तुम दूसरे समयों से आए हुए हो। तुम असाधारण हो। तुम पूरी तरह मुझ में हो; पूरी तरह मुझ में। तुम में वेदों की परंपरा जीवित है। तुम्हें केवल उस बंद दरवाज़े को खोलना है, जो बंद है। तुम वास्तव में वह जीवन जीते हो, जो दूसरों के लिए केवल कल्पना में जीने योग्य है। बैठो, आराम से रहो।

**"मैं कमल हूँ; तुम ब्रह्म हो।
मैं निर्जीव शरीर हूँ, तुम जीवंत ज्वाला हो।

मैं समय में हूँ; तुम शाश्वत काल हो।
मैं आकाश हूँ, तुम सूर्य हो।
मैं ध्वनि हूँ, तुम अर्थ हो।

अब पुस्तक उठाओ। इसे खोलो। धीरे-धीरे, ध्यानपूर्वक, एक-एक शब्द पढ़ो। ऊँची आवाज़ में मंत्रोच्चार शुरू करो। पुस्तक को मेरे नग्न वक्ष पर फैला दो। संकोच मत करो। रुको मत। आगे बढ़ो और प्रगति करो। मुझ में विलीन हो जाओ। मैं तुम्हारी जीभ और तुम्हारी आवाज़ के माध्यम से पढ़ूँगी, ओ मेरे प्रिय।

पढ़ो।
मैं निर्जीव पदार्थ हूँ; तुम आत्मा हो।
मैं पत्थर हूँ; तुम संदेश हो।
मैं मिट्टी हूँ, तुम धारा हो।
अब! अभी!!
पुस्तक खोलो। शुरू करो।
पहले मंत्र तक बिना रुके पढ़ते जाओ।"**

अचानक वह मौन हो गईं। उनकी काजल लगी गहरी आँखें खुलीं। वे लाल-लाल चमक रही थीं। उनकी पुतलियाँ बड़ी हो गई थीं और उनमें अग्नि की चमक थी। मैं कुछ कहना चाहता था, लेकिन उन्होंने संकेत से मुझे चुप रहने को कहा।

मैंने हिचकिचाते हुए पूछा, "अगर मुझे मंत्र न मिले... अगर मैं असफल हो जाऊँ...."
"तुम किसी भी चीज़ में असफल नहीं होगे। तुम्हें मंत्र खोजने की आवश्यकता नहीं है। मंत्र स्वयं तुम्हें खोजेगा। दीपक जलाओ—वेदी के आधार पर। अग्नि से दीपक प्रज्वलित करो।"

मैंने उनके निर्देशों का पालन किया, मानो मंत्रमुग्ध हो गया था।
"दीपक मेरे फैले हुए हाथों पर रख दो"; मैंने वैसा ही किया।
"ये साधारण दीपक नहीं हैं। सूर्य और चंद्रमा तुम्हारी रक्षा कर रहे हैं। तुम सब देखोगे; जो पढ़ोगे, सब समझोगे। अब शुरू करो। समय बीत रहा है।"

मैंने मंत्रोच्चार शुरू किया। संस्कृत में श्लोक पढ़ना मेरे लिए नया नहीं था। पहले के श्लोक सरल थे; और मैं उनमें गंगा की धारा में तैरने की तरह बहने लगा। मुझे पहले कभी ऐसी शक्ति और ऊर्जा का अनुभव नहीं हुआ था। समय बीतता गया... मैंने स्वर्णिम परिपक्वता का एक नया अनुभव महसूस किया। मुझे लगा जैसे मैं आकाश जितना विशाल हो गया हूँ।

समय बीतता गया... धीरे-धीरे मैंने उनकी उपस्थिति की चेतना खो दी। फिर मैंने अपनी स्वयं की चेतना भी खो दी। दीपकों की रोशनी के सामने पृष्ठ और श्लोक अद्वितीय चमक के साथ तैरने लगे। और फिर मंत्र प्रकट हुआ... और साथ ही अद्भुत, आनंददायक, आत्म-विहीन अंधकार में मैं खो गया।

समय बीतता गया... मंत्र समाप्त होने को था, तभी मुझे तेज गर्मी की लहरें महसूस हुईं, जो मेरी आँखों, सिर और हृदय तक को जलाने लगीं। अस्सी-चार हज़ार नाड़ियाँ जल रही थीं। मुझे लगा कि मेरा हृदय बाहर निकलकर धुएँ में मिल गया है.... मैं बेहोश हो गया। मैं शून्य बन गया।

जब मुझे होश आया, तो भगवा वस्त्रधारी महिला शहद मिले पानी का प्याला मेरे होठों से लगा रही थीं। मुझे नहीं पता वह अमृत समान पेय उन्होंने कहाँ से प्राप्त किया था। मुझे न केवल चेतना मिली, बल्कि परिपूर्णता, तृप्ति और आनंद की अनुभूति हुई। वह एक ममता भरा क्षण था।

मैंने उनकी ओर नई दृष्टि से देखा और थकी हुई मुस्कान बिखेर दी। उन्होंने मुस्कराकर मेरे गालों को चूमा। मुझे पुरस्कृत होने का एहसास हुआ।
"अब चलें गंगा तट पर? पूर्णिमा का चाँद उगने वाला है। आज आनंद का दिन है, और हमें जश्न मनाना चाहिए। चलो, यहाँ से बाहर निकलते हैं।"

वह टूटे हुए दरवाज़ों को बंद कर रही थीं। दो साँप हमारे पास से लहराते हुए निकल गए। लेकिन अजीब शब्द मेरे मुँह से निकले, "हम यहाँ फिर कब आएँगे?"

उन्होंने फिर मुस्कराकर मेरा हाथ थाम लिया:
"हाँ, फिर आएँगे। और फिर से, बार-बार। जैसे चटाई भी किसी के बैठने की भूखी होती है। लेकिन आज—गंगा तट और संगीत की ओर।"

# 3. पाप के क्षेत्र (**Areas of Sin)**

## भय पर विजय

योग-वासिष्ठ के पाठ जारी रहे, और पूर्व में बताए गए आसन मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए। मैं उस अनुभव का आदी हो गया था। धीरे-धीरे मुझमें बदलाव आने लगा। यह परिवर्तन न केवल अनुभवी आँखों के लिए, बल्कि कम अनुभवी लोगों के लिए भी स्पष्ट था। ये बदलाव शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्तरों पर महसूस किए गए। शारीरिक परिवर्तन पहले दिखाई दिए, लेकिन मानसिक बदलाव भी उन लोगों द्वारा सराहे गए जो मुझे करीब से जानते थे।

मुझे भीतर गहरे परिवर्तन का एहसास होने लगा। मेरे अंदर कुछ ऐसा घटित हो रहा था, जो मुझे साहस से भर रहा था। मैं न केवल दिन में, बल्कि रात में भी बिना किसी भय के चतुःषष्टि योगिनी मंदिर और भयानक भद्रकाली के निषिद्ध मंदिर में अकेले जाने लगा।

दूसरों की नज़र में यह अत्यधिक दुस्साहस का कार्य था, लेकिन मेरे लिए यह बिल्कुल सामान्य था, विशेषकर भय का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। मुझे किसी भी चीज़ का डर नहीं था—न तो अंधकार का, न ही अलौकिक शक्तियों का। मैं स्वयं को पूरी तरह सुरक्षित और संरक्षित महसूस करता था। यह एक नया अनुभव था, एक नया जीवन था।

मुझे रात में गंगा की रहस्यमयी धारा का भी कोई भय नहीं था। मैं तैरकर रेत के टीलों तक पहुँचता और वहाँ आसन में बैठकर घंटों ध्यान करता, जब केवल तारे मुझे देख रहे होते थे। चाँदनी की शीतल चादर के नीचे परिचित वातावरण भी अपरिचित और रहस्यमयी रूप धारण कर लेता था। मछली पकड़ने वाली नौकाओं के दीपक बहती धारा पर दूर-दूर तक बिखरे हुए दिखाई देते थे, मानो आकाश के तारे नदी की सतह पर उतर आए हों।

उसी वातावरण में मैं घंटों ध्यान में लीन रहता, ठीक वैसे ही जैसे भगवा वस्त्रधारी महिला ने ध्यान की विधि सिखाई थी। मैं इन साधनाओं को इतनी गंभीरता से करता था, मानो मेरी पूरी ज़िंदगी इन्हीं पर निर्भर हो। यह मेरे अस्तित्व का हिस्सा बन गया था।

यही वह समय था जब एक असाधारण घटना ने मेरी नीरस ज़िंदगी में रंग भर दिया। उस घटना ने मेरे भीतर के साहस को और भी प्रबल बना दिया, और भय को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया।

## आह्वान

एक दिन, दोपहर की चिलचिलाती धूप में, जब मैं संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कर रहा था, अचानक मुझे चेतना में एक अनोखे खिंचाव का अनुभव हुआ। ऐसा लगा मानो कोई अदृश्य बल मुझे अपनी ओर खींच रहा हो। मैं अत्यधिक विचलित हो गया और घर की सुरक्षा को छोड़ने के लिए विवश हो गया। अनायास ही मेरे कदम मंदिर की ओर बढ़ने लगे।

मंदिर सूना था, केवल एक या दो भटकते हुए भक्त दिखाई दे रहे थे। लेकिन मेरा व्याकुल मन, जो अभी भी उस खिंचाव के प्रभाव में था, कह रहा था, "यह वह स्थान नहीं है।"

मंदिर से बाहर निकलकर मैं नदी के किनारे की ओर बढ़ा, जो पास ही था। रास्ते में एक प्राचीन पीपल का वृक्ष खड़ा था, जिसकी फैली हुई शाखाएँ नदी की ओर जाने वाले मार्ग को रहस्यमय छाँव से ढँक रही थीं। यह छाँव अंधकारपूर्ण नहीं थी, बल्कि प्रकाश और छाया के अजीबोगरीब खेल के कारण वह स्थान ठंडी और शांत होने के साथ-साथ स्पंदनशील और जीवंत भी लग रहा था। मरोड़दार शाखाओं के बीच से छनकर आती सूर्य की किरणें उस जगह को और भी रहस्यमयी बना रही थीं।

उस घुमावदार छाल में लिपटा हुआ एक रंगीन पत्थर था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह संतान सुख और सुरक्षा प्रदान करने की अद्भुत शक्तियाँ रखता है। लेकिन इस स्थान की अजीबता सिर्फ पत्थर तक सीमित नहीं थी।

वहाँ असंख्य कौवे, काले गिद्ध, बाज और यहाँ तक कि गिद्धों के झुंड भी थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी उस स्थान को अपना निवास बनाए हुए थे। उनकी कर्कश ध्वनियाँ उस स्थान के अनुष्ठानों का अभिन्न अंग बन चुकी थीं। लोग उनके लिए भोजन छोड़ जाते थे, और वे मंदिर का एक हिस्सा माने जाते थे।

कभी-कभी उनकी चीख-पुकार नसों पर चोट करती थी, जिससे मन में अनहोनी की आशंका जन्म लेती थी। हालाँकि वहाँ कभी कुछ असाधारण नहीं हुआ, फिर भी उस वृक्ष और वहाँ स्थित देवता से अलौकिक शक्तियों को जोड़ा जाता था। रहस्य की प्रकृति ही ऐसी थी कि लोगों की कल्पना को उड़ान मिलती थी।

मैं उस विशाल पीपल वृक्ष के चारों ओर बने टूटे-फूटे चबूतरे पर चढ़ गया, जो लगभग साठ फीट के क्षेत्र में फैला था। वृक्ष की जड़ों ने पत्थर की संरचना को इस तरह जकड़ लिया था कि वह कई जगहों से दरक चुकी थी और धीरे-धीरे गिरने की प्रक्रिया में थी।

मैं उस विशाल तने के पीछे गया। जैसे ही मैंने तने के पीछे कदम रखा, मुझे अचानक एक अजीब सिहरन महसूस हुई। लगा मानो समय ठहर गया हो। हवा की सरसराहट थम गई, पक्षियों की कर्कश आवाजें भी शांत हो गईं। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी और ही संसार में प्रवेश कर गया हूँ।

और वहीं, उस विशाल तने के पीछे, मैंने उस खिंचाव के स्रोत का सामना किया। मेरी आँखें विस्मय से फैल गईं। वहाँ एक रहस्यमयी आभा थी, जो मंद प्रकाश में झिलमिला रही थी। उसके केंद्र में एक आकृति थी, जो स्थिर और शांत थी, फिर भी उसमें असाधारण ऊर्जा का प्रवाह था।

मुझे नहीं पता वह आकृति कौन थी या क्या थी, लेकिन उसकी उपस्थिति इतनी प्रबल थी कि मैं जड़वत खड़ा रह गया। उस क्षण में, मुझे लगा जैसे मेरा अस्तित्व उसकी उपस्थिति में विलीन हो रहा है। मेरी साँसें थम गईं, समय की गति रुक गई, और मैं उस रहस्यमयी खिंचाव में खो गया।

## एक योगी का साक्षात्कार

मैं आमने-सामने खड़ा था एक प्रभावशाली व्यक्ति के, जिनके व्यक्तित्व में अद्वितीय आध्यात्मिक आकर्षण था। उनका रूप शांत योगी जैसा कम और विक्षिप्त पुरुष जैसा अधिक लग रहा था। उनके बाल जटाओं में नहीं बँधे थे, बल्कि काले घुंघराले

गुच्छों में बिखरे हुए थे, जो किसी अदृश्य हलचल से लहरों की तरह हिलते प्रतीत हो रहे थे। उनकी लाल घूमती आँखों में एक निश्चित उद्देश्य झलक रहा था, जो गहरे रहस्य से भरी हुई थीं।

उन्होंने लंबा वस्त्र पहन रखा था, जिसका एक सिरा गले में लिपटा हुआ था और कंधों पर गिर रहा था। जैसे ही मेरी नज़रें उन पर टिकीं, मैं उनकी अग्निमय दृष्टि में बँध गया और उस अदृश्य खींचाव का उत्तेजक एहसास अचानक शांत हो गया। मुझे एक अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। ऐसा लगा मानो मेरा स्थान यहीं है, इस क्षण में, उनके सम्मुख। मैं स्थिर खड़ा रहा और उस आकर्षक दृश्य को ध्यानपूर्वक देखता रहा।

हमारे चारों ओर पूर्ण सन्नाटा था। न कोई पत्ता हिल रहा था, न कोई ध्वनि, न हवा का झोंका, न कोई गिलहरी—कुछ भी नहीं। वातावरण में ऐसी स्थिरता थी, मानो समय ने ठहरकर साँस लेना बंद कर दिया हो। वहाँ कोई भटककर भी आता, तो शायद हमें देख नहीं पाता।

तभी मुझे मधुमक्खियों की परिचित भनभनाहट सुनाई दी। मैंने ऊपर देखा और विशाल मधुमक्खियों का छत्ता देखा, जो ऊपर लटक रहा था। उस क्षण मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मुझे क्या करना चाहिए। लेकिन मुझे कुछ तो करना ही था, इसलिए घबराहट में मैंने मंत्र का उच्चारण शुरू कर दिया:
**"**यद्यपि तुम अनेक रूपों में दिखते हो**,**
परंतु वे रूप तो कुछ भी नहीं हैं**;**
तुम ही एकमात्र सत्य हो**,**
सबमें एक समान।
तुम ही माता**,** पिता**,** मित्र**,**
गौरव**,** धन**,** और ज्ञान हो।
सब कुछ तुम ही हो।**"**

वह सफेद वस्त्रधारी व्यक्ति भी शांत नहीं थे। वे भीतर की किसी अग्नि से उत्तेजित होकर झूम रहे थे, मानो उनके अंदर एक तूफान उमड़ रहा हो। मुझे वह तूफानी रात में जलती हुई मोमबत्ती की तरह या फन फैलाए नाग की तरह लग रहे थे। उनकी उंगलियाँ अजीब आकृतियाँ बना रही थीं, और हथेलियाँ ऊपर-नीचे हो रही थीं, जैसे कोई रहस्यमयी नृत्य कर रही हों।

उनके मुख से केवल एक ध्वनि निकल रही थी:
**"**मा**...** मा**...** मा**...."**
यह ध्वनि निरंतर और अनंत थी, मानो ब्रह्मांड की धड़कन हो। उनके झूमने में नाग के फन फैलाने जैसी लय थी, लेकिन यह झूमना डँसने वाला नहीं, बल्कि भक्ति, करुणा और समर्पण से भरा हुआ था। उनकी आवाज़ में अग्नि की प्रचंडता थी, फिर भी वह शीतल और सांत्वनादायक थी। ऐसा लग रहा था जैसे आनंद और उल्लास की नदी बह रही हो, जो कहीं दूर के पहाड़ों से चलकर अनंत सागर में मिल रही हो।

जब वह सिर से पाँव तक झूमते थे, उनके लंबे हाथ, जो घुटनों तक पहुँचते थे, कमल की पंखुड़ियों की तरह हवा में लहराते थे। **"**मा**...** मा**...** मा**...."** यह मंत्रमुग्ध करने वाली ध्वनि आकाश में गूंज रही थी। उनके आँसू दाढ़ी से बहते हुए रेत जैसी पवित्र बूंदों में बदल रहे थे। उनके शरीर पर हल्का पसीना चमक रहा था। उनकी वेदना भरी पुकार—**"**मा**...** मा**..."**—ने मुझे शिकारी के तीर से घायल हिरण की याद दिला दी।

मैं स्तब्ध खड़ा रहा, जैसे पाषाण प्रतिमा बन गया हो। मेरा कोई स्वतंत्र विचार या इच्छा शेष नहीं थी; मैं केवल देखता ही रहा। उनकी उपस्थिति में चुम्बकीय आकर्षण था। यह क्या था? अत्यधिक आनंद की अभिव्यक्ति या चेतना में गहरे विलीन आत्मा की पुकार? मुझे समझ में नहीं आ रहा था, लेकिन इतना स्पष्ट था कि यह अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था।

भगवा वस्त्रधारी महिला का रहस्यमयी त्रिकोण एक अद्वितीय अनुभव था, लेकिन यह पुरुष, जो खजूर के पेड़ की तरह सीधा खड़ा था, एक बिल्कुल अलग प्रकार का अनुभव था। पहली बार मुझे ध्वनि की गहन प्रकृति का एहसास हुआ। मैंने मंत्रों की अक्षरीय संरचना को समझा, जो आदर उत्पन्न करती, विचारों को साकार करती, और सामंजस्य का प्रसार करती है।

मुझे अज्ञात कारणों से उस ध्वनि के मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रभाव में अपनी नसों के प्रतिक्रियाशील होने का अनुभव हुआ। मेरे शरीर में ऊर्जा का संचार होने लगा, जो मेरे अस्तित्व के हर कोने में फैल गई। मैंने ध्वनि की गहराई को छू लिया था। उस क्षण में, मैं केवल श्रोता नहीं था; मैं स्वयं ध्वनि बन गया था।

## मंत्रों का ध्वनि-प्रभाव

शरीर, वाणी और मन की परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया में कुछ विशेष रूप से निर्मित ध्वनि-बुलबुले अत्यंत स्पंदनशील और प्रभावी हो जाते हैं। इस गहन सत्य को मैंने बहुत बाद में समझा। मेरे जीवन में काफी समय बाद मुझे मंत्र-ध्वनि के चेतना पर वास्तविक प्रभाव का विश्लेषण करने की क्षमता प्राप्त हुई, और साथ ही उस स्थान पर भी जहाँ हम जीवन यापन करते हैं।

बाद में मैंने जाना कि जैसे मुद्राएँ—हाथों और उंगलियों की ऐसी विशेष स्थितियाँ, जो मानसिक दृष्टिकोण को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाती हैं—उसी प्रकार विभिन्न अनुष्ठानों के पहलू जैसे मंडल, घंटियाँ, शंख, वस्त्र, यहाँ तक कि अग्नि, जल और विशेष पुष्पों का उपयोग भी चेतन जीव के वैचारिक दृष्टिकोण को प्रतीकात्मक रूप देते हैं, निर्देशित करते हैं और साकार करते हैं।

वैसे ही मंत्र भी चेतना को गहराई से प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, 'आमेन' (Amen) जैसा मंत्र, जो न केवल ईसाई धर्म में बल्कि कुछ अन्य एशियाई धर्मों में भी उपयोग होता है, या प्रभु की प्रार्थना (Lord's Prayer) का पाठ-मूल्य, या संत जॉन के सुसमाचार का पहला वाक्य—इन सभी में मांत्रिक प्रभाव होता है।

मंत्र अपने प्रभाव से मन को पूर्ण रूप से विलीन होने में सहायता करते हैं; और फिर शून्यता के प्रकाश से उस गतिशील शक्ति को आह्वान करते हैं, जिससे संपर्क स्थापित करने की साधक की इच्छा होती है। एक बार जब यह संपर्क स्थापित हो जाता है, तो साधक स्वयं उस चेतना का अंग बन जाता है।

मंत्र जाप (जप) की ध्वनियों के चेतना पर प्रभाव के इस विषय पर हमें फिर से लौटना होगा, क्योंकि यह एक अत्यंत गूढ़ और गहन विज्ञान है। लेकिन उस दिन, उस विशेष क्षण में, मुझे मंत्रों के दर्शनशास्त्र की इस गतिशीलता के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उस दोपहर मैं केवल अचंभित और मंत्रमुग्ध था।

वह महान व्यक्ति मेरे सामने कई फीट ऊँचा खड़ा था। उनके शरीर से प्रकाश की लहरें फूट रही थीं, और उनकी ध्वनि में एक ऐसी शक्ति थी जो मेरे मन को गहराई तक भेद रही थी। मैं आदर और विस्मय से भर गया, और मुझे एक बालक के सच्चे भाव से उन्हें श्रद्धांजलि देनी पड़ी।

वह निस्संदेह एक अद्वितीय व्यक्तित्व थे—एक सच्चे पुरुष, जिनकी उपस्थिति में आत्मा की गहराइयाँ झंकृत हो रही थीं। उनकी ध्वनि में ऐसी कंपन थी, जो मेरी चेतना को नई ऊँचाइयों तक ले जा रही थी। मुझे अनुभव हुआ कि ध्वनि केवल सुनने की वस्तु नहीं है; वह चेतना की कुंजी है, जो साधक को अनंत के द्वार तक ले जाती है।

## मंत्रमुग्ध

घंटों बीत गए। अचानक उन्होंने मेरे चेहरे की ओर गहरी नजरों से देखा, जिस पर तब तक आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं। "आँसू निश्चित रूप से आत्मा की गहराई से उठी भावनाओं की निर्बाध अभिव्यक्ति हैं," उन्होंने कहा और अपने बड़े नग्न हाथों से मेरे चेहरे को पोंछा। उनकी स्पर्श में इतनी ममता थी कि मैं नि:शब्द रह गया।

फिर उन्होंने अपने बिखरे बालों के गुच्छों के बीच से एक भूरे मनके को निकाला। यह परिचित रुद्राक्ष (Elaeocaripus ganitrus) था। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता या महसूस कर पाता, उन्होंने रुद्राक्ष को मेरी भौंहों के बीच ऐसे जोर से दबाया कि मुझे दर्द से चीख पड़नी चाहिए थी। लेकिन इसके बजाय, मैं बेहोश हो गया।

मुझे यह बिल्कुल भी अजीब नहीं लगा कि यह मुझे ही क्यों अनुभव करना पड़ा। मैंने इस घटना को उन अनेक रोमांचक घटनाओं में से एक के रूप में स्वीकार किया, जिनसे मैं लगातार गुजरता आया था। लेकिन वह व्यक्ति मेरे मन में गहरे तक बस गया।

सालों तक, समय-समय पर हमारी मुलाकातें होती रहीं। कभी-कभी उन्होंने मुझे मूल्यवान उपदेश भी दिए। वह धीरे और बहुत कम बोलते थे, लेकिन जो कुछ भी कहते, वह गहन ज्ञान से भरा होता था। फिर भी, मैं उनसे स्थायी संबंध स्थापित नहीं कर पाया। कहीं न कहीं, मैं पूरी तरह से संवाद स्थापित नहीं कर सका।

लेकिन उस संत ने लंबे समय तक मेरे विचारों को प्रभावित किया और मेरे जीवन को दिशा दी। क्या वह अभी भी मेरे साथ हैं? स्मृति तो है ही। स्मृति की प्रकृति ही ऐसी होती है। लेकिन वह स्मृति से कहीं अधिक हैं।

मेरे परिवार के लोग मुझमें हो रहे बाहरी परिवर्तनों को देखकर हैरान थे। सचमुच, मुझमें बदलाव आ रहा था। लेकिन यह सब भगवा वस्त्रधारी महिला का वरदान था। अब, जो वह मुझे दे रही थीं, उसमें पीपल वृक्ष वाले व्यक्ति का अतिरिक्त योगदान भी जुड़ गया था। वह मेरे जीवन में एक आवश्यक कारक बन गए थे।

मैं यह बात भगवा वस्त्रधारी महिला से छुपा नहीं पाया। उन्होंने मृदुता से मुस्कराते हुए कहा, "जीतेन संत हैं। उन्हें बहुत दूर तक जाना है। अगर उन्होंने तुम्हें स्वीकार कर लिया, तो मुझे शांति मिलेगी।" बस इतना ही। इसके बाद उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा।

लेकिन मुझे यह स्पष्ट हो गया कि मेरे जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता, जिसके बारे में भगवा वस्त्रधारी महिला को पहले से पता न हो। उनकी दूरदर्शिता और अंतर्दृष्टि ने मुझे बार-बार चकित किया।

मेरी बहनों ने मेरी तेजी से बढ़ती कद-काठी पर हँसी-मजाक किया। मेरी माँ संतुष्ट थीं कि यह सब भगवा वस्त्रधारी महिला के आशीर्वाद का परिणाम था। मेरा भूख से भरा पेट उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता देता था। वह हमेशा कहतीं, "तुम्हारी यह वृद्धि प्राणायाम के नियमित अभ्यास का जीता-जागता उदाहरण है।" सचमुच, महान श्वास-व्यायाम मनुष्य का सच्चा मित्र है, इसमें कोई संदेह नहीं।

लेकिन मुझे यह जानने की जिज्ञासा थी कि क्या मेरी माँ को यह अहसास था कि मुझे सच्चा सुख तो उन सभी शिक्षाओं से मिल रहा था, जो भगवा वस्त्रधारी महिला से प्राप्त हो रही थीं। मैं उन्हें अपनी दूसरी माँ, आध्यात्मिक माँ के रूप में सम्मान और प्रेम से देखता था।

उनकी शिक्षाओं ने मुझे नए दृष्टिकोण दिए, और उनके मार्गदर्शन में मैंने जीवन के रहस्यों को समझना शुरू किया। उनके दिए हुए ज्ञान के दीप ने मेरी चेतना को आलोकित किया। उनका प्रेम और ममता अमूल्य थी, और उनके बिना मेरा जीवन अधूरा होता।

मैं मंत्रमुग्ध था—उनकी उपस्थिति से, उनके ज्ञान से, और उनके अपार प्रेम से। उन्होंने मुझे केवल जीवन जीना नहीं सिखाया, बल्कि जीवन को आत्मा की गहराइयों से अनुभव करना सिखाया।

## शून्यता में बढ़ता हुआ

परिवर्तन स्पष्ट था, और हर किसी ने उसे महसूस किया। लेकिन मैंने स्वयं जो महसूस किया, वह दूसरों से बिल्कुल भिन्न था। बचपन की शरारतें समाप्त हो चुकी थीं। वे शरारती साथी भी दूर हो गए थे, जो मुझे मूर्खतापूर्ण खेलों में उलझाया करते थे। मेरा मनुष्य शरीर की निषिद्ध जिज्ञासाओं और उनसे जुड़ी बचकानी उत्सुकताओं में अब कोई रुचि नहीं थी।

मैं कम खेलता, लेकिन ऐसे खेल चुनता, जिनमें ज्यादा साथियों की आवश्यकता न हो: तैराकी, नाव चलाना, कुश्ती लड़ना, भार उठाना। मेरी उम्र के अन्य लड़कों के विपरीत, मैं अधिक से अधिक एकांतप्रिय होता गया, हालाँकि बाहरी रूप से मैं अपनी प्राकृतिक लोकप्रियता का आनंद लेता रहा।

परिपक्वता की चरम अवस्था में पहुँच चुके व्यक्ति की तरह, मैंने अनावश्यक संगति और व्यक्तिगत प्रश्नों से दूरी बना ली थी। मुझे अकेले रहना अच्छा लगने लगा। अकेलापन मेरे आत्मिक बल का अमृत बन गया था।

गंगा नदी मेरे लिए सर्वोच्च शांति का स्रोत बन गई—मेरा पहला ठिकाना और अंतिम सहारा। गंगा से जुड़े सभी खेल मुझे उसकी निकटता की ओर आकर्षित करते थे। मुझे ऐसा लगता था जैसे गंगा मेरी नसों में बह रही हो। मैं आनंद की धारा में तैरता था। मैं चेतना की धारा में नाव चलाता था।

मेरी भाषा अस्वाभाविक रूप से साहसिक हो गई थी। मेरे सपने अत्यधिक व्यक्तिगत और पवित्र थे, जिन्हें किसी के साथ साझा करने का मन नहीं होता था। मैं स्वयं में लिप्त रहता था। मुझे यह एहसास हुआ कि मनुष्य अपनी एकांत शांति में, अपने भीतर अधिक रंगीन अनुभवों का आनंद ले सकता है। मैंने अपने अकेलेपन के क्षणों से गहरा प्रेम करना शुरू कर दिया।

इस एकांतप्रियता के अलावा, मुझमें एक और परिवर्तन आया: मुझे श्वास को रोककर स्थिर रहने का अभ्यास अत्यंत प्रिय लगने लगा। यह मस्तिष्कहीन शून्यता (Mindless Void) की स्थिति उत्पन्न करता था, जिसमें मैं अवस्थित हो सकता था।

आज पीछे मुड़कर देखने पर मुझे स्पष्ट रूप से समझ में आता है कि इन अनोखी रुचियों का पूरा श्रेय भगवा वस्त्रधारी महिला को जाता है, जिन्हें मैंने सहजता और उत्साह से संजोया और अपनाया।

ऐसी स्थिति का एक अद्वितीय लाभ है: असीम आनंद (Joy Unbounded) का परम लाभ प्राप्त करना। इसे ही शायद आनंद में स्नान करना कहते हैं। केवल शून्यता में स्थित मन ही, अपनी शांति की दुनिया स्वयं निर्मित कर सकता है।

क्या सृष्टि स्वयं शून्यता से उत्पन्न नहीं हुई थी? मन कोई कल्पना नहीं है। यह एक अनिश्चित और अपरिभाषित प्रवाह (State of Flux) है। यह केवल तब ही परिभाषित होता है, जब यह क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के चक्र में फँस जाता है। तभी हम इसे मन कहते हैं, और यह मन के रूप में पहचाना जाता है।

लेकिन शून्यता की अवस्था में, यह प्रवाह स्थिर हो जाता है, और मनुष्य अविचल शांति का आनंद ले सकता है। शांत मन स्पष्ट रूप से प्रतिकृति दर्शाता है, लेकिन व्याकुल मन ऐसा नहीं कर सकता।

जब विमान बादलों से ऊपर शून्य में उड़ता है, तो चारों ओर शांति होने के कारण, यहाँ तक कि विमान की गति भी महसूस नहीं होती। लेकिन विघ्न मन को उत्तेजित करता है; शून्यता उसे शांत कर देती है।

मेरे योग-वासिष्ठ के पाठ लगातार जारी रहे। वही आसन, जिसने कभी चर्चा और प्रश्नों को जन्म दिया था, अब नियमित दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। अब मुझे पहले की तरह नग्न होने का एहसास नहीं होता था। मेरे लिए नग्नता का अब कोई अर्थ नहीं था। वह भावना समाप्त हो गई थी।

मुझे ऐसा महसूस होने लगा, जैसे यह आध्यात्मिक वेशभूषा का एक विशेष प्रकार हो, जिसमें अन्य वस्त्रों को पहनने की बजाय, सभी वस्त्रों को उतारकर धारण किया जाता है। यह नग्नता केवल बाहरी आवरण से मुक्त होना नहीं थी, बल्कि आंतरिक शुद्धता और आत्म-स्वीकृति का प्रतीक बन गई थी।

मुझे एहसास हुआ कि शून्यता केवल खालीपन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा दर्पण है, जिसमें आत्मा अपनी वास्तविकता को स्पष्ट रूप से देख सकती है। शून्यता में स्थित मन ही अनंत संभावनाओं का सृजन कर सकता है।

शून्यता में मेरा बढ़ना जारी था, और उसी में मैं असीम आनंद को अनुभव कर रहा था।

## आसन क्यों आवश्यक हैं?

लेकिन किसी न किसी तरह एक दिन मैंने यह प्रश्न पूछ ही लिया: "आसन क्यों आवश्यक हैं? और *ऐसे* आसन क्यों आवश्यक हैं?" उन्होंने जिस ढंग से इन प्रश्नों का उत्तर दिया, वह मेरे मन में आज भी गहराई से बसा हुआ है, क्योंकि वह आरोही शिक्षण (Inductive Teaching) का अद्वितीय उदाहरण था। वह हमेशा मेरी ज्ञात बातों से शुरुआत करतीं, और धीरे-धीरे मुझे उन उत्तरों तक ले जातीं, जिन्हें मैं जानना चाहता था।

इस प्रक्रिया में, हमारे लिए महाभारत और रामायण के हिंदू महाकाव्यों का ज्ञान अत्यंत मददगार साबित हुआ। जो कोई भी हिंदू जीवन पद्धति को समझने का प्रयास करता है, बिना इन दो महाकाव्यों को पढ़े, वह ऐसे ही है जैसे कोई हैमलेट को पढ़े, बिना डेनमार्क के राजकुमार के बारे में जाने। मैं आज भी दृढ़ता से मानता हूँ कि पश्चिमी संस्कृति और पश्चिमी मन को समझने के लिए, होमर (Homer) और बाइबिल को पढ़ना आवश्यक है।

महाभारत, जो दो राजकुमारों के बीच सिंहासन के लिए युद्ध का वर्णन करती है, वास्तव में अद्वितीय है, क्योंकि यह जीवन की शास्त्रीय भव्यता और आर्य उच्चता का चित्रण करती है। आज यह हिंदू जीवन के सामाजिक, नैतिक, सौंदर्यबोध और धार्मिक जीवन का विश्वकोश (Encyclopaedia) मानी जाती है। इसमें हजारों महान कथाएँ और पात्र हैं, जिन्हें हर हिंदू कभी न कभी संदर्भित करता है। भारत के हर प्रतिष्ठित लेखक ने महाभारत का स्रोत के रूप में उपयोग किया है।

महाभारत, जो मानव भाषा में लिखे गए सबसे लंबे श्लोक के रूप में प्रसिद्ध है, हिंदू भारत के फेफड़ों में से एक है। दूसरा फेफड़ा है रामायण। प्रसिद्ध भगवद्गीता तो महाभारत का एक अध्याय मात्र है, यह अलग ग्रंथ नहीं है।

गंभीर छंदों का पाठ शांतिपूर्वक चलता रहा। मुझे पाठ करने में आनंद आने लगा। लेकिन प्रश्न बार-बार मन में उठते रहे। मैं रुकता, उनकी ओर देखता और प्रश्न पूछता। उन्होंने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। उनका तरीका अद्वितीय था—शांत, सहज, क्रमबद्ध, और मातृसुलभ धैर्य से भरा हुआ। इस पद्धति ने मुझे और अधिक प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया।

एक दिन मैंने ऋषि भगीरथ, कामासक्त जयद्रथ, और प्रतिशोधी अश्वत्थामा जैसे योगियों के आचरण पर प्रश्न उठाया: "क्या वे योगी नहीं थे? फिर योगी इतने अच्छे और त्यागी कैसे हो सकते हैं, और साथ ही इतने दुष्ट और क्रूर भी? योगिक शक्ति का उपयोग दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए क्यों किया गया?" उन्होंने शांत चित्त और संयमित भाव से उत्तर दिया: "अच्छाई और बुराई, लाभ और हानि की मानव दृष्टि व्यक्तिगत स्वार्थ पर आधारित होती है। जब तक विचार व्यक्तिगत लाभ और हानि पर आधारित होते हैं, तब तक असली अच्छाई हमेशा अपूर्ण रहेगी। केवल निर्लिप्तता (Impersonality) ही निष्काम और निस्वार्थ हो सकती है।"

मैंने योगिक आशीर्वाद और कृपा तथा तांत्रिक, जादू-टोना (Magic, Voodoo) के बीच मौलिक अंतर को समझना शुरू किया। मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि समाधि की अवस्था आशीर्वाद भी हो सकती है, और शांति के लिए खतरा भी। लेकिन यह चर्चा फिर कभी।

मुझे अश्वत्थामा की बलि के रहस्य में गहरी रुचि थी, जो स्वयं को बलिदान करना चाहता था। इन सभी घटनाओं में अच्छाई और बुराई, उद्देश्य और साधन का नैतिक निर्णय शामिल था। और इन सभी घटनाओं में शिव की शक्ति अंतर्निहित थी।

जादू-टोना (Magic), वूडू (Voodoo) या ओबिया (Obeah) उन अनुष्ठानों में होती है, जहाँ अभिनेताओं की एकाग्रता और विशेषज्ञता से समाधि उत्पन्न होती है। यह कारण और प्रभाव के मूलभूत रूपांतरण में सहायक होती है। नेता द्वारा किए गए अभ्यास के परिणामस्वरूप मूलभूत शक्तियों का संयोजन (Combination of Elemental Forces) रूपांतरणकारी परिवर्तन उत्पन्न करता है। लेकिन इन योगियों ने कठोर तपस्या की थी। उन्होंने व्यक्तिगत कष्ट और अत्यधिक पीड़ा सहकर तंत्र के मार्ग को अपनाया, और अपनी जीवन-ऊर्जा को बलिदान करके मृत्यु को वरण करने की घातक दृढ़ता दिखाई। भगीरथ की तपस्या और तंत्र साधना का उद्देश्य मानव जाति का कल्याण था, जबकि जयद्रथ और अश्वत्थामा के कृत्यों का उद्देश्य दुश्मनों के विनाश के अलावा कुछ नहीं था।

## अनुग्रह और गुप्तविद्या

मैं यहाँ इन रहस्यमयी कथाओं से जुड़े जटिल मुद्दों को और अधिक विस्तार से समझाने में असमर्थ हूँ। इतना कहना पर्याप्त होगा कि उनकी स्पष्ट व्याख्याओं से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इनमें से अधिकांश घटनाएँ तंत्र योग से संबंधित थीं। इनका प्रभाव जादू जैसा लग सकता है, लेकिन यह वास्तव में जादू नहीं है।

इन तांत्रिक क्रियाओं में वैसे किसी भी मंत्र-जाप या टोने-टोटके के लिए कोई स्थान नहीं है, जैसा आमतौर पर माना जाता है। कोई भी व्यक्ति अपने अभ्यास और कठोर साधना से मौलिक या अलौकिक शक्तियों के साथ संपर्क स्थापित कर सकता है। एक बार यह संपर्क स्थापित हो जाए, और एक स्थिर संवाद की धारा बन जाए, तो वह व्यक्ति वही कर सकता है जो

ब्रह्मांडीय तत्व कर सकते हैं। यह संभव है। यदि यह संभव न होता, तो तंत्र में होने वाले छल-कपट का पर्दाफाश बहुत पहले हो चुका होता। यह सदियों के उत्पीड़न और दमन के बावजूद जीवित नहीं रह पाता।

आखिरकार, तंत्र और तांत्रिक विधियाँ उतनी ही प्राचीन हैं जितने कि पर्वत, आकाश और पंचतत्व। ऐसा कोई धर्म नहीं है जो 'चमत्कारों' का उपयोग न करता हो, और जो तांत्रिकों को सम्मान न देता हो। क्या यीशु ने समाधि में जाकर बीमारों को चंगा नहीं किया था?

यदि इन व्यक्तियों ने अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तांत्रिक शक्तियों का सहारा लिया, तो फिर ऐसा क्यों है कि तंत्र बुरी शक्तियों की सहायता करने और उन्हें अच्छी शक्तियों के विरुद्ध खड़ा करने में भेदभाव नहीं करता? यह भ्रामक प्रतीत हो सकता है।

मैंने इस प्रश्न को उनके समक्ष तुरंत रखा। उत्तर हमेशा की तरह शांत और सरल लय में आया। कृष्ण भी तंत्र की शक्तियों में निपुण थे। उनकी शक्तियाँ पांडवों की हर संकट में रक्षा करती थीं।

अच्छाई और बुराई अलग-अलग शक्तियाँ नहीं हैं। सभी शक्तियाँ एक केंद्रीय शक्ति से जुड़ी होती हैं। लेकिन सभी अवधारणाओं, या उन अवधारणाओं से उत्पन्न होने वाली सभी वस्तुओं के विरोधी पहलू होते हैं। सूर्य, चंद्रमा, ग्रहों की गतियाँ, ऋतुएँ, मौसम—इन सबके विरोधी पक्ष हैं, विपरीत खिंचाव हैं, यहाँ और वहाँ। वस्तुओं की प्रकृति में यह है कि उनके दो पहलू होते हैं।

लेकिन एक बार जब इन पहलुओं को एक ही स्रोत से उत्पन्न होते हुए देखा जाता है, तो अच्छाई और बुराई केवल कामना और लोभ की परछाइयाँ बनकर रह जाती हैं। संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। यही संतुलन कृष्ण स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे।

तंत्र की शक्ति, किसी भी अन्य शक्ति की तरह, आगे बढ़ सकती है या विपरीत दिशा में जा सकती है। प्रगति की शक्तियों को तब विपरीत प्रवृत्तियों को रोकना होता है। तंत्र का सामना तंत्र से। यही कुरुक्षेत्र के युद्ध में हुआ था।

कोई प्रतिकूल दिशा नहीं होती; कोई बुराई नहीं होती। वह जो संतुलित दृष्टि, संतुलित जीवन, संतुलित नैतिकता में बाधा डालता है, उसे रोकना होता है। संतुलन वह है जो बेहतर जीवन, बेहतर समझ, प्रेम में बेहतर संबंध के लिए स्थान बनाता है। 'जो हमारी समझ से परे हो, वही शांति है।'

## सांस को रोकना ही आसन है

उनके उत्तर अत्यंत प्रकटकारी थे। वह हाथ से चलने वाले चरखे पर कपास से सूत कातने की अभ्यस्त थीं। उस दोपहर भी वह अपनी नियमित कातने की प्रक्रिया में लगी हुई थीं। उन्होंने तुरंत मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। "मुझे देखो," उन्होंने कहा, "मैं घंटों तक सूत कातती हूँ। यह एक अत्यंत सूक्ष्म कार्य है, जिसमें स्पर्श और खिंचाव का संतुलन आवश्यक है। मन को पूर्ण रूप से केंद्रित करना पड़ता है। सर्वश्रेष्ठ परिणामों के लिए सामग्री का चयन भी श्रेष्ठ होना चाहिए। उपकरण भी सर्वोत्तम स्थिति में होने चाहिए। कुशलता मन, सामग्री और उपकरणों पर निर्भर करती है। फिर आता है अनुशासन और अभ्यास। ये सभी मिलकर समान रूप से सुंदर और अति-परिष्कृत धागा तैयार करने में सहायक होते हैं। एक अच्छा धागा मुलायम, कोमल और मजबूत होना चाहिए। एक मात्रा में धागा कातने में समय लगता है। जब तक मन कार्य में लगा हो, तब तक किसी भी प्रकार की ढील नहीं हो सकती।

"इसलिए, किसी भी कठिन कार्य को करने के लिए सर्वोत्तम आसन का चयन करना अनिवार्य है। योगी के लिए आसन का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। कुछ लोग वर्षों तक खड़े रहते हैं, जैसे गोमतेश्वर बाहुबली ने किया था। कुछ लोग वर्षों तक बैठे रहते हैं, जैसे शाक्यमुनि (गौतम बुद्ध) ने किया था। कुछ लोग वर्षों तक हाथ ऊपर उठाए खड़े रहते हैं, जैसे भगीरथ ने किया था। कुछ विशेष प्रकार के मंत्रों के लिए विशेष प्रकार के आसनों का निर्देश दिया गया है। मैं भी कातने की स्थिति में बैठने से पहले कई बातों पर विचार करती हूँ।

"इसके विपरीत, जब मैं अपनी दुकान पर बैठकर सामान बेचती हूँ, तो मुझे एक ही प्रकार की मुद्रा बनाए रखने की आवश्यकता नहीं होती। मेरा मन बदलता है, दृष्टिकोण बदलता है, और मेरी मुद्रा भी बदल जाती है। जब मैं खाना पकाती हूँ, तो मैं अपनी सीट और मुद्रा को इस प्रकार निश्चित करती हूँ, जो पाक-कला की आवश्यकताओं के अनुकूल हो।

"जब मैं गाती हूँ, तो मैं यह सावधानीपूर्वक देखती हूँ कि मेरे फेफड़ों और श्वसन प्रणाली के लिए कौन-सी मुद्रा सहायक होगी। यहाँ तक कि चलने के लिए भी एक विशिष्ट मुद्रा होती है, और यह मुद्रा भी चलने के उद्देश्य के अनुसार बदलती है। तुम क्यों चल रहे हो, कहाँ जा रहे हो, क्या उपलब्धि प्राप्त करनी है, ये सभी बातें यह निर्धारित करती हैं कि चलते समय कौन-सी मुद्रा अपनाई जानी चाहिए। क्या तुम इससे सहमत हो?

"मुझे सुनने में आया है कि श्वेत लोगों की दुनिया में, अधिकतर लोग चलना भूल गए हैं। मुझे नहीं पता, लेकिन अंततः उन्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ती होगी। वे दौड़ते हैं, होड़ लगाते हैं, पर चलते नहीं। अजीब बात है, है ना? शायद उन्हें लगता है कि यही धनवान बनने का तरीका है। वे मानते हैं कि गति ही सफलता लाती है। इसलिए वे होड़ पर होड़ लगाते रहते हैं। हमेशा यही चिंता रहती है कि अगले व्यक्ति को पछाड़कर सबसे पहले पहुँचें। उन्हें इस दबाव की कीमत चुकानी पड़ती है।

"वे शायद ही कभी चलते हैं। बाद में इसकी कीमत चुकाते हैं, पार्क में दौड़कर, या फिर आस-पास टहलकर। यहाँ तक कि गतिशीलता में भी एक मुद्रा और लय होती है। स्थिर अवस्था की लय को आसन कहा जाता है, सही आसन। और गति की मुद्रा को लय (Rhythm) कहा जाता है, जिसे हम गति का छंद (Chhanda for the Gati) कहते हैं। लेकिन स्थिति को एक स्थान या आसन धारण करना पड़ता है। आसन नाड़ियों को उस आवश्यक विराम का आशीर्वाद देता है, जिसकी उन्हें लंबी यात्रा के लिए आवश्यकता होती है।

## संभोग आसन

"लेकिन तुम्हें उस विशेष आसन की चिंता है जिसमें हम बैठते हैं। तुम्हें अधिक हैरानी इस बात की है कि इसमें ऐसी पूर्ण स्वतंत्रता क्यों है, ऐसी स्वतंत्रता जो सभी शर्तों से मुक्त है। यह प्रश्न तुम्हें इसलिए परेशान करता है क्योंकि तुम्हें यह सिखाया गया है कि शरीर के कुछ भाग वर्जित हैं, जिन्हें गंदा, बुरा और पापपूर्ण माना जाता है।

"तुमने उस कथा के बारे में सुना होगा जिसमें भगवान के दो बच्चों को उसके बागीचे से बाहर निकाल दिया गया था। उन्हें क्यों निकाला गया? क्या इसलिए कि उन्होंने भगवान की इच्छा के विरुद्ध एक पेड़ का फल खा लिया था? हममें से कौन है जिसने अपने जीवन के किसी न किसी चरण में ऐसा कुछ नहीं किया? क्या भगवान इतने क्रूर हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता। ऐसा नहीं है कि उन्होंने जो खाया वह उन्हें स्वर्गिक आवास के लिए अनुपयुक्त बनाता है; बल्कि उन्होंने छिपाने, झूठ बोलने और धोखा देने की कोशिश की। अगर वे भगवान के पास जाकर यह स्वीकार करते कि उन्होंने फल खाया और उसका आनंद लिया, तो शायद भगवान ने उन पर क्षमाशील मुस्कान बिखेर दी होती। छिपाना पाप है। झूठ बोलना पाप है।

दोहरी ज़िंदगी जीना नरक है। किसी चीज़ को छिपाने योग्य मान लेना पहला पाप है जो मन को दूषित करता है। पाप वह है जो मन में ग्रंथि उत्पन्न करता है; जो तनाव पैदा करता है। परिणामस्वरूप अपरिमित दुःख मिलता है: सुख की हानि! आनंद का विनाश! यही नरक में जीने के समान है। यही उस निर्दोष आनंद-लोक से बाहर निकाले जाने के समान है।

"हमारे मन के तीन प्रबल शत्रु हैं। ये शत्रु आनंद के रूप में आते हैं; लेकिन इनके पीछे छोड़ जाते हैं दुःख। ये तीन हैं – क्रोध, यौन मिलन की लालसा, और लोभ। इनमें से कोई भी उम्र के साथ नहीं आता; और इसलिए, इनमें से कोई भी उम्र के साथ नहीं जाता। उम्र का इन विपरीत शक्तियों से कोई लेना-देना नहीं है। और इन तीनों का इलाज है – चीजों और मूल्यों की स्पष्ट समझ। समझ को अपने जीवन के चालक की सीट पर बैठाओ, और जीवन की गाड़ी कभी भी पथ से भटकेगी नहीं। लेकिन यदि तुम इन तीनों में से किसी एक को भी चालक की सीट पर बैठाते हो, तो तुम बेबस होकर उस राह पर चलोगे जिसे 'वे' तुम्हारे लिए चुनेंगे। तुम्हारी स्वतंत्रता छिन जाती है, तुम जीवन भर गुलाम, बंदी बने रहते हो। अपनी किस्मत पर पूरा नियंत्रण पाने के लिए तुम्हें इनसे मुक्ति पानी होगी।

"लेकिन ये बहुत शक्तिशाली शत्रु हैं। जितना तुम सोचते हो, उससे भी अधिक शक्तिशाली। ये दिखाई नहीं देते। ये तब तक महसूस नहीं होते जब तक कि ये वास्तव में क्रियाशील न हो जाएँ। ये बीज रूप में जीवन के बीज के साथ-साथ अन्य समयों से आते हैं। ये यह निर्धारित करते हैं कि किसी जीवन का व्यक्तित्व किस श्रेणी में विकसित होगा। इनका प्रभाव जितना अधिक होगा, तुम्हारी इच्छाशक्ति उतनी ही सीमित हो जाएगी।

"स्वतंत्रता का अर्थ है इच्छाशक्ति को पूरी तरह से इनके प्रभाव से मुक्त करना। जो मुक्त नहीं हैं, वे निम्नतम श्रेणियों के हैं। इन श्रेणियों को गुण कहा जाता है। जो मुक्त है वह सत्त्व है; जो पूरी तरह से बंधन में रखता है वह तमस है। रजस वह अवस्था है जहाँ ये दोनों संघर्ष में होते हैं, और जब तमस क्षीण होता है और सत्त्व आत्मा को ऊपर की ओर खींचता है। मनुष्य के आदर्श सत्त्व में ही प्राप्त होते हैं। आदर्श ही सत् है, सत्य है।

"मैं तुम्हें बता रहा था कि ये सभी जन्मपूर्व (प्राक्तन) गुण हैं, जन्मपूर्व वासनाएँ हैं। यौन वासना भी एक जन्मपूर्व वासना है। तुम किसी शत्रु को अच्छी तरह समझकर ही उसे जीत सकते हो; उसके निकट जाकर; और फिर उसे थका-थकाकर या उसकी छिपी हुई शक्ति को समाप्त करके धीरे-धीरे उसे कमजोर बनाकर। लोभ की तृप्ति हो जाती है, और उसे त्याग या वस्तुओं को बाँटने की आदत से जीता जा सकता है। क्रोध तनाव और संघर्ष का परिणाम है। क्रोध के कई कारणों में से एक बहुत महत्वपूर्ण कारण यौन वासना है।

## शक्ति के रूप में संभोग

"संभोग एक शक्ति है जो मनुष्य को नई सृष्टियों के माध्यम से अनेक बनने के लिए प्रेरित करती है। आनंद उत्पन्न करो, सुख उत्पन्न करो, कला, साहित्य, मित्रता उत्पन्न करो। जीवन उत्पन्न करो। संभोग का आनंद लो। आनंद वह शक्ति है जो रचनात्मकता को मार्गदर्शन और प्रेरित करती है। संभोग वह *ह्लादिनी शक्ति* है, जो स्वयं आनंद उत्पन्न करती है और स्वयं उसका अनुभव करती है।

"लेकिन यह शक्ति शरीर के कुछ विशेष क्षेत्रों तक ही सीमित है। ठीक वैसे ही जैसे देखने, सुनने, चखने, सूंघने आदि की शक्तियाँ भी शरीर के विशिष्ट अंगों से संबंधित हैं। हम इन अंगों को नहीं छिपाते। जबकि हमें छिपाना चाहिए। जब मैं कहता हूँ कि हमें छिपाना चाहिए, तो मेरा अर्थ यह है कि इन शक्तियों का पूर्णत: मुक्त प्रदर्शन, अर्थात् उनका अत्यधिक उपयोग, मनुष्य में कुरूपता को उजागर करता है। ऐसा मनुष्य जो अपनी इंद्रियों पर कोई नियंत्रण नहीं रखता, वह

अविश्वसनीय प्राणी होता है। यह उसकी वास्तविक कुरूपता को प्रकट करता है। इससे भी अधिक, इंद्रियों का अनियंत्रित उपयोग दूसरों के लिए दुःख और स्वयं के लिए और शरीर के लिए (दीर्घकाल में) दुःख का कारण बनता है। इसलिए, यदि हमें यह लगता है कि हम सभ्य हैं, तो हमें उन अंगों का प्रदर्शन छिपाना चाहिए जो अनियंत्रित अति में लिप्त होते हैं।

"ये इंद्रियाँ शरीर-स्थित हैं। इन इंद्रियों से मन को जो आनंद मिलता है, वह एक अंग तक ही सीमित होता है। लेकिन ऐसे आनंद और दुःख भी होते हैं जो मन-स्थित होते हैं; संभोग, क्रोध और लोभ ऐसे ही मन-स्थित भावनाएँ हैं। ये मनुष्य के जीवन को अति में लिप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं, जब तक कि मनुष्य अपना नियंत्रण खो नहीं देता। यह बिना ब्रेक के ढलान पर उतरने वाले चक्र की तरह काम करता है। निश्चित दुर्घटना; यहाँ तक कि विनाश; मृत्यु।

"इन तीनों अतियों (लोभ, काम और संभोग) में से अंतिम, अर्थात् संभोग, को गलत तरीके से केवल शरीर के कुछ विशेष क्षेत्रों में स्थित माना गया है, और उतनी ही गलत तरीके से हम उन्हें छिपाते हैं। उन्हें छिपाने की भावना से हम उन्हें उल्टा महत्व देते हैं और उन्हें सामाजिक वर्जना बना देते हैं। यह बिल्कुल गलत है। मुझे इसे समझाने दो।

"हम उन्हें क्यों छिपाते हैं? हम उन्हें सुरक्षित रखना चाहते हैं, क्योंकि हम उन्हें जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। जीवन के दो अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य इन अंगों पर निर्भर करते हैं। (यह उनके शरीर के निकास मार्ग के रूप में उपयोग के अलावा है।)

"इनमें से एक कार्य जीवन की सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक को पूरा करता है। यह जीवन को जीवन से फैलाने का कार्य है, जैसे एक दीपक से दूसरे दीपक को जलाना। एक व्यक्ति अनेक बनता है, और दूसरों को भी अनेक बनने में सहायता करता है।

"लेकिन यह कार्य सभी जीवन के लिए सामान्य है, केवल मानव के लिए विशेष नहीं। मानव एक विशेष प्रकार का जीवन है। कोई अन्य जीवन इसके समान नहीं है। क्यों? क्योंकि मनुष्य ही एकमात्र ऐसा है जो मानव जीवन को बढ़ाने के अलावा जीवन के आनंद में भी वृद्धि करता है। कला, संगीत, कविता, साहित्य, चित्रकला, वास्तुकला और अन्य कई रूपों के माध्यम से मानव की रचनात्मकता स्वयं को व्यक्त करती है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य मानव की आनंद उत्पन्न करने की इच्छा और प्रयास के बिना कैसे उत्पन्न होते?

"जिस प्रकार जीवन से जीवन की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार आनंद की उत्पत्ति भी संभोग की शक्ति से होती है। जब तुम इस पर विचार करोगे, तो तुम देखोगे कि मानव समाज, संस्कृति और भविष्य की पीढ़ियों के लिए यह शक्ति केवल मानव को मानव बनाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण है, जैसे कोई अन्य पशु करता है।

"अब तुम देख सकते हो कि मनुष्य में संभोग की शारीरिक भूमिका उसके मस्तिष्क, बौद्धिक, संवेदनात्मक और कल्पनाशील भूमिका की तुलना में कम महत्वपूर्ण हो जाती है।

"शारीरिक भूमिका में क्रिया जीवन के एक बिंदु पर प्रारंभ होती है और जीवन के दूसरे बिंदु पर समाप्त हो जाती है। लेकिन संभोग की बौद्धिक अभिव्यक्ति पूरे जीवन को संलग्न रखती है। जीवन उत्पन्न करना शरीर के एक भाग तक सीमित है; लेकिन एक कला-कृति का सृजन पूरे मनुष्य को संलग्न करता है: उसकी संवेदनाएँ, अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ, कल्पनाएँ। वह एक भविष्यवक्ता की तरह केवल वर्तमान के लिए ही नहीं, बल्कि भविष्य के लिए भी सृजन करता है। वह आने वाले युग की रचना करता है।

"देखो, मानव जगत के लिए संभोग कितना महत्वपूर्ण है। बिना संभोग के, बिना *द्विधाना* (आह्वान), *अभ्यास* (अनुशासन), *प्रयोग* (अनुप्रयोग) और *भोग* (पूर्णता) के, जो *ह्लादिनी* (अर्थात् संभोग या कुंडलिनी शक्ति) है, मनुष्य के जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है। जीवन को दिए गए रूप में आनंद लो; कुंडलिनी की कृपा का आह्वान करो। मनुष्य के दुःख को मिटाने के लिए आनंद फैलाओ।

"जैसे लोभ मनुष्य को भोजन की ओर आकर्षित करता है और उसके मूल्य से भटकाता है; जैसे क्रोध या काम प्रतिशोध की ओर आकर्षित करता है, या मनुष्य की मानसिक शांति को भंग करके उसे बुराई के विरोध में खड़े होने के महत्व से भटकाता है – ये दोनों, लोभ और काम, मनुष्य के विकास के लिए सबसे बड़े शत्रु हैं।"

## क्यों छिपाएं?

"इसी प्रकार, जब तक मनुष्य जीवन में संभोग की वास्तविक भूमिका को नहीं समझता, तब तक संभोग मनुष्य के तीन सबसे बड़े शत्रुओं में से एक बन सकता है। संभोग की शक्ति, *ह्लादिनी*, को सभी रचनात्मक प्रेरणाओं, प्रेरणा, उल्लास और आनंद के स्रोत के रूप में स्वीकार करने के बजाय, लोग मूर्खतापूर्ण ढंग से इसे शरीर के कुछ विशेष अंगों तक सीमित कर देते हैं और उन अंगों से चिपक जाते हैं। ऐसा करते समय वे अत्यधिक अपराधबोध महसूस करते हैं और इस गलत समझे गए और गलत इस्तेमाल किए गए आनंद को छिपाने की कोशिश करते हैं।

"आनंद छिपाने के लिए नहीं है। आनंद अभिव्यक्ति के लिए है। आनंद बाँटने के लिए है। आनंद बाँटने से बढ़ता है और पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होता रहता है। लेकिन जैसे भोजन का मूल्य लालच और बीमारी के कारण नष्ट हो जाता है, आत्म-संरक्षण क्रोध, लड़ाई और पीड़ा में बदल जाता है, वैसे ही संभोग के इस अद्भुत अनुभव को अंगों के प्रति वासना और शारीरिक भोग में उलझा दिया गया है। यह प्रेम से पूरी तरह से कट गया है, जबकि प्रेम ऐसा भाव नहीं है जिसे छिपाया जाए। यह उस रचनात्मक प्रेरणा से भी कट गया है, जो सभी इंद्रियों की पूर्ण निष्ठा की माँग करती है।

"यही कारण है कि मनुष्य इस दुरुपयोग की जिम्मेदारी से बचने के लिए इसे पर्दे के पीछे रखना चाहता है, और हर चीज़ को छिपाकर, ढँककर रखना चाहता है। इस तथाकथित संभोग को छिपाने की यह बनावटी प्रवृत्ति मनुष्य में व्याप्त बुराई का ठोस प्रमाण है। मनुष्य ने अपने ही गलत आचरण से स्वयं को उस स्वर्ग से बाहर निकाल दिया है, जिसका उत्तराधिकार उसे जीवन-वृक्ष, कुंडलिनी, ने दिया था।

"जीवन का सृजन एक बहुत ही दर्दनाक प्रक्रिया है, विशेषकर माँ के लिए। यह इतनी कष्टदायक है कि यदि इसमें कोई अत्यंत मोहक पुरस्कार और प्रलोभन न जोड़ा गया होता, तो मनुष्य कभी भी संतान उत्पन्न करने का साहस नहीं करता। इसलिए संभोग एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को शरीर में सबसे उच्चतम आनंद देती है। इस आनंद का अनुभव करने के लिए मनुष्य संभोग की ओर आकर्षित होता है, हालाँकि अंततः यह पीड़ा को भी बढ़ाता है। जीवन सुख और दुःख की लयबद्ध कविता है।

"चूँकि सृजन में आनंद है, इसलिए मनुष्य जीवन में पीड़ा को सहने का साहस करता है। पीड़ा की आशंका के बावजूद हम इस आनंद की तलाश करते हैं; यह आनंद इतना गहन है। यह क्रोध का स्रोत है; यह लोभ का स्रोत है; यह हमारे सभी दुःखों का स्रोत है। इसलिए इस शक्ति पर नियंत्रण रखना अत्यंत आवश्यक है। कोई भी शक्ति बुरी नहीं है। शक्ति *शुद्धम् अपापविद्धम्* (निर्मल और पवित्र) है। यह सभी इच्छाशक्ति का स्रोत है। इच्छा शक्ति है। लेकिन जब यह स्वार्थ और लोभ से

दूषित हो जाती है, तो हम इसका दुरुपयोग और अति उपयोग करते हैं, जैसे कोई बच्चा मिश्री का दुरुपयोग करता है। इससे बीमारी होती है।

"इस संभोग शक्ति का अनियंत्रित उपयोग व्यक्ति को बीमार महसूस कराता है। बीमार अवस्था में वह जो कुछ भी करता है, वह विकृत हो जाता है। इच्छाशक्ति बोझिल हो जाती है और कामना बन जाती है; गतिशीलता प्रभुत्व बन जाती है; प्रेम वासना बन जाता है; और अंततः आनंद पीड़ा में बदल जाता है। यह अत्यंत दुखद है कि दुरुपयोग से दूषित होकर वही रचनात्मक सार और वह आनंद, जो सृजन से मिलना चाहिए था, क्रोध, दुःख, पीड़ा, शत्रुता, संघर्ष और तनाव से अभिभूत हो जाता है।

"इसलिए मैंने कहा कि हमें इस शक्ति को शिक्षित और प्रशिक्षित करना चाहिए। हमें इन क्षेत्रों से परिचित होना चाहिए। जैसे हमें उच्च वोल्टेज से दूर रहने के लिए कहा जाता है, वैसे ही हमें इन क्षेत्रों से भी दूर रहने के लिए कहा जाता है। केवल अत्यधिक तैयारी और सर्वोत्तम प्रशिक्षण के साथ ही हम इससे वह पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं, जो इसे जीवन में लाने के लिए माना गया है।

"यही कारण है कि सख्त निगरानी में हमें इन क्षेत्रों से परिचित कराया जाना चाहिए। ये वे पवित्र और दिव्य क्षेत्र हैं जिन्हें कामुक क्षेत्र कहा जाता है। हम इन क्षेत्रों को *मातृ शक्ति* का आसन मानते हैं। ये हमारे लिए आनंद और दिव्यता के तीर्थस्थल बन जाते हैं। हम इन क्षेत्रों के पास जाने और उन्हें अपनी शिक्षा और आनंद के उच्चीकरण के लिए उपयोग करने में कभी भी गंदगी, पाप या अपराधबोध महसूस नहीं करते।

"कई लोग इन क्षेत्रों को पाप के क्षेत्र मानते हैं। पाप है – लोभ, वासना, क्रोध, तनाव। पाप है – वासना, निकृष्टता, क्रूरता और सबसे बढ़कर दूसरों की भावनाओं के प्रति असंवेदनशीलता। यह सब गलत समझे गए, गलत संभाले गए संभोग की शक्ति के परिणाम हैं।

"यही कारण है, मेरे बेटे, कि मैं तुम्हें इन क्षेत्रों से परिचित कराता हूँ; कि मैं तुम्हें अपने साथ बैठाता हूँ और तुम्हें त्वचा से त्वचा का संपर्क करने देता हूँ; कि मेरे शरीर पर और तुम्हारे शरीर पर ये क्षेत्र सबसे निकटतम स्पर्श में आते हैं।

"हम इसके बारे में कुछ नहीं सोचते, फिर भी पूरी तरह एकाग्र रहते हैं। यह उसी तरह है जैसे गर्मी के संपर्क में आकर हाथ गर्मी को सहने की शक्ति प्राप्त कर लेता है, जैसा हर रसोइया बताएगा। जिस व्यक्ति का जन्म ध्रुवीय क्षेत्रों में या हिमालय की ऊँचाइयों में हुआ है, वह दिसंबर में भी वाराणसी में निर्वस्त्र रह सकता है; लेकिन हम नहीं रह सकते। हम जून की 118 डिग्री तक की गर्मी सहन कर सकते हैं, लेकिन वह हिमालय का व्यक्ति हीट स्ट्रोक से मर जाएगा।

"जिस प्रकार शरीर को अनुकूलित किया जा सकता है, उसी प्रकार मन को भी शरीर के उन क्षेत्रों से अनुकूलित किया जा सकता है, जो तुम्हारे आध्यात्मिक सुरक्षा कवच को तोड़ने में सबसे अधिक सक्षम हैं।"

## तंत्रिका जगत

"फिर ऐसे परस्पर जुड़े हुए आसनों का एक और अधिक गंभीर पहलू है। मैं अभी तक मन और मानसिक दृष्टिकोणों की शिक्षा के बारे में बता रही थी। अब मैं तुम्हें इससे भी गहरे विषय के बारे में बताने जा रही हूँ। इसे हम रहस्यमय (esoteric) कहते हैं। यह केवल आध्यात्मिक व्यक्तित्व से संबंधित है।

"समय के साथ, और अनुभव एवं अभ्यास के द्वारा, तुम इस रहस्य के बारे में धीरे-धीरे, और अधिक, और गहराई से सीखोगे। साधना में यह रहस्यपूर्ण है। यह ज्यादा समझाने योग्य नहीं है। इसे अनुभव करना होता है। बाद में तुम्हें इसका सीधा अनुभव होगा। यह ज्ञान *प्रत्यक्षावगमम्* (प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा) है। फिर भी मैं इसका थोड़ा स्पष्टीकरण दूँगी, ताकि तुम यह न समझो—और ऐसा सोचना खतरनाक और भ्रामक हो सकता है—कि यह सारी तैयारी केवल मानसिक है। ऐसा नहीं है।

"योग का संबंध आत्मा की शुद्धता के एहसास से है, जो मानसिक जगत को समाप्त करके प्राप्त होता है। एकाग्रता ही चेतना को मन से मुक्त करती है। एकाग्रता की क्षमता शरीर की संपूर्ण नाड़ी-शक्ति को समेटने पर निर्भर करती है। नाड़ियों और नाड़ी-केंद्रों का बहुत बड़ा योगदान है हमारे अहंकार को एक बिंदु पर केंद्रित करने में, और फिर उसे अस्तित्व से मिटा देने में। अहंकार सर्वोच्च बलि है, जो शुद्ध आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त करने के लिए दी जा सकती है।

"नाड़ी-शरीर में विशिष्ट क्रियाओं के केंद्र होते हैं। इन्हें *ग्रंथि* (ग्लैंड्स) कहा जाता है। कुछ ग्रंथियों को पहचाना गया है, लेकिन कुछ अभी तक अज्ञात हैं। चीन में शरीर की बीमारियों और मानसिक विकारों को ठीक करने की एक अद्भुत पद्धति है, जिसमें त्वचा के कुछ सटीक बिंदुओं पर सुइयाँ चुभोई जाती हैं। यहाँ तक कि चेतना और जागरूकता को भी त्वचा के कुछ बिंदुओं पर सुइयाँ लगाकर शून्य या निष्क्रिय किया जा सकता है। ऐसी सुइयों के प्रयोग से बड़ी शल्यचिकित्साएँ भी की गई हैं।

"यह दिखाता है कि हमारे योगिक पद्धति को इन नाड़ी-केंद्रों के बारे में जानकारी थी। नाड़ियाँ शरीर के सबसे कम पहचाने गए तंत्रों में से एक हैं। पश्चिमी चिकित्सा विज्ञान की विधियों से अभी तक नाड़ी-व्यक्तित्व को समझा नहीं गया है। प्राचीन समय में ऐसे लोग भी इस पृथ्वी पर रहते थे जो बिना बेहोशी (एनेस्थीसिया) के मस्तिष्क की शल्यचिकित्सा करते थे। *सुश्रुत-संहिता* (भारतीय शल्यचिकित्सा ग्रंथ) पढ़ो। दक्षिण और मध्य अमेरिका में भी इस अविश्वसनीय रहस्य का ज्ञान प्राचीन सभ्यताओं को था।

"शरीर में 'दहन बिंदु' (Burning Spots), जागरूकता के बिंदु, और सुप्त शक्तियों के क्षेत्र होते हैं, जिन्हें जाग्रत और सक्रिय करना पड़ता है। यह एक प्रकार से शक्ति-धारा को 'स्विच ऑन' करने जैसा है। इन आसनों के माध्यम से इन शक्ति-बिंदुओं को सक्रिय किया जाता है। अभी के लिए इतना जानना ही पर्याप्त है।

"समय के साथ तुम इसके बारे में और अधिक जानोगे। इसमें न तो शर्मिंदा होने की बात है और न ही उत्तेजित होने की। तुम्हें यह लाभ है कि तुम इसे अपनी मासूमियत के समय में ही सीख रहे हो। अन्य लोग, जो इस रहस्य को अपनी परिपक्वता के बाद जानना शुरू करते हैं, विशेष रूप से तब जब वे पहले ही संभोग क्षेत्रों के साथ अनुचित व्यवहार कर चुके होते हैं, उनके लिए यह मार्ग कठिन हो जाता है। चित्र हमेशा एक साफ कैनवास पर ही अच्छे बनते हैं। ऐसे मन, जो पहले से ही अजीब कल्पनाओं, मानसिक भ्रांतियों, और अपनी ही इच्छाओं से उत्पन्न निष्कर्षों से भरे होते हैं, उनके लिए सही रास्ते पर बने रहना बहुत कठिन हो जाता है।"

## गुरु

"तो देखो, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त मुद्रा (आसन) अपनाना कितना महत्वपूर्ण है। वास्तव में, किसी कार्य में सफलता काफी हद तक इस पर निर्भर करती है कि सबसे उपयुक्त आसन अपनाया गया है या नहीं। एक

गलत आसन सफलता से वंचित कर सकता है। यह सच है। यह गंभीर विकृतियों और बीमारियों का कारण भी बन सकता है।

"लेकिन सही आसन का चयन करना और उसे अपनाना कठिन होता है। यह असंभव नहीं है, लेकिन यह कठिन है। वास्तव में, यह बहुत कठिन है। जीवन बहुत छोटा है। हर चीज़ को केवल व्यक्तिगत प्रयासों से जानने और खोजने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। हमें दूसरों के अनुभवों और उनके द्वारा छोड़ी गई कुछ मार्गदर्शिकाओं पर निर्भर करना पड़ता है।

"कुछ लोग किताबें पढ़कर मार्गदर्शन देते हैं, लेकिन उनके पास कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं होता। ऐसे दूसरे हाथ के स्रोत बहुत खतरनाक होते हैं और केवल समय की बर्बादी कराते हैं। लेकिन कुछ लोग सीधे अपने अनुभव से बोलते हैं। केवल वे ही गुरु हो सकते हैं। उनमें से कई ने शायद एक भी छपी हुई पंक्ति नहीं पढ़ी होगी, फिर भी वे महान आचार्य होते हैं। क्यों? क्योंकि उनके पास अनुभव होता है।

"लोग अक्सर गलती से सोचते हैं कि गुरु वह आध्यात्मिक शिक्षक होता है जो दूसरों को स्वर्ग या नरक तक ले जाने का एकाधिकार रखता है। यह गुरु के बारे में एक गलत धारणा है। गुरु सबसे अंतरंग से भी अधिक अंतरंग होता है; वह तुम्हारे भीतरी अस्तित्व का सबसे निकटतम होता है, उससे भी अधिक जिसे तुम सबसे अधिक प्रेम या आदर करते हो; वह तुम्हारी सारी संपत्ति से भी अधिक मूल्यवान होता है, यहाँ तक कि उससे भी जिसे तुम पाने की कल्पना करते हो। शिष्य के लिए उसकी शक्ति सबसे अधिक प्रभावशाली, सबसे अधिक महत्व की और सबसे अधिक गतिशील होती है।

"विचार करो कि वह तुम्हें क्या-क्या दे सकता है। ऐसी चीजें, खजाने, अनुभव, जो वास्तव में तुम्हारे हैं और केवल उसके मार्गदर्शन से तुम्हारे हो सकते हैं। और ये अनुभव ऐसी दृष्टि के माध्यम से प्राप्त होते हैं जो आँखों से नहीं देखती; ऐसी ध्वनि से जो कानों से नहीं सुनी जाती; ऐसा स्वाद जो जीभ से नहीं चखा जाता; ऐसा ज्ञान और अधिकार जो मन से नहीं होता। इसके बारे में कोई शब्द बात नहीं कर सकते; कोई सीमा इसे समेट नहीं सकती। मृत्यु इसे समाप्त नहीं कर सकती; समय इसे पुराना नहीं कर सकता; इसे मापा नहीं जा सकता; इसे आंका नहीं जा सकता।

"मैं यह सभी गुरुओं के बारे में कह रहा हूँ। केवल तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं का महत्व क्या है। शिष्य गुरु से भी अधिक प्राप्त कर सकता है। कई छात्र अपने शिक्षकों से कहीं अधिक जीवन में उपलब्धि प्राप्त करते हैं। लेकिन फिर भी गुरु गुरु ही रहता है।

"तुम 'सोचते' हो देवताओं के बारे में: सृजनकर्ता देवता, पालनकर्ता देवता, संहारकर्ता देवता; लेकिन तुम्हारे पास तुम्हारे साथ गुरु होता है। वह इन सभी का प्रतिनिधित्व करता है। एक गुरु आध्यात्मिक पतन का शिकार हो सकता है; लेकिन जो उसने तुम्हें दिया है, वह तब तक नीचे नहीं गिरता जब तक तुम स्वयं उसे गिरने न दो।

"मुनि दत्तात्रेय के कई गुरु थे। बुद्ध शाक्यमुनि के भी कई गुरु थे। क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी माँ मेरे लिए खाना पकाने, गृह-प्रबंधन और सामाजिक संबंधों में गुरु रही है? उनके पास विशेष ज्ञान है और वह इसे बाँटने के लिए तैयार हैं। इसी तरह तुम्हारे पिता, अपनी महान आत्मा की nobility के साथ, कई मामलों में मेरे आंतरिक गुरु रहे हैं। क्या तुमने कभी अपने पिता की आध्यात्मिकता की वास्तविक प्रकृति को समझा है? वह तुम्हारे बहुत निकट हैं, इसलिए तुम उनकी महानता को समझ नहीं पाते।

"जैसे यशोदा माँ कभी कृष्ण की दिव्यता को नहीं समझ सकीं और उन्हें साधारण बालक की तरह अनुशासन सिखाने के लिए दंडित भी करती थीं, वैसे ही हम भी अपने निकटवर्ती महानता को अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। यह स्वाभाविक है कि जब महानता बहुत निकट होती है, तो हम उसे महत्व नहीं देते।

"तुम्हें पता है, यहूदिया नामक देश के लोग जब स्वर्ग से आने वाले एक नेता की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसी समय उनके बीच एक युवा व्यक्ति था, जो बहुत साधारण परिस्थितियों में पैदा हुआ और बड़ा हुआ। उसने उन्हें कई अच्छी बातें बताईं। लेकिन क्योंकि वह उनके बहुत निकट था, उन्होंने उसे महत्व नहीं दिया, उसका मजाक उड़ाया।

"उसकी शिक्षाओं का विरोध हुआ क्योंकि वह 'धर्मशास्त्र के डॉक्टरों' में से नहीं था। उन्होंने उसे नीचा समझा, उसका उपहास किया, यहाँ तक कि उसे झूठे आरोप में फँसाकर क्रॉस पर लटका दिया गया। लेकिन उसकी शिक्षाओं को दबाया नहीं जा सका। उसकी आवाज़ समय और स्थान की सीमाओं को लाँघ गई और दुनिया भर में गूँजने लगी।

"इसी प्रकार तुम्हारे पिता भी अत्यंत सरल हैं; उनका जीवन निस्वार्थ है; वे बिना किसी भेदभाव के लोगों से प्रेम करते हैं। यही सबसे बड़ी आध्यात्मिक शक्ति है—निस्वार्थ प्रेम। ऐसा प्रेम जो बिना किसी स्वार्थ या उद्देश्य के हो, वही सबसे बड़ा चमत्कार है। लेकिन हम अक्सर किसी न किसी स्वार्थ के बिना प्रेम करने में असमर्थ होते हैं।

"इस प्रकार तुम्हारे पिता को दूर से देखकर मैंने अनेक गुण सीखे हैं। इससे मुझे इस दुःखमय संसार को सहन करने और इसके भीतर की पूर्णता को खोजने और उसका आनंद लेने की शक्ति मिली है। सबसे महान योगी वही है जो चारों ओर के दुःख के बीच भी गा सकता है। एक योगी हजारों बंधनों के बीच भी स्वतंत्र महसूस करता है। वह जीवन के आनंद में डूबता है, लेकिन कभी भी मोह में नहीं फँसता।

"यह एक महान पाठ है, मेरे बेटे; और इससे पहले कि तुम इसे पूरी तरह आत्मसात कर सको, मुझे यकीन है, मुझे इसे कई बार दोहराना पड़ेगा। यही कारण है कि हम भजन गाते हैं, तीर्थ यात्रा करते हैं, रामायण और महाभारत का पाठ करते हैं।"

# भैरव

"मेरे और भी गुरु हैं। मैं उन्हें सम्मानजनक दूरी से देखता हूँ। लेकिन मैं उन्हें स्वीकार करता हूँ और उनसे सीखता हूँ। उदाहरण के लिए, गोविंदा पंडित, तुम्हारे चाचा। हर कोई उनसे डरता है। वह जादूगर हैं, अघोरी भैरव, प्रचंड तांत्रिक। इसमें कोई संदेह नहीं कि उनका रूप भयंकर है, उनकी वाणी कठोर है; लेकिन जब डॉक्टर उपलब्ध नहीं होते, तब वे सबसे बड़े और सबसे दयालु चिकित्सक होते हैं। प्लेग, हैजा, चेचक जैसी विनाशकारी महामारियों के समय, जब मृत्यु-क्रंदन वातावरण को चीरता है, तुम देखोगे कि यह बूढ़ा आदमी घर-घर, बिस्तर-बिस्तर पर निडरता से, अनवरत, बिना बुलाए चलता है और अपनी दवाइयाँ बाँटता है। ये गोलियाँ उनके स्वयं के तैयार किए हुए मिश्रण से बनी होती हैं, जिनमें जड़ी-बूटियाँ, पशु-विष और रासायनिक तत्व शामिल होते हैं। जब वह किसी रोगी को दवा देने से मना कर देते हैं, तो लोगों को समझ में आ जाता है कि उस जीवन के लिए और कुछ नहीं किया जा सकता। निश्चित ही वह चमत्कारी व्यक्ति हैं; लेकिन उनका स्वभाव इतना कठोर है कि कोई भी उनसे अनावश्यक रूप से संपर्क करने या उनका समय बर्बाद करने की हिम्मत नहीं करता। वे फिजूलखर्ची से घृणा करते हैं; मीठी बातों से बचते हैं। पूर्ण योगी भीड़ से बचता है।

"मैं सैकड़ों गुरुओं की सूची बना सकता हूँ। कोई भी गुरु विशेष या 'केवल एक' गुरु नहीं होता। एक बार जब तुमने किसी को गुरु के रूप में चुन लिया, तो वह जीवनभर तुम्हारा गुरु रहता है। जब भी कोई समस्या हो, उसके पास जाओ। वह स्वयं तुम्हें विशेषज्ञों के पास भेजेगा, यदि और जब विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी। वह यह जानता होगा। उस पर निर्भर रहो। तुम एक साथ कई प्रेम नहीं कर सकते।"

वह और भी बहुत कुछ कहती, लेकिन उसने मेरी आँखों में कुछ देखकर रुक गई और उसके चेहरे पर एक कोमल मुस्कान आ गई। "लेकिन जैसे मैंने कहा था, तुम किसी से प्रेम कर सकते हो। तुम मुझसे प्रेम करते हो। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ। ऐसा पूर्ण प्रेम आत्मा में विश्वास उत्पन्न करता है। यह एक पारस्परिक विश्वास है। प्रेम शुद्ध करता है, अनुशासन सिखाता है, सहनशीलता, समायोजन, साहस और साझेदारी सिखाता है। केवल एक गुरु से ऐसा प्रेम किया जा सकता है। ऐसा प्रेम निराकार होता है। यह प्रेम इस संसार के लिए नहीं, बल्कि किसी और संसार के लिए होता है।

"लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि जीवन के महान पाठों को कई स्रोतों से नहीं सीखा जा सकता। ऐसी कठोरता योगी के विपरीत होती है। एक सच्चा योगी सहज और उदार होता है; वह किसी भी स्रोत से अच्छाई को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करता है। एक सच्चा योगी कमल की तरह खिलता है, प्रकाश और जीवन के अमृत को ग्रहण करने के लिए; और जब वह चाहे, कछुए की तरह अपनी इंद्रियों को समेट लेता है।

"याद रखना, इंद्रियों को जाग्रत रखना चाहिए। तुमने वह सुबह का पागल आदमी सुना होगा, जो भोर में चिल्लाता है 'चेत! चेत! चेत!' (जागो, जागो, जागो)। इंद्रियों को जाग्रत रखो, लेकिन उनमें लिप्त मत हो। इस तरह तुम कई गुरुओं को देखोगे और मिलोगे। तुम गुरु दत्तात्रेय, महाभैरव को याद करते हो, है ना?"

"हाँ," मैंने कहा, "वह जो वरुणा के श्मशान भूमि में है। मुझे उसका मंदिर याद है। आप मुझे वहाँ ले गए थे।"

"तब तुमने अवश्य ही उसके मंदिर की दीवारों पर चित्रित विभिन्न पशु-आकृतियों को देखा होगा। उसने सभी जानवरों, पौधों और यहाँ तक कि प्रकृति के तत्वों से भी सीखा था। यही पूर्ण भैरव का मार्ग है, वाम-मार्गियों (वाम-मार्ग के अनुयायियों) का मार्ग है। यही महायान का मार्ग है। तंत्र इस मार्ग की पूजा करता है। इन्हें अघोरी भी कहा जाता है, जो प्रकृति और अति-प्राकृतिक शक्तियों से संपर्क बनाए रखते हैं। गोविंदा पंडित भी उनमें से एक हैं।"

"और आप...," मैंने सावधानी से जोड़ा।

फिर वही कोमल मुस्कान उसके चेहरे पर छा गई। उसने अपना मुलायम हाथ मेरे सिर पर रखा और रीढ़ की हड्डी के साथ नीचे की ओर फेरा। "कौन? मैं? अघोरी? नहीं, अभी नहीं। मनिकर्णिका की तुम्हारी मौसी मुझसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। यह स्थिति प्राप्त करने में लंबा समय और कठिन साधना लगती है। एक समय आएगा जब तुम्हें भी इसका एहसास होगा। कभी भी किसी अघोरी को उसके विचित्र तरीकों के कारण तुच्छ मत समझना।

"अघोरी न तो तुच्छ हैं, न ही विकृत, जब तक तुम पहले से बनी हुई धारणाएँ नहीं रखते। योगी बनने का मतलब है सभी पूर्वाग्रहों को तोड़ना और पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना।"

"भैरव विकृत नहीं हैं। उनके भीतर उन लोगों के लिए सबसे निस्वार्थ आशीर्वाद हैं, जो उनके योग्य हैं। एक दिन ऐसा आएगा जब तुम अघोरी मार्ग को समझोगे; तुम स्वयं अघोरी बनोगे।"

"ऐसे अघोरी के गुरु हर जगह होते हैं। केवल सही शिष्य और दीक्षित व्यक्ति ही उनकी महानता को पहचान सकता है। यह बहुत भ्रामक और अनुचित है कि किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके बाहरी आचरण से किया जाए, विशेष रूप से जब उसके आध्यात्मिक जीवन का न्याय किया जा रहा हो।"

"गुरु सिखाते हैं; वे ज्ञान की अमर विरासत सौंपते हैं, लेकिन हमेशा सही व्यक्ति को, सही समय पर। यह वास्तविकता का व्यावहारिक ज्ञान है, जो अनुभव के माध्यम से प्राप्त होता है। इसे प्राप्त करने के बाद और कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती।

"यह परम सत्य है। *शिवम्, आनंदम्*; स्वतंत्रता का आनंद। यह एक शक्ति है जो ऊपर उठाती है, पार करती है। एक बार इस शक्ति का अनुभव हो जाए, तो मनुष्य बिना किसी भेदभाव के सभी से प्रेम कर सकता है।"

## आसन एक बार फिर

"और ऐसे अभ्यासों और कठोर साधनाओं के लिए ही ये आसन बनाए गए थे। ये अघोरी आसन किसी एक व्यक्ति या एक पद्धति से नहीं आए हैं। ये किसी एक समुदाय या एक समय से भी नहीं आए। तुम देखोगे कि इस प्राचीन ज्ञान पर अधिकांश ग्रंथ बहुत बाद में लिखे गए हैं और वह भी सबसे गूढ़ और रहस्यमय भाषा में। इन्हें *तंत्र* कहा जाता है, जो 'सूत्र' के रूप में दर्ज हैं। जिस प्रकार रेशम या कपास के गुच्छे से धागा निकलता है, वैसे ही परंपरा के महासागर से सत्य निकलता है और आने वाले युगों तक पहुँचता है। यह सूत्र लंबा और अखंड है; ये रहस्यमय और व्यावहारिक दोनों हैं। 'विचार की डोरी', 'मकड़ी के जाले की डोरी' की तरह, इन्हीं सूत्रों के धागों से तंत्र का जाल बुना गया है।

"सूत्र दर सूत्र एक पूरा ताना-बाना बुना गया है जिससे आसनों की प्रभावकारिता का विस्तार किया जा सके। किसी को लंबे समय तक ध्यान के लिए बैठने से पहले एक अच्छा और प्रभावी आसन अपनाना चाहिए। लेकिन वे आसनों की विविधताएँ, जो लोग व्यावसायिक पुस्तकों में चित्रों के साथ देखते हैं, केवल स्वास्थ्य चिकित्सा के लिए या उन अहंकारी लोगों के लिए हैं जो ध्यान और एकाग्रता के लिए एक आसान रास्ता खोज रहे हैं। कोई आसान रास्ता नहीं है।

"इसके अलावा, ऐसी पुस्तक-ज्ञान जो आध्यात्मिक क्लबों, ध्यान केंद्रों आदि के प्रसार को प्रोत्साहित करती हैं, यदि उन्हें सच्चे विशेषज्ञों द्वारा संचालित नहीं किया जाता और केवल गंभीर और वास्तविक साधकों द्वारा ही भाग लिया जाता है, तो वे तनाव का एक और स्रोत बन सकती हैं। आध्यात्मिक साधना में कोई 'पैकेज डील' नहीं होती, न ही कोई 'पोर्टेबल आध्यात्मिक अनुभव' होता है। ऐसी सतही भागीदारी पहले से ही फूले हुए अहंकार को और बढ़ा सकती है।

"वास्तव में, एक या दो आसन ही एक नवागंतुक के लिए प्रारंभ में पर्याप्त हैं। यह आसन गुरु द्वारा शिष्य के पूर्ण निदान और उसकी सहज स्वीकृति के अनुसार चुना जाना चाहिए। अनावश्यक कठोरता और बाध्यकारी अनुशासन शांति प्राप्ति में बाधक हैं।

"एक टाइपिस्ट को देखो। उसे मशीन पर लंबे समय तक बैठना पड़ता है, इसलिए वह अपनी सीट को बहुत सावधानी से समायोजित करती है। यदि वह ऐसा नहीं करती, तो न केवल उसका प्रदर्शन प्रभावित होगा, बल्कि उसकी दृष्टि को नुकसान होगा, उसकी रीढ़ में दर्द होगा, और अंततः वह तंत्रिका विकार और गठिया की शिकार हो सकती है। अब तक तुम्हें यह समझ में आ जाना चाहिए कि सही आसन चुनना कितना महत्वपूर्ण है..."

मैंने यहीं पर उन्हें रोका और पूछा, "क्या आपने मेरे लिए इस आसन और मुद्रा का चयन इतनी ही गहराई से विचार करके किया था? क्या हमारा नग्न होना और यह जटिल बैठने की मुद्रा कुछ ऐसा था जिसे आपने मेरे लिए पहले से ही निश्चित कर रखा था?" यह पूछने के लिए मुझे साहस की आवश्यकता थी, लेकिन मैं दृढ़ संकल्पित था।

उनकी आँखें अचानक स्थिर हो गईं। कुछ देर चुप रहने के बाद उन्होंने अंततः बोलना शुरू किया। उनकी आवाज़ में एक गहरी गंभीरता थी, जो कहीं दूर से गूंज रही थी।

"तुम यह क्यों पूछते हो?"

"मुझे पूछना ही होगा," मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया।

"क्यों?" वही निर्लिप्त आवाज़ फिर गूंजी।

"अगर मैं नहीं पूछूँगा, तो और कौन पूछेगा? अगर आप नहीं बताएंगी, तो और कौन बताएगा? मैं निश्चित रूप से यह जानना चाहता हूँ कि यह अघोरी मार्ग, यह वाम मार्ग ही मेरे लिए एकमात्र मार्ग है या नहीं। क्या मैं कुछ और हो सकता था; क्या कोई और मार्ग काम कर सकता था?"

"तुम्हें अघोरियों से इतनी नाराज़गी क्यों है? क्या मैंने नहीं बताया था? अघोरी ही बुद्ध होते हैं। उन्होंने आसनों के रहस्यों को खोजा है। गोरखनाथ, मत्स्येंद्र, अष्टावक्र, घेरंड, नकुलीश—समय आने पर तुम सब जान जाओगे।

"लेकिन नर-नारी के इस चक्र में संपर्क की पूर्णता प्राप्त होती है, जो कोई भी व्यक्ति अकेले शरीर में रहकर नहीं प्राप्त कर सकता। यह वज्र-मार्ग है। यह सहज (आसान) मार्ग है, सहजता का मार्ग। कठोर तपस्या का मार्ग अधूरा रहता है; क्योंकि यह नकारात्मक मार्ग है।

"क्यों? क्या मैंने तुम्हें वाम मार्ग के रहस्यों के बारे में समझाया नहीं? ऐसा लगता है कि तुम्हारे मन का संकोच अभी तक दूर नहीं हुआ है। तो आओ, इसे एक अलग दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करते हैं। तुम जानते हो कि हिंदू जीवन चक्र को चार भागों में विभाजित किया गया है:

- ब्रह्मचारी – जो नव आरंभ करता है, मुक्ति के मार्ग की साधना करता है;
- गृहस्थ – जो अब जीवन को परीक्षण के मैदान के रूप में स्वीकार करता है, जहाँ वह अपने सीखे हुए ज्ञान को परखता है;
- वानप्रस्थी – जो संन्यास लेकर सत्य की खोज में जाता है, अपने पूर्व अभ्यास को और गहरा करता है, ताकि बिना आसक्ति के आनंद का अनुभव कर सके; और अंत में,
- संन्यासी – जो अब स्वयं को खोजने की कोशिश करता है, और इस प्रकार मानव जगत में ऊर्जावानता का संचार करता है।

"पहला चरण दूसरे चरण में लागू करने के लिए है; बिना इस महत्वपूर्ण दूसरे चरण के न तो तीसरा चरण संभव है, न ही चौथा।"

# क्यों चाहिए स्त्री

"तो क्या इसका मतलब है कि विवाह आवश्यक है? क्या पुरुष के लिए स्त्री का होना अनिवार्य है?" मैंने कुछ असमंजस में पूछा।

मैं उन कई संन्यासियों को याद कर रहा था जिन्हें मैं जानता था। उनमें से एक मेरे बहुत प्रिय थे। उन्होंने बारह वर्षों तक मौन व्रत रखा था। अक्सर मैं उन्हें चतुःषष्टि योगिनी के मंदिर में देखता था, जैसे वे मेरा इंतज़ार कर रहे हों, और हमेशा अपनी आँखों से मुस्कुराते हुए मुझे देखते थे। उनके शरीर पर केवल एक लंगोटी थी, लेकिन उनके स्वास्थ्य की अद्भुत चमक, उनकी त्वचा की आभा और उनके लंबे-ऊँचे शरीर के चारों ओर की दिव्य आभा ही उनके वस्त्र थे। मैंने कहा, "क्या बिना इस पुरुष-स्त्री के बंधन के कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता? क्या आप मुझसे यही कह रही हैं?"

"हाँ, मैं तुमसे यही कह रही हूँ," उन्होंने गंभीरता से मेरे शब्दों को दोहराया, जो अनायास ही मेरे मुँह से निकल गए थे। मैं उत्तेजित हो उठा। "हाँ, मैं तुमसे यही कह रही हूँ," उन्होंने फिर दोहराया, "क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ और तुम्हें गुमराह नहीं करना चाहती; न ही मैं तुम्हें उस मार्ग पर ले जाना चाहती हूँ जो एक साधारण व्यक्ति के लिए अत्यधिक कठिन साबित हो। क्योंकि मैं तुम्हें अपना सब कुछ देना चाहती हूँ, इसलिए मैं तुमसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहती। तुम्हें इसमें इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है? स्वाभाविक मार्ग ही नियत मार्ग है। प्रकृति सही है। यह सहज मार्ग है। जीवन का मार्ग। जीवन से परे जीवन तक का मार्ग।

"राम, कृष्ण, बुद्ध—और क्यों, रामकृष्ण, श्री अरबिंदो, श्री चैतन्य—मैं और भी कई नाम ले सकती हूँ। कौन-से वैदिक ऋषि ब्रह्मचारी रहे? जो रहे वे भैरव थे: परशुराम, दुर्वासा, दीर्घतमस, मार्कंडेय, दत्तात्रेय। यही प्रवृत्ति है। महामाया ऐसा ही चाहती हैं... क्या तुम जरत्कारु, अष्टावक्र, च्यवन को भूल गए?"

"नहीं मौसी। उन्हें अपनी त्रुटियों को ठीक करने के लिए वृद्धावस्था में विवाह करना पड़ा, और तब...."

"... और तब उन्होंने लक्ष्य प्राप्त किया। स्त्री-शक्ति वास्तव में पुरुष-शक्ति की सहायता करती है। स्त्री एक विशेष ऊर्जा का भंडार होती है। यह ऊर्जा उन्हें जीवन धारण करने और पोषित करने के लिए चाहिए। वे जीवन और मातृत्व चाहती हैं। वे इस मातृत्व के बिना स्वयं को अधूरा महसूस करती हैं। इस कारण उनमें अधिक आंतरिक शक्ति होती है, भावनात्मक शक्ति होती है। यह शक्तिशाली शक्ति है, तमस। स्त्री-शक्ति तमस है। माँ तमसी है। स्त्रियों में अधिक लालसा होती है, वे अधिक तीव्रता से चाहती हैं, उनकी वेदनाएँ भी गहन होती हैं। तमस ऐसा ही है।

"शक्ति, शक्ति ही होती है। शक्ति से शक्ति ग्रहण करना और उससे अधिक प्रकाश प्राप्त करना ही बुद्धिमानी है। इस शक्ति की सहायता से आत्म-साक्षात्कार का शिखर कम समय में प्राप्त किया जा सकता है। यही महायान है, यही सहज मार्ग है, यही स्वाभाविक मार्ग है। यही निर्दोषता का मार्ग है। जो पुरुष और स्त्री में निर्दोषता को प्राप्त करते हैं, वे आसनों (महासन) में परम शांति पाते हैं।

"लेकिन इस लालच और अनुशासनहीनता के युग में कई लोग इस मार्ग को केवल स्वयं को धोखा देने के लिए अपनाते हैं। उनका मन भ्रष्ट होता है। वे धोखेबाज और विकृत मानसिकता के होते हैं। वे जीवन की महान आत्मा के लिए कलंक हैं। वे दुःख के बीज बोते हैं।

"इसलिए हमें सावधानी बरतनी चाहिए। इसलिए आजमाए हुए दिशानिर्देशों की आवश्यकता है। अनुभवी गुरुओं के मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इसलिए गुरु और शिष्य के बीच पूर्ण गोपनीयता की आवश्यकता है। इसलिए जीवन में इंद्रिय-संयम के प्रति पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है।

"व्यक्तित्व इंद्रियों द्वारा बनाए गए अहंकार की छवि है। जब इंद्रियों से मुक्त आनंद की खोज के द्वारा अहंकार का क्षरण होता है, तभी व्यक्तित्वहीनता और पूर्ण निर्दोषता प्राप्त होती है। तैरना सीखने के बाद कौन तैरने के उपकरणों की परवाह करता है? एक बार जब शरीर स्वस्थ हो जाता है, तो स्वास्थ्य सुझावों की क्या आवश्यकता?

"जो कुछ भी एक पुरुष अकेले दे सकता है, वह जीवन का केवल आधा हिस्सा है। जो कुछ उसे प्राप्त करना है, उसे अकेले पूरा करने के लिए उसे दुगुना समय लगेगा। जो ऋण पुरुष स्त्री के प्रति रखता है, उसे स्वीकार करना, सम्मान देना और पूजना चाहिए। जो स्त्री पुरुष को दे सकती है, वह उसके प्रयासों को आधे से भी कम कर सकती है। महादेव को उमा की आवश्यकता थी; विष्णु को लक्ष्मी की आवश्यकता थी। तुम्हें और मुझे भी अपना चक्र पूरा करने के लिए अपने विपरीत की आवश्यकता है।

"यही कारण है कि महान और पवित्र भैरवों ने युगों-युगों में इन आसनों की खोज की। तिब्बत, नेपाल, भूटान, सिक्किम के मठों में, गुप्त तंत्र के ग्रंथों में, इन आसनों का विस्तृत वर्णन आज भी पाया जा सकता है। तिब्बती थंका चित्रों में ये आसन कभी-कभी मंडलों के माध्यम से ज्यामितीय रूप में उकेरे गए हैं। लेकिन पुस्तकें गुरुओं का स्थान नहीं ले सकतीं। गुरु तुम्हें सीधे वही देते हैं जो तुम्हें चाहिए। अघोरी सीधे शिक्षक होते हैं, जो शरीर को, शरीर के कार्यों को, भय, लज्जा, अपमान आदि को कुछ नहीं समझते। वे जीवन और इंद्रियों के बहिष्कृत जैसे लग सकते हैं, लेकिन वे कुछ भी अस्वीकार नहीं करते।"

मैं चेतना के सागर में डूबा हुआ था। जैसे तपते ग्रीष्म के महीनों के बाद मानसूनी बारिश झमाझम बरसती है, वैसे ही उनके शब्द बरस रहे थे। मैं न केवल उन्हें आत्मसात कर रहा था, बल्कि भविष्य के लिए ऊर्जा भी संचित कर रहा था।

"तो फिर इतने सारे आसन क्यों?" मैंने पूछा।

"जैसे कई बीमारियाँ होती हैं, वैसे ही कई औषधियाँ भी होती हैं। जितने रोग, उतनी ही औषधियाँ, उतने ही उपचार। इसी प्रकार, आसन भी कई हैं। अघोरी भी कई प्रकार के हैं। आवश्यकताएँ भी कई प्रकार की हैं। विधियाँ भी अनेक हैं। प्रत्येक आसन का पूर्ण परीक्षण और अनुभव के बाद विस्तार से वर्णन किया गया है।"

## तुम ही तो मैं हूँ

जैसे किसी ऊँचाई से अचानक मुक्त होकर वह जीवन के स्तर पर उतर आईं और बिना आवाज़ के हँसी में फूट पड़ीं। वातावरण एक सुखद जीवंतता से भर गया। उन्होंने मुझे बाहों में भर लिया और कोमलता से गले लगाया। "प्रिय," उन्होंने कहा, "मेरे पास आओ। निर्भय बनो। तुम मेरे हो। बहुत ही मेरे। जितना तुम सोच सकते हो या स्वयं को अपना समझ सकते हो, उससे भी अधिक। तुम अब भी इस दोराहे पर क्यों खड़े हो? यदि तुम्हारे पास और भी प्रश्न हैं, तो मुझसे पूछो।"

"मैं आपकी बात समझता हूँ। लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि मैं इन आसनों को दूसरों के सामने प्रकट नहीं कर सकता, न ही इन्हें अपना सकता हूँ। मैं इसके बारे में किसी से बात नहीं कर सकता।"

"तुम्हें बात करने की आवश्यकता ही क्यों है?" उन्होंने आश्चर्य से पूछा। "हर प्रश्न को बढ़ावा देने की आवश्यकता नहीं है; हर प्रश्न का उत्तर देना भी आवश्यक नहीं है। यह सार्थक नहीं होगा। तुम हो तुम; तुम उससे भी अधिक हो। तुम हो मैं। पूरा तुम्हारा अस्तित्व प्रदर्शन के लिए नहीं है, न ही किसी सूक्ष्मदर्शी के अधीन है। तुम्हारे पास ऐसी बातें हैं जो तुम्हारे भीतर के आत्म से गहराई से संबंधित हैं, जिन्हें जानने की न तो किसी को आवश्यकता है, और न ही कोई जान सकता है। क्या वे जान सकते हैं?"

"मैं आपकी बात समझता हूँ। मैं सहमत हूँ। लेकिन जब मैं भूखा होता हूँ, नींद आती है, जब मुझे कोई रोमांचक अनुभव होता है या कोई रोचक बात सुनता हूँ, तो मैं अपनी भावनाएँ दूसरों के साथ साझा करता हूँ। क्या मैं ऐसा नहीं करता? और ऐसा करने में कई बार मेरी प्रसन्नता बढ़ जाती है, जो मुझे अनुभवों और विचारों से मिलती है।"

"हाँ, ऐसी कुछ बातें होती हैं जिन्हें तुम दूसरों के साथ साझा करते हो। लेकिन क्या ऐसी कुछ और भी बातें नहीं हैं जिन्हें तुम साझा नहीं करते? यह भी उन्हीं में से एक है, जिसे तुम साझा नहीं करोगे। गोपनीयता इसकी पहली शर्त है।"

"क्यों?" मैंने फिर जोर देकर पूछा।

"क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि तुम मुझसे कितना प्रेम करते हो?"

कुछ देर सोचने के बाद मैंने उत्तर दिया, "नहीं!"

"तो फिर क्या तुम इस प्रेम के बारे में दूसरों को बताने की सोच सकते हो? और अगर तुम बताने का प्रयास भी करो, तो क्या तुम इसे पूरी सटीकता से व्यक्त कर पाओगे?"

यह सुनकर मैं ठिठक गया। मैंने इस पर गहराई से विचार किया और इसकी निरर्थकता को समझा। मुझे धीरे-धीरे यह एहसास हुआ कि सबसे अंतरंग अनुभवों का स्वभाव ही एकाकी होता है। इन्हें न तो पूरी तरह व्यक्त किया जा सकता है, न ही साझा किया जा सकता है। अनुभवों को बताकर जो आनंद साझा किया जाता है, वह पूर्ण चंद्रमा की तुलना में चंद्रमा के परावर्तित प्रकाश जैसा होता है।

सभी विवरणों में रंग की मिलावट होती है। वे झूठ भी हैं और फिर भी झूठ नहीं हैं। प्रयत्न वास्तविक और सच्चा होने के कारण उसके प्रभाव को ईमानदार माना जाता है। कला, साहित्य, और सभी प्रकार की अभिव्यक्तियाँ अनंत सत्य का सीमित रूप में ही प्रकटीकरण कर सकती हैं। सत्य को व्यक्त नहीं किया जा सकता। वास्तविकता मौन है। अनुभव पूरी तरह व्यक्तिगत होता है।

## अनुभव एकाकी है

वह मुझे ध्यानपूर्वक देख रही थीं। फिर उन्होंने धीरे-धीरे कहा, "बेटे, अनुभव की दुनिया में कभी दो नहीं होते। अनुभव हमेशा अविभाज्य होता है। दो लोग किसी अनुभव में भाग ले सकते हैं, लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं होती कि उन दोनों के लिए उस अनुभव का प्रभाव एक जैसा होगा। अनुभव हमेशा व्यक्तिगत होता है।

सुख बाँटना हमेशा एक व्यर्थ प्रयास है। असली आनंद तो स्वयं में ही प्रकट होता है। सच्चे मित्रों को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं होती। मित्रता इंसान को पारदर्शी बना देती है। एक मित्र दूसरे मित्र के आनंद को वैसे ही देख लेता है, जैसे बादलों के पीछे से चमकती हुई धूप को देखा जा सकता है।

मनुष्य का संसार के साथ सबसे अच्छा संबंध तभी होता है, जब उससे उस आनंद के बारे में कुछ कहने को न कहा जाए; और इससे भी अधिक तब, जब यह समझ लिया जाए कि व्यक्तिगत अनुभूति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

ज़रा शिशुओं को देखो, उन निःशब्द शिशुओं को। वे अपनी आभा से बात करते हैं; और माँ उन्हें समझ लेती है। हम भी उस महान माता की नज़र में वैसे ही छोटे बच्चों की तरह हैं। और केवल वही समझती है कि हम भूखे हैं या तृप्त। कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती। केवल संवाद करना होता है। मौन संवाद प्रेम का परम आनंद है।

अनकहा हमेशा कही गई बात से अधिक मधुर होता है; और निश्चित रूप से अधिक सटीक भी। इसी कारण मंत्र जाप में मौन का पालन आवश्यक है। यहाँ तक कि जीभ को भी हिलना नहीं चाहिए। वास्तव में जीभ को टॉन्सिल के बीच वाले क्षेत्र से सटा लेना चाहिए।

प्रेम अंधा भी होता है और जीभ से गूंगा भी। महसूस करो और अनुभव करो।"

मैंने पूछा, "प्रेम को व्यक्त करना भी तो अच्छा लगता है। उसे प्रदर्शित करना। क्या ऐसा नहीं है?"

उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "प्रदर्शनीय प्रेम? वह बहुत सतही होता है। दिखावटी और परंपरागत। ऐसे प्रेम से बचना ही बेहतर है।"

## क्यों हैं अनुष्ठान की आवश्यकता?

"तो फिर ये सारे अनुष्ठान क्यों? ये सारे फूल, मालाएँ, घंटियाँ और मंत्रों का गान क्यों? क्या महान माता बधिर हैं? क्या वे इतनी कमजोर हैं कि उन्हें चापलूसी भरी प्रशंसा की आवश्यकता हो?"

"मनुष्य अक्सर इन प्रदर्शनों का उपयोग अपनी स्वयं की भलाई के लिए करता है, न कि उस देवी या देवता के लाभ के लिए जिसे वह पूजता है। ऐसे प्रदर्शनात्मक अभ्यास प्रयासों में सहायक होते हैं, जैसे लाठी बूढ़े और अपंग व्यक्ति के लिए सहायक होती है। इन्हें आवश्यक साधन समझो; लक्ष्य की प्राप्ति के उपकरण समझो। लेकिन इन साधनों को ही सब कुछ मानकर, उद्देश्य और लक्ष्य को भूल मत जाओ। जब कोई सबसे कम शब्दों में सबसे अधिक कहना चाहता है, तो वह काव्यात्मक अभिव्यक्ति का सहारा लेता है। भजन और मंत्र सबसे कम में सबसे अधिक कहते हैं। केवल लेखक और कवि ही यह समझते हैं कि सब कुछ कहने के बाद भी बहुत कुछ अनकहा रह जाता है। कभी भी कोई पूर्ण कवि नहीं हुआ है। साहित्य तो एक मृत शिशु की तरह है।"

मैं भी कभी-कभी कविता और कहानियाँ लिखने का प्रयास करता था। उनकी बातों को सुनते हुए मेरी आँखें विस्मय से चौड़ी हो गईं। मेरे मन में तर्क करने और उत्तर देने की तीव्र इच्छा उमड़ रही थी, जैसे अचानक खुली खिड़की से बंद कमरे में धूप का सैलाब उमड़ पड़े।

लेकिन वह बोलती रहीं, "हम माता की स्तुति जोर से गाते हैं। यह सत्य है। हम उन्हें पत्तों और फूलों, अग्नि और जल के माध्यम से सम्मान अर्पित करते हैं। यह भी सत्य है। ये वे विधियाँ हैं जिनके माध्यम से हम उन चीजों को मूल्य और अर्थ देने का प्रयास करते हैं, जिन्हें हम स्वयं मूल्यवान और अर्थपूर्ण मानते हैं। हम कभी भी सम्मान अर्पित नहीं करते, यदि हम स्वयं इसकी अपेक्षा न रखते हों।

राजनीतिक नेताओं से पूछो, वे भी मालाएँ स्वीकार करते हैं। जन्मदिन मनाने वालों से पूछो, क्रिसमस और वैलेंटाइन जैसे अवसरों को मनाने वालों से पूछो। मनुष्य इन प्रस्तुतियों में महिमा और प्रेम खोजता है और सोचता है कि वह अपने देवताओं को भी इसी तरह प्रसन्न कर सकता है।

ये पूरी तरह से सतही नहीं हैं। जैसा मैंने कहा, ये सहायक के रूप में आवश्यक हैं। संगीत, शब्दों, फूलों, दीपों, मोमबत्तियों, जल, कार्ड, भोजन और यहाँ तक कि धन के माध्यम से अर्पित किए गए ये उपहार मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत उपयोगी होते हैं। ये सतही उपयोग नहीं हैं; ये वास्तविक हैं; लगभग चिकित्सकीय और उपचारात्मक हैं।

इन उपहारों के माध्यम से व्यक्त की गई भावनाएँ अक्सर मन के उलझे हुए जटिलताओं को सुलझा देती हैं और अशांत मन को शांति का आशीर्वाद प्रदान करती हैं। ये अपंग के सहारे की तरह सहारा प्रदान करती हैं, जैसे मायोपिक (कमज़ोर दृष्टि वाले) व्यक्ति के लिए चश्मा सहायक होता है। नहीं, अनुष्ठान बहुत उपयोगी हैं। जिन्होंने इन्हें आविष्कृत किया, वे पृथ्वी के सबसे बुद्धिमान लोग थे।

कभी भी अनुष्ठानों को कम मत आँको; लेकिन यह भी ध्यान में रखो कि उन्हें अत्यधिक महत्व भी मत दो।"

## यौन संबंध एक त्याग है

"तो क्या वस्त्र पहनना भी एक परंपरा है और वस्त्र उतारना एक अनुष्ठान?"

"नहीं। उससे भी अधिक। वस्त्र पहनना या उतारना नहीं, बल्कि स्वयं यौन संबंध।
यह समझना आवश्यक है कि संभोग, भूख और लालच की शक्तियाँ भी माता से आती हैं और ये एक उद्देश्य की ओर प्रेरित करती हैं। लेकिन यह तभी सही मायनों में समझी जाती हैं जब इन्हें पूरी तरह से समझा जाए; जब गलत समझा जाता है, तो यह प्रेरणा भोग में बदल जाती है और गंभीर संकट का स्रोत बन जाती है। हमने पहले ही इस पहलू पर चर्चा की है।

"क्रोध का उपहार एक महान उपहार है; लालच का उपहार सर्वोच्च उपहार है; और यौन संबंध का उपहार सबसे महत्वपूर्ण उपहार है। यौन संबंध का सही ढंग से उपयोग करते समय नग्नता अनिवार्य है। मुझे इसे समझाने दो।

"तुम जल और फूल अर्पित करते हो; मिठाई और अन्य भोजन भी अर्पित करते हो। और फिर तुम उसी फूल, माला, भोजन, पेय को ग्रहण करते हो। तुम मानते हो कि ये प्रसाद पवित्र हो गए हैं। ईसाई धर्म में भी वे रोटी और शराब का उपहार चढ़ाते हैं और फिर उस उपहार को ग्रहण करते हैं। इस प्रकार हम उन वस्तुओं के प्रति सम्मान का भाव विकसित करते हैं, जिन्हें हम शारीरिक रूप से आवश्यक मानते हैं और मानसिक रूप से चाहत रखते हैं। यह हमारे इंद्रिय भोग पर एक प्रकार का संयम स्थापित करता है, जो सम्मान और श्रद्धा के माध्यम से आता है।

"जब हम अपने यौन संबंध को अनुष्ठानिक रूप से ईश्वर को अर्पित करते हैं, संभोग को एक दिव्य उपहार मानते हैं, और फिर इसमें भाग लेते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हमारे संभोग के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है। संभोग पर नियंत्रण

सबसे कठिन नियंत्रणों में से एक है। जितना अधिक कोई इस नियंत्रण को बनाए रखता है, उतनी ही अधिक उसकी इच्छाशक्ति संचित होती जाती है।

"ये त्वचा से त्वचा का आसन सभी यौन क्षेत्रों को एक साथ जोड़ देता है; एक गहन सहभागिता की स्थिति विकसित होती है। तब यह महान अर्पण एक परमानंदपूर्ण आनंद की ओर ले जाता है। इसके बाद, संभोग के प्रति और सामान्य रूप से स्त्री के प्रति दृष्टिकोण इतना परिष्कृत हो जाता है कि इस शक्ति का उपयोग करते समय हम दिव्यता से प्रेरित होते हैं। फिर शक्ति संरक्षित रहती है। शक्ति को व्यर्थ न जाने दो। बीज को नष्ट न करो। यही तंत्र है।

"जिन्होंने इन अनुष्ठानों को निर्धारित किया, वे भली-भाँति जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं। बारूद का आविष्कार मनोरंजन के लिए हुआ था। डायनामाइट को मानवीय सेवा के लिए शक्ति के उपयोग के लिए खोजा गया था। भविष्य में और भी अधिक शक्तिशाली स्रोत खोजे जाएंगे। यदि इनका उपयोग या दुरुपयोग विनाश और बर्बादी के लिए किया गया तो क्या तुम इसे दुर्व्यवहार, बर्बरता या असभ्यता नहीं कहोगे? संभोगभी शक्ति का एक स्रोत है। इस शक्ति का बहुत ही कम भाग प्रजनन के लिए आवश्यक है। लेकिन इसका अधिकांश भाग व्यर्थ चला जाता है। यदि इसे भली-भाँति संरक्षित किया जाए, तो यह शक्ति आसानी से मनुष्य को उसकी अंतिम मंजिल तक पहुँचा सकती है—शांति की प्राप्ति (ताकि अन्य लोग भी शांति से जी सकें); यह मनुष्य को उच्चतम आध्यात्मिक शिखरों तक सहजता से पहुँचा सकती है। उसके कर्म प्रेरणादायक होंगे; उसके शब्द प्रभावशाली होंगे; उसकी इच्छाशक्ति गतिशील होगी; उसका प्रेम प्रभावकारी होगा।

"लेकिन सबसे अद्भुत बात यह है कि आसन में हो या उसके बाहर, स्त्री के साथ हो या बिना उसके, संभोग, लालच, धन और अन्य अहंकारी आकर्षणों के बीच भी, अंततः मनुष्य एकांत चाहता है। वह एकांत में रहना चाहता है, अकेला। अपने स्वयं के आत्म के साथ। यही कारण है कि हम सोते हैं। प्रकृति ने जीवन को अकेले रहने के लिए नींद का उपहार दिया है। इस एकांत के बिना मनुष्य टूटकर बिखर जाएगा। जो लोग नींद में भी अकेले नहीं होते, वे भयावह सपनों से ग्रस्त रहते हैं। वे नर्क में जीते हैं। वे इस पृथ्वी के शापित हैं।"

## तंत्र में गोपनीयता

"तुम्हारी अंतरंग साधना के बारे में लोग क्या कहते हैं, इसकी चिंता मत करो। जब तुम मेरे साथ अकेले होते हो, तब ये बात करने वाले, तुम्हारे आचरण को टटोलने वाले लोग कहाँ गायब हो जाते हैं? क्या वे तब तुम्हें परेशान करते हैं, मेरे बच्चे? साधना के समय?"

"जब दुनिया सोती है, तब तारे जागते हैं। जब तारे सो जाते हैं, तब दुनिया जागती है। यही कारण है कि रात की नीरवता दिन के कोलाहल से अधिक गहन प्रतीत होती है। लोग संन्यासियों और योगियों को, यहाँ तक कि मुझे भी, दुनिया से असंबद्ध मानते हैं। फिर भी, ये लोग जीवन और उससे परे के बारे में सबसे अधिक चिंतित रहते हैं। योगी वही होता है जो चिंतित होने के बावजूद इसे प्रकट नहीं करता। वह अंधकारमय निस्तब्ध रात की भाँति मौन रहकर सोई हुई दुनिया की रक्षा करता है। वह मौन है। मौन भी अत्यंत मुखर हो सकता है, मेरे बेटे, जैसे भीड़ भी अत्यंत अकेली हो सकती है।"

मुझे याद आया कि पड़ोस वाले हमेशा भगवा वस्त्रों वाली उस महिला के मौन और उसकी सतर्कता पर आश्चर्य करते थे।

अचानक, मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई कि मैंने उनसे इतनी बातें करवा लीं, और वह भी इतनी लंबी-चौड़ी। मैंने उनसे मौन, रहस्य और छिपाने के बारे में एक ऐसा प्रश्न पूछ लिया था, जो अब मुझे मूर्खतापूर्ण लग रहा था। हम हमेशा अपने आप को समझाने के लिए भीतर ही भीतर संघर्ष क्यों करते रहते हैं?

लेकिन कुछ और भी था जो मुझे परेशान कर रहा था।
वह मेरे मन की अशांति को भाँप गईं।

"अब मत रुको, मेरे बेटे," उन्होंने कहा। "मैं तुम्हें अब और गहरे सागर की ओर ले जाने वाली हूँ। पूछो, अब क्या जानना है? जब हम तंत्र में अत्यधिक गोपनीयता की माँग करते हैं, तो हमारा मतलब अपराधियों जैसे रहस्य से नहीं होता। वैसी गोपनीयता तो आत्मा को संकुचित कर देती है; मन को अंधकार में धकेल देती है। लेकिन एक और तरह की गोपनीयता भी होती है। यह गर्भ की गोपनीयता है, जहाँ गहरे आवरणों के नीचे, बिना किसी देखभाल के, प्रेम का फल बढ़ता है। जब पूर्णता का समय आता है, तब वह प्रकाश और जीवन में प्रकट होता है। कुछ रहस्य पूर्णता में प्रकट होने के लिए सँजोए जाते हैं; कुछ केवल अंधकार के लिए ही बनाए जाते हैं।

"चारों ओर देखो, और प्रकृति को देखो। पृथ्वी के नीचे, मिट्टी में, हवा, प्रकाश और पानी के साथ मिलकर, वर्षो और वर्षों तक, यहाँ तक कि समय की अनगिनत परतों के भीतर, पूर्ण मौन में, एक फूल को खिलाने और एक फल को जन्म देने की तैयारी होती रहती है। हम जानते हैं कि फूल से फल आता है। लेकिन क्या हम जानते हैं कि बीज कहाँ से आया? फूल कैसे खिला? एक चावल के दाने या बरगद के वृक्ष के बनने से पहले कितने रूपांतरण हुए? यह भी एक प्रकार का रहस्य है। तारे के जन्म में और भी गहरे रहस्य समाए होते हैं।

"चमकीला फूल अपने सौंदर्य और सुगंध के लिए हमें लुभाता है; रसीला फल अपने रस और जीवनदायिनी शक्तियों के लिए हमें आकर्षित करता है। हम उन्हें पाने के लिए हाथ बढ़ाते हैं। लेकिन देखो उस बीज को। वह मौन, नगण्य और लगभग अदृश्य होता है। कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि जैसे अलादीन की छोटी सी बोतल से एक विशाल जिन्न निकल आता है, वैसे ही उस छोटे से बीज से अनगिनत पीढ़ियों तक आम के वृक्ष और फल उत्पन्न होते रहेंगे। विशाल बरगद के बीज को देख पाना भी कठिन है। जीवन मौन के इस अदृश्य आवरण में छिपा होता है। मंत्र का जीवन एक 'बीज' ध्वनि में समाहित होता है। उसे अंकुरित करो; उससे शक्ति का स्रोत फूट पड़ेगा। जीवन का स्रोत कौन जानता है?

"मौन एक महान गुण है। तंत्र 'बीज ध्वनि' (बीज मंत्र) की शक्ति में विश्वास करता है। इसके सभी मंत्र बीज ध्वनियों के रूप में जाने जाते हैं। इन छोटे-छोटे शब्दांशों में महान आध्यात्मिक संभावनाएँ समाई होती हैं। तंत्र में मौन धारण करने के गुण को अत्यधिक महत्व दिया गया है।

"जो झूठा होता है, वह ढोल पीटता है, बहुत शोर मचाता है, और भीड़ को आकर्षित करता है। अक्सर चमत्कार दिखाने वालों के इर्द-गिर्द भीड़ इकट्ठा होती है, और वे शोरगुल करते हैं। उनके लिए शोर पैसा है। लेकिन दूसरों के लिए मौन एक आशीर्वाद है; सच्ची संपत्ति का स्रोत। शेर शिकार करते समय पूरी निस्तब्धता में होता है, लेकिन गीदड़, जो बचा-खुचा खाता है, बहुत शोर मचाता है; और गिद्ध उस शिकार को पाने के लिए पूरे जंगल को आकर्षित कर लेते हैं, जो मौन में मारा गया था।

"तंत्र ऐसे संकटों के प्रति चेतावनी देता है। 'गोपनीयता बनाए रखनी चाहिए,' तंत्र कहता है, 'जैसे अपने शरीर के गुप्त अंगों की रक्षा की जाती है।'"

यही वह बात थी जिसने मेरे भीतर जिज्ञासा और चिंता उत्पन्न की थी। वह मेरे मन की बेचैनी को भाँप गईं और मुस्कुराते हुए बोलीं:

"तुम्हें इसमें विरोधाभास दिखाई देता है। यौन अंगों को छिपाने का कारण यह नहीं है कि उनमें कोई रहस्य है। दूध में कोई रहस्य नहीं है, लेकिन हम उसे बिल्ली से बचाकर रखते हैं। भोजन में कोई रहस्य नहीं है, लेकिन हम उसे मक्खियों और कीटाणुओं से बचाकर रखते हैं। तो फिर, जब आध्यात्मिक साधना में गोपनीयता की आवश्यकता होती है, तो इसे शरीर की नग्नता के साथ क्यों जोड़ते हो?

"जो लोग शरीर को प्रदर्शन की वस्तु बनाते हैं, प्रशंसा पाने के लिए, वे दर्शकों को फँसाते हैं। किसी भी क्रिया को विकृत बनाता है तो वह है उसके पीछे की मंशा। अपने आप में कोई क्रिया विकृत नहीं होती।"

## अंतर का प्रकाश

"मेरा बेटा, मनोविकार समस्याओं से उत्पन्न होते हैं। समस्याएँ गलतफहमी और परिस्थितियों को गलत तरीके से संभालने का परिणाम हैं। अक्सर हम इन परिस्थितियों से बचने के लिए बाहरी आवरण को साफ़-सुथरा बनाए रखते हैं, जबकि गंदगी को सुंदर कालीन के नीचे छिपा देते हैं। लेकिन वह गंदगी हवा को दूषित करती है और पवित्रता में बाधा डालती है। इस प्रकार एक मनोविकार पनपता है, जो मानसिक स्वास्थ्य को बाधित करता है और स्वर्गीय प्रकाश को रोकता है। यह 'स्वर्गीय प्रकाश' कोई दंतकथा नहीं है। स्वर्ग हो सकता है एक कल्पना हो, परंतु यह प्रकाश वास्तविकता है। यह प्रकाश तुम्हारे भीतर है। इसे बुद्धि कहो, इसे प्रज्ञा कहो। इसके बिना जीवन मूक और अचेतन हो जाएगा।

"यह प्रकाश तुम्हारे भीतर है। यह प्रकाश तुम्हारे बाहर है। इसी प्रकाश के माध्यम से तुम अपनी सीमाओं से परे जुड़ते हो। भीतर का प्रकाश तुम्हें प्रकाशित करता है; बाहर का प्रकाश तुम्हें आनंदित करता है। स्वर्गों में और उसके परे, इस धरती पर और इन दोनों के बीच जो भी है, उस सब में यह दिव्य ज्योति और प्रकाश व्याप्त है। जीवन ही यह प्रकाश है। यह प्रकाश तुम्हारे चिंतन को बुद्धि के रूप में प्रकाशित करता है; तुम्हारी आँखों में यह दृष्टि बनता है; तुम्हारे कानों में यह ध्वनि बनता है (प्रकाश ध्वनि है और ध्वनि प्रकाश है); तुम्हारी त्वचा पर यह स्पर्श और अनुग्रह बनता है। यह प्रकाश तुम्हारी कामनाओं के माध्यम से आशीर्वाद बनकर आता है; यह तुम्हारी मुस्कान और लोकप्रियता में आनंद बनकर अवतरित होता है।

"समझ इस प्रकाश से प्रकाशित होती है; मन और आत्मा के अंधकार को यह प्रकाश दूर करता है। कोई भी रहस्य इस प्रकाश के सामने नहीं टिक सकता। इसकी अनुपस्थिति में मनुष्य के भीतर के पशु-भाव जागृत होते हैं, और जीवन को इन पशुओं के प्रकोप से बचाना आवश्यक है। भगवान स्वयं ज्योति, गो, भर्ग हैं – प्रकाश।

"इस 'स्वर्गीय प्रकाश' के और प्रमाण के लिए, स्पष्ट सोचने की क्षमता के गूढ़ स्रोतों पर विचार करना आवश्यक है। मन की स्पष्ट, प्रत्यक्ष और प्रकट होने वाली प्रतिक्रियाओं को 'प्रकाश में आना' कहा जाता है। प्रकाश (ज्योति) का एक नाम 'प्रकाशन' (प्रकाश) भी है। जीवताम् ज्योतिः (प्रकाश बना रहे) – यही जीवन का सार है।"

## पीड़ा

"जो मन बिना दर्द या भय, विशेषकर बिना भय के कार्य करता है, वह स्वयं को किसी भी प्रकार की पीड़ा या कष्ट नहीं पहुँचाता। पीड़ा और कष्ट मन की प्रतिक्रियाएँ हैं। यहाँ तक कि शारीरिक पीड़ा भी एक अनुभूति है, और अनुभूति ही मन की पहचान है। शारीरिक पीड़ा मांसपेशियों की संवेदनशीलता और नसों की असहिष्णुता का परिणाम है। यह मन की उस असमर्थता का प्रतीक है जो असहनीय को सहन नहीं कर पाता। आंतरिक अनुशासन के द्वारा भावनात्मक पीड़ा को निष्प्रभावी किया जा सकता है। अनुशासित मन सभी परिवर्तनों को आकस्मिक और अस्थायी मानता है। संतुलित मन डगमगाता नहीं है और पीड़ा का अनुभव नहीं करता।

"तुम्हारे सुरेंद्रदा अपने भूमिगत क्रांतिकारी क्लब में सदस्यों को प्रवेश देने के लिए उन्हें तीव्र और कठोर यातनाओं के खिलाफ शारीरिक परीक्षा से गुजरने को कहते हैं। वह लड़कों और लड़कियों को मोमबत्ती की लौ पर तब तक उँगलियाँ रखने को कहते हैं, जब तक कि त्वचा जलकर छिलने न लगे। वह मांस में तेज़ चाकू की धारें चुभाते हैं और नाखूनों की जड़ों में सुइयाँ घुसाकर मूक सहनशीलता की परीक्षा लेते हैं। यह क्लब में प्रवेश पाने का पासपोर्ट है। वे इस पीड़ा को कैसे सह पाते हैं, और क्यों? अगर एक इसे सह सकता है, तो निश्चित रूप से दूसरा भी सह सकता है, या सहना चाहिए। यह उद्देश्य की दृढ़ता है जो नसों को सहनशीलता में दृढ़ बनाती है। उचित प्रशिक्षण, समझ और सूक्ष्म विश्लेषण के द्वारा पीड़ा के कारण को, और यहाँ तक कि स्वयं कष्ट को भी नकारा जा सकता है। कष्ट मत सहो।"

## योग के माध्यम से मन पर नियंत्रण

"ज्ञान, समझ, विश्लेषण और प्रशिक्षण योग में निर्धारित चरण हैं। अनुशासन, नियम, आसन, नियंत्रण, अ-नियंत्रण, स्पष्ट अवधारणा, और संकल्पित आदर्श का आत्मसात करना क्रमिक रूप से मन को निराकार एकाग्रता की ऊँचाइयों तक ले जाते हैं।

"मानसिक एकाग्रता सबसे पहले मन को स्वतंत्र करती है। इसके बाद उस स्थान को शुद्ध चेतना ले लेती है। तब 'शक्ति का स्रोत' मुक्त होता है। शक्ति मानव जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है। इसके बिना मनुष्य केवल एक महिमामंडित प्राणी, एक जैविक तथ्य, या एक मानसिक अराजकता मात्र होता। शक्ति का यह स्रोत खोजना आवश्यक है। यह तुम्हारे भीतर है। प्रेम भी तुम्हारे भीतर है; ऐसा प्रेम जो उलझता नहीं, बल्कि समर्पित होता है।

"एक बार जब मन शर्तबद्ध अपेक्षाओं, पूर्वाग्रहपूर्ण निष्कर्षों, अर्थात् गहराई से जड़ जमाए अंधविश्वासों से मुक्त हो जाता है, तो वह एक आत्मनिष्ठ कार्य के रूप में कार्य करने में सक्षम हो जाता है। विचार करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे मन से बाध्य होने की आवश्यकता नहीं है। तुम यह जानते हो कि मन विचार नहीं करता। यह एक भ्रांति है कि मन याद करता है, संजोता है या भूलता है। ये कार्य स्मृति के हैं। मन केवल झूठे प्रभावों को वहन करता है और ऐसा करके स्पष्ट सोच को निरंतर भ्रम की स्थिति में रखता है। सभी मानसिक अवस्थाएँ जटिल होती हैं; क्योंकि मन व्यक्तित्व की शर्तबद्ध अवस्था है। केवल चेतना ही शुद्ध है।"

## चिंतन की स्पष्टता

"... लेकिन तुम सोच रहे हो... अच्छा, मुझे आश्चर्य नहीं हो रहा। क्या तुम समझ पा रहे हो?"

वास्तव में, यह मेरी समझ से कुछ ऊपर जा रहा था। गति इतनी तेज़ थी कि मैं इसे पूरी तरह से पकड़ नहीं पा रहा था। मैं लगभग हार मानने की स्थिति में था। मुझे वह स्थिति बिलकुल पसंद नहीं थी जब वह समझा रही होतीं और मैं समझने के लिए जूझ रहा होता। तर्कसंगत चर्चाओं का पालन करना मेरे लिए स्वाभाविक था। शास्त्रीय संस्कृत विद्यालय में जन्म लेने और उस वातावरण में पले-बढ़े होने के कारण मैंने गूढ़ तर्क-वितर्कों को समझने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। हमारा विद्यालय वाराणसी में प्रसिद्ध तर्कशास्त्रियों और व्याकरणाचार्यों का एक आम मिलन-स्थल था।

लेकिन जैसे ही उन्होंने अचानक रुककर सवाल किया, मुझे एक प्रकार की राहत महसूस हुई, और मैंने लगभग चिल्लाते हुए कहा, "नहीं! मैं नहीं समझ पा रहा।"

"हां, तुम समझ रहे हो!" उन्होंने ज़ोर देकर कहा; और साथ ही मेरा हाथ पकड़कर धीरे से खींचा। उनकी दाहिनी हथेली मेरी आँखों पर थी, जिन्हें मैंने बंद कर लिया। उन्होंने कुछ देर के लिए अपनी हथेली को मेरी आँखों पर रखा और दोहराया, "हाँ, तुम समझ रहे हो, समझ रहे हो...."

क्षणभर में ही मेरा मानसिक तनाव समाप्त हो गया। वह पहले की तरह समझाती रहीं, "तुम अपना गणित करते हो, है न? तब तुम परिणाम तक पहुँचने के लिए चरणबद्ध रूप से सोचते हो। इसी तरह तुम ज्यामिति करते हो, है ना? फिर से, तुम चरणबद्ध रूप से सोचते हो जब तक कि समस्या हल नहीं हो जाती। जब तुमसे किसी शब्द की मूल धातु से व्युत्पत्ति करने या कोई वाक्य बनाने को कहा जाता है, तब भी तुम्हें व्याकरण के नियमों का पालन करते हुए सोचना पड़ता है। इस प्रकार के चिंतन को स्पष्ट चिंतन या निष्पक्ष चिंतन कहते हैं। यह वस्तुनिष्ठ (ऑब्जेक्टिव) चिंतन है।

"लेकिन जब वही मस्तिष्क यह सोचने में लगा होता है कि भोजन और आश्रय कैसे मिलेगा, सजा से कैसे बचा जाए, या झूठ कैसे गढ़ा जाए, तब यह स्पष्ट चिंतन में संलग्न नहीं होता। दूसरी प्रकार की यह सोच आत्म-हित से जुड़ी होती है, और इसलिए इसमें पूर्वाग्रह होता है। यह ऐसे होता है मानो यह पूर्वनिर्धारित निष्कर्षों और इच्छाओं के बोझ तले दबा हो। इच्छा स्वतंत्र इच्छा-शक्ति को बंधन में जकड़ देती है। सोचने वाला अपनी इच्छा को अपनी सोच के माध्यम से प्रकट करता है। वह अपनी ही छाया के नीचे चल रहा होता है। विचारक के निष्कर्ष उसकी सोच से पहले ही आकार लेने लगते हैं। विचारक स्वयं, न कि समस्या, केंद्रीय और प्रमुख बन जाता है। विचारक भावनात्मक रूप से इसमें उलझ जाता है। यह स्थिति स्वतंत्र चिंतन के मार्ग में गंभीर रूप से बाधा उत्पन्न करती है।

"योगिक एकाग्रता का उद्देश्य मन की स्वतंत्रता प्राप्त करना है; या यदि तुम्हें यह बेहतर लगे, तो इसे मन की दुनिया से मुक्ति प्राप्त करना कह सकते हो। जब इस प्रकार की सोच की प्रक्रिया स्वतंत्र हो जाती है, तभी और केवल तभी, कोई यह समझ पाता है कि वह वास्तव में क्या है। जब कोई अपनी आत्मा को उसकी सम्पूर्ण महिमा में पहचान लेता है, तब वह 'मुक्त' कहलाने योग्य होता है, वह बुद्ध, वह परमहंस बन जाता है। अन्यथा, वह अपनी भावनाओं और व्यक्तित्व का बंधक बना रहता है।"

## परम शक्ति

"यह पुरुषार्थ का परम लक्ष्य है। इस शक्ति के स्रोत तक पहुँच कर उससे सीधे अमृतपान करना ही जीवन का उद्देश्य है। पुरुषार्थ का चरम यही है कि इस अंतिम स्रोत से सीधे पिया जाए; स्वर्गीय प्रकाश में स्नान किया जाए। मैं तुम्हें इसी के बारे में बता रहा हूँ। जो सही सोच की राह पर मन को साधने का अभ्यास रखते हैं, उनके लिए इसे समझना कठिन नहीं है। मुझे उम्मीद है, अब तुम इसे समझ रहे हो। इससे बचा नहीं जा सकता।"

"...और जब मुझे यह शक्ति मिल जाएगी, तब मैं इसका क्या करूँगा?"

"तुम्हें कुछ 'करने' की इतनी बेचैनी क्यों है? क्यों? क्या नदी कभी सोचती है, 'मुझे बहना क्यों है?' या आकाश सोचता है, 'मुझे बादलों को आश्रय क्यों देना है?' या बादल सोचता है, 'मुझे क्यों तैरना और विलीन होना है?' या वृक्ष सोचते हैं, 'हमें क्यों खड़ा रहना, बढ़ना और जीवन प्रदान करना है?' तुम कह सकते हो कि उनके पास मन नहीं है, वे प्रकृति का हिस्सा हैं और प्राकृतिक नियमों के अधीन कार्य करते हैं। कौन कहता है कि उनके पास मन नहीं है? क्या इसका कोई ठोस प्रमाण है? हमें यह कैसे पता? क्या हम भी उन्हीं प्राकृतिक नियमों के अधीन नहीं हैं? यदि प्राकृतिक नियम हमें 'कुछ करने' की सोच देते हैं, तो अन्य जीवनों, अन्य रूपों में भी सोचने की प्रक्रिया हो सकती है।

"तुम अपने मन के अस्तित्व को उसके द्वारा उत्पन्न विक्षोभों के कारण ही पहचानते हो। जिसे विक्षोभ नहीं होता, उसे मन का अनुभव नहीं होता। यह काँच के दरवाज़े की तरह है। क्योंकि वह पारदर्शी है, क्योंकि उसकी शुद्धता में कोई विरोधी तत्व नहीं है, इसलिए तुम्हें यह एहसास नहीं होता कि वहाँ दरवाज़ा है। और जब तुम बेफिक्री में उसके पार जाने की कोशिश करते हो, तो वह तुम्हें रोकता है; तुम उससे टकरा जाते हो; और चिढ़ जाते हो, जैसे दुर्योधन हुआ था। जो सोचे बिना ही बहुत कुछ मान लेता है, वह अवरोधों को सहन नहीं कर पाता।

"वह जो स्वयं में है, और केवल स्वयं में है, उसे किसी भी प्रकार के अवरोधों से मुक्त होना चाहिए; इसलिए स्वाभाविक रूप से, उसे समझ में पारदर्शी होना चाहिए। वह क्या है जिसे हम पूर्णतः पारदर्शी कह सकते हैं? वह है चेतना। क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि प्रकृति में चेतना नहीं है? क्या तुम्हें यकीन है?"

"प्रकृति में कोई कार्य 'क्यों' का इंतज़ार नहीं करता। 'क्यों' हमारे लिए हैं, मनुष्यों के लिए, जो तर्क करने को अभिशप्त हैं। प्रकृति 'है'; उसमें 'क्यों' बहुत कम होता है। वह पूरी स्वतंत्रता और खुले चयन के साथ सृजन करती है। प्रकृति में हर चीज़ एक उद्देश्य को पूरा करती है और समग्रता में एक निश्चित भूमिका निभाती है। ब्रह्मांड, अपनी बहुलता के बावजूद, एक इकाई के रूप में जुड़ा हुआ है; और इस सजीव इकाई का प्रत्येक भाग एक निश्चित उद्देश्य को एक सुव्यवस्थित रूपरेखा में पूरा करता है। प्रकृति अपने स्वयं के स्वरूप को निर्धारित करती है।

"यदि ऐसा है, तो मनुष्य के जीवन का भी एक उद्देश्य होना चाहिए; और यदि कोई उद्देश्य है, तो मनुष्य को उसे पूरा करना चाहिए। यदि मनुष्य ऐसा नहीं करता, तो असंतुलन उत्पन्न होगा। प्रकृति में असंतुलन आपदा लाता है। मानव दुनिया ने अपने ऊपर एक के बाद एक आपदाएँ लाई हैं। यह प्रक्रिया जारी है और तब तक जारी रहेगी जब तक मनुष्य अपने मन को अंतिम शक्ति मानकर उसे अंतिम न्यायाधीश मानता रहेगा। यह कभी व्यक्तिगत रूप से, कभी सामूहिक रूप से आपदा लाता है। लेकिन इसकी जड़ में हमेशा कोई न कोई व्यक्तिगत मन होता है। ऐसा मन स्वार्थी होता है, जो पूर्वनिर्धारित निष्कर्षों के पीछे भागता है।"

"तुम अभी तक इसे पूरी तरह समझ नहीं पाए हो। हम जानते हैं कि रावण एक ऐसा व्यक्ति था जिसने असंतुलन पैदा किया और उसके परिणामस्वरूप आपदा आई। यह सत्य है। लेकिन दशरथ ने भी एक असंतुलित मन से कार्य किया था। आपदा उसी कार्य से प्रारंभ हुई थी। उसने एक युवा कन्या को प्रसन्न करने के लिए प्रतिज्ञाएँ कीं। यहाँ तक कि सीता भी उस समय मानसिक असंतुलन का शिकार हुईं, जब उन्होंने स्वर्ण मृग की मांग की थी। राम जानते थे कि वह मृग एक छलावा था, मानसिक जाल था। उन्होंने सीता को समझाने की कोशिश भी की थी। लेकिन सीता एक स्त्री के मोह में बंधी थीं और उन्होंने हठपूर्वक आग्रह किया। इस व्यक्तिगत असंतुलन ने अंततः मानव सेनाओं को रक्तपात में झोंक दिया, जिसे टाला जा सकता था।"

"मानव जाति ने कभी भी युद्धों के बिना एक वर्ष नहीं देखा, और यह तब तक जारी रहेगा जब तक कि मनुष्य की सोच स्पष्ट नहीं हो जाती, यानी जब तक वह निष्पक्ष प्रेरणा से संचालित नहीं होती। मनुष्य को निःस्वार्थ भाव से भले की सोचने का अभ्यास करना चाहिए। जो लाभ शाश्वतता की मुहर नहीं रखता, वह बुरा है।"

"सत्य की खोज की यह प्रक्रिया ही तंत्र है। यह पारंपरिक मार्ग है, जो ज्ञानियों से ज्ञानियों तक निरंतर धारा की तरह प्रवाहित हो रहा है। इसे चाहे हिंदू, आर्य, शैव, वैष्णव, ईसाई, बौद्ध, इस्लामिक, यहूदी, सम्मन, वाम, अघोर, वज्रयान, ज़ेन, ताओ या कोई भी नाम दो; यह तंत्र है। सभी मार्ग तंत्र के मार्ग हैं। ये ऐतिहासिक या स्थानीय नाम इस खोज के मूल तत्वों को प्रभावित नहीं करते। यह खोज कुंडलिनी की शक्ति और सहस्रार के शांति स्रोत की है। तंत्र नाम का अर्थ ही है 'पद्धति', 'पारंपरिक मार्ग', 'निरंतरता की धारा' और 'सूत्र'।"

## प्रेम तर्क नहीं करता

"अब शायद तुम समझ पाओगे कि मनुष्य के लिए इस शक्ति को विकसित करना क्यों आवश्यक है; और इस शक्ति की प्राप्ति किस प्रकार मार्गदर्शन, विशेष विधियों और विशिष्ट यंत्रणाओं पर निर्भर करती है। हमने उस पद्धति को, उस विश्वास को और धैर्य के नियंत्रण व मार्गदर्शन के प्रति सम्मान को खो दिया है। इस युग में हम केवल प्रश्न पूछने, तर्क करने और 'क्यों? क्यों? और क्यों?' में ही लगे हुए हैं। मानो मनुष्य की परम शांति तर्क-वितर्क के उत्तरों से प्राप्त हो जाएगी। मानो तर्क-वितर्क से मनुष्य और मनुष्य के बीच प्रेम स्थापित हो जाएगा। अजीब बात है, प्रेम तर्क से मुक्त होकर कार्य करता है।

"तर्क के उत्तरों की खोज ने उस पौराणिक युगल को उनकी सुंदर और सुरक्षित निवास-भूमि से स्थायी रूप से बाहर निकाल दिया, और उन्हें भगवान की अपनी सुरक्षा से वंचित कर दिया। उन्हें उस सुरक्षा से इसलिए वंचित होना पड़ा क्योंकि ईश्वर-विरोधी ने उन्हें सिखाया था कि जिज्ञासा और तर्क-वितर्क के माध्यम से शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है। केवल तभी, जब वे दोनों स्वर्ग से वंचित हो गए, उन्हें यह एहसास हुआ कि उन्हें धोखा दिया गया था।

"वास्तविकता यह थी कि वे स्वाभाविक रूप से परिपक्व व्यक्तियों की तरह प्रेम करते थे। उन्होंने प्रेम करके कोई पाप नहीं किया था। पाप यह था कि उन्होंने निर्दोषता से प्रेम को प्रकट करना भूल गए; वे उसे प्रकट नहीं कर पाए; उन्होंने अपने सबसे प्यारे मित्र (ईश्वर) पर विश्वास नहीं किया।

"प्रेम आहत हुआ। छल से आहत हुआ। अन्यथा प्रेम कैसे गलत हो सकता था? हर जीवन में, उसकी परिपक्वता के समय, एक उद्देश्य पूरा करने का एक मिशन होता है। प्रेम इस मिशन को महानता प्रदान करता है। जो जीवन प्रेम में जन्म लेते हैं, उन्हें प्रेम करना आसान होता है। जो जीवन दबाव, विवशता, जल्दबाज़ी, घृणा या भय में जन्म लेते हैं, उन्हें प्रेम उत्पन्न करना कठिन होता है। दुनिया में प्रेम की इतनी कमी क्यों है? इसी कारण यह संसार इतना अशांत है। यह पीड़ा का स्थान बन गया है।

"प्रेम प्रेम को जन्म देता है। एक परिपक्व जीवन का मिशन जीवन को बढ़ाना है; लेकिन इसे योजना, तैयारी और प्रेम के साथ ही करना चाहिए। फूलों, फलों, जानवरों, पक्षियों के लिए मौसम निर्धारित हैं। केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो इन ऋतुओं का ध्यान नहीं रखता।

"प्रेम तब खिलता है जब ऋतुओं का सम्मान किया जाता है। प्रेम सबसे सुंदर पुष्प है और समझ की सुगंध फैलाने वाला सबसे शुद्ध माध्यम है।

"जीवन के प्रति जीवन का यह स्वाभाविक प्रेम, आनंद में अभिव्यक्ति की यह लालसा, एक विशेष नाम से जानी जाती है—'काम'। मैंने 'हलादिनी शक्ति' के बारे में पहले बताया था। यह काम-आनंद भी, जैसे अन्य सभी प्रकार के आनंद—भोजन का आनंद, विश्राम का आनंद, नींद का आनंद, सृजन का आनंद—जीवनदायी, स्वस्थ और स्वाभाविक है।

"इस आनंद के माध्यम से आत्मा का आनंद शरीर के स्तर पर उतरता है; वहाँ, शरीर के माध्यम से इसे एक सीमित आनंद प्राप्त होता है, जिसमें असीमित संभावनाएँ होती हैं। यह जीवन और अधिक जीवन उत्पन्न करता है, और इस विश्व-नाटक को अभिनेताओं से समृद्ध रखता है।

"आनंद ही वह सबसे उच्चतम और सबसे प्रभावी तत्व है जो अनेक को एक बना देता है। दो आनंद में एक हो जाते हैं।"

## जीवन का जन्म

"प्रेम-आनंद प्रेरित करता है, और शरीरों को उत्तेजना की तीव्र गर्मी में डाल देता है। यह अस्तित्व की गहराइयों को मथता है। तब जीवन का अंडाणु स्त्री के भीतर अंकुरित होता है, जो बीज को स्वीकार करती है। पुरुष अपना बीज उस अंडाणु में डालता है, जो स्त्री द्वारा प्रदान किया गया होता है। यह जीवित बीज प्रेमपूर्वक माता-भूमि में सुला दिया जाता है, जैसे शिशु को नौ महीनों के लिए विशेष रूप से निर्मित पालने में सुला दिया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि केवल पुरुष में ही बीज का निर्माण होता है। और सभी बीजों को अंकुरित होने और बढ़ने के लिए मिट्टी की आवश्यकता होती है। बीज को मिट्टी चाहिए, और मिट्टी को बीज और रोपण चाहिए। यह मिट्टी स्त्री द्वारा प्रदान की जाती है।

"प्रकृति में ऐसी व्यवस्था की गई है कि यह प्रक्रिया उलटी नहीं हो सकती। जीवन की निरंतरता के लिए पुरुष और स्त्री एक-दूसरे पर निर्भर हैं। पुरुष बीज डालता है, और स्त्री, मिट्टी की तरह, उसे ग्रहण करती है। वहीं वह अंकुरित होता है, बढ़ता है, और समय आने पर स्वयं को प्रकट करता है। तब एक जीवन का जन्म होता है। यह जीवन, गर्भाधान की अवधि के बाद, उस मार्ग से इस संसार में आता है जिसे हमने 'निजी' (प्राइवेट) कहने का निर्णय लिया है। यह एक गलत नाम है, जो एक सही तथ्य को व्यक्त करता है। शरीर के वे अंग जो इस सृजन-प्रक्रिया में लगे होते हैं, उतने 'निजी' नहीं हैं, जितने 'व्यक्तिगत' (पर्सनल) हैं।

"जीवन-बीज को अंकुरित होने और माता के शरीर की ऊष्मा के संरक्षण के बिना बढ़ने लायक मजबूत बनने में नौ महीनों का समय लगता है। जीवन के बीज को नौ महीनों में मानव जीवन में परिवर्तित होते देखने की निरंतर प्रतीक्षा ने अंक नौ को अनुष्ठानों में एक विशेष रहस्यमयी महत्व प्रदान किया। रहस्यमय गणनाओं में इस प्रकार अंक नौ एक रहस्यपूर्ण संख्या बन गया।

"इन दोनों मनुष्यों ने जिस प्रकार कार्य किया, वह एक स्वाभाविक प्रक्रिया थी। अब तक यह सब केवल रूप में था। कुछ भी गलत नहीं हुआ था। लेकिन उस ईर्ष्यालु शक्ति ने, जिसने इस निर्दोष और महान सत्य को विचलित किया, एक कपट किया। ईश्वर-विरोधी ने उस जोड़े से कहा कि वे अपनी प्रसन्नता और उसके परिणामस्वरूप हुए प्रेम-संबंध को ईश्वर से छुपाएँ, जबकि ईश्वर उन्हें प्रसन्न देखकर अत्यंत प्रसन्न होते। इसके बजाय उन्होंने ईश्वर को अपराध-बोध से ग्रस्त उदासी का चित्र प्रस्तुत किया। उन्हें विश्वास दिलाया गया कि ईश्वर नहीं चाहते कि वे प्रेम के उच्चतम शिखर तक पहुँचें और सृजन करें।

"यह सत्य नहीं था, बल्कि केवल एक अनुमान था। उन्होंने सोचा कि उन्होंने ईश्वर के विरुद्ध कुछ किया है। प्रेम करने से कोई ईश्वर के विरुद्ध नहीं जाता। लेकिन जब उन्होंने अपनी प्रसन्नता को ईश्वर से छुपाने की कोशिश की, तो उन्होंने अपने भीतर अपराध-बोध को पनपने दिया, और इसने उन्हें जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वरदान—निर्दोषता और खुलेपन के सार्वभौमिक आनंद—से वंचित कर दिया।

"यद्यपि उन्होंने स्वयं आनंद लिया था, परंतु वे उस आनंद में ईश्वर की सहभागिता नहीं चाहते थे। प्रेम कभी भी विशिष्ट (एक्सक्लूसिव) नहीं हो सकता।

"यह मनुष्य के लिए एक दुखद शुरुआत थी। मनुष्य का जन्म एक अपराध-बोध के साथ हुआ, और उसे गुप्तता के अंधेरे कक्षों में आनंद खोजने के लिए विवश किया गया। प्रेम और प्रकाश को एक विकृत योजना के तहत अलग कर दिया गया।

"लेकिन परिभाषा के अनुसार, ईश्वर एक ऐसी शक्ति है जो सब जानती है, सब देखती है और सब सुनती है। उनसे कोई रहस्य 'छुपाने' का प्रश्न ही नहीं था। यह सोचना मूर्खता थी कि वे ईश्वर से कोई रहस्य छुपा सकते हैं, और साथ ही यह क्रूरता भी थी, क्योंकि उन्होंने अपनी प्रसन्नता के उत्सव से ईश्वर को दूर रखने की योजना बनाई थी।

"वास्तविक आनंद को साझा करना चाहिए। साझा करने में यह प्रस्फुटित होता है और शक्ति की धाराओं का संचार करता है।

"इस प्रकार दिव्य वाचा टूट गई, और मनुष्य ने सदा के लिए ईश्वर के पूर्ण प्रेम को समझने की प्राकृतिक क्षमता खो दी। अदन का जादू टूट गया। मनुष्य ने स्वयं अपने दुख की मांग की। तब से मनुष्य परस्पर रहस्यों, संदेहों और छुपावों की दुनिया में जी रहा है। जानवरों के पास ये रहस्य नहीं होते, न ही शिशुओं के पास होते हैं। और वे ही ईश्वर के प्रिय हैं। वे पाप से मुक्त हैं।"

मैं इस पौराणिक कथा की गहराई से प्रभावित था, जिसे मैंने पहले भी सुना था। लेकिन जिस प्रकार से इसे बताया गया, उसने इसके आंतरिक अर्थों को इतनी जीवंतता से प्रकट किया कि मैं अपनी आँखों में आँसू रोक न सका। यह सचमुच एक दुखद कथा थी।

## आवरण

मंदिर के शांत आंगन में कबूतर अपने-अपने ढंग से व्यस्त थे। चतुःषष्टि योगिनी मंदिर में घंटियाँ बज रही थीं। छायाएँ लंबी होने लगी थीं। केसरिया वस्त्रों वाली देवी ने शायद साँस लेने के लिए विराम लिया था। वह लगभग डेढ़ घंटे से बोल रही थीं। मैंने उनकी ओर देखा, और उन्हें पता चल गया कि मैं उन्हें गले लगाना चाहता हूँ। उन्होंने अपनी बाहें फैला दीं, और मैं तुरंत उनकी माँ की तरह की ममता में खो गया।

"नहीं, निराश मत हो। ईश्वर दयालु है। सब कुछ खो गया था, लेकिन प्रेम नहीं खोया था। प्रेम और आशा—ये अभी भी शेष हैं। इस प्रेम को उसके कैदखाने से मुक्त करना होगा, जहाँ वह कई दीवारों के बीच बंद है। हम इन दीवारों को 'कंचुकास' या आवरण कहते हैं। ये आवरण हमारे विकास को रोकते हैं, हमें बाहरी दुनिया से पूरी तरह स्वतंत्र होने से रोकते हैं। हमारे पास एक भौतिक व्यक्तित्व है जो भोजन और पानी पर निर्भर है; फिर हमारे पास एक आंतरिक व्यक्तित्व है जो पर्यावरणीय श्वास पर निर्भर करता है; फिर हमारी भावनात्मक सत्ता है जो हमारे चारों ओर के लोगों के क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करती है; उसके बाद हमारे ज्ञान का व्यक्तित्व है, जो हमारी अपनी समझ और दूसरों द्वारा छोड़ी

गई जानकारी पर आधारित है। और अंततः हम अपने वास्तविक अस्तित्व पर पहुँचते हैं, जो पूरी तरह से हमारी अपनी अनुभूति पर निर्भर है। जब तक हम स्वयं अनुभूति नहीं करते, तब तक दूसरों की अनुभूतियाँ हमें संतुष्ट कैसे कर सकती हैं?

"यह कैदखाना हमारे चारों ओर इसलिए बढ़ता जाता है क्योंकि हमारे अंदर अपराध-बोध का भाव है, जो हमें बहुत कुछ छिपाकर रखने पर विवश करता है और हमें जीवन की खुली स्वतंत्रता में जीने से रोकता है। यद्यपि मनुष्य सूर्य, वायु, जल और अग्नि के परिवार का सदस्य है, फिर भी वह उनके साथ अपनी एकता को भूल गया है। ये संबंध टूट चुके हैं। वह यह घोषणा करने का साहस नहीं करता कि जैसे वह है, वैसे ही प्रकृति में उसके अन्य संबंधियों को भी खुले संपर्क में जीने का अधिकार है।

"मनुष्य के लिए जीवन का आनंद इतने आवरणों में जीने पर निर्भर हो गया है कि वह इस आदत की लगभग पूजा करने लगा है। भगवान खुले में रहते हैं। भगवान के लिए कोई आवरण नहीं है, और न हो सकता है। हमारे आनंद भी ढके हुए हैं; हमारी हँसी स्वतंत्र नहीं है; यहाँ तक कि हमारे आँसू भी। जीवन की खुशियों और दुखों को स्वतंत्रता से व्यक्त करना एक विशेष अनुज्ञा के अधीन कर दिया गया है। और यही हानिकारक दृष्टिकोण जीवन में हमारी अपेक्षा से अधिक समस्याएँ उत्पन्न कर रहा है; जितनी मानसिक ग्रंथियाँ हमने सोची भी नहीं थीं, उनसे अधिक हमने इस गलत जीवन दृष्टिकोण के कारण पाल ली हैं।

"इससे बाहर निकलने का एकमात्र उपाय यह है कि हम ईश्वर के और निकट आएँ, प्रकृति के और समीप पहुँचें। हम पशु हैं; और इसे स्वीकार करने में हमें संकोच नहीं होना चाहिए। भगवान पशुपति हैं—पशुओं के स्वामी। वह पशुओं से प्रेम करते हैं। हमारे सभी देवता और देवियाँ किसी न किसी पशु प्रवृत्ति के नियंत्रक माने गए हैं और उन पशु शक्तियों का हमारे लाभ के लिए उपयोग करने वाले भी। कुत्ते को देखो, घोड़े को देखो। ये जंगली जीव मनुष्य के कितने मित्र बन गए हैं। यह सब हमारे इन पशु प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करने की क्षमता के कारण ही हुआ है।

"हम अपने भीतर छिपी सभी पशु प्रवृत्तियों को भी पहचान सकते हैं, उन्हें बाहर ला सकते हैं, और अपने लाभ के लिए उन्हें नियंत्रित कर सकते हैं, जैसे हमने हल चलाने के लिए बैल को, बड़े बोझ ढोने के लिए हाथी को, और रेगिस्तान के जहाज के रूप में ऊँट को प्रशिक्षित किया है।

"तो फिर हम साहस क्यों न करें और अपने भीतर छिपे हुए सर्प और अन्य अनेक पशुओं को वश में क्यों न करें? आइए हम उन्हें पहचानें, उन्हें नियंत्रित करें, इससे पहले कि वे हमारे जीवन के सभी आनंद को नष्ट कर दें। ऐसा करना हमारे जीवन को और हमारी मृत्यु को भी, जो कि शाश्वत शांति में जीने का एक और तरीका है, बहुत अधिक लाभकारी बना देगा।"

## गोपनीयता का अभिशाप

"मनुष्य फिर भी गुप्त रूप से कार्य करते रहेंगे। जीवन के कार्यों और जीवन में यौन संबंध की भूमिका के बारे में हर कोई जानता है। फिर भी वे इन कार्यों को पाखंडी गोपनीयता के आवरण में छिपाना पसंद करते हैं।

"निजता? हाँ, निश्चित रूप से। प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी निजता एक पवित्र अधिकार है। अधिकांश जानवर भी एकांत में मिलन करना पसंद करते हैं, यद्यपि उनका प्रेम जीवन सबके सामने होता है। अधिकांश भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ एक विशेष निजी वातावरण की माँग करती हैं। भावनाओं का प्रदर्शन करना अपरिपक्वता का चिह्न है। लेकिन, गोपनीयता?

क्यों? नहीं। कभी भी भीतर या बाहर प्रकाश को अस्वीकार मत करो। प्रकाश ही जीवन है। जीवन ही ईश्वर है। मनुष्य इस सत्य को नहीं देख पाते। यह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन यह सत्य है।

"और इसके साथ ही वे इस दृष्टिकोण को एक बेहतर, अधिक शालीन और प्राकृतिक दृष्टिकोण मानते हैं। खुलकर जीने से, प्रेमपूर्ण निष्ठा, वफादारी और मित्रता में जीने से सभी मानसिक ग्रंथियाँ धुल जाती हैं, या उनमें से अधिकांश समाप्त हो जाती हैं।

"सबसे बड़ी गलती जो मनुष्य अपनी मानसिक शांति के साथ करते हैं, वह है असंतुलन, अपराधबोध, अंधकार के क्षेत्र का निर्माण करना, और इन मानसिक ग्रंथियों के साथ समझौता करना।

"मनुष्य इन ग्रंथियों को पालने में गर्व और आनंद महसूस करते हैं। यह मानना कठिन है, लेकिन यह सच है। उन्हें अपने जीवन पर गुप्तता का मुखौटा पहनकर जीना आवश्यक लगता है। यह मानो उनके जीवन पर एक अभिशाप बन जाता है। वे प्रकाश के प्रवेश से इनकार करके अपने लिए अपना ही नर्क बनाते हैं। उनके लिए यौन आनंद एक वर्जित फल बन जाता है। जबकि यह उन्हें सबसे उच्चतर आनंद प्रदान कर सकता था, जो प्रेम और शरीर की मित्रता, विश्वास, वफादारी और एकजुटता के माध्यम से प्राप्त होता है। जीवन में उच्चतम आध्यात्मिक आनंद के स्रोत यही हैं।

"वर्जित फल को लोग गलत तरीके से खुले में वितरित किए गए फलों से अधिक मीठा मानते हैं। यह खतरे में जीने के विकृत आनंद को भी बढ़ाता है। इस प्रकार यौन आनंद को भी अंधेरे के आवरण में ढकेल दिया जाता है, और छिपाव की जल्दबाजी इस आनंद को और भी तीव्र बनाती है।

"परिणामस्वरूप, यह आनंद केवल आनंद के लिए ही निचोड़ा जाता है। मनुष्य अपने अधिकारों का लुटेरा बन जाता है। यह कैसा अभिशाप है! यह आनंद कभी नियंत्रित नहीं होता; इसे कभी भी एक सामान्य और स्वस्थ पहलू के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता; इसके आध्यात्मिक महत्व को अपराधबोध और भय की ग्रंथियों द्वारा दूषित कर दिया जाता है; और जीवन के विस्तार और सृजन के आनंद, जो मूल उद्देश्य थे, उन्हें अंधेरे कोने में धकेल दिया जाता है। प्रेम भ्रष्ट और पतित हो जाता है। जैसे लालची लोग आवश्यकता से अधिक भोजन के पीछे भागते हैं, वैसे ही मनुष्य जीवन के चमत्कारों और सुंदरियों की परवाह किए बिना अधिक यौन सुख के पीछे भागते हैं। जीवन की निरंतरता एक पवित्र कर्तव्य है, लेकिन हमने इस संस्कार को एक गंदे और वर्जित कार्य में बदल दिया है।

"हिंदू पद्धति में जब पुरुष और स्त्री को पति-पत्नी के रूप में स्वीकार किया जाता है, तो वह एक अत्यंत पवित्र और पावन संस्कार होता है। उनका मिलन वास्तव में जीवन-उद्देश्य की पवित्रता के लिए एक यज्ञ, एक बलिदान बन जाता है। ईश्वर की इच्छा जीवन की निरंतरता में व्यक्त होती है, और यौन मिलन उस ईश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए एक बलिदान है। केवल उसी आदर्श को ध्यान में रखकर यौन संबंध स्थापित करना चाहिए, और किसी अन्य उद्देश्य से नहीं। विवाह के मंत्रों में यह प्रार्थना की जाती है: 'हमारा मिलन कभी भी बिना उद्देश्य के, ठंडे मन से या यांत्रिक रूप से न हो। हमारा मिलन सदा प्रेम से प्रेम को अर्पित करने वाला एक पवित्र यज्ञ बने। सब कुछ प्रेम के लिए है।'

"लेकिन मनुष्य इन आदर्शों के अनुसार जीवन नहीं जीते। वे प्रकृति के नियमों का भी पालन नहीं करते। इसके बजाय वे अतिरेक, अनुचित आचरण और वासना में लिप्त हो जाते हैं। अपराधबोध के कारण वे इसे छिपाना चाहते हैं। छिपाने की आवश्यकता के कारण, वे शरीर के कुछ पवित्र अंगों को 'गुप्त', 'निजी' और 'वर्जित' घोषित कर देते हैं। प्रकृति में क्या गुप्त है और क्या सार्वजनिक? क्या ईश्वर के लिए कुछ गुप्त है? यह कितना निराशाजनक है।

"हमारे शरीर पर हर कपड़ा उस रूप का घमंडपूर्ण खंडन है जो ईश्वर और प्रकृति ने हमें प्रदान किया है। एक दिन जब तुम पूरी तरह से शिक्षित, दृढ़ और परिपक्व हो जाओगे, तब तुम्हें तंत्र की पूर्ण और विपुल उपहारों का अनुभव होगा। तुम तब समझोगे कि हमारे शरीर और आत्मा में निहित प्रत्येक शक्ति का एक महान उद्देश्य है, जो हमारी सीमित दृष्टि से कहीं परे है।

"उस दिन यह लिंग भेद तुम्हारे लिए निरर्थक हो जाएगा। तुम्हारे भीतर की सभी उलझनें—लज्जा, गोपनीयता, निजता, संकोच—सब तंत्र की स्पष्टता और व्यापकता के प्रभाव से पिघल जाएँगी। यही सत्य है। याद रखना, तंत्र जीवन को स्वच्छ तरीके से जीने की शिक्षा देता है, जो ईश्वर और प्रकृति के नियमों का सम्मान और पालन करते हुए जी जाती है। तंत्र पुनरुत्थान है, पुनर्जीवन है, एक सकारात्मक उद्देश्य के साथ जीवन जीने का तरीका है। इसमें नकारात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं है। तंत्र में कुछ भी रहस्यमय या अस्पष्ट नहीं है। रहस्यवाद तंत्र का विरोधी है।"

उनकी वाणी की गंभीरता और प्रेम ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे वे ज्ञान के सागर में डुबकी लगा रही हों, और मैं उस अमृत को पिए जा रहा हूँ।

## तंत्र कैसे कार्य करता है?

वह आगे बोली, "यह शिक्षा धीरे-धीरे मिलती है, क्योंकि यह ज्ञान अनमोल और महत्वपूर्ण है, इसे अत्यंत सावधानी के साथ संरक्षित करना पड़ता है। सावधानी, न कि गोपनीयता। जो विवेकहीन होगा, वह इसका दुरुपयोग करेगा, क्योंकि उसमें उचित सावधानी की अनिवार्य कमी होगी। जैसे प्रयोगशाला में ज़हर हो, या गोदाम में पेट्रोल रखा हो, तो आप विशेष सावधानी बरतते हैं। इसमें कोई गोपनीयता नहीं होती, केवल आवश्यक सावधानी की प्रशिक्षण होती है। कई शोधों को उस चरण पर गोपनीय रखा जाता है जब उन्हें सार्वजनिक करना खतरे का कारण बन सकता है। जितना अनमोल ज्ञान होता है, उतना ही उसे कड़ी निगरानी में रखना आवश्यक हो जाता है। गुरु ही इस निगरानी शक्ति का प्रतीक है।

"तंत्र अस्पष्ट नहीं है। अगर ऐसा होता, तो सबसे सामान्य आदिवासी इसके संरक्षक नहीं होते। तुम धीरे-धीरे समझोगे कि जितना अधिक प्राकृतिक, निष्कपट और सरल कोई समाज होता है, उतना ही वह तांत्रिक अनुष्ठानों पर निर्भर होता है। धरती से जुड़े व्यक्ति और प्रकृति के निकट रहने वाले व्यक्ति तंत्र के सबसे निकट अनुयायी होते हैं। तंत्र और तांत्रिक अनुष्ठान अत्यधिक विद्वत्ता और कृत्रिमता को अस्वीकार करते हैं। यह गुरु से प्राप्त व्यावहारिक निर्देशों पर निर्भर रहता है। यदि कोई इस मार्ग को अपनाना चाहता है और अपनी व्यक्तिगत तर्कसंगतता को पहले संतुष्ट करना चाहता है, तो उसके लिए बेहतर होगा कि वह इस मार्ग को पूरी तरह त्याग दे। गुरु पर, और केवल गुरु पर निर्भरता, इस रहस्य द्वार के परम आनंद तक पहुँचने के पहले, दूसरे और तीसरे चरण हैं।

"तुम्हारी जो प्रशिक्षण प्रक्रिया चल रही है, उसे इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे इस्पात को मजबूत बनाना या सोने को शुद्ध करना। जब तक तुम मानव शरीर के प्रति सही और उपयुक्त दृष्टिकोण विकसित नहीं कर लेते, तब तक तंत्र का कोई मतलब नहीं है। बिना विश्वास के चर्च में प्रवेश करने का क्या लाभ? दर्शक की दृष्टि तंत्र के लिए नहीं है, न ही अकादमिक दृष्टिकोण। जब तक मनुष्य शरीर के कार्यों और जीवन की प्रक्रियाओं के डिज़ाइन के साथ सीधे सामना नहीं करता, वह शरीर से, विशेष रूप से मन से, मुक्त नहीं हो सकता। रहस्यों की अस्पष्टता मुक्त व्यक्ति के मार्ग में बाधा नहीं बनती।

"मनुष्य को शक्ति के स्रोत तक पहुँचना चाहिए। तुम्हें इस शक्ति के स्रोत तक पहुँचना है। अब तुम समझ सकते हो कि तुम्हें मनुष्य और स्त्री, पुरुषत्व और स्त्रीत्व, जीवन के आनंद और उल्लास के प्रति सही दृष्टिकोण क्यों विकसित करना चाहिए।

तुम्हें यह बहुत स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि क्या शुद्ध है और क्या अशुद्ध; क्या व्यक्तिगत है और क्या सार्वजनिक; क्या वास्तव में तुम्हारा है, और क्या सबका है।

"शरीरों के निकट आने की विद्या को तुम्हें उतनी ही लगन और सावधानी से सीखना चाहिए, जितनी आग के भट्ठे, बॉयलर, या जलते हुए अग्निकुंड के पास जाने की विद्या को सीखने में लगती है। अन्यथा, तुम आग बुझने से पहले ही जल जाओगे। अगर तुम स्वयं को उजागर करोगे, तो वह तुम्हें नहीं जलाएगा। लंबे समय तक स्थिर बैठ पाओगे, और समय तुम्हें बाधित नहीं करेगा। पूरे मन से आदर्श को प्रेम करोगे और उस पर ध्यान केंद्रित करोगे, तो प्रलोभन तुम्हें विचलित नहीं करेगा। इसे सीखो; इसमें पारंगत बनो। केवल तभी तुम निर्भीकता से मजबूत, कुशलता से निपुण, साहसपूर्वक वीर और बिना किसी ग्रंथि या रुकावट के बेबाक बन पाओगे। विकृति का हमेशा एक सही रूप होता है। उसे ढूँढो। उसका पालन करो।"

## पृथ्वी एक कन्या है

"इसी कारण से आसनों की शुरुआत की गई है। शरीर को मन के साथ प्रशिक्षित करना आवश्यक है। जब शरीर को आसनों के माध्यम से साध लिया जाता है, तो मन स्वतः ही वश में और नियंत्रित हो जाता है। तब शरीर तुम्हें अधिक कष्ट नहीं देगा। यह पृथ्वी मूल और अंतिम आसन है। हम इसके अत्यंत निकट हैं। हम इसे इतना जानते हैं कि यह भी नहीं समझ पाते कि हम इसके सबसे निकट हैं।

"पृथ्वी एक कन्या के समान है जो जीवन को जन्म देती है बिना भ्रष्ट हुए। वह जीवन के विकास के लिए भ्रष्टता को भी आत्मसात करती है। यह पृथ्वी एक साथ गर्मी और नमी को अवशोषित करती है। कैसे? क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? वह यह जादू कैसे करती है? जैसे शक्ति शक्ति को आकर्षित करती है, वैसे ही शरीर शरीर को आकर्षित करता है। आसन का अंतिम उद्देश्य शरीर पर निर्भर करता है, जिसमें मन नामक अशांति या तो सोती है या गरजती है। हर स्थिति में, मन आध्यात्मिक आनंद में बाधक होता है। मन को कठोर अनुशासन में रखना पड़ता है। मन को नियंत्रित करने के लिए, एक शरीर के दूसरे शरीर के निकट होने की कला को विकसित करना पड़ता है। अलगाव और एकांत का अभ्यास जीवन को नकारता है। यह न तो संभव है और न ही आवश्यक।

"शरीर, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि और वायुमंडल की घटनाओं में अनदेखी शक्ति-धाराएँ अत्यधिक मात्रा में प्रवाहित होती हैं। इनके अलावा, मन, बुद्धि और अहंकार जैसी तीन अमूर्त घटनाएँ भी हैं। आसन हमें इन घटनाओं से शक्तियों को पकड़ने, उन्हें संग्रहीत करने और मानवता के लाभ के लिए उन शक्तियों को पुनः संचालित करने में सहायता करते हैं।

"अभी तुम केवल एक आसन से परिचित हो रहे हो, और वह है एक शरीर के निकट आना। शीघ्र ही तुम अन्य शरीरों से भी परिचित होगे, जिनमें जीवित शरीरों के साथ-साथ वे शरीर भी शामिल हैं, जिनसे प्राण (जीवन-श्वास) निकल चुका है। जिस जीवित लकड़ी को हम वृक्ष कहते हैं, वह उतनी ही लकड़ी है जितनी मरी हुई लकड़ी। दोनों में उस शक्ति को बनाए रखने की क्षमता होती है, जो लकड़ी में स्वाभाविक रूप से होती है। समय के साथ तुम्हारे सामने और भी आसन आएँगे। याद रखना, सभी आसन आध्यात्मिक उपयोग के लिए नहीं होते। कुछ स्वास्थ्य लाभ के लिए हैं; कुछ बीमारियों को दूर करने के लिए; कुछ आत्म-नियंत्रण के लिए; और कुछ पूरी तरह मानसिक चिकित्सा से प्रेरित होते हैं। लता साधना में प्रयुक्त रहस्यमयी आसन परम आध्यात्मिक आसनों में से एक है। एक योगी को इन सभी की आवश्यकता होती है।

"हालाँकि, मैं तुम्हें इस चरण पर यह चेतावनी देना चाहूँगी कि इन आसनों का उपयोग केवल शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करना खतरनाक हो सकता है।"

## जहाँ भलाई भी भला नहीं

यह चेतावनी मुझे आश्चर्यचकित कर गई। शरीर को स्वस्थ रखना या रोगों से मुक्त रखना किस प्रकार खतरनाक हो सकता है?
उन्होंने मेरी उलझन को भाँप लिया, और एक बार फिर मुस्कुराईं। सूर्यास्त निकट था। गरम धूप अब गरम नहीं रही थी। उनकी शांति से प्रेरित मुस्कान ने मुझे समीप आ रही संध्या की याद दिलाई। क्या मैं थका हुआ नहीं था? क्या मुझे नदी तट पर पहुँचने की इच्छा नहीं थी? मैं वास्तव में बेचैन नहीं था, पर यह चर्चा, नहीं, यह शिक्षा अगले दिन के लिए रखना बेहतर होता।

उन्होंने बात शुरू की, "अच्छा स्वास्थ्य एकाग्रता के लिए खतरा बन सकता है, जैसे अच्छा पहनावा, अच्छा भोजन और भलाई का एहसास भी बन सकता है। मैं यहाँ अच्छे का अर्थ अतिशयता और विलासिता से ले रही हूँ। अत्यधिक भलाई भी ललचाने वाली होती है। मैं अच्छे का मतलब उस सामाजिक व्यवहार से ले रही हूँ, जो सामान्यतः स्वीकार्य होता है। भैरव और तांत्रिक अच्छाई और बुराई के लिए अलग मापदंड रखते हैं। तुम्हें अब तक यह समझ में आ जाना चाहिए। मैं तुम्हें इस बारे में शिक्षित करूँगी। मुझे तुम्हें यह भी सिखाना है कि तंत्र में हम शरीर की पूजा करते हैं, उन चीजों की आराधना करते हैं जिन्हें सामान्यतः अराध्य नहीं माना जाता; जो अस्पष्ट है, उस पर बल देते हैं और जो घृणास्पद है, उसकी महिमा का गान करते हैं। भयानक चीजें हमारी पड़ोसन हैं; बिना शरीर वाली आत्माएँ हमारी सलाहकार हैं; स्वयं यह प्रकृति हमारी शक्ति का स्रोत है। हम कुछ भी पर्दे के पीछे नहीं रखते। जोर से अलमारी खींचो मेरे बेटे। जो गंदगी और मैल जमा है, उसे उड़ जाने दो। जो फफूँद और कवक की दुर्गंध है, उसे बाहर निकल जाने दो। तभी वायु की ताजगी तुम्हारी प्राणवायु को सजीव करेगी। तभी हम छाँटकर, आवश्यक वस्तुओं का चयन कर सकेंगे...

"... लेकिन तुम अब नदी तट पर होने वाले सत्र और गीतों के बारे में सोच रहे हो? अच्छा, चलो चलते हैं। आज का सूर्यास्त वास्तव में बहुत सुंदर लगेगा।"

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, और हम दोनों नदी तट की ओर चल दिए।

# 4. एक विचित्र रागिनी (**A Strange Nocturne)**

## संशयवादी बालक

प्रशिक्षण जारी रहा। नए आसनों का परिचय हुआ। अब मुझे यह आभास होने लगा था कि ये आसन साधारण व्यायाम नहीं थे, जैसे वाराणसी के गरम घाटों पर या पुस्तकों में दिखाए जाते हैं।
और वे गीत और भजन! आधी सदी से भी अधिक समय बीत जाने के बाद, जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे उन गीतों और भजनों के संकलनों के प्रति अत्यधिक आभार महसूस होता है।

गीत और भजन अनंत शक्तियों को संबोधित करने के लिए माने जाते हैं। इनमें भाग लेना धार्मिक गंभीरता के एक कर्म में शामिल होना है। इनसे उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाओं का आधार इतना स्पष्ट है कि यह समझने में अधिक प्रयास नहीं करना पड़ता कि मंत्र हमारे अवचेतन और अतिचेतन अस्तित्व को कैसे प्रभावित करते हैं और हमारे भीतर एक परिवर्तन लाते हैं। ये मंत्र आध्यात्मिक साधक द्वारा स्वाभाविक रूप से स्वीकार किए जाते हैं। ब्रह्मांडीय चेतना से तालमेल बिठाने के प्रभावी माध्यम के रूप में मंत्रों का मूल्य विशेषकर नवशिक्षु के लिए असीम है।

हालाँकि तब मैं मात्र एक किशोर बालक था, फिर भी धार्मिक और आध्यात्मिक के बीच के सूक्ष्म भेद को लेकर मेरे मन में काफी संदेह था। पारिवारिक परंपराओं और घर में लगातार होने वाले विभिन्न अनुष्ठानों और विधियों के कारण, धर्म के बारे में मेरी धारणा जटिल और लम्बे (अक्सर उबाऊ) हिंदू अनुष्ठानों की उलझनों से गहरे रूप में जुड़ी हुई थी। विभिन्न वस्तुओं का संयोजन, बलि अर्पण, मंडलाओं का निर्माण, मुद्राओं की पूर्णता, अनुष्ठान के समय की सटीक गणना के लिए कठिन और श्रमसाध्य प्रयासों ने मेरे मन में कई असहज प्रश्न खड़े किए। ऐसा नहीं था कि मुझे ये सब हमेशा नापसंद ही थे, लेकिन इनमें से कुछ अनुष्ठानों ने हम पर कठोर अनुशासन थोप दिया और हमें वास्तव में कड़ी मेहनत कराई। इन अनुष्ठानों की माँगों के कारण हमें, किशोरों को, अधिकांश समय इधर-उधर दौड़ते रहना पड़ता था।

आज जब मैं उन्हें स्मरण करता हूँ, तो मेरा दृष्टिकोण बदल चुका है। मैंने अनुभवों से सीखा है कि ये अनुष्ठान, भक्तों से अनुशासन की अपेक्षा करके, उन्हें गंभीरता, आत्म-नियंत्रण और श्रद्धा की स्थिति में लाते हैं। आज जब मैं उन पलों को याद करता हूँ, तो मुझे लगता है कि इन अनुष्ठानों के साथ जुड़ी एकाग्रता शरीर को स्फूर्ति देती थी और मन को शांति पहुँचाती थी। यह रुचि और आकर्षण उत्पन्न करती थी, जिससे ध्यान और यहां तक कि साधना की स्थिति प्राप्त होती थी।

परंतु उन दिनों में, हमारे लिए तो केवल दो ही चीज़ें रोचक थीं:
पहली, पूजा के दौरान बजने वाले घंटों, नगाड़ों और मंत्रोच्चार के साथ नाटकीयता और भव्यता की आभा, जो बाल मन को आकर्षित करती थी।
दूसरी, उसके बाद मिलने वाला भरपूर स्वादिष्ट भोजन। यह सब एक ही दिन में इतना रोमांच भर देता था कि हम उत्साह से भरे रहते थे।

अब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो महसूस होता है कि जिसे मैं आज 'गंभीरता और श्रद्धा' कहता हूँ, वह उस समय हमारे माता-पिता की व्यक्तिगत संलग्नता से भी प्रभावित थी। हम देखते थे कि वे इन आयोजनों में कितना भावुक और संजीदा हो जाते थे।

हम मानते थे, और दृढ़ विश्वास रखते थे, कि जो भी वस्तु या घटना उनके लिए अनमोल थी, वह अवश्य ही अनमोल होगी। इस एक विश्वास ने इन अनुष्ठानों के चारों ओर एक दिव्य आभा रच दी थी।
स्वाभाविक रूप से, उन अनुष्ठानों ने मानसिक असहमति के बावजूद एक भव्यता और गंभीरता को धारण किया। हर अनुष्ठान एक प्रतिज्ञा (मौखिक या अमौखिक) के साथ जुड़ा होता है, और प्रतिज्ञा ही संकल्प की जननी है।

लेकिन इस गंभीरता का एहसास और महान शास्त्रीय भजनों के भव्य संगीत से उत्पन्न सौंदर्यबोध ने हमारे भीतर कुछ गहराई से झकझोर दिया।
आप इसे आत्मा कह सकते हैं (जिसकी हमें तब कोई परवाह नहीं थी), या इसे हृदय कह सकते हैं, या कुछ और (यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है), परंतु इन अनुष्ठानों में हमारी आंतरिक भावना को जो स्पर्श मिला, वह अडिग था और अब, अविस्मरणीय भी।

संपूर्ण साधना एक सिद्धांत पर आधारित थी, और ऐसा हो सकता है कि वह मात्र एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण था। लेकिन इसका हमारे जीवन और जीवनशैली के प्रति दृष्टिकोण के निर्माण पर जो प्रभाव पड़ा, उसमें निस्संदेह एक दृढ़ विश्वास की छाप थी।

## आध्यात्मिक टूथब्रश

तब उस समय यही हमारा धर्म था। उस धर्म में परलोकवाद के लिए बहुत कम या बिल्कुल भी स्थान नहीं था, जिस पर शायद अधिकांश सांसारिक धर्म टिके हुए हैं। स्वर्ग या नरक, भगवान या शैतान, पूर्वजन्म या पुनर्जन्म जैसी बातें हमें मात्र औपचारिकताएँ लगती थीं, जो कभी-कभी तो जानबूझकर भ्रमित करने और भटकाने के साधन मात्र प्रतीत होती थीं। क्या हम अन्य संदर्भों में भी ऐसे ही शब्दों का उपयोग नहीं करते बिना किसी वास्तविक संलग्नता के? जैसे मलेरिया, महंगाई, प्रदूषण, या अंतरधार्मिक सम्मेलनों के संदर्भ में?
धर्म भी जीवन में उन रसदार और जोर देने वाले शब्दों में से एक लगने लगा था। जैसे एक चलन के रूप में पालन करना; परंपराओं के आगे झुकना। एक प्रकार का आध्यात्मिक 'टूथब्रश' जिसके बिना मानो अंतरात्मा को कच्चा चबाने के लिए अंदरूनी तैयारी नहीं होती।

ऐसे अनुसरण स्वीकृतियों की स्वीकृति और आदत की ताकत से उत्पन्न होते हैं।
मूल रूप से शनिवार के घुड़दौड़ के प्रति आकर्षण और चर्च जाने के खिंचाव में बहुत कम अंतर होता है। इन सामाजिक आकर्षणों के प्रभाव में हम स्वतंत्र विचारक के बजाय नाली में घूमते हुए बॉल-बेयरिंग की तरह अधिक व्यवहार करते हैं।

रहस्यवाद का सांसारिक लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; अदृश्य में आनंद लेने या उसे अपेक्षाओं की पूर्ति के स्रोत के रूप में उपयोग करने की क्षमता एक विशेष वरदान है, जो केवल आत्मा के भूखे लोगों के पास होता है। आत्मा में एक ऐसी भूख होती है जो गाए गए या बिना गाए गए संगीत के उन्नत सुखों के लिए तड़पती है।

## भजन का प्रभाव

भजनों ने मेरी आत्मा पर स्थायी प्रभाव डाला। उन्होंने मेरे चरित्र को आकार दिया। मैंने भजनों को विभिन्न स्थानों पर आज़माया है – स्कूल सभाओं में, विशेष अनुरोधों पर दी गई प्रस्तुतियों में, लेकिन धार्मिक परिवेश में गाए गए वही भजन हमेशा कहीं अधिक संतोषजनक, संतुलित और पूर्णता का अनुभव देते थे।

मेरा विश्वास है कि भजनों की ध्वनि धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं के बीच की रेखा को विभाजित करती है। ऐसा क्यों है कि धार्मिक भजनों में स्पष्ट शब्दों में सांसारिक लाभों और सफलता की बात की गई है? धार्मिक अनुष्ठान देवी-देवताओं को समर्पित होते हैं और अनुष्ठानकर्ता उनसे सांसारिक प्रतिफल की अपेक्षा रखते हैं। लेकिन मैंने इन भजनों से एक स्थायी, गहन और अधिक गूढ़ पुरस्कार अनुभव किया। भजनों की संगीतात्मकता ने मेरी आंतरिक व्यक्तित्व को बदल दिया। मैं न केवल अधिक संवेदनशील और जागरूक हो गया, बल्कि एक अनजाने ही मैंने अपने भीतर के अस्तित्व और बाहरी संसार के बीच एक संबंध स्थापित करना शुरू कर दिया।

व्याकुलता हो या शांति, स्वप्न हो या साक्षात्कार, संघर्ष हो या संतोष, सौंदर्य और सृजनशीलता की प्रशंसा में मैंने अपने अस्तित्व को और अधिक पूर्णता से अनुभव किया। मैंने स्वयं को सूर्य और तारों, वृक्षों और नदियों, घाटियों और पहाड़ों के साथ एकरूप पाया। मनुष्य मेरी आत्मा के पड़ोसी बन गए। संसार मेरा घर था। सूर्य मेरी नसों में बहता था। खुला आकाश और समुद्र मेरी मानसिक अटरिया बन गए।

यह अनुभव धर्म से कहीं अधिक गहरा था। यह उस आत्मिक शक्ति का उपहार था जो व्यक्तियों को समय और ऊर्जा के सहसंबंधियों में परिवर्तित करती है। संभवतः यही धर्म और अध्यात्म के बीच की सीमा है। शायद इसी कारण मैं स्वाभाविक रूप से भजनों की ओर आकर्षित होता चला गया। मैं उनके प्रति अधिकाधिक अनुरक्त होता गया।

केसरिया वस्त्रधारी महिला ने अपने स्वयं के रचनात्मक संग्रह से भजनों को जोड़ा। जब भी मैं उन्हें गाता, विशेष रूप से गंगा तट के एकांत स्थानों पर, तो एक सुखदायक उत्तेजना मुझे आगे बढ़ाती, और उस स्थान पर, जहाँ साधु ने माला का मनका दबाया था, वहाँ एक हल्की जलन सी महसूस होती। बंद आँखों के सामने बहुरंगी चिंगारियाँ शांत आकाश में चमकतीं, और अनायास ही आँसू मेरे गालों को भिगो देते। मैं एक उष्णता और ऊर्जावानता से भर उठता।

यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह मीठी उत्तेजना, जो धीरे-धीरे मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गई, उसमें कोई गहरा भावनात्मक तत्व नहीं था। यह भावनात्मक रूप से संतोषजनक थी, परंतु आध्यात्मिक रूप से अल्पकालिक। बाद के जीवन में जब गहरे अनुभव मेरे लिए बहुमूल्य बन गए, तभी मैं इस अंतर को समझ पाया। फिर भी यह अनुभव पूरी तरह सतही नहीं था।

क्या सतह पर तैरने में कोई आनंद नहीं है? क्या उस लहरों के साथ साझा किए गए वैभव में कोई महिमा नहीं है, जिन्हें तैराक अपने हाथों से चीरता है, जिन पर सूर्य की किरणें टकराकर टिमटिमाती हैं? स्वतंत्रता, हल्कापन, उत्साह, और संसार के भार से मुक्त होने का अनुभव किसी आध्यात्मिक संतोष के समान होता है।

फिर भी, जैसा कि गहरे जल में गोता लगाने वाले के लिए पहले सतह पर तैरने का अभ्यास आवश्यक है, वैसे ही योगी की मुक्ति और उत्कृष्ट अनुभूति के लिए भी प्रारंभिक साधन आवश्यक हैं।

यह तब के भजनों का भावनात्मक प्रभाव था, जिनका शब्दार्थ, संगीत की गहराई और वाराणसी के गंगा तट पर व्याप्त शांति का मिलाजुला असर था। जो भी रहा हो, मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि इन भजनों ने मुझे बार-बार उस आत्मिक अनुभव की ओर अग्रसर किया जिसने मुझे अनंत की दुनिया का अंश होने का अनुभव दिया। इसने मुझे सतत विकास के पथ पर बनाए रखा।

हालाँकि, एक गहरा अंतर था, और यह अंतर मेरे लिए खेदजनक था – योग के सिद्ध गुरु या संतों की तुलना में, मैं उन भावनाओं को लंबे समय तक बनाए रखने में असमर्थ था। फिर भी, मैं आज भी उन क्षणों का ऋणी हूँ, जो भजनों के

माध्यम से प्राप्त भावनात्मक उत्तेजना से उत्पन्न हुए थे।
अक्सर मैं स्वयं ही शब्दों को संगीत में पिरोकर गाने लगता हूँ। मैं यह कभी भी किसी सांसारिक लाभ या यश की लालसा में नहीं करता। मैं जानता हूँ कि ऐसे गीत मुझ तक वैसे ही आते हैं, जैसे हवा से संदेश पत्तों तक पहुँचते हैं।

लेकिन जब केसरिया वस्त्रधारी महिला मेरे आसनों और गीतों को सावधानीपूर्वक मार्गदर्शन दे रही थीं, तभी एक यादगार घटना ने मेरे जीवन को वास्तविकताओं के सामने ला खड़ा किया। मैंने अपने एक उपन्यास में इस घटना का संदर्भ दिया है, लेकिन यहाँ मैं उसे विस्तार से वर्णित करना चाहता हूँ। उस घटना का मेरे आध्यात्मिक शिक्षण पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त, इसने मुझे केसरिया वस्त्रधारी महिला के उस पक्ष को समझने में भी मदद की, जिसे उस दिन तक उनके जानने वालों में से किसी ने नहीं समझा था।

## काली बनाम नील-सरस्वती

इलाके में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के मन में सामूहिक अनुष्ठानिक प्रार्थना आयोजित करने का विचार आया। इस प्रार्थना में जिस तांत्रिक देवी का आवाहन किया जाना था, वह थीं समय की व्यापक रूप से पूजित देवी – अंधकार की माता, काली। ऐसी सामूहिक प्रार्थनाएँ अक्सर सार्वजनिक सड़कों के चौराहों पर आयोजित की जाती हैं, विशेषकर अमावस्या की रात को, जब चंद्रमा भोर के समय उदित होता है।

इस प्रकार की सामूहिक प्रार्थना को बरवारी पूजा (सामुदायिक प्रार्थना) कहा जाता है, जो प्रायः काली पूजा ही होती है। इसे बड़े धूमधाम और सामुदायिक सहमति के साथ संपन्न किया जाता है।

अब, काली (यद्यपि वह भयंकर रूप वाली और अंधकारमयी हैं) एक परिचित देवी हैं और गृहस्थों की प्रिय भी। माता काली जीवन की पूर्णता का प्रतीक हैं – वे सृजन और संहार, दोनों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे समय की उस शक्ति का प्रतीक हैं जो जीवन के रहस्य को समेटे हुए जोड़ती और तोड़ती है। उनकी प्रतिमा उस नग्न सत्य का प्रतीक है जो सभी आवरणों को हटा कर वास्तविकता को उजागर करती है।

तंत्र पंचांग में इससे अधिक मांगलिक और गंभीर प्रार्थना और कोई नहीं हो सकती। काली पूजा के लिए अनुष्ठानिक विधियों में पूर्ण शुद्धता और पवित्रता की आवश्यकता होती है। तांत्रिक विधियों में रूप (फॉर्म) का अत्यधिक महत्व है। जैसे-जैसे साधक की साधना में प्रगति होती है, वह इन रूपों के बंधनों को छोड़ देता है और उनकी जगह पर कहीं अधिक महत्वपूर्ण और गहन अनुभूतियाँ ले लेती हैं। जैसे सूर्य के उदय होने पर तारे क्षितिज में विलीन हो जाते हैं, वैसे ही अनुभूतियों की प्रखरता से रूप गौण हो जाते हैं।

यदि अनुष्ठानिक रूपों की शुद्धता साधक को आध्यात्मिक प्रगति की ओर ले जाती है, तो वहीं ज़रा-सी भी त्रुटि या लापरवाही गंभीर प्रतिकूल परिणाम भी ला सकती है।

## मूर्तियाँ और प्रतिमान

इस प्रकार की विस्तृत अनुष्ठानिक प्रार्थनाओं (तंत्र-वज्रयान) के लिए उतनी ही जटिल और पूर्ण मूर्तियों की अपेक्षा की जाती है, जो शास्त्रों में दिए गए वर्णनों के अनुरूप हों। सटीकता ही इसका सार है। कुशल शिल्पकार इन मूर्तियों को पत्थर,

लकड़ी या मिट्टी से उकेरते हैं। इनमें से मिट्टी की मूर्तियों को अनुष्ठान पूर्ण होने के बाद नदी, समुद्र या झीलों में विसर्जित कर दिया जाता है।

तंत्र यह निर्देश देता है कि साधक को सदैव मूर्तियों से चिपके नहीं रहना चाहिए। मूर्तियों का स्थान धीरे-धीरे विचार-प्रतिमा (कल्पना) द्वारा लिया जाता है, फिर मात्र विचार द्वारा, और अंततः केवल भावना द्वारा, जो साधक के अस्तित्व का सार बन जाती है। जब तक द्वैत की अनुभूति बनी रहती है, साधक का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता।

मूर्तिकार स्वयं साधक होते हैं, और वे देवता के स्वरूप में माँगी गई सूक्ष्मतम विवरणों में भी शायद ही कभी त्रुटि करते हैं। संबंधित देवता के सटीक विवरण प्राचीन तांत्रिकों द्वारा लिखित शास्त्रों में सुरक्षित हैं, जिन्होंने ध्यान द्वारा उन मूर्तियों को जीवंत अनुभवों से पूरित किया था। इन्हें ध्यान कहा जाता है, और प्रत्येक ध्यान को उस प्रधान पुरोहित द्वारा भली-भाँति आत्मसात किया जाना आवश्यक है, जो अनुष्ठान संपन्न करने में संलग्न होता है।

इन ध्यानों में आध्यात्मिक शक्तियों के गूढ़ अनुभवों को प्रतीकात्मक रूप में वर्णित किया गया है, जिनके प्रत्येक विवरण में संबंधित देवता की अंतर्निहित शक्तियों के विभिन्न पहलू समाहित हैं।

## गलती या चमत्कार?

जिस बारवारी पूजा का उल्लेख किया गया है, वह वाराणसी के कुछ प्रमुख तंत्र विशेषज्ञों की भागीदारी के कारण विशेष रूप से प्रतिष्ठित थी। मूर्ति निर्माण की प्रगति के साथ प्रतिदिन मूर्ति की जाँच की जा रही थी। इस अनुष्ठान ने एक उच्च कोटि के तांत्रिक को आमंत्रित किया था, जिससे पूरे नगर में हलचल मच गई थी।

उस दोपहर, माँ के पास यूँ ही सामान्य बातचीत करते हुए भगवा वस्त्रधारी महिला आईं और बीच में ही यह पूछ लिया कि प्रस्तावित तारा पूजा (तारा के लिए अनुष्ठान) कौन करेगा?

तारा पूजा! ऐसा भयानक विषय और उस पर इतनी बड़ी चूक! यह केवल एक अनजाने में हुई गलती नहीं हो सकती थी। यह अवश्य ही जानबूझकर कहा गया था। लेकिन क्यों? आखिर क्यों उन्होंने तारा का उल्लेख किया?

पिता ने कठोर दृष्टि से उनकी ओर देखा और कहा, "कोई तारा पूजा नहीं हो रही है। आपको तो विशेष रूप से पता होना चाहिए कि तारा पूजा का क्या अर्थ होता है और हमारे जैसे रिहायशी इलाके में इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। यह हमेशा श्मशान भूमि में की जाती है; इसे खुले में कभी नहीं किया जाता। क्या आप चाहती हैं कि पूरा मोहल्ला कब्रिस्तान में बदल जाए? क्या आप ऐसा चाहती हैं? मुझे आशा है कि नहीं। हमें वज्रयान में पारंगत तांत्रिक कहाँ मिलेगा? ऐसे अनुष्ठान का संचालन कौन करेगा? वैसे भी हम अभी तक प्रस्तावित काली पूजा के लिए एक योग्य पुरोहित की तलाश में हैं। नहीं, आपको नील-सरस्वती तारा की पूजा का सुझाव नहीं देना चाहिए था! नहीं!"**

उन्होंने नाक-भौं सिकोड़ी और आधे अविश्वास के साथ सिर हिलाते हुए चली गईं।

कल्पना कीजिए मेरी हैरानी का, जब कुछ ही दिनों बाद पूरे मोहल्ले में, और हमारी प्रसिद्ध अकादमी के विद्वानों में, एक अजीब सा हंगामा मच गया। मूर्ति काली की नहीं, बल्कि तारा की बनी थी, जैसा कि प्रारंभ में सोचा गया था।

स्वाभाविक रूप से, घटनाओं के इस अनोखे मोड़ ने सभी को चौंका दिया। इस आकस्मिक परिवर्तन का रहस्य अंधकारमय और पूरी तरह चमत्कारी था। कड़ी निगरानी के बावजूद, एक अनुभवी और कुशल मूर्तिकार से इतनी गंभीर चूक हो गई और वज्रयान की भयानक और निषिद्ध नील-सरस्वती तारा की मूर्ति बन गई, जिसने सभी पंडितों को स्तब्ध कर दिया।

सबसे महत्वपूर्ण अंतर पैरों की स्थिति में था। तारा का बायाँ पैर हमेशा भूमि पर रहता है (दायाँ पैर शिव के निर्जीव शरीर पर) जैसे कि वह किसी अज्ञात भय से चौंकी हो। यह मूर्ति वास्तव में परिचित काली नहीं थी। इसे बिना मूर्ति को क्षतिग्रस्त किए ठीक नहीं किया जा सकता था, और ऐसा करना महापाप माना जाता। मूर्तिकार इसके लिए कभी तैयार नहीं होता।

और यह सब तब हुआ जब मूर्तिकार learned विद्वानों की प्रत्यक्ष और लगभग दैनिक निगरानी में काम कर रहा था। वयोवृद्ध मूर्तिकार हक्का-बक्का रह गया। वह केवल इतना कह पाया, "वह इसी रूप में प्रकट होना चाहती थी।"

एक दिन, मैं व्याकरण का पाठ ले रहा था और पिता कुछ वरिष्ठ छात्रों को पढ़ा रहे थे, जब भगवा वस्त्रधारी महिला फिर से आईं और उनके पास बैठ गईं। पिता की आँखों में अजीब सी चमक थी और उन्होंने केवल इतना कहा, "तो तारा आ गई। तारा, शरारत करने वाली! तुम्हारी जुबान और तुम्हारे शब्द!"

उनकी डाँट को अनसुना करते हुए उन्होंने फिर पूछा, "अनुष्ठान कौन करेगा?" उनका पहला सवाल अभी भी बेचैन कर रहा था। मुझे आज भी याद है, कैसे उन्होंने सिर हिलाकर पिता की सारी बातें बड़ी आसानी और बेपरवाही से सुनीं।

उनकी आँखों की चमक में एक भीतरी मुस्कान छिपी हुई थी। लेकिन ऐसे संकट के समय में भी वे हमेशा मोहक और शांत लगती थीं। उन्हें देखकर मन को शांति मिलती थी। वे जैसे साक्षात स्वागत, शांति और सुकून का प्रतीक थीं।

पिता ने नाराज़गी में कहा, "तुम्हें तो पता होना चाहिए। हम पहले ही एक योग्य पुरोहित खोजने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। और अब तारा के लिए तो यह राजा के आकार की समस्या होगी। शायद तुम इसमें मदद कर सको।"

बिना कोई उत्तर दिए वे चली गईं। मैं भी अपना व्याकरण का पाठ छोड़कर उनके पीछे-पीछे मंदिर तक गया। योग वासिष्ठ का पाठ लगभग समाप्त हो चुका था।

इस बीच, मैं अब एक स्पष्ट किशोरावस्था में प्रवेश कर चुका था, जो मेरी युवा यौवन की दहलीज थी। अब मुझे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था, और न ही मुझे हल्के में लिया जा सकता था। मुझे अब सभी ने एक विशेष सम्मान और महत्व के साथ स्वीकार करना शुरू कर दिया था।

## तारा पूजा

मुझे पता था कि तारा पूजा एक बार शुरू होने के बाद लगातार तीन वर्षों तक चलानी पड़ती है; और ये तीन वर्ष भारी तनाव और अनिश्चितता के वर्षों के रूप में जाने जाते हैं। रक्त बलि अनिवार्य होती है, और सच्चे तांत्रिक के लिए इसका कोई विकल्प स्वीकार्य नहीं होता। यह रहस्य गृहस्थों को जैसे गले से पकड़ लेता था। वे भयभीत थे, लेकिन यह नहीं जानते थे कि इस विपत्ति से कैसे बचें।

एक योग्य पुरोहित को खोजना सबसे बड़ी चुनौती थी।

यह पहला वर्ष था; सबसे महत्वपूर्ण वर्ष।

मुझे व्यवस्था के बारे में कुछ पता नहीं था; मैं तो बस इस घटना की प्रतीक्षा कर रहा था। अप्रैल के अंतिम सप्ताह की अमावस्या की रात थी। सुबह से ही हर घर में मंत्रों का जाप हो रहा था। एक सौ आठ पुरोहित एक सौ आठ अलग-अलग आसनों पर एक सौ आठ अलग-अलग स्थानों पर स्थापित थे। अधिकांश बुजुर्गों ने पूरा दिन उपवास रखा था। मुख्य अनुष्ठान रात 10 बजे से शुरू होकर सूर्योदय तक चलने वाला था।

मुख्य पुरोहित जो रात 8 बजे प्रकट हुए, वे मेरे लिए बिल्कुल नए थे।

मैं उन्हें यहाँ विस्तार से वर्णित करना चाहूंगा, लेकिन स्वयं को रोक रहा हूँ। वे सबसे लंबे और सबसे चौड़े व्यक्ति थे जिन्हें मैंने कभी देखा था। उनकी उम्र अब मुझे याद नहीं है; लेकिन मेरे चाचा (जो समुदाय में सबसे बुजुर्ग व्यक्ति थे) द्वारा उन्हें दिया गया सम्मान उन्हें न केवल आयु में, बल्कि तांत्रिक महत्ता में भी उनसे कहीं ऊपर दर्शा रहा था।

लेकिन न तो उनकी आवाज़, न उनकी चाल, न उनका डील-डौल, न उनकी आँखों की चमक, और न ही उनकी त्वचा की आभा में उम्र का कोई भी प्रभाव दिख रहा था। उनके शरीर से एक विशेष प्रकार की व्यक्तिगत सुगंध आ रही थी, जो वस्त्रों के होने या न होने से प्रभावित नहीं थी। उनके पास मालाओं और मनकों का एक ढेर था और केवल एक गहरे लाल रंग का लंगोट पहने हुए थे, अन्यथा वे पूरी तरह नग्न थे।

उन्होंने केवल तीन व्यक्तियों से घनिष्ठता से बात की— मेरे चाचा, मेरे पिता, और भगवा वस्त्रधारी महिला से, जिनसे उनका विशेष संबंध प्रतीत होता था।

अनेकों सहायक अनुष्ठान की विस्तृत तैयारियों में लगे हुए थे।

यहाँ, मैं थोड़ा ठहरना चाहूंगा ताकि पाठक तारा पूजा की परंपराओं की एक संक्षिप्त झलक पा सकें।

## तारा अनुष्ठान

तारा केवल भारतीय या हिंदू धर्म तक सीमित देवी नहीं हैं। वे पूर्वी रहस्यवाद की देवी हैं, जिनकी पूजा कई प्राचीन संस्कृतियों में की गई है। कनानी, मिस्री, फिलिस्तीनी, इस्राएली, मोआबी, प्राचीन बेबीलोनियन, असीरियन, फोनीशियन, तिब्बती, जापानी, और पूरा दक्षिण-पूर्व एशिया किसी न किसी समय इस प्रभावशाली देवी के मंत्रमुग्ध रहा है, भले ही उन्हें विभिन्न नामों से पुकारा गया हो। आज, इन नामों को एक ही स्रोत से उत्पन्न माना जाता है (जैसे अष्टारते, एस्थर, सितारा), जो ध्वन्यात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। पूर्वी भूमध्यसागरीय और मिस्री रहस्यवाद में, भले ही भिन्न नामों, भिन्न उद्देश्यों और भिन्न व्याख्याओं के तहत हो, उनका प्रभाव अभी भी महत्वपूर्ण रूप से बना हुआ है।

पश्चिमी विद्वानों के अनुसार, तारा देवी की उत्पत्ति प्रकृति पूजा से हुई मानी जाती है, जिसमें उर्वरता और प्रजनन के गुण जुड़े हैं। लैंगिकता और यौन पूजा की खुली स्वीकृति, जिसे वे लोग अनैतिक मानते हैं जो इस साधना में गहराई से शामिल नहीं हैं (लेकिन जो बाहरी रूप का दुरुपयोग करते हैं और मौके का फायदा उठाते हैं), ने इस विषय को रहस्यपूर्ण बना दिया है। ईसाई धर्म की कठोर नैतिकता इसे अस्वीकार्य मानती है। लेकिन आर्टेमिस, अफ्रोडाइट, डायना, अष्टारते, जूनो और वीनस की पूजा, जैसे कि पारंपरिक सिलेस्तिस और यूरेनिया की पूजा अमर है, क्योंकि ये उनके मन और आत्मा को जादुई रहस्य और आध्यात्मिक मुक्ति के साथ मंत्रमुग्ध करती हैं, जो सम्बंधित अनुष्ठानों के माध्यम से व्यक्त होती हैं।

यूरेनिया की प्राचीन संस्कृतियों के अलावा, यह साधना हिमालय की पहाड़ियों से लेकर फूजीयामा तक और सलुरी, मेकांग और पूर्वी द्वीपों की घाटियों में माँ की भावना (सार्वभौमिक या कॉस्मिक शक्ति) को समर्पित अनुष्ठान आज भी मनाए जाते हैं, जिनका प्रतीक वज्र (ज्वलंत वज्रपात) और हूंकार (हूं ध्वनि) है।

सृजन और विनाश की मूल स्त्री शक्ति के रूप में रक्त का सामान्य प्रतीक है। यह रक्त-पिपासुता नहीं है, जैसा कि कमजोर मन वाले लोग मान लेते हैं। सृजन और विनाश को संपूर्णता में देखने पर रक्त-पिपासुता का अर्थ नहीं रह जाता। जीवन स्वयं रक्त-पिपासु नहीं है। लेकिन यह बुद्धिहीनता होगी यदि कोई जीवन-शक्ति के साथ रक्त के इस गहरे संबंध को, जो रक्त बलि के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त होता है, समझने में असफल रहता है।

इन अनुष्ठानों को दुनिया के कुछ हिस्सों में अंधकार में रखा गया है, जबकि दूसरे हिस्सों में भावुक दृष्टिकोण ने इन्हें विकृति और उन्माद के रूप में गलत रूप से व्याख्यायित किया है। इन धारणाओं को कमजोर मन वाले लोगों के मत के रूप में देखा जा सकता है, जो मानसिक और शारीरिक विकृत इच्छाओं को अस्पष्ट जानकारियों और बेबुनियाद अवलोकनों के घने कोहरे में छिपाकर रखना पसंद करते हैं। नैतिकता का आवरण ढोंग और पाखंड को छिपाने का सबसे सुविधाजनक आश्रय प्रदान करता है।

## एक विद्युतमय स्थिति

मामले के तथ्य यह हैं कि जादू और ठगबाजी से परे, रहस्यवादी परंपराओं द्वारा सौंपी गई संपत्ति के भयंकर दुरुपयोग से परे, एक क्षेत्र ऐसा भी है, जो मनुष्य को खोजने, प्रयास करने, संघर्ष करने, सहने और प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। प्राप्त करने का क्या? यह एक सपाट प्रश्न है, जिसमें एक अधीर व्यंग्य छुपा हुआ है। इस संदर्भ में, कवि क्या प्राप्त करता है? कलाकार क्या प्राप्त करता है? संगीत की सराहना और रचना क्या प्राप्त करती है? सौंदर्य का उपयोगिता पर, भावना का तर्क पर, वास्तुकला या गणित पर क्या प्रभाव होता है? एक उत्तर देना आवश्यक है; और वह उत्तर पूर्ण और व्यापक होना चाहिए। जो लोग इन माध्यमों के माध्यम से परमसत्य को प्राप्त करना चाहते हैं, वे भ्रमित मूर्ख या भोगवादी विलासी नहीं होते। वे मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं।

मनुष्य में कुछ ऐसा है जो उसे दबा हुआ, अधूरा, अशक्त महसूस कराता है। जो लोग इस सीमित अस्तित्व के दायरे में जीने की पीड़ा को महसूस करते हैं, और जो एक अज्ञात असीमता से अचानक जागृत होते हैं, वे अपनी जेल की दीवारों को तोड़ते हैं, इस मुक्ति के लिए ललचाते हैं, और यहां तक कि इसके लिए अपने जीवन और सुरक्षा को भी दांव पर लगा देते हैं। यही कारण है कि इस सूक्ष्म शक्ति को प्राप्त करने के लिए अनुष्ठान अब तक जीवित हैं, भले ही इन्हें समाप्त करने के लिए कड़े प्रयास किए गए हों। तंत्र कोई जादू नहीं है; और इसके अनुष्ठान भी जादुई अनुष्ठान नहीं हैं।

जिस प्रकार काली को समय की सक्रिय आत्मा, चेतना को घेरे हुए अंधकारमय रहस्य के रूप में माना गया है, उसी प्रकार तारा को दया की स्त्री आत्मा के रूप में अवलोकितेश्वर के रूप में देवीकृत माना गया है। अवलोकितेश्वर नाम में निहित विश्व की पीड़ाओं के प्रति सतर्कता इसका मुख्य विषय है। उनकी स्त्री प्रतिरूप तारा के माथे पर तीसरी आंख के अलावा, दोनों हाथों की हथेलियों पर भी आंखें होती हैं, जो वरद मुद्रा (वरदान देने वाली मुद्रा) और अभय मुद्रा (सुरक्षा का आश्वासन देने वाली मुद्रा) में रखी होती हैं। तारा की मातृसुलभ करुणा उनके सुडौल और खुले स्तनों से प्रकट होती है, जिन्हें कभी नहीं ढका जाता। उनकी मातृत्व की भूमिका को गोल नितंबों, भारी जांघों, और थोड़े गोल निचले पेट के

माध्यम से जोरदार ढंग से उजागर किया गया है। उन्हें इक्कीस विभिन्न मंत्रों के माध्यम से आह्वान किया जा सकता है, लेकिन सबसे पूजनीय मंत्र है ओम तारे तुतारे तुरे स्वाहा। (मंत्रों का उच्चारण विशेष रूप से व्यक्तिगत-व्यक्ति, सिद्ध-शिष्य पद्धति के माध्यम से प्राप्त करना होता है।)

यह तो वज्रयान तारा की बात है। लेकिन बंगाल के तांत्रिक तारा का आह्वान एक काफी डरावने और खतरनाक रूप में करते हैं। यही तथ्य उस इलाके में छुपी हुई दहशत का मुख्य कारण था।

इस बंगाल तारा के चार हाथ होते हैं। उनके घने जटाजूट को एक सांप से एक जटा (एकजटा) में बांधा जाता है, और वे बाघ की खाल पहनती हैं। उनके दो अलंकरण एक कटार और एक खोपड़ी का प्याला होते हैं। उनके पैरों के नीचे शिव निष्क्रिय पड़े होते हैं, जो ऊर्जा विहीन पदार्थ का प्रतीक है। (लामा वज्रयान में पुरुष सक्रिय तत्व होता है, और स्त्री निष्क्रिय, जैसा कि विभिन्न युग्म आकृतियां दर्शाती हैं; लेकिन हिंदू अवधारणा में ऐसा नहीं है, जहां पुरुष पदार्थ के रूप में निष्क्रिय होता है, और स्त्री ऊर्जा के रूप में उग्र रूप से सक्रिय रहती है। इन भिन्न दृष्टिकोणों ने दोनों प्रणालियों में विभिन्न आसनों को विकसित किया है।)

यही रूप पड़ोस के हिंदू मनों में इतनी परेशानी का कारण बन रहा था। दया की आत्मा अवलोकितेश्वर तारा नहीं, बल्कि वाम अघोर आत्मा नाथ तारा, नाग तारा, श्मशान की तारा ने लोगों को अपनी उपस्थिति से डरा दिया, और उन्हें मजबूर किया कि वे देवी को प्रसन्न करें।

यह एक विद्युतमय स्थिति थी।

जब यह स्पष्ट हो गया कि तारा के अनुष्ठानों का पालन करना आवश्यक होगा, और रक्त, जो अनुष्ठानों के लिए अपरिहार्य आवश्यकता थी, प्रदान करना होगा, तो पंडित व्यस्त हो गए। रक्त-अनुष्ठान एक बारवारी पूजा (सामुदायिक प्रार्थनाओं) के लिए अकल्पनीय थे।

कुछ समझौते ग्रंथों में प्रस्तावित थे। लेकिन ये निश्चित रूप से बाद के विचार थे, जैसा कि अधिकांश समझौते होते हैं। तारा को संशोधित करना साधारण बात नहीं थी, और इसे लैडी इन सैफ्रन द्वारा बिना विरोध के स्वीकार नहीं किया जा सकता था। वह अनुष्ठानों के मामलों में एक संपूर्ण शुद्धतावादी थीं।

“अनुष्ठान,” उन्होंने कहा, “वास्तव में स्वयं को आप पर थोपते नहीं हैं। व्यक्ति को चुनने और यदि उपयुक्त न लगे तो रद्द करने की स्वतंत्रता है। लेकिन चुनने के बाद, और फिर कड़ी मेहनत से एक समझौते की तलाश करना मूर्खतापूर्ण है। वास्तव में, यह अनुष्ठान की विधियों का अपमान है। परिणाम कैसे प्राप्त किए जा सकते हैं यदि विधियों से बचा जाए या उन्हें दरकिनार किया जाए?”

## पूजा

रात आ गई। लाल वस्त्रों में सजे प्रतिष्ठित पुजारी का प्रभावशाली व्यक्तित्व दृश्य पर प्रकट हुआ। वास्तव में, उसकी उपस्थिति सम्मान की मांग करती थी, और उससे बहुत अपेक्षाएँ थीं।

सामान्य जल के स्थान पर, अनुष्ठान के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए शुद्ध मदिरा से भरे प्याले थे। यह साधारण पेय नहीं था, बल्कि किसी जानकार व्यक्ति से प्राप्त विशेष मिश्रण था। आधे खिले हुए कमलों का ढेर सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा था। इनमें से एक हज़ार कमल, लाल (सिंदूर, चंदन या रक्त) में डूबे हुए, विशेष मंत्रों के साथ अर्पित किए जाने थे।

पाँच सहायक पुजारी को उसकी हथेली के बढ़ते ही आवश्यक वस्तुएँ देने के लिए तैयार थे। ये सहायक अनुष्ठान और उसकी आवश्यकताओं से भली-भाँति परिचित लग रहे थे। शंख, झांझ, घंटियों और ढोलों की ध्वनि के बीच अनुष्ठान घड़ी की सटीकता के साथ आगे बढ़ रहा था।

धातु के कलशों में जलाए गए सुगंधित जड़ी-बूटियों और लेपों से उठता धुआँ एक रहस्यमय धुंध फैला रहा था, जिसके ऊपर एक गहन सुगंध मँडरा रही थी, जो लगभग मादक थी, फिर भी उत्साहवर्धक।

पूरे वातावरण में जैसे जीवन आ गया था। मंत्रों का उच्चारण निरंतर जारी था, फिर भी तंग गलियों में एक विचित्र शांति गंभीरता से छाई हुई थी। सभी की निगाहें उस महान प्रतिमा पर टिकी थीं। भयंकर तारा एक मोहक मुस्कान के साथ खड़ी थी, जो अपनी गूढ़ता में दमक रही थी।

मूर्ति का आकार और सजावट अन्य सभी विवरणों पर हावी था। वह अपने पूरे वैभव में मेरे मन में बसी हुई थी, ताजे गुड़हल, कमल और नीले अपराजिता के सुगठित हारों से सजी हुई।

नाग बालों की जटाओं, कलाइयों और कुहनियों पर लिपटे हुए थे; यहाँ तक कि बाघ की खाल, जो लंगोट के रूप में प्रयोग हुई थी, उसे भी नाग-बंध से बाँधा गया था। सिर पर नाग-गुच्छे में बंधे बालों के शीर्ष पर एक उज्ज्वल अर्धचंद्र चमक रहा था (जो चंद्र-उपासना का प्रतीक था)।

लाल, लहराती जीभ रक्त-रंजित पूर्ण होंठों से बाहर निकली हुई थी। इस भयंकर रूप के बावजूद, माँ के भाव में कुछ ऐसा था, विशेष रूप से उसकी दृष्टि में, जिससे महान शांति और आत्मविश्वास की दिव्य कृपा झलक रही थी।

उसके चरणों में बाघ की खाल पहने हुए एक श्वेत पुरुष का शिथिल शरीर पड़ा था। इसे ऊर्जा रहित भौतिकता का प्रतीक माना जाता था, जो जड़ता और शून्यता का प्रतिनिधित्व करता था, और शिव (शांत), काल (समय) या शव (निर्जीव) के रूप में पूजित होता था।

मूर्ति मेरे मन में संपूर्ण संतुलन की छवि के रूप में अंकित हो गई थी। मेरे किशोर मन के लिए उसमें न तो भयंकरता थी, न ही कुरूपता या अश्लीलता। वह महान माता थी, अशांत समताकारी, आत्मबल की दाता। मैं उससे प्रेम करता था।

तारा: अनंत आलिंगन

परिपक्वता के साथ, मैंने तारा के बारे में और अधिक जाना। महायान के तिब्बती प्रभावों के कारण उसका रूप पूरी तरह से बदल गया है। यहाँ, हिंदू अनुष्ठानों में, वह भौतिकता से मुक्त ऊर्जा है।

लेकिन तिब्बतियों के एक अन्य रूप में, तारा सृजन में बंधनकारी शक्ति मानी जाती है। उसे उसके परिवर्तित स्वरूप (सकारात्मक और नकारात्मक) के साथ दिव्य आलिंगन में अनंत संयोग के रूप में दर्शाया गया है।

यह चित्रण जीवन के संदेश को बहुत स्पष्टता से दर्शाता है, जहाँ सृजन और विनाश की शक्तियाँ ब्रह्मांडीय एकता में अविभाज्य रूप से बुनी हुई हैं।

उसकी छवि ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। मेरे बाल मन ने उसमें कोई भयंकरता नहीं देखी। 'भयंकर' या 'मनोरम' केवल व्यक्तिगत मनोभाव को व्यक्त करते हैं। तारा ने मुझे अपने सकारात्मक आकर्षण दिखाए। उसके सभी नकारात्मक पहलू लुप्त हो गए। मैं उसका पड़ोसी बन गया था।

## रहस्यमय विवरण

(क) जल कलश:
मैंने देखा कि कहीं से बड़ी धूमधाम और समारोहपूर्वक गीली मिट्टी का एक बड़ा ढेर लाया गया था। इसे प्रतिमा के सामने विधिपूर्वक रखा गया और बीच में एक पात्र के साथ गोल आकार में ढाला गया। इसमें कई प्रकार के अनाज डाले गए। इसके ऊपर गंगाजल से भरा एक बड़ा मिट्टी का घड़ा रखा गया, जिसे सिंदूर से सजाया गया था। इन डिजाइनों में विशेष यंत्र बने हुए थे।

कलश के मुँह में पाँच विभिन्न प्रकार की ताज़ी पत्तियों वाली टहनियाँ डाली गईं, जो मुख्यतः उन पेड़ों से थीं जिन्हें रहस्यमय अनुष्ठानों में उपयोग किया जाता है। पत्तियाँ कलश के किनारे को ढँक रही थीं। इन पत्तियों के बीच और कलश के मुँह को ढँकते हुए चावल से भरी एक कटोरी रखी गई थी। इस कटोरी के ऊपर एक हरी नारियल उसके डंठल के साथ रखा गया, जिसमें डंठल का हिस्सा ऊपर की ओर था। अंत में, कलश और नारियल को लाल कपड़े से ढँका गया, जिसके ऊपर माला रखी गई।

अब कलश की 'रक्षा' करनी थी। चार बाँस की छड़ें चार मिट्टी के ढेरों में लगाई गईं और प्रत्येक छड़ पर आम की पत्तियाँ फहराई गईं। इन चारों खंभों के चारों ओर लाल धागे के नौ फेरे लपेटे गए, जिससे कलश के जादुई घेरे की रक्षा हुई, जो अब देवी की आत्मा का प्रतीक था।

इस प्रक्रिया को देखकर मेरी जिज्ञासा बढ़ गई, विशेष रूप से उस मिट्टी के प्रति लोगों का सम्मान देखकर, जिसे इतने धूमधाम से लाया गया था। वह मिट्टी क्या थी? कहाँ से लाई गई थी? और लोग उसकी स्थापना के बाद राहत की साँस क्यों ले रहे थे?

मैंने अपनी गुरु, भगवा वस्त्रधारी महिला, से बस उनकी ओर देख कर प्रश्न पूछा। उन्होंने अपनी मौन दृष्टि से उत्तर दिया, जिससे मुझे समझ में आ गया कि मुझे इंतजार करना होगा। बाद में उन्होंने जो बताया, उससे मेरी रूह काँप गई। एक अजीब सी शून्यता ने मुझे घेर लिया। वह तथ्य मेरी कल्पना से परे थे।

(ख) मिट्टी:
वह मिट्टी एक विशेष गड्ढे से ली गई थी, जिसमें वर्षों पहले पाँच प्रकार के शव (मानव, कुत्ता, बिल्ली, लोमड़ी और वानर) प्राकृतिक रूप से मृत या अनुष्ठानिक बलि के बाद दफनाए गए थे। यह एक पवित्र और गुप्त स्थान होना चाहिए था, जहाँ किसी ने उन शवों को परेशान नहीं किया हो। समय के साथ वे शव मिट्टी में बदल गए होंगे, और इस मिट्टी का उपयोग अनुष्ठानिक मंच और कलश के आधार के रूप में किया गया था।

इस प्रकार जल कलश मुख्य पुजारी के लिए अत्यधिक महत्व रखता था। प्रतिमा लोगों की भावनाओं को आकर्षित करती थी, लेकिन पुजारी की व्यक्तिगत चेतना और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के बीच अमूर्त संबंध कलश के माध्यम से स्थापित होता था, जिसमें पंचतत्वों (जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु और आकाश) को आह्वान किया जाता था।

(ग) यंत्र:
कलश के पास एक और वस्तु थी जिसने साधक का ध्यान आकर्षित किया—यंत्र। यह प्रायः तांबे, कांसे या चांदी पर उकेरा गया ज्यामितीय डिज़ाइन होता है। इस अनुष्ठान में यह चांदी का यंत्र था। मैंने इसे सोने की प्लेटों पर भी देखा है, लेकिन सबसे रहस्यमय यंत्र मैंने हिमालय की तलहटी में एक मंगोल योद्धा के पास देखा था। यह एक विशाल (5"×5"×3") क्रिस्टल का टुकड़ा था, जिसके किनारे अपरिष्कृत थे।

उस यंत्र के बारे में कहा जाता था कि वह प्राकृतिक रूप से बना था और उसे मानव हाथों ने नहीं उकेरा था। वह यंत्र 1400 वर्षों से योगियों के बीच पारित होता आया था। जब मैंने उसके समय-क्रम में विसंगति की ओर इशारा किया, तो योगी मुस्कुराकर बोले, "सब झूठ है—मैं, क्रिस्टल, तिथियाँ और यहाँ तक कि तंत्र भी।"

(घ) मण्डल:
प्रतिमा, कलश और यंत्र के अलावा एक और माध्यम जिसका अत्यधिक महत्व था, वह था मण्डल। यह एक ज्यामितीय चौकोर आकार होता है, जिसके भीतर पाँच विभिन्न वनस्पति रंगों से आकृतियाँ बनाई जाती हैं।

आध्यात्मिक साधना के उच्चतर चरणों में साधक प्रतिमा, कलश, मण्डल और मुद्रा को एक-एक करके त्याग देता है, जब तक कि वह केवल स्वयं के साथ नहीं रह जाता।

अब, पूजा की प्रक्रिया जारी रहती है...

## तनावपूर्ण स्थिति

जैसे-जैसे रात गहराती गई, विशाल भीड़ धीरे-धीरे छंटने लगी और अनुष्ठान और भी गहन और जटिल होते गए। अचानक माहौल में बदलाव स्पष्ट हो गया। ऐसा लगा मानो हवा में किसी उपस्थिति का संचार हो गया हो, और असामान्य कंपन ने नसों को एक तनावपूर्ण 'प्रतीक्षा' की स्थिति में डाल दिया, मानो कुछ होने वाला हो। स्थान, समय, सभा, यहाँ तक कि हम जो साँस ले रहे थे, वह भी 'विद्युतमय' प्रतीत हो रही थी।

क्या इसे 'गंभीरता' कहें? क्या इसे शक्ति का उदय कहें? क्या यह किसी उपस्थिति का प्रभाव था? मुख्य पुजारी पूरी तरह तल्लीन हो चुके थे। वे किसी और ही रूप में बदल गए थे। उन्हें रोकना असंभव था। उनके मंत्र फुसफुसाहट में बदल गए थे, जो अब सुने नहीं जा सकते थे। उनका पूरा शरीर साँप के फन की तरह लहराने लगा, मानो हमला करने ही वाला हो। अचानक दीयों और मशालों की लौ तीव्र हो गई। एक अजीब सन्नाटा छा गया।

## ज्वालाओं का संग्रह

इसी बीच हमें मणिकर्णिका श्मशान से अग्नि लाने के लिए जाना था। सैकड़ों शताब्दियों से मणिकर्णिका हिंदू जगत के लिए श्मशान भूमि रही है। इसका नाम ही इसके लामाई (तिब्बती बौद्ध) संबंधों का प्रमाण है। "ॐ मणि पद्मे हम" एक प्रसिद्ध लामाई मंत्र है। 'मणि' शब्द का महत्व पहले ही बताया जा चुका है।

इस नाम से जुड़ी कथा उन लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो इन रहस्यमय ज्ञानों और अनुष्ठानों के रहस्यों में प्रवेश करना चाहते हैं:

1. भगवान शिव ने भगवान विष्णु की तपस्या की कठोरता की सराहना की। विष्णु के बलिदान की महानता से शिव इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना सिर हिलाना शुरू कर दिया, जिससे उनके कानों से ब्रह्मांडीय 'मणि' उस तालाब में गिर गई, जिसे विष्णु ने अपने दैनिक स्नान के लिए अपने चक्र से खोदा था। तभी से उस स्थान को मणिकर्णिका कहा जाने लगा।
2. इसी कथा का एक और रूप भी है, जिसमें शिव तपस्वी और योगी हैं, और विष्णु उनकी तपस्या के प्रशंसक हैं। इस संस्करण में मणि विष्णु की है।

जो लोग इन रहस्यमय कथाओं को पढ़ने की कला जानते हैं, वे समझेंगे कि इस तट पर अनादिकाल से योगिक, विशेष रूप से तांत्रिक साधनाएँ प्रचलित रही हैं। वाराणसी में, और इन कथाओं में, तिब्बत, सप्तऋषि और मणिकर्णिका को विशेष तांत्रिक 'शक्ति' के कारण उच्च सम्मान प्राप्त है।

"ज्वालाओं के संग्रह" के लिए एक जुलूस भयावह मणिकर्णिका की ओर बढ़ा। मणिकर्णिका की चिताओं की ज्वालाएँ अनंतकाल से अनवरत जल रही हैं। वहाँ का मुख्य अधिकारी एक उत्तराधिकारी है, जिसकी जिम्मेदारी आगंतुकों को अंतिम संस्कार के लिए ज्वालाएँ प्रदान करना है।

तारा, जो श्मशान भूमि की देवी मानी जाती हैं, को एक आवासीय क्षेत्र में आमंत्रित किया गया था। इसलिए, जब तारा को उनके सामान्य निवास से अस्थायी रूप से हटाया गया, तो उनके प्रिय श्मशान की ज्वालाओं को उनके नए स्थल तक लाना अनिवार्य हो गया।

बाँस के खंभे के बीच में एक विशाल और सुंदर रूप से सजाया गया पीतल का कलश लटकाया गया था। इस कलश को विधिपूर्वक पवित्र किया गया था और माला व धूप से सजाया गया था। झांझ, ढोल, घंटियों और शंखों की ध्वनि के साथ जुलूस श्मशान भूमि की ओर बढ़ा। रात के सन्नाटे में गूंजते मंत्रों की ध्वनि ने आसपास के निवासियों को अवश्य ही विचलित किया होगा।

वास्तविक प्रक्रिया अधिक समय लेने वाली नहीं थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि श्मशान के अधिकारी को पहले से ही तैयार कर दिया गया था; और कुछ धीमी फुसफुसाहट (निश्चित रूप से कुछ नगद लेन-देन हुआ होगा) के बाद, उसने जलते हुए मशाल को कलश में डाल दिया, और उग्र लपटें कलश से बाहर निकल आईं। भक्तों ने ऐसी हर्षध्वनि की जिसने आकाश को भी कंपा दिया होगा।

अब जुलूस को लौटने का समय आ गया था। ज्वाला-संग्रह की सफलता की खुशी ने नाचते-गाते भक्तों में नई ऊर्जा भर दी। शंख और घंटियाँ फिर से जोर-शोर से बजने लगीं।

## नया मार्ग, नई पुकार

मैं वाराणसी की भूलभुलैया जैसी गलियों में लगभग सौ गज तक उस शोर-गुल और जुलूस के साथ चला, लेकिन फिर अचानक मुझ पर एक अजीब सी बेहोशी सी छाने लगी। मैं ऐसी अचानक होने वाली खींच को पहले भी महसूस कर चुका था। मेरी अति-संवेदनशील मनःस्थिति ध्वनि-क्षेत्र से गुजरती सूक्ष्मतम तरंगों को सहजता से पकड़ लेती थी। मैं उन्हें लगभग अदृश्य रूप से महसूस करता, और फिर अनायास ही उनके प्रभाव में आकर उस विक्षोभ के स्रोत तक पहुँच जाता।

कोई पुकार थी, और मुझे उसका उत्तर देना था। जब कोई स्वयं को प्रकृति का हिस्सा मान लेता है, तो उसे अनिवार्यता के तर्क को स्वीकार करना और उसके साथ चलना पड़ता है।

सबसे घनी अंधेरी रात में, और गंगातट की सीढ़ियों पर, मैं अपने ज्वाला-संग्रह के साथियों से बिछड़ गया; मैं अपने पड़ोस में हो रहे अनुष्ठानों से दूर हो गया; मैं परिवेश और उसकी वास्तविकताओं से विमुख हो गया। मैं कौन था? मेरा कार्य क्या था? मुझे क्या करना चाहिए था? मैं एक 'शून्य मन' की अवस्था में था, मंत्रमुग्ध होकर आगे बढ़ रहा था। मेरा मन एक शून्यता की स्थिति में था।

## भूत-प्रेत के बीच पीड़ित

मैं जैसे नशे में था, फिर भी एक अन्य आयाम में पूरी तरह सतर्क था। मैं चलता गया, लेकिन मुझे एहसास था कि मैंने दिशा बदल ली थी। मैं कई सीढ़ियों से नीचे उतरा; फिर मैंने ऐसा महसूस किया जैसे अंतहीन सीढ़ियाँ चढ़ रहा हूँ।

कई आवारा साँड़ मेरे पास से गुजरे। गांजा और चरस के नशे में डूबे लोगों के समूह प्राचीन पत्थरों के खंडहरों में अपनी धुंधली लालटेन की रोशनी में मग्न थे। श्मशान से खींचे गए हड्डियों के टुकड़ों के लिए कुत्ते भौंक रहे थे।

मैं चढ़ता ही गया। तभी एक परिचित गंध ने मेरी सतर्कता को और बढ़ा दिया—निर्लिप्त और गहन सतर्कता। कहीं सुगंधित लेप और लोबान जलाए जा रहे थे। वह गंध बहुत परिचित थी। मैंने मंत्रोच्चारण की ध्वनि सुनी। स्वतः ही एक मंत्र मेरे भीतर गूंजने लगा। भगवा वस्त्रधारी महिला हमेशा यह मंत्र बुदबुदाती थीं, जब वे मेरे आसन की रक्षा करती थीं, जिस पर मैं उनके साथ साधना करता था।

नेपाली मंदिर का रहस्य

आखिरकार मैं एक जगह पहुँच गया जहाँ मैंने एक भयावह दृश्य देखा। ऐसा नहीं था कि मैंने पहले कभी ऐसी साधना नहीं देखी थी; मैं अक्सर इस प्रकार की साधनाओं पर चर्चा करता था, लेकिन उस समय की वास्तविकता ने मेरे हौसले पस्त कर दिए। मैंने मंत्र का जाप जारी रखा, जैसे वह मेरा दूसरा स्व हो।

मुझे उस स्थान की याद आई—वह भयानक नेपाली मंदिर था। यह वज्रयान लामाई मंदिर मणिकर्णिका श्मशान के पास एक गुप्त ठिकाने जैसा था। बहुत कम लोग इसे नोटिस करते हैं, फिर भी यह हमेशा से भैरव तंत्र की साधनाओं का गढ़ रहा है। लोगों में यह भी फुसफुसाहट थी कि वहाँ मानव बलि भी होती थी।

वहाँ का वेदी-मंच पंचमुण्डी (पाँच शवों पर बने आसन) पर स्थापित था, जहाँ सबसे जटिल आसन किए जाते थे। वह स्थान अवचेतन मन में एक डरावनी छाप छोड़ता था।

आज, पर्यटकों के लिए 'नेपाली खपर' (खोपड़ी वाला नेपाली मंदिर) एक प्रमुख आकर्षण है। इसकी लोकप्रियता का कारण इसके रहस्यमय अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि इसकी दीवारों और गुफाओं पर उकेरी गई मिथुन (संभोगरत) मूर्तियाँ हैं।

दिगंबर योगी और भयावह दृश्य

मैं इससे पहले भी भगवा वस्त्रधारी महिला के साथ इस मंदिर में आ चुका था। उन्होंने कई अवसरों पर मेरे साथ यहाँ कुछ आसन और अनुष्ठान किए थे, जिनमें मैं उनका अवतार और शिष्य बनकर सहभागी बना था। मुझे विशेष रूप से दो साधनाएँ याद हैं—एक चंद्रग्रहण के समय और दूसरी सूर्यग्रहण के समय।

मगर उस दिन मैंने एक नए योगी को देखा, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह दिगंबर (अंबर अर्थात आकाश को ही वस्त्र रूप में धारण करने वाला) था। उसके शरीर पर जटाओं का ढेर और रुद्राक्ष की माला थी, इसके अलावा वह पूर्णतः नग्न था।

वह एक मानव आकृति (जो भी नग्न थी) पर विराजमान था और पूर्ण समाधि में प्रतीत हो रहा था। वह आकृति एक स्त्री की थी।

## अंतरिक्षवस्त्रधारी की सभा में

मैंने धीरे-धीरे उस आकृति को पहचाना जो उसके आसन के नीचे नग्न पड़ी थी। यह वही प्रिय 'मौसी' थी (जिनका पहले उल्लेख हुआ था) जिनका ठिकाना पास के श्मशान में था। वे कन्या अवस्था में ही विधवा हो गई थीं, और अपनी शक्ति, साथ ही अपने पारलौकिक भावों और चिंतन के कारण, वे इस प्रकार की साधनाओं में बहुत मांग में रहती थीं।

कहा जाता है कि वे अमावस्या से अमावस्या तक, यानी दो सप्ताह से भी अधिक समय तक उसी स्थिति में पड़ी रहती थीं। कितनी ही बार उन्होंने मुझे अपने हाथों से भोजन कराया है। मुझे आज भी उस सम्माननीय महिला का वह स्नेह याद है, जो वे मेरे प्रति रखती थीं।

मुझे इस विशेष साधना में क्यों बुलाया गया था? यह मेरे लिए रहस्य ही बना रहा। लेकिन मुझे पता था कि मैंने अपने लिए कृपापूर्वक और सम्मानपूर्वक प्रस्तुत एक महान अवसर को खो दिया था।

कुछ देर तक मैं शांत रहा। मेरा मन स्थिर था। लेकिन मेरे अवचेतन में—अर्थात वह चेतना स्तर जो बाहरी विक्षोभों के बावजूद प्रतिक्रिया करता है—अचानक वही मंत्र गूंजने लगा जो मुझे पहले से ज्ञात था।

मंत्र स्वयं मेरे लिए वास्तविक हो गया, और रंग-बिरंगी रोशनी की चिंगारियाँ आसपास के स्थान में फैलने लगीं, और फिर मेरी भौंहों के बीच आकर ठहर गईं, जहाँ हमेशा माला की मनका का दबाव एक लाल चेतावनी बिंदु की तरह प्रतीत होता था।

वह बिंदु स्पष्ट रूप से झनझनाने लगा और लपटें निकालने लगा, जब तक कि मैं ध्यानावस्था में न चला गया। समय ठहर गया।

क्या वास्तव में मेरे पास कोई समय था? घर पर अनुष्ठान पूरे जोरों पर चल रहे होंगे। ज्वालाओं का जुलूस बहुत पहले ही अपने गंतव्य तक पहुँच चुका होगा। अग्नि-यज्ञ और कमल-यज्ञ समाप्त हो चुके होंगे। लेकिन किसे परवाह थी? वास्तव में परवाह करने वाला कौन था?

मैं भयभीत था; मैं वापस लौटना चाहता था; लेकिन यह सब सतही था। मेरे वास्तविक गहरे मन में, मैं एक शांति के केंद्र में था। कोई भी प्रकार की गति संभव नहीं थी। मैं वहाँ का था; मैं उनका था; मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं थी।

मैं उस अनुष्ठान के बीचोंबीच था, हर क्षण को पूर्ण आनंद के साथ जी रहा था। शरीर के रोम-रोम खड़े हो गए थे; रोमांच की लहरें जड़ों तक दौड़ रही थीं। मुझे लगा, 'मुझे अकेला छोड़ दो!', लेकिन वास्तव में, मैं अपनी जगह से हिला तक नहीं।

मैं धीरे-धीरे उस जलती हुई ज्वाला की ओर खिंचता चला गया, जो गड्ढे में भयंकर रूप से धधक रही थी।

मौसी का खुला शरीर मेरे सामने एक शव की तरह पड़ा था। मुझे वे शास्त्र-वाक्य याद आ गए जो इस प्रकार की साधना में प्रयुक्त होते हैं, जहाँ एक स्त्री पवित्र आसन प्रदान करती है।

जैसे ही मैंने उन्हें देखा, वे मुझे किसी अन्य ग्रह की दूर की पड़ोसी प्रतीत होने लगीं। उनकी स्थिर आँखें, जिनमें जलता हुआ तेज था, मुझ पर टिकी थीं, जो एक दिव्य आनंद और शाश्वत शांति की अविचल स्थिरता दोनों को प्रकट कर रही थीं।

उनकी आँखों की जीवंतता ने मुझे उनकी पूजा करने पर विवश कर दिया। मुझे भी वहीं बैठना अच्छा लगता।

धीरे-धीरे वे एक चमकते हुए प्रकाश-पुंज में बदल गईं। मैंने देखा कि मेरा शरीर भी एक और प्रकाश-पुंज बन रहा था, और ये दोनों पुंज धीरे-धीरे एक-दूसरे के पास आ रहे थे।

## जागरण और वापसी

मुझे नहीं पता कि कहाँ से बूंदाबांदी मुझ पर बरसने लगी, और मैं सिहर उठा। दो मनके एक जोरदार उछाल के साथ मेरे सामने गिरे, और एक राख से लदा गुड़हल का फूल भी। मैंने उन्हें उत्सुकता से उठाया और मंदिर से बाहर निकलने के लिए दौड़ पड़ा। लेकिन मंदिर की ओर पीठ मोड़ने से पहले, मैं भूमि पर साष्टांग दंडवत हो गया और अपनी आँखें बंद कर लीं। मेरा मन बेचैन मौसी के लिए भी दंडवत करना चाहता था।

जैसे ही मैंने आँखें बंद कीं, मैं हैरान रह गया। मैंने अपनी भगवा वस्त्रधारी महिला को देखा, जो पूरी तरह से लपटों में लिपटी थीं। उन लपटों के भीतर से वे मुस्कुराई और पुकारा, “आओ, तुरंत आओ, मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ।”

अब मैंने दौड़ना शुरू किया। लेकिन कहाँ?
मुझे कहाँ जाना चाहिए? सीढ़ियाँ नीचे, फिर सीढ़ियाँ ऊपर, पश्चिमी तटों के साथ, सीधे दक्षिण की ओर, रेत और पत्थरों को पार करते हुए, जब तक कि मैं नदी के सुदूर छोर पर स्थित चतुषष्टि योगिनी मंदिर के पास के परिचित खंडहरों तक नहीं पहुँच जाता? या उस पवित्र बाओ वृक्ष तक? या हमारे पड़ोस के उस वेदी-मंच तक, जहाँ माँ तारा की पूजा हो रही थी?

मैं दौड़ रहा था, और मन ही मन कह रहा था, “मैं आ रहा हूँ, मैं आ रहा हूँ। मैं विलंब नहीं कर रहा हूँ।”

मैं तारा अनुष्ठान में वापस लौट आया, जो हमारे घर के पास ही नहीं, बल्कि हमारे घर की देहलीज़ पर ही हो रहा था।

# 5.ज्वाला-संग्रह (Flame Gatherings)

## पूजा अनुष्ठान में वापसी

एक गंभीर दृश्य प्रगति पर था। मेरे चाचा, पिता, माता और मेरे सभी भाई अनुष्ठानों की व्यवस्थाओं में व्यस्त थे। एक छोटी भीड़ इकट्ठा थी; जिज्ञासु, फिर भी मंत्रमुग्ध।

कई लोग स्वयं प्रेरित ध्यान में लीन थे, हिंदू रीति से व्यक्तिगत पूजा अर्पित कर रहे थे। हिंदू परिवेश के बारे में प्रचलित सतही धारणाओं के विपरीत, बहुत से लोग अभी भी इस विश्वास को दृढ़ता से थामे हुए हैं कि यह अंतिम शांति की ओर ले जाएगा। यह वास्तव में तांत्रिक भावना को दर्शाता है।

ऐसी तांत्रिक साधनाओं में आत्म-अन्वेषण की जो पारलौकिकता निहित है, वह मानसिक अनुशासन और नैतिकता के दो पंखों पर चढ़ती है। यह बाहरी रूप से वस्तुनिष्ठ और मूर्तिपूजक प्रतीत होता है, लेकिन इसका आंतरिक उद्देश्य और उपलब्धियाँ पूर्ण आत्मनिष्ठता की ओर निर्देशित होती हैं।

वाराणसी की व्यस्त गली का वह परिचित परिवेश एक रहस्यमय गंभीरता से भर गया था। हर चीज़ गंभीर और तनावपूर्ण महसूस हो रही थी। कुछ भी सहज नहीं लग रहा था। भीड़ व्यक्तिगत प्रयासों में गहराई से तल्लीन थी और एक एकीकृत, स्फटिकीकृत रूप में बदल गई थी।

फिर भी, कुल मिलाकर प्रभाव एकल उद्देश्य के भीतर सिमटा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो एक ही भ्रूण के भीतर कई जीवन व्यक्तिगत विकास और समय पर मोक्ष पाने के लिए प्रयासरत हों। यह कल्पना जितनी अधिक मेरे भीतर गुदगुदी करती, उतना ही मुझे यह रोचक लगती।

वह स्थान शांत और गंभीर था, इतनी आध्यात्मिकता से परिपूर्ण कि उसे दिव्यता की पराकाष्ठा के रूप में महसूस किया जा सकता था। अश्लीलता और निम्नता पिघल चुकी थी; जिज्ञासु वहाँ नहीं थे; उत्तेजना का नाटक दिव्य गंभीरता में बदल गया था; और वह शोर-गुल समाप्त हो चुका था। रात ने अपनी चादर ओढ़ ली थी। वहाँ बस होने मात्र से आत्मा गहन अनुभूति तक पहुँच रही थी।

समय-समय पर मुख्य पुजारी के सहायक मंत्रों का उच्चारण करते, जो स्पष्ट और ऊँचे स्वर में सुनाई देते थे, लेकिन मुख्य पुजारी बिना होंठ हिलाए ही उन्हें दोहरा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे पूरी तरह किसी और ही लोक में हों।

वे अपने आसन पर सीधे और ऊँचे बैठे थे, कमलासन में, और उनकी आँखें भौंहों के बीच स्थिर थीं। वे घी में भिगोए हुए बेल-पत्र (बेल: विल्व, जिसे ऐग्ली मर्मेलोस या अश-एप्पल भी कहा जाता है) को एक विशाल तांबे के गड्ढे में प्रज्वलित अग्नि में डाल रहे थे।

अन्य सहायक लयबद्ध समय पर अन्य वस्तुएँ डाल रहे थे: लोबान, तिल के बीज, चंदन के बुरादे और बालों सहित मांस के टुकड़े। पवित्र घृत की चम्मचें अग्नि को ऊँची लपटों में प्रज्वलित करतीं, जो प्रत्येक मंत्र के समाप्त होने का संकेत देतीं।

वहाँ एक भारी सुगंध फैली हुई थी। मुझे वह दुर्गंध महसूस नहीं हुई, जो जलते मांस और बालों से अपेक्षित होती है। यह वास्तव में बहुत अजीब था।

मणिकर्णिका और खपर मंदिर में हुए भयावह अनुभवों से मेरी उत्तेजना अभी तक शांत नहीं हुई थी। घायल पैर की उंगली में जलन हो रही थी। रक्त निरंतर बह रहा था। लेकिन मुझे इसकी कोई परवाह नहीं थी; रक्त का बहना उस धड़कते नीले घाव की पीड़ा से बेहतर महसूस हो रहा था।

मुझे केवल अपनी भगवा वस्त्रधारी महिला, अपने अंतिम आश्रय के पास पहुँचने की उत्कंठा थी।

मैं सोच सकता था, और तेज़ी से घटित हुए उन भयानक घटनाक्रमों को फिर से बना सकता था। अगर मैं उस सम्मोहित अवस्था से बाहर न निकला होता, तो क्या हो सकता था?

यह सच है कि तांत्रिक अनुष्ठान ब्राह्मणों को हानि पहुँचाने की अनुमति नहीं देते। मानव बलि की बात तो दूर, जहाँ न ब्राह्मण और न ही स्त्री का उपयोग हो सकता है; यहाँ तक कि अत्यंत जटिल शव साधना (ब्रह्मांडीय शक्तियों की प्राप्ति के लिए शव पर अनुष्ठान) में भी ब्राह्मण के शव का उपयोग नहीं किया जा सकता।

लेकिन भय किसी तर्क को नहीं मानता; और मैं असावधान हो गया था। अचानक भय का पहला प्रभाव तर्क शक्ति को खो देना होता है, जो सभी इंद्रियों को भ्रमित कर देता है और यहाँ तक कि स्मृति को भी मिटा देता है।

भय सबसे आसान और सबसे प्रभावी मादक द्रव्य है, जो शिकार के मन को विचलित कर सकता है। संवेदनशील और कमजोर मन ऐसे सम्मोहन के लिए सबसे उपयुक्त माध्यम बनता है।

जब तक मैंने अपनी भगवा वस्त्रधारी महिला के पास सुरक्षित आश्रय में विश्राम नहीं किया, तब तक मैं उस निराकार भय की पकड़ से बाहर नहीं निकला था। वहाँ पहुँचकर ही मैं फिर से स्वयं बन पाया।

## शरीर विलीन हो जाता है

लेकिन वह कहाँ थीं? क्या वे इस संसार की थीं? क्या वे पहुँच के भीतर थीं? ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उन्होंने अपने चारों ओर एक अभेद्य किला बना लिया हो।
हालाँकि उनके चारों ओर भक्तों की भीड़ थी, लेकिन कोई भी उनके बहुत करीब जाने का साहस नहीं कर रहा था।

मैंने उन्हें ध्यान से देखा और तंत्र के विशेष अनुष्ठानों को याद किया जिन्हें भूतापसारण, न्यास और ध्यान कहा जाता है। कहा जाता है कि ये अनुष्ठान साधक के चारों ओर 'विरोधी आत्माओं' या आध्यात्मिक बाधाओं के विरुद्ध प्रभावी सुरक्षा घेरा बनाते हैं।

इनका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण महायान ग्रंथों में गौतम बुद्ध की ध्यान तपस्या के संदर्भ में मिलता है, जहाँ बुद्ध शांत, स्थिर, सुरक्षित और आंतरिक प्रकाश से दीप्तमान रहते हैं, भले ही उन पर बुरी शक्तियों या शारीरिक और मानसिक प्रलोभनों का आक्रमण हो रहा हो।

यहाँ मैं उस परम सत्य का उदाहरण देख रहा था कि जब आत्मा नियंत्रण ले लेती है, तो शरीर नगण्य हो जाता है; आत्मा को किसी आवरण की आवश्यकता नहीं होती;

जो व्यक्ति आत्मा के स्तर पर होता है, वह अव्यक्त हो जाता है, जैसे ही उसका स्थूल शरीर ब्रह्मांडीय चेतना में विलीन हो जाता है, वह वास्तव में अप्राप्य हो जाता है।

बार-बार मैंने उन्हें इसी अवस्था में देखा था। फिर भी वे कितनी नवीन और दिव्य लग रही थीं, जब वे आठ अग्निकुंडों के घेरे के भीतर बैठी थीं, जिन्हें विस्मय-विमुग्ध हाथों से जलाए रखा जा रहा था।

वहाँ अन्य अग्निकुंड भी थे; कुल तीन। उनके हाथ फैलाए हुए थे, हथेलियाँ उनकी नग्न जाँघों पर टिकी थीं, जो अब चमकती हुई पसीने की परत से ढकी थीं।
उन हथेलियों पर दो धधकते अग्निकुंड रखे थे; और उनके सिर पर तीसरा अग्निकुंड रखा हुआ था।

मेरे पिता उन तीनों अग्निकुंडों में कुछ चूर्ण डाल रहे थे और लगातार मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि क्या उनकी हथेलियाँ झुलस जाएँगी, या उनका सिर फट जाएगा।

अंदर से कांपते हुए, सावधानीपूर्वक, मैं उनके पास गया और चुपचाप उनके पास बैठ गया। किसी ने आपत्ति नहीं की; कोई कर भी नहीं सकता था, क्योंकि सभी मेरे और उनके संबंधों को अच्छी तरह जानते थे। वे मूल रूप से मेरी थीं; मैं उनका था।

लेकिन वह अग्नि का घेरा! और जब भी मैं उसे याद करता हूँ, मेरे भीतर गहनता आ जाती है। दो अग्निकुंडों के बीच इतनी जगह थी कि मैं उसमें फिसलकर उनके और करीब आ सकता था।

मैं उनके पास जाना चाहता था, और उन्हें छूना चाहता था। वहाँ की गर्मी भयानक थी; लेकिन मुझे कौन रोक सकता था, जब वे स्वयं इतनी पास बैठी थीं?
उस क्षण उनके पास होने की लालसा उन लपटों से भी अधिक प्रबल थी।

जैसे ही मैंने अपने एक हाथ को आग के घेरे के अंदर जमीन को छूने के लिए बढ़ाया, एक विद्युत् झटका लगा जिसने मुझे पीछे की ओर धकेल दिया।
उस भयानक झटके ने मेरी नसों को सुन्न कर दिया।

धीरे-धीरे मुझे अन्य आकृतियों का आभास हुआ। वे सभी उस स्थान के चारों ओर रेंगते हुए दिखाई दिए। सभी एक मंत्र का जाप कर रहे थे; लेकिन मैंने उनकी उपस्थिति की परवाह किए बिना वहीं रहना पसंद किया।

अचानक मैंने साहस बटोरा और उनके और भी करीब चला गया। अब मैं बिल्कुल उनके पास था। एक पल में, मैं उनकी गोद में था (अब यह मेरे लिए परिचित और स्वाभाविक आसन बन चुका था)।

उनकी हथेलियों पर रखे अग्निकुंड अब भी जल रहे थे; लेकिन मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि न तो लपटें, न ही उनकी गर्मी मुझे डरा रही थी।
मुझे अब उनका कोई अनुभव नहीं हो रहा था।

## आग पर चलना

चूँकि मैं अग्नि और गर्मी के विषय पर हूँ, इसलिए यहाँ एक ऐसी घटना का उल्लेख करना प्रासंगिक है, जब मुझे वास्तव में अग्नि पर चलने की प्रेरणा मिली थी। यह घटना एक विशेष अनुष्ठान से जुड़ी थी, इसलिए इसका वर्णन यहाँ उचित प्रतीत होता है।

आजकल मीडिया और प्रचार-प्रसार के कारण अग्नि पर चलने का चमत्कार पश्चिम में जिज्ञासा और चर्चा का विषय बन गया है। इस अद्भुत अभ्यास के मुख्य केंद्र दक्षिण प्रशांत द्वीप, फिजी, श्रीलंका और भारत के तमिल क्षेत्र हैं। इसके अलावा, अफ्रीका के पूर्वी तट की कुछ जनजातियों में भी यह अनुष्ठान प्रचलित है।

भारत में, तांत्रिक शिव उपासकों के बीच एक शक्तिशाली संप्रदाय है, जिसका उद्भव आंध्र प्रदेश में हुआ। इसे जंगम या वीर शैव कहा जाता है, जो संत वासव के अनुयायी हैं। इनका प्रभाव पूरे देश में फैला हुआ है और वाराणसी इस संप्रदाय का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। मराठा साम्राज्य के समय में जंगमों ने उत्तरी भारत में शक्ति और संपत्ति प्राप्त की और गरीब छात्रों तथा साधकों के लिए कई धर्मार्थ संस्थाएँ स्थापित कीं। इनका मुख्य केंद्र जंगमवाड़ी में है, जहाँ तांत्रिक साधु रहते हैं और अक्सर विचित्र और रहस्यमय अनुष्ठान करते हैं।

यह घटना लगभग 1923 के आसपास की है। उस समय मैं संस्कृत विद्यालय में एक प्रतिभाशाली छात्र और तंत्र साधना में नवोदित साधक माना जाता था। आध्यात्मिक जिज्ञासा के कारण बुजुर्गों ने मुझे विद्यालय के आमंत्रित मेहमानों में शामिल कर लिया।

गर्मियों का दिन था। उत्तर भारत की गर्मियाँ इतनी कठोर होती हैं कि उन पर कविताएँ नहीं लिखी जा सकतीं। तापमान 112°F (लगभग 44°C) तक पहुँच चुका था। दोपहर के लगभग तीन बजे, मैं संस्कृत विद्यालय के तीन वरिष्ठ छात्रों के साथ जंगमवाड़ी की ओर चल पड़ा।

जल्द ही हम जंगम मठ के चारों ओर जमा भीड़ में खो गए और अंततः एक बड़े आँगन (40×40 फीट) में पहुँचे। वहाँ 10×10 फीट के ताजे खुदे हुए गड्ढे में जलते हुए अंगारों का एक विशाल ढेर भयंकरता से धधक रहा था। अग्नि-अनुष्ठान चल रहा था। गर्मी इतनी असहनीय थी कि मैं गड्ढे के किनारे से कई फीट दूर खड़ा होने के बावजूद उसे सहन नहीं कर पा रहा था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि अनुष्ठान में भाग लेने वाले नंगे शरीर पर इतनी जलती गर्मी कैसे सहन कर पा रहे थे।

थोड़ी ही देर में वाद्यवृंद (बैंड) आया और भीड़ ने रास्ता बना दिया। इसके बाद मुँडित सिर वाले साधुओं का एक दल आया, जिनके हाथों में समारोह से संबंधित पूजनीय वस्तुएँ थीं। एक चाँदी की थाली में लाल मखमल के टुकड़े पर हरा नारियल रखा था। दूसरी थाली में स्वर्ण मुद्रा थी, और एक और थाली में मंडल का जटिल डिज़ाइन था।

कुछ मंत्रोच्चार और प्रार्थनाओं के बाद मुख्य पुजारी ने नारियल को अपने फैले हुए हाथ पर रखा। फिर उन्होंने एक रक्षक से तलवार झपटकर इतनी जोर से प्रहार किया कि नारियल एक ही वार में फट गया। फटे नारियल से पानी बहने लगा, जिसे अंगारों पर छिड़का गया।

इसके बाद मुख्य पुजारी ने उसी तलवार को हाथ में लेकर अंगारों के गड्ढे में प्रवेश किया, मानो वह गर्म कोयले नहीं, बल्कि नरम कालीन पर चल रहे हों। उनके अनुयायी भी उनके पदचिन्हों पर चले। पूरी टीम ने नंगे पाँव अंगारों के गड्ढे को पार किया, उनके भगवा वस्त्र हवा में लहरा रहे थे।

इसके बाद भीड़ को भी अंगारों पर चलने के लिए आमंत्रित किया गया। कुछ लोग झिझके, लेकिन कुछ ने बिना डरे पार कर लिया। मैंने भी हिम्मत जुटाई और अंगारों पर चलकर गड्ढे को पार कर गया।

फिर मंत्रोच्चार के साथ मैंने अग्नि के चारों ओर परिक्रमा की, जब तक कि एक साधु ने मुझे बाहर आने को नहीं कहा। उस क्षण में, मैंने अपनी घायल उंगली में लगातार हो रहे दर्द को महसूस किया, जो अभी भी रक्त से भीगी हुई थी।

तभी अचानक रात के आकाश में गूंजती आवाज़ आई, **"**जय माता**!"** और मेरी भगवा वस्त्रधारी महिला ने मुझे अपने वक्षस्थल से कसकर लगा लिया। उस आलिंगन में जो प्रेम और सुरक्षा थी, वह शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती।

(अब मुझे पता है कि तिब्बती टांका चित्र कितने सच्चे होते हैं।)

## एक रक्त बलिदान

आनंद का जयघोष उस कठिन अग्नि अनुष्ठान की सफल पूर्णता के सम्मान में था। अग्निकुंडों को उनकी हथेलियों से हटाया जाना था, लेकिन उन्हें हटाने से पहले सभा में एक अजीब सन्नाटा छा गया।

भगवा वस्त्रधारी महिला ने अपनी लंगोटी से कपास का एक टुकड़ा बड़ी सावधानी से फाड़ा। उस टुकड़े को कई छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित किया और उन्हें गोलियों का आकार दिया। फिर हर टुकड़े को मेरी घायल उंगली से बहते हुए रक्त में भिगोया गया। उन्होंने उन रक्त सनी गोलियों को अपने हाथों से सिर के ऊपर उठाकर जलते हुए अग्निकुंड में फेंक दिया।

मेरी पीठ उनके वक्षस्थल से सटी हुई थी, लेकिन तभी मेरी गर्दन के निचले हिस्से में, रीढ़ की हड्डी के समानांतर, ठीक बालों की रेखा के पास, एक बेल की शाखा का काँटा गहरे से चुभा। यह हमला इतना अचानक था कि मैं चीख भी नहीं सका; लेकिन मुझे दर्द का कोई अनुभव नहीं हुआ। उन्होंने चुपचाप मेरे रक्त की कुछ बूँदें एकत्र कीं। धीरे-धीरे मुझे अचेतना ने घेर लिया।

मुझे उनके बाँहों का आलिंगन महसूस हुआ... मुझे घर जैसा महसूस हुआ... भोर हो गई! मुलायम कपास के आवरण के साथ बिस्तर का वह परिचित स्पर्श, कमरे में फैली सुगंध, जिसे मैं बहुत अच्छी तरह पहचानता था; छत, दीवारें, और सबसे बढ़कर वह स्नेहमयी मुस्कान वाला चेहरा साकार होने लगा। उनके हाथ मेरी गर्दन के चारों ओर थे; उनका गाल मेरे गाल से लगा हुआ था।

"चलो, उठो। सूर्य उगने वाला है; और हमें महान देवता के दर्शन से पहले नदी में स्नान करना है। आओ, मैं तुम्हारी मदद करती हूँ।"

वह स्नान अत्यंत शांति देने वाला था। नदी से बाहर निकलने से पहले, उन्होंने मुझे अपने सामने खड़ा किया और कुछ वस्तुएँ पानी में फेंकीं। मैंने देखा कि रुद्राक्ष का मनका और राख से लदे गुड़हल के फूल बहते हुए दूर जा रहे थे। उन्होंने मेरे कंधे पर कोमलता से दबाव डाला और जब हम सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, तो उन्होंने कहा,

"तुम अभी तैयार नहीं हो... वे केवल प्रक्रिया को तेज कर रहे थे... कभी जल्दी मत करो... हर चीज का समय होता है... ऋतुओं का सम्मान करना चाहिए।"

(यह कहते हुए उन्होंने मुझे बहुत करीब से गले लगा लिया। उनके सुरक्षात्मक स्नेह ने मेरी नसों को शांत कर दिया...)

"तुम्हें बहुत दूर जाना है, बहुत दूर। क्या तुम्हें योगवासिष्ठ के पाठ याद हैं? मार्ग भटकने और पतन का शिकार होने में क्षण भर भी नहीं लगता। शत्रु चारों ओर हैं। प्रतिरोधक शक्तियाँ हमेशा मुख्य शक्ति के पीछे-पीछे चलती हैं, जब तक कि शिखर प्राप्त न हो जाए। सावधान रहना... हमेशा सावधान रहना... सावधानीपूर्वक तैयारी करो। सही तैयारी आधी लड़ाई जीतने के बराबर है। सही मार्गदर्शक खोजो। तब तुम तीन-चौथाई लड़ाई जीत चुके होंगे। बाकी तुम्हारे स्वयं के प्रयासों पर निर्भर करता है, दृढ़ संकल्प के साथ किए गए प्रयासों पर।

## बीज मंत्र ॐ

"कभी जिज्ञासु मत बनो। कभी प्रलोभित मत हो। शांति, शांति और स्थिरता। क्या तुम्हें विराम का महत्व याद है? शब्दों के बीच के विराम भावों को अधिक स्पष्टता से व्यक्त करते हैं। वह, अर्थात् भाव (वाक्), शब्द और शब्द के बीच के विराम में निवास करती है।"

"शांति और विराम वे दो चरण हैं जिनसे धीरे-धीरे प्रगति होती है। मौन ही सभी मंत्रों की सबसे बड़ी उपलब्धि है। जल्दी मत करो; हड़बड़ी मत करो; दुःख मत उठाओ; पीछे मत हटो। क्यों तुमने उस भटकाने वाली और नकारात्मक पुकार का उत्तर दिया? याद रखो, अतिथि स्वयं आते हैं, जब भोजन तैयार होता है। ये साधारण अतिथि नहीं हैं। ये भूखे, लालची और महत्वहीन हैं। लेकिन जो विशेष भोजन तैयार होता है, उसे इन अवांछितों से दूर रखना पड़ता है।

"सकारात्मक शक्तियाँ और नकारात्मक शक्तियाँ साथ-साथ चलती हैं; क्योंकि उन्हें भी भूख लगती है। क्या तुम नहीं जानते कि सभी पवित्र अनुष्ठान (देव-यज्ञ) विपरीत शक्तियों (असुरों) के लिए भी अर्पित किए जाते हैं?"

मैंने धीरे-धीरे मंत्र का उच्चारण करना शुरू किया:

"निहन्मि सर्वं यदमेध्यवत् भवेद् धाताश्च सर्वे-असुरा दानवाः मया।
रक्षांसि यक्षाश्च पिशाच सङ्घाः हताः मया यातुधानाश्च सर्वे।।"

("जो शक्तियाँ मेरे द्वारा आहूत बलों का विरोध करती हैं, उनका नाश मैं स्वयं करता हूँ। अतः असुरों, दानवों, राक्षसों, यक्षों, पिशाचों और यातुधानों का नाश होता है।")

"अपसर्पन्तु ते धूताः ये भूताः भूमि संस्थिताः।
ये भूताः विघ्न कर्ताराश्च ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।"

("वे सभी भूत-प्रेत जो भूमि में बसे हैं, जो विघ्न डाल सकते हैं, वे शिव की आज्ञा से दूर हो जाएँ।")

मैंने पूछा, "और वे उस शक्ति का क्या करते?"

उन्होंने गहरी निगाहों से मुझे देखते हुए उत्तर दिया, "कभी अच्छा नहीं। चोरी की गई शक्ति कभी अच्छे कार्य में नहीं लगती। 'शक्ति' का दुरुपयोग शांति और ईमानदारी के लिए ख़तरा है। यह अशुद्ध होती है, और इसका उपयोग सदैव बुरे

उद्देश्यों के लिए होता है। चमत्कारों के पीछे भागने वाले, अक्सर स्वार्थ और लालच में अंधे होते हैं। लेकिन ये झूठे चमत्कार क्षणिक होते हैं, और अक्सर असफलता और आध्यात्मिक पतन का कारण बनते हैं।

"माँ की शक्ति को चोरों और भोगियों द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता। जिन्होंने तुम्हें बुलाया था, वे तुम्हारी शक्ति चुराना चाहते थे। तुमने माँ का आभार मानो, जिसने तुम्हें बचा लिया।"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "आपने भी सही किया।"

फिर मैंने चिंतित होकर पूछा, "लेकिन मैंने वहाँ मौसी को देखा। क्या वह भी उसी दुष्ट जादू के प्रभाव में थीं?"

## अधर्म एक अंधी गली है

"अधर्म? अधर्म क्या है? धर्म क्या है?

हम सब धर्म और अधर्म के मिले-जुले मलिन मिश्रण हैं। एक अजीब मिलावट। जब तक हम धर्म का अनुभव नहीं करते, हम हैं क्या? सभी अहंकारों में सबसे बड़ा अहंकार है स्वयं की प्रशंसा और धार्मिकता में डूबे रहना। यदि तुम यह भूल करते हो, तो प्रगति के द्वार बंद कर देते हो।

योग में लक्ष्य है अहं को स्व में विलीन करना। स्व और अहं उसी तरह मिले हुए हैं जैसे अयस्क में सोना। योग का अर्थ है स्व को अहं से शुद्ध करने की कला प्राप्त करना। सिर को झुकाए रखना—यहाँ धर्म का अर्थ है निःस्वार्थ धर्म। ऐसा करने से हम धर्म के पथ पर बने रहते हैं। यह है सही तैयारी। जैसा कि मैंने पहले कहा था, सही तैयारी आधी लड़ाई जीतने के बराबर है।"

"तुम्हारी मौसी का सबसे सुरक्षित पहलू यह है कि वह निःस्वार्थ धर्म के लिए सिर झुकाए रहती हैं। लेकिन भ्रमित होना आसान है। क्या तुम्हें याद है खपर मंदिर में तुम कैसे वशीभूत हो गए थे? वहाँ की शक्ति बहुत प्रबल थी। लेकिन वह जल्दी ही ठीक हो जाएँगी, और उन्हें अपनी हानि का एहसास होगा। वह स्वयं महान योगिनी हैं। लेकिन महानतम भी कभी-कभी पतन का शिकार हो जाते हैं।

रावण महान योगी था; कंस, अश्वत्थामा, जरासंध, और रासपुतिन भी। लेकिन वे अपनी अपूर्णताओं और चमत्कारों के मोह के कारण गिर गए। प्रगति को कभी रोको मत। पहियों को पीछे मत घुमाओ, घड़ी को गलत दिशा में मत चढ़ाओ। पथ का अनुसरण करो। कोई शॉर्टकट नहीं, कोई समझौता नहीं।"

"क्या तुमने देखा कि समूह आसन में मौसी की स्थिति क्या थी?" उन्होंने पूछा।

"योगी उनका उपयोग अपने आसन के रूप में कर रहा था," मैंने उत्तर दिया।

"लेकिन मैं भी तो आपका आसन हूँ। इसमें अजीब क्या है?"

"यह सच है। लेकिन मेरे मामले में मैं दाता हूँ। उनके मामले में वह पीड़िता थीं, और उनसे शक्ति खींची जा रही थी। स्वेच्छा से समर्पण में धनात्मक लाभ की शक्ति है। देकर प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन बलपूर्वक शोषण में अधर्म है। यह उन्हें बहुत कमजोर छोड़ देगा। मैं तुम्हें कभी भी उनकी स्थिति में नहीं देखना चाहूँगी।"

बाद में, मैं मणिकर्णिका गया यह देखने के लिए कि मौसी का क्या हाल है। मुझे देखकर अच्छा नहीं लगा जो मैंने देखा। वह तीन दिनों से निरंतर आसन में थीं, बिना एक क्षण के विराम के। वहाँ रहने वाले श्मशान के सेवकों ने मुझे यह बताया।

"और वह योगी? क्या वह ऐसे ही बच निकलेगा?" मैंने पूछा।

"जल्दी या देर से, सभी को अपने कर्मों का फल मिलता है, जैसे जरासंध और अश्वत्थामा को कृष्ण से मिला था। अधर्म एक अंधी गली है। लौटना ही पड़ता है; लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम ऐसे लोगों से दूर रहो।"

"क्यों?" मैंने पूछा।

"क्योंकि तुम मूल रूप से मेरे हो... तुम धर्मात्मा हो... तुम धर्म का कार्य करोगे। कई लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं... तुम्हें बहुत मेहनत करनी है, और वह पाना है, जो कुछ ही को मिलता है... प्रेम। सभी का प्रेम।

अब वापस लौटने का समय है। घर चलो। मैं तुम्हारे लिए एक विशेष पेय तैयार करूँगी, जो तुम्हें बलवान बनाएगा। अब हमें प्रातःकालीन प्रार्थना में सम्मिलित होना है, और शांति के अंतिम आशीर्वाद को प्राप्त करना है।"

पतन की चेतावनी

इस अनुभव के अध्याय को समाप्त करने से पहले, मुझे यहाँ एक अजीब तथ्य दर्ज करना चाहिए। जिस स्थान पर साठ साल पहले मैंने यह अनुष्ठान देखा था, वह कभी व्यापार का समृद्ध केंद्र था। तारा अनुष्ठान को तीन लगातार वर्षों तक चलना था, और ऐसा हुआ भी।

लेकिन रहस्यमय कारणों से, वह स्थान अब निर्जन और बर्बाद हो चुका है। लोग अब भी उन तीन दुर्भाग्यपूर्ण वर्षों को याद करते हैं, जब मृत आत्माओं और श्मशान की देवी तारा को गृहस्थ क्षेत्र में आमंत्रित किया गया था। तारा अनुष्ठान उसके बाद बंद कर दिए गए।

मुझे पिता की भगवा वस्त्रधारी महिला को दी गई चेतावनी याद आई:

"तुम्हें पहले से ही बेहतर पता होना चाहिए था...."

## साँप वाला योगी और बाँसुरी

मेरे जीवन में कई बार मैंने ऐसे मुकाबले देखे हैं। ऐसी ही एक घटना का वर्णन मैं यहाँ करना चाहता हूँ।

कई वर्षों की रहस्यमय अनुपस्थिति के बाद, एक युवा व्यक्ति वापस आया, जिसे हम बहुत अच्छी तरह से जानते थे। वह अब माला और ललाट पर लाल चिह्न लगाए हुए, योगी के वेश में था। लेकिन अन्य योगियों के विपरीत, वह अपनी विधवा माँ के पास लौट आया था, जो अपने भटके हुए बेटे को वापस पाकर प्रसन्न थी। उसे इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी कि उसका आवारा बेटा अब एक गंभीर योगी बन गया था।

लोगों को आश्चर्य इस बात का था कि वह अपने बारे में बिल्कुल मौन रहता था, और उसे कभी आध्यात्मिक अनुष्ठानों में लीन नहीं देखा गया, सिवाय उसकी गूढ़ चुप्पी के। वह दिन भर केंदू के पत्तों में लपेटे हुए विशेष प्रकार के स्थानीय सिगरेट

बनाता था। वह इन्हें गट्ठों में सजाकर रखता, और ग्राहक मूल्य रखकर अपनी इच्छानुसार ले जाते। कोई बातचीत नहीं होती, क्योंकि सभी जानते थे कि वह बोलता नहीं था।

लेकिन एक दिन यह मौन भंग हुआ। एक युवा माँ उसके पास व्याकुलता में आई। उसके शयनकक्ष में एक कोबरा घुस गया था, और उसका शिशु उसी बिस्तर पर सो रहा था, जिस पर वह कोबरा कुण्डली मारकर बैठा था। क्या वह मदद करेगा? माँ ने आँसुओं भरी निगाहों से उसकी निर्लिप्त मुखाकृति को देखा।

वह निर्दयी चेहरा नहीं मुस्कुराया। वह तंबाकू की टोकरी नीचे रखकर चुपचाप उसके साथ चल पड़ा। उसने अपने सामान की कोई परवाह नहीं की। लोगों ने देखा कि वह बिल्कुल निडर था। वह बिस्तर के पास खड़ा हुआ, और कुछ क्षणों तक कोबरा को शांत भाव से देखता रहा।

फिर उसने कोबरा को गर्दन से ऐसे सहजता से उठा लिया, मानो वह गीली रस्सी हो। वह कोबरा को गोद में कुण्डली मारकर बैठा, और फिर सिगरेट बनाना शुरू कर दिया, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

कुछ समय बाद, नागा संप्रदाय का एक सपेरा योगी उसके पास आया, जो अपनी कद्दू वाली बाँसुरी बजा रहा था। सभी को आश्चर्य हुआ जब मौन योगी ने कड़क आवाज में कहा:
"आगे बढ़ो। परेशान मत करो।"

## गूंगा बोल उठा

लेकिन नागा साधु ने अहंकार के साथ बाँसुरी बजाते हुए मुकाबला स्वीकार किया। मौन योगी ने भी पीतल की बाँसुरी निकाली और जवाबी धुन बजाने लगा। यह कोई साधारण संगीत प्रतियोगिता नहीं थी, बल्कि एक रहस्यमय शक्ति-युद्ध की शुरुआत थी।

तभी नागा साधु ने भयंकर पीड़ा से पेट पकड़कर कराहते हुए धूल में लोटना शुरू कर दिया। यह एक मौन युद्ध था—अदृश्य शक्तियों की टकराहट, रहस्यमय संघर्ष। भीड़ ने भयभीत दूरी बनाकर यह दृश्य देखा। यह दो अजगरों की लड़ाई जैसा लग रहा था।

कुछ ही क्षणों में, मौन योगी पीठ के बल गिर पड़ा, मानो चिपक गया हो। उसके मुँह से खून झाग की तरह बह रहा था। वह काँप रहा था, दया का पात्र बन गया था। भीड़ का दिल सहम गया, लेकिन कोई भी उसके पास जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

तभी नागा साधु ने बाँसुरी को मुँह में गहराई तक धँसते हुए चिल्लाया और गिर पड़ा। खून बहने लगा और वह नीला पड़ने लगा, जैसे दम घुट रहा हो। उसने सड़क से धूल का कण उठाया और मौन योगी पर फेंका, तब जाकर उसे मुक्ति मिली।

लेकिन मौन योगी ऐसे तड़प रहा था जैसे हजारों मधुमक्खियों ने डंक मारा हो। उसे कपड़े उतारने पड़े। नागा साधु ने वे कपड़े उठाने की कोशिश की, लेकिन तभी कोबरा निकल आया और उसे डस लिया। नागा साधु मृत या मरणासन्न होकर गिर पड़ा। भीड़ स्तब्ध होकर देखती रह गई।

मौन योगी ने हाथ बढ़ाकर उसकी मदद की। कुछ मिनटों बाद नागा साधु अपने गठरियों के साथ चुपचाप चला गया। उसकी बाँसुरी मौन हो गई। मौन योगी फिर से सिगरेट बनाते हुए अपने कार्य में लग गया।

कोई कोबरा नहीं दिखा—जैसे वह माया हो। यह वही था जो भगवा वस्त्रधारी महिला ने कहा था: **"मुकाबला मिलना"**। नागा योगी को उसका मुकाबला मिल गया था। यह शक्ति का रहस्यमय युद्ध था। यह तांत्रिक शक्तियों का आमना-सामना था।

यह घटना स्पष्ट रूप से दिखाती है कि शक्ति और चमत्कार का दुरुपयोग कैसे विनाश की ओर ले जाता है। अधर्म हमेशा अंधी गली में ही समाप्त होता है।

## नया ब्राह्मण

इस बीच मैं पूरी तरह से दीक्षित हो चुका था और संस्कारात्मक ब्राह्मणत्व की अवस्था में प्रवेश कर चुका था। मैं सात व्रतों की वैदिक संहिता से बंधा हुआ था।

I. सत्य बोलो (सत्यं वद)।

कर्तव्य करो, और सिद्धांतों पर कायम रहो (धर्मं चरा)। जो सीखो, उसे करने से मत हटो (स्वाध्यायत मां प्रमदा)।

II. माता को दिव्य मानो (मातृ देवो भव)। पिता को दिव्य मानो (पितृ देवो भव)।

अतिथि देवो भव।

गुरु को दिव्य मानो (आचार्य देवो भव)।

इन दो व्रतों के प्रतीक के रूप में, मैंने उस दिन से अपने बाएं कंधे पर सूती धागे का एक गुच्छा बांध रखा था।

स्वाभाविक रूप से मुझे लगा कि मैं एक स्तर आगे बढ़ गया हूँ; और अब मैं रहस्यवादी प्रदर्शनों के कई निषिद्ध क्षेत्रों में प्रवेश का दावा कर सकता था, जो मुझे इतने लंबे समय से वर्जित थे।

इनमें से एक था माता की पूजा के प्रत्यक्ष अनुष्ठानों का अभ्यास। यह एक ऐसा क्षेत्र था जो विशेष रूप से तंत्र के पारंगत लोगों के लिए आरक्षित था। और मुझे अभी तक ऐसा नहीं माना गया था। हालाँकि मुझे अपने भगवा देवी के साथ अपने संबंधों से प्रोत्साहन मिला था, औपचारिक रूप से, मुझे कोई विशेष तांत्रिक दीक्षा नहीं दी गई थी। यह एक बहुत ही संवेदनशील स्थिति है। मुझे अभी तक कोई विशेष गुरु नहीं मिला था; और बिना किसी के मार्गदर्शन के, तंत्र और तंत्र अनुष्ठानों में हाथ डालना खतरनाक था। ऐसा नहीं है कि योगियों ने बिना किसी सहायता के प्रयासों के माध्यम से अपने शिखर तक पहुँचने का रिकॉर्ड नहीं बनाया है, फिर भी, मूल रूप से, इस तरह के मार्ग से बचना चाहिए। इसका मतलब है खतरा, जैसा कि लिविंगस्टोन के लिए अघोषित अफ्रीकी जंगलों में घुसना था, या मैगिलन के लिए अज्ञात समुद्री जंगलों में हिम्मत करना था।

# एक साहसिक रहस्य

तंत्र की दुनिया में जहाँ गहन चिंतन और एकाग्रता में एक जटिल तंत्र शामिल होता है, जैसे कि अभी तक अज्ञात तंत्रिका तंत्र, कोई भी क्रिया या गलत कार्य जिसमें चोट शामिल होती है, स्थायी रहने की संभावना होती है। मैंने लोगों को अपना मस्तिष्क-कार्य खोते, बोलते, सांस की तकलीफ से पीड़ित, यहाँ तक कि मस्तिष्क की धमनियों के फटने और मरते हुए देखा है। तंत्र किसी भी साहसिक कार्य को स्वीकार नहीं करता।

लेकिन एक धन्य योगी के लक्षणों में से एक यह है कि उसके कार्यों में साहसपूर्ण निर्भयता की विशेषताएँ होती हैं। उसके अंदर एक आग्रह होता है; और उसे आगे बढ़ना चाहिए। अगर गुरु है, तो ठीक है; लेकिन अगर वह नहीं है, तो उसके बिना भी; उसके आने का इंतज़ार करें; उसे आने दें। इस बीच वह आगे बढ़ता है, साहसपूर्ण और हमेशा साहसपूर्ण।

ऐसा आत्मघाती आवेग वास्तव में गलत और अनुचित है। लेकिन मैं युवा था, और सावधानियों के लिए रुकने के लिए बहुत उत्साहित था। शायद

केसर में महिला के प्रभाव, उसकी अदृश्य सुरक्षा के हाथ ने मेरे युवा हृदय को साहस दिया था। मैंने उस रास्ते पर चलने का साहस किया, जिस पर अकेले बहुत कम लोग चलते हैं, और उस समय मैं ऐसे दुस्साहस के लिए बिलकुल तैयार नहीं था।

पीछे मुड़कर देखने पर, जब मैं उन दिनों को याद करता हूँ, और उस अकथनीय दृढ़ निश्चय को, उस संकल्प को जो मैंने खुद को करने के लिए निर्धारित किया था, तो मुझे यह बताने का कोई कारण नहीं मिलता कि मुझे ऐसा क्यों करना पड़ा। मैं सांसारिक अर्थों में बिल्कुल अकेला था। मेरे रहस्य मेरे अपने थे। फिर भी मुझे हर समय ऐसा लगता था कि मैं अकेला नहीं हूँ।

वाराणसी की तत्काल नगरपालिका सीमा के बाहर (जिन दिनों की मैं बात कर रहा हूँ) एक बड़े पत्थर के किनारे वाले तालाब के चारों ओर एक प्रभामंडल है। चूँकि यह स्थान, जो तब एक निर्जन स्थान था, एकांत हुआ करता था, इसलिए कई ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध योगियों ने सदियों से इसे अपना निवास स्थान बना लिया था।

आज भी इस स्थान पर महान स्वामी भास्करानंद, माता लोकेश्वरी, गोस्वामी तुलसीदास की संगमरमर की समाधि जैसे यादगार और महान स्मारक हैं। पास ही नाव पर हमने चर्चित और प्रसिद्ध हरिहर बाबा को देखा, जो एक खामोश नग्न संत थे, जो एक जर्जर झोपड़ी में रहते थे, जो एक नाज़ुक नाव पर बनी थी। विदेशियों द्वारा लिखी गई कई किताबों में उन्हें मौनी बाबा (मौन संत) के रूप में संदर्भित किया गया है। वहाँ, एक उपवन के भीतर माँ दुर्गा का प्रसिद्ध मंदिर स्थित था, जहाँ आज भी नियमित रक्त बलि दी जाती है। मैंने इस स्थान पर एक लंबी तपस्या करने का फैसला क्यों किया, यह मेरे लिए अभी भी एक रहस्य है; लेकिन एक बार जब बुलावा आया, तो मैंने इसके लिए फैसला किया। आश्विन (सितंबर-अक्टूबर) के महीने में नौ दिनों के लिए यह मंदिर जीवंत हो जाता है, और भक्तों की भीड़ यहाँ आती है। पुरुषों और महिलाओं की अंतहीन धारा इस स्थान को गर्म, व्यस्त और दिलचस्प बनाती है। अगर कोई वहाँ पहुँचना चाहता था, तो विशाल भीड़ वास्तव में किसी भी तरह से आंतरिक एकांत को भंग नहीं करती थी। मैंने इस बहुत ही तांत्रिक स्थान पर नौ दिनों के चक्र के लिए प्रार्थना करने का फैसला किया। सबसे प्राचीन शहर वाराणसी में सबसे प्राचीन मंदिर स्थल इस मंदिर के ठीक दक्षिण में स्थित है, जो लगभग इसकी सीमाओं को साझा करता है। यह गणेश मंदिर है। मुझे इस परित्यक्त मंदिर का एकांत मंच मेरे अनन्य आसन के लिए उपयुक्त स्थान लगा।

आजकल पैसे और बहुमूल्य विदेशी मुद्रा के प्रति दीवानगी ने शहर के मुखियाओं को इस प्रभामंडल को एक पर्यटक आकर्षण में बदलने के लिए प्रेरित किया है। कुछ व्यापारियों को अपनी अचानक मिली संपत्ति को संगमरमर से गंगा पर सबसे ऊंचा स्थल बनाने में खर्च करना पड़ा, और इसे मानस मंदिर (तुलसीदास द्वारा लिखित हिंदी रामायण और सोलहवीं शताब्दी के एक शास्त्र चमत्कार के रूप में भारत में बहुत लोकप्रिय 'मानस' का मंदिर) कहा। पूरा मानस सफेद संगमरमर की दीवारों पर काले सीसे से उकेरा गया है, जिसमें वेनिस के कांच के दागों में कलात्मक रूप से ढाले गए रंगीन चित्रण हैं। आधुनिक 'पर्यटक' प्रेरित लेआउट और एक गलत तरीके से बनाई गई संरचना की अश्लील समृद्धि के सामने, प्राचीन मंदिर की पवित्रता और शांत भव्यता अब पूरी तरह से भंग हो गई है। लेकिन वाराणसी की सबसे प्राचीन चीज, सदियों पुराने गणेश, इस आधुनिक रूप से काफी संतुष्ट और उदासीन प्रतीत होते हैं। मेरी समस्या यह थी कि मैं अपने परिवार की नजरों से खुद को दूर रखूं। नवरात्रि के दिन, जैसा कि इन नौ दिनों को कहा जाता था, हमारे घर के लिए बहुत व्यस्त समय हुआ करता था, वास्तव में इतना व्यस्त कि किसी को भी किसी लापता लड़के के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन मेरी माँ को मेरी याद आती थी। इसलिए मुझे उन्हें विश्वास में लेना पड़ा। बेशक, उन्हें बहुत आश्चर्य नहीं हुआ। शायद उन्हें यह समझ में नहीं आया। उन्होंने बस अपने बेटे द्वारा प्रस्तावित तपस्या के लिए अपनी स्वीकृति व्यक्त की। मैंने उन्हें इसे गुप्त रखने के लिए बाध्य किया। उन्होंने, अपने तरीके से, हमेशा मुझे किसी भी आध्यात्मिक खोज में प्रोत्साहित किया।

## योग का कठिन मार्ग

प्रार्थना में कठोर अनुशासन शामिल था। अपने दैनिक आहार के बारे में सावधान रहने और अपनी नींद को सीमित करने के अलावा, मुझे पूरे समय कमल के आसन में क्रॉस-लेग्ड बैठने के लिए व्यवस्थित होना था। इसमें कई तरह के खतरे शामिल थे: चींटियाँ, मक्खियाँ, हवा के अचानक झोंके; यहाँ तक कि सरीसृप भी दिखाई दे सकते थे। यह स्थान खुद ही जांच करने वाले और हस्तक्षेप करने वाले बंदरों से भरा हुआ था। मुझे इन सभी बाहरी चुनौतियों का सामना करने के लिए खुद को तैयार करना था। एक बार जब मैंने आसन पर बैठने का संकल्प ले लिया तो उससे कोई विचलन नहीं हो सकता था। अपने योग सूत्र में महर्षि पतंजलि ने साधक को सख्त निर्देश दिया है कि आसन कैसे और कहाँ लगाना है। गीता ने भी ऐसा ही किया है। लेकिन मैं उस प्रभामंडल वाले स्थान से मोहित हो गया। वहाँ योगी बैठे होंगे। यह एक सिद्धासन था, यानी, एक ऐसा आसन जो पहले से ही पवित्र हो चुका था। मैंने पतंजलि को प्रणाम करने, उनसे आदरपूर्वक दूर रहने तथा अपने विश्वास और दृढ़ निश्चय पर भरोसा करने का निर्णय लिया।

मुझे अपनी प्रार्थनाएँ एक पुस्तक से पढ़नी थीं, जिसे मुझे इस तरह रखना था कि अनुष्ठान या तपस्या के दौरान पृष्ठों को पलटने के लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता न हो। मेरी बाईं हथेली पर घी से भरा एक दीपक जलता था, जिसे मैं तब तक नहीं रखता था, न ही बुझाता था, जब तक मैं अपनी प्रार्थना पूरी नहीं कर लेता।

यह ध्यान और एकाग्रता के लिए एक कठोर परीक्षा थी। लेकिन मैंने खुद ही इसे अपने ऊपर लाने का फैसला किया था।

सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था। पहला दिन बहुत कठिन दिन था। हवा तेज़ थी। जगह मक्खियों से भरी थी। मेरी नम त्वचा पर मक्खियाँ असंख्य की संख्या में बैठती थीं; और फर्श पर चींटियाँ, चींटियाँ....

लेकिन जब मैं घर लौट रहा था, तो मैं अपने आप से बहुत संतुष्ट था, दूसरा दिन बहुत अधिक शांत और आसान था। शुरुआती लोगों के झटके अब नहीं थे; लेकिन हवा और दीपक ने अपना टकराव जारी रखा।

मैं तीसरे दिन पूरी तरह से अपने आप पर छोड़ दिया गया था। तेज हवा चली; लेकिन दीपक शांत रहा; मक्खियाँ और चींटियाँ वहाँ थीं; और परेशान करने वाले अपरिहार्य बंदर। लेकिन किसी तरह मुझे लगा कि मैं उनका मित्र बन गया हूँ और यहाँ तक कि मेरी त्वचा को उनके छूने से भी कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं पूरी तरह से अपनी प्रार्थना में लीन था...... सर्व वधा विनिर्मुक्त: (सभी बाधाओं से मुक्त, जैसा कि प्रार्थना में ही आश्वासन दिया गया था)।

लेकिन समय-समय पर मुझे एक उपस्थिति का एहसास होता था। कभी-कभी एक पंखे जैसी हल्की हवा मेरी त्वचा पर बहती थी; और कभी-कभी मैं अपने पाठ के साथ ताल मिलाते हुए किसी और की आवाज़ भी सुन सकता था।

मैं तब तक इतना जान चुका था कि मित्रवत या अमित्र घटनाओं से इस तरह की गड़बड़ी की उम्मीद कर सकता हूँ। तपस्या के तहत इस तरह की विचलित करने वाली व्यस्तताओं को, चाहे वे मित्रवत हों या अमित्र, विचलन के रूप में पहचाना जाना चाहिए; गड़बड़ी के बिंदु। सभी बाहरी चीजों का अंत हो जाना चाहिए। समाधि की अवस्था में 'मैं' का 'मैं' के साथ होना; स्वयं का स्वयं के साथ होना; जागरूकता का जागरूकता के साथ होना जरूरी है। यह मृतकों की निष्क्रियता नहीं है; यह इतनी अधिक गतिविधि वाला है कि यह स्थिर दिखता है, जैसे विशाल बादल शांत आकाश में तैर रहे हों। वे जितने ऊपर जाते हैं, उतने ही शांत दिखते हैं। वास्तव में अंतरिक्ष में ये विशेषताएं अत्यधिक क्रिया के तंत्रिका केंद्र हैं।

## ब्रह्मांडीय सामंजस्य

"जबकि तत्वमीमांसक और तर्की (दार्शनिक) इस पर तर्क करते हैं, और कई किताबें लिखते हैं, अध्यात्मवादी अकेले ही इसका 'अनुभव' करते हैं और जो वे अकेले 'कर' सकते हैं, उसे 'कर' कर अपनी बात साबित करते हैं। वे इस अनुभव के बारे में बात करना या लिखना बिलकुल पसंद नहीं करते.... 'कृपया मुझसे मेरे उस अनुभव को समझाने के लिए न कहें, मेरे मित्र, जितना अधिक मैं समझाता हूँ, उतना ही उसका एहसास हमेशा के लिए नया होता जाता है'... क्या विद्यापति ने ऐसा नहीं गाया था?

"वह अद्भुत गाँठ जो इस सार्वभौमिक परिवेश को एक इकाई के रूप में एक साथ रखती है, वह एक सत्य है, एक सार्वभौमिक सत्य। साधक अंततः खोज और ज्ञान प्राप्त करता है। जो बहुत अधिक जानने के बारे में सोचता है, उसके पास खोजने के लिए कुछ नहीं होता। अनुभव उसे भ्रमित करता है। सत्य बात करने वाले की पकड़ से दूर रहता है।

"पदार्थ (वस्तु, पदार्थ) की अंतिम प्रकृति परम भौतिकविदों को भी चकित करती है। क्या पदार्थ गैसीय है, ठोस है, तरल है, लचीला है, बंधनेवाला है या लोचदार है? यह ज्ञात नहीं है। यह ज्ञात नहीं है कि परमाणुओं के क्षेत्र में एक परमाणु और दूसरे के बीच जो कोठरियाँ बनती हैं, उनमें क्या भरा होता है? विकिरण? क्या विकिरण होता है? कैसे? उच्च भौतिकी में यह सबसे कठिन चुनौती है। फिर भी, हमारे प्राचीन लोग, जैसे बुद्ध, नागार्जुन, उनसे पहले के अन्य जिनों ने शून्यता, या स्थान की बात स्वयं-चेतन, स्वयं-आवेशित, स्वयं-प्रकाशित के रूप में की थी। सकरी का क्षेत्र वह अंतिम स्रोत है जहाँ से सभी रूप, क्रिया-प्रतिक्रियाएँ, प्रधानता-परम, बुद्धि, भाग्य और इसी तरह की अन्य चीज़ें निकलती हैं। अनुभव किए गए इस सत्य को बोधि कहा जाता है। यह तर्क से परे है। सत्य अनुभव-संवेदित है।

"परम बिंदु चढ़ाई करके प्राप्त किया जा सकता है; एक बार वहाँ पहुँचने के बाद, सारा विश्व परिवेश आँखों के सामने एक खिलौना संग्रहालय, एक खेल-घर, एक विशालकाय बच्चे के मनमौजी खेल-प्रभावों के रूप में फैल जाता है।

“तुम्हारे भीतर का ‘मैं’ ही एकमात्र प्रमुख सत्य है-प्रमुख और स्वतंत्र। वह उस एक केंद्र बिंदु: 'मैं' के बाहर बाकी सब के प्रति उदासीन है। '1' ही प्रबल है। अकेलापन इसका साथी है; और मौन इसकी भाषा है।

“आश्चर्यचकित मत होइए। कोई संदेह मत रखिए।

“मैं जो वर्णन कर रहा हूं, उसमें मैं रहता हूं। यह अनिवार्य रूप से और अंतरंग रूप से मेरा अनुभव है। यह आपका या किसी और का नहीं हो सकता। इसे अनुवादित, प्रसारित, यहां तक कि साझा नहीं किया जा सकता है। यह व्यक्ति की अपनी उपलब्धि, सिद्धि, विजय, पूर्ति होनी चाहिए। चेतना का यह अंतिम चरण एक एकल तत्व के भीतर एक प्रज्वलित चिंगारी की तरह कार्य करता है। कुछ इसे इलेक्ट्रॉन के रूप में पहचानते हैं; हम इसे शिव के भीतर शक्ति, परमाणु के भीतर इलेक्ट्रॉन के रूप में पहचानते हैं। वह परमात्मा-ईश्वर नहीं, बल्कि देवत्व, चैतन्य या अतिचेतनता विश्व परिवेश का बहुत आवश्यक हृदय-धड़कन है। यह सबका केंद्र है। व्यक्तिगत जीवन में यह प्रेम है; नहीं, मैं व्यर्थ नहीं बोल रहा हूँ... "हम जो इसे देखते हैं, और इसे महसूस करते हैं, रात के आकाश की तरह चुप और दूर रहते हैं। हम उस व्यक्ति की तरह बात करने में असमर्थ हैं जो चीजों को बहुत तार्किक रूप से, बहुत विस्तार से, विश्लेषणात्मक और खंडित रूप से जानता है। लेकिन उनका ज्ञान एक अलग तरह का है।

## एक संकेत: एक मित्र

प्रार्थना समाप्त हो गई, और मुझे बहुत खुशी महसूस हुई।

तभी मैंने एक उपस्थिति महसूस की। वास्तव में कोई मुझे साथ रख रहा था।

मुझे इस रमणीय व्यक्ति का वर्णन करना चाहिए।

भारतीय व्यक्ति, पठान जैसी बनावट के लिए नहीं जाने जाते हैं, न ही स्कॉटलैंड के हाइलैंडर्स के लिए। भारतीय आँखें छोटे आकार और हल्के वजन के तुच्छ आकृतियों को देखने की आदी हैं। यह छोटा आदमी लगभग एक परी देवदूत की आत्मा से ढका हुआ था, क्योंकि उसके चारों ओर प्रकाश छाया की तुलना में अधिक शिक्षाप्रद और पहचान देने वाला लग रहा था। उसका सिर मुंडा हुआ था, लेकिन सुडौल था और ऊपर की ओर घुंघराले बालों का गुच्छा बंधा हुआ था। वह सुनहरे रंग का सादा सूती कपड़ा पहने हुए था और उसका ऊपरी शरीर उसी कपड़े के एक टुकड़े से ढका हुआ था, जो उसकी कांखों में बंधा हुआ था और उसकी छाती पर इकट्ठा था। वह उस पोशाक में बहुत व्यावहारिक लग रहा था। उसका माथा चमकीले चंदन के लेप से ढका हुआ था; और उसके गले में उसने सुगंधित चंपक (मेचेलिया चंपाका, मैगनोलिया का एक परिवार) की ताजा माला पहनी हुई थी, जो उस मौसम का बहुत दुर्लभ फूल है। उसने अपने गले में पवित्र रुद्राक्ष और मूंगे और लाल क्रिस्टल के मिश्रण की माला भी पहनी हुई थी उसके पास एक हैंडल वाला पानी का घड़ा था, और एक बांस की छड़ी जो उसके अपने आकार जितनी ही लंबी थी।

यह कोई ब्रह्मचारी भिक्षुक, वैष्णव संप्रदाय का कोई घुमक्कड़ योगी ही था, और कोई नहीं। मैं उसकी उपस्थिति से आश्चर्यचकित था।

वह मेरी ओर देखकर मुस्कुरा रहा था; और उसने मेरा अभिवादन किया। "तुम्हारा पढ़ना कितना अच्छा है," उसने कहा। "बिल्कुल सही समय पर.... और तुम कितनी लगन से पाठ कर रहे थे। जाहिर है कि तुम जो पढ़ते हो उसे समझते हो।"

एक जानकार व्यक्ति से ऐसी प्रशंसा से भ्रमित होकर मैं केवल इतना ही कह सका, "क्या मैं समझता हूँ? यह दुर्गा सप्तसती है। इसे समझना इतना आसान नहीं है।"

बातचीत रुक-रुक कर चल रही थी; मानो एक को दूसरे का अहसास हो रहा हो। लेकिन मैं स्वाभाविक अच्छाई भी महसूस कर सकता था। वह मिलनसार था और मेरी मदद करने का इरादा रखता था। लेकिन वह कौन था?

मैं उससे नहीं पूछूंगा। मैंने प्रतीक्षा करने की कला सीख ली थी।

लेकिन उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा।

जब मैंने खुद को और अपनी चीजों को समेटा और घर की ओर वापस चल पड़ा, तो मैंने पाया कि वह भी मेरे पीछे आ रहा था।

“क्या तुम मेरे रास्ते जा रहे हो?”

“तुम्हारे रास्ते?”

“तुम्हारे रास्ते?”

उसकी शरारती आँखें मज़ाकिया मज़ाक में चमक उठीं।

“क्या तुम उसे पहले ही ढूँढ़ चुके हो?”

वह मुस्कुरा रहा था।

मैं शर्मिंदा होकर बोली, “नहीं। मुझे माफ़ करें। मैं सिर्फ़ पूछ रही थी....”

“चलो दोस्त बन जाएँ। ठीक है? इससे ज़्यादा कुछ नहीं। प्रार्थना कितने दिन चलेगी?”

“पूरे नौ दिन। माँ की मर्जी।”

“यह बहुत उत्साहवर्धक है.... मुझे कभी भी इतने भाव से ऐसा पाठ सुनने को नहीं मिलता, खास तौर पर किसी नए ब्रह्मचारी से।”

“तुम्हें कैसे पता कि मैं नया ब्रह्मचारी हूँ?”

“ओह, संकेत तो हैं। संकेत तो हैं; उदाहरण के लिए तुम्हारे नए उगे बाल।”

“ब्रह्मचारी के लिए बाल एक संकेत हैं! यह वाकई एक नया सिद्धांत है।” मैं हँसी। “तुम एक खुशमिजाज़ चूमी हो। हम दोस्त हैं।”

"क्या हम हैं? अब इसे पकड़ो।" उसने मुझे एक मिश्री का टुकड़ा दिया, एक समान कुटीर प्रकार का, एक सुगंधित ठोस क्रिस्टल। इसे मिसरी के रूप में जाना जाता है। अभी मेरा उपवास तोड़ने का समय नहीं हुआ था, मुझे अपनी माँ को रिपोर्ट

करना था; परिवार के देवता को अपनी दैनिक प्रार्थनाएँ पूरी करनी थीं। इसलिए मैं इस बात पर ध्यान केंद्रित कर रहा था कि मिश्री के क्रिस्टल को कैसे संग्रहीत किया जाए। पल भर में समलैंगिक ब्रह्मचारी वहाँ से गायब हो गया। मुझे यह अजीब नहीं लगा; लेकिन मुझे यह मज़ेदार लगा। वाराणसी की गलियाँ ऐसी हैं कि कोई आसानी से कहीं भी छिप सकता है, या जल्दी से भाग सकता है। लेकिन मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ जब शाम को मैं गंगा के किनारे एक बुर्ज (स्थानीय भाषा में बुर्ज) पर केसर में अपनी महिला से मिला। "तो आपको आज अपने पढ़ने के अभ्यास में कोई कठिनाई नहीं हुई," अचानक पूछताछ थी। लेकिन उसकी आँखों में साथ देने वाली अजीब मुस्कान सबसे दिलचस्प थी। "तो," मैंने कहा, "तुम इस सब के पीछे थे...." "तुम्हारा क्या मतलब है कि मैं इस सब के पीछे था, छोटे ब्रह्मचारी?", उसने उकसाने वाली टिप्पणी की। "मैं यहाँ हूँ। मैं नारियल के गोले बेचता हूँ। कभी-कभी मैं गाता हूँ। लेकिन तुम एक उभरते हुए योगी हो, जो तपस्या में लगे हुए हो।" मैं तुरंत ही नाराज़ हो गया। "लेकिन तुम मेरे प्रयासों का मज़ाक उड़ा रहे हो।" मैंने विरोध किया। उसकी बेपरवाह मज़ाक-मस्ती ने मेरी आँखों में आँसू ला दिए। मेरा वास्तव में कभी भी उसे नाराज़ करने का इरादा नहीं था। "मुझे लगा कि तुम प्रसन्न होगे। क्या तुम्हें कुछ और लगता है?" "तुम मुझसे पूछते हो, और मैं रुक जाता हूँ।" "इसके विपरीत मैं प्रसन्न हूँ," उसने मुझे गले लगाया; और सब कुछ भूल गया।

## योग क्यों?

अगले दिन अनजाने में मैं उसे ढूँढता रहा। जब वह नहीं आया, तो मैंने अपना पाठ शुरू किया। लेकिन फिर से अभ्यास के बीच में, उसी उपस्थिति, उसी सुगंध, उसी हवा के प्रभाव ने मेरा ध्यान आकर्षित किया; लेकिन मैं अविचलित रहा, और अपना पाठ जारी रखा, एक बाल भी नहीं हिला, एक ढक्कन भी नहीं हिलाया।

वापस आते समय मैंने उससे पूछा कि क्या पूर्ण स्वतंत्रता के उस परम आनंद का अनुभव करना संभव है, जो सभी योगियों का एकमात्र उद्देश्य है।

उन्होंने पूछा, “क्या आप निश्चित हैं,” “कि यह सभी योगियों का एकमात्र उद्देश्य है? बहुत निश्चित मत होइए। आपके लिए यह जानना आवश्यक है कि योगियों के बीच उद्देश्य बहुत भिन्न हैं।

“कुछ लोग प्रकाश की तरह होते हैं। दीपक की बाती खुद जल जाती है, लेकिन चारों ओर प्रकाश देती है। उसका पूरा जीवन और जीवन चारों ओर प्रकाश और शांति पैदा करने से प्रेरित होता है। पंसारी को देखो। उसका उद्देश्य भी अपने द्वारा संग्रहित चीज़ों को चारों ओर वितरित करना है। लेकिन ऐसा करने में वह अभी भी एक और गहरा उद्देश्य रखता है; लाभ, जो इस प्रक्रिया में अपने परिवार को पालने के लिए बुरा नहीं है। लेकिन कुछ लोग लूटना चाहते हैं, और बहुत अधिक लूटते हैं; और दूसरों के दुख की कीमत पर संचय करते हैं। गाय को देखें। हम उसे भूसा, घास और अधिकांश चीजें देते हैं जिन्हें हम धरती का बचा हुआ या अपना बचा हुआ मानकर अस्वीकार कर देते हैं। फिर भी वह जो देती है वह अमृत, शक्ति, जीवन शक्ति, जीवन का मूल दूध है। मधुमक्खी को देखें। सराहनीय धैर्य, शोध, अनुशासन और दृढ़ता के साथ मधुमक्खियां शहद का विशाल भंडार जमा करती हैं। वे कभी भी वितरण के उद्देश्य से ऐसा नहीं करती हैं, जैसा कि दीपक या गाय करती हैं। क्योंकि मधुमक्खी लूटती है, इसलिए बदले में उसे भी लूटा जाता है। चूंकि मधुमक्खी केवल अपने उपयोग के लिए संग्रह करती है, और दूसरों के बारे में उसका कोई ध्यान नहीं होता, इसलिए उद्देश्य खुशी से जुड़े नहीं होते हैं।

“मधुमक्खियां मजदूर हैं; कर्मचारी नहीं। उन्हें उनके भाग्य पर बेच दिया जाता है। वे अपने काम का आनंद लिए बिना गुलामी करती हैं।

"केवल स्वार्थ के लिए लाभ कमाना, केवल अपने हितों की चिंता करना ही सुख के वास्तविक स्रोत को दबाने का सबसे पक्का साधन है।

"कंजूस को देखो। उसका भी उद्देश्य धन इकट्ठा करना है, या जिसे वह धन समझता है। लेकिन उसे खर्च करने का भय है। उद्देश्य वास्तव में बहुत स्पष्ट होने चाहिए। जितना अधिक उद्देश्य स्वार्थ को पीछे धकेलता है, उतना ही अधिक मनुष्य का कार्य सुख का स्रोत बन जाता है। यह सत्व गुण, आध्यात्मिक मन की प्रकृति है। यह समग्र योग की वास्तविक प्रकृति है।

"शायद अब आपके लिए यह कल्पना करना और स्वीकार करना बहुत कठिन नहीं होगा कि अपने स्वयं के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में पुरुषों के उद्देश्य समान नहीं हो सकते। योगी भी मनुष्य हैं। कई योगी हैं; लेकिन वे सभी मनुष्य हैं, मनुष्य जो उन्हीं शत्रुओं से परेशान हैं जो सभी मनुष्यों को परेशान करते हैं। आप मनुष्यों के शत्रुओं को जानते होंगे। इच्छा, जुनून, लालच और बेलगाम गुस्सा। ये अच्छे को बुरे और बुरे को अच्छे में मिला देते हैं। घमंड, अहंकार और ईर्ष्या, ये सभी बहुत प्रबल शत्रु हैं; लेकिन एक दिन आपको यह एहसास होगा कि इच्छा, शक्ति की लालसा, वस्तुओं और सम्पत्तियों की लालसा, सामान्य रूप से पुरुषों के साथ और विशेष रूप से विपरीत लिंग के साथ अंतरंगता की लालसा, जीवन में आनंद के सबसे भयानक शत्रु हैं।

## योग एक बलिदान है

“योगी भी कुछ शक्तियों को प्राप्त करने के लिए अपने जीवन का कार्य समर्पित करते हैं। कुछ लोग दीपक की तरह दूसरों के लिए अच्छा बनने के लिए खुद को जलाने की शक्ति की तलाश करते हैं। वे चारों ओर खुशी फैलाते हैं और लोगों को सही रास्ते पर ले जाते हैं। कुछ लोग फिर से लोगों को प्रभावित करने और प्रभावित करने के लिए शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, और सांसारिक लोगों पर अधिक शक्ति का प्रयोग करते हैं, आम लोगों को प्रभावित करते हैं, जिन्हें वे अपने स्वार्थों के माध्यम से पीड़ित करते हैं। कुछ लोगों के पास फिर से शक्ति है, लेकिन वे कभी भी जनता के काम में शामिल नहीं हुए हैं। कुछ लोग कभी दिखाई भी नहीं देते हैं और फिर भी वे अपने अस्तित्व से, अपने ध्यान देने योग्य शक्तियों के अच्छे आचरण को प्रभावित करते हैं। वे अच्छे लोगों की सहायता करते हैं, जो अच्छी और पवित्र आत्मा के प्रभाव में, बहुत अच्छा करते हैं। बुरी शक्तियों से भारी खतरे के बावजूद सभी सृष्टि के अच्छे गुणों के सार को संरक्षित करना, उन आध्यात्मिक प्राणियों का मुख्य कर्तव्य है जो इस उद्देश्य के लिए काम करते हैं, लेकिन जिन्हें शायद ही कभी काम करते देखा जाता है। कोई गलती मत करो, चाहे आप उन्हें देख सकें या नहीं, चाहे आप उनसे पूछें या नहीं, चाहे आप उनकी भागीदारी को तर्कसंगत बनाने में सक्षम हों या नहीं, वे वहाँ हैं; वे वहाँ हैं जैसे कि आपके तत्काल ज्ञान से परे अरबों और खरबों ग्रह हैं; फिर भी ये सौर मंडल को प्रभावित करते हैं; है न?

“अरबों ब्रह्मांडीय किरणें, ध्वनि तरंगें, ईथर में सूक्ष्म कंपन और यहां तक कि आगे के सूक्ष्म तथ्य (जो व्यावहारिक लोगों की धारणा से परे हैं, लेकिन जो अधिक गहरी धारणा वाले लोगों द्वारा देखे जाते हैं), सृष्टि को प्रभावित करते हैं। ब्रह्मांडीय प्रणाली में व्यस्त, एक शक्ति परमाणुओं के सूक्ष्म शरीर को चार्ज करती है। एक व्यस्त तेज क्रिया क्षेत्र, जिसमें क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं एक-दूसरे पर हमला करती हैं, अंततः उस ठोस रचना के रूप में उभरती हैं जिसे हम देखते हैं। ऐसा लगता है जैसे इसका भी अपना दिमाग है। यह सब अनदेखा, ध्यान देने योग्य नहीं है; और इसलिए आम आदमी, साथ ही साथ पुष्ट सुखवादी शायद ही इसकी परवाह करेंगे। उनके पास आवश्यक संतुलन और धैर्य की कमी है।

“फिर भी यह अध्यात्मवादियों के लिए सटीक क्षेत्र प्रस्तावित करता है। वे ही हैं जो इस विषय में गहनता से खोजबीन में लगे हुए हैं। अपने दृढ़ प्रयासों से वे इस अमूर्त क्षेत्र में व्याप्त विरोधाभासों के बीच एक तालमेल, एक सामंजस्य स्थापित

करने का प्रयास करते हैं। वे 'संतुलन' समता, संतुलन, संतुलन की पूजा करते हैं। जो बहुत कुछ जानने के बारे में सोचता है, उसके पास खोजने के लिए कुछ नहीं होता। अनुभव उसे भ्रमित करता है। सत्य बात करने वाले की पकड़ से दूर रहता है।

## "रात' और 'दिन'

"उनके लिए ज्ञान दिन का उजाला है। वे शायद ही यह समझ पाते हैं कि मात्र ज्ञान एक मृत शिशु है; एक अंधी गली। अनुभव के बिना ऐसा ज्ञान जिसे दिन का उजाला कहा जाता है, वास्तव में एक अंधी और घनी रात है। पुस्तककार अंधकार में रहता है। तर्कशास्त्री इसे दिन कह सकते हैं। प्रकाश लेकिन वास्तव में और उपयोग में यह रात है, अपारदर्शी। दर्शन के माध्यम से देखना, पुस्तकों के पन्नों से परे है। अनुभव वास्तविकता है, और वास्तविकता

अनुभव है। "ज्ञान एक ऐसा साधन है जो प्रगति में सहायता करता है लेकिन न तो प्रगति है, न ही लक्ष्य की प्राप्ति। प्राप्ति एक आदर्श भावना की परिणति है; और प्रेम इसकी अंतिम प्रतिक्रिया है।

"गीता में वह श्लोक याद है? रहस्यवादी रात और दिन वाला? जब यह योगिक दृष्टि सो जाती है (जैसा कि विष्णु अपने अनंतशयन में करते हैं), 'रात' 'दिन' बन जाती है। यह योगी का स्वर्ग है; उसकी उल्लासित समाधि। अयोगी चिल्लाता है, मैंने देखा है; मैंने जाना है; मैंने खोज की है' आदि। लेकिन उसने कोई अनुभव प्राप्त नहीं किया है। वह अँधेरे में है।

## ब्रह्मांड का नागरिक

"और फिर भी, जैसा कि मैं कह रहा था, एक ब्रह्मांडीय बंधन है; एक रिश्ता। मैं आपको यह समझाने के लिए एक चित्र बनाता हूँ कि यह ब्रह्मांडीय बंधन कितना गहरा, अचूक और अपरिहार्य है। जब अंतरिक्ष में एक तारा अपनी कक्षा से चूक जाता है, और नीचे की ओर तेज़ी से गिरता है जब तक कि वह विघटित होकर अंतरिक्ष के जंगल में गायब नहीं हो जाता, तो उसकी पीड़ा इस धरती पर घास के सबसे दूर के तिनके द्वारा दर्ज की जाती है। एक ओस की बूंद समुद्र के संगीत को सुनती है, साथ ही नमी की ब्रह्मांडीय नदियों की धाराओं को भी सुनती है जो सौर गर्म गर्मी से निकलती हैं। अपनी माँ के मृत शरीर को देख रहे एक व्यथित बच्चे की चीख एक नेबुला को भेदती है, और आकाश पीड़ा में काँप उठता है, और एक तारा पैदा होता है। हाँ, यहाँ आत्माओं को परेशान करने वाली घटनाओं और ब्रह्मांडीय आत्मा के बीच एक अंतर्निहित लेकिन अचूक संबंध है।

"हम सभी ब्रह्मांड के नागरिक हैं। त्रासदी यह है कि हमने न केवल अपना पता खो दिया है, बल्कि इसे खोने की थोड़ी भी चिंता नहीं करते। हम जीवन के सागर में भटक रहे हैं; और फिर भी हम अपनी सच्ची दिशा खोजने के बारे में बहुत कम चिंता करते हैं। अब समय आ गया है कि हम जागें और खुद देखें कि हमने अपनी दिव्य विरासत के साथ क्या किया है।" जैसे-जैसे वह कमज़ोर, छोटा, देवदूत जैसा अजनबी खुद को उंडेल रहा था, मुझे लगा कि उसकी नश्वर सीमाएँ लगभग बदल गई हैं और उसका रूप बदल गया है। वह अपने श्रोताओं को लुभाने की कला में माहिर लग रहा था। ओह! उसके जोशीले वर्णन की ज्वलंत तात्कालिकता, और उन्हें अपनी सोच के स्तर तक ऊपर उठाना। उसके वर्णन की इस व्यक्तिगत शैली ने सभी अमूर्तताओं को धीरे-धीरे उनके रहस्यों से पर्दा उठाने पर मजबूर कर दिया। समझ एक सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया है।" मैं सुनता रहा- मंत्रमुग्ध, मंत्रमुग्ध, रोमांचित।

# शक्ति के स्रोत

विज्ञान की महान शक्तियाँ अक्सर केवल सांसारिक जीवन में उनके स्पष्ट उपयोगों के लिए जानी जाती हैं। हालाँकि यह शक्ति मानव की तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए उपयोगी है, लेकिन जब हम इस शक्ति के अनंत स्रोत की विशालता पर विचार करते हैं, तो हमें यह एहसास होता है कि जो शक्ति हम अपने सांसारिक जीवन में उपयोग कर रहे हैं, वह उस असीमित शक्ति के सामने नगण्य है जो वास्तव में उपयोग में लाई जा सकती थी।

क्या तुम समझते हो कि यह संपूर्ण सृष्टि और उससे परे भी शक्ति से भरी हुई है? और यह सारी शक्ति व्यर्थ जा रही है? हम इस शक्ति का उपयोग खिलौने, यंत्र और सैन्य उपकरण बनाने में कर रहे हैं! धत्त! इसकी वास्तविक क्षमता तो मानसिक और आध्यात्मिक विकास में है, जो अंततः मनुष्य को अहंकार और ममत्व जैसे दो भयंकर शत्रुओं से मुक्ति दिला सकती है।

मनुष्य ने इस शक्ति के महासागर से मात्र एक चम्मच ही निकाला है; और हम अपनी महान अज्ञानता और विशाल अहंकार में यह दावा करते हैं कि हमने विज्ञान को महान ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया है। क्या अंधापन है यह! क्या व्यर्थता है यह! अंततः हमारी उपलब्धियाँ केवल टुकड़ों-टुकड़ों में बिखरे तथ्यों का संग्रह मात्र हैं। मानव कल्याण के अंतिम उद्देश्य की सिद्धि अभी भी अप्राप्त और अविचारित है।

टुकड़े मिलकर सम्पूर्ण बनाते हैं, यह तो गणित का सत्य है। लेकिन मन, जीवन और ऊर्जा के क्षेत्र में यह सत्य नहीं है। मूल स्रोत से कट जाने के बाद, टुकड़े केवल टुकड़े ही रह जाते हैं—मृत, व्यर्थ, निष्क्रिय द्रव्य। अपने आप में वे चाहे गुणा हो जाएँ, लेकिन वे फिर से सम्पूर्ण कभी नहीं बन सकते। वास्तविकता की सम्पूर्णता के लिए, हमें मूल स्रोत से जुड़ना होगा।

हम जो ऊर्जा उपयोग कर रहे हैं, वह इतनी उथली, इतनी भौतिक है, कि वास्तविक ऊर्जा का स्रोत अब भी अछूता ही है। ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न होती है? हम मूल स्रोत से संपर्क क्यों खो देते हैं? यह भ्रम का परिणाम है; एक ऐसा भ्रम जो लोभ और अधिकार-लालसा से उत्पन्न होता है। इसीलिए इन्हें आध्यात्मिक प्रयासों के शत्रु कहा गया है। हमें आत्म-अनुशासन स्थापित करना होगा। हमें मूल स्रोत से संपर्क स्थापित करना होगा।

एक महान शक्ति पूरे ब्रह्मांडीय घटनाक्रम पर अदृश्य रूप से प्रभाव डाल रही है, यहाँ तक कि मन के क्षेत्र से भी परे। यह गूढ़ आध्यात्मिक क्षेत्र है, जिसे योगी स्पर्श और साधना करने की कोशिश करते हैं। इस शक्ति का साधन करो, और इस शक्ति से जुड़ो।

याद रखना, संपूर्ण विज्ञान और तार्किक ज्ञान केवल मस्तिष्क-शक्ति के एक अंश तक ही सीमित है। हमारी बुद्धि की विशाल क्षमता का मुख्य भाग अब भी अज्ञात के कक्षों में बंद पड़ा है। योगी इस रहस्य को खोलने की कुंजी खोजने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि इसे खोलकर असीम ऊर्जा के भंडार को जीवन की सेवा में लाया जा सके; जीवन से परे जीवन के लिए।

इस प्रकार जीवन के उद्देश्य और कार्य की अवधारणा में पूर्ण क्रांति लाई जा सकती है। यह जीवन की स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली सीमाओं से परे जाकर जीवन को विस्तार देती है।

"इस जीवन से परे भी जीवन है। शायद यह कहना और भी सही होगा: यह जीवन अनंत है। यह एक महासागर में उठी हुई लहर की तरह है। इस लहर के पीछे कई लहरें हैं, और इसके आगे भी कई लहरें आएँगी। अंततः सबकुछ एक महासागर है; पूर्ण अस्तित्व का महासागर; चेतना का महासागर।"

व्यक्ति का व्यक्तिगत अस्तित्व प्रशांत महासागर की सतह पर एक सूई की नोक के समान है। इस पर अधिक निर्भर होना मिथ्या आडंबरों के साथ समझौता करना है। योग इन मिथ्या बंधनों से मुक्ति का मार्ग है। यह तर्कशील चिंतन से उत्पन्न सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। योग कभी अंधों का खेल नहीं है।

"इस मार्ग में गुरु ही मार्गदर्शक है, और केवल वही मार्गदर्शक है। गुरु के बिना योग का अभ्यास समुद्र को खोल से खाली करने के मूर्खतापूर्ण प्रयास जैसा है।"

वास्तविकता इसी अनुभूति का विस्तार है। वास्तविक को महसूस करो। परम को महसूस करो। यह हर छोटे से छोटे अनुभव में है: पक्षियों का उड़ना, घास का अंकुरित होना, फूलों का खिलना, भोर की आभा, प्रेमियों की मुस्कान, नवजात शिशु का रुदन।

यहाँ तक कि असफलताओं की पीड़ा और भूख का दुःख भी हमारे शिक्षक हैं, जो हमें परम सत्य से जोड़ते हैं। योग ही संपूर्णता की मूर्ति है।

## अतिवादिता

जब मैं समुद्र के किनारे जंगल में अकेला बैठा करता था, तो मैंने रेत से दोस्ती कर ली थी। हाँ, रेत से। मेरे लिए हर दाना जीवित था; और मुझे लगता था कि दानों और मेरी चेतना के बीच एक अदृश्य बंधन है। समुद्र की विशालता से, खामोश उदास रेत अनंत काल तक फैली हुई थी। मैंने कल्पना की और महसूस किया कि उसके भ्रूण में दुनिया रेत के जंगल को धोते हुए पानी के जंगल की तरह लग रही थी। एक भव्य मूर्ति बन रही थी। ऐसी जन्मभूमि से चेतन आत्मा जीवन में उभरी। उस जंगल में कैक्टस के अलावा कुछ भी नहीं उगता था; केकड़े और घोंघे, फंसी हुई जेली मछली और बिखरे हुए गोले; असंख्य कीड़े और हमेशा व्यस्त रहने वाले सीगल जो हर एक जगह के लिए संघर्ष करते हैं, जीवन के बढ़ते हुए पेड़ में पैर रखने के लिए।

क्या नज़ारा था! इस नाटक के रंगमंच ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया और जैसे-जैसे सुबह और शाम की शानदार कहानी सामने आती गई, मैं और भी अधिक चकित होता गया। समुद्र तट स्वयं एक सूअरनी की तरह लेटा हुआ अपने स्तनों से अपने असंख्य बच्चों को देख रहा था, जबकि विशालता खामोश, आलसी, निष्क्रिय पड़ी थी। रेत के कण चमकते सूरज पर पल रहे थे। ऊर्जा सभी जीवन और चेतना को आवेशित करती है, और विश्व प्रवाह के अंतहीन रहस्य को रूपों में समेटती है।

मैंने महसूस किया कि प्रत्येक दाना पी रहा है और अवशोषित कर रहा है, और घाटियों, पहाड़ियों, पर्वतों, पेड़ों, नदियों, वनस्पतियों और 'जीवन' के रूप में ज्ञात उपहारों की पूरी टोकरी में विकसित हो रहा है। पूरा समुद्र तट सौर ऊर्जा से स्पंदित हो रहा था। यह एहसास आनंदित और रोमांचकारी था।

और कुछ और भी। और अधिक जीवन! मैंने जल की विशालता में पौराणिक नर की कल्पना की, और सूर्य की चमकीली किरणों में नारायण की, जिसने समुद्र की सतह को पिघले पारे की चादर में बदल दिया था। क्या यह विश्व नाटक मूल रूप से मिथक के इन दो महारथियों द्वारा रचित नहीं था: नर (जल) और नारायण (सूर्य)?

तो आप देखते हैं, छोटा इतना छोटा नहीं है। यहाँ तक कि टुकड़ों की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। हमें तत्काल को शाश्वत के प्रकाश में और छोटे को विशाल के प्रकाश में देखना चाहिए। हमें छोटे आदमी, गरीब आदमी को ईश्वर के प्रकाश

में देखना चाहिए, जिसका निवास तुम्हारा जीवन, मेरा जीवन और सभी का जीवन है। उनकी सेवा करके हम अपनी सेवा करते हैं; उनके प्रति दयालु होकर हम अपने साथ न्याय करते हैं। इन छोटी चीज़ों के लिए हम उच्च चीज़ों के ऋणी हैं; उच्च सत्य, उच्च भावना, ईश्वर।

इसे पूरी तरह से महसूस करके हम न केवल ईश्वर का विस्तार बन जाते हैं, बल्कि हम स्वयं विभिन्न चर्च-मुद्रित देवताओं की मात्र भावना का विस्तार और उससे आगे निकल जाते हैं। यदि तुम समझो तो यही वास्तविक पारलौकिकता है। ईश्वर को जानना ही पर्याप्त नहीं है। बनना ही लक्ष्य है।

अचानक युवा योगी शांत हो गया। शहर के दूसरी ओर सूरज डूब रहा था। यह प्राकृतिक शांति का समय था। मौन का आशीर्वाद हमें खुश कर रहा था। लेकिन मुझे पूछना पड़ा, "गुरु को कैसे खोजें?" वह मुस्कुराया, मेरा हाथ दबाया और स्नेह से देखा, "गुरु भी शिष्यों की तलाश में रहते हैं। क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता? वहाँ देखो। एक गुरु पहले से ही तुम्हें ढूँढ रहा है, तुम भाग्यशाली लड़के।"

थोड़ी दूर पर, बाधा स्तंभ पर, हमारे नियमित स्थान पर, भगवाधारी महिला पहले से ही बैठी हुई थी। शांत प्रकाश के आकर्षण में उसकी आकृति ने मुझे तुरंत आकर्षित किया; और इससे पहले कि मैं अपनी आँखें उससे हटा पाता, मेरा मित्र चला गया।

इस प्रकार मेरा अजीब प्रवचन (क्या यह प्रवचन था?) अजीब वैष्णव (मुझे उसका नाम कभी नहीं मिला, लेकिन मैं उसे नारद के नाम से संबोधित करता था; हिंदू पौराणिक वैष्णव संत) के साथ दिन-प्रतिदिन जारी रहा। कभी कोई अपॉइंटमेंट नहीं हुआ था। मैं न तो समय का पता लगा सकता था, न ही उनके आने-जाने का। वे प्रकट होते और गायब हो जाते, लेकिन वे हमेशा या तो भीड़ का चयन करते या फिर खुद को मूर्त रूप देने के लिए मेरे सबसे आकर्षक क्षणों में से एक का चयन करते।

तस्वीर कभी नहीं बदली—मुंडा सिर, बीच में बालों का वही अजीब गुच्छा, ऊँचे माथे पर फैला वही चंदन का लेप, वही चंपक की माला और मनके, वही सूती कपड़े पहने हुए हल्का सिराफिम शरीर और वही रहस्यमय मुस्कान उनकी आँखों, होठों और सौम्य दोस्ताना चेहरे पर छा रही थी। ओह, मैं उन्हें देख सकता था!

बगल में चाशनी, हाथ में सितार और बगल में चमकता हुआ पीतल का पानी का जग, वे मायावी कदमों से दौड़ते हुए आगे बढ़ रहे थे।

"आप कहाँ रहते हैं?" मैं एक दिन उनसे पूछने में कामयाब रहा।
"इसका मतलब है कि मैं जीवित हूँ या नहीं। यह एक महत्वपूर्ण सवाल है, है न?" तत्काल और निहत्था जवाब था।
"तो फिर तुम जीते नहीं?" मैंने जानबूझकर मज़ाक उड़ाया। वह बेचैन करने वाली मुस्कान बिखेरी, "क्या तुम जीते हो? क्या लोग दिन-ब-दिन जीते हैं, या दिन-ब-दिन मरते हैं?"

यह भी स्फिंक्स जैसी पहेलियों में से एक है। वह कभी मुद्दे पर नहीं आता।
"तुम हमेशा मेरी पूछताछ से बच निकलते हो।"
"तुच्छ पूछताछ से। जीवन बहुत छोटा है। और सीखने और भूलने के लिए बहुत कुछ है।"

नहीं, मैं कभी उसके ठिकाने के बारे में नहीं जान पाया।

## भौतिकीकरण का मामला

फिर भी वह बहुत वास्तविक था। मेरे लिए उसकी चिंता बहुत वास्तविक थी। उसके प्रति मेरा आकर्षण, मेरे भीतर एक जलती हुई आशा की तरह, मुझे उसकी तलाश करने के लिए प्रेरित करता था। आज, जब मैं उस समय को याद करता हूँ, तो पाता हूँ कि भगवाधारी महिला के विपरीत, नारद बहुत वाचाल थे। लेकिन मैं यह भी देख सकता हूँ कि वह कितने असाधारण थे।

कई साल बीत चुके हैं। मैं उनके भाषण के अनूठे सरल तरीके को अब पूरी तरह नहीं पकड़ सकता—आधा हिंदी, आधा संस्कृत। उनका उच्चारण, उनकी छवियाँ, उनका वाक्यविन्यास, आकर्षक हाव-भाव और रोशन करने वाले भावों से युक्त था। यह अनुभव के दृढ़ विश्वास के साथ-साथ एक शिष्य के लिए गुरु के प्रेम के जादुई मंत्र से भरा हुआ था।

पीछे मुड़कर देखने पर यह सब वर्षों की उपेक्षा में फैल गए एक भ्रमित धुंधलके में फीका पड़ गया है। अनमोल शब्दों की अभी भी ज्वलंत स्मृति से विदेशी भाषा में अनुवाद करने से मामले सरल नहीं हुए हैं। बेशक, परिस्थितियों के अनुसार, मैं सही शब्दशः रिपोर्टिंग करने में चूक सकता हूँ, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि मैं उस विश्वास के प्रति सच्चा रहा हूँ, जो उन्होंने इतने धैर्यपूर्वक मेरे मन में डाला था।

एक नौसिखिए के लिए सबक देने में स्वाभाविक रूप से उन्हें लंबी बातें करनी पड़ीं। उन्होंने मेरे कई बुनियादी प्रश्नों का उत्तर दिया। वे हमेशा बुनियादी चीजों के बारे में बात करते थे, लेकिन यह उनकी गंभीरता, सीधापन और बात करने के अनोखे तरीके का जादू था जिसने सब कुछ आसान बना दिया।

हम 'उपस्थिति में भौतिकीकरण' के विषय पर चर्चा कर रहे थे। बिना किसी गहन ज्ञान के, केवल अपने सीमित अनुभवजन्य ज्ञान पर निर्भर करते हुए, मैंने पूरे विचार को नकार दिया। लेकिन उन्होंने मुझे याद दिलाया, "एक बार तुम बाढ़ में डूब गए थे। तुम मुश्किल से चार साल के थे। क्या तुम्हें याद है?"

मैं इस संदर्भ पर अचंभित रह गया। बहुत कम लोग इसके बारे में जानते थे। लेकिन इस घटना को परिवार में एक बहुमूल्य स्मृति के रूप में संरक्षित किया गया था। मेरी माँ हर साल उस दिन गंगा में जाती थीं और किसी अदृश्य देवता से प्रार्थना करती थीं, जिसने उनके बच्चे की जान बचाई थी। लेकिन नारद को उस रहस्यमयी घटना के बारे में कैसे पता चला?

यह उस अशांत मानसून की बात है जब उत्तर भारत की नदियाँ उफान पर थीं। वाराणसी के पत्थर के घाट लगभग बह रहे थे, और आधा शहर पानी में डूबा हुआ था। उस दिन मेरी माँ घाट की सीढ़ियों पर उगते सूरज को प्रार्थना कर रही थीं। उनके पीछे उफनती धारा गर्जना कर रही थी। मैं किनारे पर अकेला खड़ा था, और मेरी जिज्ञासा मुझे उनकी ओर खींच रही थी।

इससे पहले कि कोई कुछ देख पाता, मैं पानी में फिसल गया। एक क्षण में ही तेज धारा ने मुझे अपने अंदर समेट लिया। मेरी माँ, जो प्रार्थना में लीन थीं, कुछ समझ पातीं, इससे पहले ही मैं बाढ़ के नीचे खो गया। एक तेज चीख गूँजी, और अगले ही क्षण, एक अजनबी ने मुझे उठाकर बाहर खींच लिया।

वह अजनबी लाल रेशमी कपड़े पहने हुए था, लंबा और गंभीर मुखमुद्रा वाला था, लेकिन उसके शरीर से एक नरम चमक निकल रही थी। मेरी माँ ने उसके प्रति आभार प्रकट करने के लिए इधर-उधर देखा, लेकिन वह आदमी जा चुका था! तीस

संकरी सीढ़ियों के अलावा और कोई निकास नहीं था, और समय इतना कम था कि कोई बंदर भी वहाँ से कूद नहीं सकता था। लेकिन उस आदमी का कोई निशान नहीं मिला।

इस घटना की चर्चा हर जगह होने लगी। मेरी माँ इस चमत्कार से अभिभूत थीं और हर साल उस दिन वहाँ प्रार्थना करने जाती थीं। यह घटना लगभग सभी लोग भूल चुके थे, और बहुत कम लोग इसके बारे में जानते थे। लेकिन नारद ने इसका उल्लेख किया।

उन्होंने मेरी ओर देखा और बोले, "और तुम कहते हो कि तुम भौतिकीकरण में विश्वास नहीं करते! तुम्हारे अनुभववाद की यही खामी है। तुम तथाकथित अनुभवों की सीमाओं को जानते हुए भी अपनी मान्यताओं और अविश्वासों को उन्हीं सीमाओं के आधार पर स्थिर रखना चाहते हो। यह किसी काम का नहीं है... तुम्हें जागना चाहिए। तुम दूसरे समय के हो। तुम्हें काम पर लग जाना चाहिए। तुम बस अपनी पूँछ और छाया का पीछा करके अपना समय बर्बाद कर रहे हो।"

शक्ति का प्रयोग

मुझे याद है, एक बार मैंने उनसे पूछा था कि वास्तव में एक योगी क्या चाहता है। तब उन्होंने मुझे योग के दो मार्गों और लक्ष्यों के बारे में बताया। एक था शक्ति अर्जित करने का लक्ष्य, और दूसरा था शांति प्राप्त करने का लक्ष्य।

मैं हमेशा यह मानता था कि योगिक शक्ति अधिक मूल्यवान है। इस शक्ति को नियंत्रण में रखकर, कोई दुनिया के लिए कितना अच्छा कर सकता है! जब मैंने भलाई करने वालों के इस विचार को व्यक्त किया, तो उन्होंने इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया। उन्होंने बिना झिझक के कहा कि ज्यादातर तथाकथित भलाई करने वाले दयनीय धोखेबाज़ होते हैं, जो संतों की श्रेणी में घुसपैठ करते हैं। शक्ति का प्रदर्शन करने का प्रलोभन उस व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति को गिरा देता है, जो इसका दुरुपयोग करता है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि जो व्यक्ति शक्ति का प्रयोग दूसरों की भलाई के लिए भी करता है, वह अंततः हारता ही है। भलाई करने का दिखावा करके, कोई व्यक्ति जानबूझकर आत्म-धोखे और आत्म-दया के अंधकारमय क्षेत्र में प्रवेश करता है। सेवा को धर्म तभी माना जा सकता है जब वह पूर्णतः निस्वार्थ और अहंकार रहित हो। वास्तविक सेवा उन्हीं के द्वारा की जाती है जो पवित्र और विनम्र होते हैं।

अन्यथा, भलाई करने का सचेत प्रयास भी आत्म-प्रशंसा और आत्म-महिमा की गुप्त लालसा से दूषित हो सकता है। इस कमजोरी से छुटकारा पाना बेहद कठिन है। केवल अत्यधिक अनुशासित व्यक्ति ही जीवन के अभागों और पीड़ितों की सेवा कर सकते हैं। अधिकांश तथाकथित भलाई करने वाले अपने स्वयं के आत्मा के साथ कपट करते हैं। वास्तविक सेवा तभी संभव है जब अहंकार के अंतिम अंश को भी ईश्वर के चरणों में समर्पित कर दिया जाए। मैं मानता हूँ कि सच्ची सेवा की जननी विनम्रता है और उसका पिता सहनशीलता।

हर कोई शक्ति की तलाश करता है; विशेष रूप से रहस्यमयी शक्ति की। यह स्वाभाविक है। लेकिन हर किसी को यह स्पष्ट नहीं होता कि इस शक्ति का क्या करना है। जब तक लक्ष्य स्पष्ट न हो, शक्ति का अर्जन बच्चे के हाथ में चाकू देने जैसा है; या स्वार्थी देशों के हाथों में बम देने जैसा।

योगिक अनुशासन से ही उदार शक्ति प्राप्त होती है। और इस शक्ति का प्रयोग कैसे करना है, यह भी योगिक अनुशासन से ही सीखा जा सकता है। यह अनुशासन केवल एक उद्देश्य रखता है – अहंकार का संपूर्ण उन्मूलन। लेकिन शक्ति के उपयोग

के लिए एक और प्रकार के योगिक अनुशासन की आवश्यकता होती है: सामाजिक सामंजस्य और शांति की समझ और सराहना। पहला आत्म-अनुशासन और आत्म-शिक्षा की मांग करता है; दूसरा सभी के कल्याण की निष्पक्ष समझ की, जहाँ स्वयं का स्थान सबसे अंतिम होता है।

इस विषय पर बात करते हुए, मुझे एक घटना याद आती है। यह 1969 में त्रिनिदाद में हुई थी। एक युवा व्यक्ति मुझसे मिलने आया था जो शक्ति की तलाश में था। उसके अनुसार, उसने मुझे 'परीक्षण' किया था और पाया था कि मुझमें इतनी शक्ति है जिसे वह प्राप्त कर सकता है। वह तिब्बत में रहस्यमय तंत्र की कुछ जानकारी रखता था और 15 महीनों से मेरे व्याख्यानों में भाग ले रहा था।

जब उसने मुझसे निकटता बनाकर शक्ति प्राप्त करने की बात कही, तो मैंने उससे सीधा सवाल किया कि अगर उसे वह शक्ति मिल जाए तो वह उसका क्या करेगा। उसने ईमानदारी से स्वीकार किया कि वह इस शक्ति को अपार यौन क्षमता के लिए चाहता था। उसके विचार में, सृष्टि की सभी महिलाएँ एक अनन्त आकर्षण में बंधी हैं और उन पर अधिकार जमाने के लिए केवल अपार यौन शक्ति की आवश्यकता है।

मैंने उसे वह शक्ति दी, लेकिन एक अलग प्रकार की। मैंने उसे प्रेम, मन, शरीर और नारीत्व को समझने की शक्ति सिखाई। आज वह एक सुखी परिवार का मुखिया है और उसकी पत्नी अपने जीवन और परिवार से बेहद संतुष्ट है।

इस प्रकार के और भी कई लोग मुझसे मिल चुके हैं। मैंने उनमें से कुछ को यह समझाने की कोशिश की कि शक्ति का वास्तविक उद्देश्य क्या है। मैंने उन्हें यह भी सिखाया कि शक्ति का सही उपयोग कैसे किया जाए और कैसे इससे अहंकार का उन्मूलन किया जा सकता है।

मेरे वैष्णव गुरु ने मुझे दो प्रकार की शक्तियों के बारे में सिखाया:
पहली शक्ति वह है जो चमत्कारों के माध्यम से कार्य करती है। यह बीमारियों को ठीक कर सकती है, लोगों को प्रभावित कर सकती है, सामाजिक प्रतिष्ठा दिला सकती है, लेकिन अंततः यह अहंकार का बोझ बढ़ाती है और व्यक्ति को दुःख और विनाश की ओर ले जाती है।

दूसरी शक्ति प्रेम और शांति की शक्ति है। यह सहनशीलता, समझ, मित्रता और साझा करने की शक्ति है। यह दुःखी, परित्यक्त और पीड़ितों के पास जाती है और उनकी मदद करती है। यह बिना किसी भेदभाव के सबको अपनाती है और एक ऐसे स्पर्श से सबको जोड़ती है जो आत्मा तक पहुँचता है।

यह शक्ति दूसरों के साथ तालमेल बिठाती है और सभी भेदों को मिटा देती है – चाहे वह लिंग का हो, उम्र का हो या सामाजिक स्तर का। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है – निष्काम प्रेम।

यह शक्ति महान है, क्योंकि यह स्वयं को मिटाकर सबमें समाहित हो जाती है। इसी शक्ति ने मुझे भी महान प्रेम और सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। मैं अपने उस छोटे से, लेकिन अद्वितीय नारद ऋषि का हमेशा ऋणी रहूँगा, जिन्होंने मुझे सच्ची शक्ति का मार्ग दिखाया।

# 6 - नारी तत्व (The Female Factor)

## भटकती आत्मा

मेरे वैष्णव मित्र, जिन्हें मैं नारद कहकर पुकारता था, ने मुझ पर एक महान उपकार किया था।

दुर्गा मंदिर से जुड़े विशाल सरोवर के पूर्वी किनारे पर एक दीवार के पास एक सुंदर बग़ीचा था। यह बग़ीचा एक भव्य संगमरमर के मकबरे से जुड़ा हुआ था, जिसे एक भूले-बिसरे भारतीय राजकुमार ने अपने गुरु स्वामी भास्करानंद को श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित किया था। इस स्थान पर संत की अस्थियाँ दफ़न हैं; लेकिन बग़ीचे के भीतर एक शांत कुटिया में संत की पूर्ण आकार की मूर्ति योगासन में बैठी हुई है।

अपने जीवनकाल में, जब यह स्थान घने जंगलों से ढका हुआ था, तब संत ने ठीक इसी स्थान पर अपनी बांस की झोंपड़ी बनाई थी। यहीं पर उन्होंने सौ वर्षों से भी अधिक समय बिताया था; शिक्षा देने और प्रार्थना में डूबे हुए, लेकिन अधिकांश समय वे गहन समाधि (त्रान्स) में लीन रहते थे। उन्हें योग के एक अन्य महान सिद्ध पुरुष, प्रसिद्ध तैलंग स्वामी के साथ, दिव्य व्यक्तित्व माना जाता था। वे केवल उसी भोजन पर निर्भर रहते थे जो उन्हें बिना प्रयास के प्राप्त हो जाता था (अजगर-व्रत, अर्थात् बिना प्रयास किए हुए भोजन पर जीना)।

मौसम में चाहे कितना भी बदलाव क्यों न हो, स्वामी भास्करानंद ने कभी भी वस्त्र धारण नहीं किए। उन्होंने कभी भोजन या आश्रय की खोज में कदम नहीं बढ़ाया। जल्द ही उनकी योगिक ख्याति ने उनके चारों ओर कुछ जिज्ञासु अनुयायियों को आकर्षित किया, जिन्हें उन्होंने औपचारिक रूप से प्राथमिक अक्षरों से लेकर गूढ़तम विषयों, जैसे कि दर्शनशास्त्र और योग, की शिक्षा दी। उनके शिक्षण आज भी मुद्रित रूप में उपलब्ध हैं और प्रामाणिकता के रूप में उद्धृत किए जाते हैं।

तैलंग स्वामी की तरह (जिनका उल्लेख हम एक अलग संदर्भ में करेंगे), उन्होंने भी तंत्र योग के पवित्र मार्ग का अनुसरण किया था, या कम से कम उसके एक रूप का, और वे प्रसिद्ध श्रीयंत्र (एक रहस्यमय चित्र जो तंत्र साधना का सम्पूर्ण पाठ और महत्व समझाता है) के विशेषज्ञ थे। नंगे और कंकाल जैसे स्वामी की मूर्ति को ठीक उसी स्थान पर रखा गया है जहाँ उन्होंने लगभग 140 साल पहले इसी मुद्रा में प्राण त्यागे थे, जीवन की एक सजीव चढ़ाई में।

पेड़ों से घिरा यह एकांत स्थान शांति से भरा हुआ था। यहाँ तक कि बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में भी, जब-जब मैं इस स्थान पर जाता था, तो मुझे यहाँ की अद्भुत तरंगों का अनुभव होता था, जो उन स्थानों से जुड़ी होती हैं जिन्हें महान आध्यात्मिक व्यक्तित्वों की तपस्याओं ने पवित्र किया हो।

इस स्थान की मोहकता, दीवारों के चारों ओर खिले हुए वृक्षों, सुंदर बग़ीचों, फ़ुहारों की मधुर ध्वनि, और गम्भीर भव्यता के साथ घूमते हुए कुछ संन्यासियों के कारण, यह स्थान मेरे बाल्यकाल के दिनों में मेरा पसंदीदा ठिकाना था।

## मैं कहाँ से और क्यों आया?

अब वह सब खत्म हो चुका है। संगठित नगरपालिका की उत्साही योजनाओं ने इसे पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना दिया है, जिससे इसके प्राचीन वन्य आकर्षण का अधिकांश हिस्सा आधुनिकता की भेंट चढ़ गया। दीवारें खत्म हो गई हैं; और

दीवारों के साथ ही बगीचा, खिलते हुए पेड़, फव्वारे, और निश्चित रूप से, संन्यासी भी चले गए। मुझे विश्वास है कि जैसे शांत जगहों में रहने वाले लोग 'विकास' के जबड़े में धकेले जाने पर विचलित हो जाते हैं, वैसे ही स्थानों की आत्मा भी व्यथित हो जाती है।

भगीरथ पर जॉब चारनोक को आकर्षित करने वाली शांति कठोर शहरी विकास से बेदखल हो गई है। सुतानाटी, गोविंदपुर और विशेष रूप से भवानीपुर और चौरंगी नाथा के अंधेरे जंगलों से कालीघाट के हेमलेट तक की रोमांटिक कविता और आध्यात्मिक कंपन अब 'विकसित' कलकत्ता के शोरगुल भरे माहौल में गुम हो चुके हैं। जैसे लोग अशांत स्थानों से भागकर शांति की तलाश करते हैं, वैसे ही अदृश्य आत्माएँ, जो मानव के आध्यात्मिक संतोष की संरक्षक हैं, भी नए स्थानों की तलाश में चली जाती हैं।

तारकेश्वर, दक्षिणेश्वर, तारापीठ, वृंदावन, बद्रीनाथ जैसे स्थान, जो कभी शांति के केंद्र थे, अब 'विकास' के बावजूद अपनी आत्मा खो चुके हैं। पचास साल पहले महसूस की जाने वाली हवा में स्पंदन और संतोष, आज पूरी तरह से गायब हैं। केवल मणिकर्णिका का सदियों पुराना वातावरण अभी भी अपने मौलिक रूप में बचा हुआ है। हमने पर्यटन और मौज-मस्ती की लालसा में शुद्ध आध्यात्मिक आनंद को खो दिया है। यह कश्मीर के अमरनाथ, नेपाल के पशुपतिनाथ, रामेश्वरम या जगन्नाथ पुरी जैसे तीर्थस्थलों के बारे में भी सच है।

मैंने पीड़ा के साथ पाया कि रोम के सेंट पीटर, इंग्लैंड के स्टोनहेंज, दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया का मकबरा, अजमेर शरीफ, मैक्सिको में लेडी ग्वाडालूप का मकबरा, या टोलेडो के प्रसिद्ध अल्काजर जैसे स्थान अब अपने आध्यात्मिक कंपन खो चुके हैं। प्रचार, दिखावे और श्रद्धा की कमी ने उन स्थलों को भी निरुत्साही बना दिया है जो कभी संतों की उपस्थिति से पवित्र माने जाते थे।

यहाँ मैं अपने मित्र नारद की प्रतीक्षा करता था। उन्हीं के प्रोत्साहन से मैं इस स्थान से परिचित हुआ था। दोपहर के समय, जब मैं यहाँ आता, तो मकबरे के दक्षिणी भाग में ध्यानस्थ होकर समाधि की स्थिति में चला जाता। इसके आनंद में, मैं बार-बार यहाँ खिंचा चला आता। यही वह स्थान था जहाँ मित्रवत नारद, जो मेरे गुरु भी थे, ने मुझे कई गूढ़ शिक्षाएँ दीं।

एक बार मैंने इस जगह की अजीब ठंडक और अपनेपन का ज़िक्र किया। मैंने कहा, "यह जगह मुझे इतनी जानी-पहचानी क्यों लगती है, मानो मैं यहीं का रहने वाला हूँ। लेकिन कब? कैसे? मुझे कुछ भी याद नहीं।" नारद मुस्कुराए और रहस्यमयी आवाज़ में बोले, "हम सभी अपने सबसे प्रिय स्थानों पर बार-बार आते हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं; डरने की भी ज़रूरत नहीं है।"

मैंने हैरान होकर उनकी ओर देखा। उनके शब्दों का अर्थ समझ नहीं आ रहा था। यह देखकर उन्होंने अपनी व्याख्या शुरू की। (ओह, मैं उनके इन ज्ञानवर्धक प्रवचनों का कितना ऋणी हूँ!)

"कोई भी जीवन पहली बार नहीं होता। विद्वान की 'पहली बार' और 'चीजों की शुरुआत' के लिए जिद्दी खोज मूर्खतापूर्ण है। लोग यह क्यों नहीं समझते कि इतिहास में समय के एक बिंदु की खोज वैसी ही है जैसे बड़ा हो जाने के बाद बच्चे का अपने पुराने कपड़ों का बटन ढूँढना। वास्तविक खोज यह होनी चाहिए कि मैं क्यों आया, न कि मैं कब आया। क्योंकि गहरे अर्थों में हमारे चारों ओर की सभी 'चीजें' 'पहली बार' की ही तरह हैं।

समय को एक मृत बिंदु से दूसरे मृत बिंदु तक की सपाट रेखा समझना नासमझी है। समय जीवंत है, गतिशील है, शाश्वत है। शाश्वतता ही समय है, और समय ही जीवन है। समय एक चंचल लड़की की तरह है, जो अंतरिक्ष के समुद्र तट पर

अपनी रंगीन बाल्टियों को भरती और खाली करती रहती है। बाल्टियों में भरा समुद्र, बाल्टियों के संदर्भ में जीवित है; खाली होने पर मृत है। लेकिन समुद्र स्वयं अविचल, अपरिवर्तित रहता है।"

मैं यह विरोधाभास समझ नहीं पाया और उलझन में पूछा, "जीवित जीवन, मृत जीवन—आप क्या कहना चाहते हैं?"

नारद मुस्कुराए और समझाने लगे, "विरोधाभास कठोर सत्य की बात करते हैं। जब वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें विरोधाभास कहा जाता है, लेकिन उनके भीतर सत्य के बीज छिपे होते हैं।"

वे आगे बोले, "समय एक चंचल लड़की है, जो अपनी बाल्टियों को भरती और खाली करती रहती है। जीवन तब तक जीवित है जब तक वह भरा हुआ है; खाली होने पर मृत हो जाता है। लेकिन यह केवल बाल्टी का दृष्टिकोण है। समुद्र के लिए, न तो भरने का मतलब कुछ है, न ही खाली होने का।"

मैंने हामी भरी, "हाँ, यह तो स्पष्ट है।" लेकिन फिर पूछा, "अब आप समय से स्थान पर कैसे आ गए? ये दोनों कैसे जुड़े हैं?"

नारद मुस्कुराए, "अच्छा सवाल है। समय और स्थान को अलग देखना ही भ्रम है। समय जब 'कब' को जन्म देता है, तो स्थान 'कहाँ' को उत्पन्न करता है। लेकिन सत्य केवल एक ही है—सत्यम्, ब्रह्म, बोधि... ईश्वर।"

मैं और भी उलझ गया, "क्या समय और स्थान एक ही हैं?"

उन्होंने स्पष्ट किया, "समय और स्थान एक ही सत्य के दो पहलू हैं। वे केवल हमारी समझ की सीमाओं के कारण अलग दिखाई देते हैं। वास्तव में, सब एक ही है। एक ही सर्वव्यापी सत्य है, जिसे हम अज्ञानवश ईश्वर कहते हैं।"

मैं गहन विचारों में खो गया। यह समझना मुश्किल था, लेकिन उनके शब्दों में गहराई थी। मैं कहाँ से आया हूँ, क्यों आया हूँ, और मेरे होने का उद्देश्य क्या है—इन सवालों के जवाब समय और स्थान से परे, उस एकमात्र सत्य में छिपे हैं। नारद की शिक्षाएँ मेरे लिए जीवन का एक नया दृष्टिकोण खोल रही थीं।

## अनिर्वचनीयम्: अनुच्छिष्टम्

"जब तक वास्तविकता, सत्यम् के रूप में अनुभव न किया जाए, तब तक कोई ईश्वर नहीं है। जब वह बोध आता है, तो वह बस आता है; वह चेतना पर छा जाता है; वह उतरता है। फिर, जब वह बोध होता है, तो उसके अलावा और कुछ नहीं करना होता, सिवाय इसके कि उसमें हो... हाँ, उसमें हो, उसमें हो! वह हो! हवा में शरीर की तरह नहीं, पानी में गर्मी की तरह, आग की तरह साँस की तरह। पानी। नहीं। पूरी तरह से तुम्हारा। तुम्हारा अनुभव। साझा करने, वर्णन करने से परे। इसका सारा वर्णन सीमित है। क्योंकि शब्द का अर्थ सीमित है, वर्णन सीमित होना चाहिए। लेकिन अनुभव असीमित है..... तुम क्या?"

मुझे आश्चर्य हुआ। मैं अचानक विचारों की धारा में बह गया जो मेरी समझ से परे था। मैं घूमता रहा और तैरता हुआ ऊपर आने की कोशिश करता रहा; लेकिन उसका हाथ पहले से ही मेरे सिर पर था। उसने मेरी ओर गहराई से देखा और पूछा, "क्या तुम भैरवी के शरीर पर नहीं बैठते? उसकी नग्न त्वचा पर? एक आसन में?"

"वह मेरी चाची है?"

"तो?... सिर्फ़ एक आंटी?.. बस एक ऐसा ही रिश्तेदार? और कुछ नहीं? ओह, तुम कितने मूर्ख हो सकते हो.... आसन में आंटी गायब हो जाती हैं, जैसे शरीर गायब हो जाता है। जो बचता है वह अमूर्त है। प्रकृति का दूसरा रूप, और कंपन। गोविंदा पंडित तुम्हारे चाचा हैं। लेकिन वे चेचक के डॉक्टर भी हैं। वे एक चतुर हठ-योगी भी हैं। है न? लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। एक बाघ के लिए वे सिर्फ़ भोजन हैं, और कुछ नहीं। अब गोविंदा पंडित, हठ-योगी नहीं रहे। फिर भी, क्या तुम इनकार कर सकते हो कि वे हठ-योगी हैं? गुरु?"

"नहीं, मैं नहीं कर सकता," मैंने ज़ोर देकर कहा।

"लेकिन वे क्या हैं? तुम्हारे चाचा? हठ-योगी? पचाए गए भोजन का एक ढेर? वास्तव में वे क्या हैं?... तुम्हारी आंटी तुम्हारी आंटी हैं। लेकिन वे एक भैरवी भी हैं। जब तुम उनके शरीर पर आसन में बैठते हो, तो वे क्या हैं? तुम्हारी आंटी? एक भैरवी? या एक अनुभव? क्या तुम उस अनुभव का वर्णन कर सकते हो?"

मैं इस प्रश्न से इतना भ्रमित था कि कुछ सेकंड के लिए मैं पूरी तरह से खोया हुआ महसूस कर रहा था।

यह अनुभव कितना वास्तविक था! कितना जीवंत! कितना संतृप्त! फिर भी उस परम रोमांच के स्वाद की प्रकृति और सार का ईमानदारी से वर्णन करना शब्दों से परे लगता है।

लेकिन मुझे देखा जा रहा था। और धीरे-धीरे एक आवाज़ फुसफुसाती हुई आई **"अनिर्वचनीयम्! अनुच्छिष्टम्!"** (बोले गए शब्दों से परे। जीभ से अदूषित।)

नारद मेरे कानों में फुसफुसा रहे थे।

"हाँ," मैंने दोहराया, "वह आनंद था। शब्दों से परे। मैं महसूस करता हूँ। बस महसूस करता हूँ।"

"यह आनंदम है। आनंदम समग्र है। हमेशा समग्र। इसे साझा करने के लिए भी विभाजित नहीं किया जा सकता। इसे वर्णन करने के लिए भी नहीं लाया जा सकता.... क्या मैं सही हूँ?"

वह शरारती मुस्कान। यह गुदगुदी थी।

"संपूर्ण ब्रह्म।" मैंने स्वीकार किया।

"मुझे फिर से इस बिंदु की जाँच करने दें," मेरे दोस्त ने कहा। "क्या हम? मेरे हाथों को देखें। कितनी उंगलियाँ हैं?"

"बेशक दस।"

"कितने हाथ?"

“दो।”

“कितने शरीर?”

“एक, सिर्फ़ एक शरीर।”

“अब, चारों ओर देखो। कितने शरीर?”

“क्यों? तुम; मैं;... बहुत सारे; बहुत सारे शरीर।”

“और अब। कितने ‘मैं’?”

“‘मैं’?.... ओह, मैं समझ गया। क्यों, सभी में सिर्फ़ एक ‘मैं’।”

“फिर, मेरा क्या? क्या मैं भी नहीं देखता, सोचता, काम नहीं करता?”

“वास्तव में तुम करते हो... एक अलग शरीर के रूप में। एक अलग ‘मैं’ के रूप में नहीं।”

“हम सभी एक ही हवा में तैरते हैं,” उन्होंने समझाया, “हवा एक है, और शरीर कई हैं; पानी, मछली के लिए, एक है, लेकिन शरीर कई हैं। और इसी तरह.. एक ‘मैं’, एक चेतना, एक ब्रह्म होना चाहिए, हालाँकि ये सभी कई प्रतीत होते हैं। मनुष्यता रोज़मर्रा की अनुभवजन्य सोच में एक सुविधा है।

“...डॉक्टर,” उन्होंने आगे कहा, “बहुत सारे हैं। लेकिन जब हम हैजा, या मलेरिया, या कैंसर की बात करते हैं... तो उनके लिए ये सिर्फ़ एक ही हैं। हम रोगी हैं। रोगी के रूप में हम बहुत हैं। अस्पतालों में हम बहुत से लोगों को साथ रखते हैं। लेकिन डॉक्टरों के लिए हम ज्यादातर अमूर्त हैं। हम उनके लिए समस्याएँ हैं जिन्हें उन्हें हल करना है। वे हमें किसी बीमारी के अलग-अलग मामलों के रूप में देखते हैं; यानी, रोगी सहज नहीं है। बहुतों में से प्रत्येक एक का एक अंश है। एक ही एकमात्र सत्य है, वास्तविक है। एक के अलावा और कुछ नहीं है।”

“यह एक,” उन्होंने कहा, “‘एक’, तो हर चीज़ में होना चाहिए, भले ही, एक हवा की तरह, हम इसे न देख पाएँ। यह एक जीवन में होना चाहिए, साथ ही साथ उसमें भी जिसमें कोई जीवन नहीं है...”

उनकी बातों ने मेरे भीतर गहरी गूँज पैदा की। मैं महसूस कर रहा था कि यह ‘मैं’ केवल एक शरीर या नाम नहीं, बल्कि उस एकमात्र चेतना का अंश है जो सबमें व्याप्त है। उस एक सत्य का हिस्सा, जो हर जगह, हर रूप में है।

मेरे चेहरे पर आई शांति को देख, नारद मुस्कुराए। “अनिर्वचनीयम्**...** अनुच्छिष्टम्।” उनका फुसफुसाना जैसे मेरे भीतर गूँज उठा।

## ध्वनि रत्न

"हम में से प्रत्येक, और हम जैसे सभी, ने कहीं और कभी शुरुआत की थी। हमारी वर्तमान स्थिति में इसका सीधा ज्ञान हमें नहीं है। हम हमेशा उस स्थान पर वापस आते हैं जहाँ हम पहले रह चुके होते हैं। कुछ इसे महसूस करते हैं, कुछ नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि महसूस करने वाले की संवेदनशीलता कितनी सूक्ष्म है। क्यों? यह संभव है कि आप यहाँ पहले भी आए हों। दुर्गा मंदिर बहुत पास है; और हर साल लोग वहाँ तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। और यह स्थान इतना आकर्षक है। स्वामी भास्करानंद आपके पिता के गुरु थे। आपके पिता आपके भीतर हैं। तो क्या आपको विश्वास नहीं होता कि आप पहले भी यहाँ आ चुके हैं?"

"बिल्कुल," मैंने उत्तर दिया। "मैं इस जंगली बगीचे से फूल चुनने में व्यस्त था। क्यों? अब मुझे याद आ रहा है, हाँ.... यह एक अजीब अनुभव था...."

"वह क्या था?," नारद ने पूछा।

"मुझे याद है, एक बार मैं शाखाओं से गिरे हुए बासक और चमेली (मिमुसोप्स एलेन्गी और एफ. अर्बोरिसेन्स) के फूलों को घास से चुन रहा था। अचानक, न जाने कहाँ से एक साँप आया, और पहले टोकरी के नीचे से फिसल गया, फिर शांति से चढ़कर टोकरी में जमा किए हुए फूलों पर कुंडली मारकर बैठ गया। मेरे पास कुछ भी करने के लिए नहीं था, बस उसे देखता रहा। वह बहुत सुंदर था, अपनी चमचमाती सफेद, धूसर और काले रंग की पोशाक में बेहद मनोहारी। वह एक नाग था। मैंने शिव के लिए एक प्रार्थना गाना शुरू कर दिया। काफी देर बाद वह चला गया.... लेकिन मुझे बहुत खुशी हुई.... मुझे याद है। हाँ, मैं यहाँ था।"

"हाँ। तुमने शिव की प्रार्थना की। लेकिन कुछ छोटी ध्वनियाँ भी होती हैं, छोटे रत्न ध्वनि। जैसे एक छोटा सा बीज जिसमें एक विशाल वट वृक्ष या किसी भी पेड़ का पूरा अस्तित्व छिपा होता है। इन बीज ध्वनियों में महान प्रार्थनाएँ समाहित होती हैं; अविश्वसनीय ऊर्जा और शक्ति वाली प्रार्थनाएँ।"

इससे पहले कि वे कुछ और कह पाते, मैं बोल उठा, "ॐ नमो नारायणायः, ॐ नमः शिवायः, ॐ नमो भगवते वासुदेवायः, ॐ क्लीं कालिकायै नमः, ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः।" वे मुस्कुराए और पूछा, "तुमने इतने सारे क्यों दोहराए?" और फिर बोले, "गंगा पार करने के लिए कितनी नावों की ज़रूरत होती है?"

मैंने तपाक से जवाब दिया, "यह समय, धारा, और हवाओं पर निर्भर करता है...," और मैं हँस पड़ा।

उन्होंने फिर पूछा, "अगर एक भरोसेमंद नाव हो, जो सभी मौसमों और धाराओं का सामना कर सके, तो?"

"तो महासागरों के बारे में क्या?," मैंने जोर देकर पूछा।

"क्या महासागर पार करने के लिए एक भरोसेमंद नाव ढूँढना असंभव है? हाँ, एक बहुत ही कुशल नाविक की आवश्यकता होगी, लेकिन मुझे लगता है एक ही नाव काफी होगी।"

"तो फिर इतने सारे मंत्र क्यों? इतने सारे देवता?" इस बार मेरे प्रश्न में एक विशेष जिज्ञासा थी। मैं इस विषय को उनके सामने लाना चाहता था। मुझे अब मौका मिल गया था।

## मंत्र

"यह एक ईमानदार सवाल है, लेकिन उतना बुद्धिमानी भरा नहीं। जब तक कोई अंधा न हो, या एकतरफा सोच में उलझा न हो, तब तक उसे वस्तुओं की विविधता के आकर्षण की सराहना करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। क्या तुमने कभी दवा की दुकान में कदम रखा है? क्या तुमने देखा है कि वहाँ कितनी प्रकार की दवाइयाँ और कितनी तरह की बोतलें होती हैं? कुछ खुले रैक में रखी होती हैं जिन्हें तुम छू सकते हो। कुछ आम लोगों की पहुँच से बाहर रखी जाती हैं। कुछ बहुत खतरनाक होती हैं, या बहुत जटिल। लेकिन क्या तुम्हें उन सभी की ज़रूरत होती है?

"तुम्हारे आध्यात्मिक गुरु तुम्हारे लिए एक उपयुक्त मंत्र चुनते हैं। उन्हें कई मंत्रों का ज्ञान होता है, लेकिन तुम्हें केवल एक की आवश्यकता होती है। वे वही चुनेंगे। यहाँ तक कि तुम्हारे जीवनकाल में वे इसे बदलकर दूसरा मंत्र भी दे सकते हैं। यह तुम्हारी आध्यात्मिक ज़रूरतों और आत्मसात करने की शक्ति पर निर्भर करता है।

"उदाहरण के लिए, भोजन के चयन को देखो। तुम माँ के दूध से शुरू करते हो। फिर गाय के दूध पर जाते हो। फिर ठोस आहार पर। फिर कभी-कभी नरम या तरल भोजन पर वापस जाते हो। यह शरीर की ज़रूरतों और पाचन शक्ति पर निर्भर करता है।

"इन परिवर्तनों के पीछे का मुख्य उद्देश्य यह है कि तुम जो खा रहे हो, वह ठीक से पच सके और आत्मसात हो सके। शरीर-मन की ग्रहणशीलता व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न हो सकती है। क्या तुम सहमत हो?... अच्छा, तुम हो। तो फिर विविधता और परिवर्तन तुम्हें परेशान नहीं करने चाहिए। हमारे पूर्वजों ने कई आध्यात्मिक अनुभवों को जिया है। पूर्व के प्राचीन ऋषियों के आध्यात्मिक अनुभवों का इतिहास बहुत लंबा और विविध है।

"हम जैसे अपरिपक्व बच्चे जितने भी मंत्र सुनते हैं, उतनों को ही अपनाने की कोशिश करते हैं। यह हमारे आत्मविश्वास की कमी को दर्शाता है। केवल एक ही पर्याप्त है, यदि गुरु ने तुम्हारे लिए वही चुना है। यह कहना गलत होगा कि एक ही मंत्र सभी के लिए और हर परिस्थिति में उपयुक्त है।

"हम कई मंत्रों का सम्मान करते हैं, लेकिन हम केवल एक को अपनाते हैं। यह एक ही मंत्र हमारा गुरु मंत्र होता है, जो हमारे लिए चुना गया होता है, हमारी सहायता के लिए। मंत्र का शाब्दिक अर्थ है 'वह ध्वनि जो निरंतर मनन करने से पार ले जाती है'। तुम इसे मन में बसाओ। इसे दोहराओ। इसे अपनाओ। इसके प्रभावों को अनुभव करो। यह तुम्हें शक्ति प्रदान करेगा।"

## शक्तियों का थोड़ा सा अंश

"हम सभी की, और हम जैसे सभी की, कहीं और से शुरुआत हुई थी। अपनी वर्तमान स्थिति में हमें इसका कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है। हम हमेशा वहीं लौट आते हैं, जहाँ हम पहले थे। कुछ लोग इसे महसूस करते हैं, कुछ नहीं, यह महसूस करने वाले की संवेदनशीलता की सूक्ष्मता पर निर्भर करता है। क्यों? यह बहुत संभव है कि आप अनजान न रहे हों। दुर्गा मंदिर इतना पास है; और हर साल लोग तीर्थयात्रा के लिए वहाँ आते हैं। और यह जगह इतनी आकर्षक है। स्वामी भास्करानंद आपके पिता के गुरु थे। आपके पिता आपके भीतर हैं। तो क्या आपको पहले यहाँ होने पर अविश्वास है?"

"बेशक," मैंने जवाब दिया। "मैं इस जंगली बगीचे से फूल चुनने में व्यस्त था। क्यों? मुझे अब याद आया, हाँ.... यह एक अजीब अनुभव था...."

"वह क्या था?" नारद ने पूछा।

"मुझे याद है कि एक बार मैं घास पर शाखाओं से गिरे हुए फूल चुनने में व्यस्त था.... बसाक और कैमेली (मिमू सोप्स एलेंगी और एफ. आर्बोरेसेंस)। अचानक कहीं से एक साँप प्रकट हुआ, और पहले टोकरी के नीचे सरका, और फिर शांति से टोकरी में इकट्ठे फूलों पर चढ़कर कुंडली मार ली। मेरे पास देखने के अलावा और कुछ नहीं था। यह बहुत सुंदर था, अपने शानदार परिधान में बहुत भव्य, सफ़ेद, भूरे और काले रंग में चमक रहा था। यह एक कोबरा था। मैंने शिव के लिए प्रार्थना

गाना शुरू किया। काफी देर बाद यह मुझे छोड़कर चला गया...... लेकिन मुझे बहुत खुशी हुई.... मुझे याद है। हाँ, मैं यहाँ था।"

"हाँ। तुमने शिव से प्रार्थना की थी। लेकिन ध्वनि के छोटे-छोटे डिब्बे हैं, छोटे-छोटे रत्न ध्वनियाँ। एक छोटे से बीज की तरह जो अपने खोल के भीतर एक बड़े बरगद या किसी भी पेड़ को बंद रखता है। इन बीज ध्वनियों में महान प्रार्थनाएँ हैं; अविश्वसनीय ऊर्जा और बल की प्रार्थनाएँ।"

इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, मैं बोल पड़ा, "ओम नमो नारायणाय:, ओम नमः शिवाय:, ओम नमो भगवते वासुदेवाय:, ओम क्लिंग कालिकायै नमः, ओम ह्रंग दुर्गायै नमः।"

वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराया और पूछा, "तुमने इनमें से इतने सारे मंत्र क्यों दोहराए?"

फिर उसने आगे कहा, "गंगा पार करने के लिए तुम्हें कितनी नावों की ज़रूरत है?"

पीछे हटते हुए मैंने जवाब दिया, "निर्भर करता है... समय, धारा, हवाओं की प्रकृति...," और मैं हँसा। "सभी मौसमों और धाराओं के लिए केवल एक ही भरोसेमंद नाव क्यों नहीं?"

"महासागरों के बारे में क्या?" उसने ज़ोर देकर पूछा।

"क्या महासागरों को पार करने के लिए एक भरोसेमंद नाव हासिल करना इतना असंभव है? बेशक, एक बहुत ही भरोसेमंद पायलट की ज़रूरत होगी। लेकिन मुझे लगता है कि एक नाव ही काफी होगी।"

"तो इतने सारे मंत्र क्यों? इतने सारे भगवान?" इस बार मेरा सवाल बहुत ज़रूरी था। मैं इस विषय को उनके सामने लाना चाहता था। मुझे अब मौका मिल गया।

## तारा के प्राचीन मंदिर में

"जो वस्तुएँ महासागर में जाती हैं, वे नमक से संतृप्त हो जाती हैं; वैसे ही जब निर्जीव वस्तुएँ चेतना के संपर्क में आती हैं, तो वे चेतन हो जाती हैं। (VI-1-30)
"गुरु वह है, जो मात्र एक दृष्टि, एक स्पर्श, या एक शब्द से अपने शिष्य की दिव्य चेतना को जागृत कर सके।" (VI-1-61)

योग-वासिष्ठ के इन पवित्र श्लोकों की गूंज उस प्राचीन मंदिर में गूँज रही थी। हमारी साधना का क्रम निरंतर जारी था। वही गंभीरता, वही आसन, वही ध्वनि और गंध, वही दिव्य आभा। केसरिया वस्त्रधारी देवी मुझे निरंतर उस कठिन साधना की ओर ले जा रही थीं, जिसमें संपूर्ण निष्कामता प्राप्त होती है – अर्थात् लगाव में भी निर्लिप्तता, प्रेम में भी बिना किसी प्रतिक्रियात्मक भाव के स्थिरता, जाग्रत रहते हुए भी सोने जैसी शांति, और सोते हुए भी जागरूकता।

रात्रि में होने वाले ये सत्र अब विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने लगे थे। हम और भी अधिक एकांत स्थानों की खोज में थे।

अंततः हमने एक लगभग भुला दिए गए और निश्चित रूप से उपेक्षित मंदिर को अपने साधना स्थल के रूप में चुना। यह गंगा के किनारे रानी भवानी (पश्चिम बंगाल की अठारहवीं शताब्दी की भक्त महिला) द्वारा बनवाए गए मंदिरों की श्रृंखला में से एक था।

यह वही भयानक तारा मंदिर था। इस मंदिर तक पहुँचने के लिए पूरी तरह से खंडहर हो चुके और अंधेरे सुरंगों से गुजरना पड़ता था। हर बार वहाँ पहुँचने के लिए मुझे उनके हाथों को पकड़कर मार्गदर्शन लेना पड़ता था। उस मार्ग में चमगादड़ों की चीखें और चूहों की चपल आवाज़ें वातावरण को भयावह बना देती थीं।

लेकिन जैसे ही हम उस छोटे से मंदिर के आँगन में पहुँचते, जो लाल बलुआ पत्थरों से पटा हुआ था, सारी भयावहता समाप्त हो जाती और मन में असीम शांति का अनुभव होने लगता।

## साधना सत्रों में भाग लेना

कभी-कभी हमें मंदिर में अज्ञात चेहरे दिखाई देते थे। कुछ लोग ध्यान में मग्न रहते, तो कुछ विशेष अनुष्ठानों में संलग्न। यदि अग्नि प्रज्वलित करनी होती, तो केसरिया वस्त्रधारी देवी ही उसे प्रज्वलित करतीं। लेकिन जब वह देखतीं कि पहले से ही कोई अनुष्ठान चल रहा है, तो वह बस अग्निकुंड के पास बैठकर बिना किसी व्यवधान के उस अनुष्ठान में सम्मिलित हो जातीं।

अग्नि, रक्त और काम – ये सभी उस अनुष्ठान के अंग थे। आज जब मैं यौन शक्ति के महत्व और उसके दुरुपयोग से भलीभाँति परिचित हूँ, तो उन अनुष्ठानों को मैं उतनी ही श्रद्धा और भय के साथ याद करता हूँ, जितना कि किसी दिव्य उपस्थिति के सामने, या फन फैलाए हुए नाग के समक्ष होता है।

मुझे मालूम होता था कि अनुष्ठान में कौन मेरा 'आसन' बनेगा। मुझे यह भी ज्ञात था कि आसन ग्रहण करने से पहले मुझे उसे विशेष प्रकार के फूलों, चावल के दानों और यदि उपलब्ध हो, तो रक्त से पूजना होगा। उन दिनों मैं बिना किसी झिझक के अपने माथे पर तप्त बलि-रक्त से तिलक कर सकता था। मुझे विशेष उद्देश्यों के लिए मंडल बनाने की विधि भी ज्ञात थी। मंडल में विभिन्न रंगों के चूर्णों का उपयोग किया जाता था, जिनका अपना विशेष अर्थ और महत्व होता था।

अनुष्ठान प्रारंभ करने से पहले मुझे एक विशेष पेय पीना होता था। उस पेय का स्वाद तो सामान्य था, लेकिन उसका प्रभाव विद्युत जैसा होता था। पीते समय मैं यह नहीं देखता था कि पात्र जेड का है, कांस्य का है या खोपड़ी का। वहाँ पदार्थ की नहीं, बल्कि उसके महत्व की प्रधानता थी।

नवागंतुक अक्सर वस्तुओं, चित्रों या मंत्रों के 'महत्व' को समझने के लिए उत्सुक रहते थे। लेकिन असली साधक से अपेक्षा की जाती है कि वह 'महत्व' को एक विशेष अर्थ के रूप में ग्रहण करे और उसे मानसिक रूप से आत्मसात करे। उसकी बुद्धि को उस विशेष अर्थ में स्थिर हो जाना चाहिए, और उसे भौतिक संसार के अर्थों से विचलित नहीं होना चाहिए।

## योनि और मैथुन (संभोग)

योनि शब्द का अर्थ है स्त्री अंग, जिससे जीवन निकलता है। वास्तव में यह मैट्रिक्स, 'जीवन' के प्रारंभिक बिंदु को दर्शाता है। प्रयोग में आने वाला यह शब्द एक साथ स्त्री अंग और संभोग से जुड़े विचारों को व्यक्त और साथ ही अव्यक्त रूप में

प्रस्तुत करता है; और इस छवि के विस्तार से, वासना की संतुष्टि के लिए इस अंग का भयावह उपयोग, जो निश्चित रूप से कभी संतुष्ट नहीं होता है। हालाँकि, वास्तविकता में और अध्यात्मवाद के संदर्भ में, विशेष रूप से तंत्र में, इस शब्द का अर्थ लगभग हमेशा मैट्रिक्स या सामान्य रूप से जीवन का कथित स्रोत होता है। इस प्रकार इसे वास्तव में सृजन की ब्रह्मांडीय शक्ति के मैट्रिक्स के रूप में चित्रित किया गया है।

किसी भी अर्थ में ब्रह्मांड की कल्पना करने से मनुष्य को उपयोगी और मददगार छवियां बनाने का उपहार मिला है: दीपक, सूर्य के लिए; आग की लपटें, ठंडे नॉर्डिक क्षेत्रों के आर्यों की जंगलों के प्रति कृतज्ञता दर्ज करने के लिए; पत्तियों को डुबोकर पानी का घड़ा, नदियों और बारिश आदि की प्रचुरता के लिए, आदि। छवियाँ, नाजुक, संवेदनशील और वाक्पटु छवियाँ, कल्पनाशील, चिंतनशील द्वारा प्रकृति के तत्वों और शक्तियों को दी गई सुरम्य श्रद्धांजलि हैं। चूँकि ये घटनाएँ मनुष्य द्वारा निर्मित मंदिरों (स्वयं में प्रतीक) के भीतर समाहित होने के लिए बहुत बड़ी हैं, इसलिए द्रष्टा कवि एक छोटे से सूचकांक प्रतिनिधित्व या प्रतीक के भीतर बड़े को समाहित करने के लिए एक उपयुक्त रूप का आविष्कार और स्वीकार करते हैं।

ब्रह्मांड की शक्तिशाली शक्तियों से निपटने में, विचारों के साथ खिलवाड़ करना और एक सूचकांक के सुरक्षित बॉक्स में विशाल को कैद करना आवश्यक हो जाता है। सभी जीवन के मैट्रिक्स, या ब्रह्मांडीय कानून की कल्पना करते हुए, जो हमें नेबुला का मूल रूप देता है, मनुष्य कुछ निश्चित चित्रों से चिपका हुआ है, जिनमें से सबसे लोकप्रिय उपयोग में खेत की नाली, अग्नि बलिदान के लिए गड्ढा और योनि स्वयं हैं (हमेशा मानव महिला की नहीं; लेकिन उस मामले के लिए किसी भी महिला की)। मैं इस बात पर जोर दे रहा हूं क्योंकि मैं सभी तंत्र उत्साही लोगों के मन में यह बात डालना चाहता हूं कि तंत्र में वास्तविक निपुण व्यक्ति के लिए, एक योनि कभी भी संभोग और वासना की कामुक छवि को प्रदर्शित नहीं करती है।

यह सच है कि योनि के बारे में इस निष्पक्षता तक पहुंचने के लिए और एक उत्तर-साधिका (अल्टर ईगो), जो एक महिला है, की जांघों के बीच के त्रिकोण के प्रति इस श्रद्धापूर्ण दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए एक बहुत लंबा और कठोर प्रशिक्षण लगता है। इसे तब एक पीठ (सायनिक ध्यान के लिए एक सीट) के रूप में माना जाता है।

(केसर में महिला के शारीरिक दृष्टिकोण से मेरी व्यक्तिगत दीक्षा ने मुझे स्थायी अनुग्रह में खड़ा किया है; और मुझे पाया कि जब भी अवसर आया, तंत्र की उचित और अनन्य भावना में इस क्षेत्रीय श्रद्धा को प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई।) महिला त्रिकोण के साथ सीधे संपर्क में होना। (मैं जानबूझ कर स्त्री 'शरीर' का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ; क्योंकि तंत्र में समाधि की क्रिया में शारीरिक रूप से कुछ भी प्रतिक्रियाशील नहीं होता है। जब तक त्रिभुज को आसन, पीठ के रूप में नहीं देखा जाता है, तब तक आध्यात्मिक प्राप्ति के प्रयासों के लिए एक विशेष खतरे के बिना इसे बिल्कुल भी नहीं देखा जाना चाहिए। उस स्थिति में त्रिभुज तांत्रिक साधना के अनुष्ठान से जुड़ी और आवश्यक कई सामग्रियों में से एक के अलावा और कुछ नहीं होगा।) व्यक्ति को वर्षों तक तपस्या और अभ्यास से गुजरना पड़ता है; आत्म-दंड, आत्म-त्याग की कठिन क्रूर कष्टदायी प्रक्रियाएं।

शरीर के भीतर रहने वाली छह वासनाओं में से पहली वासना सबसे अधिक मांग वाली, मायावी, हठी और अड़ियल होती है। जब यह जन्मपूर्व जड़ें जमा लेती है, तो यह शरीर के वर्षों के क्षय के साथ-साथ मन की तरह जीवित रहती है। इसकी चिंगारी लकवाग्रस्त शरीर के खंडहरों के भीतर भी टिमटिमाती है। स्वाभाविक रूप से योगी, भावनात्मक बाधाओं से मुक्त होने के लिए, इस शक्तिशाली प्रेरणा को पकड़ने के लिए अपने प्रयासों को लक्षित करते हैं, और इसकी आग को उच्चतर

उपयोगों के लिए लगाते हैं; क्योंकि यह शक्ति (सर्प, इहादिनी, संभोग) रचनात्मक प्रेरणा की शक्ति है। यह सभी प्रगति, यहां तक कि आध्यात्मिक प्रगति की जड़ में है, जो वास्तव में सभी प्रगति के लिए मूल मोटर की आपूर्ति करती है।

आध्यात्मिक प्रगति जिसमें सार्वभौमिक प्रगति शामिल नहीं है, वह केवल नाम की प्रगति है। यह एक खोखली प्रगति है। इस शक्ति पर महारत हासिल करना कई योगियों, कई तकनीकों, कई कुलों का कई अलग-अलग तरीकों से लक्ष्य रहा है; राज-योग, कर्मयोग, हठ-योग आदि, आदि। लेकिन सभी ओर से यह स्वीकार किया गया है कि खतरनाक (अक्सर आत्म-भ्रामक) तंत्र मार्ग सबसे आसान और सबसे पुरस्कृत परिणामों की ओर ले जाता है, क्योंकि तंत्र मार्ग का मूल सिद्धांत आनंद, खुशी और जीवन की पूर्णता में रहना रहा है।

## जोखिम और दो मार्ग

यही कारण है कि तंत्र की शिक्षा हमेशा व्यक्तिगत मार्गदर्शन के तहत दी जाती है। इसे बिना सोचे-समझे और बिना तैयारी के कभी भी सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं किया जाता। यह न केवल साधक के लाभ के लिए, बल्कि नवसिखुओं की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है। एक गलत साधना सत्र (सेन्स) अत्यंत खतरनाक हो सकता है। यदि साधना से लाभ नहीं हुआ, तो निश्चित रूप से नुकसान होगा। तंत्र में कहा गया है, "इस धर्म का थोड़ा सा भी भाग व्यर्थ नहीं जाता।" इसका प्रभाव अवश्य होता है।

जो लोग प्राचीन लोकगाथाओं, रहस्यमय गीतों, और पौराणिक कथाओं से परिचित हैं, वे उन 'दो मार्गों' के बारे में जानते हैं जिनकी अक्सर नायकों को चेतावनी दी जाती थी: एक मार्ग छोटा लेकिन खतरों से भरा होता है, जबकि दूसरा मार्ग लंबा लेकिन अपेक्षाकृत आसान होता है। तंत्र छोटे और खतरनाक मार्ग को चुनता है, और जानबूझकर खतरों को चुनौती देता है। तांत्रिक वीर (वीर पुरुष) होता है, जो इन खतरों का सामना साहसपूर्वक करता है।

यही कारण है कि तंत्र में प्रत्येक सफलता के पीछे सैकड़ों 'वीरों' की असफलताएँ होती हैं। झूठे साधक और दिखावा करने वालों को चेतावनी दी जाती है कि वे इस मार्ग को न अपनाएँ। यह कोबरा के फन पर नृत्य करने या भूखे बाघ की सवारी करने के समान है। यह एक ऐसा मार्ग है जिसमें शौकिया, घमंडी और उपहास करने वाले लोग कभी सफल नहीं हो सकते।

## मृत्यु के बाद भी जीवन

तंत्र साधना की सत्यता में विश्वास करके और भगवा वस्त्रधारी देवी के आशीर्वाद से, मुझे व्यक्तिगत साधना में अत्यधिक आनंद मिलने लगा। इसी कारण मैंने रानी भवानी के तारा मंदिर में कई रहस्यमयी अनुभव किए।

सन् 1924 के आसपास, इसी मंदिर में मैंने एक भयावह घटना देखी, जिसने मेरे मन पर अमिट छाप छोड़ दी।

यह कार्तिक महीने की अमावस्या की रात थी। पूरा शहर दीपोत्सव में मग्न था, और हर जगह माँ काली की पूजा हो रही थी। मैंने निश्चय किया कि इस रात को तारा मंदिर में ही बिताऊँगा। मुझे पता था कि भगवा वस्त्रधारी देवी इस रात को मणिकर्णिका श्मशान की राख और अस्थियों पर अपना आसन ग्रहण करेंगी, इसलिए मुझे अकेले रहना था। मैंने साहस जुटाया और मंदिर के अंधेरे गलियारे में प्रवेश किया, जो ठंडे भय और सिहरन से भरा हुआ था।

आइए, आपको उस रात की कहानी सुनाऊं!

उस दिन मैं अकेला था। एकांत मेरा प्रिय साथी बन चुका था। भगवा वस्त्रधारी देवी वहाँ नहीं थीं, लेकिन क्या वह मुझसे सच में दूर हो सकती थीं?

मंदिर के भीतर एक दीपक जल रहा था। केवल एक दीपक। और एक स्त्री आग जलाने में व्यस्त थी, वह एक बड़े, काले और शक्तिशाली पुरुष की सहायता कर रही थी, जो स्पष्ट रूप से तंत्र साधना में लीन था। उसके जटाजूट, रुद्राक्ष की माला और लाल वस्त्र उसके साधक होने का परिचय दे रहे थे।

उन्होंने मुझे नहीं देखा था, लेकिन मैंने सुना कि वह स्त्री से कठोर स्वर में कह रहा था, "ध्यान रखना। मुझे कोई आवाज़ सुनाई दी। वे आने वाले हैं।"

"वे" कौन थे?

वह स्त्री युवा और सुंदर थी। उसने भी लाल रेशमी वस्त्र पहन रखा था, जो अंधेरे में सरसराहट कर रहा था। उसके हाथ में सिंदूर से रंगा त्रिशूल था, जो तंत्र साधना में स्त्री सहधर्मिणी का प्रतीक होता है।

मुझे तुरंत वहाँ से चले जाने का विचार आया, लेकिन वह स्त्री एकमात्र रास्ते पर पहरा दे रही थी, और मुझे कुछ लोगों के आने की आशंका थी, इसलिए मैं भीतर की दीवारों के अंधेरे हिस्से में छिपकर खड़ा रहा।

प्रार्थना करने का मेरा सारा विचार धूमिल हो गया। मुझे भय तो नहीं था, लेकिन एक अजीब तनाव से घिर गया था। माहौल की विचित्रता और अनहोनी की आशंका ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया था।

अचानक मैंने भारी साँसों की आवाज़ सुनी। कुछ ही क्षणों में दो व्यक्ति अंधेरे गलियारे से एक भारी बोझ उठाकर आते दिखे। वे हरिश्चंद्र घाट के डोम (श्मशान सेवक) थे, और उनके कंधों पर एक मृत शरीर था।

मृत शरीर पर आसन?

यह मेरे लिए पहली बार था जब मैंने देखा कि मृत शरीर को साधना के लिए आसन के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

स्त्री ने उनसे कुछ पूछा। उन्होंने सहमति में उत्तर दिया।
"सब तैयार है? ... किसी ने देखा तो नहीं? ... सावधान रहना। ... अच्छा, अब इसे खोलो और अंदर ले चलो। और हाँ, इसे वापस भी ले जाना होगा।"

शव को सफेद कपड़े से ढँका हुआ था, जिसे मंदिर के भीतर ले जाया गया। मैंने लगभग एक घंटे तक प्रतीक्षा की, यह सोचकर कि सभी साधना में लीन हो जाएँगे और मैं सुरक्षित रूप से बाहर निकल सकूँगा।

महान तांत्रिक पूर्णतः नग्न था और शव की छाती पर बैठा था, जिसका चेहरा ऊपर की ओर था। पास में एक अग्निकुंड जल रहा था, जिसके समीप वह स्त्री ध्यानस्थ मुद्रा में बैठी थी।

## एक रहस्यमयी निस्तब्धता

एक रहस्यमयी निस्तब्धता तांत्रिक के सामने वे दोनों बलि की अग्नि के दोनों ओर बैठे थे। वे एक ही पीतल के बर्तन से पानी पी रहे थे। सुबह करीब दो बजे (हर घंटे और तिमाही में कहीं से पीतल का घंटा बजता था) मुझे कुछ हलचल महसूस हुई और लपटें उठने लगीं। तांत्रिक कराह उठा। इस अवस्था में महिला ने अपने पहने हुए कपड़े का टुकड़ा उतार दिया और पीठ के बल लेट गई। फिर उस आदमी ने शव के चेहरे पर थूका। क्या वह हिला? मैंने अपनी आँखों से देखा कि शव का शरीर हिल रहा था... हिल रहा था। धीरे से, लेकिन स्पष्ट रूप से। फिर मैंने एक कर्कश आवाज़ सुनी। लेकिन थूकने के साथ, फिर से शांति छा गई। तब मैंने जो देखा वह बिल्कुल अविश्वसनीय था। क्योंकि मैं खुद इसका गवाह रहा हूँ, इसलिए अब मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि यह कोई जादू नहीं था, कोई मृगतृष्णा नहीं थी, किसी तरह का भ्रम नहीं था। वास्तव में और सच में जो दृश्य सामने आ रहा था, वह वास्तव में हमारे परिचित आयामों के भीतर घटित हो रहा था। महिला ज़मीन पर सपाट लेटी हुई थी, ठीक उस उठे हुए मंच के नीचे जिस पर शव पड़ा था, और जिस पर योगी बैठा हुआ था। लाश फिर से हिलती हुई दिखाई दी, इस बार उस पर बैठे आदमी को ज़ोरदार झटका लगा। उसने लाश के मुँह में फिर से थूका; इस बार उसके पूरे चेहरे पर, या मुँह के अंदर? फिर, थोड़ी देर के लिए, सब शांत पड़े रहे। फिर मैंने देखा जो मैं अभी भी देख रहा हूँ। लाश पर अपने आसन से योगी ने महिला रूप पर चावल और फूल बिखेरे। उसने अपने घड़े से थोड़ा पानी लिया और उसे शव पर छिड़का। एक मंत्र अभी भी गर्म हवा में कंपन करने लगा। कोई चमगादड़ नहीं हिला; कोई चूहा या नेवला नहीं गुजरा। कोई छिपकली नहीं बोली। यहाँ तक कि अपने जालों में बंधी मकड़ियाँ भी शांत पड़ी रहीं।

## जल से ज्वाला

एक आदमी ने योगी को आग के गड्ढे से एक जलती हुई लकड़ी दी। उसने लकड़ी ली और उसे जांघों के बीच में रखकर महिला की योनि पर रख दिया। किसी तरह वह जलती रही। फिर चावल और फूलों से ढकी हुई योनि अचानक एक चमकदार लौ में बदल गई। मुझे एक फुफकार की आवाज सुनाई दी। तांत्रिक ने अपने घड़े से आग में पानी डालना जारी रखा। आग बुझने के बजाय और ऊपर उछलती रही।

बहुत बाद में एक और रात को गढ़-मुक्तेश्वर में गंगा के किनारे, जहाँ मैं तपस्या के लिए एक महीने से अकेले डेरा डाले हुए था, मुझे एक बहुत ही समान अनुष्ठान देखने का सौभाग्य मिला।

मैं एक एकांत झोपड़ी में रह रहा था। उस झोपड़ी के पास एक नाविक की एक और अर्ध-स्थायी झोपड़ी थी, जो कुछ समय के लिए मेरा दोस्त और सहारा बन गया था। उस शाम वह गाँव में अपने परिवार से मिलने गया था। मैं अकेला था।

फिर भी अकेला नहीं। आधी रात के बाद मुझे कुछ अजीब कंपनों का अहसास हुआ। मैंने पढ़ा था कि शार्क या समुद्र में शिकार करने वाली मछली पानी के ढेर से प्राप्त होने वाले सूक्ष्म कंपनों के माध्यम से अपने संभावित शिकार को पहचान लेती है। प्रकृति में जो एक स्पष्ट शांत स्थिरता प्रतीत होती है, वह संवेदनशील लोगों को अचूक संदेश देती है। शांति इतनी शांत नहीं है।

मैं अपनी झोपड़ी से बाहर आया।

कल्पना कीजिए कि मुझे कितना आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि एक लंबा नग्न भूत बहते हुए नदी में कमर तक खड़ा था, और दोनों हाथों में जल लेकर अर्पण कर रहा था। गंगा जल गंगा को अर्पित किया जा रहा था। धारा से धारा तक।

अब तक सब सही था, और समझ में आ रहा था। लेकिन हर बार जब वह पानी फेंकता था तो उस स्थान से आग की लपटें उठती थीं और आसपास का वातावरण रोशन हो जाता था।

मैं उसके पास जाने ही वाला था। लेकिन कुछ ने मुझे रोक दिया। थोड़ी देर बाद जब मैंने आगे बढ़ने की कोशिश की, तो मैंने देखा कि वह रूप धीरे-धीरे नदी में प्रवेश करता है, और पानी के नीचे पूरी तरह से गायब हो जाता है। भूत गायब हो गया था। क्या यह गायब था? फिर मैं कैसे याद करूँ, और अनुभव में फिर से कैसे जीऊँ? अनुभव में कुछ भी हमेशा के लिए नहीं जाता। मैं उसे नहीं जानता था। लेकिन मेरे नाविक मित्र ने मुझे आश्वस्त किया कि संत को उस इलाके में वर्षों से जाना जाता था। वे आते-जाते रहते थे। लेकिन कोई भी उनके निवास का पता नहीं लगा पाया, अगर उनका कोई निवास था भी। उन्हें एक महान संत के रूप में स्वीकार किया गया। उन्होंने कई व्यथित आत्माओं की सहायता की है। लेकिन कोई भी उन्हें आमने-सामने नहीं देख पाया।

## पंचमुण्डी

इस प्रकार मैंने पहली बार तांत्रिक क्रिया में जल के गड्ढे में अर्पित जल से ज्वाला उठते देखी। इस मामले में गड्ढे का स्थान उस त्रिकोणीय स्रोत ने लिया था, जो जीवन का स्रोत है—वास्तव में जीवन का उद्गम स्थल।

स्त्री (जिसे तांत्रिक भाषा में 'विद्या' या 'नायिका' कहा जाता है) पीठ के बल लेटी थी, उसके हाथ-पैर सटे हुए थे, और वह एक ममीकृत शव जैसी प्रतीत हो रही थी।

मैं पसीने से तरबतर था, लेकिन मेरे पास वह मंत्र था, जिसे मैं भगवा वस्त्रधारी देवी के साथ आसन पर दोहराया करता था। उस समय मैं केवल उन्हीं के बारे में सोच रहा था, और पूर्ण एकाग्रता के साथ।

अचानक मैंने तांत्रिक की मुद्रा में परिवर्तन देखा। वह अब शव पर नहीं, बल्कि उस विद्या के शरीर पर बैठा था, जो ज़मीन पर लेटी थी। शव को दो व्यक्ति एक गहरे गड्ढे में ले गए, जिसे पहले से ही इस अनुष्ठान के लिए तैयार किया गया था, और उस पर बड़ी सावधानी से लाल पत्थर के स्लैब लगा दिए।

मुझे तभी एहसास हुआ कि उस गड्ढे में चार और शव पहले से ही दफनाए गए थे—चार अलग-अलग जानवरों के। अब वह स्थान एक तांत्रिक पंचमुण्डी आसन बन चुका था, जो भविष्य के कई तांत्रिक साधकों के लिए साधना का पवित्र स्थल बन सकता था।

घंटों बीत गए। अंततः उस युगल ने मिलकर एक पुष्पक आसन में स्थान ग्रहण किया—मुखामुखी, एक-दूसरे को कसकर आलिंगनबद्ध किए हुए। यह वही मुद्रा थी, जिसे तिब्बती चित्रों में देखा जाता है।

चारों ओर घनी, नमी से भरी हवा में एक अजीब महक थी। मेरे शरीर का हर अंग तनाव में था। एक पंख का स्पर्श भी मुझे धराशायी कर सकता था।

फिर वह हुआ!

# अभिशाप

अचानक महिला ने खुद को तांत्रिक की मजबूत पकड़ से मुक्त किया, और उछलकर अपने वस्त्रों को पकड़ने लगी।

कोई विपत्ति आ गई थी, जिसने पवित्र मंत्र को तोड़ दिया था। कुछ। कुछ गलत हो गया था। किसी काले पाप ने अनुष्ठानों को तोड़ दिया था। एक फुफकारते हुए श्राप के साथ महिला अलग हो गई। वह भारी साँस ले रही थी। उसकी गोल आँखें अंधेरे में आग उगल रही थीं।

तांत्रिक ने एक चीख मारी, और लोहे के त्रिशूल को पकड़ा जो काफी पास में खड़ा था। उस समय मैंने उन दो आदमियों को देखा जो वहाँ थे। लेकिन वे कहीं नहीं दिखे। अब पहली बार, मैं उनसे चूक गया। दफ़नाने के बाद वे चले गए होंगे। रात खत्म होने वाली थी। कहीं एक घंटा चार बजे की ताल बजा रहा था।

तांत्रिक पीछे हटती महिला की ओर दौड़ा। वह नरक के कुत्तों को पकड़ने की अधिक सफलतापूर्वक कोशिश कर सकता था। अब तक पूरी तरह से उत्तेजित और उत्तेजित होकर, क्रोधित महिला ने भयंकर रूप से कोसना शुरू कर दिया। "दुष्ट दुष्ट-मन भ्रष्ट!! वासना का दानव! नीच व्यभिचारी! लानत है तुझ पर! लानत है तुझ पर! तारा का क्रोध तुझ पर पड़े...." वह भागते हुए कहती रही।

लेकिन उसने जितना भी प्रयास किया, वह भाग नहीं सकी। भारी त्रिशूल ने मांसल बायीं कमर में काट लिया; लेकिन तुरंत पत्थर के फर्श पर गिर गया, इसे पकड़ना बहुत भारी था। घाव और बहते खून से बेखबर, वह मेरे पास से भागी। मैं कोने में लटके अंधेरे के अभी भी गहरे ढेर में कूद गया। क्या मैं किसी स्थिति तक पहुँच रहा था? क्या मुझे एक पीड़ित महिला को बचाने की कोशिश करनी चाहिए? क्या मैं इस कार्य के लिए सक्षम था? किसे परवाह थी? मैं बस उछल पड़ा। फिर सब कुछ खाली हो गया। मैं बेहोश हो गया था। आखिरी चीज जो मुझे याद थी वह थी तांत्रिक की आकृति जो उसके पीछे चल रही थी, और फिर, सब कुछ खाली हो गया।

दिन में बहुत देर हो चुकी थी। भगवाधारी महिला मुझे प्यार से दूध पिला रही थी। मैं नहा चुकी थी। मेरे कपड़े बदल चुके थे। मैं तारा मंदिर के प्रांगण में लेटी हुई थी। जाहिर है भगवाधारी महिला मुझे होश में लाने के लिए खुद ही कोई अनुष्ठान कर रही थी। फिर हम दोनों बाहर खुले में चले गए। वह एक शब्द भी नहीं बोली। मैं बोलने में असमर्थ थी। चुप, थकी हुई और पूरी तरह थकी हुई, मैं अपने गुरु के पीछे चल पड़ी। वर्षों बाद मैंने उस महिला को वाराणसी की सड़कों पर एक बेचारी पागल खोई हुई महिला के रूप में टहलते देखा है। उसके नितंब पर घाव कभी ठीक नहीं हुआ। सिंदूर में मिला पारा उसकी पूरी त्वचा पर फैल गया होगा। त्वचा पर घाव, विशेष रूप से उसकी पीठ और स्तनों पर कोमल मांस की स्थिति, उसे छूने से पूरी तरह मना करती थी। हमेशा मक्खियों के भूखे झुंडों से परेशान और परेशान वह दर्शकों की उदासीन धाराओं के लिए दया और तिरस्कारपूर्ण उपहास की वस्तु बनी रही, जब तक कि एक सुबह नदी के किनारे उसका बेजान शरीर नहीं मिला।

# सांझ की परिपक्वता

भगवा वस्त्रधारी महिला ने मुझे धीरे-धीरे मेरे बचपन से बाहर निकालकर, सावधानीपूर्वक और कुशलता से मेरे पुरुषत्व की दहलीज पर पहुँचा दिया था। यह वह समय था जब शरीर में बदलाव और मन में उलझनें बढ़ती हैं। सभी बढ़ते हुए दिमागों को इस महत्वपूर्ण चरण में एक अजीब अकेलेपन का अनुभव होता है, जो असहिष्णु और आत्म-केंद्रित सामाजिक

दायरे द्वारा अस्वीकृति के डर से पैदा होता है। यह परिपक्वता की गोधूलि अवधि है, जब बीते साल की लड़कियाँ 'अपरिपक्व' समझकर दूरी बना लेती हैं, और पुरुष रिश्तेदार 'अविकसित' मानकर उपेक्षा करते हैं।

भगवा वस्त्रधारी महिला मेरी दुनिया का केंद्र थी। उसकी देखरेख में मैं परिवर्तनों और प्रतिक्रियाओं के प्रति उदासीन था। मैं अभी भी एक 'लड़का' था, फिर भी अब पूरी तरह से लड़का नहीं रहा। मैं अपने सपनों की दुनिया में जीता और कल्पनाओं में खोया रहता, लेकिन भगवा वस्त्रधारी महिला मुझे बार-बार यथार्थ के धरातल पर ले आती थी।

मैं अपनी उम्र के लड़कों की तुलना में शारीरिक रूप से अधिक विकसित और मजबूत था। जल्द ही मैं संभोग से जुड़े विभिन्न पहलुओं से परिचित होने लगा। मैंने देखा कि मेरे आस-पास के लोग किस तरह संभोग रुचि, खेल, और संबंधों में उलझे हुए थे। यह विषय मेरे चारों ओर किसी काई की तरह मंडराता, लेकिन मेरे लिए यह हमेशा दूरी बनाए रखता था।

मेरे लिए संभोग कभी भी 'खेल' की तुच्छता हासिल नहीं कर सका। भगवा वस्त्रधारी महिला के मार्गदर्शन और अभ्यास ने मेरे भीतर संभोग के प्रति गहरी समझ और श्रद्धा विकसित की थी। मेरे लिए यह एक पवित्र अनुष्ठान जैसा था, जिसे मैं अत्यधिक आदर के साथ देखता था।

जब मेरे दोस्त इसके बारे में गुप्त उत्सुकता और रोमांच के साथ बातें करते थे, तब मेरा मन उस पवित्र त्रिकोण की ओर दौड़ता था, जहाँ मैं अत्यंत श्रद्धा के साथ ध्यानमग्न होता था। मेरे लिए स्त्रियाँ और स्त्री-लिंग केवल उस त्रिकोण का प्रतीक थीं, जो भगवा वस्त्रधारी देवी से जुड़े आनंदमय सत्रों की याद दिलाता था।

यह त्रिकोण मेरे लिए एक आसन था—एक गहन ध्यान की मुद्रा, जिसे साधना, अनुशासन और निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती थी। मैं इस आसन में घंटों तक लीन रहता, उनके शांत आलिंगन में खोया रहता। इन अनुभवों ने मेरे शरीर और मन को एक नई ऊर्जा और चमक दी थी।

उन्होंने मुझे संस्कृत की एक पंक्ति सिखाई थी:
**"**निपिता काल**-**कूटस्य हरस्य**-**वही खेलनम्**"**
(...यह हर, यानी शिव के समान है, जो ब्रह्मांडीय विष के प्रभाव से मुक्त होकर साधारण साँप के साथ खेलते हैं!)

आज, जब मैं 80 वर्ष की उम्र के करीब पहुँच रहा हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि यह कल्पना कितनी महत्वपूर्ण थी। पहले अनुशासन, फिर अभ्यास, फिर ध्यान और अंततः उपलब्धि—यही जीवन का सार है।

भगवा वस्त्रधारी  महिला ने मुझे संभोग को एक और दृष्टिकोण से समझाया था। उन्होंने इसे सिर्फ शारीरिक आकर्षण के रूप में नहीं, बल्कि एक पवित्रता के रूप में प्रस्तुत किया, जो जीवन के गहरे अर्थों से जुड़ी थी।

हमारे घर के पास माँ काली की वार्षिक प्रार्थना होती थी, जिसमें कई बच्चे इकट्ठे होते थे। परिवार के करीबी सदस्य तीन दिनों तक वहीं रुकते थे, जिससे सभी एक साथ समय बिता पाते थे।
यही वह समय था, जब उन्होंने मुझे जीवन के इस रहस्य से परिचित कराया था।

## एक यौन शिक्षा

हमारे समूह में विभिन्न आयु, शारीरिक गठन, रुचियों और इच्छाओं वाले लोग थे। उनमें से एक लड़की, जो अन्य लड़कियों से बड़ी थी, एक लड़के के साथ घनिष्ठ संबंध में थी। अक्सर वे दोनों साथ रहते और ऐसा प्रतीत होता जैसे वे किसी रोचक खेल में लगे हों।

यह जून के महीने की तपती दोपहर थी। बच्चों को तेज धूप और गर्म हवाओं से बचाने के लिए अंदर रखा गया था। हम एक अंधेरे कमरे में थे, जहाँ मोटे परदे लगाए गए थे ताकि हम दोपहर में आराम कर सकें और रात के समय काली पूजा के उत्सव में होने वाले नाटक के लिए तैयार हो सकें।

लेकिन दोपहर की उस शांत विश्राम अवधि में भी कुछ खुसुर-पुसुर चल रही थी। कभी कोई लड़का धीमी आवाज़ में कुछ फुसफुसाता, तो कभी कोई लड़की दबे स्वर में हँसती।

मुझे उत्सुकता हुई।

मैंने अपनी भतीजी को एक ओर ले जाकर पूछा कि क्या हो रहा है। वह पहले तो झिझकी, फिर वादा लेने पर बताया कि उन्होंने एक नया खेल खोजा है—बहुत मजेदार और रोमांचक। उसने वचन लिया कि मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगा, तभी वह मुझे खेल में शामिल करेगी।

लेकिन जब मुझे उस 'खेल' में शामिल किया गया, तो मुझे उसमें कोई मज़ा नहीं आया। वह खेल मुझे अशोभनीय और उबाऊ लगा। इसमें केवल एक-दूसरे के गुप्तांगों को छूने-टटोलने का खेल था, जिसमें मुझे कुछ भी रोचक नहीं लगा।

मुझे समझ नहीं आया, इसमें ऐसा क्या मज़ेदार था?

लड़कियों को यह बड़ा मजाकिया लग रहा था, और लड़के अपने आप को बड़ा समझ रहे थे, जैसे कोई महान उपलब्धि हासिल कर ली हो।

मैंने इस बारे में भगवा वस्त्रधारी देवी से बात की। उन्होंने मुझे शरीर के विभिन्न अंगों के कार्यों और उनके उद्देश्य के बारे में विस्तार से समझाया। उस शाम का वह संवाद मेरे लिए अत्यंत शिक्षाप्रद था।

## शरीर एक राज्य है

जल्द ही मैंने इस शरीर को एक यंत्र के रूप में समझ लिया। यह यंत्र हमेशा एक राजा की सेवा में लगा रहता था, जो शरीर के भीतर और बाहर रहते हुए भी इसे नियंत्रित करता था। वह राजा मन था—जो कभी दिखाई नहीं देता, फिर भी हर चीज़ पर शासन करता है। यह मन ही हमारे सभी कार्यों को निर्देशित करता है और सुख-दुख, पुरस्कार और दंड का निपटानकर्ता है।

सभी राजाओं की तरह, इस राजा के पास भी मंत्रियों का एक समूह है। इनमें से कुछ मंत्रियों की तरह ही गंभीरता और ज़िम्मेदारी से काम करते हैं, जबकि कुछ हल्के-फुल्के और खुशमिजाज होते हैं। महाभारत के पात्रों की तरह, कुछ शकुनि

और कर्ण की तरह बुरी सलाह देकर राजा को भटकाते हैं, जबकि कुछ कृष्ण और विदुर की तरह हमेशा सही मार्गदर्शन करते हैं।

शरीर राज्य है, और मन उसका राजा। यह राजा इंद्रियों के माध्यम से शरीर के बाहर की दुनिया को अनुभव करता है। ये इंद्रियाँ—आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा—अलग-अलग कार्य करती हैं, जैसे देखना, सुनना, सूंघना, स्वाद लेना और स्पर्श करना। ये राजा के कार्यकारी एजेंट हैं, जो उसके आदेशों को पूरा करते हैं। इनके अलावा, भाषण के साधन (होंठ, तालू और दांत), हाथ, पैर, जीभ और उत्सर्जन अंग राजा की सेवा में काम करते हैं।

भगवा वस्त्रधारी महिला ने मुझे बताया, "संभोग अंग सिर्फ जीने के लिए आवश्यक नहीं है। मेरे पास भी संभोग अंग है, लेकिन अब वह काम नहीं करता क्योंकि मैं बूढ़ी हो गई हूँ। तुम्हारे पास भी है, लेकिन वह अभी सक्रिय है क्योंकि तुम युवा और अपरिपक्व हो। फिर भी, हम दोनों ही जीवित हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत अस्तित्व के लिए संभोग अनिवार्य नहीं है, भले ही यह जीवन की रचनात्मक शक्ति को सबसे अधिक प्रभावित करता है।"

उसने समझाया कि जीवन की निरंतरता के लिए संभोग आवश्यक हो सकता है, लेकिन व्यक्तिगत अस्तित्व के लिए नहीं। उसने उदाहरण देकर बताया कि संकर जीव जैसे खच्चर और कई कीट बिना संभोग के भी जीवित रहते हैं। मनुष्यों में भी संत, साधु और भिक्षुणियाँ प्रजनन से दूर रहकर उच्च आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, और सांस्कृतिक उपलब्धियों से मानवता को समृद्ध करते हैं।

यौन अंगों का कार्य केवल जीवन के विस्तार के लिए है, न कि जीवित रहने के लिए। उसने अंगों को दो समूहों में विभाजित किया: नकारात्मक (जो इच्छाओं को उत्तेजित करते हैं) और सकारात्मक (जो सुख और संतोष प्रदान करते हैं)। नकारात्मक अंग हमें संतुलन से दूर ले जाते हैं, जबकि सकारात्मक अंग जीवन में संतुलन और आनंद लाते हैं।

"प्रकृति चाहती है कि हम प्राकृतिक बने रहें," उसने कहा। "हमारी इच्छाएँ हमें असंतुलित करती हैं। इंद्रियाँ हमें उन चीजों की ओर आकर्षित करती हैं, जो तंत्रिकाओं को उत्तेजित करती हैं और अधिक इच्छा उत्पन्न करती हैं। स्वाद अधिक खाने की लालसा पैदा करता है, और स्पर्श आलिंगन की चाहत को जन्म देता है। इनसे उत्पन्न असंतोष, दुःख, बीमारी और अवसाद सोच को बिगाड़ते हैं और जीवन को बर्बाद कर देते हैं। जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।"

फिर उसने स्पष्ट किया, "मूत्र अंग शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालते हैं, जैसे घर में नालियाँ गंदगी को बाहर ले जाती हैं। नर और मादा दोनों में मूत्र अंग होते हैं, लेकिन उनका आकार और संरचना अलग होती है। पुरुषों का मूत्र अंग बाहरी और स्पष्ट होता है, जबकि महिलाओं का आंतरिक और सुरक्षित होता है।"

जब मैंने अंतर के बारे में पूछा, तो उसने कहा, "ज्ञान प्राप्त करने में जल्दबाजी न करो। शिक्षक जब समझाए, तब धैर्यपूर्वक सुनो।"

उसने समझाया कि जीवन केवल जीने के लिए नहीं है; इसे उद्देश्यपूर्ण ढंग से जीना चाहिए। "जीवन विश्व मशीन का एक हिस्सा है और इसका एक उद्देश्य है। यह उद्देश्य ईश्वर से जुड़ा है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। हमें उस उद्देश्य को समझकर उसे पूरा करने में लगना चाहिए। इस खोज में पहले तपस्या (अनुशासन) की आवश्यकता है, जो बोध की ओर ले जाती है, और फिर यज्ञ (बलिदान) की, जो विश्व कल्याण के लिए समर्पण सिखाती है।"

“जैसे जीवन को इसके उद्देश्य का पता लगाना है, वैसे ही शरीर को मन के निर्देश पर कार्य करके उद्देश्य को पूरा करना है। शरीर केवल यंत्र है; इसे कैसे उपयोग में लाया जाए, यह मन पर निर्भर करता है।”

उसने मुझे जीवन और शरीर के इस गहरे रहस्य से परिचित कराया और समझाया कि मनुष्य को अपने अस्तित्व के उद्देश्य की खोज करनी चाहिए। उसकी सिखाई ये बातें आज भी मेरे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

## तीन शक्तियों का संघर्ष

इसे प्राप्त करने की इच्छा एक गुप्त शक्ति को मुक्त करती है। यह आध्यात्मिक शक्ति या सत्व-शक्ति है। लेकिन हर शक्ति अपने बराबर और विपरीत शक्ति से टकराती है। इसी तरह, यह शक्ति भी नकारात्मकता की सुस्त जड़ता द्वारा पीछे खींच ली जाती है, जो तामस-शक्ति का निर्माण करती है।

“ये दोनों शक्तियाँ—सत्व और तमस—हमेशा एक-दूसरे से भिड़ती रहती हैं। जितना अधिक वे एक-दूसरे को खींचती हैं, उनके बीच उत्पन्न घर्षण स्वचालित रूप से एक तीसरी शक्ति को मुक्त करता है। यह शक्ति राजस-शक्ति है, जो क्रियाशीलता और गतिशीलता का प्रतिनिधित्व करती है।

“सत्व राजा (मन) के सबसे सहायक सेवक के रूप में कार्य करने का प्रयास करता है, क्योंकि यह शुद्धता और ज्ञान की ओर ले जाता है। लेकिन तामस, जिसे निष्क्रियता और अज्ञानता में आनंद आता है, इसमें कोई दिलचस्पी नहीं रखता। उसका उद्देश्य राजा की सलाह से सत्व को दूर रखना है। यह एक विकर्षण की शक्ति है, जो मन को संतुलन से बाहर करने का प्रयास करती है।

“इस प्रकार मन इन तीनों शक्तियों—सत्व, राजस और तमस—के बीच चल रहे तनाव को झेलता है। मन अंगों को कार्य करने के लिए एक शक्तिशाली एजेंट है, लेकिन अंगों को स्थिर रखने के लिए मन को भी स्थिर रहना चाहिए। मन को अपना मार्ग जानना चाहिए और उस पर अडिग रहना चाहिए। लेकिन जब मन विचलित होता है, तो तमोगुण हावी हो जाता है, और विनाश शुरू हो जाता है।

“मन को विचलित करने वाले मुख्य प्रलोभनों में से एक है रचनात्मक आवेग। यह वही आवेग है जो जीवन की निरंतरता को बनाए रखता है। वास्तव में, यह आवेग उस शक्ति से संबंधित है जो सृजन और जीवन के प्रवाह को बनाए रखती है।

“वेद कहते हैं, ‘जीवन की डोर को कभी नहीं तोड़ना चाहिए।’ इसलिए, इस रचनात्मक शक्ति को सही दिशा में निर्देशित करना आवश्यक है। इसे सात्विक दिशा में ले जाने पर यह सृजन और विकास का कारण बनती है। लेकिन यही शक्ति, जो सृष्टि-शक्ति या यौन-शक्ति कहलाती है, प्रलोभन और दुरुपयोग के जाल में भी आसानी से फँस सकती है।

“राजस-शक्ति इसे और अधिक उत्तेजित करती है, जबकि तामस-शक्ति इसे विकृत करती है। केवल सत्व-शक्ति ही इसे पवित्र और रचनात्मक बनाए रख सकती है। इसलिए, मनुष्य को अपने मन और इच्छाओं को नियंत्रित करना चाहिए, ताकि सत्व हावी रहे और जीवन की धारा शुद्ध, पवित्र और सृजनात्मक रूप में प्रवाहित हो।”

# संभोग: आह्लादिनी शक्ति

“संभोग, मन की तरह, अपने आप में एक अंग नहीं है, फिर भी मन की तरह यह हमारे व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है। यह स्पष्टि-शक्ति (रचनात्मक शक्ति), या ल्हादिनी शक्ति (आनंद शक्ति) है। सृजन में आनंद है। वेद कहते हैं, ‘सृजन आनंद से उत्पन्न हुआ है।’

“संभोग एक शक्ति के रूप में शरीर की मशीन को उत्तेजित करता है। यह वह शक्ति है जो हम जो कुछ भी देखते हैं, सुनते हैं, महसूस करते हैं, छूते हैं, खाते हैं, पीते हैं और अनुभव करते हैं, उसे अर्थ देती है। संभोग हमें रोमांचित करता है, हमें प्रेरित करता है और प्रेरणा देकर सृजन करता है। यह जीवन, कला, कविता, नृत्य और साहित्य का सृजन करता है। इसी सृजन में आनंद और परमानंद का जन्म होता है, जो जीवन को जीवंत और प्रेरित करता है।

“जब यह शक्ति नियंत्रण में रहती है, तो यह जीवन को सुंदरता, मिठास और प्रशंसा से भर देती है। यह उचित अभिव्यक्ति के साथ आनंद के क्षेत्र का विस्तार करती है। यह शक्ति हमारे शरीर को भगवान के आनंद के लिए एक गहन बलिदान के रूप में प्रस्तुत करती है और हमारी आत्मा को परम के प्रति अर्पित करती है, जैसे अगरबत्ती या मोमबत्ती जलाकर परम को श्रद्धांजलि दी जाती है।

“लेकिन जब यह शक्ति अनियंत्रित हो जाती है, तो यह स्वयं के साथ-साथ आसपास की दुनिया के लिए भी अपमान और विनाश लाती है। इसमें गुणा करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। अगर यह आनंद में वृद्धि नहीं करती, तो यह दुःख और शोक को बढ़ा देती है। यह मन को भ्रमित करती है और सोच को लुभाती है, जिससे मनुष्य जो आनंद और खुशी के स्रोत समझता है, वही अंततः निराशा और हताशा का कारण बनते हैं।

“पृथ्वी के गर्भ में छिपे ऊर्जा स्रोतों—जैसे गैस, तेल, कोयला, भूकंप, तूफान, ज्वार, धाराएं, भाप और बिजली की तरह—यह शक्ति भी अनदेखी या दबाई नहीं जा सकती। किसी भी शक्ति को समाप्त नहीं किया जा सकता, चाहे वह हवा हो, पानी हो या सूर्य की गर्मी। इन्हें नियंत्रित और शुद्ध रखा जा सकता है, या दुरुपयोग और प्रदूषण से दूषित किया जा सकता है।

“संभोग जीवन की मां है। हम इसे ‘मां’ या ‘शक्ति’ कहते हैं। इसे हम सम्मान और पूजन के योग्य मानते हैं, क्योंकि यह जीवन की रचनात्मकता और निरंतरता का स्रोत है। लेकिन जब इसका दुरुपयोग होता है, तो प्रेम वासना में बदल जाता है, शक्ति अत्याचार में बदल जाती है, और आनंद उन्माद और अराजकता का रूप ले लेता है।

“इस दुरुपयोग के कारण काम-शक्ति मातृ-शक्ति का विकृत रूप बन जाती है, जो समाज में अराजकता, लालच, और असंतोष का कारण बनती है। इसलिए हम इस शक्ति की पूजा करते हैं, ताकि इसे नियंत्रण और अनुशासन में रखा जा सके और इसका उपयोग सही दिशा में किया जा सके।

“प्रकृति में हर जीव अपनी मौसमी आवश्यकताओं के अनुसार जीता है। जानवर, पक्षी, कीड़े, मछलियां सभी प्राकृतिक संतुलन का पालन करते हैं। वे कभी भी अपनी सीमाओं से बाहर नहीं जाते और न ही वासना का अतिक्रमण करते हैं। लेकिन मनुष्य की अनियंत्रित इच्छाएं और लालच प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ देती हैं, जिससे पर्यावरण और समाज दोनों प्रभावित होते हैं।

“यही कारण है कि हम मातृशक्ति से प्रार्थना करते हैं, ताकि वह हमें इस शक्ति को समझदारी और अनुशासन के साथ संभालने का आशीर्वाद दे। अनियंत्रित वासना और लालच अंततः दुख, असंतोष और आत्मविनाश की ओर ले जाते हैं।

“यह हमारी ‘ल्हादिनी’ शक्ति है—वह शक्ति जो चेतना, विवेक, आनंद और सृजनशीलता को प्रेरित करती है। सृजन, आनंद की अभिव्यक्ति है, जबकि विनाश दमित आनंद का परिणाम है। एक ईश्वरीय आनंद है, जो सृजनशील और प्रगतिशील है; दूसरा आसुरी उल्लास है, जो विनाशकारी और प्रतिगामी है।”

## नाड़ी

“आनंद की प्रक्रिया बहुत सूक्ष्म है। इसका कुछ भाग ज्ञात है, और अधिकांश भाग अज्ञात है। जहाँ तक प्रक्रिया के ज्ञात भाग का प्रश्न है, हम जानते हैं कि पूरे पशु शरीर में संदेश प्राप्त करने और भेजने की टेलीग्राफिक और वायरलेस प्रणाली की तरह, तंत्रिकाओं की एक प्रणाली फैली हुई है। हम उन्हें नाड़ियाँ कहते हैं। हम इस प्रणाली के ज्ञात भागों को योग नामक अनुशासन और व्यायाम द्वारा नियंत्रित करते हैं; और जब हम योग प्रणाली में सफलता प्राप्त करते हैं, और आनंद और चेतना के स्रोतों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो इस ज्ञात भाग से हम इस प्रणाली के अज्ञात भागों के रहस्यों में प्रवेश प्राप्त करते हैं।

“फिर, इसके लिए हमें मातृ-शक्ति के आशीर्वाद की आवश्यकता है। क्यों? क्योंकि, जैसा कि पहले ही समझाया जा चुका है, मातृ-शक्ति हमारी सारी चेतना का स्रोत है; यह शक्ति चित्-शक्ति है। और यह शक्ति जीवन के जन्म की महत्वपूर्ण घटना में सबसे अधिक सक्रिय है।

“आम धारणा के विपरीत, शरीर और तंत्रिकाओं का यह संगठन जीवन के उच्चतर स्तरों को उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार कोई स्वस्थ, सचेत और जीवंत बच्चों की योजना बना सकता है जो दूसरों की तुलना में अधिक सचेत और अधिक शक्तिशाली साबित हो सकते हैं। प्रजातियों में से सर्वश्रेष्ठ सचेत प्रयास का उत्पाद है। यह प्रजनन की शक्ति के विनियमित और अनुशासित उपयोग का योगदान है। और इसके लिए हम प्रार्थना करते हैं।

“प्रार्थना सांसारिक-आत्मा को सूक्ष्म ब्रह्मांडीय-आत्मा के प्रति समर्पित करने का एक अभ्यास बन जाती है; यह बिना आँखों के देखती है, बिना कानों के सुनती है, बिना त्वचा के महसूस करती है, आदि, और अंतर करती है और विश्लेषण करती है। ऐसा करने से यह व्यक्तित्व का निर्माण करती है, दृढ़ संकल्प को मजबूत करती है और आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करती है।”

## शक्ति प्रणाली: नाड़ी तंत्र

“आम आदमी हमेशा प्रभावी ढंग से प्रार्थना नहीं कर सकता, फिर भी उसे इस शक्ति की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। उसकी मदद कैसे करें?

“आम आदमी को पानी की आपूर्ति करने के लिए हम जल कार्यों की नागरिक व्यवस्था के माध्यम से वितरण से पहले इसे इकट्ठा करने की व्यवस्था करते हैं। नागरिक अधिकारियों के संगठन के तहत हम सभी घरों को बिजली की आपूर्ति करते हैं। यह जीवन की अन्य सुविधाओं का भी ख्याल रखता है। बिजली के अभाव में जीवन कष्ट में रहेगा।

“इसी तरह कुछ मनुष्य एक ‘शक्ति’ स्रोत का निर्माण करते हैं। एक बार शक्ति प्राप्त हो जाने के बाद, यह आम आदमी की जरूरतों को पूरा करने के लिए जाती है। सेवा करने के लिए इस शक्ति को इकट्ठा करने वाले पुरुष या महिला को योगी कहा जाता है। वे अपने भीतर, एक शक्ति भंडार की तरह, मानव जाति की मदद करने की शक्ति को संरक्षित करते हैं, ताकि मनुष्य उस तरह से कार्य कर सके जैसा उससे अपेक्षित है। इसलिए योग प्रणाली और योगी।

“शक्ति का यह संचय और उसका वितरण योगिक अनुशासन पर निर्भर करता है, जिसका दूसरे शब्दों में अर्थ है तंत्रिका तंत्र, यानी नाड़ियों का सीधा नियंत्रण।

“नाड़ी-तंत्र को आम तौर पर तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है:
(क) नाड़ियां जो बाहरी संदेशों को अंदर ले जाती हैं;
(ख) नाड़ियां जो आंतरिक संदेशों को वितरित करती हैं, विभिन्न अंगों को उनकी संबंधित क्रियाओं के लिए प्रतिक्रियाएं देती हैं; और
(ग) एक तीसरा समूह जो ‘सोए’ रहकर कार्य करता है, अर्थात ‘कार्य न करके’। यह कार्य नहीं करता है, और हो सकता है कि न भी करे; लेकिन यह दूसरों को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। तीन नाड़ियों (तंत्रिकाओं के समूह) में से एक सुप्त है सुषुम्ना, जो जागृत होने पर सभी को जगाती है, अर्थात आध्यात्मिक अर्थ में जागृत करती है। अन्य दो इडा और पिंगला हैं। लेकिन एक बार जब सुषुम्ना ('सोई हुई') जागृत हो जाती है, तो अज्ञात स्वयं को प्रकट कर देता है। कमल चेतना और प्रकाश के पूर्ण खिलने के तहत नए आयामों के साथ एक नई दुनिया जानी जाती है।

"यह किस तरह की दुनिया हो सकती है, जहाँ मनुष्य, हालांकि बहुत कम, पहुँचते हैं? महान दिमाग, धनी व्यक्ति, शक्तिशाली व्यक्ति इस शक्ति को प्राप्त करने और इस नए क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आराम, सुरक्षा यहाँ तक कि सिंहासन का त्याग करने के लिए जाने जाते हैं। यह पुरुषों के लिए क्या रखता है?

"यह पुरुषों के लिए वह सब कुछ रखता है, जिसकी तलाश मनुष्य हमेशा से करता रहा है, मानव खोज और उपलब्धि के इतिहास में: आनंद, शांति, शांति, अभाव से मुक्ति, मन की चालाकी पर महारत।

"यह चौथे आयाम की दुनिया है, जहाँ सीमाएँ बाधा नहीं डालतीं, प्रतिबंध बाधा नहीं डालते, भय मंद नहीं पड़ता, आशाएँ निराश नहीं होतीं। यह वह दुनिया है जहाँ सभी आशाओं की वास्तविकताएँ अपनी पूर्णता पाती हैं; जहाँ संदेह सत्य में पिघल जाते हैं, जैसे धूप में कोहरा पिघल जाता है।

“मानव प्रणाली के निर्माता की कृपा से यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि चेतना की संरचना उन तंत्रिकाओं के सबसे निकट स्थित है जो प्रजनन अंगों के रूप में कार्य करती हैं। सृजन करने, जीवन में जीवन बनाने, जीवन के लिए बीज तैयार करने और उन्हें इस उद्देश्य के लिए बनाए गए क्षेत्र में डालने की इच्छा कुछ तंत्रिका बिंदुओं या ग्रंथियों पर निर्भर करती है; और ये बिंदु उन अंगों के सबसे निकट स्थित होते हैं जिनका उपयोग उत्सर्जन कार्यों के लिए किया जाता है।

“आइए इस बिंदु पर जो कुछ कहा गया है उस पर एक त्वरित नज़र डालें। इस स्तर पर यह ध्यान देना आवश्यक है कि जीवन बनाने के लिए कौन से कारक ‘सहायक’ के रूप में कार्य करते हैं।

“हमें यह समझना चाहिए कि यह केवल जीवन ही है जो जीवन बना सकता है। जीवन का प्रचार करना जीवन का स्वाभाविक कर्तव्य है। यदि जीवन जीवन नहीं बनाता, तो यह नष्ट हो जाता। लेकिन पूर्ण विनाश प्रकृति के विपरीत है।

प्रकृति जीवन को बनाए रखने का इरादा रखती है। रचनात्मक प्रक्रिया के लिए शरीर मिल, कारखाना, साधन है। शरीर इस कार्य को करने के लिए आश्चर्यजनक रूप से सुसज्जित और सुसज्जित है।

"हम सभी जानते हैं कि सभी कारखानों और मिलों को चलाने के लिए कुछ बिजली की आपूर्ति पर निर्भर रहना पड़ता है। बिजली का एक स्रोत होना चाहिए जो आवश्यक ऊर्जा की आपूर्ति करता हो। इस ऊर्जा के अलावा कुछ और भी है जिस पर मशीनों का सही ढंग से काम करना निर्भर करता है। यह व्यक्तिगत कारक है; मन का कारक। एक मास्टर-माइंड एक मास्टर प्लान बनाता है, और ऊर्जा या शक्ति की सुनिश्चित आपूर्ति के आधार पर इसे गति देता है। मनुष्य एक मशीन को मास्टर-माइंड करता है, उसे शक्ति से जोड़ता है, और फिर उत्पादन करता है।

"शरीर की मशीन में भी इस कार्य के लिए आवश्यक शक्ति की आपूर्ति, जिसे हम पहले से ही ल्हादिनी-शक्ति (सेक्स पावर) के रूप में जानते हैं, द्वारा की जाती है। यह हमारी सभी रचनात्मक इच्छाओं का आधार है।

"सभी शक्ति किसी न किसी तरह के ईंधन से आती है। ईंधन में छिपी हुई शक्ति होती है। शरीर का ईंधन भोजन है। भोजन वनस्पति जगत से या सीधे पशु जगत से प्राप्त किया जा सकता है। वनस्पति जगत का स्थायित्व भी बीजों पर निर्भर करता है। अकेले बीज, बिना सहायता के, जीवन में नहीं आ सकते, हालाँकि वे जीवन की संभावना को संग्रहीत करते हैं। बीज को जीवन में विकसित होने के लिए अन्य सहायता की आवश्यकता होती है, जैसे कि अनुकूल मिट्टी, सही मौसम, तथा प्रकृति से समय पर मौसमी सहायता।"

## बीज : गायत्री

"अब हम एक पूर्ण चक्र पूरा कर चुके हैं। प्रकृति में ईंधन से लेकर मिट्टी, मौसम, बीज तक; सब कुछ अंततः सौर ऊर्जा, सूर्य पर निर्भर करता है। यही कारण है कि हम हिंदू गायत्री मंत्र (जो सूर्य में शक्ति का आह्वान है) को आध्यात्मिक एकाग्रता में हमारी सबसे बड़ी विरासत मानते हैं। यह सूर्य शक्ति अंतरिक्ष से मौसम और बारिश के रूप में आती है, और पृथ्वी से मिट्टी, मिट्टी की गर्मी, खनिज और पानी के रूप में आती है। सब कुछ अंततः सूर्य शक्ति है। सब कुछ सकरी है, माँ की गर्मी।

"इस प्रकार, पृथ्वी, पानी, गर्मी, हवा और वायुमंडलीय या ब्रह्मांडीय परिस्थितियाँ सही प्रकार के फलदायी अंकुरण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यह पता लगाना और देखना आसान है कि इनमें से कोई भी मानव शक्ति द्वारा नहीं बनाया जा सकता है; और निश्चित रूप से बीज के भीतर की शक्ति नहीं। कोई भी बीज कृत्रिम रूप से मानव शक्ति द्वारा नहीं बनाया जा सकता है। यह केवल अदृश्य और अज्ञात से एक उपहार है।

"बीज दिया जाता है, मनुष्य इसे कैसे, कब और जहाँ चाहे बो सकता है। लेकिन बस इतना ही। पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु और वायुमंडल की तरह जीवन भी मनुष्य की सीमित शक्ति से परे है। मनुष्य तत्वों का निर्माण नहीं कर सकता; और मनुष्य जीवन का निर्माण नहीं कर सकता। न ही मनुष्य जीवन-काल की गारंटी दे सकता है।

"प्रकृति इस बीज का निर्माण करती है। जीवन और वनस्पति के स्थायित्व के लिए हमें प्रकृति से उपहार के रूप में बीजों की आवश्यकता है, और जीवन से जीवन तक जो कुछ भी चलता है, वह सब कुछ। इसलिए बीज सौर ऊर्जा के सार का सबसे सूक्ष्म कंटेनर है। यह स्वाभाविक रूप से ऊर्जा के विशाल भंडार के साथ जीवित होना चाहिए। एक बीज में संग्रहीत शक्ति अद्भुत है। आपने देखा होगा कि अंजीर के बीज के बल से बड़ी और अच्छी तरह से निर्मित पत्थर की दीवारें टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं; पौधा एक इमारत को घेर लेता है, और अपनी जड़ों की पकड़ में उसे बिस्कुट की तरह चूर-चूर कर देता

है। प्रसिद्ध अंगकोर वाट का पूरा शहर और पत्थर की इमारतें विशाल पेड़ों की जड़ों की पकड़ और पंजों से कुचली जा रही हैं। इन पेड़ों के बीज कभी-कभी मकड़ी के अंडों से भी छोटे होते हैं।

“लेकिन इस बीज को डालना होगा। इसे शरीर से मिट्टी में डालना होगा। शरीर ही जीवन का बीज धारण करने वाला पेड़ है। वहाँ बीज पकता है और बोने लायक हो जाता है। बीज पक जाने के बाद, शरीर या पेड़ को अंततः एहसास होता है कि बीज बोने का समय आ गया है। प्राकृतिक शक्ति से प्रेरित होकर, मूल शरीर बोने में आनंद लेता है और राहत महसूस करता है। यह मानो एक कर्तव्य पूरा हो गया हो। यह जीवन का फल है।

“लेकिन बोने और फलने के लिए उपयुक्त मिट्टी का उचित चयन करना होगा। बिना तैयारी और अनुपयुक्त मिट्टी में बोया गया बीज सबसे अच्छे परिणाम नहीं देगा, या इससे भी बदतर, कोई परिणाम नहीं देगा।

## त्रिकोण की वंदना और तांत्रिक साधना

“शरीर का भी अपना मौसम होता है। मौसम के अनुसार मिट्टी तैयार होती है। यह मिट्टी उस शरीर द्वारा प्रदान की जाती है जिसे हम स्त्री शरीर कहते हैं। जब यह उपजाऊ शरीर अंकुरित होने के लिए तैयार होता है, तो यह रक्त के प्रवाह को छोड़ कर सूचित करता है कि बाहरी दुनिया के बीच एक नदी की तरह बहती है, जहाँ रक्त को एक स्वागत योग्य संकेत के रूप में देखा जाता है, और शरीर के भीतर की दुनिया, जिसे भ्रूण कहा जाता है।

“जीवन में रुचि रखने वालों और जीवन के रोपणकर्ता के लिए इस मिट्टी, इस प्रवाह, इस अतिरिक्त गर्मी के लिए आभारी होना स्वाभाविक है जो शरीर को बीज का उपहार प्राप्त करने के लिए ऊर्जा प्रदान करती है। यह काफी समझ में आता है और अपेक्षित है कि विचारशील लोग, जिनके विचार हमेशा किसी घटना की आत्मा को देखते हैं, उन्हें प्रकृति से इस महान उपहार की पूजा करनी चाहिए, एक बंजर भूमि, एक बंजर भूमि, एक बहती नदी या सूरज और बारिश के उपहारों के बिना भूमि के लिए कौन आभारी होगा?

“मानव शरीर में यह क्षेत्र, यह स्रोत जिससे जीवन एक नया जीवन उत्पन्न करता है, वह स्त्री जननांग है जो मूत्र नली के बहुत करीब स्थित है, और यौन ग्रंथियाँ जो रीढ़ की हड्डी के स्तंभ के माध्यम से और उसके चारों ओर चलने वाली तंत्रिकाओं के मुख्य तीन बैंडों की जड़ में स्थित हैं। हम पहले ही यह सब बता चुके हैं। है न?

“हम तंत्र योग के अभ्यास के माध्यम से शक्ति के इस पूरे क्षेत्र पर नियंत्रण करने का प्रयास करते हैं, जो यहाँ जीवन के आध्यात्मिक दृष्टिकोण को स्वीकार करता है, और इस शरीर में जीवन के सक्षम उपयोग के माध्यम से परे। इस प्रकार तंत्र योग को जीवन के भौतिक दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ माना जाता है, बेशक, इसकी आध्यात्मिक संभावनाओं को अनदेखा किए बिना। यही कारण है कि हम इस क्षेत्र, इस त्रिभुज की पूजा करते हैं; और इस क्षेत्र के साथ निकट संपर्क में योग का अभ्यास करके हम इस शक्ति, यौन शक्ति, बीज शक्ति, ल्हादिनी शक्ति को समझने, नियंत्रित करने और अवशोषित करने का प्रयास करते हैं।

“लेकिन मिट्टी अपने आप में, चाहे कितनी भी उपजाऊ और ग्रहणशील क्यों न हो, उचित और स्वस्थ बीज की मदद के बिना उत्पादन करने में विफल रहती है। यदि बीज में स्वस्थ परिपक्वता की पूरी शक्ति नहीं है, तो अंकुरण प्रभावित होना तय है। यही कारण है कि हमें यह उल्लेख करने का अवसर मिला कि तत्वों की तरह, मनुष्य अकेले या अकेले जीवन का

निर्माण नहीं कर सकता। जीवन के निर्माण में केवल यौन क्रिया, या साथ रहना, या यहाँ तक कि कास्टिंग भी सफलता की गारंटी नहीं है।

## बीज: जीवन का स्रोत

“यह बीज पुरुष के शरीर में परिपक्क होता है। सभी जीवन बीज से ही उत्पन्न होते हैं। इस बीज को मादा मिट्टी में डालना पड़ता है, जहाँ बीज को ग्रहण करने के लिए उचित पालना होता है, तथा शरीर द्वारा इस उद्देश्य के लिए सुरक्षित की गई महत्वपूर्ण शक्तियों के माध्यम से क्रमिक विकास के लिए इसे गर्म रखना होता है। यह अंकुरण की अवधि है जब जीवन को बढ़ने और जड़ जमाने की अनुमति दी जाती है।

“हमने शरीर को एक मशीन के रूप में वर्णित किया है; लेकिन हमने यह भी उल्लेख किया है कि इस मशीन में, इसके भौतिक प्रोटोटाइप के विपरीत, एक मन है। यह मन भावनाओं के उतार-चढ़ाव के अधीन है। चूँकि तैयार मिट्टी में बीज को डालने की क्रिया को एक सुखद घटना माना जाता है, इसलिए जीवन के निर्माण में आनंद एक सहायक कारक है। महिला शरीर में मौसम हो सकता है, और पुरुष शरीर में बीज हो सकता है, लेकिन साथ मिलकर काम करने की इच्छा की कमी हो सकती है। वे कार्य करने में अनिच्छुक हो सकते हैं; कार्य करने से डरते हैं। वे गुप्त आरक्षण, अवरोधों, यहाँ तक कि जुनून के तहत कार्य कर रहे हो सकते हैं। आनंद को किसी प्राणी पर जबरन नहीं थोपा जा सकता। इसे भीतर से प्रवाहित और बह जाना चाहिए। शक्तियों का आनंदमय मिलन ही आनंदमय जीवन का निर्माण कर सकता है। एक स्वस्थ बीज ही अपने अंतिम उत्पाद में इस अबाधित आनंद को व्यक्त कर सकता है।

“आनंदमय वातावरण बनाने का यह कर्तव्य मूलतः मानव का है। मानव जीवन ही सभी भावनाओं के सूक्ष्मतम शिखर तक पहुँच सकता है। मानव जीवन में प्रेरक तत्व सहज प्रवृत्ति को सावधानीपूर्वक नियंत्रण में रखकर लाभ और स्वाद के साथ भावनाओं को प्रदर्शित करता है। मनुष्य के अलावा अन्य जानवर और कीड़े मुख्य रूप से सहज प्रवृत्ति पर निर्भर होते हैं। मनुष्य ऐसा नहीं है। मनुष्य में सहज प्रवृत्ति को एक भावनात्मक आभा द्वारा सुशोभित रखा जाता है। इस प्रकार मनुष्य में ल्हादिनी सुंदर चीजें बनाती है और परिणामी शिल्प आनंद व्यक्त करते हैं और दूसरों को उस आनंद में साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं। इसे, मनुष्य एक विशेष शक्ति के रूप में विकसित करता है।

“जो लोग भावनात्मक क्षेत्रों की खेती करने का आनंदमय कर्तव्य करते हैं, उन्हें अन्य प्रकार के जानवरों से इस सीमा तक वे भी सुसंस्कृत, सभ्य हैं। सहज प्रवृत्ति और भावना पर नियंत्रण रखना ही सभ्य होना है।

“इसलिए, मनुष्य में जीवन का बीजारोपण और संवर्धन केवल सहज प्रवृत्ति पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। नर और मादा मनुष्यों के बीच मिलन में शामिल भावनाओं को, पूरी तरह से आनंदित होने के लिए, किसी भी तरह से संबंधित व्यक्ति को दुखी किए बिना, चारों ओर खुशी पैदा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

## एक सुखद मिलन

“जीवन के निर्माण के आनंदमय कार्य में लगे दो मनुष्यों का एक खुशहाल मिलन एक सुसंस्कृत प्रशिक्षण की अपेक्षा रखता है जो भावनाओं को नियंत्रित रखता है; और जुनून की आग को वांछित सीमाओं के भीतर रखता है। यौन शक्ति पर सीधा नियंत्रण पाने के लिए, और इसे स्वर्ग द्वारा डिज़ाइन किए गए प्राकृतिक बंधनों में डालने के लिए हम मातृ शक्ति के चरणों में बैठते हैं।

“बलात्कार के रूप में एक अपराध है। यह एक गंभीर पाप है। एक अपराध का फैसला सामाजिक न्यायालय में किया जाता है; एक पाप का फैसला अपराधी के आंतरिक अभयारण्य में किया जाता है जहाँ शांति रहती है। एक अपराध के रूप में बलात्कार व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध आनंद और कर्तव्य का कार्य करने के लिए मजबूर करता है। यह अनियंत्रित अविवेक के माध्यम से कुरूपता, अपमान और दुःख का कारण भी बनता है। प्रकृति मार्गदर्शन करती है और ढालती है, लेकिन कभी मजबूर नहीं करती। बलपूर्वक या दबाव में कार्य करने के लिए मजबूर करना बलात्कार है। बलात्कारी इस सच्चाई को भूल जाता है।

“बीज को गर्म प्रवाह में डाला जाना चाहिए, जिस पर मादा अंडा तैरता है, उचित ऊष्मायन के लिए, एक निश्चित तापमान बनाए रखना पड़ता है, जो शरीर की सजगता से निर्धारित होता है। इस बीज को शरीर से शरीर में सीधे डालना इसे स्वस्थ रूप से अंकुरित करने में मदद करने का सबसे सुरक्षित तरीका है। जब तक इसे सीधे नहीं डाला जाता है, तब तक यह बीज क्षतिग्रस्त होने की संभावना है। यह इतना सूक्ष्म है कि यह डालने के समय दोनों की भावनात्मक स्थिति को भी रिकॉर्ड करता है।

“इसलिए, डालने के समय यह भावनात्मक स्थिति चिंता, भय, शर्म, मंदता, लालच, वासना और नासमझी जैसी जटिलताओं से मुक्त होनी चाहिए। विभाजित मन द्वारा डाला गया बीज विक्षिप्त रूप से क्षतिग्रस्त जीवन उत्पन्न कर सकता है। एक संकोची या अनिच्छुक भ्रूण के भीतर पला हुआ बीज समान रूप से शांतिपूर्ण सामान्य विकास को नुकसान पहुंचा सकता है। किसी भी मामले में ल्हादिनी प्रसन्न नहीं हुई है। जब तक यह इच्छुक आनंद सुरक्षित नहीं होता है, तब तक यह संभावना है कि बीज का विकास प्रभावित होगा, और जिस जीवन को यह ग्रहण करता है उसे खराब भावनाओं का भार उठाना पड़ सकता है। यह बेहद खतरनाक है, और बदसूरत जोखिमों से भरा है।

“शरीरों का मिलन दो पूर्णतया स्वस्थ प्राणियों के बीच होना चाहिए, जिसमें पूर्ण समझ और इच्छा हो, ताकि मिलन से ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति की भावना उत्पन्न हो, एक आनंदमय कार्य जो अपने स्वाभाविक अंत तक पहुँचे।

“चूँकि इस बीज को गर्म और स्वस्थ रखना होता है, इसलिए इसे सीधे एक गर्म चैनल में गहराई तक डालना होता है जहाँ अंडा प्रतीक्षा करता है। नर शरीर को एक सिरिंज जैसा अंग प्रदान किया गया है। मूत्र के माध्यम से शरीर के तरल पदार्थों को बाहर निकालने के अलावा, यह अंग बीज को एक चैनल में इंजेक्ट करने या डालने के लिए एक सिरिंज के रूप में भी कार्य करता है जहाँ एक तरल पदार्थ के माध्यम से गर्मी बनाए रखी जाती है, जिसे परिपक्व और तैयार मादा साथी छोड़ती है, और जो बीज को सही अंकुरण के लिए उसके अंतिम गंतव्य तक ले जाती है।

“इस सुरक्षात्मक अवस्था को भ्रूण के रूप में जाना जाता है। एक नया जीवन एक भ्रूण के भीतर तैरते अंडे में बीज के डालने के साथ ही शुरू हो जाता है।

"यही कारण है कि पुरुष अंग का आकार एक लंबी सीरिंज जैसा होता है, और महिला अंग एक बंद होंठ वाली दरार होती है जिसके भीतर जीवन द्रव की गर्मी को एक निश्चित तापमान पर बारीकी से संरक्षित रखा जाता है। सब कुछ रोगनिरोधी होना चाहिए, जिसमें मन भी शामिल है, जो सबसे शुद्ध होना चाहिए।

## आनंद की प्रेरणा

“बीज बोने का यह सरल कार्य बहुत यांत्रिक और उबाऊ होगा जब तक कि इसमें आनंद के लिए प्रेरणा न हो। यह एकता और प्रेम आनंद है। आनंद प्रेरणा है, जीवन का आधार है। यदि यह आनंद नहीं है, यदि यह स्थिति जबरदस्ती है, गोपनीयता के पर्दे से ढकी हुई है, अपराध की भावना है, यदि यह स्थिति धुंधली भावनाओं और विरोधी विचारों की उदास धाराओं से घिरी हुई है, तो निश्चित रूप से प्राकृतिक आनंद का कार्य अपराध और भ्रष्टाचार की भावनाओं से भरा होगा, और सभी आनंद को मार देगा। जो आनंद को मारता है वह पाप है। आनंद को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य होने और आगे और अधिक आनंद पैदा करने के द्वारा आनंद के रूप में जाना जाना चाहिए।

“आप देखते हैं कि सभ्यता के शुरुआती दौर में दुनिया के एक निश्चित हिस्से के इंसानों ने जीवन के प्रसार, आनंद और इस आनंद पर नियंत्रण की आवश्यकता के बीच संबंध की खोज की। क्योंकि यह प्रसार स्वास्थ्य और आनंद के प्रसार के साथ बहुत निकटता से जुड़ा हुआ था, इसलिए प्राचीन काल के लोगों ने आत्म-नियंत्रण की शक्तियों और सेक्स की इस शक्ति में शिक्षा की भी खोज की। वे इस शक्ति के सामने घुटने टेकते, प्रार्थना करते, और इस शक्ति को अर्पित करने के लिए अपनी सर्वोच्च और सबसे कीमती भेंट लाते, और इसे माँ कहते। वे इस शक्ति की पूजा करते। इसे भक्ति और प्रेम की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के अलावा कुछ और मानना आध्यात्मिक विनम्रता और सांस्कृतिक नियंत्रण की दुखद कमी को व्यक्त करना है।

“हमारे आसन, हमारा एक साथ बैठना, हमारी ध्यान की विधियाँ, ये सभी जीवन के रहस्य के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने के उदात्त कार्य से बहुत निकटता से जुड़ी हुई हैं। एक शक्ति के रूप में ल्हादिनी को वासना और व्यभिचार की शक्तियों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। सृजन के रहस्यों से, और शरीर और मन के सहसंबद्ध क्षेत्रों से परिचित होना जो रचनात्मक आग्रह में सहायता करते हैं, आनुपातिक रूप से रोमांटिक तात्कालिकता, बेकाबू जुनून और पापपूर्ण अनुमानों की भावनाओं को कम करता है।

“वास्तविक आनंद और परमानंद के स्रोतों तथा वासना और लालच के स्रोतों के बीच का अंतर स्वर्ग और नरक, ईश्वर और ईश्वर-विरोधी के बीच का अंतर है।

## एक नायिका, एक योनि की उपासना

“तंत्र और तंत्र आसनों में हमारे अंग, हमारा शरीर-अस्तित्व, एक दूसरे के अंतरंग और पूरी तरह से जागृत चेतना के करीब आते हैं। इस प्रकार हम अपने मन और शरीर को अनुशासित करते हैं कि वे आनंद और शक्ति के इन आसनों को उनके अमूर्त रूप में देखें, याद रखें कि तंत्र में एक नायिका, एक भैरवी, एक विद्या या एक दूसरे अहंकार की भी माँ के रूप में पूजा की जाती है।

"इस संदर्भ में कामुक व्यवहार बिल्कुल अकल्पनीय है। वह दिन निकट है जब एक महिला के बारे में सोचना ही आपके अंदर भावनाओं को जगाएगा या माँ को मानव रूप में देखने का अनुभव करेगा।

"जब आप एक पुरुष बन जाते हैं, और एक ‘गृहस्थ’ (गठस्थ) का जीवन स्वीकार करते हैं, तो आप जिस समाज में रहेंगे, उसके आस-पास की चीजों का अवलोकन करेंगे, और पाएंगे कि कितनी बार एक पत्नी अपने पति से बलात्कार का शिकार होती है। इसका परिणाम एक टूटा हुआ दिल, एक क्षतिग्रस्त प्रेम और एक जर्जर घर होता है। यह सब होने की जरूरत नहीं

है अगर मनुष्य एक बार यह मान ले कि अन्य सभी शिक्षाओं की तरह अंतरंग और व्यावहारिक ज्ञान, यौन व्यवहार का तंत्र-बद्ध ज्ञान बिल्कुल अपरिहार्य है।

"बहुत कम लोग, यदि कभी कोई भी, यह महसूस करता है कि इस तरह के ज्ञान की उपेक्षा मानव जीवन के सर्वोत्तम वादे, यानी रचनात्मकता के आनंद को खोने के जोखिम पर की जाती है। आलोचकों को यज्ञस्थल (बलिदान वेदी) के आसपास भौंकने दें; वे भी कष्ट भोगते हैं और नरक में रहते हैं।

"एकमात्र मुक्ति माँ को एक सौम्य शक्ति के रूप में स्वीकार करने के माध्यम से है।

## तंत्र की अनभिज्ञता

“आधुनिक अस्तित्व की त्रासदी यह है कि मनुष्य जीवन के इस सबसे महत्वपूर्ण, महत्वपूर्ण क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, जीवन, घर, स्त्री, सेक्स, योनि, लिंगम आदि के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित किए बिना। इनमें से अधिकांश को अंधेरे में रखकर, मनुष्य ने खुद को उस शांति और कुलीनता से वंचित कर लिया है जो एक गृहस्थ के कर्तव्यों में निहित है।

“तंत्र प्रतिभागी को अनुशासन का कठोर पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। इस अनुशासन का अधिकांश भाग जीवन, यहाँ और अभी को संबोधित करता है। लेकिन एक नकारात्मक दर्शन के अचानक विस्फोट और धार्मिक महाराजाओं और स्वामियों के दुर्भाग्यपूर्ण और अवास्तविक उपदेशों के माध्यम से इसकी लोकप्रियता के कारण, धर्म में समाज की रुचि में एक रुग्ण परिवर्तन आया है। जीवन में रुचि जैसा कि यह ‘यहाँ’ है, उस जीवन में स्थानांतरित हो गई है जिसका वादा ‘अन्यत्र’ किया गया है।

“बहुत अधिक तत्वमीमांसा ने सत्य के प्रकाश को बुझा दिया है, जैसे बहुत अधिक लकड़ी अग्नि-स्थल की लौ को दबा देती है। तंत्र में कोई ‘अन्यत्र’ नहीं है, रा, जो जीवन को अपनी मां की गोद में शिशु के रूप में गर्भ धारण कराता है। यह छवि महत्वपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण है। हिंदू गणेश-जननी, माता की छवि बनाते हैं, जिनकी गोद में गण या ‘लोग’ यानी जीवन जीवित रहता है। ईसाई चर्च की मैडोना, पिएटा की छवि इस अवधारणा के कितने करीब है।

“यह वह मैट्रिक्स है जहां सभी उत्पत्ति शुरू होती है; नेबुला की योनि। यह वास्तव में माँ की छवि है जिसकी कृपा यहाँ और अभी जीवन को आशीर्वाद देती है।

“माँ का स्तन पोषण का चिरस्थायी स्रोत है, और माँ की योनि यहाँ सार्वभौमिक जीवन के विकास के लिए चिरस्थायी ‘स्रोत’ है। वह मैट्रिक्स है; उत्पत्ति की प्रक्रिया का अल्फा। इस छवि में कुमारी माता, कुंवारी माँ की अवधारणा जीवित है।

“यह उदात्त विचार तंत्र की भाषा में बेहतर ढंग से व्यक्त किया गया है; और विश्व प्रवाह के प्रति तंत्र का दृष्टिकोण इस उदात्तता का समर्थन करने के उद्देश्य से है। माँ का भौतिक भाग जो जीवन को बनाए रखता है और बनाए रखता है, वह स्तन है।

“स्तन (स्तन) शब्द के लिए संस्कृत मूल का अर्थ है 'अधिक से अधिक बढ़ना'; विकसित होना और उसी माँ का दूसरा भाग, या अंग, उसी शक्ति की अभिव्यक्ति, जो हर साल नए जीवन, नए विचारों, कला और बुद्धि के नए उत्पादों, नई दुनियाओं, नए ब्रह्मांडों की धाराओं और धाराओं को प्रक्षेपित करती है - उसे योनि कहा जाता है, वह त्रिकोण जिसकी तंत्र पूजा करता है।

"तंत्र में वह आस्था इसी दृष्टिकोण, इस विश्वास पर टिकी है।"

## व्यावहारिक दृष्टिकोण

"तंत्र जीवन की दूसरी दुनिया पर अपना प्रयास बर्बाद नहीं करता, यह वास्तव में मनुष्य को शिक्षित करता है, और फिर जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ रूप से तैयार होने के लिए प्रशिक्षित करता है, जैसा कि उसका सामना किया जाना चाहिए और जीना चाहिए। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो आपको मेरी आपमें रुचि की सराहना करने में कठिनाई नहीं होगी। मैं आपमें से सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि आपके भीतर ऐसी शक्तियां हैं, जिन्हें विकसित और बाहर लाने पर, आप जिस समाज के संपर्क में आएंगे, उसका बहुत भला होगा।

"जीवन के प्रति एक प्रशिक्षित दृष्टिकोण, जीवन की गहरी सराहना और जीवन के बारे में शिक्षा एक व्यक्ति को एक उचित गृहस्थ बना देगी।

"फिर वह इसे इतनी अच्छी तरह से जीने में सक्षम होगा कि मृत्यु उसके लिए कोई समस्या नहीं होगी। जब समय आएगा, तो वह बहुत शांति से जीवन छोड़ देगा। आप देखते हैं कि तंत्र की सही समझ से अगले जीवन के लाभ स्वतः ही प्राप्त होते हैं। इस जीवन का अच्छे से ख्याल रखें, अगले जीवन के लाभ स्वतः ही मिलेंगे जैसे रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आती है।

"मृत्यु अगले जीवन में प्रवेश करने का द्वार है, इसलिए प्रवेश की दहलीज पर शांति अनिवार्य है। तंत्र यही बताता है।

"तंत्र के रहस्यों के ज्ञान के महत्व को महान शंकराचार्य आदि शंकर के जीवन के एक प्रसंग के माध्यम से गहराई से समझा जा सकता है। अगर आपने इसे सुना है तो मैं इसे एक बार फिर सुनाता हूँ। किंवदंतियाँ गूढ़ सत्य के महान शिक्षक हैं।"

## शंकर का परिवर्तन

"देश के सभी विचारशील दिग्गजों को एक झंडे के नीचे लाने के अपने उत्साही प्रयासों के दौरान, वे अंततः उस समय के बौद्धिक आश्चर्य, श्री मंदाना मिश्र (जिन्हें बाद में स्वामी सुरेशवराचार्य के नाम से जाना गया, और जिनके अपने बहुत से अनुयायी थे) के पास पहुँचे। वे एक गृहस्थ थे, और वे कथास्थ धर्म में विश्वास करते थे। उनका विवाह एक समान रूप से सुंदर, ज्ञानी और प्रेम से परिपूर्ण महिला से हुआ था। मंदाना की पत्नी उभय भारती दो विपरीत उद्देश्यों के बीच दृढ़ता से खड़ी थीं: मिश्र को संन्यासी की शपथ दिलाने का शंकर का उद्देश्य, और अपने पति को उस मार्ग पर रखने की उनकी दृढ़ इच्छा जिसे वे विवाहित व्यक्ति के लिए सही मार्ग के रूप में जानती थीं।

"शंकर को इस महिला से बहस करनी पड़ी; और उसने तुरंत तंत्र के रहस्यों, और योनि की शक्तियों, साथ ही इसके अपार महत्व के विषयों को उठाया। उन्होंने जीवन और समाज को आकार देने में प्रेम और सेक्स के योगदान की बात की और शंकर से पूछा कि क्या वह केवल सैद्धांतिक विद्वता से बोल रहे हैं या जीवन के उस अहसास से बोल रहे हैं जिस तरह से इसे व्यावहारिक रूप से जीना है। उन्होंने युवा शास्त्रार्थ करने वाले को चुनौती दी कि क्या उसे किसी शक्ति के रूप में स्त्री के प्रेम का कोई अनुभव है। उसने पूछा कि क्या उसकी माँ ने उसे दुनिया में लाकर कोई भूल की थी या क्या वह स्वयं मातृत्व को पसंद करके गलत है।

शंकर विद्वान महिला के सीधे दृष्टिकोण से चकित थे और उन्होंने कुछ समय के लिए खुद को इस दिशा में और शिक्षित करने की भीख मांगी। जब वह विलासिता में डूबी एक महिला की संगति में एक लंबा साल बिताने के बाद दृश्य में लौटे, तो उन्होंने जीवन की कुलीनता और भव्यता को शक्ति की कृपा के एक पहलू के रूप में कल्पना की थी जो इसे प्रेरित और संचालित करती है। यद्यपि मिश्र युवा शंकर के आह्वान के तत्काल प्रभाव में आ गए, शंकर स्वयं धीरे-धीरे तंत्र में पारंगत हो गए, और माता पर उनका भजन *सौंदर्य-लहरी* आज भी तंत्र साधना पर लिखी गई सबसे बहुमूल्य गूढ़ कृतियों में से एक है। अन्यत्र कहीं भी उदात्त श्रीयंत्र का इतनी उत्कट भावना और गहराई के साथ, फिर भी इतनी खूबसूरती से वर्णन नहीं किया गया है। यह साहित्य की एक भव्य कृति है।

"यदि आपको कभी समय मिले, तो दक्षिण भारत के कुट्रालम, शिव-कांची और सेंगेरी में शंकर के आराध्य श्रीयंत्र के महान मंदिर में जाएँ। इनमें से किसी एक पीठ में ध्यान करने से चेतना के कंपन उत्पन्न हो सकते हैं, जो आपको लाभ पहुँचा सकते हैं, जो आपको आश्चर्यचकित कर सकते हैं। (मैंने एक से अधिक बार कुट्रालम का दौरा किया था। वह अनुभव बाद में दर्ज किया गया है।)

"तंत्र जीवन को प्रोत्साहित करता है। तंत्र मनुष्य से जीवन की पूर्णता में जीने की अपेक्षा करता है। लेकिन तंत्र यह भी अपेक्षा करता है कि हमारा जीवन अनुशासित हो। अनुशासन दिशा देता है। एक सुव्यवस्थित जीवन का आनंद लेने के लिए, मनुष्य को शक्ति, माँ की कृपा के समक्ष विनम्रता के साथ खड़ा होना चाहिए। उस एक सत्य में तंत्र का सारा सत्य और रहस्य निहित है। माँ तंत्र का मूल है, जिसमें इन रहस्यमय आसनों की भूमिकाएँ शामिल हैं। ऐसे संदर्भ में, व्यायाम और अभ्यास के ऐसे रूपों में कामुकता को लाना, जहर की निंदा करना है, भले ही उसमें उपचार करने की क्षमता हो।

"माँ को कभी भी टुकड़ों में न देखें। वह योनि है, परम, जहाँ हम सभी जीवन काल के अंत में गायब हो जाते हैं, और वह उत्पत्ति जहाँ हम सभी अपना भौतिक अस्तित्व शुरू करते हैं। माँ और योनि मिलकर इस शिक्षा के अल्फा और ओमेगा हैं।"

# 7. शून्य से उठती आवाजें (Voices from the Void)

## काम का आनंद

मेरे उस संबंधी और उसकी प्रेमिका के माध्यम से संयोगवश मेरे जीवन में काम-जीवन का जो परिचय हुआ, उसने मुझे इस जटिल ज्ञान-क्षेत्र में सीधा प्रवेश पाने का स्वर्गीय अवसर दिया। मुझे इस विषय में इससे बेहतर शुरुआत की अपेक्षा नहीं थी। उसके खुले शरीर ने मुझे बहुत कुछ समझाया। उसके सही दृष्टिकोण ने उस क्षेत्र में नई रोशनी डाली, जिसे अब तक रहस्यमय और वर्जित समझा जाता था। जीवन की यौन शक्तियों से जुड़ी अनिवार्यता धीरे-धीरे मेरे समक्ष खुलने लगी। तब से जब भी मुझे जीवन में शारीरिक काम-सम्बन्ध के अवसरों का सामना करना पड़ा, मेरे लिए इन अंगों को किसी और दृष्टिकोण से देखना असंभव था सिवाय इसके कि वे रहस्यमय शक्ति के गहरे स्रोत हैं। मैं आज भी इस विश्वास पर कायम हूं कि अनुशासित यौन जीवन परिपक्वता को वही ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करता है, जो बढ़ते शिशु के जीवन को माँ का दूध देता है; क्योंकि दोनों ही मातृ-शक्ति के स्रोत हैं।

मुझे विश्वास हो गया, और समय के साथ यह विश्वास और भी गहरा हुआ, कि लिबिडो (काम-शक्ति), 'ल्हादिनी', यौन इच्छाओं को सृजनात्मक मार्गों की ओर प्रवाहित करती है। यह आनंद उत्पन्न करती है; और वही आनंद इसे बनाए रखता है। यह शक्ति एक आनंदमय वातावरण का विस्तार करती है; प्रेमपूर्ण समझ और आत्मसमर्पण की भावना को जन्म देती है; और मन को प्रेम में विनम्रता के बोझ को खुशी-खुशी सहने के लिए प्रेरित करती है। सच्चा प्रेम स्वेच्छा से समर्पण के माध्यम से स्वयं को महिमामंडित करता है। इस रहस्यमय शक्ति को आत्मा सर्वोच्च सम्मान अर्पित करती है; और शरीर स्वयं को सर्वोच्च बलिदान के रूप में अर्पित करता है; और यह बलिदान जीवन को जीवन का फल प्रदान करता है। हम इसे एक महान यज्ञ के रूप में जानते हैं, जिसमें मृत्यु और जीवन निरंतरता की प्राप्ति के लिए साथ-साथ खेलते हैं। इस यज्ञ में पीड़ा सुख बन जाती है, और सुख स्वयं को पीड़ा को अर्पित कर देता है। यदि मृत्यु जीवन को चुनौती देती है, तो एक अर्थ में यह यौन शक्ति मृत्यु को भी चुनौती देती है।

समय के साथ, इस शक्ति की पूजा के प्रति मेरी समझ, त्रिकोण की (और त्रिकोण के माध्यम से स्त्री सौंदर्य की दुनिया की) समझ और भी स्पष्ट होती गई। मेरी स्नेहमयी गुरु के प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन से मेरे मन में स्त्री के प्रति गहरे सम्मान का भाव उत्पन्न हुआ; और परिणामस्वरूप, मैं शरीर के इन अंगों को तिरस्कार या निंदा की दृष्टि से नहीं देख सका। मैंने इस शक्ति को जीवन के स्रोत के लिए सुरक्षित सर्वोच्च श्रद्धा और विस्मय के साथ देखा। चूँकि मैंने लिबिडो या 'ल्हादिनी' की शक्ति को धार्मिक श्रद्धा के साथ स्वीकार किया, इसलिए मैंने स्त्री को आनंद की अभिव्यक्ति और साथ ही रहस्यमय शक्ति के स्रोत के रूप में देखा।

## पापी नहीं

जब हम अपनी जिम्मेदारियों के प्रति पूरी तरह से जागरूक नहीं होते, तो हम सभी गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार करने के प्रति प्रवृत्त होते हैं। यही कारण है कि हम इस क्षेत्र में अतियों के शिकार हो जाते हैं। लेकिन हम अन्य क्षेत्रों में भी अति करते हैं, जैसे कि भोजन, पेय, नींद, आवश्यकताएँ, संपत्ति आदि के चुनाव और मात्रा में। समस्या इस बात में नहीं है कि हम क्या करते हैं, बल्कि इसमें है कि हम कैसे और कितनी मात्रा में करते हैं। केवल सीमा का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है;

सीमा खींचने की शक्ति, और उस सीमा तक पहुँचने से पहले ही रुकने की क्षमता को अर्जित करना पड़ता है। और यह समझ, विश्लेषण, सावधानी, अभ्यास और सबसे बढ़कर इन सबके प्रति सही दृष्टिकोण के विकास और संवर्धन से प्राप्त होती है।

इसीलिए, मैं कभी किसी स्त्री को उसके 'पतन' के लिए या किसी पुरुष को उसके 'पाप' के लिए दोषी नहीं ठहरा सका। मैं कभी भी स्वयं को इतना योग्य नहीं समझ पाया कि आत्म-धार्मिकता के गर्वीले और कठोर न्यायाधीश की भूमिका निभा सकूं। ऐसा मिथ्या दृष्टिकोण कभी मेरे विचारों को प्रभावित नहीं कर सका, न ही मेरी 'मानवता के प्रति प्रेम' को धुंधला कर सका। 'पतन' या 'पाप' की अवधारणा स्वयं मनुष्य के प्रति मनुष्य के सम्मान को गिराने के लिए मानी जाती है।

किससे गिराना? कहाँ से कहाँ गिराना? क्या उस जीवन-शक्ति की कृपा से बाहर कोई स्थान है? उस प्रेम-शक्ति से बाहर? यदि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मातृ-शक्ति से आवेशित और परिपूर्ण है, तो मैं उससे 'पतन' की कल्पना कैसे कर सकता हूँ? क्या यह विचित्र नहीं लगता?

यह मेरे लिए एक सर्वोच्च परीक्षा थी। इस समझ को प्राप्त करने के बाद, चीजें धीरे-धीरे स्वयं ही मेरे लिए स्पष्ट होने लगीं। मेरे व्यक्तिगत जीवन की लय में पूर्ण परिवर्तन आ गया। मैं इस बात पर दृढ़ विश्वास करने लगा कि मैं त्रिकोण की पूजा और आराधना करता हूँ क्योंकि मैं उससे संबंधित हूँ, जैसे एक बच्चा अपनी माँ से संबंधित होता है।

## मां के प्रति मेरा ऋण

मैं जीवन के सर्वोच्च आनंद के स्रोत, सृजनात्मक प्रेरणा के इस तंत्र को क्षणिक उल्लास, जिज्ञासा, बोरियत से पलायन या मात्र कामुक उत्तेजना की भूख की भावना से नहीं देख सका। मुझे ये सभी दृष्टिकोण अत्यंत नकारात्मक लगे, और अंतिम विश्लेषण में, मनुष्य के व्यक्तित्व के संतुलित विकास के लिए अत्यधिक हानिकारक लगे।

(जीवन में, जब मुझे पूरे संसार में मानवता के महासागर में तैरना पड़ा, तो मुझे यह स्मरण है, और अत्यंत संतोष के साथ स्मरण है, कि मैंने कई डूबती और डूब चुकी आत्माओं को केवल स्थिति के तथ्यों को शांत ऊर्जा और प्रेम एवं सहानुभूति के खोजी स्पर्श के साथ उजागर करके बचाया है। मनुष्य की सहानुभूति उस स्थिति के मित्र बनने के लिए आवश्यक है, जहाँ एक भाई दूसरे भाई को बचा सके। क्या हम सभी एक ही माँ के पुत्र नहीं हैं? लेकिन क्या मैंने स्वयं को भी कई कठिन परिस्थितियों से नहीं बचाया, उस शक्ति के प्रति अपनी गहरी आस्था के कारण?)

मेरे लिए जीवन-प्रक्रिया की यह क्रियाशीलता जीवन-शक्ति द्वारा दी गई एक सकारात्मक संपदा थी। यह वह जीवन है जो आनंद के सच्चे उद्देश्य और अर्थ को उत्प्रेरित करके, विकसित करके और प्राप्त करके अपने अंतिम लक्ष्य को पूरा करता है। यह शक्ति सभी आनंदों की 'माँ' है।

माँ, ल्हादिनी, वह शक्ति है जो रोमांचित करती है और प्रेरणा देती है। यह जीवन को आनंद और केवल आनंद से भर देती है। संत वही है जो प्रेम और आनंद फैलाता है। स्वयं संतुलन तो इतना भूखा है कि वह किसी सामूहिक चेतना को जन्म देने, परमानंद उत्पन्न करने, और प्रेम की शक्तियों से दुःख और पीड़ा को दूर करने में सक्षम नहीं हो सकता। इसलिए जीवन माँ में समाहित है; और माँ जीवन में व्याप्त है। जीवित होना माँ की कृपा का ऋणी होना है।

यह दैवीय है। यह प्रकृति का है; यह स्वाभाविक है। यह सरल है, और इसलिए इसे साधारण (सहज) कहा जाता है। यही कारण है कि हम सूर्य, अग्नि, वायु, जल और उस महान आकाश की पूजा करते हैं जो ब्रह्मांडीय आशीर्वाद से भरा हुआ है।

हम इन्हें (सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत रूप से) प्रत्यक्षं ब्रह्म कहते हैं: हाँ, ये प्रत्यक्ष, अनुभव योग्य, ब्रह्म हैं, जो सर्वव्यापी शक्ति हैं। हम इन मूलभूत, अनंत अभिव्यक्तियों के माध्यम से परम सत्य का अनुभव करते हैं। हम भगवान की पूजा इन माध्यमों से करते हैं। हम उनकी सार्वभौमिकता, निष्पक्षता, मौलिकता, शक्ति, कृपा और अनंतता की पूजा करते हैं। सभी प्रेमी मूर्तिपूजक होते हैं, और सभी मूर्तिपूजक प्रेमी होते हैं। दृश्य रूप विचार का मूर्त रूप है। विचार स्वयं को आकार देकर सजीव बनाते हैं।

## अपकर्ष

यही कारण है कि हम इस शरीर को, जिसकी उत्पत्ति, भावनाएँ और विचार इन दैवीय अभिव्यक्तियों के कारण संभव हुए हैं, वास्तव में ईश्वर के मंदिर के रूप में मानते हैं। इस शरीर के सभी कार्य दैवीय इच्छा और व्यवस्था के अनुसार होने चाहिए। जब शरीर के कार्य स्वाभाविक प्रेरणा और स्वाभाविक क्रियाशीलता से संचालित होते हैं, तो उन्हें कभी भी घृणित या पापपूर्ण नहीं माना जा सकता, क्योंकि ऐसा मानना दैवीय उद्देश्य का अपमान करना होगा।

(अपमान और उस पर निर्णय की बात करते हुए, मुझे याद आता है कि कैसे बहुत से लोगों ने तंत्र और तांत्रिक साधनों को अपमानित मानकर उनसे दूरी बना ली। मुझे इस पर थोड़ा विस्तार से चर्चा करने दीजिए।)

अधिकांशतः संप्रदायिक या सतही ग्रंथों में, तंत्र की कुछ विधियों को नीची दृष्टि से देखा गया है। उन्हें विकृत, अश्लील, विलासी और अतिरेकपूर्ण कहा गया है। यूरोपीय साहसिकों और विजेताओं ने, अपने पुजारी समुदाय के समर्थन से, तांत्रिक विधियों को बर्बर घोषित कर अपने विचारहीन विध्वंस को इतिहास में उचित ठहराने का प्रयास किया है।

मुझे एक उदाहरण देने दें।
मेक्सिको में, मैंने प्राचीन तांत्रिक विधियों के रहस्यों को समझने का प्रयास किया। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ये अभी भी वहाँ की स्थापित कैथोलिक चर्चों में प्रचलित हैं। (मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि वर्तमान पोप जॉन पॉल के बारे में कहा गया था कि यदि वह मेक्सिको की चर्चों में होने वाली इन प्रथाओं को ईसाई मानते हैं, तो वे स्वयं को ईसाई नहीं मान सकते। हालांकि, मैं इस बात की सत्यता की गारंटी नहीं दे सकता।)

स्पष्टीकरण देना आवश्यक है।
जो लोग मानव बलि की निंदा करते हैं, वे चर्च के लिए मानव अंगों (सोने-चाँदी से बने हाथ, सिर और पैर) को स्वीकारने में कोई आपत्ति नहीं देखते। मैं इस विषय को और भी स्पष्ट और प्रभावी ढंग से समझा सकता हूँ, लेकिन यह उसका उचित स्थान नहीं है।

मैंने कुछ धार्मिक अनुष्ठानों (मुझे चोलुला में एक और काबा के पास एक अन्य अनुष्ठान याद है) के जटिल विवरणों का गहराई से अध्ययन किया और पाया कि पुरातन तत्व नये आवरणों में सुरक्षित रूप से छिपे हुए हैं। मैंने कुछ प्राचीन अनुष्ठानों को मंच पर 'प्रदर्शित' होते देखा, और तुरंत ही उस महानता और उदात्तता की कल्पना की जिसके साथ तथाकथित 'बलि-पीड़ित' उन बलिदानों में सम्मिलित होते थे, क्योंकि वे इसे दैवीय आस्था के लिए जीवन अर्पित करने का आशीर्वाद मानते थे।

जो लोग जैन साधुओं के संलेखना, जापान के हराकिरी, थर्मोपिले, चित्तौड़, बूंदी के जौहर, संशप्तकों, और बालाक्लावा की घटनाओं को समझते हैं, वे यह स्वीकार करेंगे कि कुछ विशेष परिस्थितियाँ बलिदान के संकल्पित मन से मृत्यु के भय को हटा देती हैं।

मुझे गलत न समझा जाए।
मैं पशु या मानव बलि के कार्य का समर्थन नहीं कर रहा हूँ। यह एक विवादास्पद विषय है।
हम युद्ध, गेस्टापो, परमाणु युद्ध, औद्योगिक प्रदूषण, गैस युद्ध, कीटाणु युद्ध, नेपाम बम विस्फोट, और पूरे गाँवों और जनजातियों के उन्मूलन को 'उद्योग के लाभ' के नाम पर स्वीकार करने के आदी हो गए हैं। राजनीति, सुशासन और असभ्यों को सभ्य बनाने के नाम पर हम इन कृत्यों को आधुनिक और सभ्य जीवन के लिए अपरिहार्य मूल्य मानने के आदी हो गए हैं।

लेकिन हम कुछ धार्मिक अनुष्ठानों और प्रथाओं को देखकर व्यथित और अपमानित महसूस करते हैं। ईमानदारी से कहें तो, इन अनुष्ठानों को (और अभी भी) उच्चतम चेतना तक पहुँचने के साधन के रूप में किया और स्वीकारा गया है।

एक ऐसी संस्कृति में, जहाँ अत्यधिक कामुकता एक मनोरंजन बन गई है, और वेश्यावृत्ति ने परिष्कृत स्वरूप धारण कर लिए हैं, वहाँ तांत्रिक अनुष्ठानों पर सवाल उठाए गए हैं, और ईमानदार साधकों को दुराचारी और विलासी कहा गया है। मैं यह कहते हुए यह भी स्वीकार करता हूँ कि इसका दुरुपयोग और पाखंडियों द्वारा गलत उपयोग भी हुआ है। मैंने स्वयं कई पाखंडी सनकी देखे हैं जिनके कृत्य वास्तव में भयावह हो सकते हैं। फिर भी, मुझे इन अनुष्ठानों की महानता, पवित्र शांति और संतोषजनक परिणामों को समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

तथ्य यह है कि संवेदनशीलता एक व्यक्तिगत गुण है।
जो कुछ भी व्यक्तिगत होता है, वह जाति, समुदाय या राज्य का गुण भी बन सकता है, मस्तिष्क-धुलाई की प्रक्रिया के अनुसार।
मुद्रित शब्दों और दृश्य माध्यमों ने सार्वजनिक राय को प्रभावित करने और रूपांतरित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

## सार्वजनिक राय का खतरा

व्यक्तिगत संवेदनशीलता को राष्ट्रीय या सामुदायिक संवेदनशीलता में बदलना बहुत आसान है। लेकिन संवेदनशीलता व्यक्ति-व्यक्ति में, समय-समय में, और इतिहास में भिन्न होती है; और संवेदनशीलता और पूर्वाग्रह पर आधारित मानव निर्णय अक्सर मूर्खतापूर्ण रूप से गलत साबित हुए हैं। हमारे पास ऐसे कई उदाहरण हैं, जब किसी समय विधर्मिता और जादू-टोने के दोषी ठहराए गए व्यक्तियों को समाज द्वारा आग और तलवार से दंडित किया गया, लेकिन बाद में उन्हें संत के रूप में सम्मानित किया गया। एक युग के अपराधियों को दूसरे युग में देशभक्तों और राष्ट्रीय नायकों के रूप में देखा गया। इसके विपरीत भी हमने देखा है। संवेदनशीलता पर आधारित निर्णय से अधिक अस्थिर और अविश्वसनीय कुछ भी नहीं है।

पूर्णतः मानव निर्णयों पर निर्भर रहना अक्सर गंभीर गलतियों की ओर ले जाता है। कुछ शाश्वत मूल्यों को समय की कसौटी पर खरा माना जाना चाहिए। मूल्यों की यह मानव धरोहर योग्यता के गुणों से अर्जित की जाती है।

अपमान या आक्रोश की भावना केवल अधूरे ज्ञान या व्यक्तिगत विचारों से भी उत्पन्न हो सकती है। रुककर सोचना समय के साथ परिपक्वता लाता है।

मेरे पास ऐसे कई व्यक्तिगत अनुभव हैं जिन्हें मैं अत्यंत भयावह, घृणास्पद, और घृणित मान सकता था।
लेकिन वास्तव में क्या अपमानजनक है?
सबसे अपमानजनक बात मानव जीवन के अपव्यय को व्यावसायिक लाभ के लिए निष्ठुरता से अनदेखा करना है।
यदि कोई गहन, उदात्त, और आत्मा के शाश्वत आनंद के स्रोत को पाने का उद्देश्य रखता है, तो साधनों को उचित ठहराया जा सकता है, और कुछ कार्यों को नीचा या अपवित्र कहे जाने से बचाया जा सकता है।

संदेह का लाभ कभी भी घोषित अपराधी से भी नहीं छीनना चाहिए। कानून इसे स्वीकार करता है; और सभ्य समाज इसे अपनाता है, या अपनाना चाहिए।

मुझे सौभाग्य था कि मैंने इन चुनौतियों से मुँह नहीं मोड़ा; और एक कुशल योगिनी के मार्गदर्शन में रहस्यमय क्षेत्रों में प्रवेश करने का अवसर मिला।
मुझे इसमें कुछ भी भयावह या मुझे रोकने वाला नहीं लगा, बल्कि मैं इसके और गहरे रहस्यों को समझने के लिए और भी प्रेरित हुआ।

इस यात्रा में मुझे तांत्रिक शक्ति के गूढ़ स्रोतों का ज्ञान हुआ।

## दो 'अपमानजनक' घटनाएँ

पहली घटना 1934 के आसपास वाराणसी के घोरा घाट पर हुई थी। यह घाट विदेशी पर्यटकों में लोकप्रिय था, जो यहाँ से नौकाओं पर सवार होकर गंगा के दृश्य देखते थे। घाट के पास विशाल बरगदों की छाया में कुष्ठ रोगी, भिखारी और नशेड़ी जमा रहते थे। आसपास के नगर निगम के शौचालयों की दुर्गंध और पर्यटकों की भीड़ ने इस स्थान को विचित्र बना दिया था।

चाय की एक छोटी-सी दुकान घाट के पास थी, जहाँ कुछ टूटी-फूटी बेंचें और चाय के बर्तन रखे रहते थे। उस दिन मैं वहाँ एक विद्वान व्यक्ति की सेवा में था, जो अपने ज्ञान और अनुभवों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। तभी मैंने एक विचित्र दृश्य देखा।

एक काले, उलझे बालों वाला आदमी, जो लगभग नग्न था और राख में लिपटा हुआ था, नदी किनारे से विश्वनाथ मंदिर की ओर तेजी से बढ़ रहा था। वह अपने मूत्राशय से बहते तरल को सीधे अपने मुंह में डाल रहा था, मानो वह इसका आनंद ले रहा हो। यह दृश्य इतना चौंकाने वाला था कि मैं अवाक रह गया और तुरंत बाहर जाकर इस घटना की तह तक जाने का फैसला किया।

दो घंटे बाद लौटा, और उस दौरान मेरी उस व्यक्ति से गहरी और रोचक बातचीत हुई। मैंने जाना कि वे भैरवों के एक उच्च कोटि के तांत्रिक योगी थे, जिनमें लकड़ी को देख कर आग जलाने और बिना छुए गिलास से पानी पीने जैसी शक्तियाँ थीं। वे मेरे लिए अब तक के सबसे पूज्य संतों में से एक रहे हैं, लेकिन मैं उनका पता नहीं लगा पाया। वे जंगली हवाओं की तरह आते-जाते हैं, जैसे किसी नियम से बंधे न हों।

दूसरी घटना उससे भी अधिक भयानक और जटिल थी। मेरी छोटी बहन रहस्यमय परिस्थितियों में मुँह से खून बहने के कारण धीरे-धीरे क्षीण होती गई और कुछ हफ्तों में उसकी मृत्यु हो गई। हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार उसे अगले सूर्योदय से पहले दाह संस्कार करना था। रात में ही अंतिम संस्कार की तैयारी हुई।

हम उसकी देह को अंतिम स्नान के लिए गंगा ले गए। मेरी बहन को जीवन में नदी में तैरना बहुत पसंद था, इसलिए मैं उसे अपने हाथों में लेकर बहती धारा में चला गया। इसके बाद, मैंने उसे एकांत घाट पर ले जाकर कपड़े बदलने की तैयारी की। पत्थर की सीढ़ियों के पास एक छोटी खाड़ी में स्थिर पानी था, जहाँ नदी का कचरा एक तार-जाल की दीवार से रोका गया था।

जैसे ही मैं उसकी देह के कपड़े बदल रहा था, मैंने अचानक देखा कि स्थिर पानी में कुछ आकृतियाँ हलचल कर रही थीं। यह काले कुत्तों का एक जोड़ा था, जो हड्डियों के टुकड़ों की तलाश में इधर-उधर भाग रहा था। लेकिन उनमें से एक आकृति बिल्कुल मानव जैसी थी। वह काले तालाब में, अंधेरे में घुली-मिली छाया के बीच, भूखी और जलती आँखों से मुझे घूर रही थी। उसके हाथ में हड्डी का टुकड़ा था, जिसे वह अपने दांतों से तोड़ रहा था।

यह दृश्य भयावह था, फिर भी मैं शांत रहा। मैंने अपनी बहन की देह को चिता पर लिटाया, और जल्द ही लपटों ने उसे अपने आगोश में ले लिया। मैं अजीब सी उदासी और थकान महसूस कर रहा था। मेरे बड़े भाई ने मुझे पास के विश्राम टॉवर में आराम करने की सलाह दी।

मैं टॉवर की सीढ़ियाँ चढ़ा और शायद अशांत मन से सो गया। अचानक मुझे अजीब सा खिंचाव महसूस हुआ। जब मैंने आँखें खोलीं, तो एक भूत जैसी आकृति को अपने पास बैठा पाया—काली, जली हुई, क्षीण, और बेजान मुस्कान के साथ मुझे देखती हुई। मेरा शरीर ठंडा पड़ गया, लेकिन मैंने साँस रोककर शांत रहने की कोशिश की।

वह आकृति हँसी, जैसे किसी मजाक पर हँस रही हो, और बोली, "तुमने मुझे तिरस्कृत महसूस किया? तुम, जो भगवाधारी देवी की प्रिय हो, तुमने मुझ पर हँसी उड़ाई?"

उसने अपनी बात जारी रखी, "मैंने जीवन को त्याग दिया है। मैं उस दुनिया से भिक्षा नहीं माँग सकता जिसे मैंने स्वेच्छा से छोड़ दिया है। मैं कुत्तों, कौवों, मछलियों और गिद्धों के साथ रहता हूँ, उनके साथ भोजन बाँटता हूँ। अगर माँ काली पूरे संसार को भक्षण कर सकती है, तो मैं उसके प्रसाद को क्यों नहीं खा सकता?"

इसके बाद उसने अचानक मुझ पर झपट्टा मारा, मेरे माथे पर अंगूठे गड़ा दिए, और मंत्र पढ़ते हुए मेरे चेहरे और शरीर पर थूकना शुरू कर दिया। मैं बिना हिले-डुले शांत पड़ा रहा, और धीरे-धीरे बेहोश हो गया।

होश में आने पर मैंने खुद को बेहद हल्का महसूस किया, जैसे किसी अंधेरी गुफा से निकलकर प्रकाश में आ गया हूँ। वह आकृति गायब हो चुकी थी। यह अनुभव इतना गहरा था कि मैं इसे कभी भूल नहीं पाया।

भैरवों के इस विचित्र, विकृत और अप्रिय व्यवहार को समझना आसान नहीं था, लेकिन यह मेरे लिए जीवन और मृत्यु के रहस्यों को जानने का एक माध्यम बन गया।

हम अक्सर दिखावे में जीते हैं और सत्य से अंजान रहते हैं। जीवन की कुरूपता झूठे आवरण में छिपी है, और ईश्वरीय इच्छा को समझे बिना हम शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। लेकिन अंततः, हम सब माँ काली की योजना का ही हिस्सा हैं, जहाँ कोई तिरस्कार या भेदभाव नहीं है—केवल एक अनंत चक्र है, जो निरंतर घूमता रहता है।

## संदेह की जननी

मैं युवावस्था की दहलीज पर पहुँच चुका था। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सूरज की तरह, जो अचानक उगता है और तेजी से अस्त होता है, मुझे भी वास्तविकताओं का सामना करना था। साध्वी ने शायद यह समझ लिया था कि अब मुझे इस गुप्त मार्ग पर और भी अधिक चुस्ती, उद्देश्य, सावधानी और अंतरंगता के साथ मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

मास में दो बार, और वर्ष के विशेष दिनों में, हम अत्यंत जटिल अनुष्ठानों में सम्मिलित होते थे, जिनके लिए उच्चतम गोपनीयता और मन की पूर्ण संतुलित स्थिति आवश्यक होती थी। हमारी साधना दिन-ब-दिन गहन और महत्वपूर्ण होती जा रही थी।

ज्ञान की ललक मुझमें तीव्र हो चली थी, और उस रोमांच ने मुझे इसे पाने की प्रेरणा दी। इस अवधि के दौरान मैंने भोजन, नींद और व्यवहार में कठोर अनुशासन का पालन किया। हर दिन मैं अपनी इच्छाओं और विचारों को और अधिक नियंत्रण में रखने का अभ्यास करता रहा।

इन सत्रों के माध्यम से, मैंने काम-क्षेत्रों के प्रति ऐसी परिचितता प्राप्त कर ली थी कि मेरे मन से जिज्ञासु की अश्लीलता पूरी तरह से मिट गई थी। मैं उस स्तर पर पहुँच चुका था जहाँ शारीरिक अधिकार की कोई तुच्छ इच्छा शेष नहीं रही थी। यह परिचितता इतनी स्वाभाविक हो गई थी कि मैंने इसे एक साधारण यथार्थ के रूप में स्वीकार कर लिया था, जिसमें किसी भी प्रकार की विकृति या आकर्षण का कोई स्थान नहीं था।

मुझे कभी भी नकारात्मक भावना या अवरुद्ध अनुभव का सामना नहीं करना पड़ा। इन सत्रों में कामुकता की अपमानजनक उत्तेजना कभी उत्पन्न नहीं हुई।

मेरा मन जैसे एक स्थिर दर्पण बन गया था, जिसमें विचार और भावनाएँ प्रतिबिंबित होती थीं, लेकिन उनमें कोई विकार या हलचल उत्पन्न नहीं होती थी। यह अविश्वास की पनाहगाह थी, जहाँ हर भावना और विचार स्पष्ट और निर्मल था।

## यौन चुनौतियाँ

जीवन एक अजीब तीर्थयात्रा है। इस यात्रा में अनेक अवसरों पर मुझे अनजाने स्थानों पर शरण लेनी पड़ी। कई बार ऐसे क्षण भी आए जब अनियंत्रित यौन आकर्षण की शक्तिशाली चुनौती मेरे मार्ग में फन फैलाए नाग की तरह खड़ी हो गई, जो ज़रा सी चूक पर डसने को तैयार थी।

मनोवैज्ञानिक रूप से, यह आकर्षण कभी-कभी ऐसी शून्यता उत्पन्न करता था, जब बाहरी व्यक्तित्व का सामना भीतरी उथल-पुथल से होता था। यह एक ऐसा संघर्ष था जिसमें सहनशक्ति की परीक्षा हुई, और मैंने इन तीव्र चुनौतियों का सामना किया। यदि मैं कहूँ कि मैंने कभी इन शक्तियों का सामना नहीं किया, तो यह मात्र अहंकारपूर्ण शेखी और खोखला दावा होगा।

लेकिन चुनौतियाँ आईं, और मैं उनसे चौंका नहीं। शरीर के भूगोल और मानसिक अवस्थाओं की गहन परिचितता ने मुझे भूख या जलन से बचाए रखा। भौतिक संसार में पूर्ण निकटता कभी-कभी पूर्ण अनुपस्थिति का परिणाम होती है।

आत्मा के आनंद में डूबने का अनुभव (समाधि) और उस परमानंद में तैरने का रोमांच मुझे इन इच्छाओं को बच्चों के खिलौनों की तरह देखने पर मजबूर कर देता था। मैंने सीखा कि परिपक्व मन के लिए ये क्षणिक सुख कोई आकर्षण उत्पन्न नहीं करते।

फिर भी, यह स्वीकार करना आवश्यक है कि अविद्या (माया की शक्ति) का बल विद्या (ज्ञान की शक्ति) जितना ही प्रबल हो सकता है। कई बार हम अपने भीतर और चारों ओर मौजूद अच्छाई को तभी महसूस करते हैं जब वह कठोर चुनौती का सामना करती है। स्वास्थ्य, वायु, जल, श्वास और संगति की मूल्यवान अच्छाई को हम तब तक नहीं समझते जब तक बुखार, बीमारी और असुविधा उसे चुनौती नहीं देती।

जीवन में, ठीक वैसे ही जैसे किंवदंतियों में, हमेशा ऐसी चुनौतियों का सामना करने की संभावना रहती है जो क्षण भर में विनाश और पतन ला सकती हैं। सभी योगी इससे परिचित होते हैं और मानसिक रूप से इसका सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। बुद्ध को भी इसका सामना करना पड़ा और उन्होंने अंततः विजय पाई। महान विश्वामित्र को भी अनगिनत बार चुनौतियाँ मिलीं, लेकिन हर बार उन्होंने कठिन संघर्ष करके संतत्व प्राप्त किया।

यौन शक्ति और उसकी चुनौतियाँ कभी मृत नहीं होतीं; वे सदा विद्यमान रहती हैं। सूर्य केवल भौतिक रूप से अस्त होता है, वास्तव में वह कभी अस्त नहीं होता, कभी मरता नहीं। सूर्य की शक्ति हमेशा चमकती और सक्रिय रहती है; ठीक वैसे ही यौन शक्ति, जो सौर ऊर्जा का ही रूपांतरित रूप है, हमारी नाड़ियों, इच्छाओं, वासनाओं और महत्वाकांक्षाओं के माध्यम से काम करती है।

मेरे जीवन में भी ये चुनौतियाँ समय-समय पर आईं; लेकिन वासना के स्थान पर प्रेम आया, फिर सहानुभूति और समझ, और अंततः संतुलन। यह उन कठोर आत्म-संयम साधनाओं का उपहार था।

यौन शक्ति इतनी व्यापक और आकर्षक है कि उसे बाँसुरी के आकर्षण के रूप में कल्पित किया गया है। बाँसुरी साँप को आकर्षित करती है; ठीक वैसे ही ल्हादिनी का आह्वान यौन इच्छा को आकर्षित करता है। यदि बाँसुरी वादक कुशलता से इसे बजाए, तो साँप उसकी मर्ज़ी के अनुसार नृत्य करता है; लेकिन यदि वह हिचकिचाए, तो डंक निश्चित, तीव्र और घातक होता है।

ल्हादिनी (यौन शक्ति) के आह्वान को राधा (ल्हादिनी) के कृष्ण की बाँसुरी के आह्वान के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में देखा गया है। यह समान विचारों वाले आत्माओं के बीच आनंदमय संयोग का प्रतीक है। यह प्राकृतिक चुंबकीय धारा के विपरीत ध्रुवों के बीच विद्युत तरंगों के प्रवाह का व्यावहारिक रूप है।

केवल चुने हुए साधक ही इस साधना में दीक्षित होते हैं और इसके साथ विकसित होते हैं। मुझे कम उम्र में ही इसका परिचय मिला था। मैं इसके साथ जीया और विकसित हुआ। यह साधना मुझे कभी अजीब नहीं लगी। लेकिन जब मैं उन दिनों को याद करता हूँ, तो मैं अब भी अपने आप को अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूँ।

## मार्ग पर चेतावनियाँ

अविवेकी और धोखेबाज़ लोग गलतियाँ न करें और पीड़ा के अनेक चक्रों से न गुज़रें, इसके लिए कई चेतावनियाँ गंभीरता से दी गई हैं। यहाँ कुछ उद्धृत हैं-

1. निपिता काल कूटस्य हरस्य-वह: खेलनम् (यह पहले ही समझाया जा चुका है) जब तक कि 'विष' (वासना और लोभ का) पीकर प्रतिरक्षित न हो जाएँ, किसी को भी साधना के इस रूप के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।
2. बीज को पकड़ना सीखें। इसे बाहर निकालने के बारे में कभी न सोचें। नहीं; कभी नहीं। आसन की स्थिति में नहीं। यदि यह एक मिलन प्रतीत होता है, तो यह निश्चित रूप से शरीर का मिलन नहीं है। आत्माएँ शरीर की समझ से परे एक हो जाती हैं। परिणाम पारलौकिक दंत अनुभव के एक अति-चेतन क्षेत्र में विस्फोटित होते हैं। यह उदात्त शून्य का अनुभव है, जहाँ केवल शक्ति ही आरक्षित न्यायालय रखती है।
3. आसन पर ऐसे बैठें जैसे कि आप किसी मृत शरीर पर बैठे हों। यदि कोई हलचल, कोई व्याकुलता, या गर्म शरीर की पुकार दिखाई दे, तो उसे रोकें; उस पर नियंत्रण रखें; उसे मजबूती से पकड़ें, जैसे आप जंगली कोबरा को पकड़ते हैं, जब तक कि उसे टोकरी में बंद न कर दिया जाए। 'मृतकों' से आने वाले आमंत्रण पर नियंत्रण रखें। आप ही वास्तव में 'जीवित' हैं, इस दुनिया में जो मृत्यु द्वारा शासित है। यह जीवन और मृत्यु की शक्तियों के बीच एक मिलन है। यदि इस प्रक्रिया में मृत्यु जीवन में परिवर्तित नहीं होती है, तो याद रखें, जीवन, आपका जीवन, धीरे-धीरे मृत हो जाएगा।
4. इस तरह की निर्वैयक्तिकता प्राप्त करने के लिए सभी प्रलोभनों, सभी भय, ध्वनि, गंध, स्पर्श, दृष्टि या स्वाद के प्रति सभी बाहरी प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण रखें। "मैं सब कुछ हूँ" (भैरवोहम शिवोहम) की पूर्ण भावना में स्थिर रहें।

इस परम निर्विशेषता (शून्यता) की अवस्था को प्राप्त करने के लिए, जो कि अति-व्यक्तित्व की अवस्था में प्रवेश करने का एकमात्र द्वार है, वयस्क साधक को एक पूर्ण मार्गदर्शक, एक गुरु की तलाश करनी होती है। फिर उसे वाममार्ग के उग्र क्षेत्र, महायान साधना सिद्धांत में दीक्षित किया जाता है। वह जीवित और मृत लोगों पर आसन बनाकर, सभी प्रकार के भयावह या आमंत्रित भोजन खाकर, अनिश्चित काल के लिए जागकर, अनिश्चित काल के लिए सोकर खुद को कठोर बनाता है। (मैं वर्ष 1936 में कलकत्ता में ऐसे ही एक योगी का परिचारक था, जो तीन महीने से अधिक समय से सो रहा था, और जो अगले छह महीने तक सोया रहा; मैं शरीर को धोता और खिलाता था, जैसे कि मैं एक पौधे की देखभाल कर रहा हूँ। अंततः मैं उसका अच्छा मित्र बन गया।) समाधि की इस अवस्था में, योगी के पूर्ण आत्म-नियंत्रण के तहत शारीरिक प्रतिक्रियाएँ शून्य हो जाती हैं। जब तक योगी तटस्थता, यानी पूर्ण निर्वैयक्तिकता प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक ब्रह्मांडीय शक्तियों का आह्वान नहीं किया जा सकता, न ही उन्हें अवशोषित किया जा सकता है। उन शक्तियों के आशीर्वाद के बिना कोई भी व्यक्ति खुशी और आनंद को प्रक्षेपित करने में सक्षम नहीं है। हमें उन अभावों को याद करना चाहिए जो बुद्ध को झेलने पड़े थे, यीशु को जिन प्रलोभनों का सामना करना पड़ा था; इस मार्ग को स्वीकार करते समय तिब्बती लामाओं की चेतावनियाँ।

## बोधि

*हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि बुद्धत्व प्राप्त करने से पहले बुद्ध या यीशु जैसे संतों को कितनी कठिन और तीव्र परीक्षाओं का सामना करना पड़ा था। वे इन परीक्षाओं में इसलिए सफल हुए क्योंकि उन्होंने पूर्ण निर्लिप्तता और आत्मसंयम पर विजय प्राप्त की थी। उनके लिए कोई भी व्यक्तिगत स्वामित्व, लाभ, या मोह मायने नहीं रखता था। वे अपने जीवन को तत्वों के साथ इतनी गहराई से एकीकृत कर चुके थे कि उनके अस्तित्व का हर पहलू समता और शांति से भरा हुआ था। यही बोधि की अवस्था है—परमहंस होने की अवस्था।*

*बोधि की इस अवस्था में बुद्ध को कोई भी भावना व्यथित नहीं करती। उनका चेतन आत्मा उनके शरीर और इंद्रियों से स्वतंत्र होता है। वे अपनी भावनाओं को पूर्ण नियंत्रण में रखते हैं, यहाँ तक कि उन्हें शून्य तक सीमित कर लेते हैं। उनका*

*व्यक्तित्व सामाजिक प्रतीकों, पदों, और मान्यताओं से परे होता है, क्योंकि वे अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के बंधनों से मुक्त हो चुके होते हैं। उनके लिए संसार उनका घर है, और ब्रह्मांड उनकी सीमा।*

*उनकी इच्छाशक्ति की मज़बूती और स्थिरता दो अडिग स्तंभों की तरह होती हैं। वे घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, राय, महत्वाकांक्षा, अहंकार, क्रोध, भय, या वासनाओं से पूरी तरह मुक्त होते हैं। उनके लिए धर्म का अर्थ निर्विकारिता (निरपेक्षता) है, और उनका स्वभाव समत्व (समानता और संतुलन) से भरा हुआ होता है।*

*गीता में इस अवस्था का सुंदर वर्णन मिलता है:*
*"जहाँ मन को आनंद मिलता है, और आत्म-नियंत्रण को पुरस्कार;*
*जहाँ आत्मा, आत्मा को देखती है, और आत्मा के साथ प्रसन्न होती है,*
*वहीं योगी का आनंद निहित है।"*
*("यत्रोप-रमते चित्तं निरुद्धं योग सेवया।*
*यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति।।" - गीता)*

*ये शब्द निर्वाण की उस परम अवस्था को दर्शाते हैं, जहाँ मन पूर्ण तनाव-मुक्त होता है और आत्मा आनंद में स्थित होती है। तंत्र मार्ग साधक को इस निर्वाण की अवस्था तक शीघ्रता से पहुँचाने में सक्षम है, यद्यपि यह मार्ग कठिन और परीक्षाओं से भरा होता है।*

*तंत्र मार्ग काम के साथ एक अनोखे ढंग से 'खेलता' है। यह काम में लीन होता है, लेकिन उसे भोग, लालच, वासना या उत्तेजना में लिप्त नहीं होने देता। तंत्र काम की पूजा करता है, उसका सम्मान और आराधना करता है, लेकिन उसे विकृति या अनियंत्रित भोग में नहीं बदलने देता।*

*तंत्र में काम एक बर्फीली अग्नि में स्नान के समान है। यह उत्तेजित करता है, लेकिन शांति को भंग नहीं होने देता; यह प्रेम करता है, लेकिन वासना में परिवर्तित नहीं होने देता। तंत्र अनुग्रह की उस प्रकाशमयी अवस्था को प्रतिबिंबित करता है, जैसे सूरज की किरणें नवखिले कमल की निर्मलता को प्रतिबिंबित करती हैं।*

*इस प्रकार तंत्र मार्ग साधक को संतुलन, शुद्धता और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाता है, जहाँ बोधि की अवस्था का अनुभव किया जा सकता है—वह अवस्था जहाँ जीवन, प्रेम और काम, सब एक दिव्य संतुलन में विलीन हो जाते हैं।*

## दो मित्र

*मैं इन रहस्यों की गहराई में बिना अपने प्रारंभिक मार्गदर्शकों की सहायता के, विशेष रूप से केसरिया वस्त्र वाली देवी और मेरे मित्र नारद के बिना, कभी प्रवेश नहीं कर पाता। मेरी देवी माँ की तरह स्नेहमयी, प्रेमपूर्ण, उत्सुक और विश्वास से भरी हुई थीं। वह मुझे लगभग अपने हाथों से थामे रहस्य से रहस्य की ओर ले जाती थीं, और उन व्यावहारिक साधनाओं के माध्यम से मुझे सिखाती थीं, जिन्हें सिवाय उनके कोई और नहीं सिखा सकता था।*

*यह मार्ग कठिन था; खतरनाक था; कभी-कभी चुनौतीपूर्ण रूप से कुरूप, यहाँ तक कि घृणास्पद भी; लेकिन ऐसे क्षणों में भी उनका हाथ हमेशा मेरे साथ होता, और उनकी शांत, स्थिर सहनशीलता मेरा सहारा बनती। हम करीब थे; हम और भी करीब हुए; और उन साधनाओं में हम सबसे अधिक निकट थे।*

*लेकिन अक्सर, हम एक रोमांचक यात्रा पर भेजे जाते, जो परम शांति से भरी होती थी। यह हर उस कठिनाई और तनाव के लिए पूरी तरह से सार्थक था।*

*मेरा मित्र नारद इसके विपरीत, मजाकिया, चंचल, नटखट और शरारती था, जैसे कोई परी-किंवदंती का बालक। वह हमेशा सिखाने के बहाने सीखने, माँगने के बहाने देने, और प्रेम पाने के बहाने प्रेम करने को तत्पर रहता था।*

*वह अक्सर मेरी गहरी आध्यात्मिक व्यथा के क्षणों में, ऐसे प्रकट होता जैसे हम अचानक ही किसी संयोगवश मिल गए हों। वह हमेशा अपने भाईचारे का हाथ सीधे मेरे संदेहों पर रखता था। उसकी अचानक और अप्रत्याशित उपस्थिति आकाश से गिरी हुई अनचाही कृपा की बूंदों जैसी होती, और उसकी विदाई दलदल पर अचानक घुलते कोहरे जैसी।*

*उसने मुझे प्रेम और धैर्य के सरल गुण सिखाए; तपस्या और ध्यान के कठिन अभ्यास सिखाए; और सहभावना और सेवा का उत्साहवर्धक आनंद भी सिखाया। रॉबिन्सन क्रूसो का शुक्रवार था; नारद मेरे लिए हर दिन का साथी था। वह मेरे लिए सहज और सुखकारी था; बहुत ही सरल मेरा मित्र ।*

## किनारे का किला

*मैंने देखा कि उसका पसंदीदा स्थान शांत नदी किनारा था। धारा के दक्षिण में, पश्चिमी तट पर, वाराणसी के प्राचीन राजा के पुराने भव्य प्री-ब्रिटिश किले के अवशेष खड़े थे। इस किले से भारत के राजाओं के उत्थान और पतन के सबसे दुखद अध्यायों में से एक जुड़ा हुआ है, जिन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी के नौकरों द्वारा झुकने और आत्मसमर्पण करने के लिए कुचला और डराया गया था।*

*उन पीड़ितों में से एक थे वाराणसी के राजा चेत सिंह। यद्यपि यह एक बहुत छोटा राज्य था, लेकिन वाराणसी शहर की सांस्कृतिक महत्ता के कारण, जो वैदिक परंपरा का प्रमुख केंद्र था, जहाँ बुद्ध ने पहली बार उपदेश दिया था और जहाँ उन्होंने लंबे समय तक निवास किया था, यह राज्य अत्यंत सम्मानित माना जाता था। वास्तव में, इस राजा को हिंदू भारत की प्रतीकात्मक इकाई के रूप में माना जाता था।*

*उन्हें इसलिए डराया-धमकाया गया और उन पर आक्रमण किया गया क्योंकि उनकी पारंपरिक निष्ठा लखनऊ के नवाब के प्रति थी, जो मुगल सम्राट का वायसराय था। उत्तर भारत के सभी राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान, वाराणसी के राजा को हमेशा अकेला छोड़ दिया गया था, उनकी विशेष प्रतीकात्मक स्थिति के कारण।*

*यहीं, नदी किनारे, वॉरेन हेस्टिंग्स को पराजित होना पड़ा था, और उसे भागकर नदी के ऊपर एक नाविक की झोंपड़ी में शरण लेनी पड़ी थी, जिसने उसे पशु-समान दया से बचाया था। लेकिन हेस्टिंग्स ने चेत सिंह को अकेला छोड़ने का इरादा नहीं किया था। वह फिर से संगठित सेनाओं के साथ तब आक्रमण करने आया, जब उसे समझौता वार्ता करनी चाहिए थी।*

*युद्ध और शांति की चालबाजियों से अपरिचित राजा, हत्याओं और रक्तपात से थककर यह समझने लगे कि हेस्टिंग्स उन्हें व्यक्तिगत रूप से क्रिसनर बुलाना चाहता है। यह चेत सिंह के लिए, जो वाराणसी के राजा और हिंदू भारत के प्रतीक थे, महान अपमान का कारण बनता। प्रतीकात्मक रूप से पूरे हिंदू समाज को अपमानित करने के बजाय, उन्होंने अज्ञात स्थान की ओर पलायन किया, और फिर कभी उनका कोई पता नहीं चला।*

*किले की बड़ी खिड़की के नीचे एक छोटी सी बालू की पट्टी थी, जो आमतौर पर घास से ढकी रहती थी। ढलान हल्की और आमंत्रित करने वाली थी। उसके पास ही, थोड़ा दक्षिण की ओर, नदी का मुख्य मोड़ था, जहाँ से वह शहर की सीमा में प्रवेश करती थी।*

*वह स्थान शांत था, और वहाँ की निस्तब्धता में नदी के संदेश को सुनने का आभास होता था। जब भी मैं उस खिड़की के नीचे हरे स्थान पर खड़ा होता, मुझे एक अजीब कंपन महसूस होता, जो मेरे भीतर गहन लालसा उत्पन्न करता।*

*बाद में मुझे यह पता चला कि दीवार के ठीक ऊपर एक पवित्र स्थान है, जहाँ कभी महान तांत्रिक साधकों ने साधना की थी। अद्भुत रूप से संरक्षित मंदिरों की शृंखला आज भी उनकी साधनाओं और उपलब्धियों की स्मृति बनाए हुए है।*

*यही कारण था कि वह हरा स्थान मेरे लिए अत्यधिक संवेदनशील भावनाओं को संजोए हुए था। (मैंने उस स्थान का अंतिम बार 1983 में दौरा किया था। वहाँ ध्यान करने से आज भी तुरंत परिणाम मिलते हैं।)*

## नाव का मौन व्यक्ति

*उसी मोड़ पर, जहाँ रेत के टीलों के कारण धारा धीमी हो जाती थी, एक अकेली नाव बहती हुई दिखाई देती थी। यह नाव किसी छायामयी प्रतीक जैसी लगती थी—स्थिर, अविचल, मानो समय की सीमाओं से परे हो। नाव की अचलता में एक रहस्य था, जैसे वह किसी गहरे ध्यान में मग्न हो।*

*बरसात के मौसम में, जब उफनती धूसर लहरें किनारों को लांघ जातीं और उग्र जलप्रवाह सब कुछ निगलने को आतुर होता, तब इस नाव को गाँवों के संकीर्ण मार्गों से गुज़रती शांत जलधारा में सुरक्षित ले जाया जाता था। यह हमेशा सुरक्षित लौटती, जैसे कोई पवित्र धरोहर हो, जिसे प्रकृति स्वयं संरक्षित करती हो।*

*कहा जाता था कि इसी नाव पर वाराणसी के एक प्रसिद्ध योगी निवास करते थे। मेरे प्रारंभिक दिनों में वे मुझे किसी रहस्यमय पहेली की तरह लगे थे।*
*लोग उन्हें शहर के रक्षक देवदूत मानते थे। उनके बारे में कई कहानियाँ सुनाई जाती थीं, लेकिन सबसे विचित्र यह थी कि किसी ने उन्हें कभी बोलते हुए नहीं सुना था।*
*जब भी उन्हें संवाद करना होता, वे केवल एक गहन दृष्टि डालते, और उनका संदेश बिना किसी शब्द के संप्रेषित हो जाता।*

*उनके मौन में शब्दों से अधिक प्रभाव था।*
*कहा जाता है कि कई विदेशी पत्रकारों ने उनके साथ लंबा संवाद किया था, बिना एक भी शब्द कहे। वे उन्हें मौनी बाबा या मौन संत कहकर पुकारते थे।*
*उनका मौन केवल ध्वनियों का अभाव नहीं था; वह एक ऊर्जा थी, एक उपस्थिति जो संवाद से परे थी।*

*मुझे इस हरे किनारे पर बैठकर अपनी पढ़ाई करने में अनोखा आनंद मिलता था। यहाँ गंगा की मंथर लहरें किनारे को आलिंगन करतीं, और पवन में घुली मृदु ध्वनियाँ एक अप्रतिम संगीत रचतीं। कभी-कभी मैं यहाँ ध्यान में डूब जाता था। यह स्थान मानो ध्यान के लिए ही बना था। शायद यह गंगा की पवित्रता का प्रभाव था, या फिर प्राचीन किले में स्थित शक्ति मंदिरों की ऊर्जा, या फिर दूर स्थित मौन संत की नाव की उपस्थिति—जो भी हो, यहाँ मन को सहज ही स्थिरता मिलती थी। ध्यान की गहराई में, समय ठहर जाता और मन शून्य में विलीन हो जाता।*

*मन अपने विश्राम के लिए सदा एक संगीतमय वातावरण चुनता है, और यह स्थान उस संगीत का स्रोत था। इसी शांत, सुरम्य वातावरण में, एक दिन मेरा मित्रवत वैष्णव संत—मेरा नारद—मुझसे मिला। उस दिन मैं मंत्र की छिपी हुई शक्ति के रहस्य को जानने की तीव्र जिज्ञासा से व्याकुल था। मुझे ज्ञात था कि एक मंत्र—एक बीजाक्षर—केवल ध्वनि नहीं है; वह एक रहस्यमयी कंपन है, जो संपूर्ण अर्थ और गूढ़ अवधारणाओं को अपने भीतर समेटे हुए है।*

*मुझे पता था कि इन ध्वनियों की संरचना और उनका उच्चारण किसी अदृश्य कुंजी की तरह है, जो चेतना के बंद द्वारों को खोलने की क्षमता रखती है।*
*लेकिन यह कैसे संभव है?*

*कैसे एक साधारण प्रतीत होने वाला उच्चारण आत्मा को झकझोर कर उसके मूल से जोड़ सकता है?*
*क्यों यह बीजाक्षर अपनी संक्षिप्तता में अनंत विस्तार को समाहित कर लेता है?*
*कैसे यह साधारण ध्वनि दिव्य बन जाती है?*

*इन प्रश्नों ने मेरे मन को व्याकुल कर रखा था।*
*मैं इस रहस्य को जानने के लिए अधीर था, जैसे प्यासा मरुस्थल में जल की एक बूँद के लिए तड़पता है।*
*और तभी, नारद प्रकट हुए।*

*उनका आगमन शांत जल में कंकरी के गिरने जैसा था—कोमल, लेकिन गहरे तक प्रभाव डालने वाला। उनकी उपस्थिति में एक ऐसा शांति-सूत्र था, जो मेरे व्याकुल मन की बिखरी हुई ध्वनियों को एक लय में बाँध रहा था।*

*उनकी आँखों में अपार शांति थी, जो मेरे भीतर उठते प्रश्नों की आँधियों को ठहराव दे रही थी। उनकी मृदु मुस्कान में जैसे मेरे सारे प्रश्नों के उत्तर थे।*

*मुझे लगा, मेरे सारे प्रश्न, मेरी सारी जिज्ञासाएँ उनके मौन में विलीन हो रही थीं।*
*उनके मौन में मुझे मंत्र के रहस्य की प्रथम झलक मिली—एक ध्वनि जो शब्दों से परे थी, एक कंपन जो अस्तित्व के हर कोने में व्याप्त थी।*
*मंत्र का रहस्य मौन में था, और उस मौन को नारद ने मेरे भीतर जगा दिया था।*

## हंसी का पात्र

*मैंने उन बच्चों की जोड़ी के बारे में बात की थी जो* संभोग *में लगे हुए थे, और जिन्होंने मुझे भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। मैंने कोशिश की थी, लेकिन इस प्रक्रिया में मुझे यह बहुत उबाऊ और निरर्थक लगा, मेरी लेडी इन सैफ्रॉन के साथ गुप्त सत्रों में मैंने जो आनंद लिया था, उसकी तुलना में। स्वाभाविक रूप से मैंने उन्हें अपने तरीके से, मानव जीवन में* संभोग *की स्थिति के बारे में अपने सबसे अंतरंग और पवित्र विचारों को व्यक्त करने की कोशिश की। वे हँसे और मुझे ढोंगी (बकवास) कहा। लेकिन जब भी अकेला होता, वह बड़ी हो चुकी लड़की मुझे मोहित करने की कोशिश करती। मुझे विश्वास था कि वह मेरे तौर-तरीकों की दीवानी थी। कारण जो भी हो, वह मुझे अपने खेल में फंसाने के लिए दृढ़ निश्चयी थी। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता था। उस उम्र में प्रलोभन लुका-छिपी की तरह बढ़ता है। इसलिए वह चिपकी रही; और एक हताश मछुआरे की तरह अपने आकर्षण और आकर्षण की सहायता से मुझे धर्मशास्त्रीय तंत्र विद्या के दलदल से बाहर निकालना चाहती थी। इसलिए वह मुझे हर तरह से लाड़-प्यार करती रही; और कभी-कभी तो मेरे पीछे-पीछे भी चलती थी। मैं जो मानता था और जो करता था, उसकी अवहेलना करते हुए, वह हमेशा मंत्र की शक्ति के मेरे दावों का मजाक उड़ाती थी। कुछ लड़कों के साथ मिलकर वह अक्सर मंत्रों में मेरी घोषित आस्था का मजाक उड़ाती थी। उसने मंत्र की प्रभावकारिता में मेरी आस्था को भी चुनौती दी थी। उसका विचार मुझे सार्वजनिक अपमान, ब्लैकमेल और ताने के हथियारों के जरिए वश में करना था। मुझे गुप्त रूप से प्रताड़ित किया जा रहा था। यह कुचले गए अहंकार की यातना नहीं थी। यह महिला की कामुकता का शिकार होने की यातना नहीं थी। यह एक साधारण और मासूम यातना थी जिसे एक गलत समझा गया दोस्त दूसरे को परमानंद की बात नहीं बता पाने में या खुशी के एक आम स्रोत में हिस्सा न ले पाने में महसूस करता है। मेरा मानना है कि ऐसा अनुभव जीवन की यात्रा में अपरिहार्य है, खासकर जब किसी को मानव विकास में उस 'नो-मैन्स लैंड' से गुजरना पड़ता है जिसे आमतौर पर किशोरावस्था के रूप में जाना जाता है। मुझे लगा कि मैं उसे अपने आरक्षित आकर्षण, असली आकर्षण, मंत्र की शक्ति के आकर्षण से प्रभावित कर सकता हूं। लेकिन मुझे खुद को रहस्य में महारत हासिल करने में सक्षम होना चाहिए, इससे पहले कि मैं उसे अपने तरीके से प्रभावित करने का दावा कर सकूं। खासकर उसे। वह बहुत बुद्धिमान और इतनी धाराप्रवाह व्यक्ति थी।*

# शरीर को मासूमियत का बोध नहीं

स्वाभाविक रूप से, मुझे मंत्रों के रहस्यों, उनके स्रोत और उनकी कार्य-प्रणाली को समझने की तीव्र इच्छा थी—अक्षरों की शक्ति, ध्वनि संरचनाएँ, उनके प्रभाव, और उन ध्वनियों के कंपन, जो नसों और चेतना पर प्रतिक्रिया करते हैं, जिससे व्यक्तित्व आकार लेता है।

कल्पना कीजिए, मैं पूरी तरह से अपने विचारों में डूबा हुआ था, तभी मेरी तंद्रा टूटी। मैंने देखा, नारद मेरे पास बैठे मुस्कुरा रहे थे। उनकी रहस्यमय उपस्थिति ने मुझे चौंका दिया। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, उन्होंने अपनी कोमल तर्जनी से नीचे इशारा किया और कहा,
"देखो!"

मेरी नज़र नीचे गई—एक साँप!
वह पत्थरों के बीच की दरारों में सरक रही थी, उसकी हरकतें बेहद शांत थीं।
"वह मादा कोबरा है, बालक," नारद ने कहा, उनकी आवाज़ में हल्की शरारत थी। "ये मादाएँ आकर्षक, माँग करने वाली और विचलित करने वाली होती हैं।"
उनकी मुस्कान में एक रहस्यमय संकेत था, जो मेरे भीतर कहीं गहरे तक चुभ गया। (क्या मैं अभी-अभी किसी 'स्त्री' के बारे में नहीं सोच रहा था?)
यह विचार मुझे सिहरा गया।

वह कोबरा पूरे समय मेरे पैरों के पास लिपटी पड़ी थी, और मुझे इसका आभास तक नहीं हुआ था। मैंने साँप को जाते हुए देखा और एक लंबी साँस ली।
नारद ने मेरे चेहरे के भाव पढ़ लिए थे।
उन्होंने मुस्कुराकर कहा,
"वे मन को पहचानते हैं। लेकिन वे उन्हीं के लिए हानिरहित होते हैं जिनके मन में हानि का भाव नहीं होता।"

"फिर वे शिशुओं, नवजात शिशुओं, और मवेशियों को क्यों काटते हैं?" मैंने तत्काल सवाल किया।
"क्या तुम सोचते हो कि बच्चे विचारों से मासूम होते हैं?" उन्होंने प्रत्युत्तर में पूछा।
"नहीं! बच्चे भी अपने तरीकों से सोचते हैं। मांस को मासूमियत नहीं होती।"

"जिन तत्वों से जीव बने हैं, वे मोह, प्रजनन और विस्तार की तीव्र माँगों से घिरे होते हैं। इस स्वाभाविक माँग को संतुलित रखने के लिए, लुभावनाओं, प्रलोभनों और इच्छाओं को नियंत्रित करना पड़ता है। और यह तभी संभव है जब उन्हें प्रेम में रूपांतरित किया जाए।"

"मासूमियत कोई जन्मजात गुण नहीं है;
मांस में मासूमियत नहीं होती।
यह सचेत प्रयासों और निरंतर साधना से अर्जित होती है।"

उन्होंने आगे कहा,
"यहाँ तक कि प्रकृति में भी कोई मासूमियत नहीं होती, भले ही वह कभी-कभी अछूती और निष्पाप लगती हो। नहीं।
प्रत्येक प्राणी अपने स्वभाव के अनुसार प्रतिक्रिया करता है।"

"बच्चे भी अपने भावनात्मक उतार-चढ़ाव को व्यक्त करते हैं,
हम बस उन्हें सही ढंग से समझने में असफल रहते हैं।
हमारी समझ उनकी कोमल और सूक्ष्म प्रतिक्रियाओं को पकड़ने में असमर्थ होती है।"

"देखो, समझदार माताएँ और नर्सें बच्चों को कैसे सहजता से समझ लेती हैं,
जबकि नासमझ लोग उनके सरल भावों को भी नहीं पढ़ पाते।"
"क्या तुमने देखा है, बच्चे कैसे अजनबियों से या अपने ही परिवार के कुछ लोगों से भी अनासक्ति दिखाते हैं?
यह उनकी चयन-प्रक्रिया है, जो हर समय चलती रहती है—अत्यंत सूक्ष्म, परंतु निरंतर।"

"संवेदनशील जानवर, जैसे साँप, गिलहरियाँ, बिज्जू,
अंतर की बारीकियों को अपने अंदर के तंत्रों के माध्यम से महसूस कर लेते हैं।"
"चमगादड़ किसी भी इंसान से तेज़ी से प्लेग की आहट पहचान लेते हैं।"
"मधुमक्खियाँ अपने शिकार के स्थान को कभी नहीं भूलतीं।"
"पक्षी ऋतुओं के बदलाव को सबसे सटीक रूप से रिकॉर्ड करते हैं।"
"जीवन के इस व्यापक परिदृश्य में ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं।"

"हम भी इन्हीं बलों के प्रभाव में कार्य करते हैं—आवेग और भावना से।
लेकिन हम प्रकृति से दूर जा चुके हैं,
हमारी प्रतिक्रियाएँ कृत्रिम हो गई हैं,
हम ग़ुस्से में अपना संतुलन खो बैठते हैं,
और उन कार्यों की तुलना में अधिक गलतियाँ कर बैठते हैं, जिन पर हमें गर्व होना चाहिए।"

"एक पिता अपने पुत्र की हत्या कर देता है,
एक पति अपनी पत्नी को पीटता है,
एक आदमी शराब पीकर पूरे परिवार को बर्बादी में धकेल देता है।"
"इसी तरह साँप भी हैं।
वे भयभीत होकर, सताए जाने पर आक्रामक हो जाते हैं।
वे भी समझते हैं;
लेकिन जो समझते हैं, वे भी कभी-कभी गलतियाँ कर बैठते हैं।"

"लेकिन सत्य यह है कि साँप संपूर्ण रूप से रहस्यमय जीव होते हैं।
वे बुद्धिमान होते हैं।
वे इरादों को समझते हैं—यहाँ तक कि मंत्रों के इरादों को भी।"
"मंत्र शक्तिहीन नहीं होते, और हो भी नहीं सकते।
मंत्र शक्ति की अभिव्यक्ति हैं।"

"जिस प्रकार पानी पर दबाव पड़ने से उसमें बुलबुले बनते हैं,
उसी प्रकार जब संत समाधि में होते हैं,
तो उनके शक्तिशाली मन से ध्वनि-स्फोट उत्पन्न होते हैं।"
"ध्वनि, कंपन और चेतना का यह खेल मंत्रों का रहस्य है।"

नारद की आवाज़ में गंभीरता थी।
वे क्षणभर के लिए रुके, मानो विचारों की गहराई में उतर गए हों,
फिर बोले,
"लेकिन, मैं उन झूठी ध्वनियों की बात नहीं कर रहा,
जो पुरोहित मात्र जीविका के लिए यंत्रवत् उच्चारित करते हैं।"
उनकी दृष्टि दूर क्षितिज की ओर थी, जैसे वे किसी अदृश्य सत्य को देख रहे हों।

"मंत्र वह ध्वनि है जो आत्मा को झकझोरती है,
और उसे उसके मूल स्रोत से जोड़ देती है।
यह केवल उच्चारण नहीं, बल्कि चेतना की गूँज है।"

उनकी बातों का मर्म मेरे भीतर गहराई से उतर रहा था।
मैं मंत्र के रहस्य को समझने के एक नए स्तर पर पहुँच गया था।
मंत्र केवल ध्वनि नहीं,
जीवन की गूंज थी—संपूर्ण अस्तित्व की लयबद्ध धड़कन।

## मंत्र

मैंने आश्चर्य से नारद की ओर देखा। उन्हें मेरी व्याकुलता और मुझे सहायता की आवश्यकता के बारे में कैसे पता चला? लेकिन यह तो नारद थे। अप्रत्याशित नारद, वह चंचल दूत, जो मुझे पूरी तरह से जानता प्रतीत होता था! क्या उन्होंने साँप को जादू से प्रकट किया और फिर इस विषय को उठाने का अवसर ढूँढ लिया? यदि ऐसा था, तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होता।

इन्हीं से मैंने सीखा था कि मंत्र की शक्ति को पूरी दुनिया में पहचाना गया है। यह पशुओं पर भी प्रभाव डालती है। मधुमक्खियों के झुंड की सतत गूँज शहद के स्रोत की स्थिति को प्रकट करती है, साँप की फुफकार मेंढक या हिरण को अचल कर देती है, और बाघिन की पुकार बाघ को अपनी ओर आकर्षित करती है। लेकिन मनुष्यों के मामले में, मंत्र तब प्रकट होते हैं जब मन समाधि की अवस्था में होता है। केवल तभी मंत्र उस शक्ति से आवेशित होते हैं, जो उन्हें जीवित बना देती है।

ध्वनि या उच्चारण चेतना की शक्तिशाली आंतरिक इच्छा की भौतिक अभिव्यक्ति है। समाधि की अवस्था में इच्छाशक्ति स्वयं ध्वनि के रूप में प्रकट होती है।

"ध्यान रखना," उन्होंने इस बिंदु पर चेताया, "मैं इच्छा (Will) की बात कर रहा हूँ; न कि आवेग (Impulse) या वासना (Desire) की।" फिर उन्होंने मेरा ध्यान शब्दों के सही अर्थ को समझने की एक महत्वपूर्ण शिक्षा की ओर आकर्षित किया।

## इच्छा

उस दिन मुझे यह समझ आया कि वासना कितनी भ्रामक होती है। वासना और इच्छा का वही संबंध है, जो स्वप्न और निद्रा का, या पानी और बुलबुले का होता है। वासना की उत्तेजनाएँ केवल असंयमित लालच की क्षणिक प्रतिक्रियाएँ होती

हैं। वे अनियंत्रित प्रवृत्तियों या सनकों का प्रतिबिंब होती हैं। कुछ इच्छाएँ बनी रहती हैं, जबकि कुछ तो आकार लेने से पहले ही समाप्त हो जाती हैं। अहंकार के विनाश के साथ ही वासनाएँ भी समाप्त हो जाती हैं।

यदि वासना को स्थायी होना है, तो उसे अपनी बाहरी परत के भीतर इच्छाशक्ति को आत्मसात करना होगा। इच्छाशक्ति एक शक्तिशाली ऊर्जा-स्रोत (डायनामो) है; इच्छाशक्ति से जुड़े मानवीय प्रयास गतिशील हो जाते हैं। लेकिन केवल इच्छा, कल्पना या वासना के साथ ऐसा नहीं होता। इच्छाशक्ति, वासना का रूपांतरण करती है।

इच्छाशक्ति एक प्रेरक शक्ति है, जो निरंतर और स्थायी कर्मों को प्रेरित करती है। इच्छाशक्ति चरित्र को गढ़ती है, जबकि वासना उसे खंडित कर देती है। इच्छाशक्ति एकीकृत करती है, जबकि वासना विघटन करती है। इच्छाशक्ति पोषण करती है, जबकि वासना भस्म कर देती है। इच्छाशक्ति मन को निर्णय लेने, भेद करने, प्रयास करने और उपलब्धियों के लिए श्रम करने के लिए प्रेरित करती है। मांसपेशियाँ कार्य करती हैं, लेकिन वे इच्छाशक्ति द्वारा संचालित होती हैं। इच्छाशक्ति ही शक्ति है, शक्ति ही माँ है। जो कुछ हम अनायास प्रतिक्रिया (Reflex) कहते हैं, वह भी सूक्ष्म रूप से इच्छाशक्ति के अनुरूप होता है, हालाँकि इसे प्रत्यक्ष रूप से मापा या दर्ज नहीं किया जा सकता।

इच्छाशक्ति ब्रह्मांडीय चेतना (चित्) को प्रेरित और आमंत्रित करती है और अमूर्त को मूर्त रूप धारण करने के लिए बाध्य करती है, जिससे वह निश्चित रूप से संकल्पित मन के लिए वास्तविक बन जाती है।

जो मन किसी अमूर्त विचार को मूर्त रूप और आकार देता है, और जो अमूर्त को मूर्त बनाने की इच्छाशक्ति से ध्यान करता है, उसके लिए वह विचार एक मूर्त रूप धारण कर लेता है। एक तरह से, यह उसके आत्मज्ञान की आध्यात्मिक प्रतिमा बन जाती है। तांत्रिक परंपरा के सर्वोच्च ग्रंथों से हमें यह रहस्यात्मक सत्य मिलता है: "जिसकी तुम पूजा करना चाहते हो, स्वयं उसी के समान बनो।"

इसके बिना कोई सच्ची पूजा नहीं होती। बिना इस "बनने" के, पूजा केवल एक अनुष्ठान बनकर रह जाती है। सच्ची पूजा वही होती है, जो प्रेम की तरह भीतर से एक सतत प्रवाहित होने वाली ऊर्जा हो। यह ऊर्जा भीतर से भीतर तक प्रवाहित होती है। किसी भी सफल प्रार्थना की पहली आवश्यकता यही "बनना" है। यही आत्मा का साकार रूप है।

इसी सत्य के आधार पर देवताओं की पूजा की जाती है। यही मूर्ति-पूजा का मूल तत्व है। यह काली, मरियम, बुद्ध या यीशु—कोई भी हो सकता है। यदि प्रार्थना करने वाला स्वयं उस चेतना में परिवर्तित नहीं होता, तो उसकी प्रार्थना विफल हो जाती है। यह वैसा ही है जैसे कोई व्यंजन-पुस्तक पढ़कर भूख को शांत करने का प्रयास करे।

भक्त मूर्ति की पूजा करता है, उसका आदर करता है, और आत्मसमर्पण के सच्चे भाव से उसमें विलीन हो जाता है। आत्मसमर्पण के माध्यम से जो उच्चता प्राप्त होती है, उसका आनंद अनुभव करने के लिए, उन्होंने यह समझाया कि एकाग्रता (ध्यान), सजीव कल्पना (धारणा), और परम एकता की तन्मयता (समाधि)—ये तीन अवस्थाएँ एक स्थिर मन के अंतिम चरण होते हैं।

## आकाश में ध्वनि: नाद

फिर उन्होंने मंत्र और ध्वनि के रहस्य को समझाना शुरू किया, विशेष रूप से ब्रह्मांडीय नाद में निहित ध्वनि (ध्वनि तरंग) को। कोई भी उच्चारण (Articulation) केवल एक यादृच्छिक ध्वनि है, इससे अधिक कुछ नहीं। क्यों? क्योंकि यह एक यांत्रिक प्रक्रिया का परिणाम है। ध्वनि दो या अधिक वस्तुओं के टकराव या घर्षण का परिणाम है। शून्य में कोई उच्चारण

नहीं हो सकता। "वह एकाकी है" (सह एकाकी-उपनिषद्)। पूर्ण एकत्व की अवस्था निःशब्द, शांत और स्थिर होनी ही चाहिए।

वायु, जल और अग्नि केवल तभी ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जब उनकी शांत गति किसी अन्य वस्तु से टकराती है, जैसे: वायु और आकाश, हवा और पत्तियाँ, जल और चट्टानें, अग्नि और वायु। यह टकराव वायु और वायु, हवा और हवा, जल और जल, चट्टान और चट्टान के बीच भी हो सकता है। उन्होंने विशेष रूप से यह ध्यान दिलाया कि ध्वनि की घटना में वायु या वायु-गति (हवा) हमेशा एक साझा तत्व होती है। संस्कृत में 'स्वन' (ध्वनि) और लैटिन में 'सोना' (ध्वनि), दोनों ही वायु में उत्पन्न ध्वनि को इंगित करते हैं। "स्वनति" का अर्थ है "ध्वनि उत्पन्न करना"।

प्राण में निहित वायु नसों की संपूर्ण संवेदनाओं को प्रभावित करती है। प्राण जीवन की श्वास है, जो मुख्य रूप से नसों के माध्यम से कार्य करती है। इच्छाशक्ति (Will) एक बल है, जो नसों के माध्यम से क्रियाओं को प्रेरित करती है। दूसरे शब्दों में, नसें प्राण का पालन करती हैं, और इच्छाशक्ति के अधीन होती हैं। प्राण-प्रतिक्रियाएँ सूक्ष्म कंपनों (वाइब्रेशन्स) द्वारा सक्रिय होती हैं, जो अप्रत्यक्ष और अगोचर होती हैं। कोई भी कंपन (वाइब्रेशन) वायु या आकाश में तरंगें उत्पन्न करती है। ध्वनि को कंपनों का स्रोत माना गया है। मंत्र ध्वनि तरंगों पर आधारित होते हैं; वे ध्वनि कंपन पर आधारित होते हैं।

प्राचीन सिद्ध तांत्रिक आचार्यों ने अत्यंत सूक्ष्म गूढ़ विधियों द्वारा अंततः ध्वनि कंपन और तंत्रिका (नसों) कंपन के बीच संबंध स्थापित किया। संस्कृत वर्णमाला के विभिन्न ध्वनि प्रभावों से उत्पन्न कंपन को विभिन्न तंत्रिका केंद्रों से जोड़ा गया है। जो कोई भी भाषाशास्त्र और ध्वनि संरचनाओं की मूलभूत जानकारी रखता है, वह तुरंत यह देख सकता है कि संस्कृत वर्णमाला कितनी वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित है। संस्कृत के वर्णों की ध्वनियाँ, उच्चारण की शारीरिक संरचना और तंत्रिका प्रतिक्रियाओं के साथ तालमेल बिठाती हैं।

संस्कृत वर्णमाला की यह पूर्णता कोई संयोग नहीं है। मंत्र-विशेषज्ञों ने इसे तंत्रिकाओं और तंत्रिका केंद्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्थित किया है। दूसरे शब्दों में, मंत्रों को इस प्रकार व्यवस्थित और उपयोग में लाया गया है कि वे अत्यंत सूक्ष्म और सुरक्षित तरीके से इच्छाशक्ति और मानसिक शांति को प्रभावित कर सकें।

मंत्र किसी योगी की आंतरिक इच्छाशक्ति की ध्वनि-प्रतिमा होती है। उसकी आत्मा की पुकार नसों के माध्यम से कंपन उत्पन्न करती है, और वह संदेश मस्तिष्क तक पहुँचकर आवश्यक तंत्रिका केंद्रों को सक्रिय करता है। मंत्र एक परमाणु के समान ऊर्जा का भंडार होता है; जब इसे उचित मार्गदर्शन में उच्चारित किया जाता है, तो यह उच्चारण करने वाले व्यक्ति की इच्छाशक्ति से पूर्ण रूप से संतृप्त होता है। मंत्र वही होता है जिसे योगी अपने ध्यान में श्रवण करता है।

इस प्रकार मंत्र एक जीवंत ऊर्जा-स्रोत बन जाता है। हाँ, यह जीवंत होता है। चाहे आप इसे मानें या न मानें। जो जीवन ऊर्जा का संचार करता है, वही 'जीवित' होता है; और मंत्र जीवन-शक्ति का संचार करते हैं। एक सिद्ध मंत्र उसी तरह कंपन करता है, जैसे रक्त धमनियों में प्रवाहित होता है; जैसे हृदय धड़कता है या श्वास चलती है। जैसे त्वचा की ऊष्मा, आँखों की ज्योति।

जिस प्रकार शब्द का अर्थ उसकी ध्वनि में अंतर्निहित होता है, उसी प्रकार मंत्र-ध्वनि की शक्ति भी उसकी ध्वनि तरंगों में अंतर्निहित होती है। मंत्र का रहस्य आकाश (Ether) के रहस्य से जुड़ा हुआ है; और यह सूक्ष्म आकाश हमारे शरीर के भीतर भी स्थित है, जो विचार, इच्छाशक्ति, भावना और समझ के रूप में प्रकट होता है। जिस प्रकार रक्त में प्रवाहित श्वास को प्रत्यक्ष रूप से देख पाना कठिन है, उसी प्रकार नसों में प्रवाहित ऊर्जा को भी प्रत्यक्ष रूप से देख पाना कठिन

होता है। लेकिन कंपन वहाँ होते हैं, और ध्वनि संदेश इन कंपनों और अतिरिक्त-संवेदी प्रतिक्रियाओं (Extra-Sensory Responses) के बीच संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

यह हमें आकाश, अर्थात् अंतरिक्ष (Space) या आकाश तत्त्व (Ākāśa) के प्रश्न तक ले आता है। आकाश में एक अव्याख्येय शक्ति होती है, जो इसे सजीव बनाती है। और इस सजीवता के कारण, वहाँ तरंगें उत्पन्न होती हैं, जो अंतरिक्ष में वायु गति से उत्पन्न सूक्ष्मतम ध्वनियों को वहन करती हैं। ग्रह आकाश में गति करते हैं। लाखों पिंड अंतरिक्ष में घूमते रहते हैं। जहाँ वायु-रहित और निःशब्द स्थान भी होता है, वहाँ भी कुछ न कुछ शक्ति होती है, जो ध्वनि का संचार करती है। इसे हम 'रूप-अरूप' या 'गुण-निर्गुण' कहते हैं।

रात्रि की निस्तब्धता कभी पूर्ण रूप से निस्तब्ध नहीं हो सकती। हमारे चारों ओर जो ध्वनियाँ हैं, वे या तो इतनी सूक्ष्म हैं या इतनी उच्च आवृत्ति की हैं कि हमारे भौतिक कान उन्हें पकड़ नहीं सकते। ध्वनि का केंद्र स्वयं निःशब्द होता है। उसकी नाभि या चक्र में, यहाँ तक कि अग्नि भी शीतल मानी जाती है। अशांति के केंद्र में भी शेषनाग विश्राम की अवस्था में रहता है—परम विश्रांति में नारायण। हम इस सत्य को एक भजन में गाते हैं:

"शांति अशांति की कुंडली पर सो रही है,
संपूर्ण ब्रह्मांड का निवास एकमात्र आकाश है।
इसे भेद पाना किसी भी योग के लिए असंभव है;
यह विष्णु, नारायण है, जो सृजन शक्ति को आनंदित करता है।"

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

कोई कितना भी मूल्य चुकाने को तैयार हो जाएगा, यदि वह इस ब्रह्मांडीय ध्वनि की पहचान कर सके—वह ध्वनि जो घूमते हुए ग्रहों से चिपकी रहती है, जो गतिशील सितारों के साथ गूँजती है, और दृश्य तथा अदृश्य के बीच एक ब्रह्मांडीय संपर्क बनाती है। इस ध्वनि को ग्रहण करने के लिए केवल भौतिक कान पर्याप्त नहीं हैं; हमें अपने आध्यात्मिक संवेदन विकसित करने होंगे। तभी हम अज्ञात को जान सकते हैं। ब्रह्मांड से एकाकार होने के लिए, हमें पहले यह अनुभूति होनी चाहिए कि हम स्वयं ब्रह्मांड का अभिन्न अंग हैं।

"अहम् ब्रह्मास्मि।"

## ॐ

ॐ, यह ब्रह्मांडीय ध्वनि, जिसे नाद ब्रह्म कहा जाता है—वह ध्वनि जो सबको एकता में बाँधती है—महामंत्र "ॐ" (AUM) के रूप में प्रकट हुई है। इसकी सटीक उच्चारण विधि केवल विशेषज्ञ मार्गदर्शन और लंबे अभ्यास के बाद ही सीखी जा सकती है। यह ध्वनि तीन ध्वनियों का संयोजन है, जो आरंभ, निरंतरता, और समाप्ति के गूढ़ चरणों का प्रतीक है।

ॐ में समाहित ध्वनियाँ कई गूढ़ अर्थों को प्रकट करती हैं, जैसे:

- प्रत्यक्ष (जो दिखता है), अनुमानित (जो विवेक से जाना जाता है), और वह संसार जो अनुमान से परे है।
- आरंभ, वृद्धि, और पुनः प्रवाह में वापसी।
- शांति, ऊर्जा, और जड़ता।
- ब्रह्मांड, व्यवस्था, और अराजकता।

ॐ को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:

1. **"A"** जैसा 'सॉ' (saw) में—खुले होंठों से उच्चारित होने वाला स्वर।
2. **"U"** जैसा 'पुट' (put) में—संकुचित होंठों से निकलने वाला स्वर।
3. **"M"**—यह ध्वनि बिना 'EM' के रूप में आती है और इसे पिछले स्वर के बिना उच्चारित नहीं किया जा सकता। यह होंठों को बंद कर देती है, जैसे जीवन का अंत मृत्यु में विलीन हो जाता है।

ॐ का उच्चारण जीवन और मृत्यु के बीच के चक्र का प्रतीक है, जहाँ "A" जीवन का आरंभ है और "M" मृत्यु का अंत। यह सृजन और विघटन, अति-चेतन (सुप्राकॉन्शियस), जागरूक (कॉन्शियस), और सुप्त (डॉरमेंट) चेतना की अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

योगियों ने सदियों से इस त्रिध्वनि (AUM) की गूंज को अनुभव और साधना के माध्यम से प्रमाणित किया है। यह केवल तर्क या कुतर्क का विषय नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति का साधन है।

ॐ की ध्वनि को सही ढंग से उच्चारित करने के लिए तीन चरणों का अनुसरण करना पड़ता है: आरंभ, निरंतरता और समाप्ति। यह केवल ध्वनि का संयोजन नहीं है, बल्कि ऊर्जा, चेतना और अस्तित्व के तीन स्तरों का सामंजस्य है।

ॐ (AUM) का प्रभाव इतना व्यापक और गहन है कि यह जापान, चीन, दक्षिण-पूर्व एशिया, इंडो-चाइना, श्रीलंका, भारत, और प्राचीन पूर्वी सभ्यताओं में आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने के लिए अपनाया गया। यह बौद्धों, ताओवादियों, महायान और हीनयान तांत्रिकों, और वैदिक अनुयायियों के लिए बीज ध्वनि रही है।

यह ध्वनि विभिन्न रूपों में विकसित हुई है, जैसे—ओम, औम्, हुंग, हुम, हूम, उंग और हूम। भले ही इनमें भिन्नताएँ हों, लेकिन ध्यान और मनन के साथ सही उच्चारण करने पर, समय के साथ इसकी पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

ध्यान के प्रारंभ में ध्वनि के सटीक उच्चारण पर बहुत अधिक जोर देने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह अवश्य याद रखना चाहिए कि सही उच्चारण से ही सही कंपन उत्पन्न होते हैं। यह कंपन न केवल तंत्रिका-आधारित व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं, बल्कि आंतरिक चेतना को भी जागृत करते हैं।

ॐ की ध्वनि-शक्ति (Sound-Value) और अर्थ-शक्ति (Sense-Value) दोनों महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अर्थ-शक्ति को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, क्योंकि यही आंतरिक आनंद और चेतना को विलीन करती है। ध्वनि-शक्ति केवल माध्यम है, जबकि अर्थ-शक्ति आनंद का स्रोत है। यदि दोनों को समन्वित किया जा सके, तो साधक के लिए यह अत्युत्तम साधना बन जाती है।

मंत्रों का सही उच्चारण और उनके अर्थ के साथ गहन मनन, साधक को आध्यात्मिक चेतना और शाश्वत आनंद की ओर ले जाता है। यही ॐ का रहस्य और इसकी शक्ति है।

## योगियों की सहमति असहमति में है

ध्वनि और आकार, दोनों में, ॐ (AUM) सदियों से योगियों के लिए बीज मंत्र के रूप में सहायक रहा है। योगियों में साधना के मार्ग भले ही भिन्न हों, लेकिन उनके बीच कोई मतभेद नहीं होता। वे एक-दूसरे के प्रति सम्मान बनाए रखते हैं और तर्क-वितर्क में नहीं उलझते; न ही वे धर्मप्रचारकों (Missionaries) की तरह विवाद करते हैं। यही अंतर आत्म-साक्षात्कार प्राप्त योगी और विद्वान पंडित, मनीषी, या उपदेशक में होता है।

योगी सक्रिय आनंद में जीता है, जबकि उपदेशक प्रचार में लिप्त रहता है। सच्चे योगी की एक पहचान होती है—स्वीकृति और सहनशीलता की भावना। यह सहनशीलता उसकी दृढ़ता पर आधारित होती है। दया और क्षमा योगी के मूल गुण होते हैं, क्योंकि वह आत्मबल में मजबूत होता है।

फिर भी, अज्ञात परमात्मा के मार्ग की खोज में यह पथ रक्त, आग, और आँसुओं से सने खंडहरों से भरा पड़ा है। मुझे याद है, नारद की आवाज़ हमेशा कंपित हो जाती थी, जब वह धार्मिक मुक्तिदूतों, लालची दंगाइयों, और धर्म के नाम पर लूटपाट करने वालों के अत्याचारों पर बात करते थे।

केवल दो विकार इन अपराधों के लिए जिम्मेदार हैं—स्वामित्व की वासना और सत्ता की वासना। स्वामित्व की लालसा, और सत्ता प्राप्त करने व उसे बनाए रखने की भूख ही इन संघर्षों की जड़ है।

जो लोग सत्ता के लिए लड़ते हैं, वे दानव हैं, जबकि जो इसकी निरर्थकता और खोखलेपन को समझते हैं, वे दिव्य आत्माएँ हैं। वे जीवन और संसार के सौंदर्य और प्रेम की परवाह करते हैं। यही कारण है कि सच्चे योगी सहमति और असहमति दोनों में एक संतुलन बनाए रखते हैं, क्योंकि उनके लिए सत्ता नहीं, बल्कि आत्म-साक्षात्कार ही जीवन का परम लक्ष्य है।

# प्रेम की शक्ति

"लेकिन एक और प्रकार की शक्ति भी है," नारद ने कहा, उनकी आवाज़ में एक गहरी गंभीरता थी। "यह है देने और बलिदान की शक्ति," प्रेममय वैष्णव ने मुस्कुराते हुए जोड़ा। "प्रेम दो; सहानुभूति दो; देखभाल दो; मित्रता और संगति दो। चाहे पास हों या दूर—हर जगह दो; परिचित हो या अपरिचित, अमीर हो या गरीब, मित्र हो या शत्रु, योग्य हो या अयोग्य—सभी को दो।"

"प्रेम का व्यक्ति दूसरों की कमजोरियों पर निर्णय नहीं देता। वह पापी के बुरे कर्मों को या भटके हुए के गलत विचारों को प्रेम की प्रचंड लहर से बहा देता है। वह क्षमा के मरहम से भीतरी घावों को शांत करता है। प्रेम का व्यक्ति इतना प्रेम से भरा होता है कि उसके हृदय में संदेह या संकोच के लिए कोई स्थान नहीं बचता। प्रेम एक ऐसी शक्ति है, जो हिमस्खलन या बुलडोज़र की तरह सभी भेदभावों को समाप्त कर देती है।

"ऐसी शक्ति को अपने गंतव्य तक ले जाने के लिए साहस चाहिए; लेकिन योगी में इसे शांत और शालीनता से वहन करने की योग्यता होती है। याद है बुद्ध? याद है ईसा मसीह? वे सच्चे योगी थे। यह प्रेम की शक्ति साधारण मनुष्य को करुणामय, उदार और दिव्य बना देती है। प्रेम का व्यक्ति ईश्वर का व्यक्ति है।

"जो व्यक्ति इस शक्ति को बिना अहंकार के धारण कर सकता है, वही सच्चा योगी है। भगवान शिव शिव इसलिए हैं, क्योंकि उन्होंने वह विष पिया, जो जीवन के लिए खतरा था। ईसा मसीह प्रभु इसलिए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने लहू से

संसार के पापों को धो दिया। शिव या ईसा मसीह किसी एक व्यक्ति, समुदाय या संप्रदाय के नहीं हैं। योगी एक सार्वभौमिक आत्मा है, वह सबका है।

"यदि पाप सर्वव्यापी है, तो पुण्य भी सर्वव्यापी है। यदि अंधकार है, तो प्रकाश भी है। अंधकार केवल प्रकाश की अधिक प्रकाश पाने की भूख है। योगी एक आध्यात्मिक प्रक्रिया से शक्ति प्राप्त करता है, लेकिन जब तक उसका मन आसपास के दुःखी हृदयों के प्रति संवेदनशील नहीं है, जब तक वह निःस्वार्थता से प्रेरित नहीं है, जब तक वह पीड़ितों के आँसू पोंछने की व्याकुलता महसूस नहीं करता, तब तक वह स्वयं से बाहर नहीं निकल सकता, और स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर सकता।

"मुक्ति केवल निष्क्रियता या जड़ता से प्राप्त नहीं होती। मुक्ति की शक्ति मौलिक है, यह एक जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसे आध्यात्मिक रूप से अर्जित करना चाहिए, राजनीतिक रूप से नहीं। मनुष्य को हवा, आकाश, सूर्य के प्रकाश और गर्मी, वर्षा और ध्वनि की तरह स्वतःस्फूर्त और स्वाभाविक महसूस करना चाहिए। तत्वों की तरह, योगी भी अपनी शक्ति ब्रह्मांडीय स्रोत से जोड़ता है।

"ईश्वर का व्यक्ति प्राप्त करता है, ताकि बाँट सके; वह लेता है, ताकि दे सके; वह अस्तित्व में है, ताकि कृपा प्रदान कर सके; वह कार्य करता है, ताकि सेवा कर सके। ईश्वर का व्यक्ति रूप और व्यवस्था का संतुलन बनाए रखने के लिए सिद्धांतों का पालन करता है, क्योंकि उसका उद्देश्य सत्ता नहीं, बल्कि प्रेम और सेवा है।"

## शक्ति संपन्न आसन

भास्करानंद की समाधि पर नियमित सत्रों में भाग लेना मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। केसर वाली महिला मेरी अनुपस्थिति को परोक्ष रूप से, लेकिन शालीनता से स्वीकार करती थी, जो उसकी हार्दिक स्वीकृति को दर्शाती थी। वह अक्सर कहा करती थी, "जब तक हो सके गुलाब की कलियाँ इकट्ठा करो," और एक मधुर गीत गाती थी, "तब तक जलते रहो जब तक शुद्ध सोना प्राप्त न हो जाए" (खुब कोरे तुई पुरदिये शोना खत्ति कोरे ने)।

हम एक अनजान कार्यप्रणाली में शामिल हो गए थे, जिसमें एक-दूसरे की हरकतों में पूरी तरह से भाग लेना स्वाभाविक था। अक्सर नारद हमारे दरवाज़े पर आ जाते, और मेरे पिता उन्हें महत्वपूर्ण मुस्कान के साथ देखते, जिसका वह विनम्रता से उत्तर देते। कभी-कभी वे दिल से, लेकिन फुसफुसाते हुए बातचीत करते, उनके चेहरों पर चमकती खुशी की झलक एक तरह के तालमेल का संकेत देती थी।

एक दिन, अचानक, नारद ने मुझसे पूछा, "क्या तुम देखना और सुनना चाहोगे कि एक अच्छा योगी क्या हासिल कर सकता है?" तब तक मैं इतना व्याकुल था कि इस प्रस्ताव को ठुकराने का प्रश्न ही नहीं उठता था। उन्होंने मुझे एक विशेष "शक्ति संपन्न" स्थान से परिचित कराया, जहाँ पहुँचते ही एक रहस्यमय कंपन महसूस होता था।

यह स्थान भास्करानंद की समाधि के पास था, जहाँ उन दिनों घना जंगल फैला हुआ था। इस जंगल के बीच एक तालाब छिपा था। इसके अलावा, कई परित्यक्त और जर्जर प्राचीन मंदिर और ढहती हुई संरचनाएँ भी थीं, जिन्हें जानबूझकर अचिह्नित और अनदेखा रखा गया था। वहाँ क्यों कोई नहीं आता, यह मेरे लिए रहस्य था।

जंगल की गहराई में साही, खरगोश, फुर्तीली गिलहरियाँ, जंगली सूअर, साँप, नेवले और गिरगिट स्वतंत्रता से खेलते थे। ऊँचे पेड़ों के बीच अकंद और बसाका की झाड़ियाँ उगी थीं। आम, कटहल, ताड़ी के ताड़, रेशमी कपास, बकुल, महुआ, जामुन, पीपल, और विशाल बरगद के पेड़, जिनकी सैकड़ों जड़ें हरे-भरे छत्र को सहारा देती थीं, वहाँ के शाही निवासी थे।

पक्षियों के झुंड उस स्थान को जीवंत बनाए रखते थे। मकड़ी के जालों से ढकी हुई रहस्यमयी शांति, उस जगह को एक अलौकिक आभा देती थी, जो आकस्मिक आगंतुकों को दूर रखती थी। आज, उस पवित्र शांति की जगह एक सिनेमा हॉल और उससे जुड़ी अश्लीलता और शोर-शराबे ने ले ली है। व्यावसायिकता ने उस गहन शांति को मिटा दिया है जो अब केवल स्मृति में है।

तालाब आज भी वहाँ है, लेकिन अब वह एक आधुनिक पर्यटक आकर्षण के रूप में मौजूद है, जैसे काल के साथ खेलता हुआ कोई भुला हुआ अंश। तालाब के पश्चिमी किनारे पर, आम के बाग के भीतर, एक साधारण प्लास्टर की संरचना खड़ी थी। सपाट छत वाला यह आठ गुणा आठ का घनाकार ढांचा मात्र छह फीट ऊँचा था, जो एक बक्से जैसा प्रतीत होता था।

संरचना का एकमात्र दरवाज़ा बाहर से बंद था, जिस पर मकड़ियों ने भारी जाले बुन रखे थे। दरवाजे के अलावा, पाँच फीट की ऊँचाई पर एक छोटी खिड़की थी, जिसमें लोहे की सलाखें लगी थीं, जो रोशनी और हवा को अंदर आने देती थीं। इस खिड़की से झाँकते ही एक रहस्यमय, शांत वातावरण का आभास होता था।

यह वही स्थान था, जहाँ नारद मुझे शक्ति संपन्न आसनों और योगियों की अद्वितीय साधना से परिचित कराने लाए थे। उस क्षण से, मेरी यात्रा ने एक नया मोड़ ले लिया, और मैं उस रहस्यमय संसार में प्रवेश करने के लिए तैयार था, जिसका अस्तित्व अब तक मेरी कल्पना से परे था।

## प्रतिमा

जून की एक तपती दोपहर, बिना किसी स्पष्ट कारण के (शायद नारद की इच्छा के अलावा, जो चाहते थे कि मैं किसी योगिक शक्ति का सामना करूँ), मैंने अपने ध्यान के लिए भास्करानंद की समाधि के बजाय उस रहस्यमय आम के बाग को चुना। मैं उस जंगल की ओर क्यों आकर्षित हुआ, यह मैं स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता, सिवाय इसके कि नारद ने मुझे उस जगह से परिचित कराया था। वे जानते थे कि उस स्थान में कुछ विशेष था।

जंगल में प्रवेश करते ही मैं तालाब के पत्थर के किनारे पर खड़ा हो गया। बलुआ पत्थर की सीढ़ियों से होकर साफ पानी झलक रहा था। मैंने अपने कपड़े उतार दिए और ताज़गी से भरपूर स्नान किया। पानी में डूबते ही, एक अनजानी शांति ने मुझे घेर लिया। स्नान के बाद, मैं गहरे जंगल में चला गया।

वहाँ एक दिमागी बुखार वाले पक्षी और कठफोड़वा के बीच संवाद चल रहा था। उनकी कर्कश आवाजें उस जगह की रहस्यमय शांति को और गहरा कर रही थीं। वहाँ एकांत और शांति थी, जो मुझे कहीं और अनुभव नहीं हुई थी।

जंगल में उस दिन एक अजीब-सा खिंचाव महसूस हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई अदृश्य शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही हो। मैंने उस अदृश्य आकर्षण के स्रोत का पता लगाने के लिए चारों ओर ध्यान से देखा, तभी मेरी नज़र झाड़ियों के बीच छिपी एक मामूली-सी इमारत पर पड़ी। उस इमारत के आस-पास जीवन का कोई संकेत नहीं था। मकड़ी के जाले वाले दरवाज़े पर किसी पैदल यात्री की मौजूदगी का भी नामोनिशान नहीं था। हमेशा दिखने वाले भिक्षु भी वहाँ अनुपस्थित थे, और उनकी अनुपस्थिति उस स्थान की रहस्यमयता को और गहरा कर रही थी।

इमारत के पास ही, एक विशाल कटहल के पेड़ के नीचे, काई से ढका हुआ ईंट का मंच था। उसमें कई अनाकर्षक छेद थे। मैं उसकी ओर खिंचता चला गया। मैंने उसे छुआ और अचानक एक अजीब-सा कंपन महसूस किया। बिना किसी सोच-विचार के, मैंने उस पर बैठकर ध्यान करने का फैसला किया।

जैसे ही मैं बैठा, मैंने अपना सूती वस्त्र उतारकर उसे आसन के रूप में बिछा लिया। जैसे ही मैंने आँखें बंद कीं, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक अत्यधिक आवेशित पवित्र स्थान पर बैठा हूँ। शांति की एक गहरी लहर मुझ पर छा गई, और मैं एक शांत सागर में डूबता चला गया। मुझे नहीं पता कि मैं कितनी देर तक उसी अवस्था में रहा, लेकिन जब मैं होश में आया, तो सूरज ढलने को था।

मैंने महसूस किया कि कोई अज्ञात शक्ति मुझे खींच रही है, मेरी अंतड़ियों को मरोड़ रही है, और एक अजीब-सी ठंडक मेरी रीढ़ में चुभ रही थी। ऐसा लगा जैसे किसी गहरे जादू ने मुझे जकड़ रखा हो। इस दुनिया का अस्तित्व मेरे लिए क्षीण पड़ गया था, और मैं किसी तीर्थयात्री की तरह, किसी दूसरी दुनिया की ओर खिंचता चला गया।

आधी-अधूरी चेतना में, मैं उस परित्यक्त घनाकार इमारत की ओर बढ़ा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे वहाँ कौन-सी शक्ति खींचे लिए जा रही थी। जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा, एक परिचित-सी सुगंध ने मुझे घेर लिया—कपूर, चंदन, और लोबान की जलती हुई खुशबू।

मैंने खिड़की से झाँकने के लिए कुछ पत्थरों का सहारा लिया और जैसे ही मैंने भीतर झाँका, मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं। वहाँ एक मानव रूप ध्यान की मुद्रा में बैठा था, सफ़ेद वस्त्रों में लिपटा हुआ, जिसका चेहरा शांत और निर्मल था। उसकी आँखें बंद थीं, चेहरा किसी गहरे ध्यान में लीन था, और सिर पर लंबे बालों का एक सुंदर जूड़ा बंधा हुआ था।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह कोई योगी था, योगिनी थी, या फिर एक मूर्ति थी। उसकी त्वचा इतनी जीवंत लग रही थी, पलकें काली और युवा थीं, और चेहरा एक अजीब-सी शांति में विलीन था। उसके चारों ओर ऐसा आभामंडल था, जैसे समय थम गया हो।

मुझे लगा जैसे मैं किसी अज्ञात संसार का साक्षी बन रहा हूँ। क्या वह जीवित था? या फिर वह सिर्फ एक मूर्ति थी? लेकिन अगर वह मूर्ति थी, तो इतनी जीवंत कैसे लग रही थी? मेरे भीतर जिज्ञासा और श्रद्धा का मिलाजुला भाव उमड़ आया।

कालिदास के शब्द मेरे मन में गूँज उठे: *"निवात निष्कम्पतया विभाति योगाधिरूधा इव मारुतेनः"*—जैसे समाधि में एक योगी, हवा रहित शांति में दीपक की लौ की तरह स्थिर।

उस मूर्ति-सी आकृति की सफेदी और वस्त्रों की कोमल तहें इतनी ताज़गी भरी थीं, जैसे अभी-अभी उन्हें सजाया गया हो। उस क्षण, समय और स्थान की सभी सीमाएँ टूट गईं। मैं उस रहस्यमय योगी (या योगिनी) के साथ एक अपरिभाषित संबंध महसूस कर रहा था।

उस दिन, मैंने एक रहस्यमय सत्य का साक्षात्कार किया था। यह अनुभव मुझमें गहरे तक समा गया, और मुझे यह आभास हो गया कि मेरे सामने एक अनजाना योगिक रहस्य प्रकट होने वाला है।

## क्रंदन

मैं अभी भी असमंजस में था—वह योगी जीवित था या मृत? क्या वह वास्तव में संगमरमर की मूर्ति थी? उस छोटे से कमरे में एक दीया टिमटिमा रहा था, जिसकी हल्की लौ एक विचित्र रहस्य फैला रही थी। थोड़ा उभरे हुए पत्थर के मंच पर कुछ मुरझाए फूल बिखरे हुए थे। उस मंच पर योगी हिरण की खाल पर स्थिर बैठा था। उसकी आकृति में ऐसी गहन शांति और गंभीरता थी कि समय ठहर गया-सा महसूस हो रहा था।

मन में उथल-पुथल मची हुई थी। मैंने पूरे मन से सवाल पूछा, शायद ज़ुबान से नहीं, लेकिन भीतर से गूँजता हुआ—"क्या आप जीवित हैं, योगी? क्या आप हम में से हैं? क्या आप इस दुनिया के हैं?"

जैसे ही यह प्रश्न मेरे भीतर चीखा, एक तीखी आवाज़ कमरे की दीवारों में गूँज उठी—"शुरू हो जाओ!"

आवाज़ इतनी स्पष्ट और निर्णायक थी कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए। वह चीख कमरे की चार दीवारों के बीच पिंजरे में बंद पक्षी की तरह बेतहाशा उछलती रही, खुद को अंधी दीवारों से टकराती रही। उसकी गूँज और प्रति-गूँज इतनी तीव्र थी कि ऐसा लगा जैसे समय और स्थान दोनों सिमट गए हों।

फिर आवाज़ धीरे-धीरे क्षीण होने लगी, जैसे कोई अनजाना पक्षी भागने का रास्ता ढूँढते-ढूँढते थककर चुप हो गया हो। बाहर के जंगल में शरद ऋतु की सरसराहट, गिरे हुए पत्तों की हज़ारों कराहें उस अंतिम कंपन को अवशोषित करती चली गईं। और फिर सन्नाटा गहराने लगा, ऐसा सन्नाटा जो चीख की गूँज को भी निगल गया हो।

क्या इसका मतलब यह था कि वह आकृति जीवित थी? क्या वह जवाब दे रहा था? मेरे भीतर बेचैनी और जिज्ञासा का तूफान उठ खड़ा हुआ। मैं एक और सवाल पूछने ही वाला था, यह जानने के लिए कि वह आवाज़ मेरे सवाल का जवाब थी या मेरी कल्पना, तभी मुझे अचानक अपने कंधों पर किसी की मजबूत पकड़ का अहसास हुआ।

उस अप्रत्याशित पकड़ ने मुझे चौकी से उखाड़ फेंका। मैं गिरते-गिरते बचा, और जब मैंने होश संभाला तो देखा कि मैं जमीन पर सुरक्षित खड़ा था। मेरी रीढ़ में सर्द लहर दौड़ गई। मैं बुरी तरह हिल चुका था, लेकिन जैसे ही मैंने उस लंबे, प्रभावशाली व्यक्ति को देखा, जो अभी भी मेरे कंधे को मजबूती से पकड़े हुए था, मेरे भीतर का डर और भी गहरा हो गया।

वह आकृति परिचित लग रही थी, लेकिन मेरे मन में फैले भ्रम के बादलों ने मुझे उसे पहचानने से रोक दिया। उसके शरीर पर सफेद सूती वस्त्र लिपटा था, जिसकी एक किनारी उसकी कमर के चारों ओर और दूसरा सिरा कंधों पर डाल हुआ था। अचानक एक झटके में मुझे याद आया—वह वही लंबा और रहस्यमयी व्यक्ति था, जिसे मैंने चतुःशाष्ठी मंदिर में देखा था, जिसने मेरे माथे पर मनका दबाया था।

लेकिन वह यहाँ कैसे? उसने एक भी शब्द नहीं कहा था, लेकिन उसकी जलती हुई आँखों में ऐसा कुछ था जिसने मेरे भीतर जमी सारी हिम्मत को पिघला दिया। वह बिना कुछ कहे पलटा और तेजी से चलने लगा। मैं भी बिन सोचे-समझे उसके पीछे हो लिया, जैसे कोई अनजानी शक्ति मुझे खींचे लिए जा रही हो।

वह बड़ी फुर्ती से बेलहट्टा नाम के उस डरावने जंगल में प्रवेश कर गया, जहाँ अँधेरा घना था और लोग अकेले जाने से कतराते थे। उस स्थान के बारे में भयानक कहानियाँ मशहूर थीं। मैं उसके पीछे-पीछे उस घने जंगल को पार करता गया।

जंगल के उस हिस्से में प्रवेश करते ही, मेरी धड़कनें और तेज़ हो गईं। उस आदमी का रुख हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा में रहा, जैसे उसे सही रास्ते की पूरी जानकारी हो। उसकी चाल में कोई झिझक नहीं थी, मानो वह उस जंगल का मालिक हो।

जैसे ही हम पुराने जल-संग्रह परिसर को पार कर रहे थे, मुझे अचानक एहसास हुआ—आज मंगलवार था! भैरव मंदिर के बारे में सुनी कहानियाँ एक-एक कर दिमाग में कौंध गईं। उस मंदिर के बारे में कहा जाता था कि वहाँ शक्तियाँ जागृत होती हैं, और मंगलवार को वहाँ विशेष अनुष्ठान होते हैं।

एक ठंडी सिहरन मेरी रीढ़ में दौड़ गई। वह व्यक्ति निश्चित रूप से मुझे बटुक भैरव मंदिर की ओर ले जा रहा था। लेकिन मैं उस दिन उस मंदिर में जाने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं था। मुझे याद आया कि भगवाधारी महिला ने मुझे चेतावनी दी थी कि उस मंदिर में जाने से पहले उनकी अनुमति और आशीर्वाद लेना आवश्यक था।

मैं अंदर तक सिहर गया। मुझे उस व्यक्ति का पीछा करना चाहिए या नहीं? मेरे कदम भारी हो गए, और मेरा मन द्वंद्व में फँस गया। लेकिन उस व्यक्ति के क़दमों की धुन मेरे भीतर एक अजीब खिंचाव पैदा कर रही थी, जैसे वह मेरी आत्मा को अपने साथ खींचे ले जा रही हो।

मैं द्वंद्व और जिज्ञासा के जाल में उलझा, उसके पीछे चलता रहा, जैसे मेरा अपना वजूद उसके पीछे छूटता जा रहा हो।

## एक आसन की ओर

मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मैं जैसे अदृश्य बंधनों में जकड़ा हुआ था। "माँ! माँ!" की पुकार मेरे आगे-आगे चल रही थी, और मैं अनायास ही उसके पीछे-पीछे खिंचा चला जा रहा था।

हम अंततः बटुक भैरव मंदिर पहुँच गए, लेकिन वह वहाँ नहीं रुका। वह पश्चिम की ओर बढ़ता गया, जहाँ से लगभग पाँच सौ गज की दूरी पर कामक्ष्या का एक लगभग परित्यक्त मंदिर स्थित था। यह वही स्थान था जहाँ माँ के सबसे गुप्त और रहस्यमय अनुष्ठान संपन्न होते थे। यह गुप्त अनुष्ठानों का मंदिर था। साल में केवल एक बार मेरी माँ मुझे और मेरे भाई-बहनों को यहाँ लाती थीं, वह भी केवल दिन के समय, जब वह वहाँ के योगी से आशीर्वाद लेती थीं—एक ऐसे योगी से, जिसका सम्मान भी गहरा था और डर भी उतना ही।

उस शाम को सूरज ढले लगभग डेढ़ घंटा बीत चुका था। चाँद अभी तक नहीं निकला था, और पूरा स्थान एक अंधेरे सन्नाटे में डूबा हुआ था। वह लंबा व्यक्ति अब अपनी गति धीमी कर चुका था, और ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी विशेष संकेत की तलाश कर रहा हो। तभी मैंने देखा कि मंदिर के पीछे, एक विशाल प्रांगण के बीचोंबीच, एक मेहराबदार गलियारे के नीचे आग जल रही थी।

पत्थर से बना यह छत वाला गलियारा प्रांगण के चारों ओर फैला हुआ था, और इसके चारों ओर अजीब-सी रहस्यमय शांति छाई हुई थी। मंदिर में प्रवेश का केवल एक ही द्वार था, और उस गलियारे से होकर ही प्रांगण तक पहुँचा जा सकता था।

मैं अभी आग के पास पहुँच भी नहीं पाया था कि मैंने देखा, भगवाधारी महिला प्रांगण में खड़ी मेरा इंतजार कर रही थी। लेकिन वह लंबा व्यक्ति आग की ओर बढ़ता गया और जल्द ही एक आसन पर बैठ गया। वहाँ पहले से कुछ और लोग भी बैठे थे, जो निश्चित रूप से किसी विशेष अनुष्ठान में लीन थे।

महिला ने मेरा हाथ थाम लिया, और जो पहला प्रश्न उसने पूछा, उसने मुझे अंदर तक हिला दिया—"प्रिय योगी, तुमने अपनी धोती (लंगोटी) कहाँ छोड़ी है?"

तभी मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैं पूरी तरह से नंगा खड़ा था!

मुझे याद आया कि मैंने अपनी लंगोटी कटहल के पेड़ के नीचे उस मंच पर छोड़ दी थी, जहाँ मैंने उसे आसन के रूप में इस्तेमाल किया था। लेकिन ध्यान के बाद उसे उठाने का ख़्याल ही नहीं आया।

उसने तुरंत अपनी केसरिया साड़ी से कपड़े का एक चौड़ा टुकड़ा फाड़ा और मुझे उसे लंगोटी की तरह पहनने को कहा। फिर उसने अपने हाथों को मेरे सिर पर रखा और एक मंत्र का जाप करने लगी। मैंने श्रद्धापूर्वक अपना सिर झुका लिया।

धीरे-धीरे, वह मुझे उस विशेष सभा में ले गई। वहाँ मुझे तीन परिचित चेहरे दिखे—वैष्णव संत नारद, बटुक भैरव मंदिर के भैरव संरक्षक संत, और मेरे मौन मित्र, लंबे संत, जिन्हें बाद में वाराणसी के साधु जितेंद्र के नाम से जाना गया।

उस विशेष अनुष्ठान में और भी कई लोग मौजूद थे, जो अग्नि के चारों ओर एक घेरा बनाकर बैठे थे। भैरव स्वयं मक्खन में भिगोए हुए प्रसाद को अग्नि में अर्पित कर रहे थे। उस प्रसाद की फुफकारती आवाज़ और फैलती सुगंध से मुझे आभास हुआ कि वहाँ मांसल पदार्थ चढ़ाए जा रहे थे।

मुझे भगवाधारी महिला के घड़े से एक पेय दिया गया। जैसे ही मैंने उसे पिया, मेरे मन में एक प्रकार का क्षरण हुआ, और धीरे-धीरे एक नया मन उभरने लगा—अधिक संवेदनशील, अधिक सतर्क, और अधिक ग्रहणशील।

मेरी इंद्रियों की दुनिया पर जैसे किसी अनजानी शक्ति ने कब्ज़ा कर लिया। नाचते रंगों में विविध रोशनियाँ मुझे आनंद के एक नए स्तर पर ले जा रही थीं। तभी मुझे एहसास हुआ कि भगवाधारी महिला मुझे अपने पास खींच रही थी, हमेशा की तरह।

लेकिन यह कुछ अलग था। वह वास्तव में मेरे लिए एक अजनबी के लिए जगह बना रही थी—एक भैरवी, जो युवा, जीवंत और सुंदर थी। मैंने भगवाधारी महिला को यह कहते सुना, "इसे अपना बना लो... इसके लिए आसन बनाओ... संकोच मत करो... यह इसे सहन कर लेगा... इसका अभिषेक किया गया है... इसे बंध (एकता) की आदत है... केवल तुम्हें सावधान रहना चाहिए... याद रखना, मैं दोहराती हूँ; इसका अभिषेक किया गया है... इसे व्यवधान न पहुँचाओ..."

उसकी बातें स्पष्ट थीं, और उसके इरादे भी। लेकिन मैं अंदर तक हिल गया था। मुझे एक विचित्र संकोच और असहायता ने जकड़ लिया था।

तभी मुझे समझ आया कि मैंने उस जंगल में प्रवेश क्यों किया था। यह केवल नारद की इच्छा नहीं थी, जो चाहते थे कि मैं एक योगी की प्रत्यक्ष शक्ति का अनुभव करूँ, बल्कि भगवाधारी महिला की भी योजना थी।

मुझे याद आया कि कैसे मुझे नग्न स्नान कराया गया था, कैसे लंबे ध्यान के माध्यम से मुझे शुद्ध किया गया था, और फिर महान योगिक रूप के साथ हुई चमत्कारिक मुलाकात।

सब कुछ एक सुनियोजित यात्रा थी, जिसमें साधु जितेंद्र ने मुझे एक उद्देश्य के साथ उस स्थान पर निर्देशित किया था।

अब अंत में, ध्यान में प्रवेश करने से पहले, मुझे एक नया आसन, एक नई साधिका, एक अज्ञात महिला प्रतिरूप प्रदान किया जा रहा था।

यह स्पष्ट था—मैं एक कठिन परीक्षा से गुजर रहा था। यह मेरा पहला वास्तविक परीक्षण था, एक ऐसी आध्यात्मिक चुनौती, जो मुझे भीतर से बदलने के लिए तैयार थी।

## योगेश्वरी

मुझे अच्छी तरह याद है, नारद ने मुझसे वादा किया था कि वे मुझे योग की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव कराएँगे। लेकिन उस वादे के बाद वे अचानक गायब हो गए। जो घटनाएँ उसके बाद घटीं, वे मेरे लिए काफी अजीब और अलौकिक थीं।

जंगल में बरगद की छाया में समाधि की अवस्था में लेटी हुई सफेद वस्त्रधारी आकृति आज भी मेरी स्मृतियों में जीवंत है। उस दृश्य ने मुझे भीतर तक विस्मय से भर दिया था। बाद में मुझे पता चला कि उन्हें माता योगेश्वरी या योगेस वर्त के नाम से जाना जाता था। यह भी जाना कि मैं उन्हें ध्यान के माध्यम से बुला सकता था, उनसे सीधे सवाल पूछ सकता था, और उस तीखी, अचूक आवाज़ में जवाब पा सकता था।

वह आवाज़ इतनी विशिष्ट थी कि एक ही ध्वनि दो बार जल्दी-जल्दी आने पर उसका मतलब 'नहीं' होता था, जैसे साँस लेने और छोड़ने के दौरान ध्वनि उत्पन्न होती है। मैंने इस प्रक्रिया का कई बार परीक्षण किया, और हर बार वही तीखी आवाज़ अचूक निकली।

लेकिन वह सफेद वस्त्रधारी आकृति वहाँ कैसे आई? वह कौन थी? उसका प्रकट होने का रहस्य क्या था? ये सब बातें हमेशा रहस्य ही बनी रहीं।

मुझे केवल इतना पता था कि मेरे माता-पिता उस आकृति को प्रेत मानते थे, जो केवल स्मारक मूर्ति थी। परंतु मेरा मन और अनुभव कुछ और ही कहता था।

जब भी मैं उस आकृति के पास जवाब के लिए गया, मुझे जीवंत उपस्थिति का आभास हुआ। संवाद वास्तविक था, मानो मैं किसी जीवित प्राणी से बात कर रहा हूँ। लेकिन अब, जब मैं वहाँ जाता हूँ, तो कोई सवाल मन में नहीं उठता। और यदि कोई प्रश्न नहीं, तो उत्तर कैसे मिलेगा?

मेरा मस्तिष्क अब उस खुलेपन को खो चुका है। जब भी मैं अब वहाँ जाता हूँ, मुझे वह आकृति सच में मूर्ति ही लगती है—बेजान पत्थर की मूर्ति।

वह जादू, जो पत्थरों में जीवन फूँक देता था, मेरे कमज़ोर होते मन के साथ कब का गायब हो चुका है। मुझे अब यह समझ में आया कि केवल मजबूत, निडर और निस्वार्थ मनुष्य ही अज्ञात शक्तियों के गुप्त रहस्यों को प्राप्त और संरक्षित कर सकते हैं।

अब जब मैं वहाँ जाता हूँ, तो बरगद की छत्र-शाखाएँ, कटहल का पेड़, सूखी पत्थर की सीढ़ियाँ, और तालाब में बहता पानी—सब मौन रहते हैं। वहाँ कोई संदेश नहीं होता, कोई संवाद नहीं होता।

यह सब कंकाल समान यादें बन गई हैं।

बढ़ती जवानी आत्मा को कई सवालों से भर देती है, लेकिन जवानी बीतने के साथ-साथ अहंकार इतना कठोर हो जाता है कि वह सच्ची प्रार्थना की भावना में डूब नहीं पाता, संतृप्त नहीं हो पाता।

मुझे इस अनुभव के नारद की देन होने में कोई संदेह नहीं था।

यह भी निश्चित था कि यह स्थान संत जीतेंद्र का प्रिय ठिकाना था, और यह भी कि नारद, संत जीतेंद्र, और भगवाधारी महिला—तीनों मिलकर काम कर रहे थे, जैसे किसी योजना पर कार्यान्वियन कर रहे हों।

और जैसा कि आगे की घटनाओं से स्पष्ट हो जाएगा, यह यात्रा केवल यहाँ तक सीमित नहीं थी। यह तो आध्यात्मिक यात्रा का एक पड़ाव मात्र था।

# 8.चार का समूह (A Pack of Four)

मैं, एक आसन—एक जीवित आसन—फर्श पर पीठ के बल लेटा था, नग्न, निःसंकोच, पूरी तरह से समर्पित। मुझे पता था कि क्या होने वाला है, और किसे परवाह थी? एक तरफ नारद, दूसरी तरफ केसरिया वस्त्रधारी महिला, और मेरे ऊपर एक अज्ञात शक्ति सुखपद्मासन में विराजमान थी।

यह कोई साधारण आसन नहीं था। मेरे ऊपर बैठी वह शक्ति वही थी जो केवल भैरव का विशेषाधिकार थी, और भैरव की उत्तर साधिका—उनकी अल्टर ईगो—ही इसकी साक्षी थी।

रात गहरी और गंभीर थी, और तारा, तारा, तारा! भैरव की अचानक चीख ने उस सन्नाटे को चीर दिया। हम सभी सतर्क हो गए। वह जप कर रहे थे, और हम सभी उनके साथ सम्मिलित हो गए। महानिर्वाण तंत्र के प्रसिद्ध भजन की अंतिम पंक्तियाँ शांत शून्य में गूंज उठीं:

ह्रीं! हे काल के संहारक!

श्रीं! हे भयंकर रूपधारी!

क्लीं! हे कल्याणकारी!

अंधकार की रात्रि... अपार इच्छा की रात्रि,

तुम फिर भी सभी इच्छाओं के बंधनों से मुक्तिदायिनी हो।

इसके बाद महाकाली के भजन गूंजने लगे। अँधेरा काँप उठा, रोमांच की लहरें उमड़ पड़ीं, और आनंद की गहराई में डूबते-उतराते हम सभी एक अनजाने लोक में पहुँच गए।

फिर, गंभीर मंत्रों की ध्वनि उठी, तालबद्ध घंटियों की तरह:

ॐ हुं क्षम यम राम लं वाम क्रोम

ॐ हुं क्षम यम राम लं वाम क्रोम

ॐ हुं क्षम यम राम लं वाम क्रोम

सर्व-विघ्न-नाशाय नाशाय

फिर महाकाली भैरव ह्रीं फट स्वाहा...

फुफकार... लौ उछलती हुई... और जली हुई पशु-खाल की जानी-पहचानी गंध।

और फिर, मैं डूब गया—एक गहन समाधि में। कोई गंध, कोई रोशनी, कोई ध्वनि मुझ तक नहीं पहुँच रही थी।

मेरी चेतना हवा रहित आकाश में दीपक की लौ की तरह स्थिर थी। मुझे लगा कि मैं प्रकाश पिंडों के ढेरों के बीच से अत्यधिक गति से गुजर रहा हूँ, जैसे कि तारों से भरे मैदानों में यात्रा कर रहा हूँ। और फिर, चमकीले रंगों की किरणें बरसने लगीं।

फिर अचानक शांति आई, लेकिन गति की हल्की कंपन अब भी थी। यह एक अजीब रोमांच था, जैसे पेड़ पर चढ़ती गिलहरी की प्रत्याशा, जब वह ठिठककर आपको देखती है—स्थिर, फिर भी उत्सुकता से रोमांचित।

यह अलौकिक संतुष्टि थी। एक ऐसा अनुभव, जो नसों को थकाता नहीं, बल्कि तरोताजा करता है। यह मन को हिम्मत और आत्मा को विश्वास देता है। भयभीत साहस को आगे बढ़ने की शक्ति मिलती है, और नई उम्मीदें छलांग लगाती हैं।

यह अस्तित्व को मजबूत करता है। आत्मा की सर्वव्यापकता की भावना सर्वोच्च हो जाती है। अनासक्ति की ऐसी मुक्ति जो किसी भी भौतिक बंधन को तुच्छ बना देती है।

मैं इसका वर्णन कब तक करता रहूँ? यह व्यर्थ है। यह 'सदैव आनंद' की भावना थी—परमानंद।

दिसंबर 1977 में भारत लौटने पर, मैं उस प्रभामंडल वाले मंदिर में फिर से गया। भैरव से मिलने की तीव्र इच्छा मुझे वहाँ खींच लाई थी। लेकिन जिस दिन मैं पहुँचा, वह उनके स्वर्गारोहण की दूसरी वर्षगांठ थी।

उनकी उत्तर साधिका, वही भैरवी, जो काले सूखे आलूबुखारे की तरह सिकुड़ी हुई थी, अब भी वहाँ थी। मुझे देखकर वह मुस्कुराई और बोली, "तुम वापस आओगे। मैं चाहती हूँ कि तुम वापस आओ। मैं यहाँ रहूँगी, चाहे इस शरीर में न भी रहूँ। लेकिन मैं फिर भी रहूँगी। कभी रास्ते से नहीं हटना। वापस आना।"

यह एकमात्र ऐसा समय नहीं था जब मैंने सर्वोच्च शक्ति और आनंद की गहराई का अनुभव किया।

मुझे चार और मौकों पर इसी तरह के अलौकिक अनुभव हुए।

मैं आपको बताता हूँ...

## विनम्र संत

एक बार मैंने भी एक संत से यह मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछा था, “समाधि में कैसा अनुभव होता है?”

हम पहले ही वैष्णव कवि विद्यापति की छूने वाली पंक्तियों का उल्लेख कर चुके हैं—

"मत पूछो। यह अवर्णनीय है।

हर कहे गए शब्द के बाद एक और शब्द की प्यास लगती है।

जितना बताया जाता है, उससे अधिक बाकी रह जाता है।"

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे संक्षिप्तता से कहा है—

"तुम और मैं एक साथ।

कोई बीच में नहीं। कोई बाधा नहीं।"

या फिर,

"मन की जादुई झील में मुझे एक मधुर शांति का अनुभव होता है;

परंतु मैं उस दिव्य मधुरता का एक बूँद भी नहीं समेट पाता,

क्योंकि वह मानव समझ से परे है।"

नहीं, समाधि की अनुभूतियाँ वर्णन से परे होती हैं।

जिस संत की मैं बात कर रहा हूँ, उन्होंने प्रयाग की पवित्र नगरी में स्थित मेरे साधारण घर में भेंट दी थी, जो गंगा और यमुना के संगम पर स्थित है। यहाँ हर बारह वर्षों में हिंदू संप्रदाय के सभी संत, भले ही उनकी साधना पद्धतियों में भिन्नता हो, एकत्रित होते हैं।

निर्धारित दिन, कड़कड़ाती सर्दी के बीच, लगभग बीस लाख लोग और कम से कम पाँच लाख सन्यासी, साधु, संन्यासी, साधक (पुरुष और महिला), पवित्र संगम पर स्नान के लिए इकट्ठे होते हैं। ये लोग भारतीय उपमहाद्वीप के दूरदराज क्षेत्रों से, यहाँ तक कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों और उससे भी परे से आते हैं।

मुझे हमेशा यह सोचकर आश्चर्य होता है कि वे बिना किसी संगठित प्रचार के, अत्यंत वैज्ञानिक सटीकता के साथ तारीख का निर्धारण कैसे करते हैं।

ओलंपिक जैसी घटनाओं में एक लाख लोगों को जुटाने के लिए व्यापक प्रचार की आवश्यकता होती है, परंतु बिना किसी प्रचार, प्रतियोगिता या प्रोत्साहन के, लाखों लोग यहाँ समय पर कैसे एकत्रित हो जाते हैं?

वे किस प्रेरणा से कष्टों का सामना करने को तैयार होते हैं?

उन्हें क्या लाभ की आशा होती है?

यह घटना मेरे लिए हमेशा रहस्य रही है।

उस वर्ष, सर्दी अत्यधिक कठोर थी; और एक असामयिक शीतकालीन मानसून, जिसमें ओले और ठंडी बारिश भी थी, ने परिस्थितियों को और कठिन बना दिया।

यह एक कठिन कुंभ मेला था।

(मुझे अच्छी तरह याद है कि यही एकमात्र जनवरी थी, जब मैंने इलाहाबाद में बर्फ की लटकी हुई बूंदें देखी थीं।)

मैं पवित्र नदियों के संगम से सुबह-सुबह स्नान करके लौटा था, और कुछ मित्रों के साथ साहित्य और अन्य व्यर्थ लेकिन उपयोगी विषयों पर चाय और गर्म नाश्ते के साथ समय बर्बाद कर रहा था।

वह एक अत्यंत भौतिक पूर्णता का क्षण था।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई; और उसके साथ ही एक कमजोर आकृति ने प्रवेश किया।

वह लगभग पाँच फीट तीन इंच लंबा, हल्के कदमों से चलता, साधारण दाढ़ी वाला था, जो बहुत लंबी नहीं थी।

उसने केवल हल्का सूती कपड़ा पहना हुआ था, जो उसके कटि भाग को ढँकते हुए भी उसके कमजोर शरीर को पूरी तरह ढँक नहीं पा रहा था।

धूप में झुलसकर तांबे जैसी हो चुकी लटें ढीली होकर अनजान कंधों पर लटकी हुई थीं।

आँखें आधी बंद थीं।

युवावस्था के उन्माद और ओस्कर वाइल्ड, शॉ, लॉरेंस, फ्रायड, रोमा रोलां, इलियट, सार्त्र, गिडे, जुंग जैसे असंख्य नामों के चर्चा के नशे में, मैंने उस साधारण व्यक्ति की पूरी तरह अनदेखी की।

उसे भिक्षुक समझकर, मैंने असभ्यता से उसे दूसरे दरवाज़े पर दस्तक देने को कहा, जहाँ मेरी धर्मपरायण माँ उसे भिक्षा दे सकती थीं।

और वह दूसरे दरवाज़े पर दस्तक देने चला गया।

कुछ पलों के बाद, जब माँ के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर के साथ वह अनजान आगंतुक मेरा चचेरा भाई चक्रवर्ती निकल आया, तो मैं हक्का-बक्का रह गया।

वह वही चक्रवर्ती था, जो बीस वर्षों से अधिक समय से हिमालय में लापता था, और जो बाल्यावस्था में अनाथ होने पर मेरी माँ का दूध पीकर बड़ा हुआ था।

उसके बारे में आखिरी बार यह सुना गया था कि वह नेपाल के शाही कॉलेज में अंग्रेजी विभाग का प्रमुख था; लेकिन एक सुबह वह अचानक गायब हो गया था।

और अब, मेरी माँ ने अपने खोए हुए पुत्र-तुल्य भतीजे को फिर से अपने सामने पाया।

मुझे अपने चचेरे भाई चक्रवर्ती और उसकी आध्यात्मिक महानता के बारे में पहले से ही सुन रखा था।

अब मुझे उसे करीब से देखने का अवसर मिला।

माँ के विशेष आग्रह पर, उसने अपने जीवन का सबसे लंबा ठहराव चार दिनों तक हमारे घर पर किया।

उसने माँ को निराश नहीं किया।

उसने कहा, "मैं स्नान के लिए तो आया ही था, परंतु मुख्य उद्देश्य 'मुझे दूध पिलाने वाली' से अंतिम भेंट करना था।"

वह पचास वर्ष से अधिक आयु का होना चाहिए था, परंतु तीस वर्ष का युवा दिखता था।

उसके बालों में एक भी सफेदी नहीं थी।

और धीरे-धीरे मैं उसके जीवन के प्रति उसकी सच्ची निष्ठा को समझने लगा।

तो, मैं उससे सीखने का लोभ संवरण नहीं कर सका।

मैं जानना चाहता था कि संत वास्तव में समाधि में क्या अनुभव करते हैं।

## परमात्मा संग स्वतंत्रता का अनुभव

“समाधि का स्वाद कैसा होता है?” यह सवाल मुझे परेशान करता रहा। “यही समय था,” मैंने सोचा।

मेरे लिए वे चार दिन पुनर्निर्माण के चार साल जैसे थे। विश्वविद्यालय में बिताया समय एक अलग तरह की शिक्षा में लीन था, जिसने मुझे आध्यात्मिक रूप से खोखला बना दिया था। मैंने न तो कोई वास्तविक विकास किया और न ही सीखा हुआ ज्ञान बनाए रखा। लेकिन संत सी के सान्निध्य में मैं मानसिक रूप से तरोताजा और आध्यात्मिक रूप से पुनः ऊर्जावान हो गया। यह एक प्रकार का भोग था जिसे उन्होंने विनम्रता से स्वीकृत किया। उन्होंने असीम धैर्य के साथ मुझे सहन किया।

मैंने उनसे कई सवाल पूछे, लेकिन एक सवाल जो मैंने सबसे जोरदार तरीके से पूछा, वह था, “आपने अपने सभी पिछले कर्तव्य-बद्ध प्रतिबद्धताओं को क्यों छोड़ा? इस एकाकी मार्ग पर क्यों चले आए? इसके क्या लाभ हैं? इससे वास्तव में क्या मिलता है? यह योग क्यों? किस उद्देश्य से?”

मैंने उन्हें पहले ही चेतावनी दे दी थी कि वे मेरे साथ प्रेम से भरे दिल या मानवता की सेवा जैसे घिसे-पिटे उपदेश न दोहराएँ। मैं जानता था कि ऐसे खोखले आदर्श अक्सर ढोंग और धोखाधड़ी का कारण बनते हैं।

“यदि हृदय को प्रेम से भरना ही सत्य होता,” तो कृष्ण जैसे महापुरुष जीवन में व्यस्त रहते हुए भी आत्मा के प्रति अपने दायित्व निभाने में सक्षम क्यों थे?

अधिकांश वैदिक और पौराणिक ऋषि गृहस्थ होते हुए भी समर्पण के साथ साधना करते थे।

उन्होंने भाग-दौड़ भरी जिंदगी को अपनाकर भी शक्ति प्राप्त की और एकांत की तलाश नहीं की।

“क्या आप मेरे ज्ञान पर सवाल उठा रहे हैं,” उन्होंने पूछा, “या मेरे जीवन जीने के तरीके की आलोचना कर रहे हैं? क्या आप मुझसे नाराज़ हैं, भाई?”

उनकी आँखें आधी बंद थीं, पद्मासन में सीधा और स्थिर शरीर, मधुर और शांत आवाज़। उनका आचरण ही गंभीरता और ज्ञान की गहराई को प्रमाणित करता था।

वे पूर्णतः आध्यात्मिक थे, एक आत्मसाक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति।

उनके व्यक्तित्व में योगिक आनंद का सार झलकता था।

इसके विपरीत, मैं अपनी शक्ति रेखा से कटा हुआ, अभ्यासों से दूर, संदेहों से घिरा हुआ और पश्चिमी तर्कों की गुलामी में जकड़ा हुआ था।

मैं 'सफलता' के पीछे दौड़ रहा था, क्योंकि मैं 'सफलता' को समझने और स्वीकार करने में असमर्थ था।

ज्ञान के प्रति मेरे दंभ की कोई सीमा नहीं थी।

उन्होंने आँखें मूँद रखी थीं और मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

मैंने कहा, "मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा हूँ। मैं केवल यह समझना चाहता हूँ कि जीवन से भागकर अमूर्त सत्य की तलाश क्यों करनी चाहिए? इससे क्या प्राप्त होता है? क्या?"

आँखें बंद, आवाज़ शांत और ठंडी, उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे करना ही होगा, जैसा कि आप कहते हैं। और मैं करूँगा।"

फिर सन्नाटा छा गया।

मैंने अपनी साँस रोक ली और प्रतीक्षा करने लगा।

अचानक, उन्होंने कहा, "मैं आनंद चाहता हूँ; शाश्वत आनंद; जीवन के लिए आनंद; जीवित लोगों के लिए आनंद।"

"बकवास मत करो।"

उनके उत्तर ने मुझे क्रोधित कर दिया।

"अगर जीवित लोगों के लिए इतना आनंद है, तो मैं आनंद में क्यों नहीं हूँ? चारों ओर इतना दुख क्यों है? बुद्ध और ईसा के समय से हम इस गरीब झोपड़ी में क्यों फँसे हैं? अब बहुत हो गया!"

उन्होंने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, "तुम्हारा आनंद और मेरा आनंद बहुत अलग हैं। तुम किसे आनंद कहते हो? क्या तुमने कभी वास्तविक आनंद का स्वाद चखा है?"

उनकी आँखें खुलीं—हीरे की चमक जैसी, जैसे अंधेरे में प्रकाश का केंद्र।

मैंने कहा, "बेशक, मुझे खुशी के पल मिले हैं। तो क्या?"

"पल... जैसे क्या? कब? कैसे?" उन्होंने पूछा।

"कला, साहित्य, संगीत..." मैंने कहा।

"रुको। ठीक-ठीक बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए और जो तुम्हें मिलता है, उसे तुम आनंद क्यों कहते हो।"

मैंने कहा, "खुशी के सबसे संतोषजनक अनुभव मेरे सबसे शानदार क्षणों में आते हैं... जैसे शेक्सपियर की ये पंक्तियाँ—

'हम ऐसे पदार्थ हैं जिन पर सपने बनते हैं, और हमारा छोटा सा जीवन नींद से घिरा हुआ है।'

उन्होंने आँखें आधी बंद रखते हुए पूछा, "यह कब तक चला? सभी संवेदनाओं के सर्वोच्च के साथ मुक्त महसूस करने की यह उत्कृष्ट भावना?"

"सभी संवेदनाओं के सर्वोच्च के साथ मुक्त महसूस करना!"

क्या परमानंद को व्यक्त करने का अद्‌भुत तरीका था!

मैं अभिभूत था।

उन्होंने कहा, "नहीं! सब नहीं। मेरे आनंद का स्रोत एक जादुई फव्वारा है। यह तुम्हारे घर के नल की तरह है। जब चाहो खोलो, जब चाहो बंद करो। यह तुम्हारे इशारे पर काम करता है। चाहे घंटे, दिन, महीने, साल भर इसका आनंद लो—यह तुम्हारे नियंत्रण में है। यही आत्मा का प्रकाश है। योग इसे प्रदान करता है; साधना इसे तैयार करती है; समाधि इसका आनंद लेती है; और साधु इसे फैलाता है, उन लोगों को शांति देता है जो इसे चाहते हैं। आनंद मेरा है, और मैं इसे बाँटता हूँ।"

मैं मंत्रमुग्ध था।

उनका आत्म-विश्वास, शब्दों की सादगी, और अभिव्यक्ति की गहराई ने मेरे मन के सारे संशय दूर कर दिए।

मुझे समाधि का पहला झलक मिली थी—

परमपिता परमात्मा के साथ मुक्त महसूस करने की अनुभूति।

## खोया हुआ नेता

मैं कुछ समय के लिए हिमालय के तिब्बत-शिमला पहाड़ों से दूर, 11,000 फीट की ऊँचाई पर शिविर लगाए हुए था। विश्वविद्यालयों के कुछ युवा वहाँ हिमालयी सड़क निर्माण के काम में लगे थे। मेरा काम था उनके शिविर जीवन और अनुशासन की देखरेख करना। नतीजा यह हुआ कि मैं ऐसे भूमिका में आ गया जिसमें मैं उन युवाओं का अंतरात्मा-पालक बन गया, जिनकी अंतरात्मा अभी भी उथल-पुथल में थी।

रोज़ की हलचल से बचने के लिए मैं अक्सर शाम के समय दूर निकल जाता था। एक शाम, मैं गहरे जंगल में भटक गया। उस जंगल का वह हिस्सा अजगरों और भालुओं के लिए कुख्यात था। मैं एक गहरी घाटी में उतर गया था, यह जाने बिना कि शाम कितनी तेजी से अंधेरे में बदल सकती है।

ऊपर चढ़ते समय एक क्षण ऐसा आया जब मुझे एहसास हुआ कि मैं वापस नहीं पहुँच पाऊँगा और मुझे रात बिताने के लिए कोई ठिकाना ढूँढना होगा। मैं पहाड़ी भूलभुलैया में घूमता रहा, थकान और शायद डर से घिरा, जब तक मुझे यह समझ में नहीं आया कि मैं बार-बार उसी जगह पर लौट रहा हूँ। मैं बुरी तरह पसीने में भीग गया था, सांसें थम रही थीं, और मुझे लग रहा था कि मैं बेहोश होने वाला हूँ।

मेरे पास न तो टॉर्च थी और न ही माचिस। मैंने बस एक साधारण लकड़ी का डंडा पकड़ रखा था। आखिरकार मुझे एक सपाट पत्थर मिला, जिस पर बैठकर मैंने साँसें संभालने की कोशिश की, और अगला कदम सोचने लगा।

अंधेरे का ठोस, भारी आवरण मेरे होशों पर हावी हो रहा था। जंगल की घनी साँसें, मानो किसी विशाल अजगर के सोते हुए शरीर की तरह, उठती और गिरती प्रतीत हो रही थीं। अनगिनत जुगनू उस घने अंधकार में टिमटिमा रहे थे। एक अजीब सी तरंग मुझे लगातार कोई संदेश दे रही थी।

मुझे खोया हुआ महसूस करना चाहिए था। मुझे डर लगना चाहिए था। मुझे घबराहट के दौरे पड़ने चाहिए थे। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपने कमरे में आधी रात को अचानक जाग गया हूँ, और पाया कि प्रकृति मेरी अपेक्षा से अधिक भयावहता से साँस ले रही है। जो परिचित था, वह अपरिचित हो गया था।

मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास केवल एक ही रास्ता है, एक ही काम है। मैंने एक आसन में बैठकर स्वयं को यथासंभव आरामदायक स्थिति में लाया और ध्यान में लीन हो गया।

जल्द ही पहाड़ियाँ साफ़ हो गईं, और भारी अंधकार में डूबने के बजाय, मैं प्रकाश के समुद्र में तैर रहा था। मेरा शरीर कहीं पीछे छूट गया था, और मुझे एक अत्यंत आनंदमय सुगंध ने ढँक लिया था। कुछ तारे, जुगनुओं की तरह, मेरे पास से गुजरते और तेज़ी से उड़ जाते। मैंने स्वयं को रवींद्रनाथ टैगोर की अपनी पसंदीदा पंक्तियाँ गाते हुए पाया:

"मैं तेरी सुंदरता को अपने मन की आँखों से देखता हूँ...
मेरी आँखें अब भटकती नहीं,
मेरे भीतर कोई अज्ञात वीणा के तार बज रहे हैं;
एक बाँसुरी की पुकार मुझे उस ओर खींच रही है,
जिसे मैं हमेशा खोजता रहा हूँ।"

फिर एक ऐसा क्षण आया जब मेरा अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो गया; जैसे महसूस करना ही आनंद के सागर में खो जाना था। शायद मैं बेहोश हो गया था।

जब मेरी चेतना लौटी, तो मैं पसीने में पूरी तरह भीगा हुआ था। हवा भारी और धुएँ से भरी महसूस हो रही थी। मैंने एक चेहरा अपनी ओर झाँकते देखा। "तुम सुरक्षित हो; सब ठीक है," एक स्पष्ट अंग्रेज़ी आवाज़ ने मुझे आश्वस्त किया।

धीरे-धीरे अंधकार से दो परिचित चेहरे उभरे। ये मेरे शिविर के दो लड़के थे, जो अपने खोए हुए नेता की तलाश में निकले थे।

## मुझे एक गुरु चाहिए

उन चेहरों के पास एक अजीब युवक खड़ा था, जो अपनी शुद्ध नग्नता में दिव्य आभा से दमक रहा था। वह लगभग तीस वर्ष का लग रहा था, और उसके हर बाल से आध्यात्मिक तेज टपक रहा था।

उसे देखकर मुझे नई ऊर्जा का अनुभव हुआ; और मैं उठकर पत्थरीली ज़मीन पर बैठ गया। दो लड़के मेरे पसीने को पोंछने में लगे थे, और मुझ पर एक कंबल डाला गया था ताकि मुझे जो हल्की ठंड लग रही थी, वह कम हो सके। एक दीया जल रहा था और पास में एक आग सुलग रही थी।

यह एक एल-आकार की गुफा थी, जिसका मुहाना तीन फीट चौड़ा और चार फीट गहरा था। तीव्र मोड़ के बाद गुफा आठ फीट की गहराई तक फैली हुई थी। मैं इसी हिस्से में राख से भरी कठोर चट्टान पर बैठा था।

उस साधु ने मुझे बहुत सम्मान के साथ योगियों के उपयुक्त तरीके से अभिवादन किया। उसके चुने हुए संस्कृत और अंग्रेज़ी शब्दों के उच्चारण से यह स्पष्ट था कि उसने औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी।

मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।
"तो," मैंने कहा, "तुम ही हो जो इस अंधकार और उलझन का कारण हो। रास्ता भटकना और ये सारी बातें भी तुम्हारी ही चालें हैं। तुम तो बड़े चमत्कारी लगते हो। धन्यवाद। लेकिन तुमने मुझे क्यों बुलाया? और इस तरह की तकलीफ़ देने वाली तरकीब क्यों अपनाई? ...मैं हैरान हूँ।"

हम संस्कृत में बात कर रहे थे, और बीच-बीच में अंग्रेज़ी में भी कुछ शब्दों का आदान-प्रदान हो रहा था। दोनों लड़के हैरान थे, क्योंकि उन्हें हमारी बातों का एक शब्द भी समझ में नहीं आ रहा था।

"मुझे आपकी सख्त ज़रूरत थी... बहुत सख्त। माफ़ कीजिए, बिना आपको बताए मैंने यह उपाय अपनाया। पहाड़ी लोगों ने आपके आगमन के बारे में बताया था। मैं स्वयं आकर आपसे मिलना चाहता था, लेकिन आप देख ही रहे हैं कि मेरी स्थिति कैसी है।"

"मुझे एक गुरु चाहिए। मुझे बहुत ज़रूरत है। कृपया मुझे यह सौभाग्य दें। कृपया मुझे मना न करें।"

उसकी विनम्र और दृढ़ अपील किसी को भी पिघला सकती थी। दोनों लड़के चुपचाप खड़े रहे, और अब उन्हें आभास हुआ कि हमारे बीच कुछ गहन संवाद चल रहा है।

फिर उसने अपनी कहानी बताई।

मैं उसकी आत्मिक यात्रा की यह नई कथा बड़े ध्यान से सुन रहा था, जो किसी प्राचीन किंवदंती से कम नहीं थी।

## बिखरे हुए शब्द

उसने कहा कि समाधि की अवस्था में वह अक्सर कुछ लिख देता है, लेकिन बाद में वह खुद भी नहीं समझ पाता कि उसने क्या लिखा है। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसकी लिखी हुई इन पंक्तियों को पढ़ने में उसकी मदद कर सकता हूँ।

मैंने बड़ी सावधानी से रखी गई पहली पुस्तक को देखा। लिखावट स्पष्ट थी, लेकिन लिपि ने मुझे चौंका दिया। कुछ हिस्से बंगाली में लिखे गए थे, कुछ ऐसी लिपि में जो बंगाली से मिलती-जुलती थी लेकिन वह बंगाली नहीं थी, शायद ओड़िया हो सकती थी; और कुछ अंश किसी भूली-बिसरी प्राच्य भाषा में थे, जिनके अक्षर कीलाक्षर (cuneiform) की तरह लग रहे थे।

लिपियाँ बदल रही थीं, लेकिन जहाँ मैं पढ़ सका, वहाँ भाषा रहस्यमय तांत्रिक संस्कृत थी, जो मंत्रों, मण्डलों, संकेतों और कुछ विशेष अनुष्ठानों के निर्देशों से भरी हुई थी। मैंने देखा कि भाषा कभी-कभी शुद्ध संस्कृत से प्राकृत में बदल जाती थी, और फिर सीधे किसी प्रांतीय बोलचाल की भाषा में ढल जाती थी। विषयवस्तु मुख्य रूप से तंत्र और तांत्रिक साधनाओं के इर्द-गिर्द घूम रही थी।

यह एक अत्यंत आश्चर्यजनक खोज थी। मैं पूरी तरह हैरान होकर उसे देखने लगा। मेरी चौड़ी खुली आँखों ने निश्चित ही मेरी उलझन और विस्मय को प्रकट कर दिया होगा। लेकिन वह निस्पृह भाव से, मानो एक बच्चा हो, अपनी इस लिखावट और चित्रों के बारे में बात करता रहा।
"क्या मैं पागल हो गया हूँ? ये क्या हैं? क्यों? मुझसे कौन ये लिखवाता है? मैं बेचारा!"

"इसके विपरीत," मैंने कहा, "इन सबका बहुत गहरा अर्थ है।"

लेकिन मैंने न तो और कुछ समझाया और न ही उसे पढ़कर सुनाया। मैंने उसे यह विश्वास दिलाया कि जिस स्रोत से उसे ये संदेश मिल रहे हैं, वह एक दिन उसे स्पष्ट रूप से और भी बहुत कुछ बताएगा, और यह सब उसी के लिए नियत है, और केवल वही इसे समझने के लिए सबसे योग्य है।

## गुरु की खोज

उसने पुस्तक को ऐसे किनारे रख दिया, मानो वह उसके लिए किसी महत्व की न हो। उसकी सबसे जिद्दी माँग थी कि मैं उसका गुरु बनूँ। जब वह मेरे चरणों में गिरने वाला था, मैंने उसे थाम लिया और उसे गले से लगा लिया। हमारे पास नीचे जलती हुई चीड़ की लकड़ियों की आग थी। मैंने उसे अपने पास खींच लिया और धीरे-धीरे उसे अपने ऊपर बिठा लिया; वह मेरे वाम जंघा पर बैठा, उसकी पीठ मेरे कंधे और छाती से लग रही थी।

मैंने उसके कानों में धीरे-धीरे फुसफुसाना शुरू किया। (दोनों लड़के अब तक मौन हो चुके थे और अंधेरे कोने में दुबके बैठे थे।)
"तुझे कोई गुरु नहीं मिलेगा, हे धन्य आत्मा! जिसे स्वयं माता ने गुरु रूप में स्वीकार लिया हो, उसे किसी और गुरु की आवश्यकता नहीं होती। और जिसे तू खोज रहा है, वह तेरे भीतर ही अपनी संपूर्ण महिमा के साथ स्पंदित हो रहा है।"

"और वह क्या है?" वह बुरी तरह से व्याकुल होकर चीख पड़ा।

"वह है 'राम'," मैंने कहा। "क्या तेरी माँ ने तुझे वह मंत्र नहीं दिया था, जब तूने निष्क्रमण संस्कार (मुक्ति की यात्रा) के लिए प्रस्थान किया था? ... अब मेरी सलाह मान। माँ को ही अपना सच्चा गुरु मान ले, हे सौभाग्यशाली, हे धन्य आत्मा! जो तू खोज रहा है, वह सब तुझे मिलेगा। कुछ वर्षों तक प्रतीक्षा कर और प्रयास करता रह।"

अचानक वह मेरी गोद से उछलकर खड़ा हो गया, आग से जलती हुई लकड़ी का एक टुकड़ा झपट लिया और बाहर अंधेरे में नाचता हुआ चला गया। वह आकृति अंधेरे में विलीन हो गई; जलती हुई मशाल का प्रकाश धीरे-धीरे एक बिंदु में बदल गया, जिसे अंततः घने जंगल की अंधकारमय गहराई ने निगल लिया।

## बर्फ़ीले तूफ़ान में शिविर

यह तीसरी घटना भी हिमालय की मेरी यात्राओं में से एक से जुड़ी है। इस बार यह कश्मीर की यात्रा थी, और यह क्षेत्र पीर पंजाल से लेकर प्रसिद्ध अमरनाथ पहाड़ियों तक फैला हुआ है। वहाँ पहुँचने के लिए वव्यन चोटी पर 17,000 फीट की ऊँचाई चढ़नी पड़ती है। रास्ता लिद्दर घाटी से होकर जाता है, जिसमें दो तीव्र चढ़ाइयाँ हैं—पहली पिस्सू दर्रा और दूसरी मच्छर दर्रा। इसके बाद लिद्दर के उद्गम स्थल शेषनाग झील तक पहुँचा जाता है; शेषनाग से एक खड़ी चढ़ाई अंततः

पंचतरिणी घाटी में उतरती है, जहाँ पाँच धाराएँ मिलकर एक सुंदर संगम बनाती हैं। यह मार्ग कठिन है, लेकिन बाकी पर्वतीय दर्रों जितना कठिन नहीं है। यह आठ मील से अधिक की दूरी तक ऊँचाई पर ऊपर-नीचे होता रहता है, जब तक कि अमर गंगा की घाटी तक नहीं पहुँचते। अमर गंगा के तट पर एक नंगी, ऊबड़-खाबड़ खड़ी पहाड़ी है, जिसमें प्रसिद्ध अमरनाथ गुफा स्थित है, जहाँ बर्फ़ से स्वयंभू हिम-लिंग का चमत्कारिक रूप से निर्माण होता है।

मैं जून महीने की शुरुआत में लिद्दर घाटी पहुँचा था, जो अमरनाथ यात्रा के लिए सबसे अनुपयुक्त समय माना जाता है। लेकिन मुझे एक प्रबल आह्वान महसूस हुआ, और मैंने यात्रा शुरू करने का निश्चय किया। ऐसा लगा जैसे मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था। मौसम की स्थिति न केवल प्रतिकूल थी, बल्कि चंदनवाड़ी घाटी और पिस्सू दर्रे के बाद ऊँचे पहाड़ों पर हिमनद (ग्लेशियर) की स्थिति ने अचानक हिमस्खलन (एवलांच) की विशेष आशंका पैदा कर दी थी। विशेष रूप से हिमनदीय आपदा को देखते हुए, गुफा तक पहुँचने के किसी भी प्रयास पर अगस्त तक कानूनी रूप से प्रतिबंध लगा हुआ था।

लेकिन मुझे तो जाना ही था। मैंने स्थानीय प्रशासन से विशेष अनुमति प्राप्त की और 'अपने जोखिम पर' तीर्थयात्रा करने के लिए एक बंधपत्र पर हस्ताक्षर किए। वह एक डरावना वाक्य था, लेकिन जब आह्वान आता है, तो फिर कुछ भी मायने नहीं रखता, ऐसा मेरा विश्वास है।

मुझे एक घोड़े पर पूरा राशन-पानी और एक छोटा तंबू ले जाना पड़ा। एक और घोड़े पर सवार होकर मैंने चार दिनों में यात्रा पूरी करने का लक्ष्य रखा।

दूसरे दिन की शाम को मुझे भयंकर बर्फ़ीले तूफ़ान की अजीबोगरीब गूँज ने घेर लिया, और मुझे एक जर्जर झोपड़ी में शरण लेनी पड़ी, जो कभी एक कुटिया रही होगी। हमारी खाद्य सामग्री और तंबू ढोने वाला घोड़ा कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। वह जानवर और उसका मालिक जैसे हवा में विलीन हो गए थे। संभवतः वह उस भूमि का बेटा था और उसने इस आपदा की आहट पहले ही भाँप ली थी और कहीं सुरक्षित स्थान पर शरण ले ली थी।

वह रात बेहद भयानक थी। बारिश और बर्फ़ीला तूफ़ान रात के दो बजे तक जारी रहा। पूरी तरह थकान और टूटन के कगार पर पहुँचकर मैंने अंधेरे में एक आकृति देखी, लेकिन पूरी कोशिश के बावजूद मैं उसे ठीक से देख नहीं सका। शायद मेरा मन कुछ समय के लिए चेतन अवस्था से बाहर चला गया था। एक गर्म आग और किसी जलते हुए नशीले पदार्थ, संभवतः भांग की गंध ने मेरी इंद्रियों को फिर से जागृत किया।

एक नग्न और कृशकाय बूढ़ा आदमी, उलझे हुए बालों का ढेर सिर पर लिए, कोने में बैठा था। अगर मैं इस भूत जैसी आकृति से किसी संग्रहालय में मिला होता, तो निस्संदेह मैंने उसे खाल-रहित कंकाल समझा होता। मुझमें और अधिक जाँच-पड़ताल करने की ऊर्जा नहीं बची थी। मुझे अब भी अपने घोड़े की साँसों और सूँघने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। लेकिन उस गर्माहट और शायद उस धुएँ के असर ने मुझे एक गहरी नशीली नींद में धकेल दिया।

## वह दूरी जो कभी घटती नहीं

जब मैं जागा, तो भोर भारी धुंध की चादर को चीरने की कोशिश कर रही थी। मेरा घोड़ा घास चबा रहा था और बीच-बीच में अपने खुर ज़मीन पर पटक रहा था। मैं उठ चुका था, लेकिन वह रहस्यमय व्यक्ति बिना कोई निशान छोड़े गायब हो चुका था।

घोड़े वाला वापस आ गया था और उसने मुझे सलाह दी कि सूरज के गरम होने से पहले यात्रा फिर से शुरू कर दूँ। ऊँचे सूरज की गर्मी गिरी हुई बर्फ़ को पिघला सकती थी और पंचतरिणी की खड़ी उतराई पर यात्रा को और भी ख़तरनाक बना सकती थी। वव्यन की डरावनी चोटी मेरे सामने चुनौती की तरह खड़ी थी, लेकिन मैंने हिम्मत बाँधी और उस चपल घोड़े वाले द्वारा जादुई ढंग से तैयार किए गए काले कॉफी के दो तेज़ प्याले पीकर यात्रा शुरू की।

शिविर स्थल से ज़्यादा दूर नहीं पहुँचा था कि मैंने फिर उसी काले छरहरे व्यक्ति को नंगे पाँव सफेद बर्फ़ पर चलते और उस भयानक चोटी की ओर धीरे-धीरे चढ़ते हुए देखा। हल्की-हल्की आवाज़ों में एक प्रसन्न शिव-भजन की धुन मेरे पास से गुज़री, जिसमें बीच-बीच में "जय अमरनाथ" का उद्घोष गूँज रहा था।

मैं उस व्यक्ति की सहनशक्ति और धैर्य पर हैरान था और साथ ही उसे घोड़े पर सवार होकर पकड़ने की कोशिश करने लगा। मैंने एड़ लगाकर घोड़े को तेज़ दौड़ाया, लेकिन चाहे जितना भी तेज़ दौड़ता, और चाहे जितनी भी कोशिश करता कि उस आकृति के पास पहुँचूँ, लेकिन मैं उस दूरी को एक इंच भी कम नहीं कर सका। वह आकृति शांति और स्थिरता के साथ अपने ही अंदाज़ में चलती रही, जैसे उसने निश्चय कर लिया हो कि वह अपनी दूरी बनाए रखेगी।

यह कोई प्रेत-छाया नहीं थी, यह एक वास्तविकता थी। एक सचाई। घोड़े वाला बार-बार मुझे उस व्यक्ति के नंगे पैरों के निशान पर चलते रहने के लिए कहता रहा, "जहाँ उसने कदम रखा है, वहाँ ख़तरा नहीं है।" वह मुझे हिम्मत देता और मैं लगातार घोड़े को दौड़ाता रहा, लेकिन उस आकृति के पास एक इंच भी नहीं पहुँच सका।

चोटी पर पहुँचने के बाद उस आकृति ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर ज़ोर से "जय अमरनाथ" का नारा लगाया और फिर पहाड़ी के दूसरी ओर ओझल हो गई। जब मेरा घोड़ा उस चोटी पर पहुँचा, तो मैंने बर्फ़ पर उसके पैरों के निशान ढूँढने की कोशिश की, लेकिन वहाँ कोई निशान नहीं था; और फिर पूरे ढलान पर, जहाँ तक मेरी नज़रें जा सकती थीं, सिर्फ़ बर्फ़ की चादर फैली हुई थी, और तीन मील दूर गरजती पंचतरिणी बह रही थी। इतना सफेद और चौड़ा दृश्यपट था कि उसमें चिड़िया या चूहा भी आसानी से दिखाई दे जाता, लेकिन वहाँ सिर्फ़ बर्फ़ थी, और कुछ नहीं। ढलान चौड़ी और सपाट दिख रही थी। वास्तव में, यह एक नदी का विशाल तल था, जो अब बर्फ़ में ढका हुआ था। वहाँ किसी बिल्ली के छिपने की भी जगह नहीं थी। लेकिन वह आकृति मानो हवा में घुल गई थी।

घोड़े वाले ने हताश होकर निराशा में पुकारा, "या अल्लाह... ला इलाहा इल्लल्लाह।" उसके पास तो ऐसा कहने का कारण था, लेकिन मैं भी अंदर से हिल गया था। लेकिन हमने अपने डर को अपने भीतर ही दबाए रखा। चरम तनाव के समय की गई पुकारें न केवल सन्नाटे को चीर देती हैं, बल्कि अक्सर अव्यक्त विश्वास की बाधाओं को भी तोड़ देती हैं और हिल चुके मनोबल को फिर से मज़बूत बना देती हैं। ऐसे में मंत्रों और जापों के प्रभाव पर केवल कोई नास्तिक ही हँस सकता है।

हम पंचतरिणी तक पहुँच गए और हमें घाटी के संकरे मार्ग से होकर आगे बढ़ना चाहिए था। लेकिन तभी एक भयंकर बर्फ़ीले तूफ़ान ने अपनी डरावनी गर्जना और विनाशकारी शक्ति से पहाड़ी दीवारों को झकझोर कर रख दिया। तूफ़ान घाटी के लंबे सँकरे मार्ग से गड़गड़ाते हुए आया और अपने रास्ते में सब कुछ उड़ा ले गया। बारिश, ओले और तीखी हवाओं ने सुखद यात्रा की संभावनाओं को तहस-नहस कर दिया। आगे बढ़ने का सवाल ही नहीं था। आखिरी दर्रे को पार करने की योजना अगली सुबह तक टालनी पड़ी। एक परित्यक्त अस्तबल में हमने आग जलाई और काँपते हुए वहाँ रात गुज़ारने की तैयारी की।

खुले आसमान के नीचे जीवन बिताने पर ही मौसम के बदलावों के आशीर्वाद को सही मायनों में समझा जा सकता है। सबसे सुंदर प्रार्थनाएँ ज़रतुस्त्र या बुद्ध ने खुले आकाश के नीचे की थीं। कल्पना कीजिए, अगर वैदिक ऋषि, एसेनी पंथ के

साधक, सुकरात या यीशु जैसे संत मैनहट्टन की किसी गगनचुंबी इमारत में बंद कमरों में बैठकर प्रार्थना करते, और आकाशवाणी या दस आज्ञाएँ या पवित्र पुरुष-सूक्त या गायत्री मंत्र को रेडियो से सुनते!

## गुफा

सुबह का समय था। मौसम बदल चुका था। वातावरण स्वर्ग जैसा लग रहा था। नरम धूप ने मेरी त्वचा को एक सुखद एहसास से सराबोर कर दिया। मेरे घोड़े ने भी मेरी प्रसन्नता को महसूस किया और मेरी खुशी के तरंगों पर झूमता हुआ चलने लगा। (मुझे अब विश्वास हो चला है कि मेरे स्वर शायद घोड़ों को ही सबसे अधिक भाते हैं।)

मैं अकेला ही घाटी पार कर रहा था। घोड़े वाला पीछे शिविर में रुक गया था ताकि हमारे लिए भोजन तैयार कर सके। फिर भी, मैंने अपने साथ चढ़ावे का एक पैकेट (इस बर्फीली वीरानी में और कुछ मिलने की संभावना नहीं थी) और एक प्रार्थना-पुस्तिका रख ली थी।

घोड़ा अब जमी हुई अमर गंगा की घाटी की ओर उतर रहा था। कुछ ही देर में गुफा का पवित्र स्थल दिखाई देने लगा।

पहाड़ की ऊँचाई पर रहस्यमयी गुफा का मुख स्वर्णिम धूप में नहाया हुआ था। असली मंदिर अभी भी आँखों से ओझल था। घोड़ा जमी हुई नदी के पथरीले मार्ग पर धीरे-धीरे टहलता रहा, कभी-कभी बर्फ़ के टुकड़े को मुँह में दबाकर चबाने लगता। सूरज की चमक, जो इन इलाकों के घुमंतू लोगों में रात्रि-अंधता का मुख्य कारण मानी जाती है, कभी-कभी चश्मे के बावजूद आँखों पर पड़ रही थी। ताज़ा हवा और पवित्र वातावरण ने मन को एक अजीब शांति और स्थिरता का आशीर्वाद दिया। मेरी आत्मा आनंद से भर गई।

हज़ारों साल पहले प्राचीन लोगों ने अपने तीर्थ स्थलों के लिए ऐसी ही दिव्य सुंदरता से भरी जगहों को चुना था। प्राकृतिक सुंदरता के प्रति उनका प्रेम और इन दुर्गम स्थानों को किंवदंतियों और लोक कथाओं के माध्यम से प्रसिद्ध बनाने की उनकी कला आधुनिक पर्यटन-स्थलों के चाहने वालों की सभी कोशिशों को मात देती है। मुझे यह बेहद आश्चर्यजनक लगता है कि चाहे वह ग्रीस हो, भारत हो, जापान हो, या शायद चीन भी हो, उन सभी ने अपने पवित्र स्थलों को ऐसी मनोहारी सुंदरता के बीच ही बसाया था।

आत्मा सत्य के साथ सुंदरता भी खोजती है। पवित्रता एक जटिल अनुभूति है जो मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा को प्रेरित करती है कि वह जीवन की तुच्छताओं, नीरसता और बाधाओं से ऊपर उठ सके। यह मनुष्य के भीतर बंधी हुई युवा आत्मा को मुक्त करती है और उसे सुंदरता, सत्य और प्रेम की अनुभूति के मार्ग पर ले जाती है। तीर्थयात्रा वास्तव में इसी दिव्यता की खोज की यात्रा है। परमात्मा उसी दिव्यता का एक और नाम है। और उसका निवास स्वाभाविक रूप से स्वर्ग में ही माना गया है।

गुफा धीरे-धीरे पास आ रही थी और जैसे ही मैं पहाड़ की तलहटी के पास पहुँचा, वह लटकते हुए शिलाखंडों के पीछे छिप गई। मगर घुमावदार रास्ते अब भी दिखाई दे रहे थे। मैंने घोड़े को वहीं छोड़ दिया और पथरीले, दुर्गम मार्ग पर धीरे-धीरे चढ़ाई शुरू की।

पिछले दिनों की थकावट के बावजूद मुझमें एक नई ऊर्जा जाग उठी थी। मैं पर्वतीय हिरण की तरह उछलता-कूदता ऊपर चढ़ता गया और उस गुफा के मुख तक पहुँच गया, जैसे कोई छोटा बच्चा किसी रहस्यमयी आशा से खिंचता चला गया हो।

हज़ारों मीलों तक फैली बर्फ़ीली घाटी को निहारते हुए, अनंत बर्फ़ से ढकी चोटियों के बीच अकेले खड़ा होना एक अजीब सा एहसास था। बर्फ़ की भी अपनी एक चुप्पी होती है; जैसे मृत्यु की निस्तब्धता।

तेज़ चमकते सूरज के बीच मुझे कुछ झिलमिलाहट और पंखों की फड़फड़ाहट दिखी। उस शांत, शिलाओं से घिरी हुई वादी में सबसे हल्की आवाज़ भी सौ गुना सुनाई देती थी। जल्द ही मैंने देखा कि वह झिलमिलाहट और फड़फड़ाहट दो सफेद हिम कबूतरों की जोड़ी से आ रही थी। यह वही पौराणिक कबूतर थे जो इस पर्वत के स्वामी के साथ जुड़े हुए हैं। मैंने इन सौभाग्य के रहस्यमयी कबूतरों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। पर इस सुनसान, खाली गुफा में मेरे लिए कौन सा सौभाग्य इंतज़ार कर रहा होगा?

मैंने हाथ में चढ़ावे की गठरी थामे गुफा में प्रवेश किया। फर्श पूरी तरह से कठोर बर्फ़ से ढका हुआ था, फिसलन भरा और खतरनाक। गुफा के प्रवेश द्वार पर ही मैं फिसलकर गिर पड़ा। लेकिन जैसे ही मैंने संतुलन वापस पाया और खड़ा हुआ, एक सांत्वनादायक आवाज़ ने मेरा स्वागत किया,
"ध्यान रखना। कोई जल्दी नहीं। तुम पहुँच गए हो।"

## पुनः भेंट

बिल्कुल खाली बर्फ़ की एक शिला पर वही कृशकाय छवि बैठी थी। मैंने तुरंत उसे पहचान लिया – वही रहस्यमय व्यक्ति, जिसने उस काली रात में बर्फ़ से ढके अनजान रास्तों पर मेरा मार्गदर्शन किया था। अब हमारे बीच की दूरी समाप्त हो चुकी थी। वही हल्का और संयमित शरीर, वही सिर पर उलझे जटाओं का ढेर, वही रूप, वही आकार। हाँ, यह वही व्यक्ति था, जिसके शरीर पर कपड़ों की जगह केवल प्रकाश लिपटा हुआ प्रतीत हो रहा था।

फिर भी, यह अविश्वसनीय लग रहा था कि वह नंगे पाँव इतनी लंबी दूरी तय करके मुझसे भी पहले यहाँ पहुँच गया, जबकि मैं घोड़े पर सवार था। अंततः शारीरिक रूप में उसे पाकर, जिसे मैं सदैव से खोजता आया था, रोमांच और विस्मय से भरकर मैंने उस साधु को प्रणाम किया।

उसने आपत्ति जताते हुए कहा, "मंदिर में सामाजिक औपचारिकताओं और अभिवादन का कोई स्थान नहीं होता। यहाँ केवल एक ही भगवान हैं, और वही अपनी संपूर्ण महिमा में यहाँ विद्यमान हैं। प्रभु को प्रणाम करो," उसने कहा।

अंडाकार गुफा की दीवार के सहारे तीन फीट ऊँचा बर्फ़ का लिंगम स्थापित था, जो इतनी सटीकता और संतुलन से बना था कि इसे स्वयंभू मानना असंभव लग रहा था। चाँद के घटने-बढ़ने के साथ यह आकृति भी कभी विलीन हो जाती थी और फिर अपनी पूर्णता में वापस आ जाती थी। यह एक पारंपरिक कथा है, लेकिन मुझे एक बात बहुत अजीब लगी – गुफा के सबसे भीतरी भाग में स्थित होने के बावजूद लिंगम से एक तीव्र प्रकाश निकल रहा था। वह इतना चमकदार था कि बिना फ्लैश के भी उसकी तस्वीर खींची जा सकती थी।

मैंने लिंगम को प्रणाम किया, लेकिन खड़ा ही रहा।
"यहाँ मेरे पास बैठो," उसने कोमल स्वर में आदेश दिया और अपने नीचे से एक छोटा सा आसन निकालकर मेरे लिए रख दिया। मैंने संकोचपूर्वक मना करते हुए कहा कि उसकी बूढ़ी नंगी त्वचा को मेरी अपेक्षा इसकी अधिक आवश्यकता है। वह उसका आसन था। (वह किसी पुराने मरम्मत कार्य से बचा हुआ लोहे का टुकड़ा था।)

"मेरा आसन तो यही है," उसने बर्फीले फर्श की ओर इशारा करते हुए कहा।

"आप यहाँ कब से हैं?" मैंने संकोचपूर्वक पूछा, अपने आश्चर्य को यथासंभव छिपाते हुए।
"पिछली शिवरात्रि से" (जो कुछ महीनों पहले थी)।

"शिवरात्रि!" मैं चौंक पड़ा। "तब तो यहाँ पहुँचना बिल्कुल असंभव था!"
"यहाँ तो अब भी पहुँचना असंभव है," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम्हें पता नहीं? फिर भी तुम आ गए। तुम्हारी यात्रा कठिन रही होगी, और साहसिक भी, यह जानते हुए कि सभी रास्ते बर्फ़ की मोटी चादर से ढके हुए हैं।"

"लेकिन आपके पास यहाँ जीवित रहने के लिए कुछ भी नहीं है। आग तक नहीं। आप कैसे गर्म रहते हैं? आप कैसे..."

वह फिर मुस्कुराया और मुझे वाक्य पूरा करने नहीं दिया।
"वे कबूतर कैसे जीवित रहते हैं? कौन सी आग उन्हें गर्मी देती है? जो पौधे बर्फ़ के नीचे सोए हुए हैं, वे कैसे जीवित रहते हैं? प्रकृति में पर्याप्त गर्मी है। प्रकृति ही जीवन है।"

"कबूतर उड़कर गर्म जगहों पर जा सकते हैं," मैंने तर्क दिया।
"लेकिन वे जाते नहीं हैं। वे यहीं रहते हैं। और वे पौधे; वे कैसे जीवित रहते हैं? वे अपनी जगह कभी नहीं छोड़ते," उसने कहा।
"वे बिना छुपे जीवित नहीं रहते," मैंने उत्तर दिया। "देखिए, यहाँ तो एक भी पौधा नहीं दिख रहा।"

"एक भी पौधा नहीं? यह तुम कैसे जानते हो? जो तुम देख रहे हो वह अधूरा देखना है। वे यहाँ हर जगह हैं; बस सोए हुए हैं... मुझमें भी बहुत कुछ सोया हुआ है, बहुत कुछ; और तुम उसे नहीं देख सकते। इस शरीर में बहुत कुछ सुप्त अवस्था में है।"

मैं विस्मय में उसे देखता रहा, उसकी इन रहस्यमय बातों को बिल्कुल भी समझ नहीं पा रहा था।

## पुनर्जन्म

"तुम्हें आश्चर्य हो रहा है। तुम यकीन नहीं कर पा रहे हो। जिस ताप और ऊष्मा से ये कबूतर ऊर्जावान होते हैं, उसी से मेरा शरीर भी ऊर्जावान हो जाता है। शरीर के स्तर पर, बस इतना ही फर्क है। वही ऊष्मा 'सोए हुए' बीजों और जड़ों में भी सुप्त रहती है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है? या है?

"चलो, मैं समझाता हूँ। तुम इस शरीर को देखते हो; और यह करोड़ों कोशिकाओं से बना है। इनमें से हर एक कोशिका को पहले से ही ऊर्जा से चार्ज किया जा सकता है, जैसे तुम कुछ यंत्रों को ऊर्जा संग्रहित करने के लिए चार्ज करते हो। तुम शरीर का ध्यान रखते हो, लेकिन क्या तुम कोशिकाओं का ध्यान रखते हो? मेरा मतलब है, कोशिकाओं की ऊर्जा क्षमता का? तुम इन कोशिकाओं को केवल जैविक दृष्टिकोण से देखते हो; आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नहीं। तुम इसे किस नाम से पुकारते हो? ऊष्मीय क्षमता (थर्मल पोटेंशियलिटी)।" (वह हल्का सा मुस्कुराया।) "तुम निश्चित रूप से इसके बारे में जानते हो।

"लेकिन तुम्हारा ज्ञान खंडित मार्ग पर चलता है। तुम्हें फिर से उलझन हो रही है। बंदर और मेंढक को देखो। वे बहुत तेज़ गति से दूरी तय करते हैं, सचमुच छलांग लगाकर, जैसे तुम अपनी उन्नति का बखान करते हो। लेकिन साँप और हाथी को

देखो। वे भी तेज़ गति से चलते हैं; लेकिन उनके चलने के तरीके में तुम्हारी 'उछल-कूद' नहीं होती। वे कभी भी निरंतरता के संपर्क को नहीं छोड़ते; उस वास्तविकता से संपर्क को, जिसे तुम सत्य कहते हो।

"यदि तुम अपने ज्ञान को भी केवल जैविक दृष्टिकोण से हटाकर, आंतरिक क्षमता के साथ जोड़े रखते, तो तुम कोशिकाओं की आध्यात्मिक क्षमता को पहचान पाते; कोशिकाओं की ऊर्जा क्षमता के रहस्यमय भेद को समझ पाते; और तब ही तुम कोशिकाओं को चार्ज करने के रहस्यों को जानने का प्रयास करते, जैसे मैं और मेरे जैसे कई लोग करते हैं; और तुम आश्चर्य करते हो। लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

"तो, जैसा कि अब तुम देख सकते हो, प्रकृति में जो निष्क्रियता दिखाई देती है, वह वास्तव में ऊर्जा को संग्रहीत करने के लिए चार्जिंग की प्रक्रिया है। ये पौधे और अन्य जीव, जो सोए हुए प्रतीत होते हैं, वास्तव में भविष्य के लिए या निरंतरता के लिए ऊर्जा को संग्रहीत करने के अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य में लगे हुए हैं, यदि तुम इसी रूपक को जारी रखना चाहते हो।

"यह शरीर, जैसा कि तुम देख रहे हो, बुखार के अंत के साथ समाप्त हो जाएगा; और अपनी परछाईं यहाँ छोड़ जाएगा। तुम कहोगे कि कुछ भी शेष नहीं रहा। फिर भी इस स्पष्ट तथ्य के साथ जीना कठिन है। कुछ शेष रहता है; सबसे महत्वपूर्ण चीज़; प्राण।

"ऊपर दिए गए सिद्धांत का विस्तार करो, और तुम आसानी से देख पाओगे कि जब शरीर तत्वों को सौंप दिया जाता है, तब भी प्राण की निरंतरता अवरोधित नहीं होती। फिर इन्हीं तत्वों के माध्यम से प्राण शक्ति, जिसे आमतौर पर आत्मा कहा जाता है, पुनः कार्य करती है और पुनः खिल उठती है, जैसे कि प्राण की 'सर्दियों' के बाद वसंत आता है। आत्मा की मृत्यु नहीं होती।

"आत्मा सदैव जीवित रहती है। जड़ें। वस्तुओं की शुरुआत। वहाँ जीवन जीवित रहता है। जीवन का बीज; बीज रूप में प्राण। जीवन उस रूप में कहीं अधिक वास्तविक और स्थायी है, जितना तुम कल्पना करते हो।

"तुम्हारा भौतिक इंद्रियों पर अत्यधिक विश्वास तुम्हें अंधभक्ति की ओर ले जाता है। जबकि तुम्हारी इंद्रियाँ तंत्रिकाओं द्वारा उत्तेजित और सक्रिय की जाती हैं; और तंत्रिकाओं की शक्ति की पहुँच, अतिरिक्त संवेदी मन की पहुँच, तुम्हारे लिए अज्ञात और अवास्तविक है। क्या यह सच नहीं है?

"तुम भूल जाते हो कि तुम्हारी इंद्रियाँ इस तरह से व्यवस्थित और सशक्त की गई हैं कि वे चीज़ों को सीमित दायरे में ही ग्रहण और संप्रेषित करती हैं। लेकिन अनंत को केवल अनंत शक्ति के माध्यम से ही अनुभव और समझा जा सकता है।

"तुम इसे समझ सको या न सको; लेकिन यह वहाँ है। जो आध्यात्मिक रूप से निकटदृष्टि (मायोपिक) है, वह संसार का सही दृष्टिकोण नहीं बना सकता। क्या यह तुम्हें आश्चर्यचकित करता है?"

## मधुर अपूर्णताएँ

चीजें एक नई रोशनी में स्पष्ट होने लगीं। भाषा में कुछ झिझक थी; थोड़ा रहस्यमय अंदाज़ था। तर्क की शृंखला और प्रवाह में असंगतियाँ थीं; लेकिन अंतिम विश्लेषण में जो कुछ उसने कहा, वह पूरी तरह से तर्कसंगत लगा। उसकी बातें अधिकतर अनुभवजन्य थीं, सिद्धांत से अधिक प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित थीं।

लेकिन मैंने अपनी सांसारिक जिज्ञासा में पूछना जारी रखा, "भूख का क्या? भोजन की भूख; त्वचा को गर्म रखने के लिए आग की ज़रूरत। बाहरी ऊष्मा के बिना शरीर, एक वस्तु के रूप में, जम जाएगा।"

"लेकिन जैसा कि तुम देख रहे हो, मैं तो नहीं जमा हूँ। मैं तो जीवित हूँ। ये तथ्य हैं। तुम इन्हें तब तक सत्य नहीं मानोगे जब तक मुझ पर निगरानी नहीं रखोगे। लेकिन यह भी जानते हो कि जब तुम किसी पर निगरानी रखना चाहते हो, तो अक्सर वह तुम्हारी आँखों के सामने से गायब हो जाता है। अकेले अंधकार से एक संगति प्रकट होती है। अंधेरे गर्भ में प्रकाश का पोषण होता है। हमारी इंद्रियाँ कितनी कमजोर हैं! हम कितने कमजोर हैं! क्या तुम नहीं देख पा रहे?"

वह जानकार मुस्कान के साथ मुस्कुराने लगा। स्पष्ट था कि वह इस वार्तालाप का आनंद ले रहा था। (अनुभवी जानता है कि यह ठीक वही संकेत है जब एक साधक को आभास होता है कि गुरु न केवल उससे प्रसन्न हैं, बल्कि उसे ज्ञान से आशीर्वाद देने वाले हैं।)

"क्या हम सब कुछ देख पाते हैं?", उसने गंभीर स्वर में बात शुरू की। "हम नहीं देख पाते। क्या हम सब कुछ देख सकते हैं? हाँ, हम देख सकते हैं। लेकिन हम देखते नहीं हैं। क्यों? क्योंकि हम ब्रह्मांडीय चेतना से दूर हैं। लेकिन सच तो यह है कि हम उसी में हैं, उसी के हैं; यदि हम ऐसा महसूस करें।

"इसलिए, ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिए जिसे शरीर सहन न कर सके। शरीर एक रहस्यमयी शक्ति का रहस्यमयी भंडार है; केवल उस शक्ति के स्रोत को खोजना और उसे सक्रिय करना आवश्यक है। लेकिन जीवन में हो क्या रहा है? न तो हम उस शक्ति स्रोत को पहचानते हैं और न ही उसे सक्रिय रूप से उपयोग में लाते हैं। सवाल ही नहीं उठता।

"इसलिए, कृपया अविश्वास मत करो। व्यक्तिगत विश्वास या अविश्वास केवल हमारी अपनी सीमाओं को दर्शाते हैं। हमारा तर्क, हमारी विचार-प्रणाली, हमारे गणित केवल सीमित दिन-प्रतिदिन के उपयोग के लिए हैं। हैं ना? हमें इसके आगे बढ़ना बहुत कठिन लगता है। तर्क, जैसा कि हम इसे जानते हैं, हमारी समझ को बंधक बनाए रखता है।

"लेकिन हमारे भीतर सुप्त शक्ति महान है, अपार है; वही ब्रह्म है जिसे हम पहचानते हैं... हाँ, मैं कई दिनों तक बिना भोजन के रहता हूँ। तो क्या हुआ? कभी-कभी ऐसा करना पड़ता है। क्योंकि..."

अधीरता से मैंने उसे बीच में ही रोकते हुए पूछा, "तुमने आखिरी बार कब भोजन किया था?"

"भोजन? मुझे नहीं पता कि तुम भोजन किसे कहते हो। एक के लिए जो भोजन है, वह दूसरे के लिए भोजन नहीं है। शरीर को जीवित रहने के लिए आवश्यक ऊर्जा और शक्ति संग्रहीत करने के कुछ निश्चित स्रोत ही होते हैं। इन्हें भोजन कहा जाता है, जब इन्हें मुँह के द्वारा शरीर में लिया जाता है। यह हमारी ज़रूरत है। लेकिन मुँह ऊर्जा को शरीर में प्रवेश कराने का एकमात्र मार्ग नहीं है।

"वह जो शरीर को ऊर्जा, शक्ति, और जीवन प्रदान करता है, उसे भोजन कहा जाता है, जब उसे मुँह के माध्यम से शरीर में लिया जाता है। लेकिन हमारी त्वचा, हमारे बाल, हमारी तंत्रिका प्रणाली, यहाँ तक कि हमारे विचार भी सीधे उस स्रोत से ऊर्जा और जीवन को अवशोषित करते हैं, जो सभी ऊर्जा और जीवन का स्रोत है..."

# अनेक स्तनों वाली माता

"और वह क्या है?" मैंने थोड़ी उलझन और समझौते के भाव से पूछा।

"प्रकृति; वही जिसे हम स्नेहपूर्वक माता कहते हैं। जीवन और जीवों के लिए अधिक तकनीकी होने की आवश्यकता नहीं है। जीवन के लिए कुछ अपूर्णताओं को स्वीकार करना और कठोर तथ्यों को मधुर बनाना उपयोगी होता है। तथ्य शुष्क होते हैं, जबकि सत्य जीवनदायी होते हैं। तथ्य बोझिल होते हैं; लगभग मृतप्राय, जैसे सीसा। लेकिन सत्य जीवंत होते हैं।

"तुमने साहित्य का अध्ययन किया है, है ना? तुम्हें पता है कि महान सत्य सदैव जीवित रहते हैं। ऋषियों और ज्ञानी पुरुषों ने जानबूझकर मिथकों, परीकथाओं, महाकाव्यों को तथ्यों की दृष्टि से 'त्रुटिपूर्ण' भाषा में लिखा। मानो उनके लिए तथ्य कोई मायने नहीं रखते थे। जैसे कि उन्होंने तथ्यों को तुच्छ समझा हो।

"हम इस अस्पष्ट और अपरिभाषित शक्ति को 'प्रकृति' क्यों कहते हैं? क्यों? 'माँ' कहना कितना आसान है। 'माँ प्रकृति' कितनी आत्मीयता से भरी है। मुझे पता है कि यह 'तथ्यात्मक रूप से गलत' है। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन तथ्य हैं। $H_2O$ एक तथ्य है। यह अधिक सटीक है। सटीकता एक निर्जीव देवता है, जिसे विज्ञान पूजता है। लेकिन 'माँ गंगा', 'पिता तिबर', 'माँ मरियम', 'पिता हिमालय' उन भूखी आत्माओं के लिए अधिक सार्थक और महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जो इस शरीर के बंधनों में कैद हैं।

"यहाँ तक कि मन और स्मृति के कुछ नियम भी बताते हैं कि संबंधों और जुड़ावों से स्मृति को सहायता मिलती है। इन सुंदर और मधुर अपूर्णताओं में, जीवन की कठोर वास्तविकताओं को सहने के लिए एक उत्साह छिपा होता है, जो हमें जीवित रहने में सहायता करता है। तथ्य बढ़ते रहते हैं, जब तक कि उनके बोझ तले हम कुचल न जाएँ। सीखे हुए तथ्यों के बोझ तले अस्तित्व का वास्तविक अर्थ दब जाता है।

"प्रकृति, हमारी माता, प्रसूति भी है, जो जीवन को जन्म देती है। यह उस रहस्यमय प्रेम का स्रोत है जिसे हम 'शक्ति पीठ' के रूप में चित्रित करते हैं। त्रिकोण मण्डल, 'ह्रीं-क्लीं-ऐं' जैसे ध्वनि रूप हमेशा हमारे साथ होते हैं, हमें जीवन का पोषण देने के लिए। हम उसी माता के स्तनों से जुड़े रहते हैं और उससे सौ रूपों में, फलों, अनाजों, जल आदि के रूप में अमृत पान करते हैं। वह हजारों स्तनों वाली माता है, जो अपने समस्त शरीर में पोषण बाँटती है। केवल हम उसे देख नहीं पाते। हम नेत्रहीन बने रहते हैं। हमने नेत्रहीन बने रहने को ही चुना है।

"प्राचीनों ने इस सिद्धांत को समझाने के लिए एक देवी की प्रतिमा बनाई थी। लेकिन हम असंवेदनशील और अज्ञानी बने रहे; और हम प्यासे ही रह गए, जबकि जिस स्थान पर हम खड़े हैं, उसके नीचे ही जल का स्रोत है। इससे मुझे ऑस्ट्रेलिया में घटी एक घटना की याद आ रही है...."

"अब और क्या?", मैंने सोचा। "यह आदमी कौन है? यह क्या है? अब ऑस्ट्रेलिया की बात कहाँ से आ गई?" मैं सुनता रहा... बस सुनता रहा....

"यह घटना विशाल रेगिस्तानों में हुई थी," उसने जारी रखा। "एक समूह पूर्वी फ़िट्ज़राल्ड नदी और मैकडॉनेल झील के बीच के सूखे क्षेत्र में फँस गया था। यह सूखी घाटी थी और फँसे हुए लोग पानी के अभाव में थकावट से टूट चुके थे। अंततः उन्होंने मरुभूमि में मरने की आशा कर ली थी। वे अपनी राह खो चुके थे, और इसके साथ ही बचने की उम्मीद भी।

"उसी समय उन्हें एक ऑस्ट्रेलियाई घुमंतू लड़के ने देखा, जो भोजन की तलाश में घूम रहा था। उस समूह की स्थिति देख कर उसने तुरंत कार्रवाई की। उसने रेगिस्तान के एक झाड़ से लंबा और कठोर तना निकाला और उसे पाइप की तरह बनाकर रेत में धंसा दिया। जब तना लगभग तीन फीट गहरा धंस गया, तो उसने उससे पानी चूसा।

"उसके मुँह में पानी भर गया, और उसने बाकी लोगों से भी पानी पीने के लिए कहा।

"हम सभी जीवन के मरुस्थलों में चलते हैं। जीवनदायिनी धारा हमारे चारों ओर और नीचे बह रही है। हम प्राकृतिक घुमंतू नहीं बन पाते, और न ही प्रकृति के संकेतों को पढ़ पाते हैं। मैं कई दिनों तक बिना भोजन के रहा हूँ; हाँ; लेकिन मुझे कभी भूख नहीं लगी।

"और जब तुम उस अनुभव की बात करते हो, हाँ, वह क्या है? वह अनुभव क्या है? योग क्या है? क्या वह अनुभवों पर नियंत्रण नहीं है? (योग: चित्तवृत्ति निरोधः - पतंजलि) नींद शरीर को विश्राम देती है। शरीर को विश्राम कब चाहिए? जब वह थक जाए। योगी को अनुभव करने का अधिकार नहीं है, जैसा कि मैंने पहले कहा था; तो उसे थकान कैसे महसूस हो?

"कृष्ण ने अपने घोड़ों को दौड़ाया; और समय आने पर उन्हें आराम दिया, ताकि वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। हमें भी अपने शरीर को विश्राम देना होता है। लेकिन सोने के बजाय, हम समाधि में लीन हो जाते हैं। पतंजलि कहते हैं कि योगी महीनों तक सो सकता है क्योंकि उसे शरीर में नींद की आवश्यकता नहीं होती।

"क्यों? तुम्हारी नसें तब सो जाती हैं जब तुम सही आसन में होते हो। यह तुम स्वयं अनुभव कर चुके हो, है ना? लेकिन फिर भी तुम अपने 'विपरीत स्वरूप' की खोज करते हो, अपने 'विपरीत' की आवश्यकता महसूस करते हो। क्यों? स्वयं बनो।"

मैं उसे देखता रहा। बस देखता रहा। अचानक एक उन्मत्त प्रसन्नता की लहर में, मैंने उसे वह सारी सामग्री भेंट कर दी जो मैंने इतनी सावधानी से देवता को चढ़ाने के लिए साथ लाई थी।

मैंने उससे पूछा कि जब मैं वापस जाऊँगा तो उसे सभ्य दुनिया से क्या भेज सकता हूँ (मुझे पता था कि दो हफ्तों में एक दल उस तीर्थ के लिए रवाना होने वाला था), तो उसने मुस्कुराते हुए कहा, "थोड़ी हवा, थोड़ा प्रकाश, थोड़ी धरती, थोड़ा आकाश और थोड़ी आग।"

मैंने उसकी पहेली को समझा, मुस्कुराया और उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारे लिए सूखी लकड़ियाँ भेज दूँगा, जिससे तुम आग जला सको। लेकिन भोजन का क्या?"

उसने भेंटस्वरूप मिली सामग्री को उठाते हुए कहा, "यह अगले तीन महीनों के लिए पर्याप्त है।"

## अप्रत्याशित विपत्ति

चौथी घटना भी, पिछली दो घटनाओं की तरह, हिमालय में घटी—उस रहस्यमय भूभाग में, जो प्राचीन काल से ही पूर्व के महान रहस्यवादियों का आश्रय स्थल रहा है, और जहाँ आज भी आध्यात्मिक खोज में लगे लोग तीर्थयात्रा के लिए आते हैं।

वर्ष था 1952। स्थान था तिब्बत, कश्मीर और चीनी घाटी के पास का क्षेत्र। यह स्थान निकटतम बस अड्डे, नारकंडा, से पैदल सात दिन की यात्रा पर था। पूरा क्षेत्र महायान तंत्र प्रणाली और मातृ देवी की पूजा के लिए प्रसिद्ध था। रास्ते के हर मोड़ पर सफेद ध्वज के साथ एक टीला था, जिस पर चारों दिशाओं में एकल नेत्र चित्रित था, जो सब पर दृष्टि रखता था।

मैं एक विशेष मिशन पर था और मेरे साथ कुछ युवक भी थे, जो मेरी सहायता कर रहे थे। प्रशासनिक अधिकारियों ने हमें सख्त हिदायत दी थी कि हम गाँवों से दूर रहें, विशेषकर वहाँ की लड़कियों से। लेकिन, जैसे युवाओं को गलती करने का विशेषाधिकार होता है, वैसे ही उनमें से दो ने यह गलती कर दी। लंबी अवधि तक निर्जन जंगलों में रहना, जहाँ चारों ओर दस मील तक केवल विशाल देवदार के पेड़ और उससे परे बर्फ की चोटियाँ थीं, उनके शहरी संवेदनशील मन को विचलित कर गया। वे प्रतिदिन पानी की खोज में जाते थे और उसे दूर से लाते थे। लेकिन एक दिन वे वापस नहीं आए।

मैं इतना आत्ममग्न था कि मैंने उनकी अनुपस्थिति पर तब तक ध्यान नहीं दिया, जब तक कि 30 घंटे नहीं बीत गए और शिविर के एक सहायक ने चिंतित होकर मुझे यह बात नहीं बताई।

थोड़ी और जाँच-पड़ताल, थोड़ी प्रतीक्षा, और दो पर्वतीय फेरीवालों की कुछ चर्चाओं से मुझे संदेह हुआ कि शायद उन्हें स्थानीय जनजातियों ने बंदी बना लिया है, क्योंकि उन्होंने उनके जीवन के अनुशासन में हस्तक्षेप किया था और (यह और भी खतरनाक था) उनकी लड़कियों को रिझाने की कोशिश की थी।

उन सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों में इससे अधिक गंभीर अपराध और कुछ नहीं हो सकता था। पूरा क्षेत्र एक महिला आकृति के आध्यात्मिक प्रभाव में जीता था, जिसे वहाँ के सभी लोग 'माँ' के रूप में पूजते थे। वह उनके लिए जीवित देवी थीं। और इसी पौराणिक हस्ती की महिमा ने मुझे भी उस भयानक स्थान पर लंबे समय तक बाँधे रखा था।

कुछ जानकारी लेकर मैं अकेले ही उस गाँव की ओर चल पड़ा, जो एक ठंडी घाटी में आधे दिन की पैदल यात्रा पर था। उस घाटी में दिन के मध्य को छोड़कर शायद ही कभी सूर्य की किरणें पहुँचती थीं।

हाथ में एक छड़ी लेकर, मैंने देवदार के पेड़ों से ढकी फिसलन भरी पहाड़ी पर उतरना शुरू किया, जहाँ ताज़ी और सूखी पत्तियाँ बिछी थीं। शाम के चार बजे के आसपास, मैं एक भव्य और गगनभेदी जलप्रपात के पास पहुँचा, जो विशाल शिलाखंडों से ढका हुआ था। ये शिलाखंड पर्वतों से गिरकर यहाँ आए थे और एक उग्र धारा के बीच अडिग खड़े थे। मुझे इन चट्टानों को बहुत सावधानी से पार करना था।

मेरे सामने एकमात्र मार्ग था, लेकिन उन चिकनी चट्टानों पर पैर फिसलने का मतलब था कम से कम बीस फीट नीचे गिरना, जहाँ बर्फीली धारा पूरी शक्ति से प्रपात के रूप में गिर रही थी। आधा मील आगे एक मोड़ था, और उस मोड़ के बाद एक स्वर्गिक घाटी दिखाई दी, जिसके ऊपर पंद्रह हजार फीट से भी ऊँची बर्फीली चोटी छाया कर रही थी।

पश्चिमी क्षितिज पर घाटी के उस पार देवदार के जंगलों की पृष्ठभूमि में अस्त होते सूर्य की सुनहरी किरणें बिखरी हुई थीं। पूरी बर्फीली चोटी सुनहरे ताँबे और सोने के रंग से नहाई हुई प्रतीत हो रही थी। ऐसी आश्चर्यजनक सुंदरता केवल महान हिमालय ही प्रकट कर सकते हैं।

और फिर वह घाटी... मीलों और मीलों तक, जहाँ तक नजरें जाती थीं, ऊँचे देवदारों की शाखाओं से लेकर गहरी घाटियों तक, बृहत गुलाब की लताओं ने एक मादक आनंद फैला रखा था। मधुमक्खियों की गुनगुनाहट, बयार की सरसराहट, देवदारों की साँसों की ध्वनि और गुलाबों की मादक खुशबू ने इंद्रियों को मोह लिया था।

ऐसी स्वर्गीय अनुभूति के विपरीत, मेरा मन उन दो साथियों के भाग्य को लेकर भारी था, जिन्हें स्थानीय जनजातियों ने उनके अनुचित व्यवहार के कारण बंदी बना लिया था। तथाकथित सभ्य लोगों का यह अहंकारपूर्ण अपराध हमेशा से रहा है कि वे इन प्रकृति के बच्चों को पिछड़ा और संगठित देखभाल के अयोग्य समझते हैं। वे उनकी दयालुता और आतिथ्य का अनुचित लाभ उठाते हैं।

मैं अत्यंत निराशा के साथ गाँव पहुँचा। वहाँ केवल एक अपंग बूढ़ा व्यक्ति था, जिसे पीछे छोड़ दिया गया था। पूरा गाँव किसी वार्षिक मेले में भाग लेने के लिए निकल गया था, जो वहाँ से तीन मील की दूरी पर था। लेकिन 'माँ' की गुफा वहाँ से और एक मील दूर थी, जो मेले के मैदान से लगभग तीन-चार सौ फीट ऊपर स्थित थी।

रास्ता खोजने में कोई कठिनाई नहीं हुई। जब मैं गुफा के पास पहुँचा, तो लाल कपड़े पहने, बड़े बाल और लंबी दाढ़ी वाले एक व्यक्ति ने मेरा नाम लेकर स्वागत किया और मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि 'माँ' ने मेरे शीघ्र आगमन की अपेक्षा की थी।

गुफा के प्रवेश द्वार से उसकी विशालता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता था, जो अंदर जाने पर तीन मिनट तक झुककर रेंगने के बाद ही महसूस हुई। फिर एक और संकीर्ण मार्ग था, लेकिन उसमें सीधा चला जा सकता था। अंततः एक विशाल कक्ष सामने आया, जिसकी सीमाएँ कई मशालों और धधकती अग्निकुंड की मंद रोशनी में धुंधली-सी दिखाई दे रही थीं।

छत से टपकती बूंदों के कारण फर्श नम था और एक कोने में एक नियमित धारा बह रही थी। उस धारा की मंद गुनगुनाहट और धधकती अग्नि की आवाज ने वातावरण को रहस्यमय बना दिया था।

## माताजी

जिन्हें 'माताजी' कहा जाता था, वह धधकती आग के पार एकमात्र आसन पर विराजमान थीं। मेरा लंबा साथी एक मिनट में ही गहरे अंधकार में गायब हो गया। मैंने देखा कि वह एक गद्देदार आसन पर बैठी थीं, जो बाघ की खाल से ढका था। उनके शरीर पर मालाओं का ढेर लिपटा हुआ था। उनकी कमर के चारों ओर एक लाल कपड़ा लापरवाही से लिपटा था। मैं तुरंत समझ गया कि उन्होंने कुछ नहीं पहना था, क्योंकि परशुराम या दत्तात्रेय-नाथ संप्रदाय की भैरवियाँ कभी वस्त्र धारण नहीं करतीं।

"मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी," उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ अत्यंत मोहक, मधुर, सशक्त और विचलित कर देने वाली थी। "तुम्हें पता नहीं चला; आज अमावस्या की चौदहवीं रात है, और कल का सूर्य बिना चाँद वाली रात के अंधकार में डूबेगा। क्या ही अद्भुत दिन है, उस युवा साधक से मिलने का जिसने वीरा (वीर) आसनों में निपुणता प्राप्त की है। लेकिन तुम छोटी-छोटी बातों से विचलित हो जाते हो, जीवन की ऐसी तुच्छ बातों से जिनका कोई महत्व नहीं है। तुम लड़कों के लिए आए हो। तुम उन्हें थोड़ी देर में देखोगे। शांत हो जाओ। एक पेय ग्रहण करो। वहाँ हिरण की खाल पर बैठो। तुम्हारे लिए सब कुछ पहले से ही तैयार है। मैं चाहती थी कि तुम यहाँ आओ। ओह, मैं कितनी प्रसन्न हूँ। पास आओ।"

वह अपार सौंदर्य से संपन्न थीं; एक अनुपम, सुगढ़ मूर्ति जैसी, और स्वास्थ्य से चमकती हुई। भैरवियों की आयु का अनुमान लगाना सदैव कठिन होता है, लेकिन एक स्त्री के रूप में वह अपने चरम पर थीं (महादेवीं महाघोराम मुक्तकेशिं दिगंबराम)।

# दो का मिलन

मुझे उनके सामने, लेकिन अग्निकुंड के पार, एक आसन पर बैठने का इशारा किया गया। मैं अभी भी उस प्रबल उपस्थिति से विस्मित था। जैसे ही मैं बैठा, मेरे रीढ़ में एक कंपन दौड़ गया, जो अभिषिक्त चक्र (पीठ चक्र) से जुड़ा होता है। मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के पेय ग्रहण किया। मेरी सारी थकान मिट गई। उस स्थान का वातावरण, उनकी स्वागत करने वाली आवाज़, वहाँ की सुगंध, और सबसे बढ़कर उस पवित्र पीठ का आध्यात्मिक स्पंदन मुझे एक परिचित लय में बहा ले गया।

अद्भुत है कि आध्यात्मिक साधना में सीखी गई बातें जीवन की उथल-पुथल से दूर रहने पर भी स्वर्ण जैसी ताज़ा बनी रहती हैं। मुझे गीता के साहसिक वाक्य याद आए: "कुछ भी बाधित नहीं होता, कुछ भी नष्ट नहीं होता" (नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते)। मैंने अपने आप को संभाला और वाराणसी के चतुःषष्टि योगिनी मंदिर और केसरिया वस्त्रधारी महिला को याद किया। अब भागने का कोई मार्ग नहीं था। जैसे गहराई में डूबते समय पत्थर सीधे तल तक जाता है, वैसे ही मेरा चेतन मन शांति, स्थिरता और आनंद के अनुभव में विलीन हो गया। यही 'वह' था।

उन्होंने मुझसे अपना दायाँ हाथ खोलने को कहा। जब मैंने ज्वालाओं से बचते हुए उनका हाथ पकड़ने की कोशिश की, तो उन्होंने अपना दायाँ हाथ सीधे ज्वालाओं के बीच से निकालकर मेरी ओर बढ़ाया, मानो आग का कोई अस्तित्व ही न हो। मेरी हथेली को उनके हाथ की पकड़ ने थाम लिया। ज्वालाएँ मेरी फैली हुई भुजा के चारों ओर लहराने लगीं। मैंने देखा; ज्वालाएँ फुफकार रहीं थीं और नृत्य कर रही थीं; लेकिन न तो एक बाल झुलसा और न ही आग की गर्मी का कोई अहसास हुआ। मुझे वाराणसी के जंगमा मठ में हुए अग्निप्रवेश की याद आ गई।

उन्होंने मेरी हथेली पर मक्खन में घुले हुए सिंदूर से चित्र बनाया और मुझसे उस पर नज़र डालने को कहा। जैसे ही मैंने देखा, मेरी हथेली पर, मानो किसी टीवी पर छवि उभर रही हो, मेरे दोनों भटके हुए मित्र एक कमरे के कोने में दुबके हुए दिखाई दिए, जिसकी दीवारें लाल रंग से रंगी थीं। इससे पहले कि मैं नज़रें हटा पाता, उनके शरीर विकृत होकर गलने लगे, जैसे कुष्ठ रोग ने उन्हें भयानक रूप से जकड़ लिया हो। उनके मांस पर कीड़े रेंग रहे थे; और मक्खियों के झुंड उन पर मंडरा रहे थे। मैंने पीड़ा और भय से चीख मारी और आँखें बंद कर लीं। करुणा से मेरा हृदय फट पड़ा और मैं रो पड़ा। "माँ, उनकी सहायता करो!" मैंने चिल्लाकर कहा, "उनकी सहायता करो!"

दृष्टि समाप्त हो गई। मैंने पाया कि माताजी मुस्कुराते हुए मेरी ओर एक टक देख रही थीं।

"उन्हें यह जानना आवश्यक है कि वे क्या हैं," उन्होंने कहा। "उन्हें यह समझना चाहिए कि वे क्या बनेंगे। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि जीवन उन लोगों के लिए आनंद है जो इसे आनंदमय बनाते हैं, लेकिन यह उनके लिए नरक है जो इसे दुष्ट बनाते हैं।"

"पुत्र, आनंद प्राप्त करने का कोई शॉर्टकट नहीं है। आनंद, ठीक स्वर्ग की तरह, कमाना पड़ता है; और एक बार कमा लेने के बाद, उसे सावधानी से संजोकर रखना पड़ता है। चिंता मत करो। मेरे पास आओ। दो को एक में मिल जाने दो, बल्कि एक से भी कम, शून्य में। तुम्हारे शिविर में लौटने से पहले वे अपना रास्ता खोज लेंगे। लेकिन तुम हमेशा इस अनुभव की तलाश में थे, है ना? इसलिए तुम्हें यह अनुभव मिलेगा। समय आ गया है... आओ।"

उन्होंने मेरे सिर पर जल छिड़का और चारों ओर चावल बिखेर दिए।

उन्होंने मुझे अपने दिव्य सान्निध्य का आशीर्वाद दिया और मुझे उच्चतम आध्यात्मिक अनुभव के दिव्य आनंद के रात्रिकालीन उत्सव में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्रदान किया।

मैं वहाँ पचास घंटे से भी अधिक समय तक रहा। जब मैं वापस लौटा, तो मैंने महसूस किया कि मेरी भौहों के बीच का स्थान, जहाँ संत जितेन्द्र ने मणि रखी थी, स्पंदित हो रहा था। उन्होंने मुझसे कहा था कि जब भी मैं वाम तंत्र की शक्ति के मार्ग पर चलना चाहूँगा, मुझे सत्विक साधिका की कमी नहीं होगी।

वास्तव में, मुझे इसकी कभी कमी नहीं हुई। उन्होंने अपने वचनों को सच साबित किया। मैं इस सत्र के विवरणों को साझा करने में संकोच इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे आदेश दिया है कि उन रहस्यों को उजागर न करूँ। यही रहस्य साधना की परंपरा है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी गोपनीयता में बनी रहती है।

## जलती हुई आँखें

कंबोडिया में, महान अंकोर मंदिरों के पास, एक जर्जर और जंगली छोटे मंदिर में, जहाँ कभी कोई नहीं जाता और जो उत्सुक पर्यटकों का ध्यान भी नहीं खींचता, मैंने एक कंकाल जैसी आकृति देखी। उसकी आँखें धँसी हुई थीं, स्तन लटक रहे थे, और वह माला के रूप में मनकों और सांपों से लदी हुई थी। वह अपनी काली, भूखी आँखों के गहराई से जलती हुई पुतलियों से मुझे घूर रही थी। उस समय मैं बेहद बीमार था। इतना बीमार कि ठीक से बातचीत भी नहीं कर सकता था। मैं केवल इतना कर सका कि उसके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए पास के खंडहरों में उगे जंगली आक (कैलोट्रोपिस जाइगैंटिया) के कुछ फूल तोड़कर उसे अर्पित कर दूँ (और मैं तो उसकी ओर खिंचकर उसके निकट जाने और उसे गले लगाने के लिए तरस रहा था)।

फिर उसी शाम, एक और मंदिर में, जहाँ मुझे उपचार के लिए ले जाया गया था और जहाँ एक प्रार्थना हो रही थी, मैंने फिर से उस भूतिया आकृति को देखा; लेकिन इस बार वह मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी। मेरी गहन हैरानी के लिए, मुझे नहीं पता क्यों, मुझे हिमालय की महान माताजी की याद आ गई। मैं हैरान था कि वह वहाँ कैसे पहुँच गईं। लेकिन अब मुझे विभिन्न स्थानों पर एक ही व्यक्ति को देखना आश्चर्यचकित नहीं करता। यदि आप चाहें, तो मुझे एक पागल इंसान समझ सकते हैं जो अपनी ही समझ में उलझा हुआ है। लेकिन फिर, कौन है जो खुद को पूरी तरह समझ पाता है?

### फिर से हमारी कथा पर लौटते हैं

हाँ, आनंद का अनुभव करना काशी के कामाख्या मंदिर प्रांगण में एक वास्तविकता बन गया था। नारद वहाँ थे, संत जितेंद्र वहाँ थे, मणिकर्णिका की बूढ़ी काकी वहाँ थीं, और निश्चित रूप से, मेरी केसरिया वस्त्रधारी देवी भी वहाँ थीं। मुझे दीक्षा मिली। मुझे आंतरिक मंडली में प्रवेश मिला, और मुझे उस गोपनीय चक्र में स्वीकार कर लिया गया।

लेकिन वहाँ एक और व्यक्ति भी थी। वह वही थी जिसे संत जितेंद्र ने चुना था। बाद के वर्षों में वह मेरे लिए एक रहस्यमय आकर्षण का विषय बन गई। उसका विकास और पतन मेरे अनुभवों के एक और अध्याय की कहानी है।

# 9. माया और वास्तविकता (**Illusion and Reality)**

## दुनिया से विलग

क्या आपको उस कटहल के पेड़ के नीचे वाले आसन की याद है? भास्कर पुष्कर तालाब के पास योगेश्वरी की अर्धमूर्त आकृति? लंबे समय तक वह वन-आश्रय मेरी ध्यान साधना के लिए सबसे प्रिय स्थान बना रहा। उस शांत तालाब में निर्वस्त्र स्नान करना अत्यंत आनंददायक था; और उसका एकांत मुझे सदा आकर्षित करता था। बालसुलभ चिंताओं के दिनों में, मैं अक्सर उस मूर्ति से 'परामर्श' करता था, और हमेशा ही एक हूटिंग (एक बार 'हाँ' के लिए और दो बार 'न' के लिए) में उत्तर प्राप्त करता था।

एकांत के प्रति मेरा प्रेम (यहाँ तक कि केसरिया वस्त्रधारी देवी से भी दूर रहकर) धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। मुझे घर पर रहना अब असहज लगने लगा था। केसरिया वस्त्रधारी देवी भी अपने ही भीतर सिमटती जा रही थीं। ऐसा लगता था जैसे वह सांसारिक जीवन से थक चुकी हों और उसे और अधिक सहन करना उनके लिए कठिन हो रहा हो।

मुझे अकेलापन महसूस होने लगा था। कटहल के पेड़ के नीचे बिताए लंबे घंटे मुझे वह शांति नहीं दे पा रहे थे जिसकी मुझे तलाश थी।

एक शाम, मैं गंगा के किनारे उदासीन भटकाव में टहल रहा था, और लोगों की भीड़ अपने रास्ते पर बह रही थी। तभी मैंने अपने कंधे पर नारद का स्पर्श महसूस किया। वह मेरे सामने खड़े थे और बड़े आत्मीयता भरी मुस्कान के साथ मुझे देख रहे थे। बिना किसी प्रस्तावना के उन्होंने सीधा विषय पर आकर मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके साथ एक दूरस्थ स्थान पर चलने को तैयार हूँ? क्या मैं इस सब को छोड़कर संन्यासी का जीवन अपनाना चाहता हूँ? क्या मैं वास्तव में शांति की खोज में था?

मैं अत्यधिक उत्साहित हो गया। ऐसा लगा जैसे मेरी बरसों की इच्छा पूरी हो गई हो। मैंने यह नहीं पूछा कि कहाँ, कैसे, या कब जाना है। मैं तैयार था; वह तैयार थे; और हम तुरंत ही वहाँ से निकल पड़े। पीछे मुड़कर देखने का कोई सवाल ही नहीं था।

अचानक वह रुके, मेरी ओर मुड़े और गहरी नजरों से मुझे घूरने लगे। इससे पहले कि मैं समझ पाता कि वह क्या कर रहे हैं, उन्होंने अपना अँगूठा उस बिंदु पर मजबूती से रखा जहाँ संत जितेंद्र ने मणि को दबाया था।

वह एक संवेदनशील बिंदु था; एक विशेष बिंदु, मानो कुछ स्थायी रूप से वहाँ स्थापित हो गया हो। उसके दबाव से मेरी चेतना में एक चमत्कारी लहर दौड़ गई, और मुझे अपार आनंद की तरंगों का अनुभव होने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं स्वयं पर से नियंत्रण खो चुका हूँ और खुशी के सागर में लहरों पर झूम रहा हूँ।

## एक कमरा और मैं

जब मैंने चेतना वापस पाई, तो मैं एक गर्म कमरे में था, जिसे एक ही दीपक से रोशन किया गया था। वहाँ कई लोग भद्रासन में बैठे ध्यान में लीन थे।

मैं अभी इस अनजान स्थान और अचानक हुए स्थानांतरण के झटके से उबर ही रहा था कि मुझे वही परिचित स्पर्श महसूस हुआ; वही परिचित आवाज़ सुनाई दी; और प्रेममय पुरुष की दिव्य मुस्कान ने मुझे आश्वस्त किया। "तुम पहुँच गए", उन्होंने कहा, और आगे बोले, "यहाँ से वापसी का कोई मार्ग नहीं है। अब केवल प्रगति ही है; चलते रहो, बस आगे बढ़ते रहो। क्या भाग्यशाली साधक हो तुम! तुम्हें प्रकाश की वर्षा प्राप्त हो।"

बाहर एक ठंडी हवा तेज़ी से बह रही थी। जगह नई थी, और हवा में पहाड़ों की खुशबू थी। मुझे पहचाना-सा लगा, मानो यह कोई हिमालय का हिस्सा हो। लेकिन ऐसा नहीं था। मुझे विंध्य पर्वत श्रृंखला की तलहटी में लाया गया था, पवित्र चित्रकूट से कुछ ही दूरी पर, जहाँ रामायण के भगवान राम ने अपनी कुटिया बनाई थी और ध्यान किया था। वहाँ मंदाकिनी नदी शांति से बह रही थी।

## सरल रामदासी

रामदासी संप्रदाय हठयोग में निपुण हैं। वे शरीर को भीतर और बाहर से स्वच्छ रखते हैं, और उसे उतनी ही सावधानी से सजाते हैं जैसे कोई अपने प्रिय के शयन स्थल को सजाए। उनके लिए ध्यान में सफलता का अर्थ है भगवान की सबसे अंतरंग सखी और सहयोगी के रूप में सेवा करने का सौभाग्य और क्षमता प्राप्त करना। उन्हें अपने आप को भगवान की संगिनी के रूप में पहचान कर जीना होता है।

मैंने इन संतों के बीच अपने जीवन के कुछ सबसे गहरे दर्शन किए। मैंने उन्हें उच्च आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का व्यक्ति पाया।

आध्यात्मिक भावनात्मकता अत्यधिक गहन अनुभवों का क्षेत्र है। वास्तव में, यह मनुष्य को सबसे अधिक तीव्र, पीड़ादायक, और फिर भी आनंदमय अनुभवों की ओर ले जाता है।

यौन-प्रेरित भावनात्मकता को जीवन में गंभीर संकट और उथल-पुथल का कारण माना जाता है। अधिकांश हत्याएँ, आत्महत्याएँ, मुकदमेबाज़ी और टूटे हुए घर इसी क्षेत्र से उत्पन्न भावनात्मक विकारों के परिणामस्वरूप होते हैं। इसके विपरीत, आध्यात्मिक उन्माद से उत्पन्न अनुभव पूरी तरह से अलग होते हैं।

आध्यात्मिक भावनात्मकता से प्रेरित आत्माएँ जीवन के सभी सुखों को नकार देती हैं; वे पत्नी और बच्चों को छोड़ देती हैं; राजकुमार अपने राज्य छोड़ देते हैं; पिता अपने पुत्रों को छोड़ देते हैं; और पुत्र अपने घर, पिता और माता को छोड़ देते हैं।

कई ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने इस आध्यात्मिक पागलपन में वह खजाना पाया जिसे अन्यथा वे कभी नहीं देख पाते। उन्होंने उस प्रकाश को देखा जो साधारण आँखों से अदृश्य है। उन्होंने उस सत्य को महसूस किया जो शब्दों से परे है।

इस तरह, आध्यात्मिक उन्माद ने न केवल उनके जीवन को रूपांतरित किया, बल्कि मानवता के लिए कला, साहित्य और आध्यात्मिकता के अनमोल खजाने भी प्रदान किए।

## नवद्वीप की राधा

मैंने इन राधा-मत के संतों में से एक से पश्चिम बंगाल के नवद्वीप नामक छोटे से नगर में भेंट की थी। यह नगर श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु, जिन्हें चैतन्य के नाम से भी जाना जाता है, की मधुर स्मृतियों से पवित्र है। चैतन्य महाप्रभु भारत के महानतम प्रेम संतों में से एक थे।

भारत के वैष्णव संप्रदाय उनके प्रेम मार्ग से गहरी आत्मिक शांति पाते हैं, विशेषकर वे जो आसक्ति रहित प्रेम, निष्काम समर्पण और भेदभाव रहित सेवा के कठिन मार्ग को आत्मप्रकाश प्राप्ति का साधन मानते हैं। चैतन्य और उनके मत में प्रेम की आत्मशक्ति और आत्म-त्याग द्वारा प्राप्त परम आध्यात्मिक अवस्था में गहन आस्था थी।

यह संप्रदाय गीत-संगीत के माध्यम से उन लोगों के जीवन में रस घोलते हैं जो सांसारिकता के नशे में डूबे हुए होते हैं। उनका विश्वास है कि "प्रभु-प्रेम" की परम अवस्था, संगीत के माध्यम से समाधि की स्थिति को प्राप्त करके संभव है।

राधा-संप्रदाय के अनुयायियों में और रामदासी वैष्णवों में भी इस जीवन-दर्शन का मूल तत्त्व "स्वयं के भावों का दमन करके जीवन की पूर्णता प्राप्त करना" है।

## अद्भुत 'वह'

नवद्वीप में ही मैंने उस व्यक्ति (जो पुरुष था परंतु 'वह' स्त्री रूप में थी) से भेंट की। 'वह' वास्तव में एक पुरुष थे, लेकिन 'वह' का रूप, हाव-भाव और व्यवहार पूर्णतः स्त्रियोचित था। उनकी आयु अस्सी वर्ष से ऊपर थी, और वह चैतन्य के मन्दिर के आँगन में मुश्किल से चल पाती थीं। वह एक छोटे से कक्ष में निवास करती थीं, जो आँगन के सबसे अंत में था और साधारण दर्शनार्थियों की नजरों से ओझल रहता था।

जब मैंने उनसे संपर्क किया, तो उन्होंने तुरंत घूँघट डाल लिया और मधुर वाणी में मुझसे स्वागत किया। इससे पहले कि मैं कुछ कहता, उन्होंने पूछा, "तुम्हारे पिताजी कैसे हैं? और वह केसरिया वस्त्रधारी देवी 'भुवन' कैसी हैं?" यह सुनकर मैं हैरान रह गया।

"आप मुझे जानती हैं?" मैंने विस्मय से पूछा।

"दूसरों को जानना अपने आप को जानने से कहीं अधिक आसान है। क्या तुम इससे सहमत नहीं हो?" उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। उनकी मुस्कान में एक अद्भुत आकर्षण था, जो बिना शब्दों के ही संवाद करने में सक्षम था। मैं मंत्रमुग्ध हो गया।

उन्होंने मुझे अपने कक्ष में आमंत्रित किया, जो इतना छोटा था कि एक व्यक्ति के बैठने की भी मुश्किल से जगह थी। उन्होंने द्वार बंद कर दिए, और मुझे इशारे से बैठने का संकेत दिया। फिर उन्होंने कहा, "यहाँ तुम्हारे बैठने का स्थान है; और यहाँ तुम्हारे पाँव धोने के लिए जल है।"

जैसे ही मैंने देखा, वहाँ एक आसन, एक जल-पात्र और एक पाँव धोने का कटोरा अचानक प्रकट हो गए। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, उन्होंने मेरे पाँव अपने हाथों में ले लिए और बड़े प्रेम से उन्हें धोया। ऐसा लग रहा था जैसे कोई माँ अपने बच्चे को स्नान करवा रही हो।

पाँव धोते समय वह मधुर स्वर में जयदेव के गीत गोविंद से एक पद गाने लगीं:
"तेरे चरणों को संवारूँ,
उन्हें प्रेम के रंग में रंगूँ,
अब इन्हें मेरे मस्तक पर रख दो, प्रियतम,
तेरा स्पर्श वासना का नाशक है;
तेरे चरण मेरे मस्तक का सुयोग्य मुकुट हैं।"

फिर मेरी ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "तुम असहज हो रहे हो। क्यों? यह अहंकार क्यों? जब यह शरीर तुम्हारा नहीं है, तब इस पर अधिकार का भाव क्यों? यह तो मेरे प्रियतम का निवास स्थान है। क्या यह सच नहीं है?"

जैसे ही मैंने उनकी ओर देखा, मेरी साँस रुक गई। वहाँ मेरे सामने कोई और नहीं बल्कि वही केसरिया वस्त्रधारी देवी उपस्थित थीं! वही भारी सुंदर शरीर, लहराते केश, मनमोहक भुजाएँ, और वही परिचित मुद्रा।

मैं लगभग बेहोश होने को था, लेकिन मेरे मुख से स्वतः ही "माता तारा! माता तारा!" का जाप निकल पड़ा।

"आओ, संकोच मत करो। आओ। तुम्हें शांति और प्रेम मिलेगा।" उन्होंने पुकारा।

यह सत्र छोटा था लेकिन गहरा, इतना गहरा कि उसे शब्दों में वर्णित करना असंभव है। वह मेरी आत्मा में गहराई तक समा गईं, मानो उन्होंने मुझे शाश्वत शांति और आनंद का वरदान दिया हो।

जब हम उस छोटे से कक्ष से बाहर निकले, तब तक अँधेरा छा चुका था; मन्दिर की घंटियाँ संध्याकालीन आरती के लिए बज रही थीं, और धीमी ताल पर मंत्रोच्चार हो रहा था। वह भी उस कोरस में शामिल हो गईं और नृत्य करने लगीं।

काश, मैं उस नृत्य का वर्णन कर पाता! मैंने इसाडोरा डंकन, अन्ना पावलोवा, उदय शंकर और श्रीकृष्ण के रासलीला के नृत्यों के बारे में पढ़ा है। लेकिन उस दिन जो मैंने देखा, वह सभी वर्णनों को परे था।

वह नृत्य इंद्रियों से परे था, फिर भी इंद्रियों को मोहित करने वाला था। ऐसा लग रहा था जैसे वास्तविकता ने किसी अन्य आयाम में प्रवेश कर लिया हो, जहाँ केवल परम चेतना ही विद्यमान हो।

वह वास्तव में एक पुरुष थीं, लेकिन भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण और प्रेम के कारण वह 'वह' बन गई थीं – न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि आध्यात्मिक और सूक्ष्म रूप से भी।

यह अनुभव तर्क की सीमाओं से परे था, फिर भी मेरे लिए सबसे वास्तविक था। वह मेरी चेतना में एक शाश्वत सत्य के रूप में बस गईं।

यही वह स्रोत था, जहाँ से मुझे मेरे एकमात्र 'अल्टर ईगो' का साथ मिला, जिसने लंबे समय तक मेरी संगति की। लेकिन वह संगति भी मेरी अधीरता और अति-उत्साह के कारण खो गई। उनके बारे में और अधिक फिर कभी।

# चूड़ी की खोज

त्रिनिदाद में अपने प्रवास के दौरान, एक दुखी माँ ने मुझसे अपनी अत्यंत सुंदर बेटी के लिए कुछ करने की विनती की, जो धीरे-धीरे मानसिक संतुलन खो रही थी। जब वह मेरे पास लाई गई, तब उसकी उम्र लगभग बीस वर्ष रही होगी। मैंने किसी जादू-टोने के बारे में कुछ नहीं सुना था, और यदि कोई विश्वास-चिकित्सा होती है, तो उसके बारे में भी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। मेरा अपना प्रार्थना करने का तरीका था, जिसमें मैं अपनी आध्यात्मिक चेतना को विषय की भौतिक चेतना (या उसकी कमी) में प्रवेश कराने की कोशिश करता था।

बीते हुए लगभग बीस वर्षों में से उस गरीब लड़की ने लगभग छह वर्ष मानसिक अस्पताल में बिताए थे। उसकी माँ की गहन निराशा को देखकर मैंने उसे अपनी पूरी क्षमता के अनुसार सहायता का वादा किया। लेकिन मैंने उससे कहा कि इसके लिए मुझे भारत जाना होगा, और फिर लौटने पर ही मैं उसे कुछ आशा दे सकूँगा, यदि मुझे कोई उत्तर मिल सका।

उस उत्तर को खोजने के लिए मुझे दिल्ली से कई सौ मील दूर और कोलकाता शहर से लगभग सौ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक मंदिर की यात्रा करनी थी। दूरी कोई मायने नहीं रखती थी, लेकिन वहां तक पहुँचने के साधन अत्यंत आदिम थे, जिनमें दो चौड़े नदियों को बाँस की डंडियों से धकेले जाने वाले देहाती नौकाओं पर पार करना भी शामिल था। वहाँ तक पहुँचने वाला इकलौता कच्चा रास्ता उस समय मरम्मत के लिए खोदा गया था, लेकिन राजनीतिक कारणों से उसका कार्य रोक दिया गया था। उस रास्ते पर सामान्य चलना भी असंभव था, और पहिएदार वाहन का विचार तो एक सपना था।

इस खोज (या 'उपचार') के दौरान, मेरे साथ एक दृढ़ निश्चयी महिला थीं, जिन्हें मैं वर्षों से जानता था। इतनी जोखिम भरी यात्रा पर जाने से उन्हें रोक पाना असंभव था। आखिरी छह मील हमने पैदल ही तय किए, जब सूर्य अस्त होने वाला था। रास्ते में हमें कुछ भी खाने को नहीं मिला; धान के विस्तृत खेतों के बीच से गुज़रते समय हमें न तो कोई बस्ती मिली और न ही कोई इंसान; और बंगाल की तेज़ बारिश ने हमारी दुर्दशा और भी बढ़ा दी थी।

भयंकर भूख और थकावट के साथ हम रात बिताने के लिए किसी आश्रय की खोज में थे, लेकिन तीस मिनट की खोज के बाद हमें यह समझ में आ गया कि हमें मच्छरों से भरे भारी वातावरण में लगभग खुले आकाश के नीचे ही रात गुजारनी होगी। भोजन मिलने की कोई संभावना नहीं थी। आसपास एक भी इंसान नहीं था, सिवाय कुछ बच्चों के, जो कहीं दूर के किसी स्कूल से लौट रहे थे।

एक विशाल तालाब, जो गिरे हुए पत्तों से ढका हुआ था और मच्छरों का प्रजनन स्थल बना हुआ था, उदास शाम के आकाश के नीचे फैला था। और उसी के किनारे एक एकांत मंदिर खड़ा था, जो अत्यंत जर्जर अवस्था में था। यही वह स्थान था, जहाँ मुझे पहुँचना था।

मंदिर के बंद दरवाजे पर ताला लगा हुआ था, लेकिन हमें अंदर देवी काली की एक झलक मिल गई। मैंने तालाब में जाकर जल्दबाजी में स्नान किया। मेरी साथी भी मेरा अनुसरण करना चाहती थी, लेकिन सामाजिक औपचारिकताओं के बंधन ने उसे रोक दिया। अंततः उसने केवल अपने थके हुए पैरों और शरीर के कुछ हिस्सों को ही गीला कर लिया।

रात तेजी से नजदीक आ रही थी, और वहाँ कोई ठहरने योग्य स्थान नहीं था। मंदिर से थोड़ी दूरी पर एक धान कूटने की झोपड़ी थी, जिसमें तीन तरफ मिट्टी की दीवारें थीं। वह खाली पड़ी थी, केवल बिखरे हुए धान के ढेर फर्श पर अस्त-व्यस्त रूप से फैले थे।

हम अब यह मान चुके थे कि रात का भोजन तो छोड़िए, नाश्ता और दोपहर के भोजन के बिना ही हमें रात गुजारनी होगी। मैंने मंदिर के सामने बने एक छोटे से पक्के चबूतरे पर आग जलाने की तैयारी की, ताकि हम रात काट सकें।

मुझे उस स्थान की शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव हो रहा था, जो अत्यंत प्रबल और गहन थी। मैंने उस महिला को उस चबूतरे पर आराम करने की सलाह दी, जबकि मैं साधना और प्रार्थना की तैयारी कर रहा था।

हमारे पास कपड़े बदलने का कोई विकल्प नहीं था। यदि मुझे सुबह अपनी साधना और प्रार्थना अर्पित करनी होती, तो मुझे अपने कपड़े रात में धोकर सुखाने पड़ते, ताकि सुबह उन्हें पहन सकूं। अन्यथा मुझे भीगे कपड़ों में ही पूजा करनी पड़ती, जो मलेरिया प्रभावित क्षेत्र में अत्यंत जोखिम भरा होता।

वह अपने लिए क्या निर्णय लेगी, यह उसकी स्वतंत्रता थी। लेकिन एक बात निश्चित थी—सो कर उठे कपड़ों में प्रार्थना और अर्पण नहीं किया जा सकता था।

## वह आती है, आती है, और सदा आती रहती है

नाटक तब शुरू हुआ जब वह महिला झोपड़ी में आराम करने चली गई। लगभग एक घंटे में सूरज डूबने वाला था, और वह मंदिर, साथ ही चारों ओर फैला अनगढ़ गाँव, जो मीलों तक फैले धान के खेतों से घिरा हुआ था, अंधकार की लहरों में समा जाने वाला था, जिसे अगणित जुगनुओं की चमक और भी गहरा बना रही थी।

मैं अपनी चेतना को अस्तित्वहीनता की सुखद अनुभूति में विलीन करने ही वाला था, तभी मुझे कुछ हल्के पायल की झंकार सुनाई दी, जो नृत्य में माहिर पाँवों से उत्पन्न हुई थीं। उन स्पंदनों ने मुझे बिजली की तरह झकझोर दिया। मैंने अपनी आँखें खोलीं और पूर्व दिशा की ओर देखा।

वहाँ लगभग पंद्रह वर्ष की एक सुंदर कन्या, गोद में स्वस्थ बालक को थामे, लाल साड़ी में सजी-धजी, सिंदूर और सोने के आभूषणों से अलंकृत, मुस्कुराती हुई खड़ी थी। उसकी मुस्कान में एक विचित्र रहस्य और मेरी स्थिति के प्रति एक आंशिक समझ झलक रही थी। उसके दोनों हाथ बच्चे को थामने में व्यस्त थे।

मैंने उसके पाँवों की ओर देखा—वहाँ मिट्टी का कोई निशान नहीं था। वह पश्चिम की ओर मुख करके खड़ी थी, और अस्त होते सूर्य की लालिमा ने उसके खुले बालों को तांबे जैसी दमक दी थी, उसकी आँखें मुस्कान से चमक रही थीं, मानो संप्रेषण के लिए आतुर हों। वह वास्तविक नहीं हो सकती थी... या शायद वही वास्तविकता थी?

वह बिलकुल साधारण गाँव की लड़की की तरह दिख रही थी—जिज्ञासु, उत्सुक, और सहायता के लिए तत्पर। बिना किसी भूमिका के, सहजता से, उसने विशुद्ध ग्रामीण बोली में पूछा, "तुम कब आए? खाने को कुछ साथ लाए हो?"

मैं उसकी बात सुन रहा था, लेकिन मेरी आँखें उसके काले, लंबे, धनुषाकार भौंहों के बीच चमकते सिंदूर के गोल घेरे पर टिकी थीं। 'भौंहें, जैसे काले भृंगों की रेखा', मुझे याद आया।

तभी मेरे मन में एक के बाद एक प्रतीक उभरने लगे—तिब्बती महायान का एक नेत्र, मिस्र का भृंग-सूर्य प्रतीक, डेल्फी का ओमेगा, मिस्र का अंकुश, माया सभ्यता का सर्प, थाईलैंड का वज्र, कंबोडिया का त्रिशूल, शिंतो धर्म का लूप... कितने... कितने सारे...

मैंने अपने आप को सचेत और स्थिर बनाए रखा। मैंने उसे प्रणाम किया और आदरपूर्वक अपना मस्तक भूमि पर टिका दिया।

"अरे! यह क्या अजीब बात है," वह हँसते हुए बोली। "तुम मुझे प्रणाम क्यों कर रहे हो? देखो, वहाँ अंदर देवी बंद हैं। मुझे क्यों प्रणाम कर रहे हो?"

हाँ, कमरे के अंदर, बंद। मुझे यह बहुत अच्छे से पता था... कमल के सहस्रदल की अप्रस्फुटित कलिका में कैद।

"मुझे नहीं पता वह कहाँ हैं," मैंने कहा, "... या कहाँ नहीं हैं। वह वहीं हैं जहाँ कुँवारी कन्या है; वह वहीं हैं जहाँ प्रस्फुटित माता है। कोई भी कन्या, कहीं भी, सम्मान के योग्य है। वह शक्ति है।"

"मैं कुँवारी नहीं हूँ," उसने मुस्कुराते हुए कहा, उसकी मुस्कान में रहस्य की पूरी आभा थी। अस्त होते सूरज की लालिमा ने पूरे पश्चिमी आकाश को रँग दिया था। "देखो, यह मेरा पुत्र है। मैं उसकी माँ हूँ।"

"तो तुम हो। और फिर भी तुम कुँवारी हो। मैं कई कुँवारी माताओं को जानता हूँ। क्या हम सभी—यह आकाश, यह खेत, यह फसल, यह तालाब, यह धरती और यह हवा—क्या हम सभी उसके बच्चे नहीं हैं? वह शाश्वत कुँवारी है। तुम्हें संदेह है? कुँवारी माँ है; और माँ कुँवारी... यही उस शाश्वत सत्य का रहस्य है।"

मैंने आगे की बातों से बचते हुए पूछा, "तुम कौन हो?"

पास-पड़ोस में कोई बस्ती नहीं थी, और उस समय में किसी लड़की का अकेले, वह भी बच्चे के साथ घूमना असंभव था। फिर वह यहाँ कैसे?

"मुझे समझ में नहीं आता तुम क्या कह रहे हो। मैं इसी गाँव की हूँ। यहीं की हूँ। यह मेरा बेटा गणेश है और मैं पहाड़ियों में अपने पति के घर से आई हूँ। लेकिन यह सब तो वैसे ही है। असल बात यह है कि तुमने पूरे दिन कुछ नहीं खाया। तुम्हें भूख लगी होगी। क्या तुम मुझसे थोड़ा मुरमुरा (लाई) और गुड़ स्वीकार करोगे? यह साधारण भोजन है, लेकिन क्या तुम इसे अस्वीकार करोगे?"

उसकी मोहक मुस्कान ने मेरी जिज्ञासा को और बढ़ा दिया।

मैं कुछ कहता, उससे पहले ही वह झाड़ी के पीछे गई और गायब हो गई। दस मिनट के भीतर ही वह एक टोकरी में मुरमुरा और गुड़ लेकर लौट आई। उसने हमें रात के भोजन का निमंत्रण दिया और समझाया कि झाड़ी के पीछे एक झोपड़ी में लोग हमारा इंतजार कर रहे होंगे। झोपड़ी को खोजना मुश्किल नहीं था; और सबसे अच्छा समय रात के आठ बजे का था।

वह मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही चली गई।

इतने सुनसान और दूरदराज के गाँव में रात के आठ बजे का मतलब था आधी रात। अंधेरे में हमारे कदम डगमगाते हुए झोपड़ी की ओर बढ़े। वहाँ पहुँचने पर एक युवक ने हमारा स्वागत किया और देर से स्वागत करने के लिए माफी माँगी।

मैंने अनायास ही पूछ लिया, "यहाँ ऐसा क्या है जो गाँव को इतना रहस्यमय बना देता है?"

वह समझ गया कि मैं उस विशेष ऊर्जा के बारे में पूछ रहा था, जिसे मैंने गाँव में महसूस किया था।

उसने समझाया, "यह स्थान एक 'जीवित' देवी के संरक्षण में है, जो साधारण मिट्टी से बनी है और समय-समय पर बदल दी जाती है। लेकिन उसकी आत्मा हमेशा उस मूर्ति में रहती है, चाहे वह कितनी भी बार बदली जाए।"

उसकी बात सुनकर मेरी रीढ़ में सिहरन दौड़ गई। मैंने अनुभव किया कि हम किसी साधारण स्थान पर नहीं थे, बल्कि किसी दिव्य ऊर्जा के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे।

## मायावी कन्या

सदियों पहले, जब निचले बंगाल का यह हिस्सा घने जंगलों और झाड़ियों से ढका हुआ था, और यहाँ बाघों का स्वाभाविक निवास स्थान था, एक योगी इस स्थान पर भटकते हुए पहुँचा। उसने इस प्राकृतिक तालाब को पाया, जिसके पास एक बेल का पेड़ था। उसने इसी पेड़ के नीचे अपना आसन जमाया। बाद में, इस आसन को पंचमुंडी (पाँच खोपड़ियों वाला आसन) के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

योगी यहाँ कई वर्षों तक रहा। इसी दौरान, उसे लगभग अठारह वर्ष की एक लड़की के बारे में पता चला, जो अक्सर उसका पीछा करती और उसके लिए खाने-पीने की छोटी-छोटी चीज़ें लाती थी। पहले तो उसने इस पर ध्यान नहीं दिया, जैसे बुद्ध ने सुजाता पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन समय के साथ यह सवाल उसके मन में गहराने लगा कि इस घने जंगल में वह लड़की कैसे दिखाई देती है।

उसने इसका पता लगाने के लिए उसका पीछा करने का फैसला किया। वह तालाब का पूरा चक्कर लगाता, लेकिन हर बार जब वह अपने आसन पर लौटता, तो लड़की गायब हो जाती। उसने कई बार यह कोशिश की, लेकिन वह हमेशा नाकाम रहा। उसने कभी भी उससे बातचीत करने की कोशिश नहीं की, क्योंकि उसका मन दूसरी चीज़ों में लगा था। वह बिना किसी व्यवधान के अपनी तपस्या में लीन रहा, लेकिन आसपास के लोग उसके व्यवहार को समझ नहीं पाए।

धीरे-धीरे लोगों को लगने लगा कि वह अपना मानसिक संतुलन खो रहा है। वे उसे रातों में जोर-जोर से चिल्लाते हुए सुनते। उसकी भयंकर चीखें जंगल में गूँजतीं, जिससे रात के पक्षी और गीदड़ भी घबरा जाते। वह चिल्लाता, "तुम कितनी दूर भागोगी? कब तक, हे मायावी मोहक? किसी दिन मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, हे स्वार्थी धोखेबाज, आकर्षक वास्तविकता!"

मैंने उत्सुकतावश पूछा, "लेकिन वहाँ लोग थे ही कहाँ, अगर यह घना जंगल था?"

उत्तर मिला, "बाघ तो यहाँ थे ही, पर उनके साथ कुछ मानव बाघ भी थे—ठग, लुटेरे और काली के उपासक। ये लोग समाज से दूर एकांत की तलाश में रहते थे।"

संभवतः उन्होंने भी उस लड़की को देखा होगा। शायद उनकी जिज्ञासा ने उन्हें भी परेशान किया होगा, क्योंकि वे लड़की का रहस्य नहीं सुलझा सके। एक दिन उन्होंने योगी को पकड़ लिया और लड़की के बारे में पूछा। योगी ने उन्हें असंगत उत्तर दिए। उनके नशे और अधीरता ने उन्हें क्रोधित कर दिया, और उन्होंने उसे पीटना शुरू कर दिया। वे उसे मारकर माँ काली को अर्पित करना चाहते थे।

अजीब बात यह थी कि योगी ने बिना प्रतिरोध किए उनकी इच्छा को स्वीकार कर लिया। लेकिन उसने एक अंतिम अनुरोध किया—उसके शरीर को उसी आसन के नीचे दफना दिया जाए, जहाँ वह साधना करता था। उसने कहा कि जब वे जमीन खोदेंगे, तो उन्हें कुछ और चीज़ें मिलेंगी, जिन्हें उन्हें हिलाना नहीं चाहिए। साथ ही, उन्हें उस बेल के पेड़ को काटकर मिट्टी से उसकी एक मूर्ति बनानी चाहिए। इसके बाद, योगी ने अपने प्राण त्याग दिए।

जब उन्होंने कब्र खोदी, तो उन्हें वहाँ कई जानवरों के कंकाल और मानव हड्डियाँ मिलीं। उन्हें तुरंत एहसास हुआ कि उन्होंने एक सिद्ध योगी को परेशान किया था, जिसके पास उन्हें सरीसृप या कीड़ा बनाने की शक्ति थी। भयभीत होकर उन्होंने उसके निर्देशों का पालन किया और उसे उसकी गद्दी के नीचे दफनाया।

कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। योगी के आशीर्वाद के कारण, वह रहस्यमय लड़की आज भी इस स्थान पर प्रकट होती है, जब तक कि यह स्थान किसी जघन्य अपराध से अपवित्र न कर दिया जाए।

मैंने पूछा, "जैसे क्या? यह दुनिया तो अपराधों से भरी है।"

"ऐसे अपराध भी होते हैं, जो कानून की किताबों में नहीं लिखे होते, लेकिन वे आत्मा को अंतहीन यातनाओं में झोंक सकते हैं—लालच, ईर्ष्या, द्वेष, वासना, निर्दयता... बहुत सारे हैं।"

मैंने फिर पूछा, "क्या वह लड़की अभी भी दिखाई देती है?"

"कुछ लोग उसे देखने का दावा करते हैं। मैं यहाँ से दूर नहीं रहता, लेकिन मैंने उसे कभी नहीं देखा।"

मैंने टिप्पणी की, "हम वही देखते हैं, जो देखना चाहते हैं। क्या तुम वास्तव में उसे देखने के लिए लालायित थे?"

"शायद।" उसने लापरवाही से उत्तर दिया और सिगरेट जलाई।

उसने आगे बताया, "वह कभी अकेली दिखती है, और कभी-कभी उसके साथ एक लड़का भी होता है। लेकिन मैंने कभी नहीं देखा। फिर भी, लोग कहते हैं कि वह यहाँ की है। कार्तिकी अमावस्या की रात को यहाँ भीड़ इकट्ठा होती है, उसे देखने के लिए।"

मैंने पूछा, "क्या तुम विश्वास करते हो?"

उसने हँसते हुए कहा, "मुझे विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन लोगों की कहानियाँ हैं, और ये कहानियाँ ही उन्हें यहाँ खींच लाती हैं।"

यह कहानी एक भ्रम की तरह थी, जो वास्तविकता और रहस्य के बीच झूलती रही। क्या वह लड़की सच में थी, या केवल कल्पना का एक अंश?

क्या योगी ने सच में उसे देखा था, या वह उसकी ध्यानावस्था का परिणाम थी?

इस जगह के रहस्यमय आकर्षण ने मुझे कई सवालों में उलझा दिया, जिनका जवाब आज तक अनसुलझा है।

# क्षीरभवानी

कश्मीर की उल्लार झील के किनारे स्थित क्षीरभवानी के पवित्र मंदिर में ध्यान करते समय मुझे भी ऐसा ही गहन अनुभव हुआ था। जब मैं आँखें बंद करके प्रार्थना में लीन था, तो मैंने असंख्य स्वरों को मेरे साथ गाते हुए सुना। ऐसा लगा मानो पूरी सृष्टि मेरे साथ साधना में डूबी हो।

ध्यान के सत्र के अंत में, जब मैंने आँखें खोलीं, तो मैं चकित रह गया। मैं खुद को पहचानते हुए भी अपरिचित महसूस कर रहा था, मानो मैं अपने ही भीतर कहीं और पहुँच गया था। समय और स्थान का बोध मिट गया था।

ध्यान के दौरान, एक क्षण ऐसा आया जब मुझे पानी छूने की इच्छा हुई। मैंने कोई पानी साथ नहीं रखा था, क्योंकि कोई बर्तन उपलब्ध नहीं था। लेकिन लंबे अभ्यास के कारण, प्रतिवर्त से मेरा हाथ स्वतः पानी की ओर बढ़ गया।

कल्पना कीजिए, मेरा आश्चर्य जब मैंने वास्तव में पानी को छू लिया। चौंककर मैंने आँखें खोलीं।

मेरे सामने, सीमेंट के फर्श पर कटोरे जैसी ढलान में पानी था—स्वच्छ, निर्मल और शीतल।

मैं हैरान था—यह पानी कहाँ से आया?

क्या यह एक चमत्कार था?

या मेरी साधना का प्रतिफल?

यह अनोखा अनुभव मेरे ध्यान की गहराई और क्षीरभवानी की दिव्यता का साक्षी था।

यह साक्षात्कार था अज्ञात के साथ, अलौकिक के साथ।

## प्रकाश का उदय

गुंजती हुई सामूहिक मंत्र ध्वनि मुझे विचलित नहीं कर रही थी, लेकिन जब मैंने देखा कि महिला घास के ढेर से हटकर मेरे पास बैठी है और मंत्रों का उच्चारण कर रही है, तो मेरा मन डगमगाने लगा। मैंने खुद को संभाला और फिर से ध्यान में लीन हो गया। चारों ओर गहन सन्नाटा था, एक पत्ता तक नहीं हिला।

सुबह के करीब दो बजे, मुझे अपने पास एक और महिला के होने का आभास हुआ। उसके साथ एक मादक अलौकिक सुगंध भी फैल रही थी। यह सुगंध इतनी प्रबल थी कि मेरा गला सूख गया, त्वचा गर्म हो गई, और शरीर पसीने से भीग गया। फिर भी, मैं हिला नहीं। अचानक, मुझे एक पेय पेश किया गया।

"एक घूंट लो," आवाज़ मेरे साथी की थी, लेकिन भाषा बंगाली थी, जो वह नहीं जानती थी। मैं चौंका, पर मना नहीं किया। मैंने अपना आसन-शुद्धि, भूत-शुद्धि और दिग्बंध जारी रखा और फिर प्रार्थना का पाठ शुरू किया:

"पंचशाल-लिपिभि-र-विभक्त मुखदो-

पणमध्य वाक्षस्थलम
वासवनमौली निवद्ध चन्द्र-शकलम
आपीन तुंग स्तनिम्
मुद्रामाक्षगुणं सुधाध्या कलासम
विद्याम च हस्ताम्बुजै-र
विभ्रानं विशद प्रभाम त्रि-नयनम
वाग् देवताम आश्रये"

(जिस देवी की मैं शरण चाहता हूँ, उसके पचास मुख हैं, जो पचास अक्षरों में विभाजित हैं। उसके दृढ़ स्तन उसके हृदय को ढँकते हैं। उसके शिखर पर अर्धचंद्र बँधा हुआ है; और उसके हाथों में अमरता का घड़ा, एक पुस्तक, एक मुद्रा और एक कमंद है। वह अपनी प्रभा चारों ओर फैलाती है।)

मैंने मातृका न्यास को दृढ़तापूर्वक जारी रखा। तब मुझे अपने सामने एक स्पष्ट दृश्य दिखा—माँ का रूप, जिसे मैं जानता था—भगवाधारी महिला। उसी क्षण प्रकाश फूटा और भोर की पहली किरणें स्वागत में बिखर गईं।

मैं एक ऊर्जा की धारा में बह गया, जो बिजली की तरह रोमांचित कर रही थी और प्रकाश की लहरों में तैरने जैसा लग रही थी। यह अनुभव बेहद सुखद था—गहन, शीतल और शांति से भरा हुआ। मेरे चारों ओर एक मधुर संगीत गूंजने लगा, और ऐसा लगा जैसे मैं सुगंधित फूलों के बगीचे में तैर रहा हूँ।

जंगल जाग गया था। सुबह के पक्षी चहचहाने लगे और हल्की हवा बहने लगी। मैं अनायास चिल्लाया, "तारा! तारा!" लेकिन वहाँ कोई नहीं था। आग बुझ चुकी थी।

मैं तालाब की ओर गई, लेकिन मेरी साथी का कहीं अता-पता नहीं था। उसे ढूँढने के लिए मैं झोपड़ी में गई, जहाँ वह घास के ढेर में गहरी नींद में मिली। मेरे आते ही वह जाग गई और बाहर आने का अनुरोध करने लगी।

मैं उलझन में थी। अगर वह घास के ढेर में सुरक्षित सो रही थी, तो मेरे पास कौन बैठा था? मैं साक्ष्य ढूँढने के लिए उस स्थान पर गई जहाँ मैंने साधना की थी। वहाँ की राख ठंडी हो चुकी थी। मैंने माथे पर राख लगाई और मंदिर की ओर भागी।

मंदिर में जाकर देवता को देखने के बाद मुझे एक तीव्र एहसास हुआ—मैं उनके आलिंगन के लिए लालायित थी, उनकी शरारतों से क्रोधित थी, लेकिन फिर भी उनसे दूर नहीं हो पा रही थी।

मैंने फिर से ध्यान लगाना शुरू किया, ताकि अपने भीतर की उथल-पुथल से मुक्त हो सकूँ। तीन घंटों तक प्रार्थनाएँ करने के बाद, मेरी साथी भी मेरे पास आकर थोड़ी दूरी पर श्रद्धा से बैठ गई।

तभी वातावरण में एक अजीब बदलाव आया। एक पुजारी प्रकट हुआ और उसने अपनी प्रार्थनाएँ कीं। इसके बाद हमें वह कंगन मिला जिसके लिए हम आए थे—एक लोहे का कंगन, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह मन को शांत करता है।

वहाँ से लौटने पर मुझे एहसास हुआ कि मैं उस रहस्यमय लड़की-प्रेत को फिर से देखना चाहती थी। मैं उसके आकर्षण को फिर से अनुभव करने के लिए लालायित थी।

उस लालसा ने मुझे इतना व्याकुल कर दिया कि मैं फूट-फूट कर रोने लगी। मेरी साथी हैरान थी, लेकिन मैंने उसे अपनी पीड़ा बताई—आत्मा की वह पीड़ा, जो परमानंद को समझने की लालसा रखती है।

फिर से उसका आना

## फिर वही... वह

मैं लगातार बोल रहा था; लेकिन मैं जानता था कि मेरी बातें उसके लिए कोई मायने नहीं रख रही थीं। मेरी स्थिति देखकर वह चिंतित हो उठी। क्या त्रिनिदाद में किसी विक्षिप्त लड़की के इलाज की खोज में मैं स्वयं विक्षिप्त हो गया था? पुरोहित ने चेताया तो था (क्या नहीं?), कि इस प्रकार की मानसिक स्थिति किसी अनिष्ट की पूर्वसूचना देती है। तब मुझे उसकी बात की सच्चाई का भान न था, लेकिन अब...। खैर, यह सब कहना अत्यधिक व्यक्तिगत हो जाएगा, इसलिए इसे यहीं छोड़ देना ही बेहतर है।

भूखी, थकी और अपनी सहनशक्ति की अंतिम सीमा तक पहुंच चुकी मेरी नाज़ुक संगिनी इस सबसे बाहर निकलना चाहती थी। मुझे विश्वास है कि वह डर गई थी—विशेषकर मेरी बदली हुई दशा से। विक्षिप्त साथी के साथ लंबी यात्रा की कल्पना मात्र से ही वह घबराई हुई थी। वह भाग जाना चाहती थी, पर कैसे?

उसी समय एक बैलगाड़ी दिखाई दी, और वह गाड़ीवान से मोल-भाव करने लगी, उसे आश्वासन दिया कि वह उसे मनचाहा दाम देगी। जब हम गांव छोड़ने ही वाले थे, तभी पगडंडी पर एक वृद्धा टोकरी लिए खड़ी दिखी। उसने लाई और गुड़ के दो टुकड़े लाए थे। उसने बताया कि एक छोटी लड़की ने उसे ये मंदिर में रुके अजनबियों तक पहुँचाने को कहा था। चूंकि हम लौट ही रहे थे, तो इसे अपने साथ ले जाना बेहतर था।
"रास्ता लंबा है, बहुत लंबा," उसने कहा।
"वह लड़की कहाँ है?" मैंने पूछा। मेरी आकुल जिज्ञासा से वह स्तब्ध रह गई।
"वह कौन है? तुम उसे जानते हो?" मैंने उतावली में कहा, "जाओ और उसे मेरे पास ले आओ, ज़रूरत पड़े तो गर्दन पकड़कर घसीट लाओ! मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

वृद्धा विस्मय से मुझे देखने लगी। "मैं तो समझी थी कि तुमने ही उसे भेजा था," उसने भर्राए स्वर में कहा, लेकिन उसकी आँखें अब भी गाड़ी में किसी को खोज रही थीं।
"काली! काली!" उसने आगे कहा, "उसने तो मुझे चंद सिक्के भी दिए थे, ताकि मैं लाई बैलगाड़ी में पहुँचा दूँ... मैं खुद भी उसे दोबारा देखने के लिए उत्सुक थी। बड़ी सुंदर लड़की थी—काली! काली!" और वह किसी भूली-बिसरी लोकगाथा की प्रतिध्वनि में झुक गई, जबकि मैं किसी बच्चे की भाँति फूट-फूटकर रोने लगा।

गाड़ीवान ने गाड़ी हांक दी। बैल गंभीरता से कदम बढ़ाने लगे। मेरी संगिनी ने अपनी साड़ी का पल्लू फैलाकर वह प्रसाद स्वीकार कर लिया। गाड़ी ने एक जोरदार झटका दिया और सूरज की रोशनी में नहाई पगडंडी पर आगे बढ़ चली।

तभी मेरी नज़र उस छोटी सी झोपड़ी पर पड़ी, जहाँ से वृद्धा आई थी। मैं उसे वापस जाते हुए देख सकता था। लेकिन मैंने यह भी देखा—एक सुंदर लड़की, झोपड़ी के द्वार पर खड़ी, धूप में नहाई हुई, खिलखिलाती हुई मुस्कुरा रही थी!

मैंने घबराकर अपनी संगिनी से कहा, "देखो! वहाँ... वहाँ! झोपड़ी के द्वार पर!" उसने मेरी ओर चिंतित दृष्टि से देखा और कहा, "यह भूख और प्यास के कारण हो रहा है। तुम भ्रमित हो रहे हो।" और उसने मुझे कसकर पकड़ लिया, क्योंकि मैं गाड़ी से कूदकर उस मायावी छवि तक पहुँचने ही वाला था।

गाड़ी रास्ते से आगे बढ़ गई। नहीं, मेरी संगिनी ने कोई लड़की नहीं देखी थी। और न ही उसने पूरी रात कभी खलिहान छोड़ा था!

उस अविश्वसनीय घटना का एकमात्र प्रमाण मेरी संगिनी के साड़ी के छोर में बंधा हुआ वह प्रसाद था। हमने चुपचाप उसे चबाया, जब तक कि मैं बैलगाड़ी की झटकों के बीच, खजूर की चटाइयों पर बिछे नरम भूसे की मखमली गद्दी पर सो न गया।

गाड़ी से उतरते समय मैंने देखा कि मेरी संगिनी अब भी अपने साड़ी के छोर में लाई को संभाले हुए थी। "ये जादुई दाने हैं," उसने कहा। मैं उसकी ओर चुपचाप देखता रह गया।

लेकिन जब हम नाव से नदी पार कर रहे थे, तभी वह फिसलकर नदी में गिर पड़ी! किसी तरह हमने उसे बचा लिया, लेकिन लाई, गुड़, राख—सब कुछ, सिर्फ़ सिंदूर की रक्तवर्ण बूंदों को छोड़कर, नदी में समा गया।

हम पूरी तरह भीग चुके थे। केवल मेरी डायरी बची थी—मेरी उस रात की एकमात्र निशानी। एक ऐसी रात, जिसे मैंने पूरी तरह अकेले जिया था... और फिर भी, शायद उतना अकेला नहीं था।

मेरी आँखें अब भी नदी की सतह पर बहते जल पर टिकी थीं। कुछ ही पलों में, वह लाई का एक भी दाना पानी की सतह पर दिखाई नहीं दिया। वे सदा के लिए लुप्त हो चुके थे।

## पहाड़ी तीर्थ

मैं उत्तर-पूर्व भारत के सबसे शक्तिशाली मंदिरों में से एक, कामाख्या के पर्वतीय मंदिर में गया हूँ (यह वाराणसी के मंदिर से भिन्न है, जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है)। यह मंदिर एक त्रिकोणीय शक्ति-चिह्न पर निर्मित है। वहाँ कोई मूर्ति नहीं है, न ही किसी देवी-देवता का कोई विशिष्ट रूप। वास्तविक मंदिर धरती के गर्भ में स्थित है। यह भूमिगत मंदिर कुछ और नहीं, बल्कि हिमालयी पर्वत-श्रेणी की चट्टानों से निकला एक प्राकृतिक जलस्रोत है।

किंवदंती के अनुसार, भगवान शिव की पत्नी ने अपने पिता द्वारा आयोजित एक यज्ञ में आत्मबलि दे दी थी। दरअसल, उसने स्वयं को अग्निकुंड में समर्पित कर दिया था, अपने पिता की शिवविरोधी मानसिकता के विरोधस्वरूप। इस दुखद घटना के बाद, शिव अपनी मृत पत्नी के शरीर को कंधे पर उठाए पागल-से भटकते रहे। अंततः, भगवान विष्णु ने, उन्हें सामान्य स्थिति में लाने के लिए, उनके कंधे पर पड़े शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। जहाँ-जहाँ सती के अंग गिरे, वहाँ शक्ति पीठ स्थापित हुए, जो तांत्रिक अनुयायियों के लिए परम पवित्र स्थल बन गए। ऐसी मान्यता है कि इन मंदिरों की पवित्रता सती के अंगों के पतन से सिद्ध हुई। इन पावन स्थलों में कामाख्या को सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त है, क्योंकि यहाँ उनका योनि-अंश गिरा था। यही कारण है कि यहाँ एक चट्टान से प्रवाहित झरना अनवरत बहता है। श्रद्धालु अपनी हथेलियों को इस छोटे से जलस्रोत में डुबोते हैं और चट्टान की उस गर्म दरार को छूकर उसकी दिव्यता का अनुभव करते हैं।

विश्वभर में, विशेष रूप से पर्वतीय जनजातियों में, झरनों, गुफाओं, खाइयों और भूमिगत जलधाराओं के प्रति गहन श्रद्धा देखने को मिलती है। भारत के इस उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में, द्रविड़-मंगोल जनजातियों का प्रभाव अत्यधिक रहा है, जिन्होंने तिब्बत, इंडो-चीन और चीन के महायान तंत्र परंपरा में विशेष योगदान दिया। यहाँ स्त्री-तत्व को उच्च स्थान प्राप्त है। परंतु कामाख्या अन्य शक्ति पीठों से भिन्न है, जैसे डेल्फी यूनान में अद्वितीय था। यहाँ तांत्रिक समुदाय वर्षा ऋतु के आगमन पर एकत्र होते हैं।

मई-जून की भीषण गर्मी के बाद, वर्षा ऋतु की शुरुआत से पहले, यहाँ तीन दिवसीय उत्सव मनाया जाता है। इस समय देवी को मासिक धर्म हो रहा होता है, जिसे उनकी शाश्वत पवित्रता और प्रजनन-शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इस काल को पवित्र मानते हुए, विशेष अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं, और किसान भूमि जोतने के सभी उपकरणों को छूते तक नहीं। इन दिनों में यौन संबंध पूर्णतः वर्जित होते हैं।

रक्त को यहाँ सफल प्रार्थनाओं का प्रतीक माना जाता है। देवी के रक्त में भीगे वस्त्र-खंड भक्तों को आशीर्वादस्वरूप प्रदान किए जाते हैं। इस अवधि में मंदिर के द्वार बंद रहते हैं, और विशेष अनुष्ठान लगातार चार दिन और तीन रातों तक किए जाते हैं। तंत्र-विद्या के महान साधक यहाँ एकत्र होते हैं और अपनी साधनाएँ संपन्न करते हैं।

कामाख्या तांत्रिकों और महायान अनुयायियों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रतिष्ठित है, क्योंकि यह महात्रिकोण की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। यही वह स्थान है जहाँ महायोनि और महामुद्रा की उपस्थिति अनुभव की जाती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है।

मैं यहाँ 'कन्या पूजन' संपन्न कराने आया था, जो पर्वतीय परंपराओं के अनुसार किया जाता है। परंतु इससे मुझे संतोष नहीं मिला। अगली बार जब मैं यहाँ आया, तो मैं अकेला था, सिवाय एक विदेशी पर्यटक के, जो संयोगवश उस समय मेरे साथ था। लेकिन उसकी उपस्थिति मुझे परेशान नहीं कर रही थी, क्योंकि वह स्वयं को जनजातीय संगीत, मंदिरों के भजन और उन भारतीय सन्यासियों में व्यस्त रखे हुए था, जिन्हें कुछ लोग साधु, कुछ पागल, और कुछ ठग मानते थे। इस प्रकार, मैं पूरी तरह अपने आप में था।

मंदिर प्रायः आधी रात के बाद बंद हो जाता है, जब अंतिम आरती संपन्न हो चुकी होती है। उस समय एक प्राचीन मंत्र का स्मरण होते ही मैंने गाना शुरू कर दिया। वहाँ उपस्थित लोग चौंक गए, क्योंकि गर्भगृह में ऐसे गीत स्वीकार्य नहीं होते। परंतु ये मंत्र संस्कृत तंत्र ग्रंथों से उद्धृत थे, इसलिए कोई टोक नहीं सका, यहाँ तक कि ज्ञानी पुजारी भी मौन ही रहा।

मंत्रों के उच्चारण ने मुझे एक गहरे ध्यान में पहुँचा दिया, जहाँ मैं स्वयं को भूल चुका था। जब मैं चेतना में लौटा, तो मंदिर पूर्ण अंधकार में डूबा हुआ था। वहाँ इतनी निस्तब्धता थी कि मानो उसे छूकर महसूस किया जा सकता था।

मैं बाहर निकला तो प्रांगण चंद्रमा के प्रकाश से नहा रहा था। पर्यटक साथी को खोजने गया, वह अब भी कुछ साधुओं से बातचीत में लीन था। परंतु मेरी आत्मा की प्यास अब भी अधूरी थी।

मुझे मंदिर परिसर में पूरी रात ध्यान करने की इच्छा हुई, जो प्रतिबंधित माना जाता था। किंतु कुछ दुर्लभ अवसरों पर, कुछ उन्मत्त भक्त इस रहस्यमय प्रांगण में रात बिताने का साहस करते थे। मैंने अकेले ही रातभर ध्यान करने का निश्चय किया।

अगली सुबह मेरी स्थिति विचित्र थी। किसी अदृश्य आकर्षण ने मुझे भीतर तक जकड़ लिया था। मैं धीरे-धीरे उसी दिशा में बढ़ता गया, यहाँ तक कि मैं भुवनेश्वरी पर्वत पर चढ़ने लगा। शिखर से ब्रह्मपुत्र का विशाल परिदृश्य मेरे सामने खुल गया। वहाँ पहुँचकर एक अलौकिक अनुभूति हुई।

रात्रि में, जब मेरा साथी अपने कक्ष में बंद था, मैं पुनः मंदिर प्रांगण में था। हल्की बूंदाबांदी हो रही थी, बादल गरज रहे थे, और बिजली चमकते ही अंधकार और भी गहरा हो जाता था। अचानक मेरे शरीर में सिहरन होने लगी, मानो कोई ज्वर चढ़ रहा हो। मुझे ऊष्मा की आवश्यकता थी, परंतु घना अंधकार और मेरी मनःस्थिति मुझे किसी ठोस उपाय तक नहीं पहुँचा रहे थे।

मैं मंदिर के द्वार तक पहुँचना चाहता था, परंतु बार-बार उसे चूक जाता। अंततः, जब मुझे एक जलती हुई आग दिखाई दी, तो मैं वहीं बैठ गया और ध्यान में लीन हो गया।

जब मैंने आँखें खोलीं, तो मैंने अपने सामने एक जोड़े को खड़ा पाया—दोनों स्पष्ट रूप से कापालिक संप्रदाय के साधक थे। महिला, जो सशक्त और सुडौल थी, मुझे पकड़कर नदी की ओर ले गई, जहाँ एक नाव प्रतीक्षा कर रही थी।

रात्रि के उस प्रहर में उमानंद भैरव द्वीप की ओर प्रस्थान वर्जित था, क्योंकि वहाँ के जल-प्रवाह अत्यंत खतरनाक थे। फिर भी, नाव आगे बढ़ती गई।

तभी, अचानक काले कौओं का एक झुंड चीखता हुआ हमारी ओर झपटा। वह महिला क्रोधित होकर असमिया भाषा में कुछ बोली, और वे कौए तुरंत लुप्त हो गए।

इसके पश्चात जो हुआ, वह मेरे लिए अविस्मरणीय था। वह स्त्री मेरे निकट आई और बोली—"आश्रय लो। मुझ पर विश्वास करो। मैं तुम्हारे साथ हूँ, और सदा रहूँगी।"

रहस्यमयी नदी के प्रवाह में, उस तांत्रिक स्त्री के साथ, मैं मौन रूप से आगे बढ़ता रहा।

जब हम द्वीप पहुँचे, तो मैंने अपने चारों ओर प्राचीन तांत्रिक मंत्रों की गूंज सुनी—

*"ॐ यं लिंग शरीरं शोषय शोषय स्वाहा..."*

मुझे ज्ञात था कि यह एक महत्त्वपूर्ण संकट की घड़ी थी...

## एक पेय

मंत्रों का जप अनवरत जारी था। संगीत लयबद्ध गति से बह रहा था। लेकिन पूरे समय मुझे उस केसरिया वस्त्रधारी देवी की जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दे रही थी, जिसने मुझे जीवनभर आध्यात्मिक चेतना में बनाए रखा। कहीं से वह जप रही थी।
रात के लगभग दो बजे होंगे, जब अचानक एक मातृसुलभ स्वर फुसफुसाया, "पियो"।
लेकिन वर्षों की साधना के कारण मेरी आँखें बंद रहीं; मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मैंने सुना, पर अनसुना किया।

किन्तु कोई मुझे मजबूती से अपनी ओर खींच रहा था और ज़ोर देकर कह रहा था, "पियो! मुझसे पियो। डर मत। पियो!" मेरा चेहरा कोमल और मुलायम चीज़ से सटा था, और मैं पी रहा था। लेकिन कोई पात्र नहीं था, कोई कठोर किनारा मेरे होठों से नहीं टकराया। फिर भी, मैं पिए जा रहा था। हाँ, मैं सच में पी रहा था।

फिर वास्तविकता मुझ पर प्रकट हुई। मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपने सूखे होठों को मानव शरीर से लगा रखा था, और दूध पीते शिशु की तरह स्तन से अमृतपान कर रहा था।
मैंने हृदय की गहराई से पिया। एक बार जब मैंने पान करना शुरू किया, तो रुकने का कोई सवाल ही नहीं था। (पर मैं यह सोचकर चकित था, इतनी प्रचुर मात्रा में यह अमृत कैसे मिल रहा है?)
कोमल मांसल स्पर्श और मीठे पेय का स्वाद मेरी रीढ़ की हड्डी में सुरक्षा और सांत्वना की लहरें दौड़ा रहा था, जैसे 'अतीत के भूले हुए दिनों' की स्मृतियाँ लौट आई हों।

इस अवस्था में, अचानक मेरे भ्रूमध्य (आज्ञाचक्र) में गुदगुदी महसूस हुई। संत जितेन्द्र द्वारा दिया गया केंद्र सक्रिय हो गया। तुरंत ही मुझे सुरक्षा और सहायता का आभास हुआ। मैंने मजबूती और शक्ति महसूस की। मैं बेतहाशा पान करता रहा, और उस कोमल स्रोत को अपने दोनों हाथों से कसकर थामे रहा।

हर रात का अंत होता है। प्रभात होने पर मेरी चेतना लौटी। मैंने खुद को नदी के किनारे एक वृक्ष के नीचे अकेला पाया। शीतल हवा मेरे तप्त मस्तक को सहला रही थी।
लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मैं पूर्णतः अकेला था।
मैंने प्रभात-स्नान किया, और अकेले ही स्नान-संध्या संपन्न की।

तभी मैंने उस दंपत्ति को स्नान करते हुए देखा। पुरुष तुरंत मेरे पास आया और कर्कश स्वर में पूछने लगा, "तुम इतने समय तक कहाँ थे? तुम कैसे बच निकले? आख़िर वो मंत्र कौन से थे जो तुम जप रहे थे? वे महान मंत्र थे! ओ माँ! मैं उस मंत्र-चक्र से बाहर नहीं निकल पाया!"

स्त्री ने मुस्कुराते हुए कहा,
"तुमने एक अच्छा अवसर खो दिया। मैंने सोचा था कि तुम मेरी सहायता से और भी ऊँचाई प्राप्त करोगे। लेकिन तुम सच में धन्य हो। वो कौन थी? इतनी शक्ति कहाँ से लाई? ओ, कितने भाग्यशाली हो तुम। माँ तुम्हें आशीर्वाद दें।"

मैंने शांत स्वर में उत्तर दिया,
"वह मेरी अपनी है, हमेशा मेरी रही है। मैं उसी का हूँ।"

वे मुझे आश्चर्य से देखते रहे। मैं जल्दी से फेरी पर चढ़ गया।
ब्रह्मपुत्र को पार करते समय, मैंने वह गान गाया, जो केसरिया वस्त्रधारी देवी ने मुझे सिखाया था।
पर मेरा मन उदास था। वह इतनी निकट आई, फिर भी मुझसे मिलने का संकेत नहीं दिया, जैसा कि वह सालों पहले किया करती थी।

मैंने जाना कि प्रकृति और शक्ति के इस रहस्यमय संसार में स्त्री तत्व कितना महान और अपरिहार्य है। यह अनुभव मेरे जीवन की सबसे गहन आध्यात्मिक घटनाओं में से एक था, जिसने मेरे अस्तित्व को झकझोर कर रख दिया।

## रहस्यमय दबाव

लेकिन तभी भीतर गहराई में एक अभिव्यक्तिपूर्ण स्रोत गूंजने लगा। यह था संत जितेन्द्र द्वारा दिए गए मोती का दबाव। उस समय मुझे यह बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि यह विशिष्ट दबाव मेरे जीवन में किस प्रकार से प्रभाव डालेगा। यह आज भी प्राणायाम के गहन सत्रों में उसी परिचित स्पंदन के साथ झनझनाहट पैदा करता है। लेकिन जब भी मैं भ्रमित होता हूँ, असुरक्षा की गहरी खाई में गिरने को होता हूँ, तो यह झनझनाहट अचानक एक गूंजती हुई चेतावनी के रूप में प्रकट होती है, और मैं बच जाता हूँ।

यह भ्रूमध्य (आज्ञाचक्र) की गुदगुदी मुझे अब भी सतर्क करती है।
यह अचेतन रूप से सक्रिय हो जाती है, विशेषकर तब, जब कोई व्यक्ति आवेश में आकर मुझे झूठे आरोप लगाकर आहत करने की कोशिश करता है।
ऐसे क्षणों में, मैं उस व्यक्ति के लिए दुखी हो जाता हूँ और मन ही मन प्रार्थना करता हूँ कि उसे किसी प्रकार की हानि ना हो।
मैं यहाँ तक गिड़गिड़ाता हूँ, "कृपया इन अनुचित अपमानों को रोक दो... मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो। कृपया शांत हो जाओ।"
लेकिन मुझे अनसुना कर दिया जाता है, और उसका भारी मूल्य उन्हें चुकाना पड़ता है।

आज तक मैं इस भ्रूमध्य-प्रतिक्रिया से विचलित रहता हूँ, और हमेशा इसके प्रभाव से डरता हूँ।
मुझे चिंतन करना पड़ता है कि योगियों के लिए अपनी शक्तियों को कमज़ोर प्राणियों के साथ संबंधित करने का उद्देश्य क्या है?
संदेश कैसे काम करता है?
मैंने इसके बारे में पूर्वी और पश्चिमी दोनों व्याख्याएँ पढ़ी हैं, लेकिन पश्चिमी तर्क मुझे भ्रामक और शब्द-जाल जैसे लगे।

## तर्क और स्वप्न

तर्क की दुनिया स्वयं में शब्दों और उनके संयोजन का एक ऐसा जंगल है, जो मस्तिष्क को बौद्धिक व्यायाम के खेल में तो व्यस्त रखता है, लेकिन हृदय और संवेदनशील आत्मा को उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने से दूर कर देता है। अपनी सभी अनिश्चितताओं के बावजूद, यदि जीवन भावनाओं के प्रसाद से वंचित हो जाए, तो वह एक बंजर भूमि बन जाता है—कांटों से भरा हुआ, लेकिन बिना किसी पुष्प के। दुख, पीड़ा, आनंद और सुख—ये सब अनुभूतियों की अवस्थाएँ हैं, और यही जीवन को सार्थक या निरर्थक बनाती हैं। यदि मनुष्य केवल तर्क और कारण द्वारा प्रदत्त खाद्य पदार्थों पर ही जीवित रह सकता, तो यह जीवन सही रूप से जिया जा सकता था। लेकिन जीवन में कुछ ऐसी अनुकंपाएँ भी हैं, जो अज्ञात और दिव्य रहस्यों से उपजी हैं—जीव मात्र के प्रति प्रेम, प्रकृति की सौंदर्यता, संगीत में आनन्द, खुले समुद्र पर उगते सूरज का वैभव, खिड़की पर आकर चहकता कोई पक्षी—ये छोटी-छोटी मधुर अनुभूतियाँ हमारे आँसुओं को गीतों में बदल देती हैं, हमारी पीड़ा को सहानुभूति में परिवर्तित कर देती हैं। क्या हम इस दिव्य आनंद के भोज को केवल इसलिए त्याग देंगे क्योंकि हम इन अनुभवों को तर्कसंगत रूप से विश्लेषित नहीं कर सकते?

आधुनिक मनोवैज्ञानिक अक्सर इन घटनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करते हैं। कभी-कभी वे उल्टे तरीके से मन को स्थिर करने की चेष्टा करते हैं। लेकिन जीवन केवल विक्षोभ के कुछ टुकड़ों से निर्मित नहीं, यह राजनीतिक अर्थशास्त्र से

कहीं अधिक उदात्त और कंप्यूटरों से अधिक कुशल है। प्रकृति में सूखा और बाढ़ आते हैं, लेकिन इससे उसकी शाश्वत सौंदर्य-गरिमा प्रभावित नहीं होती। ज्वालामुखी विस्फोट, विनाशकारी बाढ़, भयावह भूकंप—ये सभी अपनी गंभीर भव्यता के साथ प्रकट होते हैं, और अंततः पीड़ा की एक लकीर छोड़कर लुप्त हो जाते हैं। फिर भी सौंदर्य स्थिर रहता है। प्रकृति अपनी रहस्यमयी आकर्षण शक्ति के साथ शाश्वत रूप से विद्यमान रहती है। सूरज उगेगा; भोर अपनी मुस्कान बिखेरेगी; पक्षी चहचहाएँगे, और हर सूर्योदय व सूर्यास्त पर आल्प्स की हिममंडित चोटियाँ सुनहरी हो जाएँगी। प्रकृति अपने काले बादलों और रक्तरंजित पंजों के बावजूद सुंदर बनी रहती है।

प्रकृति और उसकी सुंदरता, जीवन और उसकी भव्यता—ये कभी समाप्त नहीं हुए थे और न ही कभी होंगे। लेकिन इन समस्त दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के मूल में मनुष्य की निष्ठुरता, परस्पर संवेदनहीनता, और उस परम अनुकंपा के प्रति उसकी उदासीनता है, जो सम्पूर्ण सृष्टि को अपने संरक्षण में रखती है। यहाँ तक कि एक भूखा व्यक्ति भी स्वप्न देखता है। वह रोटी का स्वप्न देख सकता है, और यह स्वप्न उसे क्षणिक प्रसन्नता देता है। फिर भी, यह आनंद उसका अपना होता है, और वह इसे साकार करने का प्रयास करता है।

स्वप्न हमें निराशा के द्वार तक ले जा सकते हैं, लेकिन स्वप्नहीन जीवन उपलब्धिहीन जीवन होता है। महानता एक ऐसे शिखर पर स्थापित होती है, जो मूल रूप से स्वप्नों को साकार करने की प्रक्रिया से निर्मित होता है। स्वप्न एक अन्य आयाम में आशा है; स्वप्न, स्मृतियों से उपजी वह भावना है जो परावर्तित वास्तविकताओं की दुनिया में आकार लेती है। मूल तथ्य यही है कि जीवन तभी अर्थपूर्ण होता है जब उसमें भावनात्मकता जुड़ी हो। एक भावनात्मक संवाद से सहानुभूति, प्रेम और त्याग जन्म लेते हैं। इन प्रतिक्रियाओं के बिना जीवन केवल एक जटिल जैविक यंत्र बनकर रह जाता है, जो कुछ निश्चित भौतिक नियमों के अनुसार संचालित होता है।

लेकिन हम सभी यह जानते हैं कि जीवन मात्र एक यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। तर्क और विवेक केवल किसी विशेष परिस्थिति की व्याख्या करने के मानसिक उपकरण हैं। तर्क की शक्ति विश्लेषण कर सकती है, निष्कर्ष निकाल सकती है, भविष्यवाणी कर सकती है, और कई प्रकार से व्यवस्था स्थापित कर सकती है। लेकिन मनुष्य का व्यक्तित्व, जो सुख या दुःख का अनुभव करता है, इन उपकरणों के सहारे नहीं जी सकता—बल्कि उसे इन्हीं भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के लिए जीना पड़ता है।

## तांत्रिक मार्ग

योगी समभाव की स्थिति की बात करते हैं—जीवन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण, शांति और वैराग्य, एक अमूर्त जीवन जो चौथे आयाम में प्रवाहित होता है। उनके लिए यह एक स्वर्ग है, जो केवल उनके व्यक्तिगत अनुभवों की वास्तविकता से भरा हुआ है। लेकिन यह केवल मानसिक व्यायाम तक ही सीमित नहीं हो सकता, क्योंकि जीवन का वास्तविक सौंदर्य, प्रेम और आनंद केवल विचारों से नहीं, बल्कि अनुभव से प्रकट होता है। जीवन का जादू अंततः भावनात्मक संतुलन पर निर्भर करता है। एक निर्जन रेगिस्तान में तर्क की तपती रेत पर जीवन का पुष्प नहीं खिल सकता। भावनाएँ न केवल जीवन को रंग और मिठास देती हैं, बल्कि जीवन की निरंतरता का सुगंधित संदेश भी छोड़ जाती हैं, जो उनके[illegible] गए बीजों से आगे पल्लवित होता है।

यही वह स्थान है जहाँ जीवन की सफलता के प्रश्न पर तांत्रिक दृष्टिकोण मुझे संन्यास की जीवन-निषेधवादी धारणा की तुलना में अधिक सशक्त और जीवंत प्रतीत होता है। मैंने हमेशा संन्यास को जीवन की प्रेरणादायक भावना के प्रति एक प्रकार का विश्वासघात ही माना है।

भुवनेश्वरी पर्वत की चोटी पर बैठकर, जब मैं ब्रह्मपुत्र की विशाल लहरों के बीच तैरते हुए पन्ने-जैसे द्वीप, उमानंद भैरव की शिला को निहारता हूँ, तब जीवन के सौंदर्य पर मनन करता हूँ। कुरूप, भूखे, बीमार, यहाँ तक कि तथाकथित विक्षिप्त भी, इस शक्ति—इस स्थायी चेतना से प्रेरित हुए हैं और उन्होंने महान कलाओं, विज्ञान, सौंदर्य और उपयोगिता की रचनाएँ की हैं। यह प्रेरणा, यह ऊर्जा, यह रचनात्मक शक्ति ही जीवन को जड़ता और निराशा के गहरे दलदल से मुक्त करती है।

हमारा अस्तित्व मात्र शारीरिक जीवित रहने का संघर्ष नहीं है; इसमें आत्मा का भी अस्तित्व बना रहना आवश्यक है। जब हम माँ—शक्ति, ऊर्जा, इस दिव्य चेतना से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे भीतर के जीवन-स्रोत को और अधिक शक्ति, आनंद और निरंतरता प्रदान करे, जब हम अपनी अंतर्निहित चेतना के इस सजीव डायनेमो को नई दिशा और उपलब्धियों की शक्ति से चार्ज करते हैं—जैसे कि देखने की शक्ति को आँखों से अधिक तीव्र बनाना, सुनने की क्षमता को कानों से अधिक गहरा करना, सूंघने की क्षमता को नाक से अधिक संवेदनशील बनाना, स्पर्श को त्वचा से अधिक तीव्र करना, भविष्य को जानने और समझने की क्षमता को साधारण मानसिक स्थिति से कहीं अधिक बढ़ाना—तो यह कोई चमत्कारी शक्ति को वश में करने की आकांक्षा नहीं है।

वास्तव में, कोई चमत्कारिक शक्ति नहीं होती। केवल माँ—प्रकृति है। उसके अलावा कुछ भी नहीं है। जब हम अदृश्य को देखते हैं, अनसुने को सुनते हैं, अतीत और भविष्य से वैसे ही संवाद करते हैं जैसे वर्तमान से, तब हम माँ के साथ एकत्व महसूस करते हैं। जीवन की शक्ति पर इस प्रकार विचार करना, जीवन की शक्ति को इस प्रकार प्राप्त करना ही तंत्र मार्ग है। तंत्र कहता है, "बाहरी शक्ति के समक्ष घुटने टेककर वरदान माँगना पाप है। किंतु अपने भीतर की शक्ति को न पहचानना, और उसे अस्वीकार करना उससे भी बड़ा पाप है।"

तंत्र की खोज इसी आंतरिक शक्ति की खोज है। वह खोजता है, और वह उपलब्ध करता है। नदी निरंतर प्रवाहित होती रही, वैसे ही मेरे विचार भी। और माँ के हाथ का वह मायावी स्पर्श, जिसने मेरे जीवन में बार-बार तीन-आयामी रूप धारण कर मुझे आशीर्वाद दिया, कुछ दुर्लभ क्षणों के लिए मुझे चौथे और पाँचवें आयाम तक पहुँचा गया। भले ही वह क्षण मात्र एक पल का रहा हो, फिर भी वह शाश्वत था।

"ध्यानस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनः यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः..."
(*योगी अपनी एकाग्र दृष्टि से इसे देख सकते हैं। इसका अंत न देवताओं ने जाना, न असुरों ने।*)

मैं कौन हूँ?
क्यों मैं इतनी निकट आकर भी इतनी दूर फेंक दिया जाता हूँ?
सामने आनंद का प्रवाह बह रहा है, फिर भी दुःख भी उतना ही सत्य है।
मैं अपनी भगवा वस्त्रधारी देवी के अत्यंत निकट था; अब मैं बहुत दूर हूँ।
मैं उस स्पर्श को याद करता हूँ। यहाँ तक कि वह मंगोलियाई स्त्री भी जान गई थी कि मैं उसकी गोद में बैठा था।
पर मैं ही इसे क्यों न पहचान सका?

खुद पर दया से भरकर मैं उस कतार में खड़ा था, जो सुबह मंदिर में प्रवेश के लिए लगी थी। भूमिगत मार्ग अंधकारमय और सँकरा था, जिससे अनियंत्रित प्रवेश संभव नहीं था।

भिक्षुक कन्या

एक छोटी लड़की कतार से अलग खड़ी थी। थोड़ी ही देर में वह मेरे पास आ गई। वह स्पष्ट रूप से भोजन के लिए भीख माँग रही थी। सुबह का समय था, फिर भी वह भूखी थी। निश्चित रूप से, मैं उसे भोजन दे दूँगा, लेकिन उसे मेरी प्रार्थनाएँ पूरी होने तक प्रतीक्षा करनी होगी।

"नहीं!" वह हठपूर्वक बोली। "मैंने रातभर कुछ नहीं खाया। वहाँ देखो, नीचे पहाड़ी पर! स्वादिष्ट भोजन तला जा रहा है। तुम्हें दिख नहीं रहा? सूंघो! क्या तुम्हें उसकी खुशबू नहीं आ रही? क्या तुम गूंगे हो? मैं भूखी हूँ! मंदिर तो वहीं रहेगा। वह कहीं भाग नहीं जाएगा। पहले मुझे खाना खिलाओ, फिर अपनी पूजा कर लेना।"

कतार में खड़े कुछ तीर्थयात्री मेरी ओर देखकर हँसने लगे। कुछ महिलाएँ उस लड़की पर हँसीं, तो कुछ मेरी असमंजस भरी स्थिति का आनंद ले रही थीं।

उसकी विनती में किसी तर्क या कारण का कोई स्थान नहीं था, लेकिन उसकी मासूम ज़िद ने उसकी बात को पूरी तरह सार्थक बना दिया था। मैं कतार से बाहर क्यों नहीं आ सकता था, यह बात वह समझ नहीं पा रही थी। मेरे लिए कतार में अपनी बारी खो देना महत्वपूर्ण था, लेकिन उसके लिए केवल उसकी भूख मायने रखती थी। भूख ही उसका तर्क थी, भूख ही उसकी देवी।

"मैं भूखी हूँ... बहुत भूखी... पहले मुझे संतुष्ट करो... तुम्हारे देवता बाद में आ सकते हैं... वे कहीं भाग नहीं जाएँगे।"

क्या मैंने उसके गुलाबी होठों पर हल्की-सी *मोना लिसा* जैसी मुस्कान देखी? उसके ये शब्द मेरे भीतर गूंज उठे।

*"ते तुष्टा: सर्व तुष्टाश्च यत्र कन्यां प्रपूज्यते।*
*विधियुक्ता: कुमारिभिर्भोजयेच्चैव भैरवीम्॥"*

(जब कन्या तृप्त हो जाती है, तो समस्त देवता तृप्त हो जाते हैं। कन्या का भोजन कराना ही भैरवी का पूजन है।)

"तुम्हारा नाम क्या है, छोटी लड़की?" मैंने हल्के से मुस्कुराते हुए पूछा, जब मैंने कतार छोड़ने का निश्चय कर लिया।

"मालिनी," उसने उत्तर दिया, और फिर शरारती हँसी हँस दी। "आओ, चलो!" अब उसने मुझे आदेश दिया। "क्यों देर कर रहे हो?"

(*मालिनी—शक्ति का वह रूप, जब वह सात वर्ष की कन्या होती है।*)

मैं कतार से बाहर आ गया और उसके साथ उस सराय की ओर चल पड़ा, जहाँ सचमुच तले हुए पकवानों की सुगंध हवा में तैर रही थी। सुगंध सचमुच भूख बढ़ाने वाली थी। उसने दो थालियों का आदेश दिया। दो हिस्से। जो कुछ भी उसे पसंद था। मैं लगातार *कन्या मंत्र* का जाप कर रहा था—

*"ऐं ह्रीं श्रीं हुं हसौः स्वाहा।"*

वह पूरी तरह से व्यस्त थी—आदेश देना, सफ़ाई की व्यवस्था कराना, तश्तरियाँ, चम्मच, अचार और अन्य छोटी-छोटी चीज़ें व्यवस्थित करना। होटल के कर्मचारी उसकी आज्ञाएँ मानने में लगे थे।

"क्या हुक्म चलाने वाली लड़की है!" प्रबंधक ने टिप्पणी की।

मैं मंत्रजप में तल्लीन था। कुछ देर बाद, शायद एक घंटे के बाद, मुझे होश आया जब रेस्तरां में ग्राहकों की भीड़ बढ़ गई थी और लोग बैठने की जगह खोज रहे थे।

भीड़ बढ़ रही थी। लड़की जा चुकी थी। उसकी थाली में आधा भोजन ज्यों का त्यों रखा था। वेटर ने बिल सामने रख दिया। मैंने पैसे चुकाए और खाली सीट को ताकता रहा।

वेटर मुझे देख रहा था।

वह हल्का-सा मुस्कुराया और बोला, "वह बाहर गई थी, और फिर वापस नहीं आई।"

"क्या आप उसे खोजने की सोच रहे हैं?" उसने मेरी उलझन पर हँसते हुए पूछा।

"कितनी देर हो गई होगी?" मैंने पूछा।

"शायद एक घंटे से अधिक," उसने लापरवाही से उत्तर दिया।

"क्या आप उसे जानते हैं?" मैंने पूछा।

"कौन? मैं? उसे जानता हूँ? यहाँ कितने तीर्थयात्री आते-जाते हैं, मैं भला हर किसी को कैसे जान सकता हूँ? लेकिन हाँ, बहुत सुंदर बच्ची थी। मैंने सोचा, वह आपके साथ आई थी। क्या वह आपकी थी?"

मेरी आँखों में खोया हुआ, मूर्ख-सा भाव रहा होगा।

धीरे से मैंने बुदबुदाया, "हाँ, मेरी... काश, वह होती।"

और इसके साथ ही, मैं रेस्तरां से बाहर निकल गया।

इस घटना को सोचते हुए मुझे याद आया कि पिछली रात प्रार्थनाओं के दौरान मैंने किसी को भोजन अर्पित नहीं किया था। यहाँ तक कि अग्नि में घी से भीगे हुए समिधा (लकड़ी की पवित्र आहुतियाँ) भी नहीं डाली थीं।

भीड़ की हलचल के बीच से एक मधुर गीत की पंक्ति बहती हुई मेरे कानों तक पहुँची। वही गीत, जिसे मैंने गंगा के तट पर कई बार सुना था।

मुझे जानना था कि यह कौन गा रहा है। मैं उस ध्वनि का पीछा करने लगा। परंतु स्वर धीरे-धीरे दूर होता चला गया, जब तक कि मैं मंदिर के द्वार तक नहीं पहुँच गया। भीड़ तिरोहित हो चुकी थी।

द्वार बंद थे।

और फिर, वह गीत मंदिर के भीतर से आ रहा था।

मैं सीढ़ियों पर बैठ गया और धीरे-धीरे गाने लगा—

"तुम कौन हो,
जो अपनी धुन पर नाचती-गाती हो,
हर क्षण आनंद से ताली बजाती हो?
तुम, जो शाश्वत काल की
परम मोहिनी हो!"

## नारद की ओर वापसी

नारद का भी अपना एक तांत्रिक मार्ग था। तंत्र में निहित रहस्यवाद ने न केवल उन्हें बल्कि उनकी गतिविधियों को भी रहस्यमय बनाए रखा। लेकिन मेरे लिए, वह स्वयं सबसे अधिक रहस्यमयी प्रतीत होते थे। सच कहूँ तो, उनकी शरारतें मेरी समझ से परे थीं। यह बात उन्हें बहुत आनंदित करती थी। जब भी मैं उलझन में पड़ता, वे गुदगुदी-सी अनुभूति से भर उठते और ठहाके लगाकर हँसते।

चित्रकूट में मंदाकिनी के पास, हनुमान-धारा की गुफाओं में बिताए मेरे दिन लंबे और फलदायी थे। कभी-कभी मेरी नारद से भेंट हो जाती, लेकिन अधिकतर समय वे कहीं लुप्त रहते। उनकी रहस्यमयी अनुपस्थिति को लेकर मैंने कई बार पूछताछ की, लेकिन संयोगवश पूछे गए सवालों से मुझे अधिक जानकारी नहीं मिली। इतना ही समझ में आया कि उनकी गतिविधियों को बिना किसी संदेह के स्वीकार किया जाता था और उनके तरीकों को अत्यंत श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था।

लेकिन यही वे दिन थे जब मैं भगवा-वस्त्रधारी देवी द्वारा सिखाए गए मार्ग के अनुरूप ढल रहा था—हालाँकि रात्रिकालीन तपस्या सत्रों और *प्रकृति-संयोग* को छोड़कर (फिर भी *माँ-प्रतीक* के प्रति मेरी गहरी श्रद्धा बनी रही)।

जो लोग शहरी जीवन के अभ्यस्त हैं, वे जीवन के रहस्यों और आध्यात्मिक जगत से परे के सत्य को सीखने के इस कठोर प्रशिक्षण की सराहना नहीं कर सकते।

मुझसे बार-बार यह प्रश्न किया गया—आध्यात्मिकता के क्षेत्र में *काम* किस प्रकार ज्ञानोदय की प्राप्ति में सहायक हो सकता है? अधिकांश मामलों में, मैंने इस पर अपनी अनभिज्ञता जताई, लेकिन प्रायः मैंने मौन ही साधे रखा। क्यों?

तांत्रिक ग्रंथों (तंत्र शास्त्रों) का एक सबसे महत्वपूर्ण और अपरिहार्य सिद्धांत यह निर्देश देता है कि यदि कोई साधक इस मार्ग पर पूर्णता प्राप्त करने के लिए गंभीरतापूर्वक प्रेरित है, तो उसे इन साधनाओं के विषय में पूर्ण मौन धारण करना चाहिए। इस मार्ग का रहस्य आम लोगों की पहुँच से बाहर रहकर स्वयं को दुरुपयोग से बचाता है और साथ ही जिज्ञासु को भी अनुचित प्रयोगों से सुरक्षित रखता है।

इसलिए तांत्रिक मार्ग को एक *गुप्त रक्षा-पंक्ति* के रूप में बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, जिससे इसे घात लगाए शत्रुओं से सुरक्षित रखा जा सके।

# तंत्र हमारे लिए क्या करता है?

अन्य आध्यात्मिक पद्धतियों के विपरीत, तंत्र प्रेम और शक्ति के मार्ग से जुड़ा हुआ है, जो मनुष्य को संसार से प्रेम करना सिखाता है—इस संसार के लोगों से प्रेम करना सिखाता है और जीवन की समस्याओं का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करने की जिम्मेदारी स्वीकार करता है। तांत्रिक के लिए जीवन, न कि मृत्यु, सबसे महत्वपूर्ण विषय है। वह मुक्ति की आकांक्षा रखता है, लेकिन भुक्ति (अनुभव, जीवन का पूर्ण उपभोग) के माध्यम से।

यही विचार *भगवद्गीता* के मूल सिद्धांत में निहित है। गीता निष्काम कर्म की उच्चतम अवधारणा प्रस्तुत करती है—अर्थात जीवन के कार्यों को पूरी निष्ठा से संपन्न करना, लेकिन व्यक्तिगत रूप से उनके फल की चिंता किए बिना। अच्छे परिणामों की आशा करना, किसी न किसी रूप में, दुःख, निराशा और हताशा की ओर ले जाता है। जब मनुष्य अपने कर्मों के परिणामों से अत्यधिक आशान्वित हो जाता है, तो वह अंतहीन असंतोष के चक्र में फँस जाता है, और अंततः हताशा का शिकार बनता है।

इंद्रिय-सुख की सीमाओं तक पहुँचने की आकांक्षा से उत्पन्न मानसिक पीड़ा और कष्ट, हमारे आध्यात्मिक पतन का मूल कारण रहा है। हम इंद्रियों के चरम आनंद की प्राप्ति की इच्छा रखते हैं, लेकिन इसमें असफल हो जाते हैं, और यही असफलता हमें कष्ट, संघर्ष और आक्रोश की ओर धकेल देती है। यहाँ तक कि उच्चतम चेतना वाले व्यक्ति भी कभी-कभी मानसिक अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं।

यदि जीवन का पूर्ण आनंद उठाना है, तो सभी इंद्रियों और कार्यशील अंगों को नियंत्रण में रखना आवश्यक है। यदि जीवन अनियंत्रित हो जाता है, क्योंकि उसकी इंद्रियाँ उसे अपने वश में कर लेती हैं, तो व्यक्ति, जो वास्तव में इस जीवन का स्वामी है, स्वयं को पराजित अनुभव करता है और अपनी ही चेतना को दूर से बहकते हुए देखने के लिए विवश हो जाता है।

हम जीवन में देखते हैं कि खिलाड़ियों, एथलीटों, सेना के जवानों, तकनीशियनों, शिल्पकारों और विद्वानों—सभी को अपने कार्य में दक्षता प्राप्त करने के लिए कठोर प्रशिक्षण और अनुशासन से गुजरना पड़ता है। जब सांसारिक कार्यों में सफलता के लिए इतना कठोर प्रशिक्षण आवश्यक है, तो फिर उन इंद्रियों और भावनाओं के उचित उपयोग के लिए कठोर अनुशासन क्यों आवश्यक न हो, जिन पर जीवन के सुखों की संपूर्ण अनुभूति निर्भर करती है?

तंत्र ने इस *भुक्ति मार्ग* का गहन विश्लेषण किया है और शरीर तथा उसकी इंद्रियों को पूर्ण नियंत्रण में रखने की साधना विकसित की है, ताकि जीवन का पूरा आनंद लिया जा सके, बिना आध्यात्मिक स्वतंत्रता या मोक्ष के मार्ग में बाधा उत्पन्न किए।

तंत्र के अनुसार, शरीर और जीवन की गतिविधियों को नकारे बिना, इन्हीं के माध्यम से आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त की जा सकती है—बशर्ते मनुष्य अपने सभी कार्यों को जीवन के संचालक *परमशक्ति*—माँ शक्ति के चरणों में समर्पित करे, जो समस्त सृजन और यहाँ तक कि स्वर्ग की भी स्रोतस्वरूपा हैं। *गीता* इस भावना की जोरदार सिफारिश करती है—

"अनियंत्रित इंद्रियों की चंचलता को अनुशासन की अग्नि में समर्पित करो; और प्रशिक्षित इंद्रियों को उनके कार्यों के साथ उसी अग्नि में समर्पित करो।" (*गीता*, VI.26)

गीता के अनुसार, तीन सबसे कठिन मानसिक अवस्थाएँ (जो हमारे कार्यशील उपकरणों को प्रभावित करती हैं और उन पर हावी हो जाती हैं) हैं—काम, क्रोध और लोभ (*गीता*, XVI.21)।

- काम का मूल स्रोत *लिबिडो* (काम-वासना) है।
- क्रोध का स्रोत *ईर्ष्या और असहिष्णुता* है।
- लोभ की जड़ *अधिकार और संग्रह की भावना* है।

इन तीनों को *नरक के तीन द्वार* कहा गया है (ग्रीक कवि *होमर* के अनुसार, नरक के द्वार का पहरेदार *तीन सिरों वाला* कुत्ता *सेरबरस* है)। वास्तव में, नरक कोई बाहरी स्थान नहीं, बल्कि एक मानसिक अवस्था है।

तंत्र का उद्देश्य साधक को इन तीनों मानसिक बंधनों से मुक्त करना है। जब वह स्वयं को इनसे अलग कर लेता है, तो मुक्ति उसके निकट आ जाती है। वह संसार के सभी सुखों का उपभोग कर सकता है, लेकिन उनमें लिप्त हुए बिना; वह जीवन से पूर्णतः जुड़ा होता है, लेकिन उसमें आसक्त हुए बिना।

मन के इस स्तर को प्राप्त करना और जीवन के विषयों का आनंद उठाना ही तांत्रिक का अंतिम लक्ष्य है। इसलिए तंत्र में कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है।

लेकिन जब इन अभ्यासों को उनके वास्तविक संदर्भ से अलग करके देखा जाता है, और बाहरी दृष्टि से उनकी व्याख्या की जाती है, तो इन *तीन सबसे प्रबल शक्तियों* (काम, क्रोध, लोभ) पर नियंत्रण प्राप्त करने की यह प्रक्रिया अक्सर भोगवाद, पतन और छल के रूप में देखी जाती है।

आज के समय में, तंत्र विद्या के नाम पर दुनिया भर के नगरों में अनगिनत केंद्र विकसित हो चुके हैं। कुछ तो भ्रमित धनाढ्यों की उदारता पर फलते-फूलते हैं, और कुछ ऐसे शक्तिशाली समूहों द्वारा पोषित किए जाते हैं, जिनके निहित स्वार्थ (अक्सर राजनीतिक) होते हैं।

हाल के वर्षों में, तंत्र केंद्रों को *विलासिता और अनैतिक गतिविधियों* के अड्डे कहकर आलोचना की गई है। लेकिन सच्चाई यह है कि ऐसे सैकड़ों *नगरीय* और *कृत्रिम* संस्थानों में शायद ही कोई वास्तविक तांत्रिक अनुशासन का केंद्र हो, जैसा कि नारद जैसे निःस्वार्थ संतों ने बनाए और बनाए रखे।

तंत्र का वास्तविक उद्देश्य केवल एक योग्य और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले साधक को प्राप्त करना है—एक ऐसा साधक जो कठिन साधना, इच्छाओं के प्रलोभन, और वासनाओं की ज्वाला को सहन कर सके, और फिर भी अग्नि-कुंड से खरे सोने की तरह बाहर निकले।

अनुशासित साधक के लिए संसार का अनुभव कहीं अधिक गहन और सार्थक होता है, बनिस्बत उस व्यक्ति के जो अपनी इंद्रियों के अधीन होकर जीवन व्यतीत करता है।

## तंत्र हमसे क्या अपेक्षा रखता है?

यह वह स्थान नहीं जहाँ मैं तंत्र के कठोर अनुशासन की वास्तविक विधियों और उनके स्वरूप पर चर्चा करूँ। इसके लिए तंत्र-साधना पर एक विस्तृत ग्रंथ लिखना होगा, और तंत्र कोई ऐसा विषय नहीं जिसे कोई स्वयं पढ़कर सीख सके।

*'स्वाध्याय से सीखे जाने वाले विषयों'* की सूची में तंत्र कभी नहीं आ सकता। इसे केवल *गुरु* से ही सीखा जा सकता है—उस *आचार्य* से, जो अपने शिष्य को अपार स्नेह और गहन विश्वास से स्वीकार करता है।

और एक बार जब गुरु ने स्वीकार कर लिया, तब शिष्य उस संगति में हर क्षण का आनंद लेता है। प्रेम और समझ—यही इस संबंध की आधारशिला होती है। फिर जैसे भोजन करना, सोना, गाना आदि स्वाभाविक क्रियाएँ हैं, वैसे ही *काम* भी एक अत्यंत प्रशिक्षित और पूर्ण अनुशासित शक्ति की अभिव्यक्ति बन जाता है, जिसे प्रकृति ने मनुष्य के भीतर स्थापित किया है। तांत्रिक अनुशासन की सहायता से *काम* का आनंद भी एक दिव्य मुक्ति का अनुभव बन सकता है, जो शाश्वत है। तब *काम* मात्र भोग नहीं, बल्कि *यज्ञ* बन जाता है—जैसा कि *छांदोग्य* और *बृहदारण्यक उपनिषद* में वर्णित है।

संयमित वासना ही वह शक्ति-स्रोत है, जो मनुष्य के सर्वोच्च विकास की संभावना रखता है। एक बार जब इस शक्ति के नियंत्रण का सूत्र मनुष्य के हाथ में आ जाता है, तब वह अपने आनंद को अपनी इच्छा के अनुसार ढाल सकता है। फिर जीवन के बंधन उसे जकड़ते नहीं, बल्कि सशक्त बनाते हैं। वह *वीर* बनता है—*सिंह समान, सुदृढ़*।

तंत्र जीवन को स्पष्ट रूप से देखता है। यह मृत्यु या परलोक की तैयारी नहीं करता, बल्कि व्यक्ति को *जीवन जीने* के लिए तैयार करता है।

भगवा-वस्त्रधारी देवी, संत जीतन, नारद और वे सभी जिन्होंने मुझमें रुचि ली, वे मुझे *संन्यासी* के रूप में नहीं, बल्कि एक *पूर्ण पुरुष* के रूप में तैयार कर रहे थे—जो वास्तव में तंत्र-शिक्षा का परम उद्देश्य है।

इसी उद्देश्य से मुझे पहले *चित्रकूट*, फिर *उज्जैन*, और फिर *नासिक* ले जाया गया। और *वाराणसी* तो मानो मेरी *नाभि-नाड़ी* से बँधी थी। मुझे बार-बार उस पवित्र स्थान पर लौटना पड़ता, जहाँ *भगवा-वस्त्रधारी देवी* निवास करती थीं।

नारद के प्रति मैं कृतज्ञ था, जब उन्होंने मुझे यह अवसर दिया। उनका मार्ग *प्रेम* और *भक्ति* का था। सामान्य लोग *रामदासी*, *बाउल* और *तांत्रिक* के बीच स्पष्ट भेद करेंगे, लेकिन साधकों के लिए ये भेद विलीन हो जाते हैं, क्योंकि ये सभी जीवन की ऊर्जा और उसकी चैतन्यता में समान रूप से विश्वास रखते हैं। सभी इस सत्य को अपनी आत्मा से बाँधकर रखते हैं कि *जीवन को प्रेम और आनंद के मूल सत्य में विकसित होना चाहिए, जैसा कि दिव्य रूप से नियत है।*

"सदैव तैयारी में रहो"—यह तांत्रिक साधक का सूत्र वाक्य है।
"युद्ध करो, लेकिन मोहग्रस्त हुए बिना"—गीता का संदेश है।

यद्यपि सामान्य लोग नारद को केवल *रामदासी भक्ति मार्ग के साधक* के रूप में देखेंगे, लेकिन मेरे लिए वे तंत्र का उतना ही अभिन्न अंग थे, जितने कि तांत्रिक *भक्ति* का हिस्सा होते हैं। ये दोनों *अलग नहीं* हैं। आत्म-अनुशासन की किसी भी पद्धति की जड़ें अंततः तंत्र में ही समाहित होती हैं।

क्या सभी मार्ग तंत्र मार्ग नहीं हैं?

क्या धर्म स्वयं एक *कर्मकांड* नहीं है? *वूडू*, *शमन*, *ओबिआह*, *प्रायश्चित्त*, *पुरश्चरण*, *ग्रह-शांति*, *राशि-उपासना*—यहाँ तक कि *प्रभु की प्रार्थना*, *संत-समागम*, *ईस्टर*, *युकरिस्ट*—ये सभी तंत्र की विभिन्न छायाएँ हैं। *ड्रुइड्स*, *ऑर्फियंस*, *डेल्फिक पुजारी* इस सत्य को जानते थे; *माया*, *अज़्टेक*, *इन्का*, *तिब्बती*, *मिस्री*, *शिंटो*—ये सभी उसी विचार-धारा की शाखाएँ हैं, जो तंत्र के मूल स्रोत से बहती है।

फिर भी, एक सूक्ष्म अंतर है। यह अंतर केवल बाहरी रूप को प्रभावित करता है; भीतरी खोज, उसकी आत्मा और उसकी विधियाँ, प्रायः *स्वर्ण-संतुलन* (golden mean) तक पहुँच ही जाती हैं।

जब मैं यह कह रहा हूँ, तो मुझे अपने हालिया वर्षों के वे *इंडो-चीन*, *मैक्सिको*, *ब्राज़ील* और *पेरू* के दौरे याद आ रहे हैं, जहाँ मैंने रोमांचकारी समय बिताया था। इन प्रत्यक्ष अनुभवों से मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि तंत्र *नकारात्मक पथ* को अस्वीकार करता है।

तांत्रिक इंद्रियों के पूर्ण उपभोग (consummation) की वकालत करते हैं, वे दूसरों को *आनंद के उत्सव* में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं, लेकिन स्वयं वे न्यूनतम और आवश्यकतम पर जीवित रहते हैं। वे *त्यागी* नहीं होते, जो भोग से दूर भागें, बल्कि *पूर्ण आनंद* के जीवंत प्रतीक होते हैं।

वे *भौतिक सुखों* से बँधे नहीं होते, जो उन्हें तत्कालिक आनंद में जकड़ दे। उनके लिए जीवन केवल एक जन्म तक सीमित नहीं, बल्कि *जन्म-जन्मांतर की यात्रा* है। यही उनका सिद्धांत है—

"आनंद के लिए स्थान बनाओ, आनंद तक पहुँचो, आनंद फैलाओ, आनंद देखो, आनंद के निकट रहो और अपने चारों ओर आनंद बिखेरो।"

परिवार में रहो—माँ के पुत्रों की भाँति।

## माँ का रक्त

चित्रकूट के उस दिव्य आश्रम में नारद के साथ बिताए तीन अत्यंत आनंदमय महीनों के बाद, एक सुबह मैं अचानक अचंभित रह गया। मेरी माँ वहाँ पहुँच गई थीं, और उनके साथ थीं मेरी मार्गदर्शिका—*भगवा-वस्त्रधारी देवी*। मुझे आश्रम से बाहर ले जाया गया। लेकिन यह अंत नहीं था। ऐसे प्रयास बार-बार किए गए, और दो बार मैं फिर से निकल भागने में सफल हुआ। मैंने घर छोड़ दिया था और *संतत आनंद में विलीन* होने वाले दिव्य साधकों की संगति में शामिल होने का प्रयास किया था। लेकिन पहली बार की तरह, मैं इस बार भी पूरी तरह असफल रहा। *भगवा-वस्त्रधारी देवी* का प्रेम और प्रभाव इतना प्रबल था कि मैं उनसे बच नहीं सका। मेरे और मेरी तथाकथित 'स्वतंत्रता' के बीच वे एक *महानदी* की तरह खड़ी थीं, जो दो विशाल शिलाओं को अलग करती हो।

फिर, एक ऐसा रहस्योद्घाटन हुआ जिसने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी।

तीन बार भागने के बाद, मैंने वाराणसी और अपने घर को छोड़ने का विचार मन से निकाल दिया था। इन्हीं दिनों, एक दिन मेरी माँ ने मुझसे कहा कि मैं उनके साथ *संकटा देवी* के मंदिर चलूँ, जो *पंचगंगा घाट* के पास, मणिकर्णिका से आगे स्थित था। हर शुक्रवार वे इस मंदिर में जाया करती थीं। मैं भी अधिकतर उनके साथ नाव में जाता था। उस दिन भी, बिना किसी विशेष सोच के, मैं उनके साथ हो लिया।

हमेशा की तरह, माँ मंदिर के गर्भगृह में चली गईं और वेदी के सामने खड़ी होकर प्रार्थना में मग्न हो गईं। तभी, प्रार्थना के मध्य, उन्होंने अचानक एक *तेज़ धारदार चाकू* निकाला और अपनी दोनों *छातियों के बीच एक गहरा चीरा* लगा दिया—इतना तेज़ कि हम पलक झपकाते, उससे पहले ही रक्त की धार फूट पड़ी!

मैं भय से जड़ हो गया। लेकिन माँ पूरी शांति से, अपनी ही बहती रक्तधारा को एक *बेलपत्र* पर संजोने लगीं। मेरे भयभीत नेत्रों के सामने, उन्होंने वह रक्तसिक्त पत्र देवी के चरणों में रखा और विधिपूर्वक अर्पित कर दिया।

मंदिर के संरक्षक पुजारी, जो उन्हें भली-भांति पहचानते थे, स्तब्ध होकर यह दृश्य देख रहे थे। *आज तक किसी ने इस पवित्र वेदी पर रक्त अर्पित नहीं किया था।* और यहाँ, यह रक्त न केवल मानव-रक्त था, बल्कि एक *ब्राह्मण महिला*, एक *माँ* का रक्त था!

इस *अत्यधिक दुस्साहसिक कृत्य* से पहले कि वह कुछ कह पाते, माँ ने मेरा हाथ अपने *रक्त से भीगे वक्षस्थल* पर रख दिया और मुझसे *एक अपरिवर्तनीय रक्त-प्रतिज्ञा* माँगी—

*"तू फिर कभी इस संसार को नहीं छोड़ेगा, अज्ञात मार्गों की खोज में नहीं भटकेगा, यहाँ तक कि आध्यात्मिक साधना के लिए भी नहीं!"*

मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। अपनी माँ के *कोमल, गोरे शरीर से बहते रक्त* का यह हृदयविदारक दृश्य मुझे झकझोर चुका था। मैं सम्मोहित-सा उनके शब्द दोहराने लगा—

*"नहीं, मैं कभी इस गृहस्थ संसार को नहीं त्यागूँगा!"*

इसके बाद, माँ ने मुझसे दो और प्रतिज्ञाएँ लीं।

पहली—*जब समय आएगा, तो मैं विवाह से मुँह नहीं मोड़ूँगा।*

और अंतिम प्रतिज्ञा—जो सबसे महत्वपूर्ण थी और जिसके लिए कुछ विस्तार आवश्यक है।

मुझे गाना बहुत प्रिय था। मेरे सुर इतने मधुर थे कि मैं अपने गायन में आनंद और संतोष प्राप्त करता था। लेकिन *अघोरी तांत्रिक क्रियाओं*, अनवरत *उपवास* और *गुप्त साधनाओं* ने मेरे शरीर को निढाल कर दिया था। आसन और प्राणायाम से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। समुद्र-तट की लंबी यात्राएँ भी बेअसर रहीं। धीरे-धीरे, मैं रक्त थूकने लगा, लगातार खाँसता रहता, और कभी-कभी रक्तस्राव इतना बढ़ जाता कि स्थिति भयावह लगने लगती।

लेकिन यह *यक्ष्मा* (टीबी) नहीं था। न मुझे बुखार था, न ही अवसाद। इसके विपरीत, मैं हमेशा ऊर्जावान, उत्साही और अदम्य इच्छाशक्ति वाला बना रहा। यही चीज़ मेरे उपचार को और कठिन बना रही थी। मेरा शरीर *पूर्ण विश्राम* माँग रहा था—मानसिक व शारीरिक दोनों। यहाँ तक कि गायन से भी दूर रहने की आवश्यकता थी।

*भगवा-वस्त्रधारी देवी* और मेरे नये मित्र, एक *मुस्लिम फकीर*, दोनों ने मुझे आश्वस्त किया कि मैं ठीक हो जाऊँगा। लेकिन माँ की चिंता अनवरत बनी रही।

इसीलिए, माँ ने मुझसे यह *तीसरी प्रतिज्ञा* ली—

*"किसी भी परिस्थिति में, तू मांसाहार का त्याग नहीं करेगा! मुझे तेरी गुरु माँ (भगवा-वस्त्रधारी देवी) की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है!"*

मैंने उनकी ओर देखा। उनकी आँखों में कोई झिझक नहीं थी। उन्होंने फिर कहा—

*"आर्य मांसाहारी थे। शरीर को वही आहार चाहिए जो उसे शक्ति दे। यह संतुलन केवल एक दिखावा है, एक छलावा। शुद्धतावाद एक भ्रम है। जरूरत से ज़्यादा उपवास और त्याग, अंततः केवल अहंकार को जन्म देते हैं। यदि किसी चीज़ का त्याग करना ही है, तो 'लोभ' का करो!"*

मेरी माँ का रक्त अब भी बह रहा था।

मैंने श्रद्धापूर्वक उनके रक्त पर अपना हाथ रखा और इन *तीनों प्रतिज्ञाओं* को सच्चे हृदय से स्वीकार किया।

इसके बाद, माँ ने मुझसे कुछ अनुशासनात्मक नियमों का पालन करने को कहा। उनमें से एक यह था कि हर वर्ष मुझे *पश्चिम बंगाल* के एक दूरस्थ तीर्थ *तारकेश्वर* में विशेष प्रार्थना अर्पित करनी होगी।

पाँच वर्षों की कठोर साधना के पश्चात, मुझे माँ के साथ उस तीर्थ पर जाना था।

वहाँ मैंने एक ऐसा दृश्य देखा, जिसने मुझे भीतर तक हिला दिया—

मेरी माँ, *पूरे शरीर को लंबवत फैला कर* अपने नाक और ललाट के बल रेंगती हुई, पूरे मंदिर-परिसर की *परिक्रमा* कर रही थीं!

मैं अवाक् खड़ा देखता रहा...

## अंधविश्वास और आस्था

अंधविश्वास! आदिम प्राकृतिक आस्था!! इसे पुकारने के लिए और भी कई नाम हैं। लेकिन जो लोग इस पर सबसे अधिक शोर मचाते हैं, उन्हें अक्सर अन्य प्रकार की आस्थाओं, विश्वासों और प्रथाओं की सबसे घिनौनी धाराओं में लिप्त पाया जाता है—जो अंधविश्वास से भी अधिक घृणास्पद और पतनशील हैं। जो आस्था समझ में नहीं आती, उसे हम अंधविश्वास के रूप में खारिज कर देते हैं।

शुद्ध तर्कवाद किसी भी धार्मिक संस्था के लिए उससे अधिक भयावह होता है, जितना कि शैतान का सबसे घृणास्पद हमला—और स्वयं *शैतान* भी एक *अंधविश्वास* के रूप में नामित किया गया है।

मैं अब प्रत्येक घटना के लिए कोई तर्कपूर्ण व्याख्या खोजने का प्रयास नहीं करता। फिर भी, मैं अंधी आस्थाओं और विश्वासों को लेकर सतर्क रहता हूँ। मेरे लिए *उदात्तता* की आत्मा में एक दिव्य आभा होती है—एक ऐसा आभामंडल, जिसमें प्रेम और समझ की वह शक्ति होती है, जो मुझे मोह लेती है।

मुझे सबसे महान जादू वही लगता है, जो *निस्वार्थ और निःस्वार्थ प्रेम* के रूप में प्रकट होता है। यह सम्मोहक है, यह अवर्णनीय है, यह हृदय को बांध लेने वाला है। यह मनुष्य से उसकी *सर्वोच्च बलिदान-शक्ति* की माँग करता है। यह आत्मा को ऊँचा उठाता है, चरित्र को दृढ़ बनाता है और मनुष्य के *नश्वर शरीर* में सहनशक्ति का संचार करता है।

*निस्वार्थ प्रेम के स्पर्श से—*
दुःख आनंद में बदल जाता है,

आँसू अमृत बन जाते हैं,
हानि लाभ में परिवर्तित हो जाती है।

मनुष्य *युद्ध* को शांति का माध्यम बनाने का प्रयास कर चुका है,
*चिकित्सा* को मानसिक विकारों के समाधान के रूप में अपनाया है,
*ग्रहों और नक्षत्रों* की पूजा से अपना भाग्य सुरक्षित करने की चेष्टा की है,
*मंत्र और टोटकों* को अव्यवस्थित जीवन को व्यवस्थित करने का उपाय माना है।

परिणाम?

हमेशा असफलता।

मानव-इतिहास की प्रयोगशाला में, बार-बार इन उपायों का परीक्षण किया गया है—लेकिन वे संदेहास्पद ही साबित हुए हैं।

लेकिन *आध्यात्मिक समाधान*, जिसमें—
निस्वार्थ प्रेम करने की क्षमता,
निष्काम सेवा करने की प्रवृत्ति,
विद्वेष रहित कष्ट सहने की शक्ति,
और आसक्ति रहित स्वामित्व की भावना
शामिल हो—
इसका उचित रूप से प्रयोग ही नहीं किया गया।

क्योंकि हर बार जब कोई इसे अपनाने का प्रयास करता है, *विरोधी शक्तियाँ* उसे दबा देती हैं।

लेकिन यह मरता नहीं।

आस्था और प्रेम के *स्पष्ट मृत्यु के साथ* ही, उनका *पुनर्जन्म* भी सुनिश्चित होता है।

इतिहास इस सत्य को बार-बार प्रमाणित कर चुका है।

प्रेम केवल आध्यात्मिक प्रयास से प्राप्त किया जा सकता है।

जब तक मनुष्य *प्रेम* की रहस्यमयी क्रियाओं, इसके सक्रिय और निष्क्रिय प्रभावों को तर्क और कारण के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सकता, तब तक उसकी भावनाएँ *अंधविश्वास* के रहस्यमय कक्षों में कैद रहेंगी।

हम उपहास करते हैं, हम अंधविश्वास का नाम लेकर उसका अपमान करते हैं—लेकिन यह तब होता है, जब हमारी अपनी तर्क-शक्ति विफल हो जाती है और हम धैर्य खो बैठते हैं।

स्वयं की *सीमाओं* को स्वीकार करना कितना कठिन है!

हम अपनी *बुद्धिमत्ता* और अपनी *तर्क-क्षमता* के प्रति इतने *अंध-विश्वासी* होते हैं कि जब हमारा व्यक्तिगत तर्क विफल हो जाता है, तो हम मान लेते हैं कि *सभी तर्क* असफल हो गए हैं।

और फिर—

तर्क का बना हुआ *पत्तों का महल* ढह जाता है,
वह *हवा में उड़* जाता है!

हम *झुंझलाहट* में इसे एक नाम दे देते हैं—
और वह नाम चाहे जितना भी अप्रिय लगे—हम उसे ज़ोर से पुकारते हैं।

अंधविश्वास!

लेकिन यह सिर्फ हमारी अधीरता और अज्ञानता का परिणाम होता है।

हम विचारों की *अनुशासनहीनता* की आलोचना करते हैं।
लेकिन हम स्वयं *अनगिनत बंधनों* में जीते हैं।
हम *परिस्थितियों* और *कार्य-प्रतिक्रियाओं* के अधीन रहते हैं।
हमारे जीवन का प्रत्येक पहलू *अनुशासन* के अंतर्गत आता है—
फिर भी हम दिखावा करते हैं कि हम *स्वतंत्र* हैं।

*सच्चा स्वतंत्र विचारक* वही हो सकता है,
जो बौद्धिक अनुशासन के *कठोरतम मापदंडों* का पालन कर सके।

लेकिन—

*अधीर, सतही, अहंकारी और मिथ्या दंभ में जीने वाले*
इस अनुशासन की कसौटी पर कभी खरे नहीं उतर सकते।

लेकिन प्रेम?

क्यों मैं एक व्यक्ति से प्रेम करता हूँ, लेकिन दूसरे से नहीं?
क्यों मैं किसी एक के प्रति स्नेहपूर्ण होता हूँ, और दूसरे को उपेक्षित कर देता हूँ?
क्यों मैं अपने स्वार्थ को त्यागकर ऐसे त्याग कर जाता हूँ, जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता?
क्यों मैं अपमान सहता हूँ, जबकि मुझे पहले ही चेतावनी दी जा चुकी होती है?
क्यों मैं उन सभी बाधाओं के बावजूद किसी एक को गले लगाता हूँ, जिसे मैं अपने हृदय से अत्यंत प्रिय मानता हूँ?

ये वे प्रश्न हैं, जो *तर्क और मनोविज्ञान की सीमाओं से परे* हैं।

मानसिक रोगियों के *मन में उठने वाले विचारों* की तरह,
एक *आध्यात्मिक प्रेमी* की अनुभूतियाँ भी रहस्यमयी और अज्ञेय रहती हैं।

प्रेम में सुख का रहस्य,
सुख में प्रेम का रहस्य,
आनंद में कष्ट को अपनाने का रहस्य—
ये सब उन रहस्यों के *बीज* हैं,
जिन्हें हम *अंधविश्वास* कहकर टाल देना चाहते हैं।

किंतु सबसे महान अंधविश्वास क्या है?

त्यागमय प्रेम, सेवा करने वाला प्रेम, कष्ट सहने वाला प्रेम।

यह अंधविश्वास नहीं, बल्कि उच्चतम सत्य है।

विज्ञान और मनोविज्ञान तर्क करने का प्रयास करते हैं।

हमने *पानी* को विश्लेषित किया।
हमने *गुलाब* का विश्लेषण किया।
हम *विश्व-शांति की कमी* का विश्लेषण कर रहे हैं।
लेकिन—

हम अब तक *गुलाब* नहीं बना पाए।
हम अब तक *पानी की एक बूँद* नहीं बना पाए।
हम *शांति* नहीं ला सके, न ला सकते हैं, न ला पाएँगे।

शांति और प्रेम—
ये सबसे *उदात्त*, सबसे *रहस्यमय*,
और सबसे *आकर्षक* अंधविश्वास बने रहेंगे।

यही सबसे महान रहस्य है।

और यह रहस्य सदा बना रहेगा।

तंत्र ने मुझे यह सिखाया है।

यह *सूर्य की किरणों में* समाहित है।
यह *फूलों की खुशबू में* बसा है।
यह *मेरे रक्त के संगीत में* घुला हुआ है।

मैं जीता हूँ, क्योंकि यह मेरे भीतर जीवित है।

और यह केवल उन *आध्यात्मिक शक्तियों की कृपा* से प्राप्त हो सकता है, जो सदा विद्यमान हैं।

मेरे गुरु, *भगवा-वस्त्रधारी देवी*,
मेरे मित्र, *नारद*,
स्वामी *सदाशिवानंद*,
संत *जितेंद्र*,
और अनगिनत आत्माएँ—

इन सभी के प्रेम और आशीर्वाद ने मुझे *परम आनंद* के निकट पहुँचा दिया।

क्योंकि वे मुझसे प्रेम करते थे।

और उनका प्रेम—वरदान बन गया।

# 10. छद्म व्यक्तित्व (The Alter Ego)

## श्री दास: एक विलक्षण व्यक्तित्व

इसी समय के आसपास एक अनोखी घटना ने पूरे इलाके में जोरदार चर्चा का विषय बना दिया।

श्री दास नामक व्यक्ति का अचानक लापता हो जाना और रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी कथित मृत्यु की बातें अक्सर सुनने को मिलती थीं। यहाँ तक कि पुलिस ने भी मान लिया था कि श्री दास की मौत आकस्मिक डूबने से हुई है। यह मामला लगभग सबकी स्मृति से मिट चुका था, लेकिन ठीक एक साल बाद यह फिर से जंगल की आग की तरह फैल गया।

श्री दास एक पोस्टमास्टर थे। उनकी पत्नी सरला दास से उन्हें एक पुत्र हुआ, जिसका नाम कनाई था। श्री दास हमेशा किसी अजीब प्रभाव के अधीन दिखते थे, जिसे कभी भी मात्र आध्यात्मिक नहीं माना गया।

बहुत से लोगों का मानना था कि उनका मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है। लेकिन पोस्टमास्टर के रूप में वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन सरकार और जनता दोनों की पूरी संतुष्टि के साथ करते थे। श्रीमती दास को एक आदर्श पत्नी के रूप में देखा जाता था; वास्तव में, वे अत्यंत विनम्र और सुखद स्वभाव की थीं।

श्री दास अक्सर यह दावा करते थे कि उनकी मरे हुए लोगों की दुनिया से सीधी बातचीत होती है; और वे कई घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए जाने जाते थे। वे लोगों को संभावित आपदाओं के बारे में समय पर चेतावनी देते थे। कई बार उन्होंने लोगों को किसी मिशन पर जाने, यात्रा करने या किसी घर में प्रवेश करने से मना किया। बाद की घटनाओं से यह साबित हुआ कि उनकी चेतावनियों को नज़रअंदाज़ करने वालों को सच में दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा। इसलिए लोग सामान्यतः उनकी चेतावनियों को गंभीरता से लेते थे।

हालाँकि, एक बात वे कभी नहीं कर सके। कोई भी उनसे समस्या का समाधान नहीं पूछ सकता था, क्योंकि वे सवालों का जवाब नहीं देते थे। वे केवल तभी चेतावनी देते थे जब उन्हें 'संकेत' मिलते थे।

वे माँ काली के बड़े भक्त थे। उनके जीवन का दैनिक नियम गहन ध्यान और नियमित रूप से मंदिर में पूजा करना था। (यह मंदिर पातालेश्वर के पीछे स्थित एक शक्तिपीठ था, जो योगियों के साधना-स्थल के रूप में लगभग 2700 वर्षों से भी अधिक पुराना माना जाता है। यह लोकप्रिय मंदिर आज भी देखा जा सकता है, हालांकि उपेक्षित अवस्था में। वास्तव में, जो नहीं देखा जा सकता, वह है वह भूमिगत कक्ष जहाँ प्राचीन साधक तांत्रिक साधना करते थे।)

कनाई के जन्म के बाद, श्री दास ने धीरे-धीरे जीवन में रुचि खोनी शुरू कर दी, यहाँ तक कि उन्हें चिकित्सकीय कारणों से लंबी छुट्टी पर जाना पड़ा। वास्तव में, उनकी पत्नी ने ही उन्हें इस छुट्टी पर जाने के लिए मजबूर किया था।

लेकिन उनका ध्यान में लीन रहना और भी बढ़ता गया, यहाँ तक कि वे गंगा किनारे लंबी साधना करने लगे, अक्सर रात भर वहीं बैठे रहते। वे पूरी तरह से बाहरी दुनिया से कट गए थे।

एक समय ऐसा आया जब उन्होंने बोलना बंद कर दिया; और उनके विचित्र व्यवहार के कारण उन्हें अक्सर कमरे में बंद रखना पड़ता था। वे शायद ही कोई वस्त्र पहनते थे। वे अजीब और रहस्यमय भाषाओं में बोलने लगते थे। उन्होंने भोजन और पानी से भी दूरी बना ली और अपनी ही पत्नी की पूजा करने लगे, उन्हें तांत्रिक नामों से संबोधित करते थे।

जब भी उन्हें मौका मिलता, वे नदी के किनारे अपने प्रिय स्थान पर भाग जाते और घंटों, यहाँ तक कि कई दिनों तक ध्यानस्थ रहते।

वाराणसी जैसे शहर में ऐसी आध्यात्मिक घटनाएँ आम थीं। लोग बातें करते थे, लेकिन कोई विशेष ध्यान नहीं देता था।

एक सुबह, जब सरला (श्रीमती दास) ने अपने पति को देखने के लिए दरवाजा खोला, तो कमरा खाली था; लेकिन अंदर की खिड़की खुली हुई थी। सामान्य परिस्थितियों में उस खिड़की से बाहर निकलना संभव नहीं था, क्योंकि वहाँ से लगभग 20 फीट की सीधी ढलान थी।

लेकिन कमरे में कोई नहीं था, और न ही घर के आसपास कहीं। केवल उनकी धोती का टुकड़ा नदी किनारे मिला, जहाँ से नदी लगभग पंद्रह फीट की ऊँचाई से बह रही थी।

उस समय मानसून का मौसम था। नदी उफान पर थी और धारा बहुत तेज़ थी। ऐसे में तैरना लगभग असंभव था। चूंकि उनकी धोती वहाँ मिली थी, इसलिए माना गया कि वे वहीं गए थे; और अगर वे वहाँ नहीं मिले, तो निष्कर्ष निकाला गया कि उन्होंने बाढ़ में छलांग लगा दी और उनकी मृत्यु हो गई।

तेज़ धारा में उनका शव दूर तक बह गया होगा।

चूँकि श्री दास कुछ समय से 'मित्रों के बुलावे' की बात कर रहे थे, सरला को पूरा यकीन हो गया कि उनके पति डूबकर मर गए।

यह विश्वास उन्हें तब और पक्का हो गया जब उनके पति ने उन्हें दो बार दर्शन देकर माँ गंगा की कृपा से उनके साथ आने के लिए कहा।

उनके माता-पिता ने उन्हें कड़ी निगरानी में रखना शुरू कर दिया।

कुछ समय से श्रीमती दास अपने पति की आत्मा की शांति के लिए विधिवत श्राद्ध संस्कार करने पर जोर दे रही थीं।

उन्होंने इसमें गहन निष्ठा दिखाई। लेकिन पुजारियों ने एक साल बीतने से पहले श्राद्ध करने से मना कर दिया।

जब एक वर्ष पूरा हो गया, तो श्राद्ध की तैयारियाँ शुरू हुईं।

श्राद्ध से एक दिन पहले, मैं स्वयं उनके घर गया था, जो हमारे घर से ज्यादा दूर नहीं था।

वह सुंदर महिला, जिनके लंबे काले बाल पीठ पर बिखरे हुए थे, चावलों को साफ करने में व्यस्त थीं, जिन्हें अगले दिन के अनुष्ठान के लिए उपयोग किया जाना था।

एक आत्मा का आगमन

अचानक, वह मुझसे पुरुष की आवाज़ में बात करने लगी। बातचीत का विषय अगले दिन की प्रार्थना थी। उस पुरुष स्वर ने मुझे बताया कि लोगों के विचारों के विपरीत, वह अनुष्ठान कभी नहीं होगा; क्योंकि उसे हटाने का कोई भी प्रयास उसकी शांति के विपरीत माना जाएगा। वह जहाँ और जिस स्थिति में था, वहाँ ठीक था; और वह किसी भी प्रकार की बाधा या विस्थापन को सहन नहीं करेगा।
"कोई प्रार्थना नहीं," उसने कहा।

उस मीठी महिला की कठोर भाषा में इस तरह की बात सुनकर मैं स्तब्ध रह गया, जिसे हम अच्छे और सदाचारपूर्ण स्त्रीत्व का प्रतीक मानते थे।

उसकी माँ बाहर आई। उसने तुरंत कुछ असामान्य महसूस किया। जैसे ही उसने सरला के हाथ से चावल की थाली लेने की कोशिश की, अचानक क्रोध के प्रकट होने पर सरला ने वह पूरी थाली आँगन में, दो मंजिल नीचे फेंक दी।

उसकी स्थिति पर हर कोई चर्चा कर रहा था। उस गरीब परिवार की सतर्कता के बावजूद, जिज्ञासु साक्षात्कारों के लिए भीड़ उमड़ने लगी। (संकटग्रस्त लोग अक्सर किसी भी प्रकार के आध्यात्मिक अंशों पर जीवित रहने के लिए आतुर रहते हैं, चाहे वह तर्कसंगत हो या उपयुक्त।)

और एक सप्ताह के भीतर ही यह खबर फैलने लगी कि उसके पति की आत्मा उसमें उतर आई है, और वह अविश्वसनीय काम कर रही है, अविश्वसनीय व्यवहार कर रही है, और घटनाओं की भविष्यवाणी कर रही है। बीमार बच्चों की माताएँ, पति और ससुराल की समस्याओं से जूझ रही पत्नियाँ, यहाँ तक कि कुछ आध्यात्मिक जिज्ञासु अपने प्रश्नों के साथ उससे 'परामर्श' करने आने लगे।

अब तक मैं खुद को इस दृश्य से दूर रखने में सक्षम था। उस विशेष शाम को, हम मिट्टी के तेल के दीपक के चारों ओर बैठे हुए अपना 'होमवर्क' कर रहे थे। मेरा बड़ा भाई, इंदु, भी वहाँ बैठा था। हमारा पड़ोसी, कुञ्जा, जो एक नियमित अफीमची था, अपनी दुकान बंद करने के बाद हमारे पास आ बैठा। वह मेरे भाई से बात करना चाहता था, और फिर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यह सब धोखा था। कुञ्जा के अनुसार, वह महिला बस सख्त पिटाई और अपनी विधवा जिंदगी में किसी पुरुष की ज़रूरत जता रही थी।

जटिल समस्याओं के साधारण निष्कर्ष हमेशा मुझे संदेह में डाल देते थे। इसके अलावा, सरला के बारे में मेरी व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार, मैं उसे बहुत आदर की दृष्टि से देखता था; और किसी भी प्रकार की नाटकबाज़ी, धोखा या दोहरे व्यवहार को उसकी सरल जीवनशैली के अनुरूप नहीं मानता था। "चलो उससे मिलने चलते हैं," मैंने सुझाव दिया। "तुम खुद उससे सवाल करके संतुष्ट क्यों नहीं हो जाते?" मेरी आवाज़ में कुञ्जा के मज़ाक पर खीज साफ झलक रही थी।

अब, यह अफीमची कुञ्जा, किसी भी अन्य अफीमची की तरह, चीजों को बड़े व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण से देखता था। उसके तानों को सहना मुश्किल था। वह अपने साहसी व्यंग्य के लिए कुख्यात था, और अक्सर उसके साथ कठोर व्यवहार किया जाता था।
मैं एक उदाहरण उद्धृत करता हूँ।

## जादूगर

हमारे एक मित्र, शंकर, एक युवा व्यक्ति, को एक तांत्रिक माना जाता था, और वह भूत-प्रेतों से संबंधित विषयों में लगा रहता था। इसमें वह शराब और महिलाओं का भरपूर उपयोग करता था। यद्यपि हम उसके साथ अधिक मेलजोल नहीं रखते थे, फिर भी हम उसका कुछ सम्मान करते थे, और अक्सर लोग उससे परामर्श लेते थे जब उन्हें किसी दिशा-निर्देश की आवश्यकता होती थी।

वह हमारे घर में बच्चों का मनोरंजन करने के लिए एक 'शो' दे रहा था। उस शो में सम्मोहन कला का प्रदर्शन भी शामिल था। उसने दर्शकों में से एक लड़की को सम्मोहित किया और उससे अंग्रेजी भाषा में एक पत्र पढ़वाया, जो उसे नहीं आती थी। उसने उसे कुछ अजीब चीजें खाने के लिए भी मजबूर किया, और यहाँ तक कि मोमबत्ती की लौ पर हाथ रखने को कहा, लेकिन उसमें कोई दर्द या प्रतिक्रिया नहीं दिखी। एक सुई उसकी त्वचा में चुभाई गई, फिर भी उसने कोई पीड़ा महसूस नहीं की।

शंकर ने अगला करतब शुरू किया। उसने हममें से प्रत्येक को एक कागज़ का टुकड़ा और एक खाली लिफाफा दिया, और हमें लाल पेंसिल (जो हमें दी गई थी) से किसी भी भाषा में कुछ भी लिखने के लिए कहा। फिर उन पर्चियों को लिफाफों में डालकर बंद कर देने को कहा गया, और उसे सौंपने को कहा। हमने उसके निर्देशों का पालन किया और मुहरबंद लिफाफे उसके पास पहुँचा दिए।

इसके बाद, उसने लिफाफे खोले बिना उनके अंदर लिखी सामग्री को पढ़ना शुरू किया, जब तक कि वह एक लिफाफे पर नहीं पहुँचा जिसने उसे गुस्से से उड़ा दिया। यह लिफाफा कुञ्जा का था। उसमें लिखा था, "तुम एक धोखेबाज़ और दयनीय ठग हो।" अपमान को और बढ़ाने के लिए यह पेंसिल से लिखा गया था। उसने भयंकर आवाज़ में कुञ्जा का नाम पुकारा, जिससे दर्शक चौंक गए। "अगर मैं लाल में लिखी बात पढ़ सकता हूँ," उसने कहा, "तो मैं किसी भी स्याही में लिखी बात पढ़ सकता हूँ। मैं तुम्हारे दिमाग को भी पढ़ सकता हूँ, कुञ्जा। क्या तुम दर्शकों को यह नहीं बताना चाहोगे कि वास्तव में तुम कौन हो, कुञ्जा?"

कुञ्जा इतना हक्का-बक्का रह गया कि एक पंख से भी गिर जाता। मेरे पिता ने स्थिति को संभाला। उन्होंने शंकर से बस इतना कहा, "बस, अब बहुत हुआ। कुञ्जा घर जाएगा और अफीम की एक अतिरिक्त खुराक लेगा। और शंकर, अब तुम्हारे शो खत्म हो गए हैं।"

## सरला पर भूत-प्रेत का साया

यह घटना मेरी स्मृति में ताज़ा थी। मैं कुंजा द्वारा सरला का उपहास उड़ाने को सहन नहीं कर पा रहा था। मेरे भाई के साथ, हम तीनों सरला के घर की ओर चल पड़े, जो वहाँ से केवल सात मिनट की पैदल दूरी पर था।

रात के ग्यारह बज चुके थे। पूरा मोहल्ला शांत पड़ा था। हमें दूसरी मंज़िल तक पहुँचने के लिए दो सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। अपार्टमेंट का प्रवेश द्वार बंद था। हमने दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुलने और सरला की माँ के उसे खोलने के बीच कुछ मिनट बीत गए। इसी दौरान, कुंजा ने एक अत्यंत अशोभनीय और अभद्र टिप्पणी कर दी—"मैंने पहले ही कहा था कि इन युवा विधवाओं को उनकी ज़रूरत एक मजबूत आदमी की होती है, जो उनके बिस्तर में हो।"

ऐसी परिस्थिति में यह एक अत्यंत अशिष्ट और स्तब्ध कर देने वाली टिप्पणी थी। मेरा भाई संकोच में पड़ गया। लेकिन इसके पहले कि वह कुछ कह पाता, सरला की माँ ने दरवाज़ा खोल दिया और हमें अंदर आमंत्रित किया। मेरी ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "सरला अभी कुछ मिनट पहले तुम्हारे बारे में पूछ रही थी और उसने मुझसे कहा था कि मैं दरवाज़ा खुला रखूँ।" उनकी इस बात से हम हैरान रह गए।

हमने देखा कि सरला फर्श पर बिछे एक साधारण बिस्तर पर बैठी थी। उसके बिस्तर पर सुंदर फूलों की मालाएँ और सुगंधित पुष्प बिखरे हुए थे। आने वाले भक्तों ने वे अद्भुत गुलदस्ते उस देवी की संतुष्टि के लिए चढ़ाए थे, जिसके प्रभाव में सरला कथित रूप से थी। सभी जानते थे कि यह रक्त-पिपासु पातालेश्वर काली का प्रभाव था।

मैं ऐसे लोगों के प्रति भाग्यशाली रहा हूँ, जो 'आध्यात्मिक वशीकरण' में होते हैं। उसने अन्य दो को नज़रअंदाज़ करते हुए मेरी ओर देखा, मुस्कुराई और माँग की, "क्यों हिचकिचा रहे हो? आओ, मुझे वह दो जो तुम लाए हो। ओह, तुम कितने प्यारे हो, मेरे बच्चे!"

सरला शाकाहारी थी, लेकिन उसके पति को तली हुई मछली बहुत पसंद थी। घर से निकलने से पहले, मैंने रसोई से एक टुकड़ा मछली फ्राई लिया था और उसे छिपाकर रखा था। मुझे यह निश्चित नहीं था कि सरला सामान्य अवस्था में मिलेगी या अपने वशीभूत रूप में। लेकिन मुझे यह पता था कि यदि उसमें उसके पति की आत्मा है, तो वह इसे अवश्य पसंद करेगा। विधवा होते हुए, वह इसे त्याग ही देती।

उसके इन शब्दों को सुनकर, सभी की विस्मयभरी आँखों के सामने, मैंने मछली का टुकड़ा निकाला और सरला को दे दिया। जैसे ही उसने खाना शुरू किया, कमरे में उपस्थित सभी लोगों की सांसें थम गईं। एक उच्च हिन्दू विधवा किसी भी परिस्थिति में माँसाहार नहीं छू सकती थी, और न ही किसी और के चूल्हे पर बना भोजन खा सकती थी। यह एक कठोर वर्जना थी, और सरला भी विधवा के रूप में इन परंपराओं का पालन कर रही थी।

खाते-खाते, सरला ने अचानक कुंजा को संबोधित किया।

"क्या हाल है, अफ़ीमची महोदय? अब भी अपने मज़ाक में मस्त हो? तुम मानते हो या नहीं? अगर नहीं, तो मैं तुम्हें चुनौती देती हूँ—ऊपर की छत पर जाओ और वहाँ लगे गमले से ओलिअंडर का एक डाली तोड़कर लाओ। हिम्मत है तो जाओ, देख लेते हैं कि तुम्हारी शंका कितनी सच्ची है... और उस आदमी की बात करें जिसकी मुझे ज़रूरत है... क्यों न तुम ही सही, श्री 'पुरुषत्व'? क्या खुद को बहुत बड़ा मर्द समझते हो? जाओ ऊपर, कहती हूँ, जाओ ऊपर! मैं वहाँ तुम्हारा इंतज़ार करूँगी अपनी भूख के साथ, ओ मेरे वीर! हम दोनों का अच्छा समय गुज़रेगा।"

कुंजा हिलने तक की हिम्मत नहीं कर सका। वह पूरी तरह स्तब्ध और भयभीत था। उसके हाथों की उंगलियाँ मेरी बाईं भुजा में गहराई तक धँस चुकी थीं, और वह पूरी शक्ति से मुझसे चिपका हुआ था।

अब बारी मेरे भाई इंदु की थी। सरला ने निर्भीकता से उससे पूछा कि क्या वह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि जीवन की सीमाएँ केवल शरीर तक नहीं होतीं।

मैंने गुप्त रूप से मंदिर से उसके पसंदीदा चमेली के फूल इकट्ठे किए थे, लेकिन अभी तक उन्हें अर्पित करने का अवसर नहीं मिला था। मैंने देखा कि वह मेरे साथियों पर क्रोधित हो चुकी थी, फिर भी मैं आगे बढ़ने की हिम्मत जुटा पाया।

लेकिन जैसे ही मैं कुछ कहने की कोशिश करने लगा, वह मुस्कुराई और मुझे एक गुप्त नाम से पुकारा। यह वही नाम था जिससे मृत कनाई मुझे बुलाता था—और इस नाम से मुझे कभी और किसी ने नहीं पुकारा था।

"आओ, पंडित, आओ। मुझे वे फूल दो। मूर्खों की संगति में मत रहा करो।" उसने अपने हाथ फैलाए और मैंने उसे चमेली के फूल दिए। उसने उन पर दृष्टि डाली और कहा, "चमेली? मेरे लिए? क्यों? यह फूल किसे पसंद थे? और मैं कौन हूँ, ऐसा तुम क्या सोचते हो? तुम्हें मेरे लिए लडिकेनी मिठाई लानी चाहिए थी, जो मुझे पसंद है।"

कनाई को सचमुच लडिकेनी नामक मिठाई बहुत पसंद थी, जो विशेष रूप से बंगाल में बनाई जाती थी। लेकिन सबसे रूढ़िवादी लोग इसे नहीं खाते, क्योंकि तली हुई मिठाइयाँ उनके लिए वर्जित होती हैं। किसी भी स्थिति में, सरला ने इसे कभी नहीं खाया था। विधवा होने के बाद, वह केवल एक बार सादा भोजन करती थी।

मैंने साहस करके पूछा, "क्या तुम लडिकेनी खाओगी?"

"क्यों नहीं?" उसने उत्तर दिया, "मुझे किसी और से भ्रमित मत करो। तुम उन मूर्खों में से नहीं हो। जितना हो सके, उनसे दूर चले जाओ। बहुत दूर!"

इसी क्षण, उसने शौचालय जाने की इच्छा व्यक्त की और मुझसे सहायता माँगी। मानसिक तनाव के कारण वह शारीरिक रूप से बहुत दुर्बल हो चुकी थी। मैंने उसका हाथ पकड़कर सहायता की। मुझे महसूस हुआ कि उसकी माँ समेत अन्य लोगों ने इस पर असहमति जताई, लेकिन मुझे कोई भय नहीं था।

लौटने पर, जैसे ही वह बिस्तर पर बैठी, वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। फिर वह कठोर, अश्लील गालियाँ देने लगी, जो इतनी भद्दी थीं कि सरला जैसी भद्र महिला के लिए कल्पना से परे थीं।

इस बार, उसका क्रोध मेरे भाई पर था। उसके तकिए के नीचे रखी भगवद्गीता ने उसे क्रोधित कर दिया था। मेरे भाई ने उसे सहायता के उद्देश्य से वहाँ छुपा दिया था, लेकिन उसकी प्रतिक्रिया भयानक थी। पुस्तक तुरंत बाहर फेंकनी पड़ी।

कुछ महीनों तक सरला पूरी तरह इस रहस्यमयी शक्ति के प्रभाव में रही। कभी-कभी वह अपनी सामान्य अवस्था में लौट आती, लेकिन अधिकतर समय वह 'वशीकरण' की स्थिति में ही रहती। लोग उसे देवी की तरह देखने आते, उससे सलाह लेते, और जब वह चाहती, तब ही उत्तर देती। जब वह सामान्य होती, तो स्नान करती, कपड़े बदलती और सामान्य रूप से भोजन करती। मैं उसके पास जाता, और वह मेरा हाथ पकड़कर अपने 'रोग' के बारे में बात करती।

एक बार मैंने साहस करके उससे पूछा कि उसके लिए सबसे अच्छा उपचार क्या होगा।

"तुम ही उपचार हो," उसने आश्चर्यजनक उत्तर दिया।

"लेकिन तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगे," उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा, और फिर भावुक होकर बोली, "ओह, तुम कितने प्यारे हो!"

मैं इतना चकित था कि कुछ कह नहीं सका, लेकिन मैं आज भी उसकी आँखों में उस ज्वाला को याद कर सकता हूँ।

# अपराध और दंड

मैंने अपनी भगवा-वस्त्रधारी देवी से परामर्श किया। स्वाभाविक रूप से, उन्हें इस मामले की जानकारी थी। वे उस परिवार को भी जानती थीं।

"श्री दास एक श्रद्धालु आत्मा थे," उन्होंने समझाया। "वे तंत्र का अभ्यास करने के इच्छुक थे। उन्होंने गूढ़ साधनाओं में हाथ आज़माया, लेकिन उनके पास कोई गुरु नहीं था, न ही पर्याप्त प्रशिक्षण। स्वाभाविक रूप से, वे उन शक्तियों का शिकार बन गए, जो ऐसे माध्यमों की तलाश में रहती हैं ताकि वे अपनी कुटिल योजनाओं को अंजाम दे सकें। यह दुर्भाग्यपूर्ण है," उन्होंने धीरे से कहा। "बहुत दुर्भाग्यपूर्ण।"

"क्या इतना दुर्भाग्यपूर्ण है?" मैंने पूछा। "श्री दास एक अच्छे और सुखी व्यक्ति थे। वे शांति से जाना चाहते थे। उनकी मंशा भी अच्छी थी। अगर उन्होंने कुछ गलतियाँ कीं, तो माँ को उन्हें और उनके परिवार को इस तरह दंडित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन्हें उनकी रक्षा करनी चाहिए थी।"

"माँ के लिए न तो कोई पुरस्कार है और न ही कोई दंड," उन्होंने समझाया और आगे कहा, "वह तुमसे, मुझसे, कुत्ते और मक्खी से समान प्रेम करती हैं। वह उस बाघ से भी प्रेम करती हैं जो हिरण का शिकार करता है, और हिरण से भी। उन्होंने रावण से उतना ही प्रेम किया जितना राम से। जब यशोदा ने बालक कृष्ण को दंडित किया था, तब भी क्या उनका प्रेम तनिक भी कम हो गया था? उनकी लीला रहस्यमयी है, जिसे भेद पाना असंभव है। और हम यह निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं कि जो कुछ वे कर रही हैं, उसमें किसी का भला नहीं हो रहा? उनके रहस्य वास्तव में उलझे हुए नहीं हैं। बल्कि, हम स्वयं उन्हें रहस्य बना देते हैं। हम हर चीज़ को अपने मानकों से मापते हैं, जबकि हमारे मानक उनके मानकों से भिन्न हैं। जब हम किसी दूरस्थ तारे से प्रकाश की गति को मापते हैं, तो हम वही पैमाना नहीं अपनाते जो ट्रेन की गति मापने के लिए करते हैं, या क्या करते हैं? वह समस्त दृश्य और अदृश्य जगत की माँ-शक्ति हैं। उनके मानक, उनके तरीके, उनका तर्क हमारे सीमित गणना-क्षेत्र से बाहर हैं।"

"उनके मानकों तक पहुँचना चाहते हो? तो उन्हें खोजो, अपने भीतर उनसे मिलो। तब तुम्हें पता चलेगा कि वे इस तथाकथित वास्तविकता से कहीं अधिक वास्तविक हैं, तुम्हारे तर्क से कहीं अधिक तर्कसंगत हैं। अधिकांश रहस्य, जिन्हें हम समझने में असफल रहते हैं, वास्तव में हमारी अपनी मानसिक उलझनों का प्रतिबिंब होते हैं। यह हमारी तर्क-शक्ति की सीमाओं को स्वीकार करने का एक प्रमाण है। हम त्रि-आयामी तर्क को उन घटनाओं पर लागू करने की गलती करते हैं, जो भिन्न आयामों में घटित होती हैं। रहस्य वहीं से शुरू होता है, जहाँ तर्क समाप्त हो जाता है। तर्क के अंत होते ही, हम उसी बच्चे की तरह रोने लगते हैं, जिसने अपना रंगीन गेंद खो दिया है। गेंद वहाँ है—वह महसूस करता है—परंतु यह वहाँ नहीं है—वह उसे छू नहीं सकता। यही तर्क का विलाप है, जिसे हम 'रहस्य' कहते हैं।"

"स्वयं के प्रकाश से ही माँ के मार्ग प्रकट हो सकते हैं। फिर हम उनकी 'लीलाओं' को सुलझाने के लिए इतनी तर्कबुद्धि क्यों लगाए? उनके सामने झुको, उनसे प्रेम और कृपा माँगो। केवल वे ही अच्छे और बुरे के परम रहस्यों को जानती हैं।"

"लेकिन सबसे पवित्र हृदय भी, यदि कर्तव्य की गलत व्याख्या कर ले, तो अपने श्रद्धेय प्रिय को नष्ट कर सकता है—जैसे मूर्ख राजा का अत्यंत वफादार बंदर। तुम यह कथा जानते ही हो। वह प्रशिक्षित बंदर राजा की नींद की रक्षा के लिए तैनात था। जब एक मक्खी बार-बार राजा को परेशान करने लगी, तो वफादारी में अंधे उस बंदर ने मक्खी को मारने के लिए तलवार चला दी—और राजा का सिर धड़ से अलग कर दिया!"

"यहाँ तक कि सबसे धार्मिक व्यक्ति भी गलत दिशा पकड़ सकते हैं। अनेक शक्तियाँ तत्पर रहती हैं, जो भक्त को भटकाने का प्रयास करती हैं। इसी कारण, आध्यात्मिक मार्ग में भी गुरु और मार्गदर्शक का चुनाव अत्यंत सावधानीपूर्वक करना चाहिए। श्री दास आत्ममुग्ध साधक थे, जो अपने रहस्यों को स्वयं तक ही सीमित रखते थे, और अन्य अनुभवी मार्गदर्शकों से कभी परामर्श नहीं लेते थे। इसी कारण उन्हें यह पीड़ा झेलनी पड़ी। अब, जब वे सूक्ष्म लोक में भी असफल हो चुके हैं, तो उन्हें कठोर यातनाओं का सामना करना पड़ रहा है। मुझे सरला और उसके पुत्र कनाई की चिंता हो रही है।"

"तो फिर उनकी सहायता क्यों नहीं करते?" मेरे शब्द स्वतः ही फूट पड़े, और मेरी आवाज़ पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं रहा।

उन्होंने मेरी ओर देखा, और हल्के से मुस्कुराते हुए बस इतना कहा कि 'कुछ किया जाना चाहिए'। और फिर, उनके चेहरे पर एक दीप्तिमान मुस्कान बिखर गई।

## ओबिया सत्र

जब वह सरला के घर पहुँची, तो उसने देखा कि पहले से ही एक संन्यासी-ओझा (ओबिया-पुरुष) सरला पर से भूत-प्रभाव हटाने की तैयारी कर रहा था। हम सभी इस प्रक्रिया को ध्यान से देख रहे थे।

वह ओझा एक भारी-भरकम, अधेड़ उम्र का पुरुष था। यदि वजन से उपचार संभव होता, तो वह निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ समाधान होता। उसकी तेज़ चमकती आँखों, सिर पर ऊँचाई तक गुंथे हुए बालों और शरीर पर लिपटे असंख्य मोतियों की मालाओं को देखकर वह तंत्र के किसी भी शब्दकोश में दर्ज सबसे प्रभावशाली साधक लग सकता था। उसके जप अस्पष्ट और एक प्रकार के अव्यवस्थित स्वर में उच्चरित हो रहे थे। इसकी निरर्थकता के बावजूद, उपस्थित लोग उसके प्रभाव में आ गए थे।

फिर उसने घोषणा की कि यह आत्मा अत्यंत शक्तिशाली है और यदि किसी भी प्रकार की त्रुटि हुई, तो उसका परिणाम उसके अपने जीवन और सुरक्षा के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। इस मामले में वह अंततः सही साबित हुआ। उसने श्रेष्ठ भोजन और उत्तम वस्त्रों की माँग की, और जब ये लाए गए, तो उसने अपने अनुष्ठान आरंभ किए।

उसने कई लोगों को सरला को पकड़ने और उसे नियंत्रित रखने का आदेश दिया। यह किया गया, और फिर अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। रोगी और ओझा दोनों एक वृत के भीतर बैठे थे। रोगी का आचरण अत्यंत शालीन था, लगभग विनम्र। ओझा अपने गूढ़ मंत्रों का उच्चारण कर रहा था। इस बीच, कमरे में धूप और जड़ी-बूटियों के जलने से धुंआ भर गया था।

सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था, सिवाय इस तनाव के कि सरला को अर्धनग्न अवस्था में बैठाया गया था। एक प्रतिष्ठित परिवार के लिए यह स्थिति असहज थी, लेकिन कोई भी हस्तक्षेप करने का साहस नहीं कर सका। अलौकिक घटनाओं की अस्पष्टता असामान्य सहिष्णुता और क्षमा की माँग करती है। मनुष्य प्रायः भय और पीड़ा के कारण श्रद्धालु बनता है। केवल कुछ ही लोग ऐसे होते हैं, जिनकी स्वाभाविक भक्ति उनके चारों ओर दिव्यता का प्रसार करती है। ऐसे ही व्यक्ति संत, अवतार और देहधारी देवता माने जाते हैं।

परिवार के लगभग पाँच सदस्यों के अतिरिक्त, हम दो ही बाहरी व्यक्ति थे। चूँकि भगवा-वस्त्रधारी देवी का उच्च सम्मान था, मेरी उपस्थिति को भी चुपचाप सहन कर लिया गया।

इस बीच, सरला का शरीर अत्यधिक पसीने से तरबतर हो गया, और वह अपने शरीर पर पड़े हल्के कपड़े को खींचने लगी। शीघ्र ही, उसने जो पतला वस्त्र पहना था, वह पूरी तरह हट गया, लेकिन चूँकि वह पीठ के बल लेटी थी, इसलिए वह वस्त्र अब उसके नीचे की चादर का हिस्सा बन गया था।

अब उसका शरीर पूर्णतः नग्न था, और ओझा ने एक जल-पात्र से उस पर पानी डालकर उसे स्नान कराने की प्रक्रिया शुरू की। एक विशाल तांबे का घड़ा पानी से भरा हुआ पास रखा था।

अचानक, सरला उछलकर खड़ी हो गई और उस बड़े तांबे के पात्र को दोनों हाथों से पकड़कर अपने सिर के ऊपर उठा लिया। फिर वह बालकनी की ओर दौड़ी और पूरे पात्र को, उसके भीतर के पानी सहित, आँगन में फेंक दिया। यह सब कुछ इतनी तीव्र गति से हुआ कि हम अवाक् रह गए, विशेष रूप से यह देखते हुए कि इस कार्य में असाधारण बल की आवश्यकता थी।

इस बीच, जब उसने जल-पात्र उठाया और उसे नीचे फेंका, तब उसने ओझा को इतनी ज़ोर से लात मारी कि वह भारी-भरकम आदमी हवा में उड़ता हुआ फर्श पर जा गिरा। उसके हाथ फैल गए, और उसका चेहरा सीधे पत्थर की ज़मीन से टकराया। उसकी नाक से रक्त बहने लगा।

अब सरला, जो कि पूरी तरह नग्न थी और उन्मत्त लग रही थी, अपशब्दों की बौछार करने लगी। उसकी गालियाँ इतनी भद्दी और उच्छृंखल थीं कि हमारे लिए विश्वास करना कठिन था कि यह वही सरला थी, जो अपनी शालीनता और मधुर वाणी के लिए जानी जाती थी। वह एक अजीब, भारी, लगभग पुरुष जैसी आवाज़ में चिल्ला रही थी, जो श्री दास की आवाज़ जैसी प्रतीत होती थी।

पूरा अनुष्ठान अव्यवस्थित हो चुका था। उसने फर्श पर गिरे ओझा के बाल पकड़ लिए और उसके गले को इतनी कसकर दबाने लगी कि उसके मुँह से झाग निकलने लगा। उसने हम पर भी शाप और धमकियाँ बरसाईं कि हमने इस 'ठग' को बुलाकर उस शक्ति से टकराने का दुस्साहस किया, जिससे हममें से कोई भी सामना करने की हिम्मत नहीं रखता था।

इसी क्षण भगवा-वस्त्रधारी देवी चुपचाप, बिना किसी शोर-शराबे के, इस अराजकता के बीच प्रवेश कर गईं।

उन्होंने शांत, दृढ़ भाव से सरला का हाथ पकड़ा और उससे उसी तरह बात करने लगीं, जैसे वे मृत दास से कर रही हों।

"बोलो, दास भाई," उन्होंने कहा, जिससे सभी सुन सकें, "तुम इतने व्यथित क्यों हो? हमें क्या करना चाहिए कि तुम्हें इस भयानक स्थिति से मुक्त किया जा सके? हम तुम्हारी सहायता करना चाहते हैं, लेकिन हमें पता नहीं कि कैसे करें। तुम्हें इस तरह पीड़ित होने की कोई आवश्यकता नहीं, और दूसरों को भी पीड़ा देने की कोई ज़रूरत नहीं। तुमने कभी ऐसा करना पसंद नहीं किया। तुम अपने आसपास के लोगों के प्रति हमेशा दयालु रहे हो। तुम इतने क्रोधित क्यों हो गए कि तुम्हें उस स्त्री पर यह विपत्ति डालनी पड़ी, जिसे तुमने इतना प्रेम किया था? अब भरोसा करो, मुझ पर विश्वास करो। अपनी पीड़ा बताओ, और हमें समाधान सुझाओ।"

उनके शब्दों ने जादू का काम किया।

"इस धूर्त को तुरंत यहाँ से निकालो," 'दास' ने माँग की।

और निःसंदेह, भयभीत ओझा को वहाँ से भागना पड़ा।

शीघ्र ही, सरला को शांति मिली और वह जैसे अत्यधिक थकावट के कारण बेहोश होकर गिर पड़ी। भगवा-वस्त्रधारी देवी के संकेत पर सभी लोग चले गए।

मैं भी जाने ही वाला था, जब उन्होंने मुझे रोक लिया और अपने पास सहायक के रूप में रहने को कहा। उन्होंने मुझसे गायत्री मंत्र का जाप करने के लिए कहा। फिर धीरे-धीरे उन्होंने नौ दीपों का एक चक्र बनाया और सरला को ध्यानपूर्वक फर्श पर सीधा लिटा दिया। अब उसका शरीर सीधे धरती को स्पर्श कर रहा था। उनका सिर देवी की गोद में टिका था, जो सुखासन में बैठी थीं। हालाँकि उनके पैर दूर थे, फिर भी उन्होंने ध्यानपूर्वक सरला के पैर को अग्नि-चक्र के भीतर रखा।

मैं लगातार मंत्रोच्चार कर रहा था और अग्नि-कुंड में औषधियाँ डाल रहा था। धीरे-धीरे सरला जीवन के संकेत देने लगी। देवी ने अब उसे उल्टा कर दिया और फिर उसके स्वाधिष्ठान चक्र पर बैठ गईं। उन्होंने धीरे-धीरे दबाव बढ़ाया, जब तक कि सरला कराह नहीं उठी। तभी उसके शरीर से रक्त की पतली धार बह निकली—उसका मासिक धर्म फिर से प्रारंभ हो गया। अंततः, उसकी चेतना लौट आई। वह पुनः अपने मूल स्वरूप में लौट आई थी।

काफी समय बाद, उसने पुरुष स्वर में कहा, "मुझे मेरा पुराना वस्त्र चाहिए... वहाँ, वहाँ... अलमारी में... बिना अंतिम संस्कार के श्राद्ध नहीं हो सकता... पहले मेरा दाह-संस्कार करो।"

"जाओ और अपना वस्त्र स्वयं खोजो," भगवा-वस्त्रधारी देवी ने आदेश दिया।

सरला उठी, अलमारी की ओर गई और वही कपड़ा निकालकर लाई, जो पहले गंगा के किनारे छोड़ा गया था।

भगवा-वस्त्रधारी देवी ने सरला को अपनी गोद में बैठा लिया, जैसे कोई माता अपने मृत संतान को संभालती है। जटाएँ अब स्वतः ही सुलझने लगीं।

अग्नि जल रही थी। वह कपड़ा अग्नि में डाला गया, और जैसे ही वह जलकर भस्म हुआ, सरला फिर से बेहोश हो गई। भगवा-वस्त्रधारी देवी ने अब धीरे-धीरे उसे उसके अपने वस्त्र में लपेट दिया।

मैंने सरला से एक प्रश्न पूछना चाहा, लेकिन मैंने उसे कभी नहीं पूछा। वह क्षण किसी भी प्रश्न से परे था।

## कब्रिस्तानों में जुगनू

मैंने बार-बार भगवा-वस्त्रधारी देवी से इस घटना के रहस्य के बारे में पूछा। और हर बार उन्होंने केवल एक ही बात दोहराई—"तंत्र के दो पक्ष होते हैं। एक भविष्य की ओर देखता है। अतीत के बारे में सोचना समय और जीवन की धारा के विरुद्ध जाना है; यह प्रगति को रोकता है और समय को प्रतीक्षा में डाल देता है। समय विपरीत शक्तियों के टकराव से पीड़ित होता है। यह हमेशा अतीत से भविष्य की ओर बहता है। वर्तमान का जन्म होते ही अतीत समाप्त हो जाता है, और स्वयं वर्तमान भी उसी क्षण नष्ट हो जाता है, जब वह जन्म लेता है। वास्तव में वर्तमान जैसी कोई चीज़ नहीं होती। यह एक भ्रम है—एक ऐसा ठहराव, जिससे हम अतीत और भविष्य को देख सकते हैं, लेकिन यह ठहराव भी केवल एक आभासी बिंदु मात्र है, जो वास्तव में मौजूद ही नहीं। वर्तमान केवल एक अनुमान है।"

"तंत्र एक महान शिक्षा है, जो अहंकारहीनता की ओर ले जाती है। यह शक्ति का वह भंडार है, जिसका उपयोग केवल भविष्य की भलाई के लिए किया जाना चाहिए। दास ने इस पर कार्य नहीं किया। वह अतीत में उलझा रहा। हमारे शत्रु

अतीत में होते हैं। जितना हम उनके बारे में सोचते हैं, उतना ही वे हम पर हावी होते जाते हैं। अतीत की स्मृतियाँ वर्तमान की ऊर्जा पर पलती हैं। अतीत को अतीत में ही छोड़ देना चाहिए।"

"भविष्य की ओर जियो। भविष्य के लिए सोचो, और भविष्य के लिए कार्य करो। वहीं उन्नति है, वहीं आनंद है। जीवन भविष्य में है। अतीत मृत है। भविष्य आशा है; अतीत निराशा है। अतीत में आनंद लेना वैसा ही है, जैसे चिता की रोशनी में नृत्य करना। कब्रिस्तान में जुगनुओं का पीछा करने का कोई लाभ नहीं। जीवन अतीत की कब्र से बाहर रहता है। अतीत में बंधे रहने से केवल जड़ता, मूर्खता और व्यर्थता ही प्राप्त होती है।"

"यही गलती दास की साधना में थी। उसे न शांति मिली, न दिशा। वह गलत मार्ग पर चला गया। उसके अतीत की शक्तियाँ इतनी प्रबल थीं कि वे उसे विस्मृति के गहरे अंधकार में खींच ले गईं। और वहाँ से कोई वापसी नहीं होती।"

"यदि सरला अपने भविष्य को खोज लेती है, तो दास अपने अतीत में विलीन हो जाएगा। अतीत और भविष्य को कभी मिलाया नहीं जा सकता। कोई भी प्रयास जो इस दिशा में किया जाएगा, केवल भ्रम और अशांति को जन्म देगा, जैसा तुमने अभी देखा।"

"धाराएँ एक ही दिशा में बहती हैं, जिससे जल शुद्ध बना रहता है। यही कारण है कि जब माला पर जप किया जाता है, तो उसे एक निश्चित बिंदु से दूसरे बिंदु तक ले जाया जाता है; कभी भी विपरीत दिशा में नहीं। यदि इस प्रक्रिया को उल्टा किया जाए, तो कष्ट अपरिहार्य हो जाता है। समय एक मुक्त प्रवाह है। कभी भी समय की स्वतंत्रता में बाधा मत डालो; क्योंकि यह संभव नहीं है। और यदि तुम इसे रोकने की चेष्टा करोगे, तो स्वयं नष्ट हो जाओगे। तुम भ्रमित हो सकते हो।"

"तंत्र, जिसे मैं तुम्हारे मन में स्थापित करने का प्रयास कर रही हूँ, तुम्हें एक नया मनुष्य बनाएगा—एक पुनर्जन्मा व्यक्ति, एक द्विज (दूसरी बार जन्मा, एक आत्मबोध प्राप्त ब्राह्मण)। वे केवल सकारात्मकता में ही प्रवृत्त होते हैं—भविष्य और उन्नति की ओर। मुझसे जुड़े रहो। भविष्य से जुड़े रहो। सरला अब एक मुक्त स्त्री है।"

ज्ञान के सभी स्रोतों में से भगवा-वस्त्रधारी देवी को जिज्ञासा और गपशप सबसे अधिक अरुचिकर लगती थी। सरला ने अपनी पूरी आयु 81 वर्ष तक पूर्णता के साथ जी, अपने पोते-पोतियों से घिरी हुई। यह घटना 45 वर्ष पूर्व की थी।

बाद के वर्षों में मैंने इन घटनाओं को बार-बार स्मरण करने का प्रयास किया। भौतिकवादी अपने तर्कों की कठोरता में फँसे रहते हैं और ऐसे तथ्यों को मापने के लिए अपनी अनुभूतियों को ही प्रमाण मानते हैं, जो उनके तर्क की सीमाओं से परे होते हैं। स्वाभाविक रूप से, वे मूल रहस्यों को कभी नहीं सुलझा पाते। वे ऐसी घटनाओं को 'मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ' कहकर व्याख्यायित करते हैं। वे मुझसे कह सकते हैं कि जो कुछ मैंने देखा, वह या तो मेरी कल्पना थी, या भ्रम, या सीधा छलावा।

लेकिन मैं यह निश्चित रूप से जानता हूँ कि ऐसा नहीं था। यह घटना घटी थी, और मैंने इसे प्रत्यक्ष देखा था। यह अनुभव उतना ही वास्तविक था जितना कि वह टाइपराइटर जिसे मैं उपयोग कर रहा हूँ, वह शर्ट जिसे मैं पहन रहा हूँ, वह चित्र जो दीवार पर लटका है, वह बिल्ली जो भोजन के लिए गिड़गिड़ा रही है, या वह रसोई जिसमें से भोजन की सुगंध आ रही है। इसे नकारना उस शुतुरमुर्ग जैसी मूर्खता होगी, जो अपने सिर को बालू में गाड़कर यह सोचता है कि खतरा टल गया। लेकिन इसे समझाने का प्रयास करना स्वयं को निराशा की ओर धकेलने जैसा होगा।

हमारी मापने की इकाइयाँ केवल तीन-आयामी दुनिया में कार्य करने के लिए बनाई गई हैं। लेकिन एक चौथा, पाँचवाँ, और इसी प्रकार सातवाँ भी है। हाँ, यह सत्य है। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच ऐसी चीजें हैं, होरेशियो, जिन्हें स्वीकार करना ही

बुद्धिमानी है, और उनके साथ एक स्वस्थ संचार स्थापित करने का प्रयास करना ही विवेक है। ये शक्तियाँ मुख्य रूप से सहायक और दयालु होती हैं—क्षमाशील, माफ करने वाली और उदार।

"गृहस्थ जीवन में कई अनुष्ठान होते हैं," भगवा-वस्त्रधारी देवी ने एक बार मुझसे कहा था। "तुम्हारे पिता तुम्हें उन विधियों के बारे में बताएँगे, जो तब की जाती हैं जब घर बनाए जाते हैं, नहरें और तालाब खोदे जाते हैं, वृक्ष काटे जाते हैं, नाव बनाई जाती है, विवाह संपन्न होते हैं, बीज बोए जाते हैं, और नवजात शिशु की देखभाल की जाती है। इन अलौकिक शक्तियों को आह्वान किया जाता है, उनसे संवाद स्थापित किया जाता है, और उन्हें इन मानवीय प्रयासों में अपनी कृपा देने के लिए प्रेरित किया जाता है, क्योंकि इन गतिविधियों से स्वतः ही उनकी शांति भंग होती है।"

बाद के वर्षों में मुझे एहसास हुआ कि वे कितनी सही थीं।

आध्यात्मिक इतिहास की आदिकालीन भोर से ही मनुष्य ने हर संभव माध्यम से अलौकिक संसार से संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया है। जिन देवताओं और दिव्य शक्तियों की हम कल्पना करते हैं और जिनकी हम आराधना करते हैं, वे हमारी उस चेतन चेष्टा की उपज हैं, जो हमें अज्ञात लोक के निकट लाने की दिशा में की जाती रही है। हम इन शक्तियों को अपनी जीवन-प्रक्रियाओं को प्रभावित करने, नियंत्रित करने और संचालित करने वाला मानते हैं, भले ही ये शक्तियाँ मूल रूप से अदृश्य हों। क्या जीवन वास्तव में दृश्य और अदृश्य के बीच फैला हुआ एक संदेहास्पद ज्ञान का अस्थायी विस्तार नहीं है?

आधुनिक 'वैज्ञानिक' सोच ने इस क्षेत्र को चुनौती दी है और इस विषय को समझने के लिए कुछ तर्कसंगत आधार खोजने का प्रयास किया है, इस प्रकार 'हवा में गूँजती कल्पनाओं को एक ठोस ठिकाना और एक नाम प्रदान किया है।' इस क्षेत्र में रुचि रखने वालों के लिए निम्नलिखित विद्वान उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं: ए. ओस्ट्रेंडर, ए. इवानोव, ओ. बैगनल, डब्ल्यू. कैरिंगटन, ए. डेविड-नील, एफ. एडवर्ड्स, ई. गैरेट, ए. नाइवोव, एम. पी. रीव्स, जे. बी. राइन आदि। उनकी प्रकाशित कृतियाँ हमें एक अज्ञेय क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर देती हैं। उनके विचार सुनना रोचक है, विशेष रूप से उन अवधारणाओं के संदर्भ में, जिन्हें आमतौर पर संदेह और अज्ञानवश अस्वीकार कर दिया जाता है, और जो अर्जित ज्ञान के प्रति एक प्रकार की संकीर्ण विश्वास-धारणा से उत्पन्न होती हैं। उनका मत है कि अब समय आ गया है कि हम अलौकिक को लेकर अपनी तथाकथित स्वीकृत अवधारणाओं की पुनः जाँच करें।

हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि तंत्र एक प्रमाणित विज्ञान की भाँति व्यावहारिक अनुभव, प्रत्यक्ष व्यक्तिगत साधना और अभ्यास की माँग करता है। केवल सैद्धांतिक चर्चाएँ तंत्र में कोई महत्व नहीं रखतीं।

हम स्वयं अपने ही तर्क की श्रृंखला के कैदी हैं, और जब यह तर्क आगे बढ़ाया जाता है, तो यह हमारे अहंकार का ही विस्तार बन जाता है।

लेकिन मैंने उस अनुष्ठान के दौरान भगवा-वस्त्रधारी देवी को एक पूर्णतः भिन्न प्रकाश में देखा। यह 'ओबिया' था, जादू था, टोना-टोटका था, सम्मन था—जो चाहे कह लो। अलौकिक शक्तियों द्वारा किए गए किसी अनर्थ को ठीक करने के लिए उन्हीं शक्तियों का आह्वान करना उतना ही पुराना है जितना कि ऋग्वेद में शुनःशेप की कथा या होमर के इफिजेनिया का बलिदान।

क्यों?

रोम और कार्थेज के इतिहास में असंख्य मानव बलिदानों की कहानियाँ भरी पड़ी हैं, उन संस्कृतियों की बात तो छोड़ ही दें जिन्हें यूरोप की विस्तारवादी लिप्सा ने बिना अधिक विचार किए नष्ट कर दिया। लेकिन सिर्सी, मेडूसा, क्लाइटेमनेस्ट्रा, कसांद्रा के बारे में क्या?

यहाँ तक कि यीशु मसीह का पवित्र जीवन भी एक माँ द्वारा देखे गए पुत्र-बलिदान की गाथा के साथ प्रतिस्थापित कर दिया गया।

यहूदी, मुस्लिम और ईसाई धर्मों में अब भी इब्राहीम, ईद, और यूकरिस्ट की गूँज सुनाई देती है।

बलिदान, विशेषकर रक्त-बलिदान, का प्रारंभ मानव-बलिदान के साथ हुआ था, और इन अनुष्ठानों को प्रतीकात्मक रूप में संरक्षित रखा गया है, जो किसी न किसी रूप में आज भी पुराने संस्कारों की नवीन परंपराओं के माध्यम से जीवित हैं (देखें पीवाईएक्स संस्कार)।

## अंधकार के निवासी

मेरी अपनी छोटी बहन भी ऐसे ही एक 'अटैक' का शिकार हुई थी। लेकिन यह तब हुआ जब भगवा-वस्त्रधारी देवी अब हमारे बीच नहीं थीं, कम से कम भौतिक रूप में।

लेकिन मैं वहाँ था; और मैंने स्थिति पर नियंत्रण कर लिया था। उसकी बालियाँ बहुत लंबी थीं, और हालाँकि वह केवल 5 फुट 3 इंच की थी, वह गोल-मटोल, प्यारी और सबकी प्रिय थी, विशेष रूप से जब वह माँ बनी।

उसका पति एक सरल और नेक इंसान था, जो हमेशा दूसरों की मदद करता था। वह अपने छोटे भाई के साथ अपने पुश्तैनी घर में रहता था। उसकी सहज सौम्यता और मेरी बहन की अत्यंत मिलनसार प्रवृत्ति के कारण, वे सभी एक साथ खुशी-खुशी रहते थे।

घटना तब हुई जब वह तीसरी बार गर्भवती थी। वह घर की तीसरी मंज़िल पर अपने कमरे की सफाई कर रही थी। वह एक खुली, सुनसान जगह की ओर देख रही थी, जहाँ एक पुराने नीम के पेड़ के नीचे एक मुस्लिम संत की कब्र थी। उसके पास कुछ और कब्रें भी बिखरी हुई थीं, जैसा कि अनाम कब्रिस्तानों में आमतौर पर होता है।

बरसात के बाद की संध्या की सुंदरता में वह इतनी खो गई थी कि अनजाने में बालकनी की रेलिंग से झूल गई और शायद अपने लंबे बालों को सहलाते हुए कोई धुन गुनगुनाने लगी। प्राचीन वृक्ष की शाखाएँ उसके प्रयासों पर छाया कर रही थीं, और नीचे का कब्रिस्तान गंभीर और मौन दिखाई दे रहा था। संध्या—दिन और रात की सीमा, मनुष्य और प्रकृति की सीमा—उस समय चुनी गई थी, जब एक घर और एक कब्रिस्तान की सीमा पर एक स्त्री अपने बाल संवार रही थी, जिसने एक संतान को जन्म दिया था और दूसरी को जन्म देना बाकी था।

तंत्र साधना में संध्या काल, संध्या भाषा, संधि-पूजा अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यह वह समय होता है जब समय के प्रवाह को संतुलित करने के लिए विशेष अनुष्ठानों की आवश्यकता होती है। यह एक वातावरण से दूसरे वातावरण में प्रवेश करने का क्षण होता है। योगी इस समय विशेष सतर्क रहते हैं। ये संध्या की शक्तियाँ ही छायालोक की अधिष्ठात्री होती हैं।

संकेत गंभीर और अशुभ थे—जैसे भाग्य को चुनौती देना। लेकिन वह अभागी माँ इस स्थिति से पूरी तरह अनजान थी।

अचानक, किसी अज्ञात, विध्वंसक शक्ति ने उसे रेलिंग के पार खींच लिया, और उसका अचेत शरीर नीचे फेंक दिया गया। बाद में उसे संत की कब्र पर पड़ा हुआ पाया गया।

मुझे इस घटना का पता लगभग चार दिन बाद चला। इस दौरान वह कभी-कभी होश में आती, लेकिन फिर अपने अजीब, अस्पष्ट शब्दों में खो जाती। बार-बार वह अपनी जवानी, अपने लंबे बालों, अपने पति के प्रति प्रेम और अपने अजन्मे बच्चे की बातें करती। बार-बार वह परिवार को कब्रों की निकटता के प्रति लापरवाह होने के लिए धमकाती, और आसपास की आत्माओं को हर तरह के अपमानजनक शब्द कहती। बेचारी! उसे शाम के समय अपने बाल संवारने और संत की समाधि के शांत स्थान से दूर रहने में थोड़ी और सावधानी बरतनी चाहिए थी।

चौंके हुए परिजनों ने कई उपाय खोजे। डॉक्टर लगातार उसके उपचार में लगे रहे। उसे भारी मात्रा में दवाओं के प्रभाव में गहरी नींद में रखा गया। लेकिन उसकी बड़बड़ाहट फिर भी जारी रहती, हालाँकि धीमी हो चुकी थी। इसका मतलब था कि उसका मस्तिष्क अत्यधिक उत्तेजित अवस्था में था, और किसी भी समय कोई रक्तवाहिका फट सकती थी। सभी लोग घबराए हुए थे।

मैं घर से दूर एक साधना में लीन था, लेकिन खबरें मुझ तक पहुँच रही थीं। जब स्थिति गंभीर हो गई, तो मैं घर आया।

जैसे ही मैंने उसे देखा, उसने मुझ पर प्रतिक्रिया दी और शांति से मुझसे दूर जाने के लिए कहा। वह मुझसे ऐसे बात कर रही थी जैसे मैं कोई अजनबी था। मैंने उसे छुआ तक नहीं। मैं कब्रिस्तान में चला गया।

वहाँ, मैं कब्रों के बीच बैठ गया और साधना आरंभ कर दी। मैं अपने स्थान से तब तक नहीं हटा जब तक कि मेरी बहन पूरी तरह होश में नहीं आ गई। इसमें मुझे आठ दिन से अधिक का समय लग गया।

मैंने जो किया, वह इसलिए किया क्योंकि भगवा-वस्त्रधारी देवी स्वयं मुझे मेरे शिक्षण के लिए ऐसे ही एक कब्रिस्तान में ले जाती थीं। वह स्थान सरला के घर के पास स्थित था। मैं आज भी भारत और अपने जन्मस्थान जाने पर उस स्थान की यात्रा करता हूँ।

मुझे कभी भी जीवन के परे की आत्माओं में कोई विशेष रुचि नहीं थी। मेरे पिता ने मुझे सिखाया था कि वे सभी हमें आशीर्वाद देने और हमारी सहायता करने के लिए हैं। वे केवल शांति चाहते हैं और इतना ही कि उन्हें इस शांति में रहने दिया जाए।

अक्सर हम अपने स्वार्थ के लिए उनकी सहायता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, ताकि जीवन में वे चीजें प्राप्त कर सकें जो वे स्वयं छोड़ चुके हैं। हम उन्हें उनके अपने अस्तित्व में शांतिपूर्वक रहने नहीं देते।

अक्सर हम चाहते हैं कि वे हमारी इच्छानुसार कार्य करें, जो उन्हें पसंद नहीं आता, और इस प्रकार हम उनकी शांति भंग कर देते हैं।

उनके भी मूड होते हैं। उनकी अलौकिक प्रकृति और उनकी स्थिरता को हम अपने सांसारिक अस्तित्व की अस्थिरता में खींच लाते हैं।

ऐसे दुरुपयोग के परिणामस्वरूप वे हिंसक प्रतिक्रिया देते हैं और अपना अस्तित्व प्रकट करते हैं—आतंक और भय उत्पन्न करके, कभी-कभी विनाश के रूप में भी।

हमें यह समझना चाहिए कि जब वे ऐसा करने के लिए बाध्य होते हैं, तो वे स्वयं भी गहरी व्यथा से गुजरते हैं। वे बिना इच्छा के अशांत होते हैं।

इस मामले में उत्पन्न भय को संतुलन में लाया गया, लेकिन इसके लिए मुझे चतुषष्टि योगिनी मंदिर के उस गुप्त स्थान पर जाना पड़ा, जहाँ भगवा-वस्त्रधारी देवी की उपस्थिति अब भी स्पष्ट रूप से जीवंत थी।

मुझे वहाँ जाकर उनसे रिपोर्ट करना था, और अपनी बहन का जीवन बचाने के लिए उनका आभार व्यक्त करना था।

## परलोक से वार्तालाप

मुझे अलौकिक शक्तियों की खोज में विशेष रुचि नहीं थी। मैं जानता था कि उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना ही बेहतर है, और यदि कुछ करना ही है, तो बस उन भटकी हुई आत्माओं के लिए प्रार्थना करना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। प्रार्थना से बढ़कर कुछ नहीं। वेदों में ऐसे आत्माओं को पहचानने और उन्हें संतुष्ट करने के प्रमाण हैं। रुद्राध्याय के मंत्र इस सत्य को स्पष्ट कर देते हैं। विशेष रूप से अथर्ववेद इन शक्तियों के प्रति अत्यंत जागरूक है। जब मैं अंगकोरवाट की यात्रा के दौरान कंबोडिया में एक योगिनी से मिला, तो मेरी धारणाएँ और भी दृढ़ हो गईं।

लेकिन मेरा ध्यान केवल एक लक्ष्य पर केंद्रित था—मुझे उस शक्ति के स्रोत तक पहुँचना था जो आनंद प्रदान करती है, आनंद फैलाती है, अस्तित्व को आनंद से भर देती है, और जीवन को प्रेम एवं दिव्यता की भावना से प्रेरित करती है।

मैं यह भी जानता था कि इस शक्ति को उसकी पूर्ण महिमा में प्राप्त करने के लिए एक प्रतिरूप (alter ego) की सहायता आवश्यक है। इस मामले में, मेरा प्रारंभिक सौभाग्य अच्छा था क्योंकि भाग्य ने मुझे एक संत पिता और एक स्नेहमयी भगवा-वस्त्रधारी देवी का आशीर्वाद दिया था। लेकिन मुझे यह भी ज्ञात था कि मुझे प्रकृति, एक प्रतिरूप, एक कुमारी चाहिए थी, जो मुझे प्रेरणा, दीक्षा, और अहंकार के पूर्ण समर्पण की अंतिम साधना का वरदान दे सके।

"जिन्हें आशीर्वाद मिला है, उन्हें चिंता करने की क्या आवश्यकता?" मैंने सोचा। लेकिन क्या इस तरह की सोच स्वयं किसी छिपी हुई चिंता को प्रकट नहीं करती?

लेकिन अनजाने में ही यह बेचैनी कहीं दर्ज हो रही थी। और अनिवार्य रूप से, एक दिन इस विषय पर चर्चा छिड़ ही गई।

चतुषष्टि योगिनी मंदिर के पास शिव मंदिर, जहाँ हमने योगवासिष्ठ का अध्ययन किया था, वह मेरी साधना स्थली बन चुका था। लेकिन उसके अलावा दो और स्थान मेरे अत्यंत प्रिय हो गए थे।

पहला वह स्थान जहाँ मैंने भगवा-वस्त्रधारी देवी की कृपा से शव-साधना का दृश्य देखा था। यह रानी भवानी के गोपाल मंदिर के पीछे स्थित तारा पीठ था।

दूसरा स्थान महासरस्वती का मंदिर था, जो मेरे स्वभाव के अनुकूल अधिक था। यहाँ गंगा का विराट प्रवाह किले की दीवारों के समीप बहता था। यह स्थान व्यावहारिक रूप से सुनसान पड़ा था। सरस्वती मंदिर में शायद ही कोई बाहरी व्यक्ति आता था। केवल एक वृद्ध पुजारी अपनी सीमित भक्ति के साथ वहाँ पूजा-अर्चना करता था। वह मुझे वहाँ अक्सर ध्यान में लीन देखता था।

एक बार उसने मुझसे यहाँ के गौरवशाली अतीत की बात की, जब काशी नरेश की कृपा से इन मंदिरों की रक्षा होती थी और यह स्थान इतना सुनसान नहीं था। लेकिन अब वह युग समाप्त हो चुका था।

"माँ की रौद्र शक्ति की भयानक प्रसिद्धि ही उसकी लोकप्रियता के विरुद्ध काम कर गई," उसने कहा। "कोई आश्चर्य नहीं; यह महासरस्वती का मंदिर है!"

"यदि तुम जानते कि इसका क्या अर्थ है, तो भाग खड़े होते, लड़के!" बूढ़े पुजारी ने मुझे चेताया।

"बुजुर्ग, मैं कभी नहीं भागूँगा।"

"माँ" तो माँ ही रहेगी, चाहे वह कितनी भी विकराल क्यों न हो। मुझे भय क्यों लगे? मैंने उसे महासरस्वती, वज्रयोगिनी और श्वेत तारा के रूप में देखा है। क्या वे सब एक ही नहीं हैं? तिब्बत की तारा, नॉर्डिक देशों की श्वेत देवी, बौद्धों की मंजुश्री, शिंतो मत की क्वान येन—क्या ये सभी एक ही शक्ति नहीं हैं?"

मुझे वहाँ शांति मिलेगी। कोई मुझे बाधित नहीं करेगा।

फिर भी, मैं बेचैन था। यह बेचैनी क्यों थी?

मैं मंदिर से बाहर आया, चौड़े छज्जे वाले उद्यान को पार किया और छत की नक्काशीदार छाया में खड़ा हो गया, जहाँ से गंगा की शांत धारा अर्धचंद्राकार तटरेखा पर बह रही थी। कुछ दूरी पर, जहाँ नदी पश्चिम की ओर मुड़ती थी, वहीं से उसकी उत्तर दिशा की यात्रा शुरू होती थी।

उस पार रामनगर का किला अपने भव्य स्वरूप में खड़ा था। संध्या का समय था। छोटी-छोटी देशी नावों में टिमटिमाती आग जल चुकी थी, जहाँ मछुआरे अपने साधारण भोजन को पकाने में लगे थे।

गंगा का विशाल प्रवाह जीवन को अपने आलिंगन में बाँध रहा था और उस अस्थायी स्वप्नमयी नाट्य को एक शाश्वतता की छाया प्रदान कर रहा था।

किनारे पर एक वृद्ध व्यक्ति अकेला बैठा कोई गीत गा रहा था।

लेकिन मेरे भीतर शांति नहीं थी। मेरे मन में प्रश्न उमड़ रहे थे।

"माँ को अग्नि, रक्त, काम, मदिरा और वे सभी वस्तुएँ इतनी प्रिय क्यों हैं, जो भटकाने के लिए उत्तेजित करती हैं और उत्तेजना से भटकाव उत्पन्न होता है?"

मुझे ध्यान, तपस्या और संयम द्वारा स्वयं को स्थिर करना था।

शांति केवल व्याकुलता के सागर में ही खिलने वाला कमल है।

मैं रक्त, कुमारीत्व, काम, मदिरा और मादक पदार्थों के विचारों से बेचैन था।

क्या मैंने इस रहस्य के मूल में छिपे सत्य को वास्तव में समझ लिया था?

मैंने कई बार अपने गुरु से इस विषय में चर्चा की थी। मैं इस रहस्य के पीछे के प्रकाश को देखने के लिए व्याकुल था। लेकिन हर बार ऐसा प्रतीत होता, मानो मेरे दृष्टिकोण के आगे कोई धुंध की परत आ जाती, जैसे चश्मे पर जमी भाप, जो मुझे स्पष्ट रूप से देखने से रोक देती।

जैसे ही मैं विरोधी शक्तियों के संयोग की साधना के निकट पहुँचता, मेरे भीतर से संदेह नहीं, बल्कि नए-नए प्रश्न उभरने लगते, जो मेरी पूर्ण आत्मसमर्पण की अवस्था को विचलित कर देते। मेरी शांति भंग हो जाती।

मैंने ग्यारह दिनों की कठोर साधना का संकल्प लिया। मैं केवल एक बार भोजन करता, जो स्वयं बनाता। और भोजन क्या था? बस कुछ उबली हुई सब्ज़ियाँ, जो चावल के साथ एक ही पात्र में पकती थीं।

लेकिन अंतिम दिन वह भी त्याग दिया।

संध्या की साधना समाप्त करने के बाद, मैं अग्नि-कर्म में संलग्न था।

अचानक, मुझे परिचित तरंगें महसूस हुईं।

कुछ ही क्षणों में मैंने पाया कि उस सुनसान स्थान में भगवा-वस्त्रधारी देवी की उपस्थिति थी।

वह ठीक मेरे पास खड़ी थीं।

उन्होंने मुस्कुराकर मेरा अभिवादन किया और मेरे पास बैठ गईं।

जब उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं इतना व्याकुल क्यों हूँ, तो मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

और फिर, उस रात उन्होंने एक और ज्ञान-सत्र आरंभ किया।

उस रात मैंने मानव शरीर-मशीन के रहस्यों को गहराई से समझा।

मैंने सीखा कि कैसे रासायनिक परिवर्तन, ऊर्जा का स्थानांतरण और शरीर के तत्वों का परिष्कार जीवन, चेतना और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

## तपस्या और मुक्ति

इस घटना के चार दिन बाद मुझे इसके बारे में पता चला। इस दौरान वह कभी होश में आती, तो कभी विचित्र बातें करते हुए खो जाती। बार-बार वह अपने युवावस्था, अपने लंबे बालों, अपने पति के प्रति प्रेम और गर्भ में पल रहे बच्चे के बारे में बड़बड़ाती।

डॉक्टरों ने उसे लगातार बेहोशी की दवाएं दीं, लेकिन फिर भी उसकी बड़बड़ाहट रुकती नहीं थी। यह इस बात का संकेत था कि उसका मस्तिष्क अत्यधिक उत्तेजित और गर्म हो रहा था। किसी भी समय कोई रक्त वाहिका फट सकती थी। घरवालों की चिंता बढ़ती जा रही थी।

मैं उस समय एक साधना में लगा था, लेकिन खबरें मुझ तक पहुँचती रहीं और स्थिति का पता चला। जब मैं उससे मिलने गया, तो उसने मुझे देखते ही शांत स्वर में वहां से चले जाने को कहा, जैसे मैं उसके लिए कोई अजनबी था।

मैं उसके पास नहीं रुका, बल्कि कब्रिस्तान में जाकर तपस्या में बैठ गया। मैंने अपनी साधना तब तक जारी रखी जब तक वह होश में नहीं आ गई। इसमें मुझे आठ दिन से अधिक समय लगा।

## प्राणायाम क्यों?

मैंने जीवन और शरीर को उस ऊर्जा की अभिव्यक्ति के रूप में देखा, जो एक ब्रह्मांडीय शक्ति के रूप में सहस्राब्दियों से गुजरते हुए विकसित होती है और जो जीवन में निरंतर बनी रहती है। यह ऊर्जा कभी जीवन को नहीं छोड़ती, बल्कि भीतर रहकर अपनी अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करती है। इस ऊर्जा को मुक्त करना ही उस परम स्रोत से संपर्क करना है, जिससे यह उत्पन्न हुई है।

यह ऊर्जा मानसिक शक्ति के रूप में दो तंत्रिका तंत्रों को सक्रिय करती है; लेकिन एक तीसरा तंत्रिका तंत्र सुप्त अवस्था में रहता है, मानो वह सो रहा हो। इसे सुषुम्ना कहा जाता है। सभी तांत्रिक साधनाओं का मुख्य उद्देश्य इसी सोई हुई सुषुम्ना को जागृत करना है।

सुषुम्ना की जड़ कुंडलिनी में है, जो रीढ़ की हड्डी के अंत में सुप्त अवस्था में रहती है। इसका दूसरा सिरा दो अन्य ऊर्जा धाराओं - इड़ा और पिंगला - द्वारा नासिका के मूल और भौहों के बीच में कसकर पकड़ा हुआ होता है। इसलिए ध्यान करने वाला साधक इस बिंदु पर अपनी एकाग्रता केंद्रित करता है।

इन दो ऊर्जा धाराओं को 'सौर' और 'चंद्र' ऊर्जा के रूप में वर्णित किया गया है, जबकि तीसरी धारा को 'अग्नि' की ऊर्जा कहा गया है। इन तीनों का संगम एक तेज प्रकाश में समाप्त होता है, जो समझ को प्रकाशित करता है, सुप्त शक्ति के द्वार को खोलता है, 'सोते हुए सर्प' को जगाता है, और अंततः ब्रह्मांडीय ऊर्जा को मुक्त करता है।

यह संभव है। यह केवल एक सिद्धांत नहीं है। इसे बार-बार प्रदर्शित, जांचा और सत्यापित किया गया है, फिर भी संदेह किया गया है। यही संशयवादी का तरीका है। "संशयात्मा विनश्यति" (गीता) - संशय करने वाले अपनी आत्मा को नष्ट कर लेते हैं।

श्वास-प्रश्वास का व्यायाम जिसे प्राणायाम कहा जाता है, इस साधना में सहायक होता है। इसमें श्वास (प्राण वायु) को अंदर खींचा जाता है, जो ऑक्सीजन से भरपूर होता है (ध्यान दें कि ऑक्सीजन और शुद्ध वायु जीवन के लिए कितनी महत्वपूर्ण है); फिर श्वास को बाहर छोड़ते समय शरीर की अशुद्धियों को बाहर निकाला जाता है। यह श्वास-प्रश्वास का अभ्यास शरीर रूपी मशीन के पंपों और ब्लोअर्स को संचालित करता है।

इसमें श्वास को एक नासिका से अंदर लिया जाता है (पूरक) और दूसरी नासिका से बाहर निकाला जाता है (रेचक)। इस प्रक्रिया को बार-बार दोहराया जाता है - घंटों, दिनों, रातों, हफ्तों, महीनों, वर्षों तक। लेकिन इसमें एक तीसरा और बहुत महत्वपूर्ण चरण भी है।

पूरक (श्वास लेना) और रेचक (श्वास छोड़ना) के बीच एक महत्वपूर्ण स्थिति है - कुम्भक - जिसमें श्वास को अंदर रोककर रखा जाता है। श्वास को रोकने से इंद्रियों की गतिविधियाँ भी धीरे-धीरे रुक जाती हैं। बाहरी इंद्रियों के द्वार बंद होने पर, आंतरिक इंद्रियों के द्वार खुलते हैं, जो हमें सभी शारीरिक पीड़ाओं और मानसिक कष्टों से मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।

यह अभ्यास मनुष्य को काम, क्रोध और लोभ की जंजीरों से मुक्त करता है, जो सभी कष्टों का मूल कारण हैं।

शरीर में कुंडलिनी शक्ति को जागृत करने का उद्देश्य है। इसे 'सर्प' के रूप में दर्शाया गया है। लेकिन जब यह जागृत हो जाती है, तो इसे नियंत्रित करना आवश्यक है। इसे नियंत्रित करने के लिए अत्यधिक ऊर्जा और श्वास शक्ति की आवश्यकता होती है, जिसे कुंभक के अभ्यास से विकसित किया जाता है।

प्राणायाम के तीन चरण इस प्रकार हैं:

1. पूरक - श्वास को अंदर लेना, जो फेफड़ों और हृदय तक जाता है।
2. कुंभक - श्वास को रोककर रखना, जो नाभि तक की ऊर्जा को सक्रिय करता है।
3. रेचक - श्वास को बाहर छोड़ना, जो मूलाधार से लेकर मणिपुर चक्र तक ऊर्जा को संचालित करता है।

मूलाधार से मणिपुर तक कुंडलिनी की यात्रा को एक बार स्थापित कर लिया जाए, तो यह सहस्रार तक पहुँचने की यात्रा को आसान बना देती है, जो साधक का सर्वोच्च लक्ष्य है।

कुंडलिनी का जागरण आज्ञा चक्र (भौहों के बीच) को सक्रिय करता है, जहां पर विपरीत ध्रुवों (इड़ा और पिंगला) का मिलन होता है। इसका अंतिम लक्ष्य सहस्रार चक्र में स्थिरता पाना है, जहां सभी द्वैत समाप्त हो जाते हैं और शिव-शक्ति, भैरव-भैरवी, लिंग-योनि का मिलन होता है।

## मिथुन का रहस्य

मेरी अधीरता मुझे यह एहसास दिला रही थी कि हम अपने विषय से भटक रहे हैं, कि हम कहीं और जा रहे हैं। लेकिन मुझे पहले ही भाँप लिया गया था।

"अधीर मत हो," उन्होंने कहा। "जल्द ही हम वहीं पहुँचेंगे, जहाँ हमें पहुँचना है।" (वह मुस्कान फिर! ओह, भगवा-वस्त्रधारी देवी, तुम मुझ पर कितनी कृपालु रही हो!)

"इस जागरण और मिलन की प्रक्रिया साधक की इंद्रियों पर प्रभाव डालती है। इस शक्ति को जागृत करने की क्रिया स्वयं इंद्रियों को बंद करने की क्रिया भी होती है। ये इंद्रियाँ यंत्रवत कार्य करती हैं, जैसे उन्हें करना चाहिए; लेकिन जो इच्छा, जो प्रवृत्ति इन्हें लोभ, तृष्णा, और दासता की ओर धकेलती है, वह पूरी तरह समाप्त हो जाती है। तब शरीर केवल एक यंत्र बन जाता है। फिर साधक को कोई भी शरीर, कोई भी रूप विशेष रूप से अलग या विशिष्ट प्रतीत नहीं होता।"

"गीता में इसे एक अन्य रूप में कहा गया है—

"जैसे कमल के पत्तों पर रखा जल बिना किसी दाग के रह जाता है, वैसे ही वह योगी, जो केवल इसलिए कार्य करता है क्योंकि उसे कार्य करना है, अपने चित्त पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने देता। वह देखता है, फिर भी नहीं देखता; सुनता है, फिर भी नहीं सुनता; महसूस करता है, फिर भी नहीं करता; सूंघता है, फिर भी नहीं करता; खाता है, फिर भी नहीं करता;

चलता है, फिर भी नहीं करता; सोता है, फिर भी नहीं करता; बोलता है, फिर भी नहीं करता; खर्च करता है, फिर भी नहीं करता; स्वीकार करता है, फिर भी नहीं करता; खोलता है, फिर भी नहीं करता; बंद करता है, फिर भी नहीं करता। जो कुछ भी किया जाता है, वह केवल उस महाशक्ति के उपकरण के रूप में किया जाता है।"

"इसलिए, जब साधक अपने आपको पूर्ण रूप से उस अंतिम स्थिति में समर्पित कर देता है, तब मैथुन भी मात्र एक साधन बन जाता है, जो मोक्ष की अवस्था तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है। मनुष्य की संरचना में सेक्स सबसे अधिक उत्तेजक शक्ति है, यह सबसे अधिक व्याकुल करती है, सबसे अधिक विचलित करती है, और सबसे अधिक भटकाती है। यह पूरे जीवन-प्रवाह को अराजकता और विनाश की ओर ले जा सकती है और अंततः मनुष्य को उसकी इंद्रियों से वंचित कर सकती है। यह इंद्रियों को नकारात्मकता और विध्वंस की दिशा में धकेल देती है।"

"जब कुंडलिनी को जागृत करने के माध्यम से इन इंद्रियों को नियंत्रित किया जाता है, तो यह याद रखना आवश्यक है कि उच्चतर इंद्रियों का संचार अपने आप ही प्रेरित हो जाता है। केवल पीड़ा को शांत करना इसे दिव्यता में परिवर्तित करना नहीं है।"

"सेक्स शक्ति का एक स्रोत है, एक विशेष ऊर्जा उत्पादक, जो हमारी सृजनात्मक प्रेरणाओं को पूरे शरीर में वितरित करता है। इसे मंद या निष्क्रिय नहीं किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, हमें इसे सक्रिय करने के नए उपाय खोजने होंगे, ताकि इसकी सृजनात्मक क्षमताओं को उच्च स्तर पर विकसित किया जा सके।"

"जिस प्रकार किसी बाघ को प्रशिक्षित करने के लिए उसके समीप रहना आवश्यक है, जैसे सर्प को वश में करने के लिए उसकी सेवा करनी पड़ती है, उसी प्रकार यदि हमें अपनी कामेंद्रियों पर नियंत्रण पाना है, तो हमें उनके निकट रहना होगा। यदि कोई विपरीत शरीर मुझे उत्तेजित करता है, तो मैं उस अग्नि से भागने के बजाय, उसमें ठहरूँगा, उस शरीर को पकड़ूँगा, और उस शक्ति के स्रोत के रहस्य को खोजूँगा और उसका सदुपयोग करूँगा। उस स्थिति से भागना आत्म-नकार की मानसिकता है। यह नकारात्मकता मानसिक ग्रंथियों (complexes) को जन्म देती है। इससे उत्तम उपाय और क्या हो सकता है कि इसे माँ के आसन के रूप में स्वीकार किया जाए? इससे अधिक प्रभावी साधन और क्या हो सकता है कि इसे दिव्यता और उच्च आध्यात्मिकता के वातावरण में साधना की जाए?"

"संस्कारित आसनों के माध्यम से यह साधना हमें काम-वासना से मुक्त कर देती है। साधक को इन्द्रियजनित सुख की खोज करने के बजाय शुद्ध आनंद की ओर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है—उस आनंदम की ओर, जो केवल इंद्रियों की उत्तेजना से जुड़ा नहीं है। बंगाल के एक साधक ने कहा है—"

"कामो गंधो नहिताये" (इसमें कामुकता का कोई अंश नहीं होता।)

"इसे सहज मार्ग कहा जाता है, बंगाल में इसे सहजिया साधना कहते हैं। स्मर-परि-रहितम् (जो कामना से परे हो) यह कर्पूरादि तंत्र में कहा गया है।"

"इस सहज साधना के माध्यम से शरीर इस पद्धति के आदर्शों के अनुरूप ढल जाता है, और मन पूरी तरह प्रशिक्षित होकर सेक्स ऊर्जा के स्रोत की गहराइयों तक पहुँच जाता है, बिना उन प्रतिक्रियाओं के जो केवल यांत्रिक, जैविक और प्रवृत्तिगत (instinctive) हैं। इन सहज प्रवृत्तियों पर नियंत्रण पाने के लिए आज्ञा चक्र (मस्तिष्क केंद्र) को वश में करना आवश्यक है।"

## चक्र में संगिनी

"विपरीत संगिनी शक्ति का आसन है। वह स्वयं शक्ति है।" साधक जब भी किसी नारी को देखता है, तो स्वाभाविक रूप से उसकी भक्ति माँ के चरणों में समर्पित हो जाती है, क्योंकि वहीं माँ विराजमान होती हैं। यह आदर्श दृष्टिकोण उसे पतनशील विचारों से मुक्त कर देता है।

"यह सरल नहीं है। यह तुम्हारे लिए सरल नहीं रहा; और तुम्हें तैयार करना मेरे लिए भी सरल नहीं था। यह तब भी सरल नहीं होगा जब तुम दूसरों से मिलोगे, उन्हें परखोगे, और चयन करोगे कि किसे स्वीकार करना है और किसे त्याग देना है। एक वास्तविक साधिका के लिए सैकड़ों नकली और नौसिखिए मिल सकते हैं। यहाँ तक कि वे भी, जो भले विचारों से आते हैं, अंततः गिरावट की ओर बढ़ सकते हैं।" (आज मुझे यह बात कितनी सच लगती है! लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है।)

"आंतरिक धातु (ऊर्जा-सार) सबसे हल्के उत्तेजनात्मक क्षण में स्वतः ही स्रावित हो जाती है। जब तक मन उसे नियंत्रित करने की अवस्था में आता है, तब तक अंग की नमी अपना नियंत्रण खो देती है। इसलिए विचार को इतनी गहराई तक प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, चेतना को इतने ऊँचे आदर्शों के अनुरूप ढालना चाहिए कि विपरीत शक्तियाँ एक-दूसरे से भिन्न प्रतीत ही न हों। दो अर्धांश मिलकर एक पूर्ण इकाई बनाते हैं; और वह पूर्ण इकाई माँ के अभिन्न स्वरूप में परिवर्तित हो जाती है। इस स्थिति में भौतिक प्रतिक्रियाएँ कार्य करना बंद कर देती हैं। यह उपलब्धि तुम्हारे शरीर में सिद्ध हो चुकी है। मुझे निराश मत करना।"

"कोई भी स्त्री उपयुक्त हो सकती है। कोई भी। लेकिन वे, जो शारीरिक श्रम में अधिक व्यस्त रहती हैं, जो अपने परिश्रम के कारण कामुक विलासिता और आत्ममुग्धता में लिप्त होने का समय नहीं निकाल पातीं (जो ऊब चुके शहरी लोगों में आम बात है), वे ही सबसे उपयुक्त होती हैं। ये ही वे मौलिक आदर्श हैं, जिन्हें अत्यंत सम्मान दिया जाता है। शरीर को एक साधन, एक आसन, एक पूजनीय अर्पण के रूप में देखने की वस्तुपरक दृष्टि ही इस साधना का सार है।"

"तुमने महाभारत में देखा होगा कि अधिकांश उच्च श्रेणी के योगियों ने इन्हीं मूल आर्कटाइप्स से संतान उत्पन्न की—मछुआरिनें, वन्य स्त्रियाँ, प्रकृति की देवियाँ—ये सभी ब्रह्मांडीय चेतना के प्रतीक मात्र हैं।"

"आसन साधना में पत्नियों को सामान्यतः इसलिए त्याग दिया जाता है क्योंकि वे गृहस्थ जीवन की दैनिक गणनाओं से बँधी होती हैं। वे जीवन की भौतिक जिम्मेदारियों में लिप्त होती हैं, और इसलिए सेक्स को केवल एक सहज दांपत्य क्रिया के रूप में देखने लगती हैं। पति-पत्नी की जोड़ी के लिए सेक्स से पूरी तरह निरपेक्ष रहना कठिन होता है। लेकिन कुछ महान साधकों ने अपनी पत्नियों को इतनी निष्पृहता तक प्रशिक्षित किया है कि वे उपयुक्त आसन बन सकें। यह कठिन है, लेकिन असंभव नहीं। इसे टालना चाहिए, पर इसे पूरी तरह वर्जित भी नहीं कहा गया है।"

"पुरानी लकड़ी घर की दीवारों के लिए उपयुक्त नहीं होती; न ही बहुत युवा या कच्ची लकड़ी। केवल अच्छी तरह परिपक्व लकड़ी ही सर्वश्रेष्ठ होती है। भवन-निर्माण में सभी सामग्रियों को समुचित रूप से परखा और तैयार किया जाता है। यह नियम साधक और साधिका दोनों पर लागू होता है। उसे उस अवस्था में लाया जाना चाहिए, जब वह संसार के अधिक अनुभवों में लिप्त न हो चुकी हो, जब वह जीवन के भौतिक संघर्षों और प्रलोभनों से इतनी प्रभावित न हो कि उसका शरीर और मन साधना के योग्य ही न रह जाए।"

"नदियाँ अपने उद्गम पर ही सर्वाधिक पवित्र होती हैं। केवल युवा ही आदर्श की खोज कर सकते हैं। क्रांतिकारी सदैव युवा होते हैं। युवा ही साहस करते हैं, युवा ही स्वप्न देखते हैं, युवा ही असंभव को पाने के लिए पंख फैलाते हैं। हनुमान, अरुण,

इकारस—इन्होंने असंभव को संभव करने का प्रयास किया, लेकिन अपने लिए कोई कल्याण न कर सके। युवा अवस्था में साहसिक अनुशासनहीनता की गुंजाइश होती है, लेकिन ऐसी हर अनुशासनहीनता की भरपाई करनी पड़ती है। इसलिए युवा मन और युवा शरीर को चुनकर प्रशिक्षित करना, तपाना, परखना, और फिर स्वीकृति देना आवश्यक होता है। तंत्र इसलिए 16, 17, 18 वर्ष की साधिकाओं पर जोर देता है। वे स्वाभाविक रूप से उर्जावान होती हैं। उनकी प्रतिक्रियाएँ तीव्र और प्रभावशाली होती हैं। केवल वे ही वह गतिशील ऊर्जा उत्पन्न कर सकती हैं, जो कुंडलिनी को जागृत करने में सहायक हो, और सुषुम्ना में जीवन प्रवाहित कर सके।"

"ऊर्जा का यह ऊपर की ओर प्रवाह सहस्रार तक पहुँचता है और व्यक्तिगत चेतना को ब्रह्मांडीय चेतना के उल्लास में विलीन कर देता है। शरीर शिथिल हो जाते हैं, इंद्रियाँ अपने कार्य करना बंद कर देती हैं, मन केवल एक बिंदु पर केंद्रित हो जाता है।"

"इस स्थिति में, स्मृति का संपूर्ण निलंबन होता है, और मन भूतकाल की सभी यादों से मुक्त होकर केवल एक ही अनुभव में मग्न हो जाता है—आनंदम, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, केवल अनुभूत किया जा सकता है।"

"रहस्यमयी चक्र के भीतर, जब साधक और साधिका एक साथ भोजन और मद्य को भी प्रकृति और माँ के आनंद के प्रतीक के रूप में स्वीकार करते हैं, और जब वे पूर्ण सुरक्षा और निर्विघ्न ध्यान की अवस्था में होते हैं, तब वे निर्धारित आसन में एक-दूसरे के साथ एकाकार होते हैं। साधक स्वयं को ब्रह्मांडीय प्रक्रिया का हिस्सा अनुभव करता है, जब तक कि उसकी चेतना और ब्रह्मांडीय चेतना एक अविभाज्य स्वरूप में विलीन न हो जाए।"

"यह उसी प्रकार है, जैसे संगीत में दो विपरीत सप्तक मिलकर एक मधुर संगति उत्पन्न करते हैं। उनके आवृत्ति में अंतर होने के बावजूद, उनकी ध्वनि एकसाथ घुलमिल जाती है। इसी प्रकार, इन दो भिन्न प्रतीत होने वाले तत्वों का मिलन गहराई, विस्तार, संतुलन, और सामंजस्य उत्पन्न करता है।"

"परस्पर विरोधी तत्वों के मिलन से ही उत्कृष्टता जन्म लेती है।"

"विपरीत लिंगीय अस्तित्व को स्वीकार भी किया जाता है, और उसे सीमित भी रखा जाता है। इसे एक उपकरण के रूप में स्वीकार करने के साथ-साथ, यह भी दिखाया जाता है कि द्वैत का उन्मूलन संगति के माध्यम से संभव है। जैसे जलती हुई लकड़ी क्रमशः अग्नि, ज्वाला, ऊष्मा, फिर राख में परिवर्तित हो जाती है—एक अवस्था पर पहुँचकर अग्नि, ज्वाला और ऊष्मा अविभाज्य हो जाते हैं। वे बाहर से भले ही अलग प्रतीत हों, लेकिन स्वयं में एक रहस्यमयी एकता में विलीन हो जाते हैं।"

"एक कुशल संगीतकार भी तबले के युग्म को अलग-अलग सप्तकों में संजोकर रखता है, ताकि हर ध्वनि की गूँज और गहराई बढ़ सके।"

## चक्रों का रहस्य

"इन चक्रों में सबसे प्रसिद्ध श्री-चक्र है। इसके अलावा सिद्ध-चक्र और काल-चक्र भी प्रयोग में लाए जाते हैं। इन साधनाओं के लिए रात्रि के विशेष समयों का चयन किया जाना आवश्यक होता है, और इसमें कई साधकों की उपस्थिति उत्तम मानी जाती है। ये आसन साधारणतः महीने में एक बार ही किए जाते हैं—अमावस्या के पंचमी, अष्टमी या पंद्रहवीं तिथि को। शक्ति किसी भी प्राकृतिक अवस्था में हो सकती है, और उसका ऋतु-चक्र में होना या उसकी पुष्पावस्था में होना इस

अनुष्ठान को प्रभावित नहीं करता, क्योंकि ये सभी प्रक्रियाएँ स्वयं प्रकृति के अंग हैं। रक्त, जो अंडाणु ऊर्जा से संपन्न होता है और एस्ट्रोजेनिक तत्वों से युक्त होता है, वास्तव में ऊर्जा विकिरण (रेडिएशन) को और भी अधिक प्रभावशाली बना देता है, जो शक्ति में अपेक्षित होता है।"

## योनि अथवा पीठ का पूजन

"किसी प्राचीन काल में, दूरस्थ असम में स्थित माँ कामाख्या के पावन मंदिर में योगियों ने संभवतः शक्ति के पुष्पावस्था में होने की छिपी हुई विशेष ऊर्जा का रहस्य खोज लिया होगा। इसीलिए यह मंदिर कुमारी पीठ के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जहाँ आज भी स्त्री के पुष्पकालीन रक्त की आराधना की जाती है (जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है)।"

"आसन में स्थित होकर पुरुष के साथ समाहित शक्ति अब एक देवी बन जाती है—स्वयं माँ। उसके शरीर का विधिवत् अभिषेक और शुद्धिकरण किया जाता है। उसे इत्रों से अलंकृत किया जाता है, वस्त्रों और आभूषणों से सजाया जाता है। उसके ललाट पर सिंदूर, भ्रूमध्य में एक स्पष्ट बिंदु, पैरों और पंजों पर लाल रंग, और मुख पर चंदन का श्रृंगार किया जाता है। इस प्रकार वह शरीर से प्रवाहित होने वाली ऊर्जा की पूर्ण प्रतिमा के रूप में दीप्त हो उठती है।"

"अब मूल स्रोत की ओर दृष्टि करें—हाँ, योनि को भी विशेष सम्मान और पूजन का केंद्र माना जाता है। इसे चंदन, अक्षत, दूर्वा, पुष्प, मंत्रों और आरती के साथ अर्चित किया जाता है। और क्यों नहीं? क्या यह परम पीठ नहीं है? क्या यह सृष्टि की ज्वाला का गर्भस्थल नहीं है? क्या यह रहस्यमय ब्रह्मांडीय प्रवाह का केंद्रबिंदु नहीं है?"

"कभी एक युग था जब मनुष्य इस क्षेत्र को अत्यंत श्रद्धा और भय के साथ देखता था। यह जीवनशक्ति का एक ऐसा स्रोत था जिसे समझना तो दूर, इसकी अनुभूति भी एक विस्मयकारी चमत्कार के समान थी। यह एक दिव्य वरदान था, जो माँ के आशीर्वाद के रूप में संतानोत्पत्ति और जीवन के संरक्षण हेतु प्रदान किया गया था। जिस प्रकार कृषक भूमि के गर्भ को पवित्र मानते हैं, उसी प्रकार मानव और पशु रूप में भी इस क्षेत्र को परम महत्व दिया गया था।"

"आज भी यह आदिम आकर्षण किसी गहरे अवचेतन मनोवैज्ञानिक दबाव के तहत कार्य करता है और मनुष्यों को अपनी ओर खींचता है, मानो कोई केंद्रीय आकर्षण शक्ति उन्हें सम्मोहित कर रही हो। लेकिन पहले जहाँ यह आकर्षण श्रद्धा और सम्मान से भरा होता था, अब मनुष्य इसे वर्जित फल की तरह देखता है। एक बच्चा जैसे बंद दरवाजों को खोलने के लिए लालायित होता है, वैसे ही आधुनिक मानव इस रहस्य के पीछे भागता है, लेकिन न श्रद्धा के साथ, न ही आत्मसमर्पण की भावना के साथ। अब यह उसे एक विजयी आक्रमण जैसा प्रतीत होता है—एक ऐसी चीज़ जिसे छीनकर, तोड़कर, भंग करके ही प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य अब इसे श्रद्धा से नहीं, बल्कि अतिक्रमण से देखता है। अब यह वासना, विलासिता और प्रलोभन की वस्तु बन चुकी है। कामुकता एक व्यापार बन चुकी है। हम मूल स्थिति से इतने दूर चले गए हैं कि जब तंत्र के संदर्भ में काम-साधना की बात आती है, तो समाज में तुरंत संदेह और आलोचना जाग उठती है। आधुनिक समाज के शहरी संशयवादियों के लिए तंत्र केवल कटाक्ष और उपहास का विषय बन गया है।"

"लेकिन जब साधना को अत्यंत उच्च स्तर पर शुद्ध और विशिष्ट कर दिया जाता है, तो साधिका स्वयं अपने शरीर, विशेष रूप से अपने जननेंद्रिय क्षेत्र के महत्व को गहराई से अनुभव करने लगती है। वह भीतर से दिव्य आभा से भर जाती है, जो उसे साधारण सांसारिक चेतना से ऊपर उठा देती है।"

"मैंने हर बार इस साधना में भाग लेते हुए या दूसरों द्वारा इसे संपन्न होते देख, इस आध्यात्मिक परिवर्तन को अवतरित होते देखा है। साधिका को यह अनुभूति होने लगती है कि वह स्वयं शक्ति का मूर्त रूप है, कि वह स्वयं जीवन की माँ है।"

"लेकिन केवल योनि क्षेत्र ही नहीं, बल्कि शरीर के अन्य सभी महत्वपूर्ण भाग, विभिन्न संयोजन बिंदु (joints), वे प्रमुख ग्रंथियाँ जो शरीर और मन को आवश्यक ओजस प्रदान करती हैं, तथा विभिन्न चक्र बिंदु, इन सभी को एक-एक कर संस्कारित और पूजित किया जाता है। यह प्रक्रिया न्यास कहलाती है।"

"इस अनुष्ठान में न केवल शरीर, बल्कि परिवेश, दिशाएँ, पाँच महाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश), वृक्ष, पशु—सभी को साधना में शामिल किया जाता है, और इनसे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए शुद्धि मंत्रों का जाप किया जाता है।"

## मंत्रों में शक्ति: जप-अजपा

"मंत्रों का निरंतर जप किया जाता है, लेकिन इन्हें अत्यंत सावधानीपूर्वक चुना जाना चाहिए, विशेष रूप से बीज मंत्रों (seed formulas) को। इन्हें दो तंत्रिकाओं के मध्य उसी कोमलता से धारण करना चाहिए, जैसे कोई नाजुक पुष्प की कली को दो कोमल पत्तों के बीच थामे। यह प्रतीकात्मक छवि अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार एक पुष्प की कली को सुरक्षा देने के लिए पत्ते उसे ढँक लेते हैं, जिस प्रकार प्रार्थना को समर्पित दोनों हाथों के बीच रखा जाता है, ठीक उसी प्रकार जीवन का बिंदु (संजीवनी ऊर्जा) दो संरचनात्मक द्वारों के बीच धारण किया जाता है, जहाँ एक कली अपने पूर्ण पुष्पित होने की प्रतीक्षा में रहती है। यह घटना, जिसे सामान्यत: उपेक्षित किया जाता है, अपनी सौंदर्यात्मकता में एक अलौकिक उल्लास से भरी होती है। यह शक्ति की वह जागृति है, जो सृजन के रहस्य में बिना किसी भौतिक इच्छापूर्ति की प्रवृत्ति के प्रस्फुटित होती है। शक्ति-उन्नयन (Śakti-Unnies) और बिंदु-निपात (Bindu-Nipāta) किसी विलासी व्यक्ति के अभ्यास नहीं हैं।"

"इसलिए मंत्रों के जप में अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। जप किए जाने वाले मंत्रों की ध्वनि तरंगें (vibrations) उतनी ही महत्वपूर्ण होती हैं जितना कि उनके आंतरिक अर्थ का बोध। वास्तव में कुछ मंत्र ऐसे भी होते हैं जिनका कोई स्पष्ट अर्थ नहीं होता, लेकिन उनका स्पंदन (vibration) अत्यंत प्रभावशाली होता है। इस उद्देश्य के लिए जीभ का एक विशेष प्रकार से अभ्यास आवश्यक होता है, जो मंत्रों की आध्यात्मिक समझ के साथ-साथ विकसित किया जाता है।"

"किन्तु यह अभ्यास अत्यंत कठोर अनुशासन और अनंत धैर्य की माँग करता है।"

"एक बार भगवा-वस्त्रधारी देवी (LS) ने मुझसे कहा था—"

"'सभी वैदिक वर्णों (अक्षरों) का उच्चारण करो, क्रम से, एक के बाद एक, ठीक उसी क्रम में जैसा कि वे व्यवस्थित किए गए हैं (A से Z तक)। फिर मंत्र का उच्चारण करो। अब अक्षरों को पुनः उल्टे क्रम में दोहराओ (Z से A तक)। इस प्रकार मंत्र को वर्णमाला के दो सेटों के मध्य रखा जाता है—एक सीधा प्रवाह (A से Z) और दूसरा उल्टा प्रवाह (Z से A)। यह तीनों चरण मिलकर मंत्र के केवल एक बार के जप को पूरा करते हैं। इसे पुटिता विधि कहते हैं, अर्थात वह प्रक्रिया जिसमें बीज मंत्र को मात्रिकाओं (देवी स्वरूप अक्षरों) के दो सेटों के बीच सुरक्षित रखा जाता है।"

"यह प्रक्रिया अत्यंत सूक्ष्म संतुलन बनाए रखती है, ठीक उसी प्रकार जैसे संगीत में एक आधार स्वर (drone) संगीतकार को पूरे सप्तक के बीच सामंजस्य बनाए रखने में सहायता करता है। मात्रिकाओं के कंपन (vibrations) एक निरंतर आधार स्वर की तरह कार्य करते हैं, जो साधक को ब्रह्मांडीय ध्वनि जगत से जोड़कर उसकी साधना को एक समान स्तर पर बनाए रखते हैं।"

"जब यह प्रक्रिया चल रही होती है, तब मंत्र मात्रिकाओं के दो समूहों के बीच सुरक्षित रूप से स्थित रहता है। जब A से Z की ओर जप किया जाता है, तो इसे दक्षिण मार्ग (Daksina Way) कहा जाता है, और इसे जप कहते हैं; जब Z से A की ओर जप किया जाता है, तो इसे वाम मार्ग (Vama Way) कहा जाता है, और इसे अजपा कहते हैं।"

"इन जपा और अजपा के मार्गों को सरलता से इस प्रकार समझा जा सकता है—"

*(i) जप (A से Z)
(ii) मंत्र
(iii) अजपा (Z से A)

"यह एक चक्र को पूर्ण करता है। यदि मंत्र को बारह बार जपना हो, तो इस प्रक्रिया को बारह बार दोहराना होगा। यदि इसे 108 बार जपना हो, तो जप और अजपा दोनों को मिलाकर 108 बार पूरा करना होगा।"

"मैंने ऐसे योगियों को जाना है, जिन्होंने इस पद्धति का पालन वर्ष दर वर्ष किया है, यहाँ तक कि लाखों बार जप पूर्ण किए हैं। कई साधक प्रतिदिन हजारों बार इस विधि से मंत्रोच्चार करते हैं।"

"इस संपूर्ण चक्र को प्राणायाम की तीन अवस्थाओं—पूरक (Puraka), कुम्भक (Kumbhaka), और रेचक (Recaka)—के साथ जोड़ा जाता है। ये बाह्य साधन बिना किसी बाधा के अनवरत चलते रहने चाहिए, ताकि आंतरिक ध्यान में कोई विघ्न न आए।"

"यही तंत्र-साधना के रहस्यमयी ध्यान की अवस्था तक पहुँचने का मार्ग है। इसमें तीन प्रमुख नियंत्रणों को बनाए रखना अनिवार्य होता है—"

1. श्वास **(Breath)** का नियंत्रण
2. मन **(Mind)** का नियंत्रण
3. काम-जागरण **(Sexual Excitement)** का पूर्ण नियंत्रण, जिससे शरीर के शुक्र (semen) या गर्भीय द्रव (uterine fluids) का न्यूनतम भी स्राव न हो।

"इन रसायनों (fluids) की न्यूनतम मात्रा भी यदि उपस्थित होती है, तो यह साधना के उद्देश्य को पूर्णतः नष्ट कर देती है। इसलिए तंत्र स्मर-परिहरितम् (वासना से मुक्त) का निर्देश देता है।"

"हमने शरीर में ओजस (शक्ति तत्व) के अस्तित्व पर चर्चा की है। यही ओजस वही शक्ति उत्पन्न करता है जो वृषणों (testes) में बीज (sperm) और उसके परिवेशीय द्रवों को उत्पन्न करता है। जब शरीर और मन को नियंत्रण में रखते हुए इस ऊर्जा को संयमित किया जाता है, तो यह शारीरिक बीज उत्पन्न करने के बजाय आध्यात्मिक शक्ति क्षेत्र (spiritual field of potency) को जन्म देता है। यह क्षेत्र चुम्बकीय और आध्यात्मिक होता है। यही तांत्रिक बीज-शक्ति (बिंदु) का स्रोत है।"

"यह ऊर्जा साधक की चेतना को शक्तिशाली बनाती है। यही सिद्धांत स्त्री की गर्भीय ऊर्जा पर भी लागू होता है। मनुष्य की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक प्रगति इस ऊर्जा के संरक्षण पर निर्भर करती है। यदि इस ऊर्जा का दुरुपयोग होता है, तो यह जीवनशक्ति की हानि उत्पन्न करता है और साधक के विकास में असंतुलन लाता है।"

(भगवावस्त्रधारी महिला द्वारा दी गई इस शिक्षा को यहाँ मैं उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ। हालाँकि इतने वर्षों बाद मैं इसे शब्दशः नहीं दोहरा सकता, लेकिन उनकी व्याख्या इतनी प्रभावशाली और गहरी थी कि मैं आज भी इसकी शृंखला, प्रतीकात्मक चित्रण और उस ज्ञानधारा को स्पष्ट रूप से स्मरण कर सकता हूँ।)

## एकत्व का आनंद

"जब नर और नारी के जननेंद्रिय मिलन की अवस्था उत्पन्न होती है, तो कुछ विशेष घटित होता है। ध्यान रहे कि जो लोग इन अंगों या इस मिलन को केवल अपने भौतिक अनुभवों, कल्पनाओं या परंपरागत धारणाओं के आधार पर देखते हैं, वे इस रहस्य को कभी समझ नहीं सकते। जो साधक मानसिक और शारीरिक अनुशासन के कठोरतम अभ्यास से नहीं गुजरे हैं, वे इस सत्य का बोध भी नहीं कर सकते। तुम स्वयं भी इस रहस्य को सही भाव से ग्रहण नहीं कर पाते यदि मैंने तुम्हारी बाल्यावस्था में व्यक्तिगत रूप से ध्यान न दिया होता—जब तुम पूरी तरह निष्कलुष, प्रेरणाओं व वासनाओं से मुक्त, और किसी भी ऐसे पूर्व अनुभव से अछूते थे जिसे शुद्ध किए जाने की आवश्यकता होती।"

"मैं जानबूझकर, अनावश्यक विषयों में न उलझते हुए, तुम्हारी एकाग्रता बनाए रखने के लिए तुम्हारे इस जन्म में संचित पिछले जन्मों के आशीर्वादों की चर्चा नहीं कर रही हूँ। हालाँकि, यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसने तुम्हारे जीवन में इस मार्ग को अपनाने की नियति को आकार दिया है। एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे, काशी नगरी के पवित्र वातावरण में पले-बढ़े, गंगा के किनारे बसे, जहाँ कुछ अत्यंत श्रद्धेय योगी और महान शिक्षकों के साथ तुमने जीवन व्यतीत किया—यह कोई संयोग मात्र नहीं है। यह सब तुम्हारे भीतर इस दिव्य ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता विकसित करने के लिए ही हुआ है। मेरे और तुम्हारे बीच यह विशेष संबंध क्यों बना? तुम्हारे परिवार के अन्य सदस्य भी तो मेरे निकट थे, लेकिन उनमें से कोई भी इस संपर्क में नहीं आया जिसमें तुम सहजता से प्रविष्ट हो गए, मानो नियति के हाथों से खींचे गए हो।"

"परिस्थितियाँ ही सब कुछ नहीं होतीं, न ही केवल पालन-पोषण। जीवन के मार्ग में एक अदृश्य शक्ति भी होती है, जो हमारे इतिहास को उसी प्रकार लिखती है जैसा कि उसे निर्धारित किया गया है। लेकिन मैं विषय से भटकना नहीं चाहती। यह तर्कपूर्ण बहस का विषय नहीं है, जिस पर संदेहवादी और तर्कशास्त्र से भ्रमित लोग अनावश्यक वाद-विवाद करते रहते हैं।"

"इस मार्ग में सफलता केवल निरंतर, अडिग और निःस्वार्थ समर्पण से प्राप्त होती है। इसलिए बहुत कम लोग इसे अपनाने का साहस करते हैं, और उनमें से भी गिने-चुने ही सफल होते हैं। अधिकांश लोग इसे एक साधारण अनुभव की तरह आजमाते हैं और असफल हो जाते हैं। यही विफल व्यक्ति तंत्र के बारे में विकृत धारणाएँ फैलाते हैं। बहुत से लोग इसे केवल भौतिक सुख की दृष्टि से देखते हैं और इसे भोग का साधन समझने की भूल करते हैं। ये लोग वस्तुतः उन भिखारियों के समान हैं जो यज्ञ स्थल पर पक रहे भोजन की सुगंध पाकर इकट्ठे हो जाते हैं। यह भोजन सभी के लिए नहीं होता—यह केवल उन चुनिंदा साधकों के लिए है जो इसके योग्य हैं, जो आमंत्रित और स्वीकृत हैं। तंत्र एक साधारण विलासिता नहीं, बल्कि पूर्ण मानसिक और शारीरिक अनुशासन की परीक्षा है।"

"तंत्र में आनंद एकत्व (Only-ness) का आनंद है। यह इंद्रियों को अस्वीकार करने, छाँटने, संयमित करने और पूर्ण एकाग्रता में विलीन करने का प्रशिक्षण देता है। यह उस अवस्था को प्राप्त करने का माध्यम है जहाँ शरीर को शरीर के बिना अनुभव किया जाता है, संवेदनाओं को इंद्रियों के बिना महसूस किया जाता है। यह अलग प्रकार का आनंद है, जिसे एक भिन्न चेतना और भिन्न आंतरिक शक्तियों से अनुभव किया जाता है। यह वह अवस्था है जहाँ द्वैत समाप्त हो जाता है, और केवल एकत्व रह जाता है। तुम स्वयं जानते हो कि यह अवस्था संभव और प्राप्त करने योग्य है।"

"अब तुम बालक नहीं रहे। तुमने शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययन किया है, और आधुनिक समाज की एक भिन्न धारा को अपनाया है। तुम्हारी वर्तमान शिक्षा ने तुम्हें एक नए स्तर तक पहुँचा दिया है, लेकिन इसकी कीमत तुम्हारी निष्कपटता, विश्वास और समर्पण के रूप में चुकानी पड़ी है। विनम्रता, जो किसी भी साधना की मूलभूत आवश्यकता है, अब लुप्त होती जा रही है। इसलिए मुझे भी तुम्हें सिखाने का तरीका बदलना होगा।"

"जब नर और नारी का मिलन होता है, तो एक विद्युत-रासायनिक क्षेत्र (electrochemical field) उत्पन्न होता है। उच्च आवेश के कारण एक प्रतिक्रियाओं की श्रृंखला आरंभ होती है, जो तीव्र उत्तेजना उत्पन्न करती है और सभी इंद्रियों को प्रभावित कर देती है। यह छुपी हुई इच्छाओं को उभार देती है, प्रबल वासनाओं को मुक्त कर देती है, और व्यक्ति को पूरी तरह भौतिकता में डुबो देती है। इस स्थिति में व्यक्ति का शारीरिक तापमान बढ़ जाता है, श्वास गति तेज हो जाती है, और उसकी संपूर्ण चेतना वासना के अधीन हो जाती है।"

"लेकिन यदि तुम ध्यान दो, तो यही लक्षण एक उच्च कोटि के साधक की अवस्था को भी व्यक्त कर सकते हैं, जब वह अपने आत्म-चिंतन के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचता है। फिर अंतर क्या है? यह अंतर अत्यंत गहरा है। जहाँ एक कामी व्यक्ति शीघ्र ही अपने क्षणिक सुख से उबरकर निराशा, थकान और जड़ता की अवस्था में गिर जाता है, वहीं तांत्रिक साधना की अनुभूति से साधक ऊर्जा से भर जाता है, उसकी चेतना प्रफुल्लित हो जाती है, और वह अधिक सशक्त, ऊर्जावान और हल्का महसूस करता है। तांत्रिक अनुभव आत्मा को जीवन से भर देता है, जबकि साधारण भोग केवल शरीर को मृतप्राय कर देता है।"

"जैसे ही यह शक्ति क्षेत्र (Sakti-Kshetra) सक्रिय होता है, उच्च चेतना के समस्त द्वार खुल जाते हैं और साधक ऊर्जा के प्रवाह से भर जाता है, जो संपूर्ण अस्तित्व को प्रकाशित कर देता है।"

## जनक-पुरुष (M-A-N)

"तंत्र का पुरुष, अर्थात् जनक-पुरुष (M-A-N), केवल एक साधारण व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह एक विशेष जनरेटर होता है, जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा को धारण करने और प्रवाहित करने की क्षमता रखता है। इस M-A-N के तीन मूल स्तंभ होते हैं—मुद्रा (Mudra), आसन (Asana) और नाड़ी (Nadi)।"

"पुरुष और स्त्री जननेंद्रियों की संरचना में एक गहन भिन्नता है। जहाँ पुरुष के जननांग बाहरी रूप से विद्युत (इलेक्ट्रिकल) और आंतरिक रूप से चुंबकीय (मैग्नेटिक) होते हैं, वहीं स्त्री जननांग इसके विपरीत होते हैं—वे बाहरी रूप से चुंबकीय और आंतरिक रूप से विद्युत होते हैं। यदि ऐसा न होता, तो संयोग के दौरान दो शरीर पूर्ण रूप से एकाकार नहीं हो पाते। जब ये दोनों मिलते हैं, तो एक महाशक्ति क्षेत्र (cosmic force field) उत्पन्न होता है, जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा के एक लघु-संसार (microcosmic replica) का निर्माण करता है।"

"अचानक इन जटिल शब्दों का प्रयोग भ्रमित कर सकता है। लेकिन जैसा कि पहले कहा गया था, इसे शीघ्र ही स्पष्ट किया जाएगा। ध्यान रहे कि 'ब्रह्मांडीय' (cosmic) शब्द यहाँ बिना कारण प्रयुक्त नहीं हुआ है। यदि कोई व्यक्ति इस शब्द या इसकी अवधारणा को नहीं समझ पाता, तो यह संकेत है कि वह अभी इस स्तर के तांत्रिक अभ्यास के लिए योग्य नहीं है। यह मार्ग अभी उसके लिए नहीं है—बस इतना ही। लेकिन ब्रह्मांडीय संपर्क ही तंत्र का अंतिम लक्ष्य है। तंत्र शक्ति वही ब्रह्मांडीय शक्ति है, जो एक विशेष जनरेटर—एक पुरुष (M-A-N) और उसकी चेतन आत्मा के माध्यम से प्रवाहित होती है।"

"एक शरीर विभिन्न आसनों के माध्यम से दूसरे शरीर के गहरे संपर्क में आता है, जिनमें से कुछ तुम पहले ही अनुभव कर चुके हो—योनि-आसन, सुख-पद्मासन, लता-आसन, जानुयुग्म-आसन, एकधारी-आसन, पुष्पक-आसन और शवासन। कुछ आसनों से तुम परिचित हो, और कुछ से नहीं। सभी आसन सभी के लिए नहीं होते। ये साधक की प्रकृति (प्रकृति) और साधिका (पुरुष) के अनुरूप बदलते हैं। लेकिन शवासन और सुख-पद्मासन वे दो आसन हैं, जिनमें युगल घंटों तक एकरूप बने रह सकते हैं।"

**"M—मुद्रा (Mudra):**

मुद्रा का अर्थ केवल हाथों या शरीर की किसी विशेष आकृति में स्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आंतरिक ऊर्जा नियंत्रण (inner energy control) की एक विधा है। मुद्रा के माध्यम से साधक अपनी ऊर्जा को संचित करता है, उसे नियंत्रित करता है, और आवश्यकतानुसार उसे जागृत करता है। प्रत्येक मुद्रा के पीछे एक विशिष्ट कंपन (vibration) और शक्ति प्रवाह होता है, जिसे केवल अनुभव द्वारा ही आत्मसात किया जा सकता है। मुद्रा साधक को एकाग्रता, स्थिरता और ऊर्जा-संतुलन प्रदान करती है।"

**"A—आसन (Asana):**

आसन मात्र शारीरिक मुद्राओं का अभ्यास नहीं है, बल्कि यह शरीर के भीतर सूक्ष्म ऊर्जा धाराओं को व्यवस्थित करने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। विभिन्न तांत्रिक आसनों के माध्यम से साधक शरीर और मन की चंचलता को समाप्त करता है और ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ने के लिए स्वयं को तैयार करता है। सही आसन के बिना ऊर्जा का प्रवाह बाधित हो सकता है, जिससे साधना की दिशा भटक सकती है। तंत्र में कुछ विशिष्ट आसनों का ही चयन किया जाता है, जो सहजावस्था (sahaja state) में प्रवेश की अनुमति देते हैं।"

"दो शरीर विभिन्न आसनों (आसन) के माध्यम से गहरे संपर्क में आते हैं, जिनका आपने पहले ही अनुभव किया है:

1. योनि-आसन (Yoni-āsana)
2. सुख-पद्मासन (Sukha-Padmasana)
3. लता-आसन (Latā-āsana)
4. जानु-युग्म-आसन (Januyugma-āsana)
5. एकधारी-आसन (Ekadhārī-āsana)
6. पुष्पक-आसन (Puspaka-āsana)
7. और निश्चित रूप से शवासन (Savāsana)

"इनमें से कुछ आसनों को आप जानते हैं, और कुछ को नहीं। सभी आसन सभी के लिए उपयुक्त नहीं होते। प्रकृति (प्रकृति) और पुरुष (पुरुष) के अनुसार आसन बदलते हैं। लेकिन शवासन और सुख-पद्मासन ऐसे दो आसन हैं जिनमें युगल घंटों तक विलीन रह सकते हैं।"

"N—नाड़ियाँ (Nadi):

"वह सूक्ष्म प्रवाह जो किसी व्यक्ति की ब्रह्मांडीय चेतना को सक्रिय करता है, अदृश्य मार्गों या नाड़ियों (nāḍīs) के माध्यम से प्रवाहित होता है। यही नाड़ियाँ ब्रह्मांडीय ऊर्जा के उतार-चढ़ाव को व्यक्ति की चेतना तक पहुँचाती हैं। गुरु ही वह

व्यक्ति होता है, जो संयोग की प्रगति के अनुसार शिष्यों को उचित दिशा में मार्गदर्शन देता है। जब वह पूरी तरह आश्वस्त हो जाता है, तभी वह युगल को स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने की अनुमति देता है। इस प्रकार, गुरु इस पूरी प्रक्रिया की आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही रूपों में ज़िम्मेदारी लेता है, जिससे उसका स्वयं का आध्यात्मिक और शारीरिक अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।"

"यह स्पष्टीकरण शरीर के भीतर सक्रिय उस सूक्ष्म ऊर्जा को संदर्भित करता है, जो अदृश्य होते हुए भी कार्यरत रहती है। किसी भी अन्य ऊर्जा की तरह, यह ऊर्जा भी अपनी उपस्थिति को केवल अपने प्रभावों के माध्यम से प्रकट करती है। जैसे विद्युत शक्ति (electricity) अपनी उपस्थिति केवल तब प्रकट करती है, जब एक बल्ब जलता है, एक पंखा घूमता है, या एक पहिया घूमने लगता है। यही सिद्धांत सौर ऊर्जा, जल-शक्ति, अग्नि-शक्ति, और भाप-शक्ति पर भी लागू होता है। शक्ति स्वयं अमूर्त होती है, केवल उसका उत्पन्न करने वाला यंत्र (जनरेटर) और उसके प्रभाव ही दृष्टिगोचर होते हैं।"

"इसी प्रकार, नाड़ियाँ भी अदृश्य होती हैं, लेकिन हम उनकी उपस्थिति को उनके प्रभावों के माध्यम से अनुभव करते हैं। यह अनुभव हमें मस्तिष्क प्रणाली (brain system) के माध्यम से प्राप्त होता है, जो हमारे संवेदनशील अनुभवों और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का संचालन करता है। लेकिन नाड़ियों की अदृश्यता हमें विचलित नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, चीनी चिकित्सा पद्धति में एक्यूपंक्चर (acupuncture) को चमत्कारी चिकित्सा के रूप में देखा जाता है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में इस प्रकार की चिकित्सा को पहले ही स्वीकार किया गया था, जिसे सूचिकाभरण (needle-therapy) कहा जाता था। इसी प्रकार वशीकरण (hypnosis), सम्मोहन (mesmerism) और अन्य मानसिक उपचार भी हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं।"

"हमने इन विधियों की उपेक्षा केवल इसलिए की क्योंकि इनकी वैज्ञानिक मान्यता (scientific acceptance) नहीं थी। और वैज्ञानिक मान्यता का अर्थ अंततः पश्चिमी स्वीकृति से ही लिया जाता है। लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि धीरे-धीरे पश्चिम भी उन प्रभावशाली विधियों और उपचारों को स्वीकार करेगा, जिन्हें पूर्वी ज्ञान परंपरा ने सहस्राब्दियों से अपनाया है। योगिक शक्तियों (supraconscious yogic forces) की वैज्ञानिक स्वीकृति भी समय के साथ बढ़ेगी। और तुम स्वयं अपने जीवनकाल में इस परिवर्तन को देखोगे।"

"पुरुष और स्त्री के जननांगों की संरचनात्मक बनावट में गहरा अंतर है। जहाँ पुरुष के जननांग बाहरी रूप से विद्युत (इलेक्ट्रिकल) और आंतरिक रूप से चुंबकीय (मैग्नेटिक) होते हैं, वहीं स्त्री के जननांग इसके विपरीत होते हैं। यदि ऐसा न होता, तो उनके मिलन के समय 'दो का एक' में पूर्ण रूप से कार्य करना संभव न होता।"
"स्त्री के जननांग बाहरी रूप से चुंबकीय और आंतरिक रूप से विद्युत होते हैं। दोनों मिलकर एक ब्रह्मांडीय शक्ति क्षेत्र (कॉस्मिक फोर्स) का निर्माण करते हैं। यह जैसे ब्रह्मांडीय ऊर्जा क्षेत्र (कॉस्मिक एनर्जी फील्ड) का लघु रूप (माइक्रोकोस्मिक रेप्लिका) बनता है।"

"अब हम अपने पाठ पर लौटते हैं।

"मानव ऊर्जा दो विपरीत और भिन्न प्रक्रियाओं में विभाजित होती है: पहला, अनाबॉलिज्म (धृति-शक्ति), और दूसरा कटाबॉलिज्म (शूति-शक्ति)। अनाबॉलिज्म या धृति-शक्ति संरक्षण में सहायक होती है, जबकि कटाबॉलिज्म या शूति-शक्ति

ऊर्जा को कुछ निश्चित मार्गों पर प्रवाहित करने का कार्य करती है। यही द्वैत मानव शरीर में शिव-शक्ति के रूप में परिलक्षित होता है, जिसे अर्धनारीश्वर की छवि में दर्शाया गया है। ये प्रतीक, यंत्र और मुद्राएँ गहरे अर्थ से भरी हुई हैं। गीता में भी कहा गया है—'प्रकृति मेरी देखरेख में कार्य करती है। प्रकृति ही योनि है, और मैं उसमें बीज डालता हूँ।'* सृष्टि की इस द्वैत प्रकृति के कारण ही निरंतर विकास संभव होता है, जो ब्रह्मांड को निरंतर आगे बढ़ाता रहता है।"*

"इस आसन में साधक ब्रह्मांडीय चेतना के प्रवाह में लीन हो जाता है, और ऊर्जा का संचार इड़ा-पिंगला-सुषुम्ना नाड़ियों के माध्यम से मूलाधार से सहस्रार तक होता है। यह प्रवाह पूरे मस्तिष्क मंडल (cerebellum) में फैल जाता है और सभी चक्रों से प्रवाहित होता है। साधक कैवल्य (अद्वैत अवस्था), आनंद (परमानंद), या ब्रह्मानंद (ब्रह्मांडीय परमानंद) में विलीन हो जाता है। यह किसी व्यक्तिगत तृप्ति के लिए नहीं होता, न ही यह स्वार्थपरक आनंद का अनुभव है। यह तो वैसा ही है जैसे एक विशाल जलाशय का निर्माण करना ताकि संपूर्ण मानवता को जल का अमृत मिल सके। यही योग की अंतिम उपयोगिता है। इसका उपयोग करिए, पर स्वार्थी मत बनिए।"

"वह सत्र निश्चित रूप से लंबा था।

"मैंने महा सरस्वती के उस सुनसान और परित्यक्त मंदिर को अपनी साधना के लिए क्यों चुना था, और उस रात, जब मैं आस्था और भय, संशय और दिव्य अनुभूतियों के बीच झूल रहा था, मंदिर के गुंबद के नीचे रात बिताने का निर्णय क्यों लिया—यह मैं आज भी स्पष्ट नहीं कर सकता। अतीत के कई घटनाएँ धुंधली स्मृतियों के जंगल में खो गईं, परंतु उस रात एल.एस. की कृपा से सब कुछ समाप्त नहीं हुआ।"

"उनका अप्रत्याशित और अचानक प्रकट होना घटनाओं की दिशा बदल चुका था। मंदिर का साधारण रखवाला उस संत-स्वरूपा महिला को जानता था। उसने हमारे लिए मंदिर का द्वार खुला छोड़ दिया, एक यज्ञ-विधि की व्यवस्था कर दी, और ऊनी आसनों को बिछा दिया। ये सीधे-सादे लोग वास्तव में बहुत उदार होते हैं।"

"वह रात कब समाप्त हो गई, पता ही नहीं चला। जब हम बाहर आए और ऊँची दीवारों पर खड़े होकर ठंडी, शांत और अंधेरी गंगा को निहार रहे थे, तब पूर्वी तट स्वर्णिम अरुणिमा से दमक रहा था। भक्तजन स्नान कर रहे थे, मंदिरों की घंटियाँ नदी-तट के हजारों मंदिरों में गूँज रही थीं।"

"एल.एस. मुझे अकेला छोड़कर चली गईं। मैं वहीं खड़ा, देखता रहा, सोचता रहा, और हैरान होता रहा। वह दिन आज भी मेरे स्मृति-पथ पर अपनी लंबी परछाइयाँ डालते हैं। इन वर्षों में जीवन का प्रकाश मद्धम हो चुका है, पर वे दिन आज भी अपनी आभा बिखेरते हैं।"

"एल.एस. ने वर्षों पहले तंत्र साधना में कामशक्ति के रहस्य को समझाया था। इस बार भी इस विषय को एक नए दृष्टिकोण से देखा गया।"

"परंतु यह अंत नहीं था।

"यह ऐसा विषय है जो बार-बार मन में आता है, तब तक भ्रमित करता रहता है जब तक इसे वास्तविक रूप से अनुभव न किया जाए। यह आश्चर्यचकित करने वाली बात है कि हमारे सचेतन मन पर यह शक्ति कितनी गहराई से प्रभाव डालती है, जिसे हम केवल सहज प्रवृत्ति (instinct) मानकर अनदेखा कर देते हैं। वास्तव में, यह सहज प्रवृत्ति से कहीं अधिक है।

क्योंकि हम इसे अधिकांशतः गलत प्रयोग और दुरुपयोग के रूप में देखते हैं, हमारा अवचेतन सदैव इसे औचित्य (justification) प्रदान करने की खोज में भटकता रहता है।"

"वास्तव में, कामशक्ति अत्यंत उच्च स्तर की महाशक्ति है, और मानव शरीर इस शक्ति के साथ खेलता रहता है बिना यह जाने कि इसका सही उपयोग क्या है। दुरुपयोग के कारण हमारे मन में संदेह उत्पन्न होता है; संदेह से हम अपराधबोध महसूस करते हैं; और इस अपराधबोध से बचने के लिए हम औचित्य ढूँढने लगते हैं।"

"हमारे गलत कृत्यों को सही ठहराने के लिए हम प्रायः दूसरों की ओर उँगली उठाते हैं—कभी उन्हें अपराधी साबित करके, कभी स्वयं को संत दर्शाकर। 'संत-स्वरूप दिखने' का खेल काम-विकृति से ग्रस्त व्यक्तियों का सबसे आम नाटक है।"

## एक कप कॉफी

"साल 1929-31 के दौरान, मेरा मन अत्यधिक उलझन में था। भीतर की अशांति चरम पर थी; और मेरे भीतर का राजस स्वभाव अत्यधिक उथल-पुथल मचा रहा था। शरीर में अचानक गर्मी महसूस होती थी (यह कोई बुखार नहीं था, जिससे आलस्य और कमजोरी आ जाती है), और प्रायः स्नायविक उत्तेजना के कारण सिरदर्द जैसा कुछ महसूस होता था। उस समय की राजनीतिक स्थिति ने इस बेचैनी को और भी बढ़ा दिया था। मैं घटनाओं में अत्यधिक संलिप्त था, और राजनीतिक उग्रवादियों की तलाश में चल रहे अभियानों से बचने के लिए मुझे कुछ समय तक अज्ञात स्थान पर छिपना पड़ा। यह मेरी आध्यात्मिक साधना की सबसे कठिन अवधि थी। मैं अकेला था, अज्ञात था, एक सुनसान क्षेत्र में था, जहाँ से निकटतम रेलवे स्टेशन भी बहुत दूर था, और मैं अपने प्राकृतिक परिवेश, इंडो-गंगा के मैदानों से पूरी तरह कटा हुआ था।"

"इसी समय मेरी भेंट एक अजनबी से हुई।

"कुछ लोगों ने मुझसे सहायता माँगी। उन्होंने बताया कि एक अनजान व्यक्ति, जो किसी अज्ञात भाषा में बात कर रहा था, शारीरिक रूप से इतना कमजोर हो चुका था कि बेहोशी की हालत में पहुँच गया था।

"यह व्यक्ति अत्यधिक वृद्ध था। वह लंबा था, अपनी उम्र के हिसाब से मजबूत काया वाला था, और स्पष्ट रूप से एक तांत्रिक योगी था, जिसे किसी भी बाहरी कठिनाई से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए थी। जब उसने मुझे देखा, तो उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। बाद में मुझे पता चला कि उसकी मातृभाषा तेलुगु थी। इसके अलावा वह केवल संस्कृत और शायद कुछ शब्द अंग्रेज़ी के जानता था। उसे हिंदी बिल्कुल भी नहीं आती थी, जबकि स्थानीय लोग हिंदी समझ सकते थे, परंतु बोलते अपनी राजस्थानी जनजातीय भाषा में थे।"

"यह योगी तेलंगाना से आया था, और कॉफी का अत्यधिक अभ्यस्त था। लेकिन यहाँ उसे कई दिनों से कॉफी नहीं मिली थी, क्योंकि वह अपने गुफानुमा आश्रम को छोड़कर तुंगभद्रा नदी के पास से ब्रजधाम की पैदल यात्रा पर निकला था। उत्तर प्रदेश के मथुरा के समीप स्थित वृंदावन तक की उसकी यात्रा लगभग 800-900 मील लंबी थी, लेकिन रास्ते में वह भटक गया। एक मोड़ पर उसे गलत दिशा बता दी गई, जिससे वह उत्तर दिशा में जाने के बजाय पश्चिम की ओर चल पड़ा। इस तरह, वह उज्जैन और महाकालेश्वर के मंदिरों तक जा पहुँचा। वहाँ से फिर उसे गलत मार्गदर्शन मिला, और वह उत्तर की ओर न बढ़ते हुए विंध्य पर्वतमाला के निर्जन क्षेत्रों में भटकता रहा, जहाँ उस समय मैं गुमनाम रूप से एक घरेलू सेवक के

रूप में काम कर रहा था। उसे अपनी इस कठिनाई का सबसे बड़ा कारण यही लगा कि वह स्थानीय भाषा नहीं जानता था।"

"वहाँ कॉफी उपलब्ध नहीं थी, परंतु मैंने औषधियों और कैफीन की एक बूंद की सहायता से एक विकल्प तैयार किया। लेकिन उसे रसायनों में कोई रुचि नहीं थी। उसकी प्यास किसी भौतिक पदार्थ के लिए नहीं, बल्कि आत्मा की तृप्ति के लिए थी। वह अपने देशी मिश्रण की सुगंध को याद कर रहा था।"

"उसने समझाया कि आत्मा किसी भौतिक वस्तु या आकार की नहीं, बल्कि सारतत्त्व (essence) की आकांक्षा रखती है—वह जो पाँच इंद्रियों के ज्ञान को परिपुष्ट कर देता है, जैसा कि गीता में वर्णित तन्मात्राओं (tanmatras) में बताया गया है।"

"मुझे उसके निकट जाने की तीव्र इच्छा हुई, और उसी सप्ताह ऐसी एक घटना घटी, जिसने मुझे हमेशा के लिए उसके साथ जोड़ दिया।"

## नज़री: शक्ति का स्रोत

*"मैं रोज़ शाम को लंबी सैर पर जाया करता था, और सुबह की सैर भी करता था, हालांकि उतनी लंबी नहीं। मुझे एक जनजातीय दुहिन से दूध लेना होता था, जो पहाड़ी के नीचे रहती थी। दूध लेने जाते समय, मैं पहाड़ी तल के एक झील में स्नान करता था; फिर दूध लेने निकलता। कभी-कभी मैं एक विशेष शक्ति पीठ (एक सिद्ध संत द्वारा प्रतिष्ठित पवित्र स्थान) के लिए प्रसिद्ध मंदिर भी जाया करता था।"*

*"कुछ महीनों बाद, मुझे एक शक्ति स्पंदन का अनुभव हुआ, और मैंने सही पहचाना कि यह स्पंदन उसी दूध दुहिन से आ रहा था। राजस्थान की प्रथा के अनुसार, जहाँ कुछ वर्गों में कन्याओं की संख्या कम होती है, उसे जन्म के तुरंत बाद ही विवाह के लिए आरक्षित कर दिया गया था। उसकी सगाई की प्रारंभिक रस्में तब पूरी हो गई थीं, जब वह मात्र पाँच वर्ष की थी। उसे केवल इतना ज्ञात था कि उसका पति है, लेकिन उससे अधिक कुछ नहीं। उसने न तो उसे देखा था, न पहचाना था। किंतु अपनी स्वाभाविक शालीनता और सरलता में वह शक्ति उपासना की परंपराओं को सहज रूप से अपनाए हुए थी। काली जनजातीय समाज में अत्यंत लोकप्रिय देवी थी।"*

*"झील के एक ओर एक बीस फुट ऊँची खड़ी चट्टान थी, जो झाड़ियों से ढकी हुई थी, जिसे कोई भी छेड़ने की हिम्मत नहीं करता था। वहाँ केवल तैरकर ही पहुँचा जा सकता था। चूँकि किनारों पर कहीं भी आराम करने की जगह नहीं थी, तैरकर जाने का अर्थ था—वापस उसी किनारे पर लौटकर आना। यह कई लोगों को जोखिम भरा लगता, इसलिए किसी ने भी वहाँ तैरने का साहस नहीं किया। किंतु वह झील अत्यंत सुंदर थी।"*

*"मैंने तैरकर जाने का साहस किया और वहाँ एक छोटी गुफा खोज निकाली। जल्द ही मुझे पता चला कि यह स्थान अन्य कुछ लोगों को भी ज्ञात था, और वे भी इसका उपयोग कर रहे थे।"*

*"एक दिन, जब मैं हमेशा की तरह दूध लेने पहुँचा, तो अचानक उस लड़की नज़री ने मुझसे पूछा—'क्या तुमने कभी गुफा देखी है?' मैं स्तब्ध रह गया। आश्चर्य और विस्मय में डूब गया कि उसे क्या-क्या ज्ञात था! यह सोचता रहा, और यह आश्चर्य मेरे साथ पूरे दिन बना रहा।"*

*"उस समय, मैं लेडी इन सैफ्रन (LS) के बारे में सोच रहा था और उनसे मार्गदर्शन माँग रहा था। (आज भी, जब मैं किसी जटिल स्थिति में होता हूँ, तो मन ही मन उनसे परामर्श लेता हूँ और सुखद परिणाम प्राप्त करता हूँ।)"*

*"उस दिन मेरी शाम की सैर के लिए रामचंद्र मेरे साथ था। हम दोनों अंग्रेज़ी संसद के विकास और कुछ क्रांतिकारी साहित्य का अध्ययन साथ करते थे। उस क्षेत्र में कोबरा सांप बहुतायत में थे। किंतु राहत की बात यह थी कि वहाँ बहुत से मोर भी थे, जो विशेष रूप से कोबरा को अपना भोजन बनाते थे। इसलिए रामचंद्र की उपस्थिति मुझे सुरक्षा का अहसास दिलाती थी, क्योंकि उसमें कोबरा की गंध को दूर से ही पहचानने की दुर्लभ क्षमता थी।"*

*"उस दिन पूर्णिमा थी। मैं उपवास पर था। रामचंद्र ने मुझसे कहा कि वह स्थानीय शक्ति मंदिर तक साथ चलेगा, जो झील से तीन मील दूर था, और जिसे पार करने के लिए अफीम के खेतों से होकर जाना पड़ता था (इस क्षेत्र में अफीम और कपास की खेती प्रमुख थी)। यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि रामचंद्र हमेशा उस मंदिर जाने से बचता था।"*

*"लगभग तीन महीने पहले, मैं एक बार रामचंद्र को उस मंदिर ले गया था। उसी दिन वहाँ जनजातीय लोगों द्वारा एक बलि दी गई थी। जब रामचंद्र ने बलि की रक्तरंजित भूमि देखी, तो वह, जो एक श्रद्धालु जैन था, तत्काल बेहोश हो गया। इसलिए जब इस दिन वही रामचंद्र स्वेच्छा से मेरे साथ जाने के लिए तैयार हुआ, तो मैं हैरान रह गया।"*

*"लेकिन मेरी आश्चर्य की सीमा तब और बढ़ गई जब वहाँ मुझे नज़री मिली—राजसी वस्त्रों में सजी हुई, आभूषणों से अलंकृत! वह अकेली नहीं थी; कई अन्य जनजातीय युवतियाँ और कुछ अज्ञात पुरुष वहाँ एकत्र थे। नज़री ने मुझे एक तांत्रिक अनुष्ठान में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। यह वास्तव में एक साधना सभा थी, जिसे वे आयोजित कर रहे थे। उस दिन अमावस्या की रात थी। रामचंद्र मुस्करा रहा था।"*

*"समूह के एक वृद्ध व्यक्ति ने मुझसे कहा—'नज़री तुम्हें जानती है। तुम गुफा में अपने आसन पर साधना करते हो। नज़री भी उसी आसन का उपयोग करती है, परंतु विभिन्न समयों पर, ताकि टकराव न हो। यहाँ किसी को आमंत्रित नहीं किया जाता; केवल योग्य व्यक्ति ही यहाँ आ पाते हैं। रामचंद्र तुम्हें जानता था, इसलिए तुम स्वागत योग्य हो। बैठो और अपना स्थान ग्रहण करो।'"*

*"पुरुषोत्तम तेलंगाना से आए वृद्ध योगी से मिलने से पहले ही, मैं नज़री के घेरे में आ चुका था। लेकिन फिर भी संदेह मेरी चेतना को छेद रहा था। संदेह वह दीमक है, जो आत्मा को खोखला कर देती है।"*

*"लेकिन नज़री स्वयं एक सिद्ध आत्मा थी। वह मुझे बीच-बीच में आश्वस्त किया करती थी। हमारी पहली झिझक भरी पहचान के बाद, वह मेरे साथ इतनी घनिष्ठ हो गई कि दोपहर के समय गुप्त रूप से एक पेड़ पर चढ़कर मेरे कमरे की दूसरी मंज़िल की खिड़की से उतर आती और हम दोनों योग साधना के विविध पहलुओं पर चर्चा करते।"*

*"मैं उसकी साधना का अध्ययन करता रहा, परंतु पूर्णतः आश्वस्त नहीं था। दिन-ब-दिन मेरे संदेह बढ़ते जा रहे थे, और मुझे किसी से अपने विचार साझा करने की आवश्यकता महसूस हो रही थी। किंतु किसी कारणवश LS तक मेरी पहुँच नहीं बन रही थी। सामान्यतः, वे हमेशा मेरे समीप होती थीं, परंतु कभी-कभी वे मेरी पहुँच से बाहर भी चली जाती थीं, जब किसी प्रकार का संपर्क संभव नहीं होता था। मैं एक मानसिक शून्यता के दौर से गुजर रहा था।"*

*"शायद LS जानती थीं कि मैं क्या खोज रहा हूँ, और मुझे किसकी आवश्यकता थी। शायद इसीलिए वह वृद्ध योगी इस भगवान-विहीन निर्जन प्रदेश में भटकता हुआ आ पहुँचा था। मुझे इस संयोग पर संदेह हुआ कि क्या यह वास्तव में संयोग था?"*

## दहुति

एक सुबह, स्नान के बाद और दूधवाली के पास जाते समय, मैंने सीधा मार्ग न लेकर एक प्राचीन खंडित मंदिर के पास से गुजरने का निश्चय किया, जहां वह बूढ़ा व्यक्ति ठहरा हुआ था। उसने कहा था कि वह कठिन यात्रा की थकान से उबर रहा है।
मुझे मंदिर खाली मिला।
यह सोचकर कि शायद वह अभी भी झील में स्नान कर रहा हो, मैं बाहर गया। यह झील का एक बहुत ही शांत कोना था, जहां आमतौर पर कोई नहीं आता था। एक उभरी हुई चट्टान के टुकड़े पर, जो झील के पानी के ऊपर झुकी हुई थी, वह लंबा और विशाल व्यक्ति लगभग झुका हुआ था, मानो खुद को आधा मोड़ते हुए।
नवंबर की सुबह की धुंध में वह अलादीन के जिन की तरह लग रहा था।

धीरे-धीरे पास जाने पर, मैंने उसे हठयोग के सबसे कठिन अभ्यासों में से एक, दहुति में लगा हुआ पाया। मेरी नजरें एक लंबे सफेद महीन कपड़े पर पड़ीं, (या यह रेशम था? नहीं, यह रेशम नहीं हो सकता था, क्योंकि रेशम सोखता नहीं है; यह अवश्य लिनन रहा होगा)।
उस कपड़े का एक सिरा उसकी नाक से लटका हुआ था, और दूसरा सिरा शायद उसके गुदा से; और वह उसे धीरे-धीरे नीचे से खींच रहा था।
उसके बगल में एक और कपड़े का टुकड़ा पड़ा था, जिसने पहले ही अपनी भूमिका पूरी कर ली थी, जो दूसरी नथुने से होकर गुजरा था।
मैंने कुछ समय तक उसे देखा और फिर उसे उसकी साधना में छोड़कर अपने दैनिक कामों में लग गया।

उस शाम, हमारी सामान्य चर्चाओं के दौरान, मैंने सीखा कि हठयोग के अभ्यास उन लोगों के लिए आवश्यक नहीं हैं जिन्हें सीधे किसी सिद्ध योगिनी (पूर्णत्व प्राप्त महिला) का आशीर्वाद प्राप्त हो। वह सबसे प्यारी और आदरणीय शिक्षिका होती है, जो आत्मिक मुक्ति के मार्ग में सहायक होती है।
मुझे लगा कि वह एलएस की ओर इशारा कर रहा था।
मैं चुप रहा।
वह आगे बोला।

## कुण्डलिनी

कुंडलिनी की अग्नि एक वास्तविक अग्नि है। यह ऐसी अग्नि नहीं जिससे तुम दीपक जला सको या अपने बर्तन उबाल सको। ऐसी लौकिक अग्नि तुम्हारी बुद्धि को प्रकाशित नहीं कर सकती, न ही तुम्हारे भीतर आनंद की ज्योति प्रज्वलित कर सकती है। इसके अभाव में भय तुम पर हावी हो जाता है, और भीतर का अंधकार तुम्हें बाहरी अंधकार की तुलना में अधिक घबराहट और भय से भर देता है। यदि यह अग्नि न होती, तो उत्तेजना, आवेग, रोमांच और प्रेरणा जैसी प्रक्रियाएँ बिल्कुल भी सक्रिय नहीं होतीं।

भौतिकवादी इसे केवल 'नसें' कहकर वास्तविक प्रश्न को टाल देते हैं। उनके पास आगे के ज्ञान की प्रक्रिया का कोई यांत्रिक आधार नहीं है। लेकिन कुंडलिनी अग्नि है; और यह उतनी ही वास्तविक है जितना प्रेम वास्तविक है; जितना मैथुन वास्तविक है; जितनी घृणा वास्तविक है; जितनी ईर्ष्या वास्तविक है; जितना अज्ञान वास्तविक है।

यह एक अद्‌भुत शक्ति है, जो सुप्त रहती है, और इसे जाग्रत करना पड़ता है। जब तक यह जाग्रत नहीं होती, तब तक मैथुन भी ठीक से क्रियाशील नहीं हो सकता। शिथिलता मैथुन में सहायक नहीं होती। मैथुन तभी संभव है जब यह शक्ति उत्तेजित हो, जब यह ऊर्जावान हो, जब यह तनाव में हो। और ऊष्णता तथा अग्नि ही इस शिथिलता को एक तीव्र शक्ति में बदल सकती है, जैसे किसी वाद्ययंत्र के तार कसने से उसकी ध्वनि उच्च स्तर तक पहुँचती है।

मानसिक जगत का भी अपना एक सप्तक होता है। मानव तंत्रिका तंत्र के सात सप्तक ही सात चक्र हैं। कौन ऐसा है जो पहले सप्तक से शुरू कर सातवें तक पहुँच सके? न केवल मानव स्वर, बल्कि कोई भी वाद्ययंत्र—ढोल, पियानो या वायलिन—ऐसा नहीं किया जा सकता कि वह पहले सप्तक से सीधे सातवें तक पहुँच जाए।

मानव तंत्रिका तंत्र ही वह माध्यम है, जो योग साधना द्वारा चेतना को जाग्रत करके उसे सबसे निम्न स्तर (मूलाधार चक्र) से सबसे उच्च स्तर (सहस्रार चक्र) तक ले जा सकता है, जहाँ चेतना एक शांत झील की तरह स्वयं को पूर्ण प्रकाश में प्रतिबिंबित करती है।

कई लोग कुंडलिनी को केवल मैथुन की शक्ति मानने की गलती करते हैं। यह न केवल मूर्खतापूर्ण बल्कि भ्रामक और नकारात्मक दृष्टिकोण है। बहुत से अज्ञानी यह भी कहते हैं कि ईसाई चर्च की प्रार्थना (मास) एक लिंगोपासना का रूप है! भोगवादी अपनी आलस्य और अज्ञानता को अपनी शक्ति मानते हैं।

कुंडलिनी एक शक्ति के रूप में गूढ़ रहस्यों से परे है, हालाँकि रहस्यवादियों द्वारा इसका बार-बार उल्लेख किया जाता है। वास्तव में, कुंडलिनी की शक्ति मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व और अस्तित्व में सक्रिय रहती है। मनुष्य वही है जो कुंडलिनी उसे बनाती है।

यंत्रवत् जीने वाला व्यक्ति केवल खाता, पचाता, मल त्याग करता, सोता, संतान उत्पन्न करता और मर जाता है—यह सब वह पूरी तरह यांत्रिक और स्वचालित ढंग से करता है। शरीर की इस यांत्रिक प्रक्रिया को कुंडलिनी की शक्ति की कोई आवश्यकता नहीं होती, यह केवल आज्ञा चक्र (मेडुला) के क्रियाशील तंत्र पर निर्भर होती है।

लेकिन इस यंत्रवत् मनुष्य के भीतर एक और व्यक्ति छिपा होता है—वास्तविक मनुष्य। यह वही व्यक्ति है जो गाता है, सौंदर्य को सराहता है, कविता और साहित्य की रचना करता है, कला और आविष्कारों में संलग्न रहता है। वह भविष्य की कल्पना करता है, अपने ही स्वरूप की कल्पना देवताओं और देवियों के रूप में करता है, अपने आदर्शों की पहचान करता है और जब वे उपलब्ध नहीं होते तो बेचैन हो उठता है।

हम जानते हैं कि इस ऊर्जा का स्रोत, जो जीवन को आनंदमय बनाता है, उसे 'हलादिनी' कहा जाता है, जो कुंडलिनी का ही एक रूप है—अघटन-घटन-पटियसी (जो असंभव को संभव करने की शक्ति रखती है)।

कुंडलिनी की धारा पूरे संवेदनशील क्षेत्र को अपनी ऊर्जा से परिपूर्ण कर देती है। यह ऊर्जा ही मनुष्य को सृजन करने, आगे बढ़ने और उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए प्रेरित करती है। कुंडलिनी को आलस्य स्वीकार नहीं।

कुंडलिनी सृजन करती है और सृजन में ही प्रसन्न होती है, यह स्वर्ग और पृथ्वी के सभी द्वार खोल देती है ताकि एक जाग्रत आत्मा भूत और भविष्य को देख सके, सभी इंद्रियबोध और अतिंद्रीय अनुभूतियों का लाभ उठा सके और अपने जीवन को सार्थक बना सके।

देखा जाए तो, यह सहज ही समझ में आता है कि इस सर्वव्यापी आनंदमयी शक्ति को अज्ञानवश केवल इंद्रियजनित भोग और वासनाओं तक सीमित कर दिया जाता है।

कुंडलिनी अन्य विशेष शक्तियों का रहस्य भी अपने भीतर समेटे हुए है। इनमें से एक शक्ति यह है कि यह जीवित संसार को अपने प्रभाव में बाँधे रखती है। मनुष्यों को सृष्टि की वास्तविक प्रकृति का संपूर्ण बोध नहीं होने दिया जाता, क्योंकि यदि वे इसे पूरी तरह समझ लें, तो वे विचलित हो सकते हैं, भ्रमित हो सकते हैं, और यहाँ तक कि विक्षिप्त भी हो सकते हैं।

कुंडलिनी उन्हें अपनी माया के प्रभाव में रखती है, उन्हें अपने बंधन में बाँधे रखती है। यदि कुंडलिनी पूर्ण रूप से जाग्रत हो जाए, तो व्यक्ति को इस अस्त-व्यस्त और अराजक संसार का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देगा, और वह स्वाभाविक रूप से इससे पलायन करना चाहेगा। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर पलायनवाद (escapism) की एक अंतर्निहित प्रवृत्ति मौजूद होती है।

लेकिन इस सृष्टि से भागने का कोई उपाय नहीं है। यही कारण है कि कुंडलिनी एक प्रकार की चेतना-विस्मृति (trance) में रखती है। यह सुषुप्त रहती है, परंतु लगातार शरीर और मन को एकजुट रखने के लिए ऊर्जा का संचार करती रहती है। केवल 'चुने हुए लोग' ही इसके बंद द्वार को खोलने, इसके भीतर सोए हुए अजगर को जगाने और उससे संघर्ष करने का साहस कर सकते हैं।

गीता कहती है कि जिसे हम जाग्रत अवस्था मानते हैं, वह वास्तव में नींद की अवस्था है; और जिसे हम निद्रा अवस्था मानते हैं, वह वास्तव में जाग्रत अवस्था है। जो ज्ञान सांसारिक लोगों के लिए अंधकार (रात्रि) के समान है, वह आध्यात्मिक लोगों के लिए जाग्रति का प्रकाश (प्रभात) है।

पूर्णतः जाग्रत योगी पुनः निद्रा में चला जाता है, परंतु इस बार वह सांसारिक गतिविधियों से विरक्त होकर गहरी तटस्थता धारण कर लेता है। सृष्टि और पुनः सृष्टि के बीच आदि शक्ति भी निद्रा में रहती है।

जो कुंडलिनी की सुप्त अवस्था के रहस्य को समझ जाता है, वह वास्तव में कुंडलिनी की वास्तविक शक्ति को जान लेता है। मनुष्य वही करता है जो कुंडलिनी उसे करने देती है।

जाग्रति कठिन है, इसलिए इसे योग-साधना या रहस्यमयी पथ कहा जाता है। इसमें कोई रहस्यवाद (occultism) नहीं है, बल्कि यह कुंडलिनी की वास्तविक और ठोस व्याख्या है।

एक ऐसी दुनिया में जहाँ सभी सोए हुए हैं, कौन किसे जगाएगा? जागने का एकमात्र उपाय यह है कि कोई बाहरी या आंतरिक सहायता प्राप्त हो। लेकिन ये उपाय भी असफल हो सकते हैं, और कोई निश्चितता नहीं है कि यह संसार हमेशा इसी प्रकार कार्य करेगा।

## वह स्वयं सृजन नहीं कर सकता था

"इसलिए चक्र साधना का उपयोग आवश्यक है, जहाँ कई व्यक्तियों के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि तथाकथित गैर-तांत्रिक मार्गों में भी समाज या सत्संग (सामूहिक आध्यात्मिक संगति) आवश्यक होती है। केवल हठयोग ही एक ऐसा साधन है जिसमें योगी अकेले कार्य करता है। लेकिन यह मार्ग अत्यंत कठिन है। यदि चक्र साधना में इंद्रियबोध की गिरावट का खतरा होता है, तो हठ साधना में व्यक्ति के उन्माद की संभावना बनी रहती है (जैसा कि पहले गोविंदा

काका के मामले में देखा गया था)। केवल वे ही सफल हो सकते हैं जो संकल्प में अडिग, इच्छाशक्ति में दृढ़, और शरीर एवं मन में अनुशासित हैं।

लेकिन इन दोनों में से कुंडलिनी चक्र साधना, तंत्र मार्ग, अपेक्षाकृत सरल है, क्योंकि यह मानव शरीर और मन को नकारात्मक कठोरताओं के लगभग पागलपन की प्रक्रिया से नहीं गुजारता।

"नकारात्मक मार्ग, जिसे तथाकथित संयम का मार्ग कहा जाता है, गीता में 'आसुरी मार्ग' (राक्षसी प्रवृत्ति) कहा गया है। 'जो व्यक्ति अपने शरीर के तत्वों को कठोर तपस्या से कष्ट देता है और मुझे, जो उसके भीतर स्थित हूँ, उसी प्रकार पीड़ा पहुँचाता है, उसे आसुरी स्वभाव वाला जानो।' किसी भी कार्य में, किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में, कोई भी व्यक्ति अकेले स्थायी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक व्यक्तिगत प्रयास की सफलता के पीछे कई व्यक्तियों का योगदान होता है। यह स्वीकार करना आवश्यक है कि जीवन में कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं होता। जीवन, जीवन पर निर्भर करता है; और जीवित संसार एक अदृश्य, और इसलिए अव्यक्त, परंतु वास्तविक आत्मिक और मानसिक परस्पर निर्भरता के माध्यम से ही बना रहता है। इस आत्मिक शक्ति को स्वीकार करने का रूप ही प्रार्थना की संकल्पना में समाहित है।

"जीवन सामूहिक प्रयासों से बना है। स्वयं अकेले उसने सृजन नहीं किया। वह स्वयं से प्रेम नहीं कर सकता था। उसने दूसरे की खोज की, ऐसा वेद कहते हैं।

"यदि साधना के प्रयासों के दौरान योगी गलत दिशा में चला जाए तो क्या होता है? क्या तुमने स्वयं ऐसे लोगों से भेंट नहीं की? क्या तुमने उनमें से कई की सहायता नहीं की? कई असफल होते हैं, तब कहीं जाकर कोई एक सफल होता है; और वही एक संत बनता है, महापुरुष बनता है, और दूसरों के लिए मार्गदर्शक बनता है। हम उन्हें ईसा मसीह, बुद्ध, राम और कृष्ण कहते हैं। ये प्रतिदिन, हर युग में जन्म नहीं लेते।

"इसी आशा के कारण, छोटों को बड़ों की शरण लेनी चाहिए। मार्गदर्शन का महत्व अत्यंत आवश्यक है। गुरु के प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन का महत्व साधक के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शरीर के लिए श्वास, और जीवन के लिए सृजन। गुरु वह है जो समूह का संगठन करता है; समूह का मार्गदर्शन करता है; समूह का नेतृत्व करता है; समूह का केंद्र बनता है; चक्रवर्ती बनता है; मूल शक्ति, प्रधान नायिका बनता है। और तंत्र में गुरु एक स्त्री होती है; वह पूर्ण तभी होती है जब वह एक पुरुष से जुड़ती है।

"यह सरल है; यह कठिन भी है। यह सर्वसुलभ है; यह अनोखा भी है। इसे आसानी से समझा जा सकता है; इसे आसानी से भुलाया भी जा सकता है। लेकिन तुम्हें इसे फिर से नहीं भूलना चाहिए। तुम बार-बार भूल जाते हो। संदेह कभी मत करना। वही सबसे बड़ा संकट है। संदेह से सावधान रहो।"

## कबाड़खाने में संघर्ष

"अब तुमने यह समझ लिया है कि महापुरुष साधारण लोगों में से ही उभरते हैं; और यह भी कि गुरु व्यक्तिगत साधकों के लिए सहायक होते हैं। लेकिन सिर्फ इसलिए कि कोई व्यक्ति महापुरुष है, उसे हर कोई ईश्वर नहीं मान सकता, हालांकि कुछ के लिए वह स्वाभाविक रूप से ईश्वर के समान प्रतीत हो सकता है। वह उनके लिए ईश्वर हो सकता है, उनकी भक्ति और समर्पण के लिए एक ईश्वरीय स्वरूप धारण कर सकता है।

"इसी प्रकार, हर स्त्री 'अल्टर ईगो' (आत्मिक सहचरी) नहीं बन सकती। विवाह के कारण पत्नियाँ केवल दांपत्य संबंध से जुड़ी होती हैं। विवाह में हम प्रायः वधू के आध्यात्मिक गुणों पर विचार नहीं करते। इस कारण, विवाह प्रायः आत्माओं के अधूरे मिलन बनकर रह जाते हैं। लेकिन जब 'अल्टर ईगो' का चयन किया जाता है, तब सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि वह व्यक्ति वास्तव में साधक के लिए पूरक हो, उसकी आत्मा के तत्व का पूर्णरूप से मेल खाता हो। इस दृष्टि से, साधक के लिए गुरु या 'अल्टर ईगो' एक पूर्व निर्धारित वरदान के रूप में होता है।

"हम पहले ही व्यक्तित्व को उसके तत्व और यांत्रिक स्वरूप के संदर्भ में चर्चा कर चुके हैं। अधिकांश लोग जीवन और मृत्यु को एक अनिवार्य, यांत्रिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हैं और इस चक्र में एक मशीन की तरह कार्य करते हैं। जन्म और मृत्यु जैविक सत्य हैं और इसलिए वे केवल चिकित्सा विज्ञान और समाजशास्त्र के अंतर्गत आते हैं। लेकिन वेदों के ब्राह्मणों को, व्यास और वाल्मीकि जैसे कवियों को, या बुद्ध, शंकर, रामानुज जैसे महान संतों को केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया का परिणाम नहीं माना जा सकता।

"व्यक्तिगत रूप से लोग अपनी रुचियों, सफलताओं और असफलताओं के साथ जीते और मरते हैं। लेकिन वास्तविक मनुष्य इन बाहरी व्यक्तित्व से परे अपने आंतरिक अस्तित्व में जीवित रहता है। अक्सर बाहरी और आंतरिक व्यक्तित्व के बीच टकराव होता रहता है, जहाँ एक ओर यांत्रिक भूमिका होती है और दूसरी ओर आत्मिक पुकार। कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन का भ्रम इसी द्वंद्व का उदाहरण है। उस विशाल युद्ध क्षेत्र में कोई अन्य योद्धा—चाहे वह महान कर्ण हो, न्यायप्रिय युधिष्ठिर हो, या वीर भीम—इस संघर्ष से पीड़ित नहीं था। लेकिन संवेदनशील अर्जुन इन दो व्यक्तित्वों के बीच बंटा हुआ था: एक था यांत्रिक मनुष्य, और दूसरा था वास्तविक आत्मिक मनुष्य; एक था त्रिगुणात्मक और दूसरा गुणातीत। (गुण—तत्व; सभी प्राणियों में तमस, रजस और सतोगुण की त्रिगुणात्मकता; गुणातीत—जो इन गुणों के द्वंद्व से ऊपर उठ चुका हो।)

"मनुष्य जानता है कि उसे क्या चाहिए, लेकिन यह नहीं जानता कि उसे कहाँ खोजना है। वह जिस चीज़ को पकड़ता है, वह वही नहीं होती जो उसे चाहिए थी। कुछ लोग ठीक से जानते हैं कि कहाँ और कैसे खोजना है, हालांकि उनके लिए यह परिभाषित करना असंभव होता है कि वे वास्तव में क्या पाते हैं।

"दूसरी ओर, कुछ लोग सोचते हैं कि वे जानते हैं कि उन्हें क्या चाहिए; लेकिन जब भी वे इसे शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास करते हैं, तो वे महसूस करते हैं कि वे असफल हो गए हैं। इसका कारण यह है कि वे क्षण में जीने का प्रयास करते हैं, यह सोचकर कि यही समय उनके लिए जीने का है। लेकिन आत्मिक व्यक्ति क्षण की वास्तविक आत्मा में जीता है, जो वास्तव में क्षण के भीतर जीवन जीने की कला है। स्वाभाविक रूप से, यह संघर्ष तब तक बना रहेगा जब तक कोई समाधान नहीं मिल जाता। अंततः आत्मिक व्यक्ति भौतिक व्यक्ति को उसकी गलती का एहसास करवा देता है, यह दिखाकर कि वह अपनी खुशी और संतोष बाहरी वस्तुओं से खोजने की गलती कर रहा है। बहुत जल्द वह यह खोज लेता है कि वह जिस दुनिया में रह रहा है, वह वास्तव में एक कबाड़खाना है। तभी आत्मा पदार्थ पर विजय प्राप्त करती है, और एक चयनित व्यक्ति भीड़ की मानसिकता पर जीत हासिल करता है।

"प्रेम भी एक शक्ति है। जहाँ यह एक आत्मिक व्यक्ति के लिए शक्ति बनती है, वहीं यांत्रिक व्यक्ति के लिए यह केवल एक कामुक शोषण होता है, जो कभी संतुष्ट नहीं होता और केवल वासनात्मक भूख और निराशा को जन्म देता है। प्रजनन की स्वाभाविक प्रवृत्ति प्रेम की वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं है। प्रेम पूर्णता देता है, जबकि वासना केवल तड़प, व्याकुलता और संताप उत्पन्न करती है। यांत्रिक मनुष्य जब संभोग करता है, तो वह केवल कार्य करता है; जबकि आत्मिक मनुष्य प्रेम की आभा में प्रकाशित होता है। पहला प्रयास केवल एक जैविक प्रतिकृति उत्पन्न करता है, जबकि दूसरा एक महापुरुष को जन्म देता है—एक विशेष कौशल और शक्ति से युक्त व्यक्ति।"

## शक्ति और साक्षी

"लेकिन ह्लादिनी या कामशक्ति इतनी गहन शक्ति है कि जीवन से संबंधित कोई भी चीज़ इससे बच नहीं सकती। इसे कला कहो, साहित्य, प्रजनन, राजनीति, धर्म, संगीत—वास्तव में, सभी अभिव्यक्तियाँ काम-ऊर्जा से ही विकसित होती हैं। यह हर जगह विद्यमान है। इसे नकारना सबसे बड़ी मूर्खता और अज्ञानता है। पाप इसके उपयोग में नहीं, बल्कि दुरुपयोग में है; इसके गलत प्रयोग में है। संयम का मार्ग दमन का मार्ग है। उदात्तीकरण (सब्लिमेशन) का मार्ग ही तंत्र का मार्ग है।

"ये तथाकथित धार्मिक उपदेशक दुनिया को बदलकर शांति और प्रेम का युग लाना चाहते हैं। लेकिन क्या वास्तव में बदलाव संभव हैं? आदमी आदमी को कितना बदल सकता है? मनुष्य की शक्ति कितनी सीमित है? शक्ति क्या है? यह कहाँ से उत्पन्न होती है?

"यदि हम किसी व्यक्ति की शक्ति और मूल स्रोत के बीच संबंध का अध्ययन करें, तो यह समझने में देर नहीं लगेगी कि शक्ति का उद्भव हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा पर निर्भर नहीं करता। ऊर्जा का एक स्थायी स्रोत है। एक बार जब ऊर्जा का एक विकिरण क्षेत्र (रेडियल फील्ड) स्थापित हो जाता है, तो यह लगातार प्रतिक्रिया करता रहता है। इसके शाश्वत स्वभाव के कारण, यह चाहे हमें इसकी जानकारी हो या न हो, हमेशा सक्रिय रहता है। यहाँ तक कि हमारी व्यक्तिगत जागरूकता की शक्ति भी इसी से आती है। इसे ही हम ब्रह्मांडीय शक्ति (कॉस्मिक पावर) कहते हैं।

"ब्रह्मांडीय शक्तियाँ शाश्वत रूप से सक्रिय रहती हैं। सभी शक्ति इसी से उत्पन्न होती है। हम इसे प्रेरित नहीं कर सकते, न ही इसे प्रभावित कर सकते हैं, न इसे रोक सकते हैं और न ही इसे प्रारंभ कर सकते हैं। 'भगवान मात्र साक्षी हैं', गीता कहती है। भगवान केवल प्रबंधक हैं, *अध्यक्ष* और ब्रह्मांडीय शक्ति, प्रकृति, उसे उत्पन्न करती है (*सृजते*)। आत्मा *अकर्ता* (अक्रिय) है, गीता कहती है। (चेतन शक्ति का कोई कार्य नहीं है, केवल देखना ही उसका धर्म है।) यह आत्मा न कार्य करता है और न ही किसी कर्म से प्रभावित होता है (*न करोति, न लिप्यते*)। यह जो सक्रिय भगवान (पुरुष) है, वह केवल प्रकृति के गुणों के अनुसार ही क्रियाशील होता है। जब हम कहते हैं कि 'हम करते हैं', 'हम कार्य करते हैं', तो यह हमारी भूल है। हमें लगता है कि हम कर्ता हैं, लेकिन वास्तव में हम नहीं हैं। ब्रह्मांडीय शक्ति कार्य कर रही है; और अपरिवर्तनीय रूप से यह कार्य करती ही रहेगी, विभिन्न अभिव्यक्तियों के माध्यम से, जिसे हम प्रकृति कहते हैं—मनुष्य सहित। इस दृष्टि से, जिसे हम 'भगवान' कहते हैं, वह भी असहाय है। इस सत्य को समझे बिना कोई भी व्यक्ति भाग्य, पूर्वनियति या प्रारब्ध पर गैर-जिम्मेदाराना बातें नहीं कर सकता।

"एक हिंदू का पूर्वनियति का विचार ग्रीक 'नेमेसिस' या 'फेट' की अवधारणा से भिन्न है। एक सच्चा हिंदू जानता है कि भाग्य का मुकाबला कर्म से करना पड़ता है।

"फिर भी, मनुष्य पूरी तरह असहाय नहीं है। मनुष्य के भीतर हमेशा अपनी अंतर्निहित शक्तियों से परे जाने की एक शाश्वत लड़ाई चल रही होती है। वह, मनुष्य, अपने व्यक्तिगत प्रयासों से तमस को रजस में और रजस को सतोगुण में परिवर्तित कर सकता है। (दूसरे शब्दों में, प्रकृति के गुणों को वह धीरे-धीरे घने, स्थूल और जड़ पदार्थों से आध्यात्मिक, हल्के और शुद्ध तत्वों में परिवर्तित कर सकता है।) यही चक्रों (cakras) का आधार है; यही कुंडलिनी के जागरण का आधार है। निरंतर गतिविधि और कर्मशीलता ही मनुष्य को साधारणता से श्रेष्ठता की ओर ले जाती है। क्रियाशीलता ही सिद्धि है। कर्म ही मनुष्य को पूर्ण बनाता है।"

## काम-क्रिया एक शक्ति के रूप में

"हम प्रकृति की सामान्य संरचना, जिसका मनुष्य एक भाग है, को बदलने के लिए बहुत छोटे प्रतीत होते हैं। उसकी इच्छाएँ और व्याकुलताएँ, उसके दुःख और संघर्ष ब्रह्मांड की प्रकृति में निहित हैं। सुधार का मार्ग व्यक्तिगत प्रयासों से ही संभव है। हालाँकि, व्यक्ति में स्वयं को रूपांतरित करने और अपने भाग्य को नियंत्रित करने की क्षमता होती है, क्योंकि किसी व्यक्ति के भाग्य में उसके अस्तित्व के कई चक्र शामिल होते हैं। ब्रह्मांडीय विकास और विनाश की प्रक्रिया की न तो कोई गिनती योग्य शुरुआत होती है और न ही कोई पूर्वानुमान योग्य भविष्य। जब तक ब्रह्मांडीय मंथन का नियम कार्यशील है, तब तक व्यक्ति अपने प्रयासों से, यदि वह चाहे और उसके लिए परिश्रम करे, तो अपने व्यक्तित्व के साथ-साथ अपने तत्व (सत्त्व) में भी परिवर्तन ला सकता है।

"जो व्यक्ति अपने परिवर्तन को नियंत्रित करता है, वह अपनी शक्ति को भी नियंत्रित करता है, जिसमें उसकी कामशक्ति (सेक्स पावर) भी शामिल है। उसे यह करना ही होगा, क्योंकि कामशक्ति उसकी संरचना, उसके निर्माण, और उसके भविष्य में विस्तार करने की सबसे प्रभावशाली शक्ति है। अन्य सभी व्यक्तिगत शक्तियाँ कामशक्ति के निर्देश पर संचालित होती हैं।

"काम मस्तिष्कों को जोड़ता है; काम साथीपन को बाँधता है; काम निर्माण करता है और आनंद देता है; काम प्रसन्नता देता है; काम संरक्षण करता है, बचाए रखता है और विघटन करता है। काम एक ऐसी गति उत्पन्न करता है, जिसे यदि सावधानीपूर्वक नियंत्रित न किया जाए तो इसे रोकना कठिन हो जाता है। काम समाज पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है। काम वह शक्ति है जो मनुष्यों को पूर्ण विनाश और पतन की ओर ले जा सकती है; काम वह शक्ति है जो उन्हें उच्चता की ओर ले जा सकती है। काम एकीकृत करता है; काम विभाजित करता है। काम शरीर और मन को स्थायी दासता में रखता है; काम ही मनुष्य की अंतिम मुक्ति के लिए मूल ऊर्जा प्रदान करता है। बंगाल में एक प्रसिद्ध कहावत है—'जो जमीन पर गिरता है, वह जमीन के सहारे ही उठता है।'

"जब काम उद्दीप्त होता है, तो ऊर्जा प्रवाह अपनी उच्चतम सीमा पर होता है। नसें इतनी अधिक तरंगें (वाइब्रेशन) नहीं छोड़तीं, कोशिकाएँ किसी अन्य गतिविधि में इतनी उच्च दर से नहीं जलतीं, जितना कि काम-क्रिया में होता है। (इसमें कला, साहित्य, संगीत, अभिनय आदि सभी प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं।) आनंद और सुख अपने चरम स्तर पर पहुँचते हैं, क्योंकि वे कामशक्ति से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। काम अपनी गतिविधि के माध्यम से मानव सप्तक (ऑक्टेव) के अधिकतम स्तर तक पहुँचता है और अपनी लयबद्ध तरंगों में तीव्रतम स्पंदन उत्पन्न करता है। शारीरिक काम-क्रिया एक क्षणिक झटके की उत्तेजना प्रदान करती है, जिसे रोका नहीं जा सकता। और वही ऊँचाई और वही आनंद की अवस्था प्राप्त की जा सकती है और घंटों तक बनाए रखी जा सकती है, यदि कामशक्ति को उचित तरीके से नियंत्रित किया जाए।

"शारीरिक काम-क्रिया में ऊर्जा का भौतिक अपव्यय होता है, और खोई हुई कोशिकाओं की पुनः पूर्ति की प्रक्रिया काफी लंबी होती है; लेकिन आध्यात्मिक काम-क्रिया मनुष्य की आकांक्षाओं को ऊँचाई प्रदान करती है और चेतना को अधिक सूक्ष्म संवेदनशीलता और गहन अंतर्दृष्टि के गुणों से संपन्न करती है। इस प्रक्रिया में शारीरिक कमजोरी या थकान की कोई संभावना नहीं होती।

"कामशक्ति के आध्यात्मिक जागरण की प्रक्रिया के माध्यम से जो अपार ऊर्जा उत्पन्न और संरक्षित होती है, वह धीरे-धीरे व्यक्ति के आध्यात्मिक व्यक्तित्व को प्रकट करती है और जहाँ भी संभव हो, सार्वभौमिक कल्याण के लिए उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को मुक्त करने में सहायता करती है।

"इस जागरण का एक तत्काल आशीर्वाद यह होता है कि व्यक्ति के चारों ओर एक विशेष कंपन क्षेत्र (वाइब्रेशन फील्ड) बनता है, जिसे 'आभा' (ऑरा) कहा जाता है। इसकी उपस्थिति दूसरों द्वारा अनुभव की जाती है, यह इस पर निर्भर करता है कि पर्यवेक्षक की धारणा कितनी शुद्ध है और उसकी अपनी मानसिक रुकावटें कितनी कम हैं। ऐसी 'आभा' को कुछ लोगों ने फोटोग्राफ करने में भी सफलता प्राप्त की है, जिनके लिए फोटोग्राफी ही प्रमाण का एकमात्र साधन होती है।

"ऐसी अवस्था में व्यक्ति के पूरे शरीर की सीमाएँ तनावग्रस्त और ऊर्जावान हो जाती हैं, और उत्पन्न होने वाली अतिरिक्त रेडियोधर्मी तरंगें उसके चारों ओर एक ऐसा क्षेत्र बनाती हैं, जिसे 'आभा' के रूप में देखा जा सकता है। समय की शुरुआत से ही सभी युगों और सभ्यताओं के आध्यात्मिक साधक इस ऊर्जा उत्सर्जन के बारे में बात करते रहे हैं, जिसे वातावरण में परिवर्तन के रूप में अनुभव किया जाता है, या प्रत्यक्ष रूप से 'आभा' के रूप में देखा जाता है।"

## खगोलीय उपस्थिति

"जब मनुष्य के भीतर यह शक्ति अपने उच्चतम स्तर पर पहुँचती है, तो उसकी व्यक्तिगत सत्ता विभाजित हो जाती है और एक नई, उन्नत चेतना विकसित होती है। यह नई उपस्थिति तब एक 'ज्योतिषीय व्यक्तित्व' (एस्ट्रल बॉडी) के रूप में जानी जाती है। यही कारण है कि आपने स्वयं कई बार अनजाने स्थानों में अप्रत्याशित व्यक्तियों की उपस्थिति को महसूस किया है, जब उनकी उपस्थिति की बिल्कुल भी संभावना नहीं थी।

"आपने इतिहास, शास्त्रों और अन्य कथाओं में इस ज्योतिषीय उपस्थिति (एस्ट्रल प्रेजेंस) के बारे में सुना है, और कई बार इन्हें निरर्थक मानकर अस्वीकार भी किया है। लेकिन फिर, आपने स्वयं भी ऐसे कई प्रमाण एकत्र किए हैं, जिन्हें देखकर आप यह घोषणा करने के लिए उत्सुक हो सकते हैं कि लोग चाहे जो भी मानें, परंतु जो अनुभव आपने किया है, वह आपकी सच्चाई है। यह आपकी कोई अनिवार्य जिम्मेदारी नहीं है कि आप जाकर लोगों को इसके बारे में समझाएँ। आप कोई प्रचारक नहीं हैं। आपका कोई मिशन नहीं है। यदि आप स्वयं इस शक्ति से परिचित हैं, यदि आप इस पर विश्वास करते हैं, तो इसे विकसित करने में लगे रहें; इस आभा (ऑरा) को प्राप्त करें; इस शक्ति को अर्जित करें जिससे आप अपने भौतिक शरीर से बाहर जाकर एक ज्योतिषीय शरीर धारण कर सकें, और दूसरों की पीड़ा को अनुभव कर सकें, जब वे अपने भीतर ही दुःख और क्षय का अनुभव करते हैं। मनुष्य अपनी भौतिक सत्ता की तुलना में अपनी आध्यात्मिक सत्ता में अधिक पीड़ा भोगता है। पीड़ा अमूर्त होती है।

"पहली बार में इस बात पर विश्वास करना कठिन हो सकता है। लेकिन जब इस पर गंभीरता से विचार किया जाता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य अपनी आत्मा में अधिक कष्ट भोगता है। उसका भौतिक शरीर उन बीमारियों से ग्रस्त होता है जिन्हें भौतिक रूप से पहचाना जा सकता है, और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान उन बीमारियों के लिए दवाएँ और उपचार सुझाता है। लेकिन जब मनुष्य मानसिक पीड़ा से गुजरता है, जब वह अपनी आंतरिक ग्रंथियों से उत्पन्न जटिलताओं का शिकार होता है, जब वह अपनी कमज़ोरियों को पहचानकर भी उन्हें रोक नहीं पाता, तब उसकी आत्मा ही पीड़ित होती है। ऐसे में वह मनोचिकित्सकों की शरण में जाता है। लेकिन मनोचिकित्सकों ने स्वयं अपने विज्ञान को एक भौतिकवादी दृष्टिकोण में विकसित किया है, और उनकी पद्धति अनुभवजन्य तर्क और भौतिक उपकरणों पर निर्भर करती है। उनका मार्ग मुख्य रूप से यांत्रिक माप और निष्कर्षों पर आधारित होता है। इस प्रक्रिया में आत्मा को अछूता छोड़ दिया जाता है। जितना अधिक वे यांत्रिक निदान पर निर्भर होते हैं, उतना ही वे उस वास्तविक सत्ता से दूर हो जाते हैं जो वास्तव में पीड़ित होती है। इसलिए उनकी सुझाई गई सामान्य चिकित्सा विधियाँ अक्सर केवल बाहरी समाधान प्रदान करती हैं, जबकि समस्या की मूल जड़ अछूती रह जाती है। इसके विपरीत, तंत्र साधना मनुष्य के भीतर की गहरी परतों तक जाती है।

"केवल एक आध्यात्मिक पुरुष ही आत्मिक रोगों का सही निदान कर सकता है और उसका समाधान खोज सकता है। इस प्रकार एक तांत्रिक साधक और एक पीड़ित व्यक्ति के बीच ऊर्जा का एक विशेष संबंध बनता है। यह संबंध ऊर्जा संचार, मूल शक्ति के संरक्षण, और कुण्डलिनी जागरण के प्रभाव से स्थापित होता है।

"लेकिन ध्यान दें, जहाँ एक सच्चा तांत्रिक तपस्वी होता है, वहाँ सौ नकली साधक भी होते हैं। इसलिए किसी पीड़ित आत्मा के लिए कोई कार्य करने से पहले यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि साधक स्वयं सभी प्रकार की पीड़ा से मुक्त हो। वही व्यक्ति वास्तव में पीड़ित होता है जिसके भीतर अधूरी इच्छाएँ बनी रहती हैं। लेकिन वह व्यक्ति पूर्ण आनंद में होता है जिसे स्वयं के लिए कुछ भी प्राप्त नहीं करना होता। इस यात्रा के अंत में ही शांति का परम धाम स्थित होता है। केवल वही व्यक्ति दूसरों को शांति दे सकता है जो स्वयं शांति में स्थित हो।

"कामशक्ति ऊर्जा का भंडार है और इसमें अपार शक्तियाँ निहित हैं।"

## मैं हूँ हल

मैंने नज़री को याद किया। पोस्त के खेतों से दूर देवी मंदिर में एक साधना सत्र के दौरान, नज़री का पूरा शरीर जैसे आग में जल रहा था, और मैं अपने ध्यान को आत्मिक क्षेत्र पर केंद्रित रखने में असफल रहा। रामचंद और दो अन्य जो वहाँ उपस्थित थे, अत्यधिक ऊर्जा विकिरण के कारण अपने ध्यान में बाधा महसूस कर रहे थे, जो नज़री से उत्पन्न हो रही थी। मैं ही एकमात्र व्यक्ति था जो अपनी स्थिरता बनाए रखने में सफल रहा, लेकिन अंततः मैं भी एक अज्ञात शक्ति के आकर्षण में आ गया।

अगले दिन जब मैं झील पार कर गुफा में प्रवेश करने ही वाला था, मुझे एक और उपस्थिति का आभास हुआ। वह नज़री थी, वह मोहक राजस्थानी प्रकृति। मैंने उसे वहाँ बैठे हुए पाया, मनमोहक हँसी के साथ। वह अपनी युवावस्था के पूर्ण सौंदर्य में एक दिव्य नारी प्रतीत हो रही थी। उस समय "मोहक" शब्द उसके लिए सबसे उपयुक्त था। ऐसा बाहरी सौंदर्य सम्मोहन की शक्ति रखता है, जिसके लिए प्राचीन कथाओं में चुड़ैलों की प्रसिद्धि रही है। जब देवताओं के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महान ऋषियों को "मोहित" करने की आवश्यकता पड़ी, तब देवताओं ने ही सुंदरियों को भेजा। उसने पहले ही मेरे आने की भविष्यवाणी कर दी थी। उसने समझाया कि यह सम्मोहन शक्ति भी शुद्ध साधना से उत्पन्न होती है। बाद में मैंने अपनी पुस्तकीय ज्ञान से इसकी पुष्टि की।

उपनिषदों में स्त्री को अग्नि के रूप में स्वीकार किया गया है। उसके योनिक्षेत्र की उपमा उस अग्निकुंड से दी गई है जिसमें ईंधन जलता है, और जिस धुएँ के संकेत वासना की लपटों को निमंत्रण देते हैं, वह दुनिया के यज्ञ को सतत प्रज्वलित रखता है। भीतर दहकती हुई चिंगारियाँ ऊर्जा की चमक उत्पन्न करती हैं, जो उस सहचर को प्रेरित करती हैं जो इस अग्नि से अपनी शक्ति प्राप्त करना चाहता है। जब शरीर पूरी तरह इस ऊर्जा में समाहित हो जाता है, तभी यह क्रिया अपने फल को जन्म देती है और नवजीवन का संचार होता है।

इन वैदिक अवधारणाओं से परे, नज़री ने अपनी सरल शब्दावली में जो कुछ कहा, वह वर्षों बाद भी मेरे भीतर जीवित है। जो उसने कहा, वह तिब्बती ग्रंथों, ही-वज्र संहिता और तंत्र पर आधारित जीवन-दर्शन से पूर्णतः मेल खाता था। तंत्र अपनी साधनाओं को जीवन के व्यावहारिक दृष्टिकोण से जोड़ता है। केवल वे ही जो इन अभ्यासों की प्रत्यक्ष समझ नहीं रखते, उन्हें विकृत दृष्टि से देखते हैं और इन प्रक्रियाओं में अनियंत्रित भोग-विलास की कल्पना करते हैं।

नज़री ने एक महत्वपूर्ण अवसर पर कहा, जिसकी गूंज आज भी मेरे मन में बनी हुई है, "नानो (यह वही नाम था जिससे वह मुझे बुलाती थी; जिसका अर्थ है 'मेरा छोटा मित्र'), मैं यहाँ अधिक समय तक नहीं रहूँगी। मुझे यह खुशी है कि मैं तुम्हें वह दे रही हूँ जो मेरे पास है। दूसरों के लिए मेरे पास केवल एक शरीर है, एक स्त्रीत्व, और मेरी सुंदर यौवनावस्था। लेकिन तुम्हारे लिए मैं केवल ऊर्जा, शक्ति और सार हूँ। मैं आकाश नहीं, बल्कि भूमि हूँ; मैं भूमि नहीं, बल्कि हल हूँ; मैं हल नहीं, बल्कि उस हल की गर्मी हूँ जो नए जीवन के जन्म के लिए लालायित है। मैं तुम्हारे स्पर्श, तुम्हारी ग्रहणशीलता की तलाश में थी। और केवल तुम ही इस दुर्गम स्थान में मुझसे इसे प्राप्त करने के लिए आए हो। तुम्हें नहीं पता कि तुम यहाँ क्यों आए। तुम्हें यह भी नहीं पता कि मैं कहाँ से आई हूँ। न तुम्हें यह ज्ञात है कि मैं कब और कहाँ चली जाऊँगी। इस जीवन में, इस क्षण में, बस यही सत्य है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मेरा यह शरीर एक स्रोत के रूप में तुम्हें वह शक्ति दे रहा है जो तुम्हारे इस जीवन से परे भी विस्तारित होगी।"

मैं उसके इन शब्दों से स्तब्ध था। मैं उसकी गंभीरता से आश्चर्यचकित था। यह कोई सार्वजनिक अभ्यास नहीं था। इसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता था। यह सबके लिए नहीं था।

उसने आगे कहा, "अगर हमें मक्खियों से भोजन को बचाने के लिए उसे ढककर रखना पड़ता है, ताकि वे उसमें जहर न घोल दें, तो समझो कि इसी कारण इस साधना को भी मानव-मक्खियों से छुपाना आवश्यक है। प्रकृति के साथ एकाकार होकर पुरुष पूरे ब्रह्मांड से एक हो जाता है। निर्जीव पदार्थ से ऊर्जा उत्पन्न करके साधक विश्व को परिवर्तित करता है। यह सृजन की रहस्यमयी शक्ति का मूर्त रूप है। यह सृजन कर सकती है, हाँ; लेकिन जो सृजन कर सकता है, वह विनाश भी कर सकता है। यह समझना बहुत सरल है, नानो। और यह गलत और मूर्खतापूर्ण है कि सृजनात्मक शक्ति से बचा जाए केवल इसलिए कि इसमें विनाशकारी शक्ति भी अंतर्निहित है। विनाशकारी शक्ति की प्रार्थना करो; उसे शांत करने के लिए समर्पण करो; उसे नियंत्रित रखो; लेकिन संसार और स्वयं के लिए सृजनात्मक शक्ति से दूर मत भागो।"

"क्या तुम नहीं देखते," नज़री ने कहा, "कि लगभग प्रत्येक शक्ति पीठ के मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ संभोग में लिप्त दिखाई देती हैं? क्या तुमने तिब्बती टंका चित्रों में उग्र रूपों को संगम अवस्था में नहीं देखा? हमारे घर में एक ऐसा चित्र पूजा कक्ष की दीवार पर टंगा है। मेरी माँ ने मुझे हाल ही में दिलवाड़ा मंदिर दिखाने ले गई थी। ऐसे दृश्य, जो सदियों से पूजे जाते रहे हैं और कला के रूप में मान्यता प्राप्त हैं, वे वास्तव में कामुक नहीं हैं। साधक इनमें दिव्य संदेशों को देखते हैं, और उनके बिना खुद को अधूरा महसूस करते हैं।"

इस साधना के दौरान एक विशेष रात मुझे अभी भी याद है। वह गोवर्धन पूजा की रात थी, जो दीपावली की अमावस्या के बाद आती है। तंत्र साधकों के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण रातों में से एक मानी जाती है। मैं 24 घंटे के व्रत के लिए तैयार था, लेकिन किसी कारणवश यह अवधि बढ़कर 40 घंटे की हो गई। इस लंबे सत्र के दौरान मैं गुफा में अकेला था। रात लगभग दस बजे जब मैं झील पार कर वापस आ रहा था, मुझे एक घनी झाड़ी के भीतर एक नृत्य करती रोशनी दिखाई दी। उत्सुकता से मैं उस दिशा में बढ़ा।

वहाँ मैंने नज़री को एक अलंकृत राजपूती तलवार के साथ प्रलय नृत्य करते हुए देखा। पुराना संत, तेलंगाना का योगी, भूमि पर एक शव की तरह पड़ा था। उसकी दोनों ओर जलते दीपक नृत्य करते हुए प्रतीत हो रहे थे। नज़री गहनों से सजी हुई थी, उसकी कमर पर सुनहरे ज़री से सजी लाल-स्वर्णिम कशीदाकारी पट्टी बंधी थी। उसकी लंबी, काली बालराशि खुले थे, लेकिन एक मुकुट ने उन्हें बांध रखा था। उसकी आँखें कोल की रेखाओं से सजी थीं और होंठ पान की लाली से रंगे थे। उसके सधे हुए, मजबूत कदम ज़मीन पर पड़ते ही ऊर्जा की तरंगें उत्पन्न कर रहे थे।

मुझे नाज़री की याद आई। देवी मंदिर में एक सत्र के दौरान, जो पोस्त के खेतों से दूर स्थित था, नाज़री का पूरा शरीर जैसे आग में जल रहा था; और मैं अपने ध्यान को विषयवस्तु पर केंद्रित नहीं रख पाया। रामचंद और दो अन्य लोग, जो वहाँ थे, नाज़री से निकलने वाली तीव्र ऊर्जा के कारण अपने ध्यान में बाधा महसूस कर रहे थे। मैं अकेला था जिसने जितनी देर तक संभव हो सका, अपनी स्थिरता बनाए रखी। लेकिन अंततः मैं भी एक उच्चतर आकर्षण के प्रभाव में आ गया।

अगले दिन जब मैं झील पार कर गुफा में प्रवेश करने ही वाला था, तब मुझे एक और उपस्थिति का एहसास हुआ। वह नाज़री थी, वह आकर्षक राजस्थानी प्रकृति। मैं उसे वहाँ बैठा हुआ देखता हूँ, मोहक हँसी हँसते हुए। वह अपनी युवा अवस्था के पूर्ण यौवन में एक सुंदर लड़की थी। 'मोहक' शब्द उस समय उसके लिए सबसे उपयुक्त था। ऐसा बाहरी सौंदर्य मंत्रमुग्ध कर देता है, जिसके लिए चुड़ैलों को जाना जाता है। जब किसी महान ऋषि को 'मोहित' करना आवश्यक होता था ताकि वह 'देवताओं' के उद्देश्यों की पूर्ति कर सके, तो देवताओं द्वारा योजनाबद्ध रूप से सौंदर्य की साजिश रची जाती थी। उसने अनुमान लगा लिया था कि मैं आऊँगा। उसने यह समझाया कि ऐसी मोहक शक्तियाँ भी, शुद्ध साधना से उत्पन्न होती हैं। जो उसने कहा था, उसकी मैंने बाद में अपनी पुस्तकीय पढ़ाई से पुष्टि की।

महान उपनिषदों में स्त्री को अग्नि के रूप में स्वीकार किया गया है। उसके यौन अंग को उस गड्ढे के रूप में दर्शाया गया है, जहाँ ईंधन जलता है, जिससे धुएँ के संकेत निकलते हैं, जो बुलावे की लौ को भीतर से बाहर की ओर प्रक्षिप्त करते हैं और विश्व यज्ञ को सतत जलाए रखते हैं। भीतर की सुलगती हुई कोयले की चिनगारियाँ ऊर्जा के कणों को निकालती हैं, जो सहकर्मी से मिलती हैं और उस अग्नि तथा लौ से वह ऊर्जा प्राप्त करती हैं, जिसकी उसे आगे की गतिविधियों के लिए आवश्यकता होती है। जब इस ऊर्जा में पूरी तरह समाहित होकर इससे अभिसिंचित होते हैं, तब शरीर कर्मफल उत्पन्न करते हैं और ऊर्जा एवं शक्ति से भरपूर एक और जीवन उत्पन्न होता है।

इन सभी वैदिक जटिलताओं से दूर, नाज़री ने अपनी सरल भाषा में इस तथ्य को समझाया, जिसकी मासूम आकर्षण को इतने वर्षों बाद मैं फिर से पकड़ने में असमर्थ हूँ। लेकिन जो उसने कहा, वह पूरी तरह तिब्बतियों द्वारा कही गई बातों से मेल खाता था, साथ ही ही-वज्र संहिता के सिद्धांतों से भी। तंत्र अपने अनुष्ठानों को व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखता है। जो लोग इन विधियों की सीधी जानकारी नहीं रखते, वे अपनी अस्वस्थ दृष्टि से इन विधियों को अनुचित और अनैतिक व्यभिचार के रूप में देखते हैं।

नाज़री ने एक महत्वपूर्ण सभा में निम्नलिखित शब्द कहे, जो आज भी मेरे अंतःकरण में उसी तरह जलते हैं जैसे मणिकर्णिका में सतत जलने वाली अग्नि:

"नानो (वह मुझे इसी नाम से बुलाती थी; जिसका अर्थ है 'मेरा छोटा मित्र') मैं यहाँ अधिक समय तक नहीं रहूँगी। मुझे यह देने में खुशी हो रही है जो मेरे पास है। दूसरों के लिए मेरा एक शरीर है, एक लिंग है, और मेरी सुंदर युवा अवस्था। लेकिन तुम्हारे लिए मैं ऊर्जा हूँ, शक्ति हूँ, सार हूँ। मैं आकाश नहीं हूँ, बल्कि धरती हूँ; धरती भी नहीं, बल्कि वह हल की रेखा हूँ; वह रेखा भी नहीं, बल्कि वह ऊष्मा हूँ जो इस रेखा में भूख की तरह जलती है और तृप्ति केवल नवीन प्रस्फुटन के जन्म में ही पाती है। मैं तुम्हारे स्पर्श की खोज में थी; तुम्हारी ग्रहणशीलता की तलाश में थी। तुम ही थे जो इस देश के इस अजीब कोने में मुझ तक पहुँचे, इसे पाने के लिए। तुम्हें नहीं पता कि तुम क्यों आए। तुम्हें नहीं पता कि मैं कहाँ से आई। तुम्हें यह भी नहीं पता कि मैं कब और कहाँ चली जाऊँगी। इस जीवन में, इस क्षण में, यही वास्तविक है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ और यह शरीर एक वसंत की तरह तुम्हें एक ऐसा अमृत पिला रहा है, जिसकी शक्ति और ऊर्जा इस जीवन के परे भी बनी रहेगी।"

मैं इन चौंका देने वाले शब्दों से अवाक् था। मैं उसकी गंभीरता से आश्चर्यचकित था। यह एक सार्वजनिक अभ्यास नहीं था। इसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता था। यह सबके लिए नहीं था।

"यदि हमें मक्खियों के ज़हर से अपने पके हुए भोजन को ढँककर रखना आवश्यक लगता है," उसने कहा, "तो इसी तरह इस अभ्यास को भी उन मानव-मक्खियों से ढँककर रखना चाहिए, जो विष से भरी होती हैं। जब पुरुष प्रकृति से एकीकृत होता है, तब वह ब्रह्मांड से एक हो जाता है। जब वह मृत पदार्थ से ऊर्जा उत्पन्न करता है, तो वह उस शक्ति को प्राप्त करता है जिससे वह विश्व को रूपांतरित कर सकता है। यौन मिलन वह रहस्यपूर्ण शक्ति है जो ब्रह्मांडीय खेल में निहित है। यह सृजन कर सकता है; हाँ; लेकिन जो सृजन कर सकता है, वह विनाश भी कर सकता है। इसे समझना बहुत आसान है, नानो। और यह डर के कारण सृजन प्रक्रिया से बचना गलत और मूर्खतापूर्ण है कि इसके भीतर विनाशकारी तत्व भी छिपा हुआ है। विनाशकारी तत्व की प्रार्थना करो; इसे शांति से रहने दो, इसे नियंत्रण में रखो, इसे संयमित करो; लेकिन अपने और अपने विश्व के लिए सृजनात्मक ऊर्जा की शक्तियों से मुँह मत मोड़ो।"

यह छवि अभी भी मेरी आँखों में बसी हुई है। यह शब्द अभी भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं। मैं अपने अनुभव के माध्यम से समझ चुका हूँ कि तंत्र, जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा को प्राप्त करने का सबसे प्रभावी साधन है, इसे केवल सबसे मूर्ख ही नकार सकते हैं। यह पूरी तरह से योगिक सिद्धांतों और अभ्यास पर आधारित है। योग अनुशासन पर जोर देता है; और तंत्र इस अनुशासन की पुष्टि करता है, जिससे मनुष्य अपने आंतरिक शत्रुओं का सामना करता है।

# 11. कुँवारी और पवित्र परिवार (**The Virgin and the Holy Family**)

## ‘कुमारी’ अनुष्ठान

लेकिन यह सब बहुत दूर और बहुत पहले की बात है। समय की अटूट धारा ने इन घटनाओं को हमेशा के लिए मेरी पहुँच से परे बहा दिया है। उन सुनहरे दिनों की बस मीठी गूँज ही स्मृति-पथ पर रह गई है, और खोई हुई महिमा के गलियारों में बीते समय की पदचाप सुनाई देती है। विन्ध्य पर्वतों में बीते दिन, राजस्थान के वे दिन, वृद्ध तेलंगखाना हठयोगी, युवा रामचंद, और चिरस्मरणीय नाज़री—ये सभी अतीत की मंद पड़ती ज्योति में धीरे-धीरे बहते दीपों की तरह मेरी स्मृतियों में तैरते हैं, जैसे गंगा की धाराओं में बहते पूजन दीप।

जो चीज़ जीवन भर मेरे साथ अडिग चट्टान की तरह बनी रही, वह थी एल.एस. की शक्ति। वही थीं, जिन्होंने मुझे योगवाशिष्ठ की अद्‌भुत शिक्षाओं, गीता के ओजस्वी श्लोकों, महाभारत के विशाल ज्ञान-भंडार, और सबसे बढ़कर अद्वैत के सिद्धांत से परिचित कराया।

उन्होंने ही मेरा हाथ पकड़कर मुझे तंत्र के दुर्गम वनपथों से परिचित कराया, तांत्रिक साधना की जटिल प्रक्रियाओं से मुझे गुज़ारा, और अंततः मुझे तंत्र-सिद्धों के गूढ़ अनुष्ठानों तक पहुँचाया।

लेकिन मेरे अंतर्मन में एक ही प्रश्न निरंतर गूँजता रहा—कुमारी की उपासना का रहस्य क्या है? एल.एस. ने हमेशा मुझे उत्तर दिया, "रुको! तैयारी करो! समय की साधना करने वालों के लिए समय को ही प्रतीक्षा करनी होती है।"

एक और दिवाली का पर्व आया। संयोगवश, वह सोमवार को पड़ा, जो चंद्रमा का दिन है, और इस कारण से उस दिवाली रात्रि को विशेष गूढ़ तांत्रिक महत्व प्राप्त हुआ। चंद्रमा और चंद्रमा की देवी ने समस्त तांत्रिक और गूढ़ अनुष्ठानों पर अपना रहस्यमय प्रभाव डाला है।

उस रात मुझे पातालेश्वर के ऐतिहासिक स्थल के समीप स्थित एक रहस्यमय रूप से छिपे हुए काली मंदिर में ले जाया गया। यह मंदिर दो कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण था—

यह आदि शंकराचार्य से जुड़े एक विशेष तांत्रिक साधना पीठ के निकट स्थित था।
यह मंदिर और इसकी देवी पंचमुण्डी साधना की साक्षी रही थी, जहाँ प्राचीन काल में मानव बलि तक दी जाती थी।
जब मैं अपने किशोरवय में था और मातृभूमि से विदेशी शासकों को निकालने के लिए समर्पित भूमिगत क्रांतिकारियों से जुड़ा था, तब मुझे इस भूमिगत मंदिर और उसकी प्रतिष्ठित वेदी (बलिपीठ) के अस्तित्व का अस्पष्ट आभास था।

बचपन में जब हम इस मंदिर के पास से गुजरते थे, तो हम अनजाने भय से खुद को बचाने के लिए मंत्र बुदबुदाते थे। और रात के समय इस स्थान के पास से गुजरने का साहस तो साधारण व्यक्ति क्या, कोई बालक भी नहीं कर सकता था। हाँ, इस स्थल की धूल भी किसी रहस्यमय शक्ति से ओत-प्रोत लगती थी।

जब हम मंदिर में पहुँचे, तो हमने वहाँ एक विस्तृत और गूढ़ काली-पूजन की तैयारी देखी। पंच-मकार (मांस, मदिरा, मत्स्य, मुद्रा, और मैथुन) से युक्त तांत्रिक अनुष्ठान पहले ही प्रारंभ हो चुका था, और एक अज्ञात पुजारी मुख्य आसन पर विराजमान था।

रात्रि के गहराते ही एक बकरा लाया गया, उसका बलिदान किया गया, और उसका कटा हुआ सिर देवी को अर्पित कर दिया गया। मांस के टुकड़े, चमड़ी और रोंए के साथ विशेष संख्या में रखे गए और फिर उन्हें जलती हुई अग्निकुण्ड में चढ़ा दिया गया।

जैसे-जैसे रात बारह बजे के पार पहुँची, मैंने पाया कि लगभग बारह व्यक्ति एक धुएँ से भरे, रहस्यमयी वातावरण में एकत्रित थे, जहाँ केवल तेल के दीपकों की हल्की रोशनी उस गहरी नमी और अंधकार से संघर्ष कर रही थी। इन बारह लोगों में, एल.एस. सहित, तीन महिलाएँ थीं। उन दो अन्य महिलाओं में से एक केवल बारह वर्ष की एक कन्या थी।

बार-बार मेरी दृष्टि उसी पर जा टिकती थी। स्पष्ट था कि उसने दिनभर का उपवास रखा था। उसका चेहरा साधना की गहनता और तैयारी को दर्शा रहा था। उसकी आँखें किसी अलौकिक स्वप्न में खोई हुई प्रतीत हो रही थीं। वह छोटी अवश्य थी, किंतु उतनी ही गंभीर और समर्पित दिखाई दे रही थी। उससे निकल रही ऊर्जा तरंगों को स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता था।

स्नान करवा कर और विशेष अलंकरणों से विभूषित करके, उसे एक विशेष वेदी पर बैठाया गया, जिसे लाल वस्त्र से ढका गया था और जिस पर एक बाघ-छाल बिछाई गई थी। इसी पर उसे पद्मासन (कमल मुद्रा) में बैठाया गया।

अनुष्ठान आरंभ हुआ।

गंभीर संविधि-स्वर में वैदिक मंत्र गूँज उठे—

"ॐ ल्लिंग कुमारीयै नमः!"
(हे कुमारी देवी! आपको नमन।)

"मैं उस त्रिनेत्री कन्या का ध्यान करता हूँ;
मैं उस केसरिया-आभा वाली देवी का ध्यान करता हूँ, जो मयूर पर सवार है;
मैं चार भुजाओं वाली उस देवी का ध्यान करता हूँ,
जो शक्ति, पाश, अंकुश धारण किए हुए हैं और अभय मुद्रा में स्थित हैं;
जो अपनी ही महिमा में निमग्न हैं और दिव्यता से प्रकाशित हो रही हैं।"

मंत्र-ध्वनि बहती रही। मैं एक अद्भुत सुखद लहर में डूबने लगा, जो मुझे दिव्य कंपन और आत्म-संतोष की गहराई में लिए जा रही थी। संगीत और मंत्रों की गूँज पुनः उठी, और स्तुतियाँ की जाने लगीं—

"हे माता, हे माता, जो भी आपके स्वरूप में लीन हो जाता है, वह कामदेव के बाणों से मुक्त हो जाता है।

हे देवी! जन्म, पालन और संहार के महातीर्थ के केंद्र में स्थित रहते हुए, आप मृतकों के हृदय में निवास करती हैं, और शिव के साथ विलीन रहते हुए सृष्टि की मधुरता को जन्म देती हैं।
हे देवी! आपकी दिव्यता अपरंपार है, जब तक कि साधक स्वयं आपकी गोद में समर्पित होकर तन्मय न हो जाए।"

यह स्तुति मेरे लिए अत्यधिक तीव्र थी। मैंने किसी प्रकार अपने संयम को संभाला, लेकिन मेरी शक्तियाँ अत्यंत दुर्बल पड़ रही थीं। मेरे भीतर एक कंपन उठ रहा था, जैसे शरद ऋतु की हवा में गेहूँ की बालियाँ काँपती हैं।

तभी, वही स्नेहसिक्त हाथ मेरी पीठ पर आया, फिर मेरे सिर पर। मैंने पूरी शक्ति लगाकर अपनी आँखें खोलीं।

मैंने देखा कि वह कन्या वेदी पर लेटी हुई थी। चारों ओर दीप जल रहे थे। एक महिला ने उसके सिर और हथेलियों पर तीन अग्निकुंड रख दिए।

हवा में जलते हुए मांस और बेलपत्रों की तीव्र सुगंध भर गई थी। वह कुमारी अग्नि-प्रकाश में दीप्तिमान हो रही थी।

तभी, अचानक वह एक शव की भाँति स्थिर हो गई।

"अब आगे क्या होगा?" मैंने सोचा।

## परमानंद

मंत्र गंभीरता से गूंज रहे थे; गान और भी गंभीरता से उठ रहा था, जो अंधकार के बीच गूँजता चला गया। धुंधले दीपक टिमटिमा रहे थे और स्थिर छायाएँ दीवारों पर नृत्य कर रही थीं। जिन मनों में प्रतीकात्मकता की गहराई रच-बस गई थी, उनके लिए संस्कृत भाषा की छवियाँ अलौकिक आनंद की रोमांचकारी अनुभूति जगा रही थीं, जब तक कि पूर्ण आनंद की गूंजती हुई भव्यता ने इसे स्थिर नहीं कर दिया।

आनंद की पराकाष्ठा एक सुसंगत सामूहिक गान और संगीत के गूँजते हुए प्रवाह पर स्थिर हो गई थी, जो अपने आप में सम्मोहक प्रभाव रखता था; और इस पर जुड़ गई थी शब्दों की गरिमा और काव्यात्मक मोहकता।

मैं स्वयं को भूलकर उस अलौकिक अनुभूति में लहरों की तरह बहने लगा। “शुद्ध आनंद (आनन्दम) पूर्ण साहस देता है,” मुझे याद आया। "फिर रोग, मृत्यु और क्षय की चिंता क्यों करें?"

एक बार जब यह मानसिक दृढ़ता व्यक्ति के स्वाभाविक अस्थिरता पर नियंत्रण पा लेती है, तो बाकी सब कुछ सहजता से व्यवस्थित हो जाता है। जीवन का नाटक, जो पहले जटिलताओं से भरा प्रतीत होता था, अब एक आनंदमय प्रवाह में बदल जाता है—एक ऐसा प्रवाह जिसमें व्यक्ति संलग्न तो होता है, लेकिन व्यक्तिगत आसक्ति के बिना।

केवल मुक्त व्यक्ति ही आनंद का वास्तविक अनुभव कर सकता है; और केवल आनंदित व्यक्ति ही दूसरों के लिए आनंद उत्पन्न कर सकता है।

यही सच्ची धन्यता थी।

इसलिए मैं जानता था कि मेरे सामने संपन्न किया जा रहा यह अनुष्ठान केवल अपने आप में एक उद्देश्य नहीं था, न ही यह आत्म-संतोष का कोई माध्यम था। मैं धीरे-धीरे स्वयं को इस संपूर्ण प्रक्रिया का एक अंग बनते हुए महसूस कर रहा था।

एल.एस. की उपस्थिति ने इस अनुष्ठान की गंभीरता को बढ़ा दिया था, इसकी ऊर्जा को सशक्त कर दिया था, इसके फल को सुरक्षित कर दिया था, और इसे एक लौकिक दीक्षा में रूपांतरित कर दिया था।

वह पवित्र है
अब वह कन्या, जो अब एक देवी बन चुकी थी, पीठ के बल लेटी हुई थी। चारों ओर दीप जल रहे थे, एक स्पष्ट रूप से निर्मित मंडल के चारों ओर। अग्निकुंड से उठती हुई तीव्र ज्वालाएँ अजीब छायाएँ बना रही थीं।

युवा देवी अब कभी अपनी आभा में प्रकाशित हो रही थी, तो कभी एक आंतरिक प्रकाश में डूबती हुई प्रतीत हो रही थी, जो शायद उसके अहंकार को भी समाप्त कर रहा था, और शायद भौतिक अस्तित्व की चेतना को भी।

मैं विशेष रूप से उसकी अद्भुत दृष्टि को देख रहा था। केवल उसकी दृष्टि को देखकर ही यह स्पष्ट हो गया था कि वह अब यहाँ की नहीं रह गई थी।

ऐसा लग रहा था जैसे उसने हमारे साथ कोई संवाद खो दिया हो, जो वेदी के नीचे बैठे सभी साधकों के लिए पहले संभव था।

वह अब स्वयं में विलीन हो चुकी थी।

बाद में मैंने जाना कि वह स्वयं अपनी आंतरिक शक्ति से इस स्थिति तक नहीं पहुँची थी, बल्कि यह संपूर्ण प्रक्रिया उसे इस अवस्था तक ले आई थी।

हालाँकि, यह सत्य था कि वर्षों के कठोर प्रशिक्षण के कारण उसकी ग्रहणशीलता अत्यंत परिष्कृत हो चुकी थी।

वास्तव में, यह पूर्ण निर्वैयक्तिक अवस्था उसे तांत्रिक विधियों द्वारा प्रदान की गई थी।

मुख्य साधक (तांत्रिक आचार्य) ही वह व्यक्ति था जिसने उस छोटी कन्या को माँ की लौकिक चेतना में रूपांतरित कर दिया था।

वह वास्तव में माँ बन चुकी थी—वह परम कुमारी, जिसे हर युग में और हर भूमि में शक्ति का एकमात्र स्रोत माना गया था।

ऐसी अलौकिक मानसिक रूपांतरण संभव हैं और इन्हें संपन्न भी किया जाता है, लेकिन इन्हें सम्मोहित करने की प्रक्रिया, या इच्छाशक्ति की दुर्बलता से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

बल्कि, इस रूपांतरण के बाद उसकी आत्मचेतना और भी अधिक जागरूक और सतर्क हो गई थी।

ध्यान का परिपूर्ण क्षण
दो घंटे तक पूर्ण मौन छाया रहा। ज्वालाएँ उठती रहीं। धुआँ पूरे कमरे में फैल गया। अंदर ही अंदर जाप चलता रहा।

हम सभी मौन के एक गहन आवरण में लिपटे हुए, धीरे-धीरे शून्यता में समाहित होते चले गए।

शरीर शरीरों से लिपट गए,
हाथ हाथों से जुड़ गए,
पाँव पाँव से बंध गए,
और आँखें बंद हो गईं (ताकि तीसरी आँख खुल सके)।

और सबसे ऊपर उस क्षण की पूर्णता की अद्भुत गूँज थी।

एक अव्यक्त शीतल सुख की धारा ऊपर से उतरकर, रीढ़ की हड्डी के सहारे नीचे बहती चली गई, और धीरे-धीरे हर संवेदना को स्निग्धता से भर दिया।

गीता कहती है कि चेतना एक उल्टा वृक्ष है।

इसका मूल (शक्ति स्रोत) शीर्ष पर स्थित है, जो अपनी अनगिनत शाखाओं में सौंदर्य, शांति, परमानंद और दिव्यता का पोषण देता है।

यह एक अनुपम अनुभव था। यह लौकिक अस्तित्व से परे था।

मैं उस आलिंगन में स्थिर बैठा रहा।

मैं उस अनुभव की विशालता से अभिभूत था।

मुझे लगा जैसे उस भूमिगत कक्ष का हर कण जीवंत हो गया हो, और मुझसे उसी भाषा में संवाद कर रहा हो, जिसे सुनने के लिए मैं सदैव लालायित रहा था।

और मैंने सुना।

एल.एस. का आशीर्वाद
जब पहले पहर की ठंडी हवा ने मेरे शिथिल स्नायु तंत्र को छुआ, और जब एल.एस. के शीतल हाथों ने मेरी रक्षा करते हुए मेरे सिर पर प्रेम से थपकी दी, तब भी मैं उसी ध्वनि को सुन रहा था।

"तुम पर शांति बनी रहे; साहसी बनो।"

वह गा रही थीं—
"माँ, मेरे पास आओ,
मेरे हृदय पर विश्राम करो।
मुझे तुम्हारी दिव्यता को निहारने दो।
तुम मुझे देखो, और मैं तुम्हें देखूँ, आँखों में आँखें डालकर।
हमारे इस प्रेम-नृत्य को कोई और न देखे,
ओ माँ!"

आज भी जब मैं खोए हुए पलों को याद करता हूँ, तो वह मधुर गान मेरी आत्मा में गूँज उठता है।

मैंने एल.एस. से पूछा, "वह कौन थी?"

"वह पवित्र (संस्कारित) है," एल.एस. ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

इसके बाद रहस्य का पट दृढ़ता से गिरा दिया गया।

मैं जिज्ञासु नहीं था।

मैंने अपने भीतर उदासीनता के अनुशासन को लागू किया।

लेकिन धीरे-धीरे, मैंने और अधिक जाना...

## स्वर्ग और पृथ्वी की यात्रा

हमारे घर के पास ही विश्वविख्यात संत श्री श्यामाकांत लाहिड़ी, जिन्हें लाहिड़ी महाशय के नाम से जाना जाता था, निवास करते थे। उनके एक पुत्र मेरे बड़े भाई के अच्छे मित्र थे, और उनके प्रपौत्र से मेरी घनिष्ठ मित्रता थी। मैं लाहिड़ी महाशय के घर अक्सर जाया करता था। जब मैंने स्वयं को पहचानना शुरू किया, तब तक लाहिड़ी महाशय इस दुनिया को छोड़ चुके थे; किंतु मेरे पिता और एल.एस. के माध्यम से, जो उनके प्रबल अनुयायी थे, मैं इस महान हठयोगी की ख्याति के लगभग हर पहलू से परिचित था। वे भी चतुषष्टि योगिनी पीठ और समीपस्थ भद्रकाली मंदिर में जाया करते थे।

गदुरेश्वर में, जहाँ आज भी लाहिड़ी परिवार के लोग रहते हैं, हमने शिव मंदिरों से भरी अंधेरी गलियों और गलियारों में खूब आनंद उठाया। गर्मियों की तेज धूप से बचने के लिए ये स्थान हमारे लिए शरणस्थली बन जाते थे।

एक दिन मैं अकेला ही एक मंदिर में बैठा था। संभवतः मैं ध्यानमग्न हो गया था, तभी मुझे लगा कि कोई वहाँ से निकल रहा है। मैंने ध्यान से देखा और पाया कि एक लड़का खड़ा हँस रहा था और मुझे बुला रहा था। यह मल्लाह परिवार का एक विक्षिप्त लड़का था। उनके परिवार के लोग मिट्टी की मूर्तियों पर चाँदी की ज़री का काम करते थे, जिसे वे पीढ़ियों से करते आ रहे थे।

मल्लाह परिवार का यह लड़का दिव्य दर्शन किया करता था। वह हमारे ही स्कूल में पढ़ता था, और उसकी सरल मुस्कान मुझे प्रभावित कर गई। मैं जानता था कि उसे समय-समय पर दिव्य अनुभूतियाँ होती थीं। उसने मुझसे वादा किया कि वह मुझे क्षणभर में चेतना के उच्च स्तरों की यात्रा कराएगा। लेकिन कोई भी उसे गंभीरता से नहीं लेता था। लोग उसे 'सही मानसिक स्थिति से वंचित' मानते थे। फिर भी, मैंने, एल.एस. ने और महान गोपीनाथ दादा ने यह कभी नहीं माना कि उसकी बातें पूरी तरह निराधार थीं। वास्तव में, वह एक अनूठा दृष्टा था। हम जानते हैं कि संत रामकृष्ण परमहंस को भी ऐसे अनुभव होते थे।

अक्सर मैं सोचता हूँ कि सही मानसिकता किसकी होती है? वे लोग, जो धन, वासना, मदिरा, उत्तेजना, अचानक मिली प्रसिद्धि के पीछे भागते हैं, और समाज को अपार क्षति पहुँचाते हैं, उन्हें तो गंभीरता से लिया जाता है और सम्मान भी दिया जाता है। वे हमारे राजनीतिक और सामाजिक हितों के प्रतिनिधि बनते हैं। वे अपने कृत्यों को तर्कसंगत ठहराने के लिए सिद्धांत गढ़ते हैं। फिर क्या वे लोग, जो ईश्वर और परलोक की बातें करते हैं, वास्तव में पागल हैं? एक बंगाली

बाउल गायक कहता है, "ओह, मैं आधा पागल क्यों हूँ? क्यों नहीं मुझे पूर्ण पागल बना दिया जाता?" बाउल समुदाय के लोग आधे हिप्पी, आधे घुमंतू होते हैं, लेकिन आत्म-खोज के लिए समर्पित होते हैं। आध्यात्मिक "पागलपन" सत्य की खोज करने वाले के लिए स्वीकृत अवस्था है। इसलिए मैं मल्लाह की तथाकथित 'मूर्खता' से हतोत्साहित नहीं हुआ।

हम दोनों एक-दूसरे के करीब आए, और उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसकी यात्रा में रुचि रखता हूँ। पास ही एक शक्ति पीठ थी, जो प्राचीन दुर्गा मंदिर था। हम मंदिर से लगे उपवन को पार कर, खंडहरनुमा पहाड़ी की चोटी पर जा पहुँचे।

मल्लाह को अपने अनुभव सुनाने की आदत थी। वह सबको नहीं, लेकिन कुछ को जरूर बताता था। वह गोपीनाथ दादा से लंबी चर्चाएँ करता था, जो विश्वप्रसिद्ध तांत्रिक विद्वान (महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज) थे। क्योंकि वह मेरे पिता का गुप्त प्रशंसक था, इसलिए हम एक-दूसरे के निकट थे। जब एल.एस. उपस्थित नहीं होती, तो मैं अपनी आध्यात्मिक उलझनों के लिए उससे सलाह लेता था।

उस दिन शाम को मल्लाह बात करने के मूड में था। उसने अपने अंतरिक्ष यात्राओं के बारे में बताया—वह अलग-अलग 'सौर मंडलों' में कैसे गया, वहाँ क्या देखा, और क्या अनुभव किया। उसकी बातें सुनकर ऐसा प्रतीत होता था मानो वह सत्य कह रहा हो। बहुत कम लोग उसकी 'बकवास' पर ध्यान केंद्रित कर पाते, लेकिन कोई भी उसे पूरी तरह मूर्ख भी नहीं मानता था। स्कूल के शिक्षक भी नहीं। कई बार जब शिक्षक कठिन समस्याओं में उलझ जाते, तो वह सहज समाधान सुझा देता, आवश्यक जानकारी देता, या कभी-कभी भविष्यवाणी भी करता। वह भूकंप, अजन्मे शिशुओं के लिंग, लोगों की मृत्यु और दुर्घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकता था। वह बस अचानक चीखकर अपनी चेतावनी दे देता। स्वाभाविक रूप से, लोगों ने निष्कर्ष निकाला कि मल्लाह किसी अनोखे प्रकार की विक्षिप्तता से ग्रस्त था, जिसे नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता और न ही इसे कोई चिकित्सकीय समस्या माना जा सकता था।

उसके साथ रहते हुए, मैंने उन स्थानों की यात्राएँ कीं जिनका उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रंथों और अन्य धर्मों की लोककथाओं में होता है।

उसके अमर ऋषियों—सनत, सनंदन, सनातन और सनतकुमार (जो सृष्टि के प्रथम चार मानव थे, जिन्होंने संसार में रमने और वंश वृद्धि करने से इनकार कर दिया था) से संवाद की कहानियाँ, अश्विनीकुमारों (दैवीय चिकित्सक) से मुलाकात, वसिष्ठ मुनि और विशेष रूप से नारद मुनि से बातचीत की कथाएँ मुझे अत्यधिक आकर्षक लगती थीं। उस समय, जब वह यह सब सुनाता था, मुझे कोई संदेह नहीं होता था। उसके 'पागलपन' में मुझे असीम आनंद मिलता था, और उसके साथ होने पर मैं स्वयं को पूर्ण अनुभव करता था।

मल्लाह का यह संतुलन ही था, जिसने मुझे उसकी ओर आकर्षित किया था। गोपीनाथ दादा और संत जितेंद्र भी उसकी चर्चा करते थे। एल.एस. भी मेरे इस नए मित्र के प्रति आकर्षण को मुस्कान में स्वीकार करती थी। कभी-कभी वह व्यंग्यपूर्वक पूछती, "कैसी चल रही है तुम्हारी स्वर्गीय यात्रा तुम्हारे नए मित्र के रथ पर?" और जब मैं संकोच से कान तक लाल हो जाता, तो वह मुस्कुराकर कहती, "जितने फूल मिलें, बटोर लो।" वह मेरे इस जिज्ञासा-मार्ग को 'मधुकरी वृत्ति' (मधुमक्खियों का मार्ग) कहती थी।

उस दिन सूर्यास्त होने को था। वातावरण गंभीर हो गया था। लेकिन मल्लाह अपनी सामान्य तंद्रा में था और संस्कृत में बातें कर रहा था, जिसे वह जानता भी नहीं था। उसने मुझसे शिव की पूर्ण श्रद्धा से वंदना करने को कहा, क्योंकि, उसके अनुसार, हम कैलाश पर्वत पर भगवान शिव के साक्षात दर्शन कर रहे थे। शिव और माता पार्वती पासे का खेल खेल रहे थे, और मल्लाह के अनुसार, उसी खेल में उसकी नियति तय होने वाली थी। उसने इतनी गहराई से अपनी अनुभूति व्यक्त की

कि वह वास्तव में ठंड से काँपने लगा। मैंने उसका बर्फ-सा ठंडा शरीर छूकर देखा। मैंने श्रद्धा व्यक्त की, लेकिन भगवान से अधिक मल्लाह के प्रति।

तभी उसने आदेशात्मक स्वर में कहा, "आओ, आज रात मेरी नियति तय होगी। मुझे तुम्हारे सहयोग की आवश्यकता होगी... आओ... आओ..."

## अंधकार की श्वास

एक संकरी गली के अंत में लगभग आधे एकड़ का एक परित्यक्त जंगली क्षेत्र था, जो चारों ओर से ऊँचे, पुराने कटे पत्थरों से बनी इमारतों से घिरा हुआ था। उन दिशाओं से प्रवेश असंभव था; केवल पश्चिमी दिशा में दस फुट का एक खुला स्थान था, जहाँ दो मजबूत लकड़ी के द्वार लगे थे। लेकिन ये द्वार हमेशा ताले में बंद रहते थे।

हम उन द्वारों में से एक के पास पहुँचे। मल्लाह कुछ देर तक बंद द्वार के सामने खड़ा रहा। मैंने देखा कि ताला स्वयं ही खुल गया। उसने द्वार को खोला और मुझे प्रेरित किया, "आओ, समय नहीं है। शक्ति प्रतीक्षा कर रही है।"

मैं उस स्थान पर एक प्राथमिक विद्यालय के छात्र के रूप में जाया करता था, जब मैं वेदों का प्रारंभिक पाठ कर रहा था। लगभग दस वर्षों बाद मैं फिर वहाँ गया था।

उस दिन मैंने जो देखा, वह मेरी समझ से परे था। सम्पूर्ण विनाश। पूरा क्षेत्र एक परित्यक्त निर्जन वनभूमि की तरह खड़ा था। हमारा वैदिक विद्यालय अतीत की बात लगने लगा था, एक रहस्यमयी गलियारे में गूंजती हुई एक विलुप्त ध्वनि।

साधनाएँ प्रायः अंधेरे और भयावह स्थानों, जंगली और परित्यक्त स्थलों से क्यों जुड़ी होती हैं? यह विषय हमेशा मुझे रहस्यमय रूप से आकर्षित करता रहा है। वातावरण की विचित्रताएँ इस रहस्य को और बढ़ा देती हैं, यह मैं जानता हूँ। लेकिन यह रहस्यमय वातावरण या उत्पन्न रहस्यवाद साधना के लिए आवश्यक क्यों होता है, यह प्रश्न मुझे अक्सर परेशान करता रहा है। मैंने इस विषय पर गहराई से विचार किया है।

बाद में, अपने अभ्यासों के माध्यम से, मैंने कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सीखे। ऐसा नहीं है कि साधक भूतहा स्थानों का चयन करते हैं। स्थिति इसके ठीक विपरीत होती है। आत्मिक जगत से उनके निरंतर संपर्क के कारण, और उनके अनुग्रह व शक्ति के आकर्षण से प्रेरित होकर, आत्मा के खोजी निर्जन स्थानों को अपना अस्थायी निवास बना लेते हैं। हमारी अज्ञानता में, हम इन स्थानों को भूतहा मान लेते हैं।

गहरी रात के सन्नाटे में, एक खाली मकान, एक व्यस्त सभागार, एक न्यायालय, या सरकारी सचिवालय के गलियारे भी अलग महसूस होते हैं। विशेष रूप से जब वे परित्यक्त होते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ सैकड़ों आँखें झांक रही हैं, हजारों पलकें झपक रही हैं, और लाखों साँसें हमारे कंधों के ऊपर से गुजर रही हैं।

हर कोई इसे महसूस करे, यह आवश्यक नहीं। हर कोई हमारे किसी सभा में उपस्थिति को एक ही रूप में अनुभव नहीं करता, यहाँ तक कि अपने ही घर में भी नहीं। आगंतुक आते हैं और चले जाते हैं; हमारी संवेदनाएँ इन परिवर्तनों को हर समय समान रूप से दर्ज नहीं करतीं। यह हमारी तंत्रिका स्थिति की प्राकृतिक उतार-चढ़ाव का परिणाम होता है। बाहरी जगत से संचार करना, विशेष रूप से आंतरिक जगत से या हमारे प्रत्यक्ष बोध से परे की दुनिया से संवाद स्थापित करना आसान नहीं होता; और न ही यह सभी के लिए समान महत्व रखता है।

लेकिन सामान्यतः, कुछ स्थान, उनकी परित्यक्त प्रकृति के कारण, उन आध्यात्मिक तरंगों को संचित कर लेते हैं, जो भीड़भाड़ वाले स्थानों में आवश्यक गहराई से दर्ज नहीं हो पातीं।

यही कारण है कि कुछ स्थानों में विशेष प्रकार की रहस्यमय अनुभूतियाँ होती हैं, जबकि अन्य स्थानों में, विशेष रूप से जहाँ लोगों का आवागमन अधिक होता है, यह अनुभूति नहीं होती। यह चर्चा का विषय नहीं कि क्या ये स्थान वास्तव में आध्यात्मिक उपस्थिति से युक्त होते हैं। लेकिन अभी के लिए, एक परिकल्पना के रूप में, यह मान लेना उचित होगा कि हमारे चारों ओर कुछ सचेतन 'उपस्थिति' व्याप्त हैं, जो हमारी शुभ और अशुभ प्रवृत्तियों को नियंत्रित करती हैं और हमारी इच्छाओं और उनकी पूर्ति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

इस जगत के नैतिक संतुलन की रक्षा, व्यापक रूप से, इन्हीं शक्तियों द्वारा की जाती है। वास्तव में, यह घटनाक्रम हमारे लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होता है। जब हम यह निर्णय लेते हैं कि हमें इन शक्तियों को बार-बार उकसाकर उनके संतुलन को नहीं बिगाड़ना चाहिए, और न ही किसी दुर्भावनापूर्ण इरादे से उनकी शक्ति को तनावग्रस्त करके किसी को हानि पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए, तब ये रहस्यमयी शक्तियाँ, जो भी हों, वास्तव में हमारे लिए लाभकारी बन जाती हैं—यदि हम उन्हें उनके हाल पर छोड़ दें। अधिकाधिक हस्तक्षेप अक्सर प्रतिकूल परिणाम ही उत्पन्न करता है।

## यंत्र और आलिंगन

उस परित्यक्त स्थान के एक कोने में बेर के पेड़ों का एक उपवन था, जिनके मीठे काँटेदार फल वाराणसी की प्रसिद्धि का एक हिस्सा थे। उस उपवन के बीच से झुकते हुए हम एक सुसज्जित, चिकनी मिट्टी से बना आँगन पार कर गए, जहाँ चमेली की झाड़ियों की भरमार थी। यह जून का महीना था, जब उत्तर भारत की धूप में हरियाली झुलस जाती है, लेकिन यह चमेली मेरे लिए आश्चर्यजनक रूप से पूर्ण प्रस्फुटित थी। झाड़ी के पास ही एक ऊँचा चंपा वृक्ष खड़ा था, जिसकी सुगंध मादक थी। तीन वृक्षों की पंक्ति में खिले गुलैन्ची अपने राजसी सौंदर्य में खड़े थे। इन वांछनीय पुष्पों के अलावा, विनम्र कनेर और श्रद्धेय जवा पुष्प भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थे। मैंने एक ही दृष्टि में यह सब देखा और सोचा कि इस परित्यक्त स्थान में बागवानी कौन कर रहा था।

भूमि को अच्छी तरह से समतल किया गया था। एक विस्तृत श्री यंत्र वहाँ प्रतिष्ठित था, जो अत्यंत जटिल और उच्च कौशल की माँग करने वाला रेखांकन होता है। यह स्थान तांत्रिक अनुष्ठानों की अनुमति का प्रतीक प्रतीत हो रहा था। मुझे स्मरण हुआ कि प्राचीन काल में इस यंत्र की कितनी श्रद्धा थी। महान शंकराचार्य ने इस यंत्र की उपासना की थी। इसे दक्षिण भारत के श्रृंगेरी, कुरत्तालम, कांचीपुरम, तिरुचिरापल्ली और नेपाल के काठमांडू में भी पूजा जाता है। इस यंत्र ने शंकराचार्य सहित अनेक प्रसिद्ध योगियों को उच्च आध्यात्मिक अनुभूतियाँ प्रदान की हैं, और उनकी महान स्तुति 'सौंदर्य लहरी' इस यंत्र की अद्भुत महिमा का गान करती है।

मैं परिवेश का अवलोकन कर ही रहा था कि मुझे परिचित प्राथमिक स्पंदन अनुभव होने लगे। मल्लाह ने मुझे बैठने और अग्नि प्रज्वलित करने में सहायता करने के लिए कहा। एक बड़े पत्थर के नीचे से, जहाँ एक बड़ा छिद्र प्रकट हुआ, उसने कुछ चटाइयाँ, एक जलपात्र, कुछ बर्तन और पूर्ण तांत्रिक अनुष्ठान के लिए आवश्यक सामग्री निकाली।

कौन इस अनुष्ठान का संचालन करेगा और किस उद्देश्य से, यह अब भी रहस्य बना हुआ था। मल्लाह पूरी निश्चिंतता के साथ विधि संपन्न कर रहा था, मानो किसी बाहरी तत्व से कोई सरोकार ही न हो। वह निसंदेह, दृढ़ और पूर्णतः सुनिश्चित था। शीघ्र ही अग्नि प्रज्वलित हो उठी। मैं एक ओर बैठा था और पहली बार देखा कि यंत्र 'सजीव' प्रतीत हो रहा था। मैंने

इसके विभिन्न भागों, विशेषकर त्रिभुजों में, कुछ हलचल अनुभव की। जो लोग इस यंत्र के रहस्य को जानते हैं, वे यह भली-भाँति समझते हैं कि इसे जागृत करने के लिए एक 'अंतरात्मा' सहायक की आवश्यकता होती है। (इस यंत्र का एक अद्भुत उदाहरण वाराणसी में प्रसिद्ध तैलंग स्वामी द्वारा पूजित काली मंदिर में देखा जा सकता है।)

समय बीतता गया। संध्या गहराती जा रही थी। संध्या के पहले दो प्रहर समाप्त हो चुके थे।

तभी मुझे अनुभव हुआ कि कोई अपरिचित चुपचाप हमारी ओर बढ़ रहा था। जैसे ही मैंने इस शांति भंग करने वाली उपस्थिति को देखा, अनायास ही मेरी दृष्टि द्वारों की ओर चली गई, जो अब भी बंद थे। लेकिन इससे पहले कि मैं अपने उलझे हुए विचारों को समेट पाता, मैंने अचानक एक और उपस्थिति महसूस की, जो इस बार मेरे बहुत करीब थी।

यह रहस्यमय दृष्टि मुझे झकझोर गई। चारों ओर ऊँची दीवारें थीं, जिनसे कोई चढ़कर अंदर आ सकता था, ऐसा असंभव था। प्रवेश द्वार अभी भी बंद थे, जिन पर मेरी आँखें टिकी हुई थीं। लेकिन मैंने किसी को अंदर आते नहीं देखा। फिर भी, जब मेरे बगल में हल्की सरसराहट हुई, तो मैंने देखा कि एल.एस. योग मुद्रा में बैठी हुई थी। वह आ चुकी थी!

मैं उसे छूकर यह पुष्टि करना चाहता था कि वह वास्तव में भौतिक रूप से उपस्थित है या नहीं, लेकिन मैंने साहस नहीं किया। मैं अभी भी मात्र एक दर्शक ही था। जो कुछ हो रहा था, वह एक गूढ़ तांत्रिक अनुष्ठान था, जिसमें एक पुरुष और एक स्त्री दोनों श्री यंत्र के भीतर निःसंकोच लेटे हुए थे।

जो कोई भी इस यंत्र से परिचित है, वह भली-भाँति जानता है कि इस यंत्र में पुरुष और स्त्री तत्व कैसे एक-दूसरे में गुंथे होते हैं, और इस एकमात्र मिलन से कैसे कमल की पंखुड़ियों की भाँति अनेक त्रिभुज विकसित होते जाते हैं। पुरुष और ब्रह्मांड की छवि, ब्रह्मांड और सृष्टि की छवि, और अंततः महाकाय ब्रह्मांड से लघु ब्रह्मांड तक की पूर्णता—सब कुछ इस यंत्र के भीतर समाहित है।

जो स्त्री यंत्र पर लेटी हुई थी, उसका निर्वस्त्र शरीर एक पुरुष द्वारा ढका हुआ था, और वे आमने-सामने थे। उस स्थिति में पहचान संभव नहीं थी। अग्नि उज्ज्वल थी, परंतु मन किसी पहचान को देखने की स्थिति में नहीं था। धीरे-धीरे, मेरे अनुभव में एक परिवर्तन स्पष्ट हुआ। मेरा चैतन्य अचानक एक प्रकार की हल्की तैरती अनुभूति में परिवर्तित होने लगा। एक मंद, कोमल ज्योति समस्त चेतना को घेरने लगी, जिससे एक आनंदमयी ऊर्जा प्रवाहित होने लगी। यह एक विलक्षण आरोहण का अनुभव था, जो पूरी तरह से अविश्वसनीय लग रहा था।

ऐसे सर्वग्राही एकत्व की अवस्था में कौन किसे पहचानता? कौन देखने वाला और कौन देखा गया? मैं कौन था? मेरा 'मैं' कहाँ विलीन हो गया? और जब 'मैं' नहीं था, तो फिर उस अनजानी सत्ता को पहचानने का प्रयास कैसे कर सकता था? मेरी इच्छा शक्ति, जो पहचान को स्पष्ट करने का प्रयास करती, वह कहाँ चली गई?

## पवित्र मंत्र: पवित्र मिलन

मैंने स्वयं को जप करते हुए पाया; नहीं, केवल जप ही नहीं, बल्कि वास्तव में एक सामूहिक गूंज के माध्यम से महान मंत्र को दृष्टिगत करते हुए।

क ए ई ला ह्रीं ह स क ह ला ह्रीं स क ला ह्रीं श्रीं...

मंत्र निरंतर प्रवाहित हो रहा था। प्रत्येक बार ध्वनि प्रभाव अधिक पूर्ण, अधिक निकट, और उष्ण स्पंदन से भरपूर प्रतीत हो रहा था।

धीरे-धीरे मैंने देखा कि एक लाल प्रकाश चारों ओर की सभी भौतिक भिन्नताओं को लीलता जा रहा था। उस ज्वलंत लालिमा में मेरा 'मैं' एक ऐसी कली के समान तैर रहा था, जिसे तरल प्रकाश की एक प्रबल धारा में प्रवाहित कर दिया गया हो। असंख्य उगते हुए सूर्य भी उस प्रकाश की दीप्ति को मात नहीं दे सकते थे। फिर भी, वह लालिमा एक अद्भुत शीतलता लिए हुए थी, जो चंदन, चाँदनी, सफेद कुमुदिनी और दही की धार की छुअन के समान थी। यह अनुभूति इतनी विचित्र थी कि जितना अधिक मैं आज इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही यह मुझे विलक्षण प्रतीत होती है।

(और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इस अनुभव का वर्णन करने में भाषा की क्षमता अपर्याप्त प्रतीत होती है। मैं उस रोमांच को पूर्ण सटीकता से व्यक्त करने में असमर्थ हूँ।)

जहाँ तक मुझे ज्ञात था, वहाँ मेरे अलावा केवल एक और पुरुष था—मल्लाह। फिर आलिंगन में पुरुष कौन था? जब मैं इस पर विचार कर ही रहा था, तभी एक स्त्री आकृति की छवि मेरे मानस में उभरी। वह युवा और अनुपम सुंदरता से संपन्न थी, और उसकी सुगंध मोहक थी। एक हल्का दीप्तिमान नारंगी-लाल प्रकाश चारों ओर व्याप्त था।

किन्तु तभी एक और दृश्य उभर आया। पूर्व के दोनों रूप अब शवासन की स्थिति में थे, पुरुष ऊपर, ठोड़ी से ठोड़ी, पैर से पैर।

नवागता एक और स्त्री आकृति थी, जो पुष्पमालाओं और पुष्पाभूषणों से सुसज्जित थी। उसके हाथ में एक पुष्पधनुष था, और पुष्पबाण भी। उसने अपने हाथों में एक पाश और अंकुश भी धारण किया हुआ था। वह निरंतर मुस्करा रही थी। उसने कुछ दृढ़ कदम आगे बढ़ाए और पुरुष के उलटे पड़े शरीर के ऊपर खड़ी हो गई। इससे पहले कि मैं उसे देख पाता, मैंने दो और स्त्री आकृतियाँ देखीं, जो समान रूप से सजी-धजी थीं और इस अद्भुत समूह के दोनों ओर खड़ी थीं।

नीचे से गहरे नीले प्रकाश की धारा ऊपर उठ रही थी और ऊपर की लालिमा से मिल रही थी। मैं यह सब देखकर चकित था और बेहोश होने को था।

किसी ने मुझे सीधा बिठा दिया। पकड़ मजबूत और निश्चित थी। जब मैं धीरे-धीरे स्थिर हुआ, तो सोचने लगा कि यह पकड़ किसकी थी। वह स्पर्श मुझे पहचान में आ गया।

मैंने स्वयं को उस पकड़ से मुक्त कर लिया। जो कुछ मेरे साथ हो रहा था, उसे मैं और अधिक बहने नहीं दे सकता था। जो मैंने देखा, अनुभव किया, और जाना, उससे स्पष्ट था कि किसी भी स्थिति में मुझे अपना नियंत्रण नहीं खोना चाहिए। इस सबका कोई न कोई स्पष्टीकरण अवश्य होगा। स्पष्टीकरण प्राप्त करना स्थिरता की ओर बढ़ना है। जो भी ये घटनाएँ थीं, उन्हें समझना आवश्यक था। उन्हें मेरा अपना, मेरे अस्तित्व का एक भाग बनना था। मैं कब तक इस प्रकार बहता रहूँगा?

जादू टूटा। मैंने देखा कि मल्लाह अकेला श्री यंत्र पर बैठा था, और उससे कुछ दूरी पर एक युवती बैठी थी, जिसे मैं नहीं जानता था। वह समूह विलुप्त हो चुका था।

मल्लाह हँस पड़ा।

"तुम इसे सहन नहीं कर सके," उसने कहा। "मैं हमेशा कहता था कि ये अनुभूतियाँ वास्तविक हैं; उतनी ही वास्तविक जितने कि तुम और मैं, और यह सब। या तुम यह कह सकते हो कि यह सब अवास्तविक था, जैसे तुम और यह सब अवास्तविक हो। दोनों ही स्थितियों में तुम सही हो। मैं इन्हें बुलाता हूँ जैसे चाहूँ, और मैं इन्हें विदा करता हूँ जैसे चाहूँ। क्यों ये मुझे इतनी सरलता से प्राप्त होते हैं, यह मैं नहीं जानता, लेकिन मैं यह अवश्य जानता हूँ कि मैं यहाँ सदा के लिए नहीं हूँ।

तुम इन अनुष्ठानों के लिए पूरी तरह से तैयार किए जा चुके हो, और फिर भी तुम्हारे भीतर प्रश्न बने हुए हैं। इसलिए मैं तुम्हारे लिए इस प्रकृति को लाया हूँ। लेकिन मुझसे मत पूछो कि वह कौन है। वह प्रकृति है, और बस। एक दिन वह तुम्हें सब कुछ समझा देगी। केवल इतना जान लो कि मैं अधिक समय तक यहाँ नहीं रहूँगा। वह कुछ समय और रहेगी, लेकिन अधिक नहीं। तुम्हें केवल उसके पास आना होगा, यहाँ, या उन दो स्थानों में से किसी एक पर, जिन्हें तुम भली-भाँति जानते हो।

एक—राजा चेत सिंह के उद्यान में सरस्वती मंदिर, जो नदी के किनारे स्थित है; और दूसरा—कामाक्ष्या मंदिर के पीछे। संत जितेंद्र के आदेश पर वह तुम्हारे पास आएगी।

"अब चलो।"

एक क्षण में हम बगीचे से बाहर थे। बाहर निकलते ही, मेरे विस्मय की सीमा न रही जब मैंने देखा कि वहाँ केवल हम दो ही थे। भ्रमित होकर मैंने मल्लाह से उस लड़की के बारे में पूछा।

वह हँसा और बोला, "लोग कहते हैं कि मैं पागल हूँ। देखो, तुम कितने पागल हो। क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि वह तब आएगी जब तुम चाहोगे? लेकिन अभी तुम उसे नहीं चाह रहे। तुम्हारा मन अभी स्पष्टीकरण खोज रहा है। तुम्हें समय के साथ वे मिल जाएँगे, लेकिन वह नहीं। मन एक समय में केवल एक ही चीज़ को धारण कर सकता है—या तो स्पष्टीकरण, या एक आध्यात्मिक प्रकृति।"

## त्रासदी

हाँ, मुझे स्पष्टीकरण मिल गए थे।

लेकिन मेरे अपने गुरु से। उन्होंने भी पुष्टि की कि मल्लाह बिल्कुल सही था। मल्लाह, मेरे पुराने मित्र नारद की तरह, एक सिद्ध पुरुष था, जो अल्प समय के लिए हमारे बीच आया था। कोई उसे गंभीरता से नहीं लेता था। वह अपने समय से पहले चला गया। लेकिन जो उसने मुझे दिया था, वह तब तक बना रहेगा जब तक...

वह 'जब तक' मेरे पतन का कारण बना। मुझे इस अत्यंत कठिन और प्राचीन चेतना को ऊर्ध्वगामी करने की विधि प्रकृति के सहारे प्राप्त हुई थी। लेकिन मैं प्रकृति-सहभागिता के वरदान को आत्मिक स्तर पर बनाए रखने में असफल रहा। मैं व्यक्तिगत वस्तुनिष्ठता और भावनात्मक परिधि में उलझ गया। मैंने अपना संतुलन खो दिया। यह मेरे जीवन में बहुत बाद की घटना थी।

यह देर से आया, लेकिन आया; और उसके साथ मेरा पतन भी हुआ। मैं प्रकृति के रहस्यमय खेल में फँस गया, अपनी पुकार और अपनी खोज से विमुख हो गया। प्रकृति आकर्षक रूपों में मेरे जीवन में आई, और इस मार्ग में जो पूर्णतः निषिद्ध था, वह मेरे सामने आ खड़ा हुआ। अंतिम मिलन के क्षण में मैं स्वयं को अलग रखने में असफल रहा।

## तंत्र साधना: संकल्प

तंत्र या तांत्रिक साधना स्वयं में एक साधारण अभ्यास नहीं है। यह मन या शरीर पर सस्ती शक्ति प्राप्त करने का साधन नहीं है, न ही यह सम्मोहन या गूढ़ विद्या की तरह है, और न ही इसे केवल शारीरिक कौशल या कलाबाजी के रूप में देखा जा सकता है। तांत्रिक शक्ति कठिन प्रयासों और कठोर अनुशासन से अर्जित की जाती है। यह एक योग्य गुरु द्वारा नियंत्रित प्रशिक्षण की माँग करती है, जहाँ शिष्य अपनी संपूर्ण इच्छाशक्ति को गुरु के चरणों में समर्पित करता है। देवी यमला कहती हैं, "जो लोग इस साधना में कामुक इच्छाओं के साथ प्रवेश करते हैं, उनके लिए यह नर्क के समान पीड़ा लाती है।"

यह शक्ति जब अर्जित होती है, तो व्यक्ति अपने आंतरिक प्रकाश में जीता है। वह अपनी वास्तविक प्रकृति से परिचित होता है और एक नए संसार का साक्षात्कार करता है। वह स्वयं को कई चेतनाओं का मिश्रित रूप पाता है, जहाँ प्रत्येक चेतना स्तर भिन्न होती है।

तंत्र का मूल स्रोत कुलकुंडलिनी है। आधुनिक वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या करने के लिए अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं, लेकिन तंत्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं, बल्कि व्यावहारिक साधना है।

साधक जब इस मार्ग पर आगे बढ़ता है, तो वह अज्ञात की गहराइयों में प्रवेश करता है। आधुनिक विज्ञान इस प्रक्रिया को पूरी तरह समझने में अक्षम है। यह शक्ति केवल आग, भाप, जल, बिजली, गैस आदि से नहीं आती, बल्कि आत्मा, अनुग्रह और अप्रत्यक्ष ऊर्जा स्रोत से उत्पन्न होती है।

लेकिन हर शक्ति के मूल में रजस होता है, जो विपरीत शक्तियों के घर्षण से उत्पन्न ऊर्जा है। बिना द्वैत के कोई घर्षण नहीं, और बिना घर्षण के कोई ऊर्जा नहीं। तांत्रिकों ने इस रहस्य को सदियों पूर्व समझ लिया था। उन्होंने इन्हें पुरुष और प्रकृति के रूप में पहचाना, जिसे विज्ञान आज नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जा के रूप में देखता है।

## व्यर्थ भाग दौड़

वाराणसी के वर्षों के बाद, मैं वह सरल बालक नहीं रहा जो कभी एल.एस. के शब्दों को सहजता से स्वीकार करता था। मेरा मन अब जटिल हो गया था। जैसे हिमनदों और तूफानों से टकरा कर गंगा में बहने वाले पत्थरों के आकार बदल जाते हैं, वैसे ही मेरे विचार अब पहले की सरलता से बहुत दूर थे।

एल.एस. की शिक्षाएँ अब मेरे संशयवादी दृष्टिकोण को संतुष्ट नहीं कर पा रही थीं। मेरी जटिलता और पुस्तकीय ज्ञान ने उनकी सहज और गहरी बातों को समझने की मेरी क्षमता को बाधित कर दिया था। विचारों ने भार प्राप्त कर लिया था, स्मृतियाँ धुंधली हो चुकी थीं, लेकिन अनुभवों की गहराइयाँ अब भी मेरे भीतर अमिट रूप से अंकित थीं।

एक समय था जब मैं सेक्स और उसकी साधनाओं से जुड़े प्रश्नों को लेकर अत्यंत जिज्ञासु था। लेकिन मैंने यह सीखा कि यदि मनुष्य को सृजन करना है, तो उसे पहले जानना चाहिए कि वह क्या सृजन कर रहा है। अन्यथा, रोक ही उचित है।

प्राकृतिक रूप से, जीवन का प्राथमिक उद्देश्य जीवन का विस्तार करना है। लेकिन कितने लोग इसे मात्र प्रजनन के रूप में स्वीकार करते हैं? हम वासना से प्रेरित होकर इसे एक मनोरंजन का साधन बना लेते हैं। हम अनियंत्रित रूप से इंद्रिय भोग की ओर भागते हैं, और इसकी वास्तविकता को समझने में असफल रहते हैं।

यह शिक्षा मुझे एल.एस. से बहुत पहले प्राप्त हुई थी, और यही कारण था कि उन्होंने मुझे गुप्त ज्ञान प्रदान किया। आज, मैं इस रहस्य को उन लोगों के लिए प्रकट कर रहा हूँ जो इसकी गहराई में जाने के इच्छुक हैं। यह ज्ञान सदियों से एक रहस्य के रूप में संरक्षित रहा है, लेकिन अब समय आ गया है कि इसे समझा जाए।

## उधार लिए हुए प्रभामंडल के साथ वासना के केंद्र

मैंने भारत में कुछ तथाकथित आश्रमों को देखा है, जहाँ कुछ प्रसिद्ध और प्रचारित योगियों के अनुयायी आत्मज्ञान की खोज में घोर पतन में लिप्त हो गए हैं। आध्यात्मिक अनुभवों की खोज में सैकड़ों युवक धूल चाट चुके हैं, उन्मत्त हो चुके हैं, और ऐसी अपमानजनक स्थितियों का शिकार बने हैं जिन्हें टाला जा सकता था। यह वही पीढ़ी थी जिसे भविष्य के लिए फलने-फूलने की आवश्यकता थी, लेकिन जो अपने विकास से पहले ही दीमक लगी लकड़ी की तरह खोखली हो गई।

## मृत गीत: जीवन का अर्थ

यूरोप की अपनी एक यात्रा के दौरान, पश्चिमी जर्मनी (कैसेल) में एक माँ ने मेरे सामने एक पत्रिका रखी, जिसमें भारत के एक प्रसिद्ध आश्रम में हो रही घटनाओं की फोटोग्राफिक रिपोर्ट थी। उसने एक तस्वीर की ओर इशारा किया और चिल्लाई, "देखो, यह मेरी बेटी भी हो सकती थी। और मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जिसका बेटा नेपाल के किसी अज्ञात कोने में कुंडलिनी के रहस्यों में खोकर मारा गया। जो भी इसका अर्थ हो, मैं नहीं जानती। मुझे आशा है कि मेरी बात से आपको ठेस नहीं पहुँचेगी।"

उस तस्वीर में एक विशाल हॉल दिखाया गया था, जो नग्न युवाओं (पुरुष एवं महिला) से भरा हुआ था। वे सभी अर्ध-जागृत, अर्ध-चेतन अवस्था में थे। कुछ पूर्णतः अचेत थे, जबकि अन्य उन्हें होश में लाने की कोशिश कर रहे थे। कुछ शायद उन्मत्त होकर चीख रहे थे, जैसा कि उनकी भयावह आँखों और विकृत चेहरे के भाव से प्रतीत हो रहा था। स्पष्ट था कि वे किसी खतरनाक मादक पदार्थ के प्रभाव में थे। उनमें से लगभग सभी गैर-भारतीय थे, अधिकांशतः श्वेतवर्णी। वे दृश्य ग्रीक और भारतीय मूर्तियों में अंकित बाखानालिया के दृश्यों या रोडिन के 'गेट ऑफ हेल' पर उकेरी गई पीड़ा से मेल खाते थे।

वे क्या खोजने आए थे? उनके अपने देशों में ऐसा क्या कमी थी जो उन्हें यहाँ खींच लाई? उन्होंने ऐसा सर्वोच्च बलिदान किस उद्देश्य के लिए दिया? उन्होंने क्या पाया? उनका अपना संसार उन्हें क्यों असफल लगा? उनके अंदर की जिज्ञासा किस मूल से जन्मी थी? वे जीवन के किस नए अर्थ की खोज कर रहे थे? मैं बार-बार इन प्रश्नों को दोहराता हूँ। एल.एस., ओह एल.एस., तुम इस पर इतनी मौन क्यों हो? तुम मार्गदर्शन क्यों नहीं करती?

इसका उत्तर अवश्य होना चाहिए। यदि हमारी तथाकथित वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद इसका उत्तर नहीं मिलता, तो जीवन स्वयं एक खोखली, व्यर्थ चीख बनकर रह जाएगा—एक ऐसा रेगिस्तान, जहाँ कोई सूर्य नहीं उगता, केवल एक जलती हुई, भयानक आँधी निरंतर चीखती रहती है।

गंगा के तट पर वाराणसी में, वृंदावन की धूल में, गोवा के एकांत तटों पर, नेपाल, सिक्किम और भूटान की घाटियों में, यहाँ तक कि मुंबई, जयपुर, दिल्ली और कोलकाता की अंधेरी गलियों में, संपन्न यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और अमेरिका के युवक और युवतियाँ अपने शरीर और आत्मा के पतन में खो रहे हैं। वे प्रेम और आकस्मिक संयोग के अपने नवजात फसल को अपनी पीठ पर टंगे टोकरी में लिए घूमते हैं। वे धूल भरी सड़कों पर रबर की चप्पलों में भटकते हैं, एक जीवंत और संयमित समाज के बीच एक अस्त-व्यस्त तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

मैं सोचता हूँ कि उस दुर्भाग्यपूर्ण टोकरी में क्या है? क्या यह मानवता के भविष्य को संजोए हुए है, या केवल अतीत की एक नष्ट होती लाश है? वे क्या खोज रहे हैं? वास्तव में उन्हें क्या मिल रहा है?

संवेदनशील व्यक्ति पीड़ा महसूस करता है। ये युवा भी पीड़ा में हैं। और उनकी पीड़ा का समाधान उनके जीवन के उद्देश्य और अर्थ को समझने में है। यह एक अनवरत और स्थिर कार्य में समर्पण के माध्यम से ही संभव है। यही उन्हें वह सार्थकता देगा, जो उनकी आत्मा को शांति प्रदान कर सके। उपलब्धि के बिना जीवन एक मृत गीत है। जीवन को सार्थक कैसे बनाया जाए—यही तंत्र का मूल विषय है। विश्लेषण करने से समझ उत्पन्न होती है, और समझ समाधान की शुरुआत होती है। समझ ही प्रेम की कली है।

इसलिए, मैं जो कहने जा रहा हूँ, उससे पहले एक चेतावनी देना चाहता हूँ। इस ज्ञान में कोई चमत्कार नहीं है, कोई रहस्य नहीं है। यह इतना तार्किक, स्पष्ट और सुव्यवस्थित है कि इसे एक सिद्धांत के रूप में आसानी से समझा जा सकता है। खतरा केवल अभ्यास के स्तर पर उत्पन्न होता है।

प्रशिक्षण और अनुशासन के बिना कोई तंत्र-साधना में नहीं जा सकता। प्रशांत महासागर में गहरे पानी में तैरने से पहले शरीर, मन और भावनाओं को तैयार करना आवश्यक है। भोजन, निद्रा, चलना, व्यायाम, श्रवण, गंध, प्रेम, समझ, दृष्टि, स्वप्न और चिंतन—इन सभी में अनुशासन पहले, अनुशासन दूसरे, और अनुशासन तीसरे स्थान पर आता है। यही तैयारी है। तंत्र-साधना जिंदा विषैले नागों के साथ खेलने जैसी है—यह कहा गया है, और इसे हजार बार दोहराया जा सकता है। यह हजार वोल्ट के खुले तार को छूने जैसा है। इस क्षेत्र में सतर्कता कभी भी अत्यधिक नहीं हो सकती।

इस अनुशासन की अवधि को छोटा नहीं किया जा सकता। इसे अपनी पूर्ण अवधि तक चलना होगा। यदि यह समय और ऊर्जा का बलिदान असंभव हो जाए, तो तंत्र-साधना को नहीं अपनाना चाहिए।

भाग्य और संयोग के खेल से, मैं एल.एस. द्वारा स्वीकार किया गया था। क्योंकि मैं उनके अत्यंत समीप था—शरीर से शरीर, त्वचा से त्वचा—इसलिए मुझे उनसे यह शिक्षा प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त हुई। यदि अपने बाद के जीवन में मैं योगियों, सिद्धों, और तीर्थयात्राओं में भटकता रहा, तो इसका कारण यह नहीं था कि मैं अपनी राह से भटक गया था या किसी सनसनीखेज उपलब्धि की खोज में था। इसका कारण केवल यह था कि तंत्र की आध्यात्मिक अनुभूति अजेय आनंद का स्रोत है।

यह आनंद ही साधकों को बुलाता है, आमंत्रित करता है और उत्तर देता है। तंत्र एक पवित्र गूढ़ समुदाय बनाता है। यह एक परिवार की तरह कार्य करता है। यह एक 'क्लब' बनाता है, जैसे एक पीने का क्लब, एक ब्रिज क्लब, या एक फ्री-मेसन लॉज। तांत्रिक न तो अकेला होता है, न ही स्वार्थी।

## ध्यान क्यों करें: ओजस

मैंने पहली बार एल.एस. से (निस्संदेह, अपने ही प्रश्नों के उत्तर के रूप में) सीखा कि हम ध्यान क्यों करते हैं। निश्चित रूप से, इसका उत्तर पहले भी दिया गया था, और अधिक सरलता से भी। लेकिन यदि हम गहराई में जाएँ, तो हमें कुछ विशेष प्रकार की लयबद्ध, सूक्ष्म हलचलों का उल्लेख करना होगा जो हमारे सोचने वाले मस्तिष्क की स्थिरता बनाए रखने में सहायता करती हैं। यह वही लय है जो शरीर को शांत और मन को स्थिर रखती है। कई लोग इसे अल्फा रिदम के रूप में संदर्भित करते हैं।

वे इससे क्या तात्पर्य रखते हैं, यह मैं पूरी तरह नहीं समझा सकता। लेकिन हम इसे ओजस के रूप में जानते हैं। पूरे मानव जीवन-चक्र में उत्पन्न और उपयोग की जा सकने वाली ओजस की कुल इकाइयों को तीन माना गया है, जबकि 100 ओजस इकाइयाँ मानव चेतना को कैवल्य या पारलौकिक आनंद की सर्वोच्च अवस्था तक ले जाती हैं, जहाँ से समस्त शक्ति प्रवाहित होती है। तंत्र-साधना इन दुर्लभ इकाइयों की आपूर्ति करती है; और एक ही जीवन-चक्र इन्हें संचित करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता।

ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ओजस की इस लय को प्रतिदिन, प्रति घंटे और प्रति क्षण एक नियमित प्रवाह में बनाए रखा जाता है। कुछ लोग, जैसे कि ज़ेन साधक, अपनी दृष्टि को किसी वस्तु पर केंद्रित रखते हैं; और कुछ, जैसे कि तांत्रिक, अपनी दृष्टि को भ्रूमध्य (भौहों के बीच) पर केंद्रित करते हैं और तीसरे नेत्र के खुलने की प्रतीक्षा करते हैं। जब ऐसा होता है, तो ध्यान करने वाले का आंतरिक अस्तित्व एक दिव्य आनंद की आभा से आलोकित हो जाता है।

ऐसी ध्यान-साधना सभी परिस्थितिजन्य प्रतिक्रियाओं को पूरी तरह नियंत्रित कर सकती है। पीड़ा या कष्ट को अलग रखते हुए, ऐसी तांत्रिक साधनाएँ अंततः गुरुत्वाकर्षण प्रभाव, नेत्रगोलक की हलचलों, हृदय की धड़कनों और श्वास तक को नियंत्रित करने में सहायक होती हैं। एक पश्चिमी शोधकर्ता का प्रमाण है कि उसने स्वयं एक तिब्बती लामा को 30 घंटे में 300 मील की दूरी तय करते हुए देखा है। कई लोगों ने यह देखा है कि कुछ साधक असंभव दूरी को पंखों के सहारे जैसे पार कर लेते हैं। मैंने अमरनाथ यात्रा के दौरान इस दृश्य का अनुभव किया था, जिसका विवरण मैं पहले ही दे चुका हूँ।

कई लोग आश्चर्य करते हैं कि हिमालय की बर्फीली चोटियों में योगी बिना आग या आवरण के कैसे गर्म रहते हैं। एल.एस. को इसमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उन्होंने समझाया कि शरीर अपने सबसे सूक्ष्म रूप में उन पदार्थों से बना होता है जिन्हें हम देख नहीं सकते। इन सूक्ष्म पदार्थों की निरंतर 'रसोई' चलती रहती है। उन्होंने इसे 'रेणु' या 'अणु' कहा, जो असंख्य तैरते बुलबुलों की भाँति उत्पन्न होते और समाप्त हो जाते हैं। इन अणुओं की उष्णता और ऊर्जा का स्रोत ही जीवन-शक्ति है।

मैंने कुछ भौतिक वैज्ञानिकों से इस विषय पर और जानकारी प्राप्त की, और वे इस अवधारणा को सुनकर अचंभित रह गए। उन्होंने बताया कि एल.एस. की व्याख्या आधुनिक विज्ञान की आयनीकरण और ऑक्सीजन ग्रहण से इलेक्ट्रॉनों के निर्माण की अवधारणाओं से पूर्णतः मेल खाती है। इससे मुझे यह समझ आया कि आधुनिक विज्ञान भी उसी सत्य की ओर संकेत करता है जिसे मेरी गुरु एल.एस. देखती थीं, और जिसे तंत्र प्रतिपादित करता है।

# एल.एस. (भगवा वस्त्र धारी महिला) और उनका विज्ञान

आज जब मैं एल.एस. द्वारा वर्णित इस अद्‌भुत घटना को याद करता हूँ, तो मुझे दो अन्य संबंधित विचारों की ओर ध्यान जाता है। पहला, हिंदू प्राचीन मिथकों का संदर्भ, जिसमें असंख्य 'आध्यात्मिक' तपस्वियों का उल्लेख मिलता है, जिन्हें देखा नहीं जा सकता, गिना नहीं जा सकता और जो सूर्य की ऊर्जा एवं उसके 'यज्ञ अग्नि' (सूर्य-किरणों) से अत्यधिक जुड़े हुए हैं। इन्हें 'सूर्य-पुत्र' कहा जाता है। इनके स्वभाव में तीव्रता, उत्तेजना, आवेग और क्रोध प्रमुख होते हैं, फिर भी इनका आंतरिक स्वभाव परोपकार से परिपूर्ण होता है। इन तपस्वियों को पौराणिक रूप से 'वलखिल्य' कहा जाता है।

वलखिल्य अपनी अतुलनीय विशेषताओं के कारण अद्वितीय हैं—यहाँ तक कि देवता भी इनका सम्मान करते हैं और इन्हें प्रथम स्थान प्रदान करते हैं। देवता बदल सकते हैं, विचार बदल सकते हैं, लेकिन वलखिल्य और उनके सिद्धांत स्थिर रहते हैं। (मैं सोचता हूँ कि इनका वर्णन और उनका उद्देश्य परमाणु संरचना के सिद्धांत से कितना मेल खाता है।)

दूसरा पहलू जो मुझे एल.एस. की ओजस संबंधी व्याख्या में आकर्षित करता है, वह आधुनिक भौतिकी से संबंधित है। आइंस्टीन, बोस और एडिंगटन के बाद वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष और समय की अवधारणा में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिला। अब ब्रह्मांड को केवल अमूर्त संकेतन और गणितीय समीकरणों द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है।

जब मैं इन वैज्ञानिक खोजों की तुलना एल.एस. की शिक्षा से करता हूँ, तो पाता हूँ कि मानव शरीर एक चुंबकीय क्षेत्र के समान है। यह ऊर्जा और संभावनाओं से भरा हुआ है। यदि मनुष्य अपनी चेतना को उच्चतम अवस्था तक विकसित कर ले, तो वह कृष्ण, ईसा, जरथुस्त्र की तरह महामानव बन सकता है।

मानव शरीर में पर्याप्त शक्ति निहित है, लेकिन इसके अंगों का दुरुपयोग और अप्रयोग इसे निष्क्रिय बना देता है। यही कारण है कि विभिन्न व्यक्तियों में संवेदनशीलता का स्तर भिन्न होता है। आधुनिक सभ्यता ने अपने अंगों की क्षमताओं को कुंठित कर दिया है, और इसे पुनः जागृत करने के लिए वे रसायनों और नशीले पदार्थों का सहारा लेते हैं।

एल.एस. का ज्ञान आधुनिक वैज्ञानिक निष्कर्षों से मेल खाता है। बोस्टन सिटी हॉस्पिटल में किए गए प्रयोगों से पता चला है कि ध्यान और मादक पदार्थों का प्रभाव मानव शरीर पर समान प्रकार की भौतिक परिवर्तनों को जन्म देता है। ध्यान के प्रभाव में, मानव शरीर की अल्फा तरंगों में तीव्र वृद्धि होती है, जो रेडियोधर्मी तत्वों से उत्पन्न कंपन के समान होती हैं। यह अल्फा तरंगें शरीर की उच्च चेतना को प्रभावित करती हैं।

ध्यान और नशीले पदार्थों का प्रयोग श्वसन दर को कम करता है, जिससे शरीर ऑक्सीजन की कम खपत करता है। यही कारण है कि हिमालय में योगी बिना भोजन और ऊष्मा के जीवित रह सकते हैं।

पश्चिमी भौतिकवाद की सबसे दुखद विडंबना यह है कि वे पूर्व के आध्यात्मिक सत्य को विज्ञान की कसौटी पर परखने का प्रयास करते हैं। वे केवल उन्हीं सत्य को स्वीकार करते हैं, जिन्हें उनके भौतिक और रासायनिक प्रयोगशालाओं में परखा जा सके। लेकिन हम केवल उसी का पता लगा सकते हैं जो पहले से मौजूद है; उसके 'कैसे' और 'क्यों' का उत्तर विज्ञान हमेशा नहीं दे सकता। रहस्यवाद वहीं सहायक होता है। जो कुछ रहस्यवाद अपने तरीके से स्पष्ट करता है, उसे पश्चिमी वैज्ञानिक धीरे-धीरे संभाव्यता के रूप में स्वीकार करने लगते हैं।

एल.एस. को आधुनिक विज्ञान का ज्ञान नहीं था, न ही साधारण मल्लाह को। फिर भी, उनकी दृष्टि और अनुभवों की गहराई, उनकी जानकारी की विशालता और परिप्रेक्ष्य मुझे आज भी चकित करती है। विज्ञान की औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद, उनके विचारों को नजरअंदाज कर पाना असंभव है।

## मालेकर परलोक सिधार गए

मालाकार की मृत्यु अत्यंत विचित्र परिस्थितियों में हुई। जब तक वह जीवित था, मैं उसके साथ बना रहा। हम चेट सिंह उद्यान के सरस्वती मंदिर में, अमावस्या की कुछ विशेष रात्रियों में साधना के लिए एकत्र होते थे। हर बार वही लड़की प्रकट होती थी; हर बार तीनों प्रकृतियाँ उपस्थित होती थीं। यह सब पूरी तरह मालाकार के हस्तक्षेप से संभव होता था। कई बार मुझे वहाँ एल.एस. भी दिखी; और जब मैं उसे देखता, तो मैं पूरी तरह मुक्त अनुभव करता।

मालाकार ने साधारण अर्थों में 'मृत्यु' को स्वीकार नहीं किया। उसने विधिवत अपनी माँ से विदा ली थी। वह अपने प्रार्थना कक्ष में, अपने आसन पर अकेला बैठा था। उसकी माँ ने उसे अपने आसन पर शांत अवस्था में पाया। सामान्य मृत्यु की धारणा के अनुसार यह 'विदा लेना' और शरीर का त्याग करना, एक अन्य लोक की यात्रा के लिए, अविश्वसनीय लग सकता है।

मैंने उसकी मृत्यु की सूचना संत जितेंद्र के एक अनुयायी से प्राप्त की। जब मैं मालाकार के घर पहुँचा, तो वहाँ उसके कई सहपाठी और रिश्तेदार उपस्थित थे। अधिकांश लोग इस बात का शोक मना रहे थे कि एक आध्यात्मिक आत्मा इतनी जल्दी चली गई। (अब उन्हें एहसास हुआ कि इस पागल दुनिया में केवल वही वास्तव में विवेकशील था।)

लेकिन उसकी माँ शोक में नहीं थी। "वह इस घर को आशीर्वाद देने आया था," उसने कहा। "हमने उसे स्वीकार नहीं किया। तो अब विलाप क्यों करें? उसने अपने कर्तव्य का पालन किया; और मुझसे वह कभी अलग नहीं होगा। मुझे उस पर पूर्ण विश्वास है।"

मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने अपने पुत्र की मृत्यु को इतने सहज भाव से स्वीकार किया। तब मुझे गीता के उस महान श्लोक का वास्तविक अर्थ समझ आया—जो योग से गिरते हैं, वे पुनः अपने ही समान आध्यात्मिक घरों में जन्म लेते हैं।

वहाँ और भी लोग थे—एल.एस., संत जितेंद्र, और हमारे प्रिय गोपीनाथ दादा, जो अपनी विद्वत्ता और योगिक शक्तियों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हो चुके थे। गोपी दादा मालाकार के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। वे मालाकार के साथ अपने अनुभवों की कई कहानियाँ सुनाते थे और बताते थे कि मालाकार हमेशा उनसे अपनी महान दिव्य यात्राओं की बातें साझा करता था।

अचानक संत जितेंद्र हम सभी से अलग हो गए और अपने विशिष्ट अंदाज़ में नृत्य करने लगे—"मा-मा-मा!" चिल्लाते हुए। वे अपने इन 'उन्मत्त' नृत्यों के लिए प्रसिद्ध थे। अप्रत्याशित रूप से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे अपनी बाईं भुजा में लपेटते हुए नृत्य करने लगे। मेरे शरीर में एक विद्युत प्रवाह-सा दौड़ गया। मैंने उनके दोनों हाथ पकड़ लिए और उनके साथ घूमने लगा, जब तक कि मैं खुद को और संभाल नहीं सका। मैं तेज़ी से अपनी चेतना खोने लगा था। यदि एल.एस. ने मुझे थामकर अपना प्रिय गीत न गाया होता, तो मैं निश्चित रूप से मूर्छित हो जाता।

उस दिन के बाद से, मैं संत जितेंद्र के और करीब आ गया। वे मेरे बाल्यकाल के मित्र थे; और अब भी वे मुझे बच्चा ही मानते थे। लेकिन उनके पास होने पर वे स्वयं भी एक बालक की भाँति हो जाते थे।

अब वे एक प्रसिद्ध योगी बन चुके थे। कहा जाता था कि वे चमत्कार कर सकते थे। मैं स्वयं उनके कुछ 'छोटे चमत्कारों' का गवाह रहा था। वे वास्तव में चमत्कार कर सकते थे या नहीं, यह महत्वपूर्ण नहीं था—बल्कि वे स्वयं एक चमत्कार थे। उनके साथ होने पर ऐसा प्रतीत होता जैसे वे विचारों को पढ़ सकते थे। उनके आकर्षण की शक्ति इतनी तीव्र थी कि कोई भी सहज ही उन पर विश्वास करने को विवश हो जाता।

वे जिस सहजता से अपने गीत गाते, बिल्लियों और पक्षियों से बातें करते, चूहों और छिपकलियों की गतिविधियों को भाँपते, कौवों और चीलों से संवाद करते—इससे प्रतीत होता कि वे वेंट्रिलोक्विज़्म और उससे भी अधिक किसी रहस्यमयी कला में निपुण थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा था मानो वे किसी नॉर्डिक गाथा के एक पुराने नाविक हों। (ओह! मैं उस व्यक्ति को कितना चाहता था!) लेकिन इन सबसे ऊपर, वे चमत्कारों और रहस्यमयी खेलों के अद्‌भुत प्रस्तोता थे, और जिस व्यक्ति की वे स्वयं आराधना करते थे, वे भी उन्हीं की तरह थे।

## पुरवा बाबा

यह थे प्रसिद्ध पुरवा बाबा। (वाराणसी की स्थानीय हिंदी में 'पुरवा' का अर्थ होता है मिट्टी का कुल्हड़।) उन्हें यह नाम एक विचित्र कारण से मिला था। वे व्यवहारिक रूप से मूक थे। बीस वर्षों के अनुभव में मैंने या किसी और ने उनसे केवल एक ही ध्वनि सुनी थी—"क्वाँ क्वाँ क्वाँ क्वाँ"—जो आधी कुत्ते की और आधी मोर की आवाज़ जैसी लगती थी, और वह भी केवल तब जब सड़क के बच्चे उन्हें बहुत परेशान कर देते थे। यह आवाज़ शिकायत और विरोध दोनों का मिश्रण होती थी।

बाबा एक सार्वजनिक जल स्तंभ के पास, विश्वनाथ गली और भूतेश्वर गली के संगम पर, एक टूटी हुई पत्थर की चौकी पर बैठे रहते थे। यह वाराणसी का अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यस्ततम स्थान था। पर्वों के दौरान यहाँ लाखों लोग आते-जाते थे। लेकिन बाबा जिस कोने में बैठते थे, वह नगरपालिका के कूड़े के ढेर के पास था। इसलिए कोई उनके पास नहीं जाता था, न ही कोई उन पर ध्यान देता था। उन्हें उस कूड़े का ही एक हिस्सा मान लिया गया था, एक उपेक्षित, विक्षिप्त व्यक्ति के रूप में।

अघोरी संतों का यही मार्ग होता है। वे 'पिलाचा सिद्ध' होते हैं, जो लोभ और रक्तपिपासा की अंधकारमय शक्तियों पर नियंत्रण रखते हैं। वे संवाद नहीं करते। लोग उनके लिए भेंट छोड़ जाते थे, और गली के बच्चे उनके आस-पास छोटी-छोटी वस्तुएँ चुराने और उन्हें चिढ़ाने आते थे। मानव की अतिशय उदारता को अक्सर पागलपन समझा जाता है। जब बाबा बच्चों की शरारतों से तंग आ जाते, तो वे अचानक चिल्लाते और बच्चे हँसते हुए भाग जाते। मुझे पूरा विश्वास है कि यह बच्चों के साथ उनका स्वेच्छिक खेल था, क्योंकि वे चाहते थे कि बच्चे उनके पास आएँ और उन्हें आनंदित करें।

शाम को, बाबा के पास एक उथली जल निकासी नाली के ऊपर पत्थर की चौकी पर आग जलाई जाती थी। आसपास के दुकानदारों के सहयोग से एक बड़े मिट्टी के बर्तन में चावल और सब्ज़ियाँ पकाई जाती थीं। भूखे लोग और आवारा कुत्ते इस भोजन की प्रतीक्षा करते थे। चावल, सब्ज़ी, लकड़ी और बर्तन—सब कुछ दान से आता था। लोगों के लिए बाबा सबसे महान संत थे। लेकिन जब भोजन तैयार हो जाता, तो वे कभी-कभी उबलते बर्तन में सीधे हाथ डालकर मुट्ठी भर खाते और बाकी भोजन समान रूप से मनुष्यों और कुत्तों के बीच बाँट दिया जाता था। भोजन समाप्त होने के बाद, बर्तन और लकड़ी भी कूड़े में डाल दी जाती थी।

लेकिन नहीं फेंकी जाती थी वह छोटी मिट्टी की प्याली, जिसमें लोग उन्हें दूध चढ़ाते थे। बाबा कभी-कभी उससे कुछ घूँट लेते, लेकिन बाकी सारा दूध कुत्तों को मिल जाता। वे इन प्यालियों को अपने सिर के पास बड़े जतन से सँभालकर रखते थे, मानो ये उनका सबसे बड़ा ख़ज़ाना हों। अगर कोई इन्हें हटाने की कोशिश करता, तो बाबा प्रचंड क्रोध में आ जाते।

आज भी मुझे समझ नहीं आता कि यह उनकी भौतिक संपत्तियों के प्रति मानव की लोभी प्रवृत्ति पर कटाक्ष था या किसी गहरे आध्यात्मिक संदेश का प्रतीक। यही विशेषता उन्हें 'पुरवा बाबा' या 'कुल्हड़ संत' की उपाधि दिलाने का कारण बनी।

यह मुझे त्रिनिदाद में मिले एक अफ्रीकी मोची की याद दिलाता है, जिसने जूते बनाना छोड़ दिया था और एक किराए के छोटे मकान में रहता था। लेकिन वह वास्तव में अपने पोर्च के नीचे रहता था, क्योंकि उसके दोनों कमरे खाली शराब की बोतलों से भरे हुए थे। हर बार जब वह एक बोतल खाली करता, तो बिना किसी झंझट के उसे पीछे फेंक देता और 'धड़ाम!' की आवाज़ आती। वह हमेशा कहता, "यही होता है खाली चीज़ों का ढेर—काफी शोर करता है, लेकिन अंत में क्या बचता है? बस कचरा!"

## अघोरी और कुत्ते

1977 में कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) की यात्रा के दौरान मेरी भेंट एक अघोरी से हुई। जहाँ भी वे जाते, उनके पीछे कुत्तों का पूरा झुंड चलता। संध्या समय वे समुद्र तट पर खड़े होते, जहाँ प्रतिदिन सैकड़ों पर्यटक भव्य सूर्यास्त के आकर्षण में खिंचे चले आते। अघोरी के आसपास लोग सूर्यास्त के समय आग जलाते, पत्थरों का चूल्हा बनाते और चावल, मछली तथा सब्ज़ियों को एक साथ पकाते।

वे पिछले चालीस वर्षों से मौन व्रत में थे और बस इस पूरी प्रक्रिया को शांत भाव से देखते रहते। जब तक कुत्तों और मनुष्यों को भोजन नहीं मिल जाता, वे वहीं रहते, फिर अचानक अंतर्धान हो जाते। कोई उनका पीछा नहीं करता।

मैंने करने की कोशिश की। लेकिन मुझे याद नहीं कि वे मेरी आँखों से कब ओझल हो गए। उस अंधेरी और सुनसान समुद्र तट पर मैं इस घटना पर विचार करता रहा, यहाँ तक कि अपनी रात्रि साधना में भी। अगले दिन दोपहर में, जब मैं एक वीरान क्षेत्र से गुज़र रहा था, तो वे अचानक मेरे सामने खड़े थे, केवल दो फीट की दूरी पर, और मुस्कुरा रहे थे।

'नमः शिवाय', मैंने कहा।

'नमः शिवाय', उन्होंने उत्तर दिया, और उनकी आँखों में वही मुस्कान बनी रही।

मैं आगे बढ़ा। तीन-चार कदम चलने के बाद जब पीछे मुड़ा, तो वे अदृश्य हो चुके थे। यही अघोरियों का स्वभाव है। वे निरंतर गतिशील रहते हैं और कभी ठहरते नहीं।

उस रात होटल में मैं बेचैन था। भारत के अंतिम छोर पर समुद्र की प्रचंड लहरें चट्टानों से टकरा रही थीं। लहरों की गूँज मेरी व्याकुलता को और बढ़ा रही थी। मैं बाहर निकला और खुले आकाश के नीचे खड़ा हुआ, जहाँ कासुअरिना के पेड़ प्रहरी की तरह समुद्री तूफ़ानों का सामना कर रहे थे। समीप ही फ्रेंगिपानी के वृक्ष अपने सुगंध से वातावरण को महका रहे थे। लेकिन मेरा मन इन दृश्यों से हटकर फिर उसी वृद्ध अघोरी और उनके कुत्तों की ओर चला गया।

मैं फिर उसी स्थान पर पहुँचा, जहाँ जलती हुई आग की राख अभी भी हवा में धीमे-धीमे सुलग रही थी। कुछ नाविक पास बैठे शराब पी रहे थे। उनसे बातचीत करने पर पता चला कि यह अनुष्ठान पिछले बीस वर्षों से बिना किसी व्यवधान के प्रतिदिन हो रहा था। आसपास कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। मुझे अत्यधिक एकाकीपन का अनुभव हुआ।

उस योगी की उम्र का एक सीधा रिकॉर्ड था—63 वर्ष, और इतने वर्षों में वे उतने ही वृद्ध दिखाई देते थे, जितने आज थे। यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। ऐसे अलौकिक अनुभवों की विश्वसनीयता श्रोताओं की श्रद्धा पर निर्भर करती है। लेकिन जो लोग स्वयं को तर्क और तर्कशीलता का दास बना लेते हैं, वे इस पर संदेह करते हैं।

हर दिन जीवन में ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनका कोई तार्किक स्पष्टीकरण नहीं होता। पृथ्वी का आकार, ग्रहों की गति, समय की प्रकृति, प्रजातियों की उत्पत्ति जैसे विषय समय-समय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बदले हैं। फिर भी, जब हमें प्रत्यक्ष रूप से सत्यापित घटनाएँ देखने को मिलती हैं, जिनका विज्ञान या अनुभव कोई उत्तर नहीं दे सकता, तब संदेहशील लोग उन पर प्रश्न उठाने के लिए तत्पर रहते हैं।

## फुट-फुट बाबा

मुझे वाराणसी की एक सर्द रात याद है। रिमझिम बारिश हो रही थी। उत्तर भारत में ठंड और मानसूनी वर्षा ने इंसानों और मवेशियों को कंपकंपा दिया था। मैं अपनी रुई से भरी रज़ाई में लेटा हुआ फुट-फुट बाबा के बारे में सोच रहा था।

वे दशाश्वमेध घाट पर, गंगा के किनारे एक पत्थर की चौकी पर बैठे रहते थे, जहाँ एक और योगी की संगमरमर की मूर्ति थी। दिन-रात वे अपने मुँह से "फुट-फुट-फुट-फुट" की ध्वनि निकालते रहते थे, प्रति तीन सेकंड में दो बार। बाद में मैंने प्राणायाम के अध्ययन से जाना कि यह रेचक प्राणायाम के पारंपरिक रूपों में से एक था।

यहाँ तक कि वाराणसी में भी उन्हें एक उच्च कोटि के आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में देखा जाता था, मुख्यतः उनके विचित्र अभ्यास के कारण। वे लोगों से अधिक बातचीत नहीं करते थे। वे लगभग मूक ही थे। अचानक पूरे शहर में एक चमत्कारी घटना की चर्चा होने लगी।

गंगा उफान पर थी। प्रत्येक ग्यारह-बारह वर्षों में वाराणसी में बाढ़ का स्तर इतना बढ़ जाता कि शहर का एक बड़ा हिस्सा डूब जाता। फुट-फुट बाबा का आसन खतरे के निशान के भीतर था। लोग उन्हें सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए मनाने लगे, लेकिन बाबा ने हिलने से इनकार कर दिया। यह वह भयंकर ग्यारहवाँ वर्ष था।

एक दिन पानी उनके पत्थर के आसन को छूने लगा; बस एक इंच और बढ़ता तो आग बुझ जाती और उनका आसन जलमग्न हो जाता। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से पानी वहीं रुक गया। शहर यह देखकर हैरान था। (इसे मात्र संयोग कहकर टाल सकते हैं!)

किसी तरह बाबा को पहले से ही पता होता था कि पानी कहाँ तक बढ़ेगा। कुछ वर्षों में, मानसून से पहले ही, वे अनायास ही अपना स्थान थोड़ा ऊँचा कर लेते थे, लेकिन उसी स्थान के आसपास।

उस सर्द रात मैंने नंगे बाबा को देखने का निर्णय लिया, जो केवल एक छोटी सी आग के सहारे थे। "फुट-फुट-फुट" की आवाज़ शांत रात में स्पष्ट सुनाई दे रही थी। मैं उनके पास पहुँचा और चुपचाप खड़ा होकर उन्हें देखता रहा। वे अकेले थे, लेकिन उन्होंने मेरी उपस्थिति को मानो नोटिस ही नहीं किया।

मैंने वह देख लिया था, जिसे देखने आया था। मेरी शंका समाप्त हो गई। लेकिन संदेह करने वाले लोग? क्या वे अपने बिस्तरों से बाहर निकलते?

मैं वापस अपनी गर्म और सुरक्षित रज़ाई में लौट आया।

ऐसी घटनाओं की विश्वसनीयता केवल उन अनुभवों पर निर्भर करती है, जिन्हें लोग प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं। लेकिन फिर भी, ऐसे अनुभवों को हज़ार तर्कों की कसौटी पर कसा जाता है। अविश्वसनीय घटनाओं को 'साबित' करने का प्रयास एक मानसिक व्यायाम है, जो अहंकार की विकृति से उत्पन्न होता है।

मैं संदेह करने वालों को मनाने में अधिक रुचि नहीं रखता। मैं केवल अपने अनुभवों पर निर्भर हूँ। शायद इसी कारण मैं किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों और शराब से स्वयं को दूर रखता हूँ।

# अघोरी

अघोरी मुझे सदा विस्मित करते हैं। चाहे वे भैरव हों, भैरवी हों, नाथ संप्रदाय के योगी हों, या पाशुपत संप्रदाय के साधक, उनकी साधना की पद्धति भले ही भिन्न हो, परंतु उनका मूल सिद्धांत एक ही है। वे मुझे अन्य शांत स्वभाव के साधकों की तुलना में अधिक आकर्षित करते हैं, जो सभ्य समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप होते हैं। मैंने पाया है कि अघोरी आत्मसंयम के सबसे कठोर रूपों का पालन करते हैं। उनका स्वरूप भयावह प्रतीत होता है, वे क्रोध और उग्रता का आवरण ओढ़े रखते हैं, परंतु यह उनका सुरक्षा कवच होता है। उनकी देह पर भस्म लिपटी होती है, वे निर्वस्त्र रहते हैं, जटाओं से अलंकृत होते हैं, और कभी-कभी जीवित सर्पों को साथ रखते हैं। उनका निवास स्थल श्मशान, कब्रिस्तान और कूड़े के ढेर होते हैं। वे आधुनिक हिप्पियों के आध्यात्मिक संस्करण प्रतीत होते हैं।

हमने पहले बाँसुरी बजाने वाले नाथ योगी, तारा साधना करने वाले गोविंदा पंडित, अपने मूत्र का पान करने वाले भैरव, और अपनी बहन के दाह संस्कार के समय मिले भैरव की चर्चा की है। वे सभी अनूठे साधक थे। भैरवनाथ मंदिर के मेरे महान मित्र, कामाख्या पीठ पर सत्र का संचालन करने वाले संत, मेरी बुआ और स्वयं एल.एस.—ये सभी मुझे एक ही दिव्य परंपरा के अंग प्रतीत होते हैं। मैं उनकी स्मृति की पूजा करता हूँ।

संत जितेंद्र भी एक भैरव ही थे, यद्यपि बहुत से लोग इसे स्वीकार नहीं करते थे। अधिकांश भैरव वही होते हैं जो वे होते हैं; उनकी वास्तविकता को वे स्वयं ही जानते हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है—"शक्ति साधक गूढ़ होते हैं, शैव अपने चिह्नों से पहचाने जाते हैं, और वैष्णव अपनी मर्यादा से।" मित्र नारद एक महान वैष्णव थे। लेकिन जितने भी भैरव मैंने निकट से देखे, उनमें सबसे अधिक आश्चर्यजनक पुरवा बाबा थे। वे केवल भैरव ही नहीं, बल्कि पिशाच सिद्ध भी थे।

पिशाच सिद्ध का अर्थ होता है कि उनका मृत आत्माओं से सीधा संपर्क था। मान्यता है कि आत्माएँ हमारे चारों ओर घूमती रहती हैं, हमारी रक्षा करती हैं, परंतु यदि उन्हें स्वार्थी उद्देश्यों के लिए छेड़ा जाए, तो वे भय, हानि और यहाँ तक कि मृत्यु भी ला सकती हैं। पिशाच वे असार आत्माएँ होती हैं, जो मृत शरीरों पर जीवित रहती हैं। यह एक सामान्य धारणा है, लेकिन इसके पीछे और भी गूढ़ रहस्य हैं। क्या आपको याद है मणिकर्णिका घाट के वे सिद्ध, जो मेरी बहन के दाह संस्कार के समय मिले थे? कितना भयानक दृश्य था!

यदि हम पुरवा बाबा को समझ लें, तो संत जितेंद्र और उनकी स्थिति को भी अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। मैं केवल एक घटना का वर्णन करूँगा।

यह वैशाख मास (मई-जून) की बात है। मैं अपने चार मित्रों के साथ एक परिचित गली से गुजर रहा था, जब मुझे ताज़े चमेली के फूलों की मोहक सुगंध का अनुभव हुआ। मैंने पीछे मुड़कर देखा। कुछ दूरी पर तेज़ रोशनी और एक असामान्य भीड़ थी। मेरे मित्र मेरी रुचि पर हँसने लगे और मेरी 'संत खोज' की प्रवृत्ति का मज़ाक उड़ाया। लेकिन मैं वहाँ जाने से स्वयं को रोक नहीं सका।

मैं उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ वृद्ध संत कमलासन में बैठे थे और निर्जीव प्रतीत हो रहे थे। कोई निश्चित रूप से कह नहीं सकता था कि वे वास्तव में दिवंगत हो चुके थे या नहीं। पहले भी ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं, जब कोई साधक गहन समाधि की अवस्था में हृदय गति को पूरी तरह रोक लेता है। इसे कुम्भक के माध्यम से उत्पन्न किया जाता है।

(संयोगवश, यही एक कारण है कि अधिकांश हिंदू ईसा मसीह की क्रूस पर मृत्यु को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। वे मानते हैं कि संभवतः यीशु उस समय जीवित थे, जब उन्हें क्रूस से उतारकर किसी गुप्त स्थान पर ले जाया गया था। एक हिंदू के लिए यह अविश्वास कोई पूर्वाग्रह नहीं, बल्कि उनके आध्यात्मिक अनुभवों का प्रतिफल है।)

बाबा के पार्थिव शरीर को लेकर विशेषज्ञों की प्रतीक्षा की जा रही थी। दो दिनों तक उनका शरीर उसी मुद्रा में बना रहा, बिना किसी परिवर्तन के। इसके पश्चात, जब उनकी मृत्यु की पुष्टि की गई, तो उनके शरीर को एक पत्थर के बक्से में रखकर गंगा में प्रवाहित कर दिया गया।

संत जितेंद्र भी उन संतों में से एक थे, जिन्हें बाबा के निधन की पुष्टि के लिए बुलाया गया था। वे उस पिशाच सिद्ध अघोरी योगी के अनुयायी थे। एक अन्य व्यक्ति, जिन्होंने मृत्यु की घोषणा की, वे मेरे प्रिय गोपी दादा थे।

संत जितेंद्र की महानता को सिद्ध करने के लिए और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं। लेकिन यह हमारे कथानक के लिए आवश्यक नहीं। हमने उन्हें योगेश्वरी कुटीर में देखा है, हमने उन्हें कामाख्या मठ में देखा है। और अब हम उन्हें उस दिव्य कन्या के प्रतिरूप के रूप में देखेंगे, जिनसे मेरी भेंट पातालेश्वर में हुई थी। लेकिन यह कथा अगले अध्याय में।

# 12.तारे के लिए पतंगा (Moth for the Star)

## संत का साथी

बचपन से ही मैं संत जितेंद्र के करीब था। लेकिन समय के साथ-साथ और अचानक संत के वाराणसी से लुप्त हो जाने के कारण मेरा उनके साथ संपर्क टूट गया; और उसी के साथ वह गहरी कंपन भी चली गई, जो मुझमें उनके प्रति गहरे जुड़ाव का संकेत देती थी।
बाद के वर्षों में, संत के इर्द-गिर्द चुनिंदा लोगों का एक छोटा भाईचारा समूह विकसित हुआ; और इसके अधिकांश सदस्य मेरे परिचित थे, हालाँकि उन्हें मेरे और संत के बीच के विशेष और अंतरंग संबंधों का पता नहीं था।
भूतकाल को साबित करना अहंकार का व्यर्थ प्रदर्शन है; एक मेहनती व्यक्ति को भविष्य को साबित करने की इच्छा होती है।
इस भाईचारे के साथ जुड़ने पर, मुझे संत के जीवन में हुई कुछ घटनाओं के बारे में पता चला। उनमें से एक की बातचीत के दौरान संत की नवीनतम प्रवृत्तियों का उल्लेख आया, जिसने मुझे उस गुप्त स्थान पर और गहराई से जाने के लिए प्रेरित किया, जहाँ उन्होंने अपना आश्रम बनाया था। वहाँ कुछ ही अनुयायी इकट्ठा होते थे।
पहली ही शाम को, मैंने एक प्रसिद्ध गायक को दर्शकों को और संत को प्रसन्न करते हुए गाते पाया। संत फूलों की मालाओं से ढके हुए थे। वातावरण में धूप की मोहक सुगंध फैली हुई थी। मैं खुद को जितना हो सके अदृश्य बनाए रखना चाहता था, और कोने में दुबक गया, जो उस स्थान के विपरीत था जहाँ संत अपने निकटतम अनुयायियों से घिरे बैठे थे।
भक्ति और सेवा, अंतरंग मित्रता के एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सेवा, भक्ति के कोमल स्पर्श के बिना, नीरस दिनचर्या बन जाती है। और बिना सेवा के, भक्ति मात्र लाड़-प्यार और भावुकता बनकर रह जाती है।
किसी भी संत की शारीरिक देखभाल आवश्यक होती है, क्योंकि वे अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के प्रति बेपरवाह होते हैं। भले ही उनके लिए कष्टों का कोई महत्व न हो, लेकिन शरीर की निरंतर उपेक्षा उनके भौतिक अस्तित्व को कमजोर कर सकती है।

इन दो सेवकों के अलावा, मैंने लगभग 14 वर्ष की एक युवती को भी देखा (हालाँकि उसकी उम्र का सही अंदाज़ा लगाना कठिन था। वह मजबूत कद-काठी की थी, लेकिन वह एक प्यारी गुड़िया जैसी लग रही थी); वह संत के इतना करीब बैठी थी कि वह उनके आसन को लगभग साझा कर रही थी।

## आसन

योगी के आसन को साझा करना बहुत विशेष अधिकार है। योगी का आसन एक पवित्र वस्तु है, और अधिकांश मामलों में, इसे गुरु द्वारा दीक्षा के समय पवित्र किया जाता है; और अक्सर यह गुरु से उत्तराधिकार में प्राप्त होता है।

गूढ़ साधना में, एक आसन, कमंडल (जिसे योगी हमेशा अपने साथ रखते हैं) और एक लकड़ी की छड़ी योगी के सबसे करीबी साथी होते हैं।

संत जितेंद्र एक अवधूत थे, और अवधूत के रूप में उन्हें इन नियमों की बहुत परवाह नहीं थी। फिर भी, एक आसन, आसन ही होता है और इसे किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा स्पर्श नहीं किया जा सकता जो विधिपूर्वक दीक्षित न हो। यह इतना व्यक्तिगत वस्त्र है कि इसे किसी अन्य व्यक्ति के साथ साझा नहीं किया जा सकता।

मुझे एक घटना याद है।

## वाराणसी के दंडी स्वामी

यह घटना तब की है जब मैं बालक था। यह वाराणसी के एक शंकराचार्य मठ में हुई थी। यह मठ आज भी वहीं स्थित है, दशाश्वमेध के काली मंदिर के पास। इस मठ में दंडी स्वामी रहते थे, जो अपने हाथ में दंड (एक झंडे वाला लकड़ी का डंडा) रखते थे। वे मुख्यतः व्यक्तिगत तपस्या, वेदांत शिक्षा के प्रचार, और शंकराचार्य द्वारा निर्दिष्ट योग साधना में संलग्न रहते थे।

दंडी स्वामी जब संन्यास की दीक्षा लेते हैं, तो अपना नाम बदल लेते हैं; अपने अतीत, जाति, और पारिवारिक संबंधों का कभी उल्लेख नहीं करते; और जीवन के अंत तक अपनी साधना में संलग्न रहते हैं। वे जब भी एक-दूसरे को बुलाते हैं, तो केवल "नारायण" कहकर संबोधित करते हैं, और उत्तर में भी "नारायण" ही कहते हैं।

उनका जीवन संयोग से मिले भोजन पर निर्भर रहता है। वे भिक्षा माँगने नहीं जाते, बल्कि दोपहर के समय केवल तीन घरों के द्वार पर जाकर तीन बार "नारायण, नारायण, नारायण" पुकारते हैं। यदि नौ पुकारों के बाद भी उन्हें कुछ नहीं मिलता, तो उन्हें उस दिन का एकमात्र भोजन छोड़कर उपवास करना पड़ता है। वे किसी भी स्थान पर बार-बार भिक्षा के लिए नहीं जाते।

वे केवल तत्काल भोजन के लिए पका हुआ अन्न स्वीकार करते हैं। जो कुछ भी उन्हें प्राप्त होता है—नमकीन, कड़वा, तीखा, खट्टा या मीठा—वे उसे एक साथ मिलाकर ग्रहण करते हैं, मानो वह हवन के लिए समर्पित आहुति हो। वे भोजन ग्रहण करते समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हैं, जिसे मैं स्वयं आज भी हर भोजन के समय दोहराता हूँ:

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः
ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं
ब्रह्म कर्म समाधिना॥

(जो अर्पित किया जाता है वह ब्रह्म है; जो समर्पित किया जाता है वह ब्रह्म है; जिस अग्नि में अर्पण किया जाता है वह ब्रह्म है; अर्पण करने वाला भी ब्रह्म है; यह समर्पण ब्रह्म की शांति के लिए होता है।)

दंडी स्वामी अपने भोजन पर कोई टिप्पणी नहीं करते, किसी सामाजिक औपचारिकता में भाग नहीं लेते, न ही किसी प्रकार की कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। वे केवल उस घर को आशीर्वाद देकर विदा होते हैं, भले ही उन्हें कुछ न मिला हो। वे धन स्वीकार नहीं करते।

जब से मैंने स्वयं को जाना है, मैं इन दंडी स्वामियों को देखता और उनका स्वागत करता आया हूँ। एक बार मेरी माता को विशेष रूप से एक वृद्ध स्वामी को भोजन कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमारे घर से मठ में पहले ही सूचना भेज दी जाती थी कि कितने संन्यासियों को आमंत्रित किया गया है। उसी के अनुसार वे निश्चित समय पर आते थे।

उस दिन विशेष रूप से एक वृद्ध दंडी स्वामी आए। मेरी माता ने उनके चरण धोए और एक नए भगवा रंग के सूती तौलिए से उन्हें पोंछा। इसके साथ ही उन्हें एक नवीन लंगोट, एक नया आसन, और एक नवीन मिट्टी का जलपात्र प्रदान किया गया। तभी वे भोजन ग्रहण करने के लिए बैठे।

स्वामी के जाने के बाद जब हमने भोजन किया, तो पाया कि सारा भोजन अत्यधिक कड़वा था। यह गलती इसलिए हुई क्योंकि हमारे सेवक ने जिस पत्थर पर नमक पीसा था, उसी पर उससे पहले किसी ने नीम की पत्तियाँ पीसकर औषधि तैयार की थी।

परंतु स्वामी ने एक बार भी कोई शिकन नहीं दिखाई। उन्होंने पूरे भोजन के दौरान, और उसके बाद भी, अपने चेहरे पर वही शांत मुस्कान बनाए रखी।

यही थे दंडी स्वामी। मैं उनके मठ से और उनके जीवन से अत्यंत निकटता से जुड़ा रहा।

## बाघ से लड़ाई

एक दोपहर जब मेरे पास करने को कुछ नहीं था, मैंने मठ की यात्रा करने का निश्चय किया। वहाँ जाने का मुख्य उद्देश्य संस्कृत में होने वाले प्रवचनों को सुनना था, जिन्हें मठ के वृद्ध प्रमुख संन्यासियों को पढ़ाते थे।

उस दिन मठ में अजीब-सी शांति थी। कोई भी दिखाई नहीं दिया। मुझे यह नहीं पता था कि यह अमावस्या का दिन था और साथ ही सोमवार भी, जब संन्यासी दिनभर विशेष तपस्या में लीन रहते थे।

मैंने देखा कि दक्षिण-पूर्वी कोने में एक विस्तृत आसन बड़ी साज-सज्जा के साथ बिछा हुआ था। यह एक नीची लकड़ी की चौकी थी, जिस पर कालीन बिछे थे। इस पवित्र आसन की सबसे दिलचस्प विशेषता थी एक बड़ी बाघ की खाल, जिसकी दो काँच की आँखें बड़े सिर से बाहर झाँक रही थीं। यह सिर स्वागत मुस्कान तो नहीं दे रहा था, बल्कि भय उत्पन्न कर रहा था।

तब मेरी उम्र मात्र आठ वर्ष थी और मैं हमेशा इस बाघ के सिर को एक सुरक्षित दूरी से ही देखा करता था। लेकिन इस दिन मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा और जल्द ही उस सिर को अपनी बगल में दबा लिया। मैंने पूरे बल से उसे जकड़ लिया, जैसे मैं सचमुच बाघ से लड़ रहा हूँ। यह संघर्ष चलता रहा, और मैं इस पवित्र आसन पर ही खेलता रहा। कब तक यह चला, मुझे याद नहीं, क्योंकि अचानक किसी शोर ने मुझे जगा दिया।

पूरा मठ मेरे चारों ओर इकट्ठा था। संन्यासी आश्चर्य और भय से मेरी ओर देख रहे थे। एक आठ साल के बालक ने इस पवित्र आसन पर चढ़ने और वहाँ सो जाने का दुस्साहस कर लिया था! यह वही आसन था, जिस पर वर्षों से पूजा होती आ रही थी और कहा जाता था कि स्वयं आदि शंकराचार्य ने इसका उपयोग किया था।

उपस्थित लोग सोच रहे थे कि मुझे कोई भयंकर बीमारी, लकवा या पागलपन का दौरा पड़ जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सभी आश्चर्यचकित थे।

तभी वृद्ध स्वामी ने मुझे अपनी गोद में उठा लिया और मैंने थोड़ी उलझन महसूस की, परंतु इतना नहीं कि मैं आवश्यक मंत्र "नारायण, नारायण" बोल न सकूँ। यह सुनकर वहाँ उपस्थित सभी को भी "नारायण, नारायण" कहना पड़ा, और इस प्रकार वातावरण का तनाव समाप्त हुआ।

मैं वास्तव में लंबे समय तक सोया था। जब जागा तो शाम होने को थी। गंगा में स्नान और संध्या आरती का समय हो गया था। वृद्ध स्वामी ने बस इतना पूछा, "बाघ से लड़ाई का आनंद आया?"

मठ के अन्य संन्यासी इस वृद्ध संन्यासी की सहजता को देखकर स्तब्ध थे, परंतु मैंने बस मुस्कराकर कहा, "हाँ, बहुत बड़ी लड़ाई थी।"

उन्होंने भी मुस्कुराते हुए कहा, "तो तुम्हें थकान महसूस हो रही होगी। तुम देर तक सोए रहे। यह आसन सबको शांति देता है। अब जाओ, गंगा तट पर जाओ। संध्या आरती का समय हो गया है।"

आज भी मुझे मठ के संन्यासियों की अविश्वास और भय से भरी दृष्टियाँ याद हैं। जब भी मैं वहाँ जाता, वे हमेशा पूछते, "क्या तुमने आसन पर कुछ विशेष अनुभव किया?"

मैं हमेशा उत्तर देता, "मुझे कुछ नहीं पता। मैं तो बस सो गया था।"

## स्त्री का संबंध

तो जैसा कि मैं कह रहा था, एक योगी के आसन को साझा करना बहुत गंभीर बात है। और इसे कोई भी साझा नहीं कर सकता बिना उस आसन की आभा को क्षति पहुँचाए। इस मामले में, उस आसन को एक लड़की ने साझा किया था। मैं जानता हूँ कि एक अहंकारी प्रतिरूप (Alter Ego) में उतनी ही शक्ति होती है जितनी स्वयं अहंकार में होती है। नाथों, बाउलों, भैरवों, बैरागियों और तांत्रिकों के मामलों में, हमेशा एक अहंकारी प्रतिरूप के रूप में एक स्त्री की निकट उपस्थिति उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी आसन, कमंडलु और माला की उपस्थिति।
लेकिन एक लड़की को पास रखना उतना ही महत्वपूर्ण और खतरनाक है, जितना जलती हुई अग्नि या गले में लिपटे जीवित नागों को पास रखना।
हम आम लोग, अक्सर अपने अहंकार के प्रभाव में, इन योगियों पर निर्णय पारित कर देते हैं जो महिलाओं के साथ निकटता बनाए रखते हैं। हम भूल जाते हैं कि वे जीवित नागों के भी निकट रहते हैं; यह भी कि बाघ, तेंदुए और अन्य हिंसक जानवरों के खतरनाक इलाकों में रहने के बावजूद वे शायद ही कभी उन पर हमला करते हैं।
हम यह भी भूल जाते हैं कि वे भारत के उपेक्षित गाँवों में जाते हैं और वहाँ के लोगों को विभिन्न चिकित्सा सहायता प्रदान करते हैं। मुझे लगता है कि हमें, साधारण लोगों को, उन लोगों पर अपनी नैतिकता और व्यवहार के मापदंड लागू नहीं करने चाहिए जो हमसे अलग रहते हैं, अपने अलग संसार में। हमारे मानदंड और उनके मानदंड अलग हैं।
हो सकता है हम उन्हें उचित सम्मान न दें; लेकिन लोकतंत्र की माँग है कि जब तक वे दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते, तब तक उन्हें अपने तरीके से जीवन जीने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए।

ये योगी अपनी विशिष्ट जीवन-शैली के साथ आमतौर पर उन सभी तथाकथित 'प्रतिबंधों' के साथ काम करते हैं जिन्हें आमतौर पर आध्यात्मिक प्रगति के लिए वर्जित माना जाता है।
ये वे "रिपु" (दुश्मन या प्रलोभन) हैं; उदाहरण प्रस्तुत करके ये दिखाते हैं कि ये तथाकथित प्रलोभन आध्यात्मिक विकास के

निकटतम मित्र हो सकते हैं, यदि इन्हें सहजता और पूरी मित्रता के साथ संभाला जाए।
किसी भी चीज़ पर तुरंत प्रतिक्रिया देना आत्मिक शक्ति को झटका देता है।
मूल रहस्य यह है कि प्रतिक्रिया के क्षेत्र से ऊपर उठ जाओ। जब कोई बाहरी प्रलोभन मन की शांति को प्रभावित नहीं करता, तभी एक योगी को परमहंस (आदर्श व्यक्ति) कहा जा सकता है।

## जीवित और मृत

मैं निज़ामुद्दीन दरगाह का नियमित आगंतुक रहा हूँ। इस दरगाह में मुझे कई रहस्यमयी अनुभव हुए हैं, और यह स्थान आज भी मेरी अशांत आत्मा के लिए एक शांति का स्रोत बना हुआ है।

एक शाम मैं वहाँ अकेले प्रार्थना करने गया। वास्तव में, मेरा उद्देश्य आसपास स्थित मकबरों का अध्ययन करना था, जहाँ उर्दू, फ़ारसी और नवोदित हिंदी भाषा के कुछ महान साहित्यकारों के अवशेष दफ़न थे। उन प्राचीन खंडहरों में शोध करते हुए मैंने दरगाह जाने का विचार किया।

जब मैं दरगाह पहुँचा, तो उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की अचानक छा जाने वाली अंधकारमयी रात ने दरगाह की गलियारों की मेहराबों को अपने आगोश में ले लिया था। प्राचीन पत्थर की सीढ़ियाँ गलियारों के किनारे उतरती हुई एक जलकुंड तक जाती थीं, जहाँ भक्तजन मुख्य आंगन में प्रवेश करने से पहले स्नान करते थे। मैंने भी मौन में अपने शुद्धिकरण की प्रक्रिया पूरी की। ऊँची दीवारों के भीतर कोई भी आवाज़ प्रवेश नहीं कर रही थी, और जलकुंड के दूसरी ओर खड़े नीम के वृक्षों की लटकती शाखाओं से पड़ती परछाइयाँ उस रहस्यमयी वातावरण को और भी गहन बना रही थीं।

मैं गलियारे से होकर गुजर रहा था और मेरी नज़र दूर उस क्षीण प्रकाश की ओर थी, जो आंगन की ओर खुलने वाले मार्ग को रोशन कर रहा था। तभी मैंने किसी के साँस लेने की आवाज़ सुनी। अंधकार में छिपे किसी जीवित प्राणी की उपस्थिति स्पष्ट थी। वह कंपन, वह अदृश्य आकर्षण मुझे अपनी ओर खींच रहा था। मैं ठहर गया, परंतु पीछे मुड़कर नहीं देखा।

"अपनी हथेलियाँ फैलाओ," एक भारी, फुसफुसाती उर्दू आवाज़ गूँजी।

मैंने अनायास ही अपनी हथेलियाँ फैला दीं, लेकिन उस आवाज़ का स्रोत कहाँ था? मेरे हाथों ने केवल अंधकार को छुआ। अचानक मुझे एक स्पर्श का आभास हुआ—ठंडा, झुर्रियों से भरा, वृद्ध, लेकिन फिर भी उसमें एक स्त्री के हृदय की कोमलता थी। मैंने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन केवल दो जलती हुई आँखें मुझे घूर रही थीं। फिर एक बिना दाँतों वाली आवाज़ फुसफुसाई, "इसे पकड़ो, मैं प्रतीक्षा कर रही थी। दरगाह के पीछे जाओ, सीढ़ियाँ चढ़ो और बाग़ में कवि के मकबरे के पास मेंहदी की झाड़ियों के समीप बैठो। मेरा इंतज़ार करो। डगमगाओ मत, रुको मत। दौड़ो, दौड़ो, समय ठहरता नहीं।"

मैं कुछ सोच पाता, इससे पहले ही वह आवाज़ गहरी निस्तब्धता में विलीन हो गई। आँखों की वह चमक मंद पड़ गई, और एक गहरा, रहस्यमयी अंधकार छा गया।

मुझे वहाँ रुकने और यह जानने की हिम्मत नहीं हुई कि क्या वास्तव में कोई भौतिक रूप मेरे सामने था। लेकिन यदि मेरे हाथ में कोई वस्तु थी, तो इसका अर्थ था कि वह देने वाला भी सजीव था।

अपरिचित का भय! यह केवल किसी ज्ञात तत्व के साथ संपर्क टूटने पर ही नहीं होता, बल्कि जब अज्ञात हमारे समक्ष अचानक प्रकट होता है, तब भी होता है। हम इसकी खोज तो करते हैं—संगीत, कला, प्रेम और मानव संबंधों के माध्यम से। लेकिन जब यह अनायास ही हमारे सामने आ खड़ा होता है, तो हमें आघात पहुँचता है। विशेष रूप से तब, जब हम इसे किसी ज्ञात कारण से जोड़ नहीं पाते। यही अज्ञात का भय है।

मेरे लिए कोई आध्यात्मिक आशीर्वाद या किसी आत्मा की उपस्थिति कोई असामान्य बात नहीं थी। मैंने अपनी जिज्ञासा को शांत किया और जैसा कहा गया था, वैसा किया। मैं सीधे मेंहदी की झाड़ियों के पास पहुँचा, बिना दरगाह में अपनी सामान्य प्रार्थना किए।

वहाँ एक वृद्ध फ़क़ीर अपने मनकों की माला फेर रहा था। मुझे देखते ही उसने थोड़ा खिसककर मेरे बैठने की जगह बनाई। तभी मेरी नज़र पड़ी—संगमरमर के फर्श पर एक सफेद चादर में लिपटा हुआ एक शव पड़ा था। मैं इस दरगाह को बहुत अच्छे से जानता था, और मुझे यह मालूम था कि इस स्थान पर शव नहीं लाए जाते।

धीरे-धीरे, मैंने किसी के करुण क्रंदन की ध्वनि सुनी। यह किसी असहाय आत्मा की दबी हुई सिसकियाँ थीं। आधे अंधकारमय और सुगंधित बाग़ में, जलते हुए लोबान की महक और हल्की रोशनी में पूरा दृश्य किसी अलिफ़ लैला की कथा-सा प्रतीत हो रहा था। पहली बार मैंने इस रहस्य को समझने की इच्छा की।

फ़क़ीर ने सिसकती हुई महिला को सांत्वना दी, "चिंता मत करो। देखो, वह व्यक्ति आ गया है जो हमारी सहायता कर सकता है। अल्लाह का शुक्र है। हिम्मत रखो। यह वही व्यक्ति है जिसे तुमने अपने स्वप्न में देखा था।"

उस वृद्ध महिला ने मेरी ओर देखा और बोली, "अब जाओ। तुम्हारा कार्य पूरा हुआ। यदि फिर कभी आओ, तो स्वागत रहेगा। लेकिन अब जाओ।"

धमकी हो या नहीं, मेरी निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह की यात्राएँ जारी रहीं। लेकिन वह वृद्ध स्त्री फिर कभी दिखाई नहीं दी।

## प्रभावशाली इस्लामिक दरगाहें

क्या आपको अजमेर शरीफ दरगाह याद है, जो इस्लामी दुनिया में मक्का और मदीना के बाद सबसे अधिक पूजनीय मानी जाती है? यह सूफी संत मोइनुद्दीन चिश्ती की आध्यात्मिक महिमा से सुशोभित है। मैंने इस दरगाह का पहले भी उल्लेख किया है। मेरे साथ इस दरगाह में कई घटनाएँ घटी हैं, लेकिन वे इस संदर्भ में अप्रासंगिक होने के कारण, मैं यहाँ उनका वर्णन नहीं करूँगा। फिर भी, एक घटना उल्लेखनीय है।

मैं एक वृद्ध योगी को जानता था, जिसने आध्यात्मिक अनुभवों की खोज में भारत का कई बार भ्रमण किया था। मैंने उनसे पूछा कि भारत में उन्हें सबसे शक्तिशाली आध्यात्मिक स्थान कौन सा लगा?

वृद्ध योगी ने उत्तर दिया, "अजमेर शरीफ।"

मैं लल्ला दीद और नूरुद्दीन ऋषि की किंवदंतियों से परिचित था। इसलिए मैंने वृद्ध योगी से उनके अनुभव साझा करने का अनुरोध किया। किंतु उन किंवदंतियों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। नूरुद्दीन ने अपनी माता को यह चमत्कार

दिखाकर चकित कर दिया था कि एक पत्थर से दूध बह निकला। जब उनकी माता ने माँ के रूप में अपने अधिकार की माँग की और पूछा कि वन में जाने के बाद उनके भरण-पोषण की क्या व्यवस्था होगी, तो उन्होंने पत्थर को आदेश दिया कि वह उनकी माता को दूध प्रदान करे। और पत्थर से एक झरने के रूप में दूध बह निकला। इस चमत्कार को देखकर उनकी माता ने उन्हें अपने आध्यात्मिक मार्ग पर जाने की अनुमति दे दी।

लल्ला दीद की किंवदंतियाँ आज भी कश्मीरियों द्वारा गाई जाती हैं।

रहस्यमयी अनुभव

उस वृद्ध महिला ने मेरी ओर देखा और बोली, "अब जाओ। तुम्हारा कार्य पूरा हुआ। यदि फिर कभी आओ, तो स्वागत रहेगा। लेकिन अब जाओ।"

धमकी हो या नहीं, मेरी निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह की यात्राएँ जारी रहीं। लेकिन वह वृद्ध स्त्री फिर कभी दिखाई नहीं दी।

# अनसुनी पुकार

मैंने तुरंत ही उस वृद्ध व्यक्ति की बात से सहमति व्यक्त की। वास्तव में, अजमेर दरगाह उन लोगों के लिए शक्तिशाली तरंगें उत्पन्न करती है, जो इसे ग्रहण करने के लिए तैयार होते हैं। एक अवसर पर, जब मैं रात में संत के मकबरे के भीतर अकेले प्रार्थना कर रहा था, तब एक युवा व्यक्ति मेरे पास आया। उसने तब तक प्रतीक्षा की जब तक मेरी प्रार्थना समाप्त नहीं हुई।

जैसे ही मैंने प्रार्थना समाप्त की, उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं कोई अनुभव प्राप्त करना चाहता हूँ। इस पर मैंने मुस्कराकर कहा, "उन अनुभवों का मैं क्या करूँ, जो गर्मी के बादलों की तरह आते और चले जाते हैं? मैं तो कुछ अधिक ठोस, अधिक स्थायी, और अधिक व्यक्तिगत खोज रहा हूँ।"

इसके बाद, वह मुझे दरगाह के एक अंधेरे कोने में ले गया, जहाँ सीढ़ियाँ नीचे जाती थीं। वह प्रवेश मार्ग सामान्यतः कांटेदार तारों से बंद रहता था और वर्ष में केवल एक बार खोला जाता था। वहाँ किसी महान आध्यात्मिक आत्मा का आसन था, जिनमें विलक्षण शक्ति थी—हवा में उठने की दुर्लभ क्षमता। कहा जाता था कि वह दो स्थानों पर एक साथ उपस्थित हो सकते थे, जैसे कश्मीर के हमदानी और लल्ला दीद के बारे में किंवदंतियाँ प्रचलित थीं।

ऐसे असाधारण अनुभवों को केवल कल्पना कह देना उचित नहीं होगा। विज्ञान ने भी समय के साथ कई असंभव माने जाने वाले तथ्यों को सत्य सिद्ध किया है। हजारों वर्ष पहले जो सामान्य था, आज अविश्वसनीय प्रतीत होता है, और जो पहले असंभव माना जाता था, वह आज बच्चों के खिलौने जैसा आसान हो गया है।

जब मैंने पुनः उस युवक की ओर देखा, तो पाया कि मैं वहाँ अकेला था। चारों ओर केवल अंधकार और विशाल आंगन था। रात का एक बज चुका था। मकबरे के दूसरी ओर, ईरान और अफगानिस्तान से आए गायक महान सूफी संत मोइनुद्दीन चिश्ती के सम्मान में कव्वालियाँ गा रहे थे।

मैंने नीचे जाने वाले अंधेरे मार्ग की ओर देखा और पाया कि दरवाज़ा खुला था। मैं भीतर गया और प्राणायाम करने लगा। धीरे-धीरे, एक स्त्री स्वर मेरे द्वारा उच्चारित वैदिक मंत्रों को दोहराने लगा। मैं बार-बार देखता रहा, लेकिन घोर अंधकार के कारण कुछ भी स्पष्ट नहीं हो रहा था।

अचानक, सुबह की पहली अज़ान की आवाज़ सुनाई दी, और मैंने बाहर निकलने का निर्णय लिया। जैसे ही मैं सीढ़ियों तक पहुँचा, वहाँ एक महिला खड़ी थी, जो प्रतीक्षा कर रही थी। उसने कहा कि वह मुझे जानती है। हमने कुछ देर बात की, और मैंने पाया कि वह अपनी आध्यात्मिक खोज के लिए एक योग्य साथी की तलाश में थी।

मैं शर्मिंदा हूँ कि मैं उसकी आंतरिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहा। मैं अब वह कुशल साधक नहीं रह गया था, और उसके सौंदर्य व उपस्थिति ने मेरे मन में विचलन उत्पन्न कर दिया। उस समय, मैं अपने आसन के योग्य नहीं था।

यह विफलता दर्शाती है कि कैसे आंतरिक शत्रु (रिपु) व्यक्ति को सफलता के किनारे पर भी गिरा सकते हैं। जो लोग आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होते हैं, उन्हें हर प्रकार के विरोधाभासों के साथ जीना सीखना पड़ता है—चाहे वह विपरीत लिंग की निकटता हो, जहरीले सर्प हों, हिंसक पशु हों, भुखमरी हो, या अग्नि की कठिन परीक्षा।

## विपरीत का आकर्षण

बिना विरोधी तत्वों के कोई प्रज्वलन नहीं हो सकता; बिना प्रज्वलन के कोई संचरण नहीं; बिना संचरण के कोई संलयन संभव नहीं; और बिना संलयन के न तो ऊष्मा, न गति, न ही विकिरण की संभावना बनती है। यह सिद्धांत भौतिक तत्वों के साथ-साथ आध्यात्मिक तत्वों पर भी लागू होता है। हम सभी अपनी पूरकता की खोज करते हैं। जब तक हमारे पूरक हमारे साथ नहीं होते और हमारे साथ पूर्ण रूप से एकाकार नहीं हो जाते, तब तक संपूर्ण पारलौकिकता प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं होता। यह बाह्य भौतिक नाटक केवल आंतरिक नाटक का प्रतीक ही नहीं, बल्कि यह भौतिकता उस दिव्य अमृत को ग्रहण करने के लिए पात्र भी प्रदान करती है।

बार-बार, हमारे भीतर और बाहर की चुनौतियाँ इस संलयन को बाधित करती हैं। क्योंकि हम विभिन्न समस्याओं से घिरे होते हैं—अंदरूनी और बाहरी, व्यक्तिगत और सामाजिक, आध्यात्मिक और भौतिक, संवेदनशील और बौद्धिक, जैविक और अकार्बनिक—इसलिए योग का मार्ग बाधाओं से भरा होता है। लेकिन यदि इन बाधाओं को पार कर लिया जाए, तो यह सबसे प्रभावी सफलता भी प्रदान करता है। पूर्वाग्रह और भय हमें सर्प के कुंडलों की तरह जकड़ लेते हैं, हमें धीरे-धीरे अपनी चेतना और ऊर्जा से वंचित करते हुए जीवन और मृत्यु के संघर्ष में डाल देते हैं।

एकता स्थापित करने का प्रयास हमें विखंडन की ओर ले जा सकता है। संलयन की प्रक्रिया अराजकता उत्पन्न कर सकती है। दो को एक में बदलने का प्रयास कभी-कभी एक को दो में विभाजित कर सकता है। यह एक अत्यंत जोखिम भरा कार्य है। हमें लंबे समय तक धैर्यपूर्वक तैयारी करनी होगी, ताकि इस संघर्ष में विजय प्राप्त कर सकें। यह जीवन पर मृत्यु की, प्रकाश पर अंधकार की, और सत्य पर असत्य की विजय है।

हर विचार की अंतिम सीमा में शून्य है, और यही शून्य ऊर्जा का स्रोत है। यह ऊर्जा युक्त शून्य, या शून्य से भरी ऊर्जा, क्रमशः द्वैत में परिवर्तित होती है—विपरीत तत्वों के मौलिक सिद्धांतों में। ये दो तत्व टकराव में नहीं होते, जैसा कि भौतिक जगत में होता है। यह एक विकासशील अवस्था होती है। विकसित रूपों के प्रकट होने से पहले, यह मौलिक द्वैत

ऊर्जा से भरे शून्य का एकल रूप होता है। यही वह स्थिति है जिसमें शिव और शक्ति का संकल्प निहित है। यही तंत्र का क्षेत्र है।

यही कारण है कि "मैं" "तुम्हारी" तलाश करता हूँ, "तुम" "मेरी"। अपूर्णता अपने पूरक की खोज करती है। इसमें स्त्री या पुरुष का कोई बंधन नहीं होता। इसमें कोई वासना नहीं, केवल सिद्धांत होता है।

## अनुग्रह और रहस्यवादी

यह सत्य केवल अभ्यास से प्राप्त नहीं किया जा सकता। अभ्यास अनुभव की ओर ले जाता है; और अनुभव से व्यक्ति पूर्णता की प्राप्ति की ओर बढ़ता है। लेकिन यह भी मात्र एक अनुभव ही है—एक संपूर्ण, संवेदी अनुभव। किंतु अनुभव स्वयं केवल अनुग्रह द्वारा सुनिश्चित होता है। अनुग्रह के आशीर्वाद और हस्तक्षेप के बिना, अभ्यास मात्र एक निश्चित स्तर तक ही ले जा सकता है।

शारीरिक रूप से सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी लॉरेंस ऑफ अरेबिया या जनरल रोमेल जैसा साहस नहीं रख सकता। साधारण दिखने वाले गांधी असीम शक्ति के प्रतीक बन गए। शरीर को अनुशासन और अभ्यास से सुगठित किया जा सकता है; लेकिन साहस 'अनुग्रह' से उत्पन्न होता है—जिसे हम आंतरिक संरचना, चरित्र या गुण कहते हैं। फल एक तथ्य है, लेकिन उसके स्वाद का अनुभव और उसका आनंद लेना अनुग्रह पर निर्भर करता है। तकनीकों से अंतिम शांति की गारंटी नहीं दी जा सकती। अनुभव की दुनिया, ठीक उसी तरह जैसे मतों की दुनिया, पूरी तरह से व्यक्तिगत होती है।

यह अनुभव संप्रेषित या व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। रहस्यवादी इसकी चर्चा करते हैं, लेकिन इसे तर्कसंगत या न्यायसंगत ठहराने का प्रयास नहीं करते। वे विचित्र प्रतीत होते हैं, क्योंकि वे हमारी सांसारिक आकांक्षाओं और व्यवहारिकता से परे होते हैं।

जब हम रहस्यवादियों को अपनी भौतिक आवश्यकताओं की कसौटी पर समझने की कोशिश करते हैं, तो हम स्वयं को भ्रमित करते हैं और अपने आस-पास के लोगों को भी। हमें अपनी सोच के दृष्टिकोण, आयाम और आकांक्षाओं को बदलना होगा। हमें चीजों को वैसे देखने की आदत डालनी होगी, जैसे वे वास्तव में हैं, न कि केवल जैसी वे प्रतीत होती हैं।

यह लंबा समय ले सकता है। चीजों को उनकी वास्तविकता में देखना मानसिक अनुशासन पर निर्भर करता है। यही अनुशासन योग है। लेकिन जब एक व्यक्ति चीजों को उनकी वास्तविकता में देख लेता है, तब अगला चरण प्रारंभ होता है। चीजों को उनकी वास्तविकता में देखने के बाद, उन्हें उनके पूर्णतम स्वरूप में देखना आवश्यक होता है। पहले स्तर के ज्ञानी योगी होते हैं; लेकिन दूसरे स्तर के ज्ञानी रहस्यवादी होते हैं।

रहस्यवादियों से कोई चमत्कारों की अपेक्षा नहीं करता; न ही उनसे भविष्यवाणी की आशा की जानी चाहिए। एक रहस्यवादी तब तक रहस्यवादी नहीं बनता, जब तक वह इस संसार और इसकी वास्तविकताओं से परे न चला जाए। वह जानता है कि अंतरिक्ष केवल एक भ्रूण है, जिसमें संसार उसी प्रकार स्थित है जैसे मानव शरीर में एक अमीबा, या सम्पूर्ण महासागर में एक परमाणु।

तंत्र का अभ्यास मानव ऊर्जा को शरीर स्तर से विश्व स्तर तक, विश्व स्तर से पदार्थ स्तर तक, पदार्थ स्तर से ऊर्जा स्तर तक और अंततः ऊर्जा से अंतरिक्ष स्तर तक ले जाने के लिए किया जाता है। इस पवित्र साधना में वासना को जोड़ना न केवल अप्रासंगिक है, बल्कि उसका अपमान भी है।

## संत जितेंद्र के पास वापस

यही कारण था कि संत जितेंद्र के आसपास मौजूद उन वृद्ध महिलाओं की उपस्थिति से मैं बिल्कुल भी विचलित नहीं था, और न ही वहाँ उस युवा लड़की को देखकर मुझे कोई असामान्यता महसूस हुई। उन दिनों पूरे वाराणसी शहर में इस विशेष संत के पतन की अफवाहें फैली हुई थीं, साथ ही मेरे गोपी दादा के पतन की भी चर्चाएँ थीं। दोनों ही योगियों के निकट युवा और सुंदर महिलाओं की उपस्थिति को लेकर तमाम तरह की बातें बनाई जा रही थीं!

जो लोग ये अफवाहें फैला रहे थे, उनका इन योगियों के वास्तविक जीवन और क्रियाकलापों से कोई लेना-देना नहीं था। हम जो उनके निकट रहते थे, हमने उनमें अटूट आत्मसंयम, पवित्रता और आंतरिक साधना की शक्ति देखी थी।

एक 'अल्टर ईगो' (आध्यात्मिक सहचर) का चयन करना उतना ही जटिल होता है, जितना तिब्बत में एक दलाई लामा का चयन करना। यह केवल बाहरी परिस्थितियों से निर्धारित नहीं होता, बल्कि इसमें गूढ़ संकेतों और पूर्वाभासों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मैंने स्वयं ऐसे चयनित 'अल्टर ईगो' देखे हैं और वर्षों तक उनके निकट रहने का अवसर पाया है। मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि मेरे अनुभव में जितने भी अल्टर ईगो चुने गए, वे पूरी तरह प्रशिक्षित होने के बाद उत्कृष्ट भैरवी बन गए, और वह ऊर्जा का ऐसा स्रोत बन गए जिससे कई तांत्रिक प्रेरित होकर विश्व व्यवस्था के संचालन में प्रवृत्त होते हैं।

## युवा भैरवी

पातालेश्वर काली मंदिर में हुई साधना के बाद इस भैरवी के साथ मेरा जुड़ाव और गहरा होता चला गया। उस रहस्यमयी रात की स्थिति में मैं उसे पूरी तरह पहचान नहीं पाया था जब वह वेदी पर लेटी हुई थी। लेकिन बाद में मैं उसे पहचान सका।

न केवल मैंने उसे पहचाना, बल्कि मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि इस पूरे घटनाक्रम को स्नेही संत जितेंद्र ने पहले से ही योजना बद्ध रूप से आयोजित किया था। वे मेरे बचपन से ही मेरे प्रति विशेष रुचि रखते थे और मेरा मार्गदर्शन करते थे।

मैंने उससे कठोर तप, अनुशासन और वैराग्य का आत्म-नियंत्रण सीखा। जब बाहरी दृष्टि से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था कि मैं सांसारिक जीवन और इसकी आवश्यकताओं में संलग्न था, वास्तव में मैं भीतर से कठोर साधना कर रहा था। तांत्रिक और हठयोगी अक्सर साधारण सांसारिक जीवन जीते हुए दिखाई देते हैं। यह कोई असामान्य बात नहीं है कि उन्हें साधारण भौतिक जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति समझ लिया जाए। यह विरोधाभास जानबूझकर रखा गया एक आवरण है, जिसे उच्च कोटि के सिद्ध पुरुष धारण करते हैं ताकि अनावश्यक जिज्ञासाओं से बचा जा सके। उनका कहना है, "बिना बदनामी कमाए, नामरहित की प्राप्ति नहीं होती।"

उससे मैंने कठिन उपवास रखने की कला सीखी, लंबे समय तक एक स्थान पर स्थिर बैठने की शक्ति प्राप्त की, ध्यान को अत्यधिक विकर्षणों के बीच भी केंद्रित करने की क्षमता विकसित की, और जीवन के विभिन्न स्तरों पर एक साथ दृष्टि बनाए रखने की अद्‌भुत विधि को आत्मसात किया।

वह युवा और कोमल थी। मैं उससे बहुत कुछ सीख सकता था। यद्यपि वह मुझसे उम्र में छोटी थी, और पुस्तकीय ज्ञान में मुझसे कम परिचित थी, किंतु शक्ति के एक संभावित स्रोत के रूप में वह कई लोगों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी। वास्तव में,

यदि उसकी सहायता न होती, तो संत उस आध्यात्मिक ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाते, जहाँ वे पहुँचे थे। यह स्वयं संत जितेंद्र का कथन था।

उसके उपदेशों और शिक्षाओं ने मुझे कितना सहारा दिया होता, यह प्रश्न अनुत्तरित ही रह गया। उन दिनों भारत की परिस्थितियाँ अत्यंत उथल-पुथल से भरी हुई थीं, और मैं अनायास ही उन राजनीतिक उथल-पुथल की धारा में खिंचता चला गया। उस समय हम ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्षरत थे—यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक और सामरिक युद्ध था।

## युवा भैरवी

पातालेश्वर काली मंदिर में हुई साधना के बाद इस भैरवी के साथ मेरा जुड़ाव और गहरा होता चला गया। उस रहस्यमयी रात की स्थिति में मैं उसे पूरी तरह पहचान नहीं पाया था जब वह वेदी पर लेटी हुई थी। लेकिन बाद में मैं उसे पहचान सका।

न केवल मैंने उसे पहचाना, बल्कि मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि इस पूरे घटनाक्रम को स्नेही संत जितेंद्र ने पहले से ही योजना बद्ध रूप से आयोजित किया था। वे मेरे बचपन से ही मेरे प्रति विशेष रुचि रखते थे और मेरा मार्गदर्शन करते थे।

मैंने उससे कठोर तप, अनुशासन और वैराग्य का आत्म-नियंत्रण सीखा। जब बाहरी दृष्टि से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था कि मैं सांसारिक जीवन और इसकी आवश्यकताओं में संलग्न था, वास्तव में मैं भीतर से कठोर साधना कर रहा था। तांत्रिक और हठयोगी अक्सर साधारण सांसारिक जीवन जीते हुए दिखाई देते हैं। यह कोई असामान्य बात नहीं है कि उन्हें साधारण भौतिक जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति समझ लिया जाए। यह विरोधाभास जानबूझकर रखा गया एक आवरण है, जिसे उच्च कोटि के सिद्ध पुरुष धारण करते हैं ताकि अनावश्यक जिज्ञासाओं से बचा जा सके। उनका कहना है, "बिना बदनामी कमाए, नामरहित की प्राप्ति नहीं होती।"

उससे मैंने कठिन उपवास रखने की कला सीखी, लंबे समय तक एक स्थान पर स्थिर बैठने की शक्ति प्राप्त की, ध्यान को अत्यधिक विकर्षणों के बीच भी केंद्रित करने की क्षमता विकसित की, और जीवन के विभिन्न स्तरों पर एक साथ दृष्टि बनाए रखने की अद्‌भुत विधि को आत्मसात किया।

वह युवा और कोमल थी। मैं उससे बहुत कुछ सीख सकता था। यद्यपि वह मुझसे उम्र में छोटी थी, और पुस्तकीय ज्ञान में मुझसे कम परिचित थी, किंतु शक्ति के एक संभावित स्रोत के रूप में वह कई लोगों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी। वास्तव में, यदि उसकी सहायता न होती, तो संत उस आध्यात्मिक ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाते, जहाँ वे पहुँचे थे। यह स्वयं संत जितेंद्र का कथन था।

उसके उपदेशों और शिक्षाओं ने मुझे कितना सहारा दिया होता, यह प्रश्न अनुत्तरित ही रह गया। उन दिनों भारत की परिस्थितियाँ अत्यंत उथल-पुथल से भरी हुई थीं, और मैं अनायास ही उन राजनीतिक उथल-पुथल की धारा में खिंचता चला गया। उस समय हम ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्षरत थे—यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक और सामरिक युद्ध था।

## जो दो गिर पड़े

मैं वापस आ चुका था, लेकिन मैं छिपा हुआ था। विश्वविद्यालयी शिक्षा, राजनीतिक संलग्नता और साहित्यिक गतिविधियों के प्रति मेरे आकर्षण के कारण मैं आध्यात्मिक साधना में थोड़ी शिथिलता अनुभव करने लगा था, हालांकि मैंने इसे पूरी तरह छोड़ा नहीं था। इलाहाबाद में इस दौरान, मुझे तीन पुरुषों और दो महिलाओं से सहायता मिली, जो मेरे बहुत निकट थे।

अंतिम परीक्षा तब आई जब एक युवा महिला ने मुझे अपना प्रेम अर्पित किया; और मैंने भी उसे प्रेम से स्वीकार किया। लेकिन जिस तरह से मैंने उसे अपनाया, उससे वह पूरी तरह विचलित हो गई। जितना वह मेरे करीब आई, उतना ही उसे यह एहसास हुआ कि प्रेम का एक स्वरूप शरीर की सीमाओं से परे होता है, जो अधिक स्थायी और अत्यधिक फलदायी होता है।

लेकिन दुर्भाग्य ने उसे बहुत जल्दी घेर लिया। अपनी साधना के चरम तक शीघ्र पहुँचने के प्रयास में, उसने स्वयं को पोषण और विश्राम से वंचित कर दिया। शीघ्र ही वह तपेदिक से ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त हुई। यह पुनः सिद्ध करता है कि तंत्रमार्ग कठोर तप को स्वीकार करता है, लेकिन शरीर की सहनशक्ति पर कठोरता नहीं करता। शरीर चेतना का मंदिर है; यह स्वयं शक्ति, माँ का पावन स्थल है। इसे उसी प्रकार सशक्त बनाए रखना चाहिए, जिस प्रकार किसी मंदिर को संरक्षित रखा जाता है। भोजन, विश्राम, आदतें, और यहाँ तक कि वे वस्तुएँ भी, जिन्हें सामान्यतः विलासिता माना जाता है, तंत्र में निषिद्ध नहीं हैं, यदि वे साधना के प्रमुख उद्देश्य के लिए उपयोग की जाएँ। लेकिन भोग-विलास में लिप्त रहने वाले व्यक्तियों के लिए, तंत्र-साधना में कोई स्थान नहीं है। इंद्रियाँ अपनी तीव्रता को अनुभव करती हैं, लेकिन वे बाहरी वस्तुओं पर निर्भर नहीं होतीं।

दूसरी महिला बहुत लंबे समय तक इस पथ पर बनी रही, लेकिन फिर उसने तंत्रमार्ग से अधिक मुझे चाहा। अंततः, वह पागल हो गई और अपने जीवन के अंतिम दिन एक मानसिक चिकित्सालय में बिताए। उसके लिए वापस लौटने का मार्ग पूरी तरह घने जंगल की झाड़ियों से भर चुका था।

## माँ आनंदमयी

इसी दौरान मुझे दो महान महिलाओं के विषय में जानने का अवसर मिला। इनमें से एक ने संतत्व को प्राप्त कर लिया था और उन्हें व्यापक रूप से "माँ" या आनंदमयी माँ (परमानंदमयी) के रूप में जाना जाता था। मैंने उन्हें कई बार देखा, लेकिन मेरे युवा मन में संदेह था, जो कि तार्किक ज्ञान और पाश्चात्य विज्ञान की तिहरी आयामी परिधि में जकड़े हुए मन की सामान्य प्रवृत्ति थी।

पूर्व की मानसिकता ने सदैव तारों से भरे आकाश के नीचे, रेगिस्तानों के विस्तृत विस्तारों में (जिस प्रकार प्राचीन यहूदी प्रवासी मिस्र से आए थे), हिमालय की बर्फीली चोटियों पर, और लांग सी क्यांग तथा ह्वांग हो जैसी उग्र नदियों के किनारे अपना विस्तार पाया। जापान से लेकर जावा, श्रीलंका, चंपा, स्याम से लेकर जॉर्डन नदी और गलील सागर के तटों तक, मानवता के असंख्य प्रवाह ने सदियों से चेतना की गहराइयों का परीक्षण किया है। चाहे वह ऋग्वेद की मुक्त प्रार्थनाएँ रही हों, यजुर्वेद और अथर्ववेद के जटिल अनुष्ठान, ज़ेंड अवेस्ता के गूढ़ मंत्र, बुद्ध का शीतल और करुणामयी यथार्थवाद, तिब्बती लामाओं का रहस्यवाद, मृत सागर स्क्रॉल्स और एस्सीन संप्रदाय की प्राचीन भजन-संगीत परंपरा, या

इस्लाम में ईरानी सूफियों के गहन ध्यान—इन सभी ने एशियाई मन को आध्यात्मिक चिंतन में स्वतंत्रता का वरदान दिया।

इसके विपरीत, पश्चिमी जगत में भले ही तार्किक एवं भौतिक विज्ञान का विकास हुआ हो, लेकिन संगठित चर्चों ने धर्म को जकड़कर उसे शक्ति के माध्यम में बदल दिया, जिससे वहाँ की आध्यात्मिकता स्वतंत्र रूप से विकसित नहीं हो सकी। सत्तावादी धार्मिक संस्थाएँ अपने अनुयायियों को बाँध लेती हैं, जिससे स्वतंत्र चिंतन सीमित हो जाता है।

युवावस्था में हम बेंथम और मिल, स्पिनोज़ा और डेसकार्ट, वोल्टेयर और ह्यूम जैसे विचारकों से प्रभावित हुए। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद पश्चिम में जब आइंस्टीन, जंग, मार्क्स और एंगेल्स, एडिंगटन, डेवी, रसेल, रोलैंड, क्रोचे, बर्गसों, हेस्से और सांतायाना जैसे विचारकों ने नए आयाम खोले, तब एशियाई मानस को ग्रीक दर्शन, नव-प्लेटोनिज़्म, प्रारंभिक ईसाई धर्म और एकहार्ट, जुआन डी ब्रॉयक्स, आल्डस हक्सले तथा थेइलहार्ड डी चार्दिन जैसे संतों की धारा की पुनः याद आई।

गंगा तटों से दूर, राजनीति के चक्रव्यूह में फंसा मेरा मन और शरीर अंदर ही अंदर संघर्ष कर रहा था। ऐसे ही एक दिन मैं माँ आनंदमयी से मिलने गया। लेकिन एक संशयग्रस्त मन कभी भी आध्यात्मिकता के प्रति संपूर्ण रूप से ग्रहणशील नहीं हो सकता। मैंने देखा कि माँ के चारों ओर वही सामान्य जनसमूह एकत्रित था, जो केवल तात्कालिक आशीर्वाद, उपचार, समाधान या सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति की आशा में वहाँ आया था।

कुछ देर तक मैं इस भीड़ को देखता रहा और धीरे-धीरे इस निरर्थकता से झुंझलाने लगा। तभी मैंने महसूस किया कि कोई मुझे देख रहा है।

वह स्वयं माँ थीं। और वह दृष्टि... कोई भी उस दृष्टि को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी चमकती आँखों के कोनों से मुझे देखा और उनके चेहरे पर सूर्यास्त की लालिमा में स्नात एक दिव्य मातृत्व झलक रहा था। माँ अत्यंत सुंदर और मोहक थीं। उनकी आभा, उनका ओजस्वी तेज, उनकी उपस्थिति मेरे शरीर के रोम-रोम को स्पंदित कर रही थी। मैंने कभी भी इतनी दिव्य सुंदरता को इतने पवित्र रूप में नहीं देखा था।

मैं मंत्रमुग्ध होकर उन्हें देखता रहा। उन्होंने दूर से ही मुझसे संवाद किया और मेरे प्रश्नों का उत्तर मुझे कुछ कहने से पहले ही दे दिया।

अगले दिन मैं पुनः वहाँ गया। फिर अगले दिन, फिर अगले दिन। मैं नहीं जानता क्यों। लेकिन मैं खिंचता चला गया।

एक दिन, जब मैं विन्ध्यवासिनी पहाड़ियों में एक दिन के ठहराव के लिए भटक रहा था, वहाँ मैंने माँ को एक कुटिया के द्वार पर अकेले बैठे पाया। वह अर्ध-शिथिल मुद्रा में थीं। उनकी आँखों में ऐसी गहराई थी, जिससे स्पष्ट था कि वह इस संसार में नहीं थीं, वे परम ध्यान की अवस्था में थीं। माँ को अकेले देखना दुर्लभ था, क्योंकि आमतौर पर उनके चारों ओर भीड़ बनी रहती थी।

तभी एक वृद्ध महिला वहाँ आई और मुझसे माँ को नीचे ले जाने में सहायता करने के लिए कहा। उन्होंने समझाया, "उन्होंने नाश्ते में संतरे खाए ही थे कि अचानक ध्यान में चली गईं। अब यह परेशानी हो गई। मैं चाहती थी कि वे पूरा नाश्ता कर लें।"

उन्होंने माँ को कुछ खिलाने की कोशिश की, लेकिन माँ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

"क्या मैं कोशिश करूँ?" मैंने झिझकते हुए पूछा।

महिला ने मुझे ध्यान से देखा और बिना कुछ कहे कटोरी और चम्मच मुझे थमा दिए।

मैंने जैसे ही माँ के होंठों के पास चम्मच ले जाया, उन्होंने उन्हें धीरे से खोला और बड़ी कठिनाई से वह ग्रहण किया। चार बार ऐसा हुआ। फिर उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और अपनी विशेष मुस्कान से मेरी ओर देखा। केवल माँ ही इस तरह मुस्करा सकती थीं।

अब तक कुछ और लोग वहाँ आ चुके थे। माँ जाने से पहले मुझसे बोलीं, "नीचे जाकर एक घर ढूँढो।" और वह चली गईं।

रात के लिए मुझे एक शरणस्थल मिल गया। लेकिन उन्होंने कैसे जान लिया कि मैं किसी ठिकाने की तलाश में था? और मैंने केवल घर ही क्यों माँगा, जब वह मुझे बहुत अधिक दे सकती थीं? हम वास्तव में नहीं जानते कि हमें क्या चाहिए। जो हम चाहते हैं, वह अक्सर व्यर्थ सिद्ध होता है। सही इच्छा की पहचान ही पूर्णता की ओर पहला कदम है।

मुझे यकीन था कि हमारी फिर भेंट होगी।

हम मिले—एक बार, दो बार, तीन बार। लेकिन मैं उनके और करीब नहीं आ सका। वे हमेशा भीड़ से घिरी रहती थीं।

भारत लौटने के बाद मैं प्रयाग के कुंभ मेले में गया। वहाँ हजारों संतों के शिविर लगे थे। मैं अनायास ही एक शिविर में घुस गया और देखा कि वही माँ ध्यानस्थ अवस्था में बैठी थीं। चारों ओर भक्तगण भजन गा रहे थे, और हजारों लोग उन्हें दूर से निहार रहे थे।

मैं सोच रहा था कि जब मैं वेस्ट इंडीज़ से भारत लौटा, तो इस मेले में क्यों आया? और क्यों, हजारों शिविरों में से, मैं इसी शिविर में पहुँचा? क्यों मेरी आत्मा सदैव उन्हें खोज रही थी?

माँ आनंदमयी को संत जीतेंद्र और योगी गोपीनाथ भली-भाँति जानते थे। उन्हें आज भी भारत की उच्चतम आध्यात्मिक आत्माओं में से एक माना जाता है—एक महिला परमहंस।

## एकाकी पथ

फिर कुछ विचित्र घटित हुआ।

यह विंध्य पर्वत की घटना के बाद हुआ, और वेस्ट इंडीज से वापसी से बहुत पहले।

मैं संत जीतेंद्र को भूल चुका था। मेरे अवचेतन में केवल काली मंदिर की उस छोटी संत कन्या की स्मृति रह गई थी। बिना किसी विशेष उद्देश्य के, मैंने मंदिर की एक आकस्मिक यात्रा की। कुछ युवक तिब्बत यात्रा की तैयारियाँ कर रहे थे। उनकी विस्तृत तैयारियाँ यह दर्शा रही थीं कि वे एक-दो दिनों में प्रस्थान करने वाले थे। मुझे देखकर उन्होंने मुझे भी साथ चलने का आमंत्रण दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया। क्यों? यह मैं स्वयं भी नहीं जानता।

जब मैं मंदिर से बाहर निकला, जहाँ मैं उस कन्या के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने की आशा कर रहा था, तो एक व्यक्ति मेरे पास आया। उसने कहा, "तुम्हें संत जीतेंद्र के आश्रम में तुरंत उपस्थित होना चाहिए। एक संकट आ पड़ा है..."

जिस कन्या की मैं खोज कर रहा था...

वह समाधि में चली गई थी और वापस नहीं आई। पाँच दिनों और रातों तक की गई साधना के बाद, उसे मुक्त आत्मा घोषित कर दिया गया। केवल शरीर शेष था, जिसे अग्नि को समर्पित किया जाना था। इस पवित्र संस्कार की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी।

मैं जानता था कि संत जीतेंद्र काशी की गली-कूचों के भीतर गहराई में निवास करते थे। उनकी कुटिया कई तीर्थयात्रियों के लिए एक प्रमुख स्थल थी। लेकिन उस दिन उन्हें मेरी आवश्यकता थी। मैं असमंजस में था।

जब मैं पहुँचा, तो मुझे बताया गया कि संत मुझसे शहर से दूर, कामाख्या के जंगलों में प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्राचीन मंदिर के आँगन में प्रवेश करते ही मैं जानी-पहचानी ऊर्जाओं से अवगत हुआ। आगे कोई मार्गदर्शन आवश्यक नहीं था।

मंदिर के पीछे के आँगन में, बरामदे पर एक शरीर सफेद चादर से ढका हुआ पड़ा था। चादर फूलों और मालाओं से लदी थी। सैकड़ों अगरबत्तियों से उठती धूम्र रेखाएँ शरीर के चारों ओर घूम रही थीं। शरीर के चारों ओर सफेद और लाल रंगों से बना विस्तृत मंडल था। पास में ही संत जीतेंद्र बैठे थे, उनके हाथ में उस कन्या का हाथ था।

उसके हाथ की कोमलता और त्वचा की चमक देखकर यह विश्वास करना कठिन था कि यह शरीर निर्जीव था। संत का सिर झुका हुआ था। मैंने सोचा, क्या वे भी समाधि में थे?

आँगन के दूसरी ओर एक मंडली भजन-कीर्तन में संलग्न थी। हिंदू मान्यता में मृत्यु मोक्ष का द्वार खोलती है, और इसे उत्सव का क्षण माना जाता है। इस प्रकार की मृत्यु का विशेष रूप से उत्सव मनाया जाता है।

परंतु वह थी कौन?

चारों ओर फैली गंभीरता और लोगों की दृष्टि ने इस रहस्य को और गूढ़ बना दिया। मुझे लगा कि मेरी उपस्थिति केवल अपेक्षित ही नहीं, बल्कि अपरिहार्य थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह शरीर मुझसे संबंधित था।

मैं सावधानी से आगे बढ़ा। क्या यह वही थी?

हाँ, यह वही थी।

मैं अपने भीतर हँस पड़ा। क्या मैंने स्वयं ही काली मंदिर जाकर उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया था? और यहाँ वह थी – संत की चयनित परछाई, मेरे बचपन के मित्र की आध्यात्मिक सहचरी। मैंने याद किया कि किस प्रकार संत का नाम उसके साथ जुड़े घनिष्ठ संबंधों को लेकर अपवादों में घिरा था। अब वह जा चुकी थी।

संत ने मेरा हाथ पकड़ा और आँगन के एक कोने में ले गए। बेल के पेड़ के नीचे उन्होंने मुझे कुछ निर्देश दिए।

वह इस घटना से अत्यधिक व्यथित प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने कहा, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता थी। वह महीनों से ध्यान में थी। धीरे-धीरे, उसकी ध्यानावस्था की अवधि, विशेष रूप से कुम्भक, बढ़ती गई। एक समय ऐसा आया जब उसने बाहरी संसार से पूरी तरह नाता तोड़ लिया और केवल भजन गाने लगी। नौ दिनों तक उसने समाधि नहीं छोड़ी। अंततः, मुझे

हस्तक्षेप करना पड़ा। मैं उसके कक्ष में गया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपना परम लक्ष्य प्राप्त कर लिया था। वह जन्म से ही शक्तिशाली थी। वह केवल इस अल्प अवधि के लिए आई थी। वह सदैव तुम्हारा स्मरण करती थी। तुम्हारी मौसी को पूर्वाभास हो गया था कि कुछ होने वाला है। उन्होंने मुझे सचेत भी किया था, लेकिन इन मामलों में हर व्यक्ति को अपनी राह स्वयं ही तय करनी होती है। क्या यह एकाकी पथ नहीं है? वह वहीं गई, जहाँ उसे जाना था। अब उसके लिए कोई आगमन या गमन नहीं है।"

संत अचानक रुक गए। मैंने उनकी ओर देखा।

"परंतु एक बात और है जो मुझे तुम्हें बतानी चाहिए," उन्होंने अंततः कहा।

उन्होंने समझाया।

उन्होंने उसे बचपन से ही पहचान लिया था। संत को उसकी पूर्वजन्मों की यात्रा का संपूर्ण ज्ञान था। वह एक तिब्बती योगिनी थी, जिसकी आध्यात्मिक उन्नति एक अविवेकी लामा के कारण बाधित हो गई थी। क्योंकि वह समय रहते स्वयं को उस लामा के प्रभाव से अलग करने में सफल रही थी, इसलिए वे लामा, जो वास्तव में उसकी शक्ति को नियंत्रित करना चाहते थे, अब भी उसकी खोज में थे। वे केवल भौतिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर भी सक्रिय थे।

पिछले जन्म से पहले, वह कंबोडिया (अब कंबुचिया) में जन्मी थी, जहाँ आज भी चाम साधकों की प्रसिद्ध बस्ती स्थित है। वह उनके गूढ़ तांत्रिक समुदाय की एकमात्र भैरवी थी। पिछले सात जन्मों से वह भैरवी ही रही थी। उसे अपने अंतिम दो जन्मों का पूर्ण ज्ञान था। अंततः, उसने स्वयं को संत जीतेंद्र की छत्रछाया में सुरक्षित पाया।

"अब तुम्हें अपनी भूमिका निभानी होगी," संत ने गंभीरता से कहा। "हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उसकी अंतिम यात्रा बिना किसी बाधा के पूरी हो। उसका शरीर अपवित्र न हो।"

मैं हतप्रभ रह गया। "उसका शरीर अपवित्र होगा? यह शरीर?" मैंने अविश्वास से पूछा।

संत ने मेरी ओर देखा। "इसमें आश्चर्यचकित होने की क्या बात है? क्या तुमने गोपाल मंदिर के पीछे तारा मंदिर के अनुष्ठान को भुला दिया? क्या तुम्हें मृत शरीर और आसन याद नहीं?"

"कैसे भूल सकता हूँ?"

"वह एक पुरुष का शरीर था। यह एक स्त्री का शरीर है। यह कन्या एक पवित्र और प्रतिष्ठित भैरवी थी। हालाँकि वह स्वयं अपनी देह की रक्षा करने में सक्षम है, फिर भी उसे ऐसा करने के लिए इस संसार से पुनः जुड़ना पड़ेगा। इससे उसे अत्यधिक पीड़ा होगी। उसकी मुक्ति में विलंब होगा। उसके समस्त प्रयास व्यर्थ हो सकते हैं। मित्र संकट में सहायता के लिए होते हैं। हमें उसके शरीर को अग्नि-स्नान में समर्पित कर देना चाहिए और उसकी रक्षा तब तक करनी होगी, जब तक यह पूर्ण न हो।"

"रक्षा? किसकी रक्षा? कृपया मेरा मार्गदर्शन करें।" मैंने संत से विनम्रता से कहा।

# मृतकों की रखवाली

तब मुझे एक नई विद्या का ज्ञान हुआ। यह मृतकों की पुस्तकों का ज्ञान था। इन पुस्तकों में से कई को उन लोगों ने नष्ट कर दिया जो उनके महत्व को नहीं समझ सके। कई लोगों ने इन्हें जादू-टोने और रहस्यमयी विकृतियों का स्रोत कहकर नकार दिया। यहां तक कि एस्सीन, मिस्री, मायन (और अब शायद तिब्बतियों के भी) के अमूल्य अभिलेख नष्ट कर दिए गए हैं और किसी न किसी कारण से नष्ट किए जा रहे हैं। जब मानवजाति को अज्ञात के ज्ञान में महारत हासिल करनी चाहिए थी, तब वह अपने ही विनाशकारी स्वभाव के कारण सत्य से और दूर होती जा रही है, विशेष रूप से जब इस स्वभाव को उसके विशाल अहंकार द्वारा बढ़ावा दिया जाता है।

मानवों की तरह, आत्माएँ भी स्वतंत्र आत्माओं से संवाद करने की प्रतीक्षा करती हैं। ऐसी आत्माओं की उपस्थिति उनके लिए बहुत लाभकारी होती है। उच्च आत्माएँ, ठीक वैसे ही जैसे आगंतुक प्रोफेसर, पीड़ित आत्माओं को कुछ राहत प्रदान करती हैं। महाभारत में इस प्रकार की घटनाओं का वर्णन कई बार किया गया है। सबसे प्रसिद्ध घटनाएँ राजा सोमदेव, राजा अंबरीष और राजा युधिष्ठिर से संबंधित हैं। पीड़ित आत्माएँ इन पवित्र आत्माओं की उपस्थिति की अवधि बढ़ाने की याचना करती थीं क्योंकि उनकी उपस्थिति से उन्हें अत्यधिक राहत मिलती थी।

इन पीड़ित आत्माओं के अलावा, जो उच्च आत्माओं के क्षणिक प्रवास का इंतजार करती हैं, कुछ दुष्ट आत्माएँ भी होती हैं, जो उन्नत आत्मा पर आक्रमण करने और उसकी प्रगति को रोकने के लिए तैयार रहती हैं। रामायण में हम देखते हैं कि योगी हनुमान की यात्रा को सुरसा और सिंहिका जैसी दुष्ट शक्तियाँ बार-बार बाधित करती हैं। कृष्ण का सामना पूतना से होता है, और राम का ताड़का से। दुष्ट शक्तियाँ उन्नति को रोकने के लिए मौजूद रहती हैं। यह सिद्ध योगिक प्रगति के लिए भी सत्य है, और आत्मा की प्रगति के लिए भी। आत्मिक उद्देश्यों के लिए मानव शरीर का उपयोग करना एक पुरानी प्रथा है। आप लाकुलीश संप्रदाय, भर्तृहरि और परशुराम से इस विषय पर परामर्श कर सकते हैं।

मुझ पर एक नया ज्ञान उदित हो रहा था। मुझे गीता की रहस्यमय पंक्तियाँ याद आईं।

मुझे इस जिम्मेदारी का पूरा एहसास हुआ जिसे मैंने अपने कंधों पर लिया था। न केवल मुझे शव को मणिकर्णिका तक ले जाना था, बल्कि मैं इसे अपने स्पर्श से दूर भी नहीं कर सकता था। फिर, श्मशान भूमि पर पहुँचकर, मुझे स्वयं योगिनी आंटी की सहायता से शव को स्नान कराना था और उसे सजाना था, जैसे कि वह अंतिम शवासन में बैठ रही हो। उसके नग्न शरीर को एक ढीली सफेद चादर से ढकना था। जब शव को चिता पर रखा जाएगा, तो पूरे लकड़ी के ढेर पर एक भारी लाल रेशमी वस्त्र डाल दिया जाएगा। फिर सावधानीपूर्वक सफेद चादर को हटा दिया जाएगा, ताकि शरीर पूरी तरह से ढका रहे, लेकिन उस पर कोई गांठ या सिलाई न हो। बालों को कंघी कर खुला छोड़ दिया जाएगा ताकि वे चिता की ऊँचाई से जल जाएँ। जब तक बाल और लाल आवरण पूरी तरह जल न जाएं, तब तक न तो शरीर और न ही चिता मेरे संपर्क से बाहर होनी चाहिए।

"तुम्हारे साथ कुछ भी गलत नहीं होगा। योगिनी तुम्हारा मार्गदर्शन करेगी। कुछ भी नहीं होगा। निडर होकर वही करो जो मैंने कहा है," उन्होंने मुझे आश्वासन दिया।

कुछ भी अप्रत्याशित नहीं हुआ। लेकिन....

योगिनी स्वयं बहुत अजीब तरीके से व्यवहार कर रही थी। बार-बार उसने मुझे काम में लगाने के बहाने ढूंढे, ताकि मैं शव से दूर जा सकूँ। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। फिर उसने अपना सबसे प्रभावी और कपटपूर्ण तरीका अपनाया। स्नान और

पोशाक की प्रक्रिया के दौरान उसने अचानक मेरा ध्यान एक युवा स्त्री के नग्न शरीर की ओर आकर्षित किया और कहा कि वह मेरे सामने इस अनुष्ठान को करने में असहज महसूस कर रही थी।

लेकिन मैं पहले से ही सतर्क था।

संत जितेंद्र ने मुझे योगिनी आंटी की सहायता लेने के लिए कहा था, लेकिन उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी, "वह खुद भी शव को प्राप्त करने का प्रयास कर सकती है। कभी भी अपनी पकड़ मत छोड़ना।"

मैंने उसे टकराव की चुनौती नहीं दी और हर संभव तरीके से उसकी आज्ञा मानी, बस मैंने शव को अपने से अलग नहीं किया।

लेकिन उसने फिर से स्नान करने का मुद्दा उठाया। मैंने केवल यह श्लोक पढ़ा:

यस्मिन सर्वाणि भूतानि
आत्मैवभूद विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः
एकत्वमनुपश्यतः॥
*(ईशोपनिषद, ७)*

(आत्मा ही सभी प्राणियों का स्रोत है, और ये सभी भिन्नताएँ केवल उसके विस्तार हैं; और आत्मा में ही सब एक हो जाते हैं। जब सभी को एक रूप में देखा जाता है, तो मोह और शोक की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती।)

अंततः, उसने स्थिति को समझते हुए हार मान ली।

मैंने सफलतापूर्वक शव को चिता पर रखा। अब समय था उसके वस्त्र हटाने का। मैंने पूरी चिता को बनारसी सुनहरी जरी से कढ़ाई किए गए भारी लाल मखमली वस्त्र से ढक दिया। फिर सावधानीपूर्वक मैंने उसकी साड़ी को खोलना शुरू किया। साड़ी आसानी से हट रही थी, लेकिन अचानक बीच में रुक गई। कोई भी प्रयास उसे आगे नहीं बढ़ा सका। मुझे बाधा के स्रोत को छूना पड़ा।

मेरा हाथ उसके शरीर से लगा। शरीर बहुत गर्म था। क्या वह जीवित थी?

चौंककर, मैंने हाथ उसके हृदय पर रखा। स्पष्ट रूप से हृदय न केवल धड़क रहा था, बल्कि शरीर हलचल भी कर रहा था। मैं इतने गहरे सदमे में था कि मैं अपने होश बनाए रखने में असमर्थ था।

अचानक, योगिनी आंटी ने कहा, "मुझे करने दो। हटो, मैं कर दूँगी।"

यह एक सरल और स्वाभाविक प्रस्ताव था, लेकिन मैं सतर्क था। मैंने देखा कि दो काले कुत्ते मेरे पैरों के पास खड़े थे।

मैंने तुरंत अग्नि के वैदिक मंत्रों का जाप करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे कुत्ते गायब हो गए। मैं आंटी की ओर देखता रहा। उसने भी पसीना-पसीना होकर मेरी ओर देखा।

अब, मैं पूरी तरह से निश्चित था कि मुझे संत जितेंद्र के आदेशों का पालन करना चाहिए।

अंततः, मैंने शव को चिता को समर्पित किया और अग्नि प्रज्वलित की। जब लपटें ऊँचाई तक उठीं, तो मैंने देखा कि जलती चिता के बीच एल.एस. बैठी थी, शव को अपनी गोद में लिए हुए। वह शांत थी, जैसे कि उसकी रक्षा कर रही हो।

क्या यह दृष्टि थी? भ्रम? आत्मिक जागृति? मुझे शंका क्यों करनी चाहिए? यह एल.एस. ही थी, इसमें कोई संदेह नहीं।

मा ते मनो मसो-र-मंगानम मा रसस्य तेलमा ते हस्ता तांसः किम केनेहल्मे

त्वा बायल सह साम वधीश त मा देवी पृथिवी मही लोकं पित्यशु विवैधुस्व यमराजसु। (18:2:111:4-5)

-अथर्ववेद

मैंने गंगा में प्रवेश किया। पानी बहुत ठंडा और गले लगाने वाला था। नदी के दूसरे किनारे पर सूरज उग रहा था। शांत नारंगी आकाश पर पहली किरणें पहले से ही दिखाई दे रही थीं। कबूतर इधर-उधर उड़ रहे थे, बीच धारा में डुबकी लगा रहे थे, और बांस के एक तैरते हुए टुकड़े पर बैठे थे जिसे किनारों के विचारशील संरक्षकों ने तैरा कर छोड़ दिया था। इन नम्र हिंदुओं के लिए जानवरों और पक्षियों के प्रति प्रेम इतना सच्चा है कि यह बिना किसी दिखावे के प्रकट होता है।

## जंगल में एक चिता

जैसा कि मैं संत के आसन की कुंवारी कन्या की चिता के विषय में लिख रहा हूँ, मुझे यह उचित लगता है कि मैं एक और चिता का वर्णन करूँ, जिसने एक वृद्ध व्यक्ति को भस्म कर दिया था—वह वृद्ध व्यक्ति जो एक मंदिर का संरक्षक था।

पाठकों को याद होगा कि हल्द्वानी और रामनगर के पास जंगल में स्थित एक चामुंडा मंदिर में एक घटना घटी थी। यह जंगल बाघों के शिकार के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ के वृक्ष फर्नीचर और भवन निर्माण के लिए बहुत कीमती माने जाते थे, जैसे कि लाल लकड़ी, समोंग, खैर, बबूल, देवदार आदि। जंगल ऊँची हाथी घास से भरा हुआ था। यहाँ कई जलधाराएँ घाटियों से होकर बहती थीं, और निचले भाग में पानी एकत्र होकर एक बड़ा दलदली क्षेत्र बना देता था, जो आगे चलकर एक झील में परिवर्तित हो जाता था। इसी झील के किनारे, आंशिक रूप से कमल के फूलों से ढके, चामुंडा देवी का मंदिर स्थित था। चामुंडा को मृत्यु और विनाश की देवी माना जाता है। केवल विशिष्ट तांत्रिक साधक ही इस गुप्त देवी की उपासना करते थे, क्योंकि यह साधना रक्त, संभोग, मदिरा और नशीले पदार्थों के अत्यधिक प्रयोग से जुड़ी होती थी।

मैं इस मंदिर तक एक वृद्ध व्यक्ति के निर्देशों का अनुसरण करते हुए पहुँचा, जिसने मुझे विश्वास दिलाया था कि यदि मैं वहाँ ध्यान करने का साहस करूँ, तो मुझे कुछ विशेष लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

मेरे मित्र हवलदार शेर सिंह ने मुझे इस स्थान पर पहुँचाने के लिए एक हाथी प्रदान किया, और स्वयं इस यात्रा से मुझे रोकने का प्रयास किया। जब मैं मंदिर की ओर बढ़ रहा था, तो मैंने एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे उतरने का निश्चय किया। मेरे इस निर्णय से महावत (हाथी चालक) अचंभित रह गया। उस बरगद के अनगिनत जटाएँ नीचे उतरकर नम पृथ्वी में समा रही थीं। झील का विशाल विस्तार कमल के असंख्य फूलों से आच्छादित था। चारों ओर गूंजती मधुमक्खियों की भनभनाहट वातावरण में एक रहस्यमयी लय पैदा कर रही थी। मानव बस्ती का कोई निशान मीलों तक नहीं था, फिर भी यह स्थान सम्मोहक था।

महावत ने मुझे चेतावनी दी कि यह स्थान एक भयावह प्रतिष्ठा रखता है। यहाँ के मंदिर में निरंतर पशु बलि दी जाती थी, और शिकारियों के लिए यह एक उपयुक्त स्थान था। उसने फुसफुसाते हुए कहा, "यहाँ एक कंकाल अक्सर देखा जाता है, जो मानव रक्त का प्यासा है।"

परंतु उसकी बातों से मेरा संकल्प नहीं डगमगाया। यह स्थान मुझे अपनी ओर खींच रहा था। मैंने महावत से कहा कि वह मेरी प्रतीक्षा करे और स्वयं अकेले आगे बढ़ गया।

मेरी यात्रा सरल नहीं थी। झील मार्गदर्शक के रूप में थी, लेकिन पथ अवरुद्ध था। कांटेदार झाड़ियाँ, दलदल, और पेड़ों की झूलती शाखाएँ रास्ता कठिन बना रही थीं। जलपक्षी और जलचर जीव झील को जीवंत बना रहे थे। आगे बढ़ते हुए मैंने एक विशाल इमली के पेड़ पर चढ़ने का निश्चय किया, ताकि दिशा का अनुमान लगा सकूँ।

लेकिन जैसे ही मैं चढ़ने लगा, बंदरों के एक झुंड ने मुझ पर आक्रमण कर दिया। उनके उग्र व्यवहार ने मुझे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इससे पहले कि मैं उतरता, मुझे दूर लाल झंडा लहराता हुआ दिखाई दिया। मुझे लगा कि यह मंदिर का स्थान हो सकता है।

मेरा आगे बढ़ना कठिन होता जा रहा था। फिर अचानक, मेरे सामने एक काले नाग ने फन फैलाकर रास्ता रोक लिया। मैं पीछे हटने ही वाला था कि तभी हवा में एक चील ने तेज़ चीख मारी और मैं वहीं स्तब्ध रह गया। नाग मेरे सामने तना हुआ था, उसकी काली आँखें मुझ पर जमी थीं। वातावरण भयावह था। मेरे शरीर से पसीना बह रहा था।

अचानक एक तेज़ हवा चली, पेड़ सरसराने लगे, और जंगल की शांति भंग हो गई। उसी क्षण एक बंदर का बच्चा पेड़ से नीचे गिर पड़ा। नाग का ध्यान उस ओर गया और उसने तेजी से हमला किया। इसी बीच, एक मादा बंदर बिजली की गति से आई और नाग को गर्दन से पकड़ लिया। वह उसे पेड़ के तने पर जोर-जोर से रगड़ने लगी।

जंगल भयावह चीत्कारों से गूंज उठा। क्रोधित बंदरों का झुंड हर दिशा में दौड़ने लगा। मैं स्तब्ध खड़ा इस अप्रत्याशित घटनाक्रम को देख रहा था। यह जंगल, जो शांत और रहस्यमय था, अब जीवन और मृत्यु के एक क्रूर खेल का मंच बन चुका था।

## बंदर और साँप

मुझे वाराणसी के दुर्गाकुंड की सीढ़ियों पर हुई एक ऐसी ही घटना याद आ गई, जहाँ बंदरों का एक समूह बस गया था, जिससे इसे 'बंदर मंदिर' का आकर्षक नाम मिल गया।

उस दोपहर, मैं भास्करानंद मंदिर से बाहर निकला और देखा कि एक छोटी भीड़ किसी चल रहे संघर्ष को देखने के लिए इकट्ठी थी। एक बंदर सीढ़ियों में से एक पर बैठा था, उसका सिर झुका हुआ था, मानो वह कोई खोया हुआ अखरोट खोज रहा हो। जल्द ही, मुझे एहसास हुआ कि वह एक खतरनाक शिकार खेल में लिप्त था, जो किसी भी जानवर के लिए जोखिम भरा था।

उत्साहित भीड़ दिलचस्पी के साथ इस दृश्य को देख रही थी और आपस में बातचीत कर रही थी। बंदर की रुचि सीढ़ियों के बीच फंसे एक छेद में थी, जहाँ से एक फन निकला हुआ था—यह एक नाग था। साँप को अपनी स्थिति का आभास हो गया था, लेकिन वह अपनी प्रवृत्तियों के कारण बंदर की चालों के आगे बेबस हो गया था।

हर बार जब वह रोएंदार हाथ छेद के पास जाता, फन तेजी से बाहर आता और बंदर पर हमला करने की कोशिश करता। हाथ जितना करीब जाता, फन उतना ही बाहर निकलता; हमले की गति जितनी तेज होती, हाथ उतनी ही तेजी से पीछे हटता। यह खेल तेजी से रोमांचक होता जा रहा था।

बंदर बार-बार अपना बायाँ हाथ छेद के पास ले जाता, जबकि उसका दायाँ हाथ साँप को पकड़ने के लिए तैयार था। आखिरकार, एक अवसर आ ही गया। जब बाएँ हाथ ने छेद को छूने का साहस किया, तो गुस्से से भरा फन झपट पड़ा। करीब दस इंच का शरीर जैसे ही बाहर निकला, बंदर ने झट से अपने दाएँ हाथ से फन को एक जानलेवा पकड़ में जकड़ लिया।

इसके बाद, बंदर ने अपने हाथ में जकड़े फन को पत्थर की सीढ़ियों पर जोर-जोर से रगड़ना शुरू कर दिया—बिलकुल योजनाबद्ध, सतर्क और विधिपूर्वक। हर बार जब वह इसे आधे मिनट तक रगड़ता, तो अपने हाथ को अपनी नाक के पास ले जाकर सूंघता और अपनी 'कला' को करीब से जांचता। धीरे-धीरे, वह फन और विषदंत पूरी तरह से कुचल कर एक लथपथ मांस के ढेर में बदल चुका था।

जब बंदर को संतोष हुआ कि वह साँप की शक्ति और विष खत्म कर चुका है, तो उसने उस मांस के टुकड़े को घृणा से दूर, तालाब के ठहरे हुए पानी में फेंक दिया। अब उस घातक नाग की ताकत और जहर का एकमात्र अवशेष पानी में फैलती कुछ लहरियाँ थीं।

मुझे पहले से पता था कि बंदर ज़हरीले साँपों पर हावी होने की प्रवृत्ति रखते हैं, खासकर अपनी संतानों की सुरक्षा के लिए, जैसे कि मोर, बाज़, उल्लू और गरुड़ करते हैं। जंगल का यह नियम उस दिन मेरे पक्ष में काम कर गया, और मैं मंदिर की ओर अपनी यात्रा जारी रख सका। वापस लौटने का कोई सवाल ही नहीं था।

## श्मशान का दृश्य

कमल से भरे झील के विस्तृत जल ने, बिना मेरी जानकारी और समझ के, मेरे लिए एक नया खतरा पैदा कर दिया था, जिसने मेरी यात्रा को और भी कठिन बना दिया। विभिन्न प्रकार की मधुमक्खियों के विशाल छत्ते थे, और मेरी ओर से की गई कोई भी गलत चाल मुझे एक बड़े संकट में डाल सकती थी।

इसी समय, मुझे जलते हुए बालों और मांस की गंध का अनुभव हुआ। यद्यपि यह किसी बड़े अग्निकांड का संकेत दे रही थी, फिर भी कहीं धुआँ दिखाई नहीं दे रहा था। परंतु गंध इतनी तीव्र थी कि इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था।

जब मैंने एक छोटे पेड़ पर चढ़कर देखा, तो मुझे न केवल आग जलती दिखाई दी बल्कि मंदिर भी नजर आ गया। अब पहली बार मुझे यकीन हुआ कि चामुंडा मंदिर झील के पास एक श्मशान भूमि के समीप स्थित था और वहाँ जीवन की हलचल थी।

जब मैं उस स्थान पर पहुँचा, तो मैंने देखा कि वास्तव में एक दाह-संस्कार चल रहा था। लेकिन एक दुर्घटना ने वहाँ उपस्थित तीन नाजुक सहायकों को संकट में डाल दिया था। ये लोग पहाड़ी क्षेत्र के निवासी थे, जो हिमालय के कुख्यात तराई जंगलों से लगे स्थानों में रहते थे। वे कृषि और लकड़ी इकट्ठा करके जैसे-तैसे अपना जीवन व्यतीत करते थे। ये हाथियों, बाघों, हिरणों और साँपों के पड़ोसी थे और उन्हीं की दया पर जीवित रहते थे।

यह दाह-संस्कार उनके एक संबंधी का था, जिसे एक बाघ ने मार डाला था। उसकी अंतिम इच्छा के अनुसार, उसे मंदिर के पवित्र स्थल के पास जलाया जा रहा था। चिता आधी जल चुकी थी, और अधिकांश रिश्तेदार जा चुके थे। दुर्भाग्य से, एक अप्रत्याशित घटना ने वहाँ उपस्थित लोगों को और भी बड़ी मुश्किल में डाल दिया था। आग की लपटों के प्रभाव से शव मुड़ गया और जलती हुई चिता से बाहर गिर पड़ा।

जो लोग इस स्थिति को समझते हैं, वे जानते होंगे कि जलते हुए शव को फिर से चिता पर रखना कितना खतरनाक हो सकता है। वहाँ मौजूद गरीब लोग इसे सही करने में लगे थे, लेकिन उनके प्रयास समस्या का समाधान करने के बजाय उनके लिए और अधिक खतरा उत्पन्न कर रहे थे। मैंने सोचा कि शायद मैं उनकी मदद कर सकता हूँ। जब मैंने सहायता की पेशकश की, तो उन्होंने मुझे अविश्वास भरी नज़रों से देखा। मैंने उनके चेहरे पर भय और घबराहट देखी।

उनकी सतर्कता की एक ठोस वजह थी। उनके मन में इस स्थान से जुड़ी एक दहशत भरी कहानी बसी हुई थी। उनके अनुसार, यह श्मशान और मंदिर एक "दुष्ट" आत्मा के प्रभाव में था। "कई लोगों ने उसे देखा है," उन्होंने फुसफुसाकर कहा। "कुछ सेकंड पहले भी वह यहाँ थी, और तुम्हारे आते ही वह छिप गई। लेकिन वह वापस ज़रूर आएगी..."

"क्यों?" मैंने पूछा, उनके भय को समझने का प्रयास करते हुए।

"वह शव चाहती है। वह मांस खाती है... वह परलोक की है।"

बात समझने के बजाय रहस्य और गहराता जा रहा था। मैं और अधिक जानना चाहता था, लेकिन मुझे अपने हाथी के पास भी लौटना था। इन लोगों की सहायता मेरे लिए फायदेमंद हो सकती थी, इसलिए मैंने जलते हुए शव को दोबारा चिता पर रखने के कार्य में खुद को झोंक दिया।

जब मैंने उनकी सहायता की, तो उन्होंने मुझे मेरे हाथी तक पहुँचाया। लेकिन मैं यह निश्चय कर चुका था कि मैं इस रहस्यमयी "वह" के बारे में अवश्य पता लगाऊँगा।

## एक रहस्यमयी यात्रा

इसी दौरान, जब मैं इस वन-गुप्त "वह" को खोजने की धुन में था, मेरे माता-पिता अचानक मुझसे मिलने आ पहुँचे। खासकर अपने पिता को अपने पास पाकर मैं अत्यंत प्रसन्न था। लेकिन मेरी हैरानी तब और बढ़ गई जब एक-दो दिन बाद उन्होंने स्वयं चामुंडा मंदिर का विषय छेड़ा।

"यह मंदिर हमेशा से योगिनियों का प्रिय स्थान रहा है," उन्होंने कहा। "मुझे आश्चर्य है कि तुमने अभी तक इस अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक स्थल की खोज करने की कोई कोशिश नहीं की।"

"लेकिन यह स्थान भुतहा माना जाता है और इसकी बहुत ही खतरनाक प्रतिष्ठा है," मैंने कहा। "यह डरावना और कष्टदायक हो सकता है।"

"ऐसे ही तो सभी महान योगिनी स्थलों का स्वरूप होता है," उन्होंने उत्तर दिया। "लेकिन जो भी तंत्र में भैरव-सिद्धि प्राप्त करना चाहता है, उसे इन स्थानों का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करना चाहिए। तीर्थयात्राएँ बेवजह नहीं की जातीं। किसी स्थान की आध्यात्मिक ऊर्जा साधकों को गहरे प्रभाव में डालती है।"

इसके बाद उन्होंने और कुछ नहीं कहा। चर्चा वहीं समाप्त हो गई।

इससे पहले कि मैं उनके लिए किसी यात्रा की व्यवस्था कर पाता, एक सुबह उन्होंने मुझे चौंका दिया। उन्होंने बताया कि वे पहले ही मंदिर की यात्रा कर चुके थे और वहाँ उन्हें वांछित 'फल' मिल चुका था। लेकिन यह 'फल' क्या था, इसका कोई खुलासा उन्होंने नहीं किया।

अब मेरी माँ मुझसे बार-बार आग्रह करने लगीं। वे भी मंदिर जाना चाहती थीं। उन्होंने कहा, "यह एक पवित्र स्थान है।"

मैं जानता था कि बिना उचित वाहन के वे यह कठिन यात्रा नहीं कर सकती थीं। इसलिए मैंने अपने मित्र शेर सिंह से संपर्क किया, जिन्होंने हमारे लिए एक सुसज्जित बैलगाड़ी की व्यवस्था की।

भय और संकेत

जैसे-जैसे हम मंदिर के निकट पहुँचे, मेरी माँ के हाव-भाव में स्पष्ट परिवर्तन आने लगा। धीरे-धीरे, वह फुसफुसाईं, "यह स्थान अवश्य ही प्रेत-ग्रस्त है। यहाँ अकेले कभी मत आना।"

"लेकिन पिताजी आए थे, और कई श्रद्धालु भी आते हैं। क्या आपको डर लग रहा है?"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

इसी समय, काले कौवे जोर-जोर से कांव-कांव करने लगे।

जंगलों में तंत्र-साधना के लिए कौवे, गीदड़, कुत्ते और गिद्धों की उपस्थिति शुभ संकेत मानी जाती है।

## मंदिर

मंदिर स्वयं पत्थरों से बना हुआ था, जैसे भारत के कई अन्य मंदिर होते हैं। आसपास के वातावरण की गंभीर प्रतिष्ठा को देखते हुए, मंदिर को अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में रखा गया था, सिवाय उस फटे हुए आँगन के, जो एक अत्यधिक पुराने पीपल के पेड़ के बढ़ते हुए तने से क्षतिग्रस्त हो चुका था। चपटे पत्थर के स्तंभों द्वारा समर्थित एक बरामदा तीन दिशाओं में फैला हुआ था। चौथी दिशा में एक जालीदार अवरोध था, और उसके पार गर्भगृह स्थित था, जहाँ देवी की मूर्ति लकड़ी के दरवाजों के पीछे प्रतिष्ठित थी। हालाँकि, पुराने पीतल के कड़े लगे दरवाजे अपनी कड़ियों से लगभग अलग हो चुके थे, और गुजरती हुई हवा उनकी चरमराहट को दुखदायी बना देती थी, फिर भी देवी को सुरक्षित रूप से भीतर रखा गया था। और मैं अपने आध्यात्मिक चेतना में धीरे-धीरे बढ़ती हुई एक तीव्र कंपन को अनुभव कर सकता था। हवा में धूप की सुगंध फैली हुई थी।

उस स्थान की विचित्र और भयानक अनुभूति ने मेरी माँ को मौन कर दिया। हालाँकि उन्होंने अनुष्ठानिक रूप से हाथ जोड़े, और उन्हें बार-बार घबराहट में अपने माथे से लगाया, लेकिन उन्होंने मंदिर के दरवाजों के पास जाने में कोई रुचि नहीं दिखाई। इसके बजाय, उन्होंने पीपल के चारों ओर बने गोल चबूतरे पर विश्राम करने की कोशिश की। अचानक उन्होंने हल्की चीख निकाली, और मैंने मुस्कराते हुए देखा कि एक विशाल छिपकली चबूतरे के आधार से सरकती हुई झाड़ियों की सुरक्षित आड़ की ओर जा रही थी। माँ ने समझदारी दिखाने की कोशिश की और कहा, "हमें यहाँ से ही प्रार्थना कर लेनी

चाहिए, बिना इस पवित्र स्थान की शांति भंग किए।" मैंने उनकी इस असहाय स्थिति पर हँसते हुए कहा, "लेकिन पिता तो यहाँ अकेले आए थे; क्या आपको याद नहीं?"

उन्होंने मेरे इस मज़ाकिया व्यवहार को नापसंद किया और उलाहना दी, "भूत, भूतों के ही मित्र होते हैं," इतना कहकर वे उदास हो गईं।

"लेकिन हम यहाँ देवी के दर्शन करने आए हैं। हम कैसे उन्हें अनदेखा कर सकते हैं और बिना श्रद्धांजलि अर्पित किए ही लौट सकते हैं? मैंने विशेष रूप से इन कमलों को इसी उद्देश्य के लिए इकट्ठा किया है।"

"दरवाजा खोलना? और फूल चढ़ाना? जब तक मैं जीवित हूँ, ऐसा नहीं होने दूँगी," उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा। "तुम इस दरवाजे को पार करने की कोशिश भी मत करना," उन्होंने आदेश दिया। "हमें यहाँ से चले जाना चाहिए।" यह कहते हुए वह वहाँ से हटने लगीं। मुझे भी कुछ दूरी तक उनका अनुसरण करना पड़ा। बैलगाड़ी पास ही थी, और वह उसमें सुरक्षा के साथ बैठने में संकोच नहीं कर रही थीं। लेकिन मैं तुरंत उनका पीछा करने के बजाय एक बहाना बनाकर झील की ओर चला गया, स्नान करने और कुछ ताजे कमल लाने के लिए।

मैं मंदिर के पिछवाड़े के गुप्त द्वार से प्रवेश कर गया ताकि माँ की निगरानी से बच सकूँ। मैंने फौरन जालीदार द्वार को खोला और भीतर घुस गया। वहाँ कोई नहीं था, सिवाय काले और लाल रंग की देवी के, जो अपनी बड़ी काँच की आँखों से मुझे टकटकी लगाए देख रही थी। मैंने अपने कमल एक-एक करके चढ़ाए, कुल नौ की संख्या पूरी की, और फिर ध्यान में बैठ गया, जप करने लगा।

अचानक मेरी माँ की तेज़ और विक्षिप्त चीख से मेरी तंद्रा भंग हुई। मैंने मुड़कर देखा, वह तेजी से मंदिर के द्वार से बाहर जा रही थीं। तभी मैंने उनकी घबराहट का कारण खोजा।

मेरे सामने आँगन में एक जली हुई और नग्न कंकाल-आकृति खड़ी थी, जिसकी लगभग कोई उदर-गुहा नहीं थी। उसकी छाती से दो कठोर और सूखे मांस के लोथड़े लटक रहे थे, जो अपने भार से उसकी त्वचा को खींचते प्रतीत हो रहे थे। लेकिन उसकी आँखें जीवित थीं - चमकदार, भूखी, सूखी और भयावह रूप से लाल। उसके नुकीले दाँत उसके दंतविहीन मुँह से बाहर protrude हो रहे थे। उसके गले में उलझी हुई जटाएँ चीख रही थीं, लेकिन उसके सिर पर एक गाँठ बंधी हुई थी, जो मानो किसी मानव अस्थि द्वारा बाँधी गई हो। तरह-तरह की मनकों की माला उसके गले में लटक रही थी। मैं उसे देखता रहा, और वह मुझे गहरी नजरों से देखती रही। अचानक वह ज़ोर से कर्कश हँसी हँसी। मेरा खून इसलिए नहीं जमीद हो गया क्योंकि मैंने उसमें अपनी प्रिय एलएस की छवि देखने का प्रयास किया। और वह शांत हो गई।

फिर मैंने देखा, वह आँगन के बीच में खड़े एक छोटे वर्गाकार स्तंभ की ओर बढ़ रही थी। उस स्तंभ में एक कटोरेनुमा गहरा खांचा बना था, जिसमें विशेष रूप से बलि किए गए पशुओं के कटे हुए सिर रखे जाते थे।

उसने अपने कंकाल-समान उँगलियों को कटोरे में डुबोया, दीवारों को खुरचा और किसी पदार्थ को निकालकर अत्यधिक भूख और लालसा के साथ चाटने लगी।

"रुको!" मैंने जोर से पुकारा। "रुको माता! क्या तुम नहीं जानतीं कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ? केवल तुम्हें देखने और स्पर्श करने के लिए। तुम्हारे चरणों में शीश नवाने के लिए। मैं तुम्हारे आनंद के लिए कुछ लाया हूँ; कुछ ताजा और लाल, जैसे तुम्हें प्रिय रक्त।" मैंने अपनी मुट्ठी में बचे हुए कमल उठाए और उसकी ओर बढ़ा।

और वहाँ वह खड़ी थी, नग्न, पतझड़ में खड़े चेरी के वृक्ष की तरह विरल, समुद्र की क्षितिज को छूते इंद्रधनुष की तरह सम्मोहक। उसकी खोखली उदर-गुहा, लंबी गर्दन, कंकाल समान उपस्थिति, तीव्र भूखी आँखें, रक्तरंजित मुँह मुझे मंत्रमुग्ध कर रहे थे। मैं उसके आध्यात्मिक विस्तार से अभिभूत हो गया।

मैंने वही भजन गाना शुरू किया, जिसे मैंने अपने पिता के शयनकक्ष में बाल्यकाल से गाते सुना था:

ना मोक्षस्या कांक्षा, ना च विभव वांछा पी च न मे। ना विज्ञान अपेक्षा, शशि मुखी सुखेच्छा पी न पुनः। तत् त्वं संयाचे जननि, जननं यातु मम वै। मृडानि रुद्राणी, शिव शिव भवानी जपतह।।

उसने अपने रक्त से सने कटोरे में फिर से उँगलियाँ डुबोईं, फिर वह जालीदार द्वार की ओर भागी और गायब हो गई। मैं पीछे भागा, लेकिन इससे पहले कि वह जंगल के अंधकार में समा जाती, उसने मुड़कर मुझे देखा। मैं उसके संदेश को समझ गया। मुझे लगा, मैं एक अदृश्य छत्रछाया में खड़ा हूँ, जिसे एलएस कहा जाता है।

## भगवा वस्त्रधारी महिला का अंतिम खोज

आज जब मैं बैठकर अपने जीवन की निराशाजनक असफलताओं और उन आशीर्वादों को याद करता हूँ जो मुझे बिना किसी विशेष दावे के प्राप्त हुए हैं, तो मैं यह सोचकर आश्चर्यचकित हो जाता हूँ कि क्या प्रकृति के साथ मेरी अनावश्यक उलझनें मेरे भीतर दबी किसी भूख का परिणाम नहीं थीं? मुझे जीवन में कुछ प्राप्त करने की तीव्र लालसा थी, लेकिन मैं तंत्र की एक अत्यंत महत्वपूर्ण चेतावनी को भूल गया था।

कभी भी किसी से अत्यधिक लगाव मत रखो। क्या मैं वाराणसी, एलएस, संत जितेंद्र, नारद और उन मंदिरों से अधिक जुड़ा नहीं था? किसी भी प्रकार का लगाव स्वतंत्रता को बाधित करता है। वास्तविक स्वतंत्रता केवल मुक्त आत्माओं को ही प्राप्त होती है। और जो मुक्त होते हैं, वे कभी भी किसी से जुड़ते नहीं। यह कोई निष्क्रिय या नकारात्मक दर्शन नहीं है। इसके विपरीत, केवल वही जो अनासक्त होते हैं, वे एक सच्चे सकारात्मक जीवन जी सकते हैं।

मेरा भावनात्मक स्वभाव, जो प्रेम और अधिक प्रेम की लालसा करता था, मेरे लिए एक जाल बन गया था। मैं लगातार एलएस की संगति खोज रहा था। जब मैंने राजनीति के भंवर से खुद को स्थिर किया और वाराणसी लौटा, तो मैंने पाया कि वह छोटा सा नारियल का दुकान अब खाली था। वहाँ अब एक नाई अपनी साधारण सी दुकान चला रहा था। वह भी और आस-पड़ोस के अन्य लोग भी मुझे उस महिला के बारे में कोई जानकारी नहीं दे सके, जिसे वे एक पागल, नग्न, अधभूखी और आधे दिमाग वाली बुढ़िया समझते थे।

फिर भी, मैंने उसे खोजने का प्रयास किया। लेकिन वह मानो पूरी तरह से गायब हो चुकी थी। मुझे आज भी नहीं पता कि मैंने अपने पिता से उसके बारे में क्यों नहीं पूछा। लेकिन बाद की घटनाओं ने मुझे संदेह में डाल दिया कि वह प्राचीन और संत प्रवृत्ति के व्यक्ति शायद उस 'बुढ़िया' से कभी संपर्क खो ही नहीं पाए थे, जिसे बाकी दुनिया ने विक्षिप्त समझ लिया था।

उन दिनों मैं विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय वाराणसी से अस्सी मील दूर था और मैं छात्रावास में रहता था। एक रात मैंने एक भयानक सपना देखा। बार-बार एक विशाल शिवलिंग और मंदिर का आँगन मेरी आँखों के सामने आता रहा, और मैं देखता रहा कि सर्प उसके चारों ओर लिपटे हुए मुझे घूर रहे थे।

मेरे लिए ऐसे दृश्य हमेशा गहरे अर्थ रखते थे।

## अदृश्य सुरक्षात्मक हाथ

अक्सर जब मेरा मन शून्य और धुंधला हो जाता है, तो मैं एलएस के साथ अपनी अंतिम महत्वपूर्ण बैठक की कल्पना करता हूँ। जब भी मेरी आत्मा ऊँचाई पर पहुँचती है, वह अपने प्रेम और करुणा से मेरी आंतरिक चेतना को सहारा देती है, और मैं स्वयं को एक चूजे की तरह सुरक्षित महसूस करता हूँ, जैसे कि वह अपनी माँ के पंखों के नीचे हो।

फिर भी, मेरे हृदय के गहनतम कोने में अक्सर एक चमकदार साक्ष्य कौंधता है; और मैं स्वयं से प्रश्न करता हूँ, 'क्या वह सचमुच अनंत में विलीन हो चुकी है? यदि ऐसा है, तो वह कौन है जो अजीब घड़ियों में, विषम परिस्थितियों में मेरे पास आती है? उस दूरस्थ, अकेली रात में जब मैं एक खोए हुए क्षण में ओक्साका के अटावाल्क नदी के तट पर एक मैक्सिकन प्रतिरूप की अतिमानवीय शक्तियों का सामना कर रहा था, तब मेरा मार्गदर्शन किसने किया? उसका नाम क्या था? मरीना?

और वह एक अंधेरी रात, जब एक और भी अंधेरे प्रवाह के स्वप्नमयी प्रवाह में एक सत्र चल रहा था? वह रात मेरी अंतिम रात हो सकती थी। लेकिन नहीं; मैं आज भी जीवित हूँ, और कोई शक्ति मुझे बचा रही थी, मुझे अविचल, अचूक मार्गदर्शन दे रही थी। फिर वह कौन थी, जो हुआना पिच्चू की चंद्र गुफा में मेरे साथ थी, जो सूर्य-प्रधान माचू पिच्चू की पड़ोसी थी? या फिर, उस क्षीण पुल के पार, जो कई सौ फीट गहरी खाई को पार कर रहा था, जहाँ मेरे बूढ़े कदम लड़खड़ा रहे थे, अस्थिर थे, काँप रहे थे? वह लड़की कौन थी, जो अचानक कहीं से प्रकट हुई और मुझमें साहस भरते हुए बोली, "एक बार इस मार्ग पर चल दिए, तो पीछे मुड़ने का कोई उपाय नहीं।"

या फिर, शाही मृतकों की गुफा में? क्या मैं वहाँ अचेत होकर नहीं गिर पड़ा था? मैं एक ऊँचे चट्टानी मंच से गिर गया था। मैंने स्वयं को घायल कर लिया था। किसका हाथ था जिसने मुझे चेतना में लौटाया, पहले मेरे घाव को सहारा दिया और फिर अचानक विलुप्त हो गया? माचू पिच्चू के विस्तृत, निर्जन क्षेत्र में, जहाँ मीलों दूर तक दृष्टि जाती थी, वह मायावी फ्लोरेंस नाइटिंगेल कहाँ चली गई?

नहीं, एलएस कभी हमेशा के लिए नहीं गई। बल्कि, वह निरंतर मेरे साथ रही है, हर कदम पर, जब भी मैं गिरा, उसने मुझे संभाला, जब भी मुझे सहायता की आवश्यकता हुई, उसने उसे प्रदान किया, और जब भी मैंने अपनी अज्ञानता में अपनी क्षमता से अधिक प्रयास किया, उसने मुझे रोक दिया। वह शाश्वत, अडिग, अनंत शक्ति मुझे कभी छोड़कर नहीं गई।

मैं राह से भटका था। बार-बार मैं विद्रोही बनता गया, भागता गया। महीनों-महीनों तक मुझे यह भी ज्ञात नहीं था कि कोई संरक्षक दूत मुझे सहारा दे रहा है; मैं अपने उच्च अभिमान और उस जीवन की ऊष्मा के अलावा किसी और चीज की परवाह नहीं करता था, जो युवाओं को आत्म-महिमा की घातक राह पर धकेलती है—वह आत्म-विनाशकारी मार्ग जो आत्म-मुग्धता और अंधे प्रेम में व्यक्ति को भस्म कर देता है।

## वापसी का रास्ता

मुझे आज भी इलाहाबाद के अपने छात्रावास की वह दोपहर याद है। जब मैं लेगुइस और काज़ामियन की पुस्तक के अभ्यास में आधे से अधिक व्यस्त था, तभी मैंने कमरे में एक परिचित उपस्थिति महसूस की। दरवाजे बंद और कुंडी लगी

हुई थी, फिर भी मई की गर्म हवा में एलएस के शरीर की जानी-पहचानी खुशबू समाई हुई थी। मैंने दरवाजे की ओर देखा और महसूस किया कि वह अपने पूर्ण कद में वहाँ खड़ी थी; लेकिन इससे पहले कि मैं स्थिति को पूरी तरह समझ पाता, वह अदृश्य हो गई।

यह अनुभव वास्तविक था या भ्रम, पर इसने मेरी मनःस्थिति को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया था। मेरी स्नातकोत्तर परीक्षा की अंतिम तिथियाँ निकट थीं, और इस समय किसी भी तरह से विचलित होना खतरनाक था। लेकिन मैं किसी और चीज़ पर ध्यान केंद्रित ही नहीं कर पा रहा था। मुझे इस बात का अपराधबोध था कि पिछले तीन-चार वर्षों के भोग-विलास और उच्छृंखल जीवन में मैं एलएस को पूरी तरह भूल चुका था।

उस रात मैं सो नहीं सका। एलएस के साथ बिताए अनगिनत सत्रों की यादें मेरी बेचैन स्मृति में दौड़ रही थीं। मेरे भीतर एक अजीब सी शुष्क रिक्तता महसूस हो रही थी। अंततः, मैं सुबह छह बजे की ट्रेन पकड़कर वाराणसी के लिए निकल पड़ा, किसी अनजानी आकांक्षा और आकुलता से खिंचता हुआ।

घर पहुँचने पर मैंने अपने पिता को मेरा इंतजार करते हुए पाया। उनसे मुझे पता चला कि एलएस कुछ समय से अस्वस्थ थी और मेरा उसके पास जाना आवश्यक था। लेकिन यह जानकारी अधूरी और अस्पष्ट थी, क्योंकि मेरे पिता को भी यह नहीं पता था कि वह इस समय कहाँ थी।

मैं गोपी दादा के पास गया, लेकिन उन्हें भी कुछ ज्ञात नहीं था। उन्होंने बस इतना कहा कि यदि एलएस चाहती होगी कि मैं उसे खोज निकालूँ, तो अवश्य खोज लूँगा। मैं संत जितेंद्र के पास गया, लेकिन उन्होंने भी यही कहा कि यदि वास्तव में वह मुझसे मिलना चाहती है, तो रास्ता अपने आप मिल जाएगा। "यह उसकी चिंता है, तुम्हारी नहीं," उन्होंने आश्वासन दिया।

मैं लगातार खोज करता रहा और अंत में मणिकर्णिका की एक वृद्धा के पास पहुँचा। उसने भी वर्षों से एलएस को नहीं देखा था, लेकिन उसने मुझे कामाख्या के पुराने मंदिर में जाकर देखने की सलाह दी। वहाँ भैरव के मंदिर में एक वृद्ध साधु मिला, जिसने मेरी बात सुनकर आँख मारी और मुझे बैठने को कहा।

आधे घंटे के असहनीय इंतजार के बाद वह लौटा और मुझसे कहा कि मैं अगस्त्येश्वर के प्राचीन मंदिर की ओर जाऊँ। "उन संकरी गलियों के बीच एक उजाड़ खंडहर है। पहाड़ी पर चढ़ो, ध्यान से देखो, तुम्हें वहाँ एक झुका हुआ टॉवर मिलेगा... वहीं!"

वहाँ की संकरी गलियाँ इतनी तंग थीं कि उनमें सूरज की रोशनी भी दोपहर के समय ही प्रवेश कर सकती थी। अंततः, मैंने मलबे की उस पहाड़ी और झुके हुए मंदिर के अवशेष को ढूँढ़ निकाला। उसे देखते ही मैं किसी अनजानी शक्ति द्वारा खिंचता हुआ उस ओर बढ़ने लगा। मैंने धीरे से पुकारा, "माँ!" और गाना गाने लगा।

उस खंडहर के अंत में झाड़ियों और कैक्टस से घिरा एक छोटा सा उपत्यकाएँनुमा स्थान था। नीम का एक विशाल वृक्ष वहाँ छाया और नमी बनाए रखे हुए था। वहीं, मलबे के ढेर के भीतर गहरे छिपा वह जीर्ण-शीर्ण मंदिर स्थित था।

मैं सावधानीपूर्वक नीचे उतरा। वहाँ की ऊर्जा अब स्पष्ट और तीव्र थी। मैंने फुसफुसाकर पुकारा, "माँ!" और उसी क्षण मेरी आत्मा किसी अदृश्य शक्ति के भँवर में समा गई। मैं तेजी से कुछ ही कदमों में मंदिर के भीतर पहुँच गया।

वहाँ वह थी, शिवलिंग के आधार से टिककर, गौरीपीठ पर बैठी हुई, ठीक उसी मुद्रा में जैसी मैंने पहली बार उसे चौखंभा के शिव मंदिर में देखा था। एक ही दृष्टि में मैंने कटु सत्य को समझ लिया—यह अंत था।

उसका शरीर सूख चुका था। भारी वक्ष संकुचित हो गए थे, उनके बोझ से दुर्बल जंघाओं पर झूल रहे थे। जैसे एक प्राचीन वृक्ष को दीमक धीरे-धीरे खा रही हो, वैसे ही उम्र उसे कुतर रही थी। मैं उस परिचित, गौरवशाली व्यक्तित्व के अंतिम अवशेषों को देख रहा था। फिर भी, वहाँ एक सुगंध व्याप्त थी—वही जानी-पहचानी चंदन की सुवास, जिसने मेरे बचपन की स्मृतियों को पुनः जीवित कर दिया। (सभी इंद्रियों में, गंध सबसे अधिक अतीत को पुनर्जीवित करने में सक्षम होती है।)

उसकी बड़ी, चमकती आँखें अब आधी बंद थीं, और वे मुझे गहराई से भेद रही थीं। मैं बस उसे देखता रहा, असहाय। मैं उसके पास बैठा, उसके हाथों को अपने हाथों में लिया, लेकिन कुछ कहने के लिए शब्द नहीं थे।

किसी तरह साहस बटोरकर मैंने धीरे से उसके कान में कहा, "तुम अब नहीं जा सकती। क्या तुम सुन रही हो? नहीं... मुझे अभी तुम्हारी जरूरत है। पहले से कहीं अधिक। मैं पापी हूँ।"

उसने मुझे अपने आलिंगन में भर लिया। आश्चर्यजनक रूप से, उसकी पकड़ अब भी मजबूत और जीवंत थी। उसमें कोई कमजोरी नहीं थी। उसकी पकड़ सुदृढ़, ऊर्जावान और गहरी थी, मानो वह मुझे अपना सर्वस्व देने के लिए संकल्पित हो। मैं सहायता के लिए पुकारना चाहता था, लेकिन कोई अज्ञात शक्ति मुझे टूटने से बचा रही थी।

फिर भी, एक अदृश्य साहस मेरे भीतर धीरे-धीरे बनता जा रहा था। उसका शरीर क्षीण हो रहा था, लेकिन उसकी इच्छाशक्ति की अग्नि प्रज्वलित थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि अंत निकट था। मैं व्याकुल हो उठा।

## अंतिम आसन

एक संसार जिसमें वह नहीं थी, मेरे लिए अकल्पनीय था। यद्यपि मैं स्वयं को उससे लंबे समय तक दूर रख चुका था, और इस अवधि में तंत्र की मेरी यात्रा कई प्रकार के भटकावों से गुजरी थी, फिर भी मेरे भीतर कहीं गहरे मुझे हमेशा यह अहसास था कि वह मेरे साथ थी। उसका साहस मेरा साहस था, और मैं साहसी बना; उसकी निर्भीकता और स्पष्टता मेरे व्यक्तित्व का हिस्सा बन गईं; उसकी निरंतर खोज और प्रश्नशीलता ने मुझे भी जिज्ञासु और सतत प्रयासशील बना दिया। मैं जिस ओर भी बढ़ रहा था, एक और अनुभवगम्य शक्ति मुझे गति दे रही थी। मैं एक थका हुआ तैराक था जो बस जल पर तैरते रहने के लिए विश्राम कर रहा था—यद्यपि धारा का मुझ पर नियंत्रण था, फिर भी मुझे आशा थी कि अंततः मैं अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर लूँगा और धारा को पार कर जाऊँगा।

अब वह चाहती थी कि मैं फिर से तैरूँ। हालाँकि मैं एक शिथिल आसन में बैठा था, मैं उसकी सतत पुनर्जीवन शक्ति से अवगत हो गया। वह मुझे उसी आसन में बाँध रही थी, जिसमें वर्षों पहले, जब मैं मात्र एक बालक था, उसने मुझे बाँधा था। उसने मुझसे कहा कि मैं उसे 'तैयार' करूँ। मैंने त्रिभुज के पूरे आधार को पवित्र किया; उसी विधि से जिसे वह अपनाती थी—सिंदूर और घी (पारा ऑक्साइड और पिघला हुआ मक्खन) से पवित्र कर दिया। तंत्र में पारे को एक अत्यंत शक्तिशाली माध्यम माना जाता है, और इसे शिव के 'बीजधारी वीर्य' के समान सृजनात्मक प्रभावकारी माना गया है। इसके पश्चात् मैंने एक दीप प्रज्वलित किया और धूपबत्तियाँ जलाईं। तत्पश्चात, मैंने जांघों के मध्य स्थान को लाल कनेर के फूलों से ढँक दिया।

मेरे ध्यान में वह स्थान बढ़ने लगा, यहाँ तक कि उसने मेरे पूरे अस्तित्व को, मेरी कल्पना को घेर लिया और संपूर्ण जीवन और सृजन के लिए एक दिव्य द्वार बन गया। एक प्रज्वलित आभामंडल ने मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को घेर लिया। मेरी हथेलियाँ उष्ण तरंगों को महसूस कर सकती थीं, और जितना अधिक यह गर्माहट लिपटती गई, उतनी ही अधिक दृढ़ता से मैंने उसे पकड़ लिया। कुछ समय पश्चात्, जब यह तीव्रता अपनी चरम सीमा पर थी और मैं एक चीख देने ही वाला था, तो अचानक मुझमें एक परिवर्तन आ गया।

एक शांति और सुरक्षा का भाव मेरे स्नायुतंत्र पर उतर आया। एक ठंडी आनंदमयी धारा ने मुझे पूरी तरह डुबो दिया, मेरे सम्पूर्ण अनुभूतिपरक अस्तित्व को बाढ़ की तरह भर दिया। अब हम शरीर से शरीर तक एकाकार हो चुके थे, और उसके गले में पड़ी मनकों की माला, जो हम दोनों के बीच झूल रही थी, सजीव हो उठी। मैंने उन चिनगारियों को महसूस किया जो उस ऊर्जा के पुंज से प्रकट हो रही थीं। वह कुछ मंत्रों का उच्चारण कर रही थी, जिन्हें मैं आंशिक रूप से पहचान सका—वह अपराजिता स्तोत्र का जप कर रही थी।

फिर वह मुझे दीक्षित करने में व्यस्त हो गई: "ॐ ह्रांग ह्रींग ह्रूंग ह्रैंग ह्रौंग क्षौंग ग्रः तुरु तुरु स्वाहा।"

मुझे नहीं पता कि इस बिंदु पर मैं क्यों रोने लगा, लेकिन तभी एक विचित्र घटना घटी जिसने मुझे रोक दिया। उसके ढीले और शिथिल स्तनों से दूध बहने लगा! मैंने आश्चर्यचकित होकर इसे देखा। "पीओ! पीओ!" एक कोमल आदेश सुनाई दिया। "पीओ और शक्तिशाली बनो। यह मैं हूँ। यही है। यह सदा के लिए है।"

और मैंने पिया। मैं पीता रहा, पीता रहा। मुझे नहीं पता कितनी देर तक। कितना अधिक। कुछ क्षण ऐसे होते हैं जब कोई माप मायने नहीं रखता; जब हमारे सारे मानक मिट जाते हैं। यह उन्हीं अनंत क्षणों में से एक था।

सभी शक्तियाँ, सभी ऊर्जाएँ, सभी प्रभाव स्वयं को व्यक्त करने के लिए किसी भौतिक माध्यम की खोज करते हैं। जीवन शक्ति पदार्थ नहीं है, परंतु इसे पदार्थ के माध्यम से प्रवाहित किया जा सकता है। वह दूध पदार्थ था, माध्यम था, फिर भी केवल पदार्थ नहीं था। यह उसका सार था।

यह शक्तिशाली था। उसे ज्ञात था कि मुझे उसकी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होगी। वह मुझे तैयार कर रही थी।

## श्वेत पर्दा और चित्र गृह

इस शरीर की स्थूलता हमारे चैतन्य पर इतनी प्रभावी होती है कि हम अक्सर इसकी दबाव में अपनी इंद्रियों को बाधित होने देते हैं। मांस और हड्डियों की इस दीवार के विरुद्ध हमारी सूक्ष्म ऊर्जाएँ, जैसे किसी कठोर चट्टान से टकराती प्रचंड धारा, बार-बार आघात करती हैं, पलटती हैं, झाग और उत्तेजना से भर जाती हैं, और पुनः आघात करती हैं। इस प्रक्रिया में प्रगति अवरुद्ध होती है, केवल अगले क्षण दोगुनी ऊर्जा से आगे बढ़ने के लिए। हम भूल जाते हैं कि इस भौतिक जगत में पदार्थ केवल एक अभिव्यक्ति है, जो वास्तव में अधिक सूक्ष्म अभिव्यक्तियों की आकांक्षा रखता है और शरीर को केवल एक माध्यम की तरह उपयोग करता है।

चैतन्य, जीवन, संवेदनाएँ, इच्छाशक्ति—ये सभी केवल इस जड़ शरीर में बंद किसी रहस्य को व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। वह रहस्य क्या है? वह किस प्रकार संचालित होता है? क्या केवल मनुष्य ही इस क्रियावादी प्रणाली के अधीन है? यह क्रियाएँ क्या हैं? वे कैसे होती हैं? क्यों होती हैं? कौन या क्या प्रेरणा देता है? वह ऊर्जा स्रोत कहाँ है जो हमें देखने,

सुनने, स्पर्श करने, सूंघने, आश्चर्य करने, प्रयास करने, प्रतिस्पर्धा करने, न्याय करने, वर्गीकरण करने, कविता लिखने, चित्र बनाने, पत्थर तराशने, घर बनाने, बागीचे संवारने, जहाजों, बंदूकों और परमाणु बमों का आविष्कार करने की शक्ति प्रदान करता है?

हम भूल जाते हैं कि यह शरीर ही सब कुछ नहीं है; यदि कुछ भी है, तो यह केवल एक स्पष्ट उपस्थिति मात्र है, जैसे कि किसी चित्र गृह में सफेद पर्दा। इस पर ही संसार का नाटक परिलक्षित होता है, और इस रोचक नाटक के भावनात्मक प्रभाव में लिप्त होकर, हम जानबूझकर भूल जाते हैं कि हम वास्तव में कौन हैं और हमें पर्दे पर चल रहे दृश्यों ने हँसने और रोने के लिए बाध्य किया है। इस अंधेरे कक्ष में, हम अपनी त्रिआयामी वास्तविकता को छोड़कर दो-आयामी भ्रम को स्वीकार कर लेते हैं। इस सम्मोहित कर देने वाले तमाशे में हम स्वयं को उस मृगतृष्णा के साथ जोड़ लेते हैं जो वास्तव में केवल एक छलावा है।

और यदि यह संभव है, तो क्यों न हम इस विचित्र नाटक को किसी और स्थान, किसी और दृष्टिकोण, किसी और आयाम में ले जाकर किसी चौथे आयाम की ओर उन्मुख हो जाएँ? एक स्वीकृत तीन-आयामी जगत से परे भी एक और आयाम है। हम केवल तभी उस आयाम की शक्ति को समझ सकते हैं जब हम अपने आध्यात्मिक उच्चताओं तक उठ सकें। एक चौथा आयाम अवश्य है। जिसे हम अपनी वास्तविकता मानते हैं, वह केवल एक माध्यमिक शक्ति की निर्मित माया है, जो हमें एक छायाप्रदर्शन में उलझाए रखती है। वास्तविकता हमारे पकड़ से परे छिपी रहती है।

अधिकांश लोग इस भ्रमित करने वाली संलिप्तता को माया का खेल मानते हैं। यह अवास्तविक नहीं है; यह जटिल है; और इसका सबसे बड़ा प्रभाव यही है कि यह हमें समय-समय पर मोहित और भ्रमित करती रहती है, जिससे हम सत्य को, वास्तविकता को, और अनंत को नकार देते हैं।

इस सक्रिय भागीदारी के संसार में, जहाँ जीवन और मृत्यु त्रिभुज में संतुलन बनाते हुए खेलते हैं और अस्थायी दर्शकों का मनोरंजन करते हैं, हम पूरी तरह से इस सम्मोहक माया के प्रभाव में होते हैं। जैसे गर्भ में भ्रूण जीवन द्रव्य में तैरता रहता है, जो जन्म के बाद त्याज्य हो जाता है, वैसे ही माया हमें इस संसार में तैरने की सुविधा देती है ताकि हम एक नए जन्म का अनुभव कर सकें। अब शरीर में नहीं, बल्कि आत्मा में एक नया जन्म। जब हम वास्तव में जन्म लेते हैं—यदि कभी लेते हैं—तो यह सब कुछ, जिससे हम घिरे हुए हैं, त्याज्य हो जाएगा। इस स्पष्ट झूठ को वास्तविकता मान लेना अविद्या (अज्ञान) है; और इसके वास्तविक स्वरूप को समझ लेना विद्या (सच्चा ज्ञान) है, जिसे बौद्ध धर्म में प्रज्ञा पारमिता के रूप में पूजनीय माना जाता है, और जैन धर्म में सरस्वती के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है।

मैं अपने विचारों में इतना गहरे डूबा हुआ था कि तत्कालीन परिस्थितियों से पूरी तरह से कट चुका था। लेकिन वह मेरे विचारों को ठीक वैसे ही समझ रही थी, जैसे कोई कुशल शिकारी अपने लक्ष्य के पदचिह्नों का अनुसरण करता है। आसन्न त्रासदी के भय ने मुझे भीतर तक हिला दिया था। मैंने उसे हमेशा के लिए अपना मान लिया था। मैंने आयामों के बोध को खो दिया था, और यह भूल गया था कि मेरी एलएस अनंत नहीं हो सकती। वर्षों बाद जब मैंने उसे खोज निकाला, तो पाया कि वह जीवन और मृत्यु की सीमा पर खड़ी थी, जैसे किसी प्रस्थान कक्ष के द्वार पर रुकी हुई यात्री। मैं सही से सोच भी नहीं पा रहा था।

मेरा हाथ उसके हाथों में था; हमारे शरीर निकटता से जुड़े थे; मनकों की माला हमारे बीच धड़क रही थी; लेकिन मैं इस भयावह सत्य को नकार नहीं पा रहा था कि वह मुझसे हमेशा के लिए दूर जाने वाली थी।

मैं बिखर गया। जैसे ही मेरा सिर उसके वक्ष पर झुका, मैं फूट-फूट कर रो पड़ा। मुझे उसके कोमल हाथों की उँगलियाँ अपने बालों में महसूस हुईं। उसने मेरे सिर को अपने वक्ष से और अधिक कसकर लगा लिया। मैं पश्चाताप से भर गया। गहरे दुःख की एक तीव्र लहर ने मेरी चेतना को जकड़ लिया। मैंने कठिनाई से रुक-रुक कर कहा, "मैंने तुम्हारी उपेक्षा की है, माँ। मैं रास्ते से भटक गया था। मैं दंड का पात्र हूँ; लेकिन इस बार मुझे एक मौका दो। एक अंतिम मौका।"

## अंतिम सफर

वह बोलने लगी। उसने पानी माँगा। मैंने परिचित कमंडल को उसके मुँह के पास ले गया, लेकिन उसने अपने होंठ उसमें नहीं लगाए। "कटोरी का उपयोग करो," उसने कहा। मैंने पीतल की कटोरी का उपयोग किया। उसने लंबा घूँट भरा और फिर बोली, "यदि मैं तुम्हें दंड भी दूँ, तो वह भी तुम्हारे लिए आशीर्वाद ही होगा, प्रिय। याद है काल भैरव मंदिर में हम पर पड़ने वाली सख्त सीख? यह भैरवों का मार्ग है—स्पष्ट और सच्चा, बशर्ते कि तुम अपने प्रति ईमानदार रहो। अब तक तुमने स्वयं को धोखा नहीं दिया। कोई व्यक्ति किसी और को धोखा देने से पहले स्वयं को धोखा देता है। मन के जटिल संसार में आघात करने वाला पहले स्वयं आहत होता है, हिंसक पहले स्वयं पीड़ित होता है।

"क्या तुम्हारे पास सच में कोई कारण है कि तुम इतने हताश और आत्मग्लानि से भरे हो? आत्मा सदा शुद्ध और सशक्त होती है। इसलिए उस पर निष्क्रिय पश्चात्ताप का मल मत लगाओ। अवसाद एक ऐसा विष है जो स्पष्ट सोच को नष्ट कर देता है। मृत्यु ही सत्य है; एकमात्र सत्य। मृत्यु ही समय का पूर्ण उद्घाटन है। मृत्यु का सामना करो और उसका सम्मान करना सीखो। कभी हार मत मानो, कभी झुको मत, जीवन के स्वामी के आगे कभी सिर मत झुकाओ। मृत्यु उस रथवान की तरह है, जो जीवन को 'नश्वरता' से 'अनश्वरता' की ओर ले जाता है। यह मत सोचो कि इस भौतिक जीवन में क्षणिक घटनाएँ आत्मा की वास्तविक शक्ति को समाप्त कर सकती हैं।

"संभावना एक सोया हुआ बीज है, जो सही देखभाल से पुनः जाग्रत हो सकता है। इस समापन के संसार में कुछ भी वास्तव में समाप्त नहीं होता। उठो, संघर्ष करो, जागो, क्योंकि जीवन सतत प्रयास की प्रक्रिया है।

"नाव हिल सकती है, लेकिन कुशल संचालन से मंज़िल तक पहुँचा जा सकता है। जीवन में कुछ भी हमेशा के लिए खोया नहीं जाता, और कोई भी नुकसान अंतिम नहीं होता। हर पतन में एक उठने की संभावना निहित होती है। जागो, हिम्मत करो, संघर्ष करो और प्रयास करो। प्रयास सृजनशीलता से भरपूर होता है।

"मुझे पता है, और भला किसे पता होगा? मुझे पता है कि तुम्हारे लिए ये पाँच साल अत्यधिक कठिन रहे हैं। तुम्हें अनेक प्रलोभनों के दौर से गुजरना पड़ा। तुमने कई बार दुर्बलता का अनुभव किया, लेकिन यह भी याद रखो कि कितनी बार तुमने अपनी आत्मशक्ति से विजय प्राप्त की है। तुम्हें आसनों की कला में दीक्षित किया गया था; तुम निर्भीक वीरव्रत के मार्ग पर थे। और मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं हमेशा रहूँगी।

"ये पाँच साल कठिनतम रहे हैं, लेकिन इन्हीं वर्षों ने तुम्हें गढ़ा भी है। जीवन यात्रा में कठिनाइयाँ केवल तुम्हारी परीक्षा नहीं लेतीं, बल्कि तुम्हें आकार भी देती हैं, प्रशिक्षित भी करती हैं। तुम इस दलदल से बाहर आ चुके हो। फिर क्यों स्वयं को निराश मानते हो? इस चंचल और अनिश्चित जीवन में कुछ भी अंतिम नहीं है। मेरे करीब आओ। तुम मुझे भूल नहीं सकते। जब तक तुम स्वयं को नहीं भूलते, तब तक गुरु को भुलाया नहीं जा सकता।

"गुरु द्वारा बोया गया बीज शिष्य की आत्मा में अंकुरित होता है; और इसकी गर्भावधि निश्चित नहीं होती, लेकिन इसका नाश कभी नहीं होता। यदि इस जीवन में नहीं, तो किसी और जन्म में, किसी और रूप में, यह बीज अवश्य अंकुरित होगा। यदि यह सत्य न होता, तो यह संसार और उसकी प्राकृतिक व्यवस्थाएँ टूटकर बिखर जातीं।

"मत रोओ। यह टूटने का क्षण नहीं है। क्या मैं एक अस्थायी विश्राम गृह से एक स्थायी निवास की ओर नहीं जा रही हूँ? सच यह है कि मैं कुछ समय के लिए तुम्हारी दृष्टि से दूर जा रही हूँ, लेकिन मैं तुम्हारे अस्तित्व में समाहित हो जाऊँगी। यह शरीर पंचतत्वों का ऋणी है, और यह ऋण चुकाना ही होगा। मृत्यु में हम एक हो जाते हैं। जीवन हमें अलग करता है, लेकिन मृत्यु हमें बराबरी पर ला देती है। मुझसे दूर मत रहो। मेरा अंतिम आशीर्वाद लो। पास आओ। मैंने तुम्हें इसी क्षण के लिए बुलाया था। क्या तुम नहीं समझते?"

कुछ देर रुककर उसने साँस ली। मैंने उसे फिर से कटोरी दी, और उसने थोड़ा और पानी पिया।

दिन निकट आ रहा था, और दूर से घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अगस्त्येश्वर मंदिर में श्रद्धालु अपने अनुष्ठान में व्यस्त थे। जीवन अपनी गति से चल रहा था, इस टूटी-फूटी कुटिया में जो हो रहा था, उससे अनभिज्ञ। तभी अचानक, उस अंधेरे गर्भगृह में, जहाँ लिंगम एक दिव्य नाटक की अंतिम गवाही दे रहा था, एक दिव्य प्रकाश फूट पड़ा।

एलएस ने अपनी आँखें खोलीं, अपने विदाई के क्षणों में साँपों की ओर देखते हुए कहा, "जाओ, स्वतंत्रता की ओर रेंगो, लेकिन मुझे मत भूलना।"

यह कहते ही मैंने उसके चेहरे को देखा, जो एक प्रकाशमंडल से घिरा हुआ था। वह दृश्य मेरे लिए चौंकाने वाला था। और तभी, उसने शांत स्वर में कहा, "मुझे पूर्ण रूप से अपने आलिंगन में लो, जैसे पहले लिया करते थे। इस बार मैं अपने पैर तुम्हारे चक्र के चारों ओर नहीं डाल सकूँगी, लेकिन तुम कर सकते हो। और तुम करोगे। वस्त्र हटा दो, जल को स्पर्श करो, और आओ। इस अंतिम बार, इस सबसे गहन क्षण के लिए। यह स्मरण रहेगा।"

अचानक मैंने उसे रोका। "मैं पहले जैसा नहीं रहा, माँ," मैंने कहा। "अब मैं उतना पवित्र और सरल नहीं रहा।"

उसने मुझे बोलने नहीं दिया। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और काँपती आवाज़ में कहा, "समय जा रहा है। हमारे पास बहुत लंबा सफर बाकी है। पास आओ। और पास। तुम पछताओगे नहीं। आओ, आओ।"

और मैंने पछताया नहीं। और अब भी पछतावा नहीं है। समय बीत गया, जैसे आलिंगन में बँधे दो अस्तित्व अनजानी दिव्यता में समाहित हो गए हों। स्मृति के सारे चिह्न एक अथाह सागर में विलीन हो गए। वह अंतिम मिलन, वह अंतिम संवाद, वह अंतिम यात्रा, जिसने मेरे समस्त अस्तित्व को बदल दिया।

मैं अपने मन की स्थिति को लेकर अनावश्यक रूप से चिंतित था। मुझे अपने शरीर के अपवित्र होने का अहसास था। कुछ ही समय पहले यह वासनाओं की दलदल में डूबा हुआ था। लेकिन अब मैं निश्चिंत था। मैं पुनर्जन्मित अनुभव कर रहा था।

मैंने उसके हाथों को अपने सिर पर आशीर्वाद देते हुए महसूस किया। "निराश मत हो," उसने कहा। "मैं तुम्हें कभी छोड़ूँगी नहीं।"

जैसे ही उसने मुझसे कुछ और कहने की कोशिश की, मैं भयभीत होकर देखता रहा। उसका शरीर ढीला पड़ रहा था। धीरे-धीरे, उसके अंग शिथिल हो रहे थे। मैंने उसे सावधानीपूर्वक धरती पर लिटा दिया। साँप लौट आए थे, उसके पास लिपटने लगे थे। उसके सिर के चारों ओर प्रकाश का मंडल अब भी बना हुआ था। मैंने उसे फिर से कुछ पानी दिया।

## अंतिम शिक्षा

अचानक वह एक नई ऊर्जा के साथ बोलने लगी।

"आखिरकार तुम लौट आए। यह आश्वस्त करने वाला है। मैं प्रतीक्षा कर रही थी। और मैं प्रतीक्षा करती। मुझे अब तुम्हारी ज़रूरत थी। मैं उस चीज़ को त्याग नहीं सकती थी जो मेरी नहीं थी। मेरे पास आओ। और निकट आओ। ऐसे ही हमने आरंभ किया था। हमने एक दिशा में शुरू किया था, अब इसे उलटना होगा। अब तुम्हें, मेरी जगह, सक्रिय होना होगा। सक्रिय बने रहो। तुम मेरी क्रियाशीलता के स्रोत हो। केवल इसका उपयोग भलाई के लिए करो।

"भलाई क्या है? इसकी चिंता मत करो। भलाई वही है जब तुम अच्छा महसूस करो। आनंद सृजित करने में, आनंद फैलाने में। भगवान की सबसे महान रचना एक साधारण फूल है, एक छोटी तितली है; मनुष्य की सबसे महान उपलब्धि यह हो सकती है कि वह किसी की आँसू की एक बूँद पोंछ दे और उसकी जगह एक मुस्कान ला दे। यह हमेशा भलाई होती है। गहरे दार्शनिक वाद-विवाद में मत पड़ो। शब्द कहीं नहीं ले जाते।

"जीवन को संभालो, मृत्यु अपने आप सँभल जाएगी। एकमात्र सुनिश्चित चीज़, जिसे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं, वह मृत्यु है। जीवन मिट्टी में है; जीवन जल, वायु और पृथ्वी में है। जो इन तत्वों के निकट रहते हैं, वे ही ईश्वर के सच्चे संतान हैं। उनके निकट रहो। उनका पौरुष वास्तविक पुरुषार्थ है; प्रकृति भी ज्वालामुखी स्तर पर अपनी सबसे प्रभावी ऊर्जा को संचित रखती है, जो उचित प्रज्वलन और उत्तेजना पर कभी भी विस्फोट कर सकती है। क्षोभ (आवेग उत्पन्न करने वाली ऊर्जा) को आह्वान करना आवश्यक है। पुरुष का स्वभाव बाहर से विद्युतमय होता है, लेकिन भीतर से चुंबकीय। प्रकृति का स्वभाव इसके विपरीत होता है—बाहर से चुंबकीय और भीतर से विद्युतमय। जब ये दोनों एक साथ होते हैं, तो उनके घर्षण से उत्पन्न ऊर्जा मानव व्यक्तित्व में शक्ति का संचार करती है, और यह तांत्रिक शक्ति का आशीर्वाद बन जाती है। यह सबसे अधिक सादगी में, मिट्टी के सीधे-साधे लोगों, जनजातियों, और श्रमिकों में पाई जाती है। रूप, शिष्टाचार और औपचारिकता के बंदी इस साधना में समर्पित होना कठिन पाते हैं। उनका चैतन्य अपने ही कल्पित बिंबों में उलझा रहता है। मानव के भविष्य के निर्माण के लिए, हमारी आंतरिक आत्माओं का पुनर्निर्माण प्रकृति की सरल रोशनी में करना आवश्यक है।

"जिसे तुम उच्च, महान, विशेषाधिकार प्राप्त मानते हो, वे केवल रंगमंच की कठपुतलियाँ हैं। वे आते हैं और चले जाते हैं। लेकिन मिट्टी बनी रहती है, पृथ्वी बनी रहती है, और इस धरती पर किया गया कार्य बना रहता है। ये कभी नहीं बदलते। मिट्टी के सरल लोगों के साथ रहो। वे जीवित रहेंगे। उनका ही तंत्र है। वे संतुष्टि का आनंद लेते हैं। उनके जीवन की दृष्टि सरल होती है। न कि उन लोगों की, जिन्हें तुम विशेष, उच्च मानते हो।

"तुम क्यों रो रहे हो? क्या मैंने तुम्हें इसके लिए तैयार किया था? मैं आती हूँ और मैं जाती हूँ। तुम्हें ही मुझे एक भव्य विदाई देनी है। फिर भी, यह विदाई नहीं है। मैं हमेशा तुम्हारे निकट रहूँगी। केवल सच्चे रहो, ईमानदार रहो, हमारे संकल्पों और आसनों के प्रति निष्ठावान रहो। मैं तुम्हारी हूँ, हमेशा के लिए। क्या तुम मुझे अपने साथ रखोगे? क्या तुम मुझसे यह वादा कर सकते हो?"

माला में जैसे प्राण आ गए थे, और वे हिलने लगीं। मैं यह देखकर भयभीत था कि मोतियों के ढेर के बीच दो जीवित साँप लहराते हुए अपनी जगह बना रहे थे। मैं पहले भी उन्हें देख चुका था।

उसका शरीर आधा मुझ पर झुका हुआ था, इसलिए मैं उन जीवों को महसूस किए बिना नहीं रह सका। मेरे स्वाभाविक कंपन, जिसे उसने भी महसूस किया होगा, उसे हल्की मुस्कान में तोड़ दिया।

उसने अपना हाथ उन पर फेरते हुए मुझे उनकी निरापदता और मित्रता का आश्वासन दिया। "मुझे नहीं लगता कि तुम डरे हुए हो।" वह मुस्कुराई, और फिर उसने मुझे देखा।

उस दृष्टि का वर्णन कैसे करूँ? एक माँ की दृष्टि।

मुझे पता था कि वह मुझे इस तरह अंतिम बार देख रही थी। वह अपने समस्त आभामंडल और आशीर्वाद को मुझमें संचारित कर रही थी। मेरी आँखें अविरत आँसुओं से भर गईं। मैं उन साँपों से डरना भूल गया।

जब प्रेम प्रबल होता है, तो प्रेम ही प्रमुख रहता है। अन्य भावनाएँ जैसे कोहरे की तरह सूरज के सामने घुल जाती हैं। भय, द्वेष, ईर्ष्या, लोभ, क्रोध—सभी नकारात्मक भावनाएँ ऐसे प्रेम की तीव्र शक्ति से समाप्त हो जाती हैं। पुरुष पहले क्यों नहीं प्रेम करना सीखते, बजाय सुधारने के प्रयास के? लेकिन ऐसा प्रेम धैर्य और क्षमा की माँग करता है। सबसे अधिक, यह एक निस्वार्थ अमूर्तता की माँग करता है। यह जुड़ाव के साथ अलगाव है। पूर्ण क्षमा करने के लिए अनासक्ति आवश्यक है। जो जुड़े होते हैं, वे पहले से ही बंधे होते हैं, गुलाम होते हैं। जो स्वयं स्वतंत्र नहीं, वे अनासक्त कैसे हो सकते हैं? यदि वे पूर्ण रूप से अनासक्त नहीं, तो उनका प्रेम भी मुक्त नहीं होगा। स्वतंत्र प्रेम का अनुभव शांति का अनुभव देता है। मैं निश्चिंत हो गया।

"ये मेरे गुप्त गुरु हैं," उसने साँपों की ओर इशारा करते हुए कहा, "और वे भी अब मुझे विदाई देने आए हैं। वे जानते हैं कि मैं कहाँ जा रही हूँ; और वे भी मुझे अकेला नहीं छोड़ेंगे, मेरे जीवन के पार भी। मेरे प्रियजन।"

उसने अपना हाथ फिर से उन पर फेरा। "यह कोई संयोग नहीं," उसने जारी रखा, "कि आध्यात्मिक अनुभूति में बार-बार साँपों का बिंब आता है। कुंडलिनी को एक साँप के रूप में चित्रित किया गया है; कुंडलिनी जागरण को गहरी नींद से एक सर्प के खुलने के रूप में देखा जाता है। शिव, तारा और कई अन्य वाममार्गी देवताओं जैसे गणेश भी साँपों से जुड़े हैं। हिंदू ही इसमें अकेले नहीं हैं। अन्य संस्कृतियों में भी देवता साँपों से जुड़े हैं।"

"क्या तुम पूछना चाहते हो? कोई प्रश्न? कोई संदेह? अभी पूछो, या फिर कभी नहीं।"

मुझे पता था कि जीवन के दीपक के बुझने से पहले वह एक बार प्रज्वलित होता है। एलएस में अचानक ऊर्जा का विस्फोट देख मैं प्रसन्न होने के बजाय और अधिक दुखी हो गया। वह जा रही थी... जा रही थी।

## चेतना की भूमि से निर्वासन

स्वर मौन हो चुका था। दोपहर का सूरज अस्तित्व की हर चीज़ को जलाने पर तुला था। दूर कहीं एक जोड़ी कठफोड़वे अपनी टकराहट भरी बातचीत कर रहे थे। एक फेरीवाला पुकार रहा था, कुल्फी मलाई... कुल्फी मलाई...

"मुझे बहुत कुछ पूछना था," मैंने कहा। "बहुत कुछ सीखना था। मैं अभी भी कुछ नहीं जानता। मैं अभी भी एक अनिश्चित भूमि में हूँ। योगवासिष्ठ की संतुलन और संतोष की अवस्था से मैं कितना दूर हूँ। कितनी आसानी से मैं बहक गया; मैंने भूल की। मानव शरीर के प्रति मेरा सम्मान, स्त्री में स्थित शक्ति-सिंहासन के प्रति मेरा आदर, प्रतिकूलताओं के विरुद्ध मेरी समता बार-बार क्षीण होती गई। मैं अभी भी चेतना की भूमि से निर्वासित हूँ। मुझे अभी तुम्हारी बहुत आवश्यकता थी; मैं अभी भी प्रश्नों का एक पुलिंदा मात्र हूँ। मेरा कोई और मित्र नहीं है। अब मैं क्या पूछ सकता हूँ? मैं कैसे तुम्हारे अंतिम शांति के क्षणों को छीन सकता हूँ? ... ओह, यदि मैं स्वयं को पूरी तरह असहाय महसूस नहीं करता।" मैं चीख उठा।

"नहीं, तुम नहीं करते। और कभी नहीं करोगे," उसने आश्वस्त किया। "शांति के लिए कोई 'अब' या 'तब' नहीं होता। शांति, शांति होती है। या तो हमेशा होती है, या कभी नहीं। शांति खंडों में नहीं होती। शांति पूर्ण होती है। चारों ओर देखो। तुम देखोगे कि पश्चिम से, जहाँ सूरज रात में सोने चला जाता है और जीवन ठंडा हो जाता है, वहाँ से सोए हुए लोगों की शांति पृथ्वी पर उतरती है; यह ढकी हुई चेतना की शांति है; मृत्यु की शांति।

"लेकिन यह स्वयं अशांत है। इतनी अशांत कि यह मानवता के लिए किसी काम की नहीं। यदि यह स्वयं अशांत है, तो यह दूसरों को शांति कैसे दे सकती है?

"भविष्य की दुनिया व्यवस्थित शांति चाहती है। लेकिन व्यवस्थित शांति, शांति नहीं होती। हमें शांति की मूल प्रकृति को अर्जित करना होगा; मूलभूत शांति। यह वही शांति है जो प्रातःकालीन सूर्य में एक झील की सतह पर प्रतिबिंबित कमल की होती है। शांति प्रेम की अवस्था है। प्रेम के बिना कोई शांति नहीं हो सकती। शांति संपूर्ण होती है; शांति शाश्वत होती है; शांति निर्लिप्त होती है; शांति स्वयं अपनी रक्षा करती है, अपनी शक्ति होती है। कोई शांति की रक्षा नहीं कर सकता। यह एक खोखला दावा लगता है। शांति आत्म-संरक्षित होती है।

"शांति हृदय की होती है; मस्तिष्क की नहीं। मनुष्य केवल मस्तिष्क के उपयोग से शांति प्राप्त नहीं कर सकता। महसूस करो... महसूस करो... महसूस करो... अनासक्त महसूस करो। यही एकमात्र उपाय है।

"जिस शांति की मैं बात कर रही हूँ, वह आंतरिक शक्ति की शांति है। मेरी शांति तुम्हारे साथ है, इस संसार के साथ, ब्रह्मांड के साथ, 'अ-ब्रह्म-स्तंभ-पर्यंतम्' (विस्तार, विस्तार, जब तक तुम सृजन के गर्भ और बाहरी आकाश तक नहीं पहुँचते) जैसा कि कहा गया है। मैं यहाँ हूँ। मैं यहाँ नहीं हूँ। मैं हूँ क्योंकि मेरा शरीर है; फिर भी मैं इस शरीर से कहीं अधिक विशाल हूँ, मानव समय की माप से कहीं परे फैला हुआ हूँ। मैं आने वाली हूँ; जैसे मैं जाने के लिए आई थी। मेरे पास संपूर्ण समय है; और मेरे पास कोई समय नहीं है। जब तक सूरज उदय नहीं होता... पूछो... पूछो। संकोच मत करो; मत रोको। तुम क्या खोज रहे हो?"

## आभा

धीरे-धीरे कमरे के भीतर घनी होती छायाएँ जीवंत होने लगीं, और मैंने देखा कि एक प्रकार की चमक उसके क्षीण शरीर को आवृत कर रही थी। उसके सिर के चारों ओर गोल और विशाल, यह आभा उसके पैरों की ओर जाकर पतली हो गई थी, जब तक कि मुझे ऐसा न लगा कि वह किसी विशाल बरगद के पत्ते पर पड़ी हुई थी।

तब से मैंने आभाओं के बारे में बहुत कुछ सीखा है और प्लाज़्मा की इस रहस्यमयी प्रक्रिया का अध्ययन किया है। मैंने यूरोप और अमेरिका, विशेष रूप से मेक्सिको में, इस विषय पर किए गए प्रयोगों का गहन अध्ययन करने में कई समर्पित

घंटे बिताए हैं। लेकिन उस संध्या मैं स्वयं भी इस आभा से घिरा हुआ था। वास्तव में, मैं स्वयं इस आभा की सुरक्षा के भीतर बैठा था, उस दिव्य प्रभामंडल में जिसे संतों के लिए समर्पित भक्त 'हैलो' कहते हैं।

जैसे-जैसे इस आभा का क्षेत्र विस्तृत हुआ और कमरे की मंद रोशनी इस दिव्य चमक से जीवंत होने लगी, मैंने देखा कि वे दोनों साँप व्याकुल हो रहे थे। वे धीरे-धीरे उसकी गर्दन से खुलते गए और उसके शरीर से सरकते हुए मेरी देह पर विश्राम पाने का प्रयास करने लगे।

जब मैं बच्चा था, वाराणसी की गलियों में घूमने वाले पेशेवर सपेरों से मैं विभिन्न प्रकार के साँप उधार लेता था। मैं उनके पतले, चपटे, सर्पीले शरीर की विद्युतमय, संवेदनशील, पेशीय पकड़ को पहचानता था और जल्दी ही यह भी समझ गया कि उनकी हरकतों में एक विशेष पद्धति थी। वे दो शरीरों को एक में लपेटना चाहते थे और नितंब जोड़ के चारों ओर दबाव उत्पन्न करना चाहते थे।

## लता साधना

मेरी आँखें फैल गईं। मैंने उसकी ओर देखा। एक हल्की मुस्कान उसके पीले होठों पर चमक उठी, जो अब और अधिक गहरी, अभिव्यक्तिपूर्ण हो चुकी थी।

"देखो; मेरे मित्र कितने शांत हैं। यह शांति की अंतिम परीक्षा है। तुम शांत हो। शांति और प्रेम तुम्हारी सबसे विश्वसनीय शक्तियाँ होंगी, यदि तुम अहंकार और ईर्ष्या से मुक्त रह सको। शक्ति तुम्हारी हो सकती है, यदि तुम इसे केवल शांति लाने के लिए समर्पित कर सको। देखो स्वयं, साँप तुम्हें उतना ही प्रेम करते हैं जितना मुझे। यही परीक्षा है।"

संस्कृत कितनी सटीक भाषा है। एलएस की कही बातों का अनुवाद करने के लिए मुझे अंग्रेजी में लंबे वाक्य लिखने पड़ते हैं, फिर भी उसकी बंगाली (जो संस्कृत जैसी ही संक्षिप्त और सटीक है) कितनी सारगर्भित थी। यह अंतिम वाक्य, उदाहरण के लिए, बंगाली में इस प्रकार होता: "शांति पाबि, जोदि अहं भाव न थाके।"

"यही लता साधना का परम रहस्य है, स्त्री पुरुष के शरीर को एक लता की तरह लपेटती है, ठीक वैसे ही जैसे ये साँप। मानव शरीर में वासना रेंगती हुई प्रेम और समझ में परिवर्तित हो जाती है। यही शंकर का तीसरे नेत्र से काम का दहन करना है। तुम जानते हो वह कथा। यही साधना का अंत है। साँप को मित्र की तरह शरीर से लिपटे रहने दो।

"क्या तुमने लता साधना के रहस्यों को नहीं खोजा था? नर-मादा आसन जो लंबे समय तक जुड़े रहते हैं, वे इस साधना का एक अंग हैं। शवासन भी लता साधना का एक प्रकार है। क्या तुम यह सब नहीं जानना चाहते थे?

"उन्हें देखो, नर और मादा। ओह, वे तुम्हारे शरीर पर दो केंचुओं की तरह, प्रार्थना में जुड़े दो हाथों की तरह पड़े हैं, फिर भी कितने शक्तिशाली हैं। जीवन में मृत्यु, मृत्यु में जीवन।"

मैं सोच रहा था कि वह कैसे जानती थी कि मेरे मन में क्या चल रहा था। लेकिन मैं मूर्ख था। मुझे उसके विषय में विस्मय करना छोड़ देना चाहिए था। विज्ञान उसकी इन क्षमताओं के लिए कोई स्पष्टीकरण दे सकता था, फिर भी वह स्वयं विज्ञान से परे थी। वह प्रज्ञा थी, अतिविज्ञान थी।

## लता साधना और काम

"मनुष्य जिन भावनाओं से पीड़ित होता है," उसने समझाया, "उनमें से काम और काम-प्रधान भावनाएँ सबसे अधिक बलिदान की माँग करती हैं। यह सबसे अधिक माँग करने वाली और सबसे साहसी भावना है; यह स्वार्थपरक भी है, भूख के बाद सबसे अधिक। यह स्वयं को सबसे अधिक पूजती है, और अपने आनंद और परिपूर्णता को साझा करने से घृणा करती है। यह सबसे अधिक वांछनीय है, और सबसे अधिक खेदजनक भी। यह सृजनशील है, यह विनाशकारी है। यह आनंद है, यह दुःख है। काम को प्रणाम करो, यह 'आह्लादिनी' शक्ति है।

"कोई भी भावनात्मक उथल-पुथल गर्मी उत्पन्न करती है। गर्मी दहन का प्रभाव है; जब तक कोई वस्तु जलती या नष्ट नहीं होती, तब तक गर्मी उत्पन्न नहीं हो सकती। दूसरे शब्दों में, जब भी शरीर में अत्यधिक गर्मी (जैसे क्रोध में) उत्पन्न होती है, तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शरीर में कुछ महत्वपूर्ण तत्व जल रहे हैं। (कोई दहन नहीं, तो कोई गर्मी नहीं, और इसका विपरीत भी सत्य है।)

"वह तत्व जो किसी भावनात्मक असंतुलन से जलता है और गर्मी उत्पन्न करता है, शरीर के भीतर स्थित एक महत्वपूर्ण जैविक तंत्र है। इन्हें गूढ़ कोश (गुप्त कोश) या आशय (कोशिका-ग्रंथियाँ) कहा जाता है। ये कोश निरंतर बदलते रहते हैं, नए कोशों को स्थान देते हुए। इन परिवर्तनों की गति शरीर को गर्म रखती है। भोजन, श्वास, जल और नमी इन कोशों को बनाए रखने के माध्यम हैं, और निरंतर संतुलित आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं, बावजूद इसके कि इनका उपभोग निरंतर होता रहता है। हम वृद्ध होते हैं और क्षीण हो जाते हैं क्योंकि उपभोग किए गए कोशों को प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया धीरे-धीरे निष्क्रिय हो जाती है।

"अतः इन कोशों का संतुलित उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। अचानक भावनात्मक विस्फोट, जैसे कि मौन पीड़ा (जो सुप्त अग्नि की तरह अधिक हानिकारक होती है), कोशों को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर सकती है। कभी-कभी कोशों की आपूर्ति प्रणाली माँग के अनुरूप कार्य करने में विफल हो जाती है, जिससे स्नायु तंत्र की असफलता होती है और शरीर के कुछ अंगों में लकवा तक हो सकता है। यहाँ तक कि पागलपन, जो मस्तिष्क तंत्र की शॉर्ट-सर्किटिंग मात्र है, भी इन्हीं विफलताओं से उत्पन्न हो सकता है। भावनाओं (जिन्हें वासना, क्रोध आदि कहा जाता है) का नियंत्रण प्रेम और शांति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

"यह समझना कठिन नहीं है कि मनुष्य के लिए स्नायु तंत्र के संतुलन को बनाए रखना कितना आवश्यक है, जो आंतरिक शांति बनाए रखने का एक चरण है। केवल वही व्यक्ति शक्तिशाली होता है जो शांति से परिपूर्ण होता है। केवल वही शांति स्थापित कर सकता है। संत वह है जो तूफानी रात में दीपक की तरह शांति का प्रकाश फैलाता है।

"किन्तु जब भावनाएँ स्नायु तंत्र पर अत्यधिक दबाव डालती हैं, तो काम और काम-संबंधी भावनाएँ सृजनात्मक ऊर्जा के प्रवाह को बाधित कर देती हैं। चूँकि इस शक्ति की हानि सबसे गंभीर रूप से जीवन ऊर्जा को प्रभावित करती है, अतः इस ऊर्जा के सही उपयोग और उसके दुरुपयोग की रोकथाम की विधि सीखनी आवश्यक है। प्रेम समझने का नाम है। विशेषज्ञों से परामर्श लेना चाहिए और अनुशासनपूर्वक अभ्यास करना चाहिए।

"जो व्यक्ति घोड़ा या वाहन चलाना चाहता है, उसे उसे नियंत्रित करना आना चाहिए। यही कारण है कि तेज़ रफ्तार वाहन चलाने के लिए लाइसेंस आवश्यक होता है। यदि एक वाहन चलाने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता होती है, तो एक आध्यात्मिक व्यक्ति को भी इस ऊर्जा के नियंत्रण का ज्ञान आवश्यक होता है, जिसे 'काम शक्ति' कहा जाता है।

"जिस प्रकार कोई व्यक्ति मशीन पर नियंत्रण प्राप्त किए बिना उसे पूरी तरह से नहीं चला सकता, उसी प्रकार इस सबसे महत्वपूर्ण शक्ति—यानी काम शक्ति—का पूरा नियंत्रण तब तक संभव नहीं जब तक इसे अत्यधिक समीपता से नहीं समझा जाता।

"केवल इस शक्ति के साथ घनिष्ठ संपर्क बनाए रखने से ही इसे पूरी तरह से आत्मसात किया जा सकता है और पूर्ण शांति प्राप्त की जा सकती है।

"काम की गहराइयाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व की सबसे भीतरी परतों तक फैली हुई हैं; और उच्चतम आध्यात्मिक साधकों को भी यह भावना बार-बार चुनौती देती है, भले ही वे सोचें कि उन्होंने इसे जीत लिया है। अनुशासनबद्ध और नियमित साधना के माध्यम से ही इसके अवरोधों से पूर्ण मुक्ति पाई जा सकती है। तांत्रिक मार्ग को इस शक्ति के ज्ञान और नियंत्रण के लिए सबसे प्रभावी और सुनिश्चित उपाय माना गया है। यह केवल शारीरिक पक्ष को धार्मिक दृष्टिकोण से अपनाने के माध्यम से किया जा सकता है।

"संयम (अभिग्रह) प्रकृति के उपहारों के सर्वोत्तम उपयोग का मार्ग नहीं है। 'जो मूर्खतापूर्वक शरीर को अत्याचार सहने के लिए मजबूर करते हैं, वे वास्तव में दानव हैं'—(गीता)। प्रकृति ने मानव शरीर में कुछ भी व्यर्थ नहीं बनाया है। योग में संयम की नीति अपनाकर हम ईश्वर और उनकी संतुलित सृष्टि का अपमान कर रहे हैं। वास्तविक योग 'नियंत्रण' सिखाता है, अर्थात् नियंत्रण का उपयोग—और उत्तम उपयोग। नियंत्रण का अर्थ अस्वीकृति या निषेध नहीं है। ब्रह्मचर्य इस नियंत्रण को सीखने की प्रक्रिया है।

"प्राकृतिक क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग उन्हें नियंत्रित और समझदारी से अभ्यास में लाने में है। एक नियंत्रित मन स्वयं को सही उपयोग से आनंदित करता है। यह अस्वीकार, निषेध या संयम नहीं है।

"काम की शक्ति, जो स्वयं को सृजनात्मक तृप्ति के माध्यम से आनंदित करती है, का दुरुपयोग मानसिक और शारीरिक प्रणाली के लिए वैसा ही विनाशकारी है, जैसे बैटरी के भीतर तांबे की प्लेटों का गलत उपयोग उसे नष्ट कर देता है। यदि इस शक्ति का दुरुपयोग, अनुपयोग, या अति-उपयोग किया जाए, तो यह मानवता के लिए ईश्वर द्वारा दी गई सबसे महान शक्ति को पूरी तरह और अपूरणीय रूप से क्षति पहुँचा सकता है। चूँकि काम परम आनंद देता है, इसलिए केवल मनुष्य ही, अन्य किसी प्राणी से अधिक, इस शक्ति का अनियंत्रित उपयोग करके अपनी अंतिम बूँद तक आनंद निकालने का प्रयास करता है। यह आत्मघाती गलती है। वास्तव में यह शरीर और मन का आत्महत्या है।

## मनुष्य ने मनुष्य को क्या बना दिया

"देखो कि मनुष्य ने स्वयं को और इस संसार को अपने भटके हुए और गलत दिशा में लगाए गए उत्साह के माध्यम से क्या बना दिया है। देखो प्रकृति के इस महान खज़ाने और प्राकृतिक संसाधनों को। मनुष्य के लालच और अधीरता ने इन खज़ानों के हर विभाग को अंधाधुंध शोषण से लगभग नष्ट कर दिया है। यहाँ तक कि पशु और सामाजिक जगत भी इससे अछूते नहीं रहे। हमनें प्राकृतिक जीवविज्ञान, पारिस्थितिकी और भूविज्ञान के संतुलन को क्या बना दिया, जो मनुष्य को उसकी अस्तित्व की सबसे आवश्यक आवश्यकताओं, जैसे कि शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन और शुद्ध जल प्रदान करता था। अब हमनें उनका क्या हाल कर दिया है।

"यह बर्बरता यहीं नहीं रुकती। देखो कि हमने अपने स्वयं के शरीर-मशीन के साथ क्या किया है। हम इसे सुलेमान और मंदाता के समय से ही गलत तरीके से उपयोग कर रहे हैं। हम अपने इंद्रियों की अवहेलना के कारण अत्यंत दयनीय रूप से कार्य कर रहे हैं। हम या तो अधिक उपयोग करते हैं या कम, और दोनों ही मामलों में हम इसका दुरुपयोग करते हैं, असंतुलन पैदा करते हैं और इसे अव्यवस्थित कर देते हैं। उल्लू, गिद्ध, बाज हमसे अधिक देख सकते हैं; कुत्ता हमसे अधिक सटीक गंध पहचान सकता है; साँप, मधुमक्खी, मछली की सुनने की क्षमता हमसे अधिक तीव्र होती है। उड़ने वाले पक्षियों और शिकार करने वाली मधुमक्खियों की संवेदनशीलता आश्चर्यजनक रूप से विद्युत-चुंबकीय होती है। मानव शरीर को भी इस विद्युत-चुंबकीय सुरक्षा कवच से सुसज्जित किया गया था ताकि वह संवेदनशील संचार को सक्षम बना सके; लेकिन हमारे अपने ही अनुचित उपयोग और दुरुपयोग के कारण यह सुरक्षा कवच कुंठित और अवरुद्ध हो गया है। हम चमत्कारी पुरुषों की शक्तियों की तलाश करते हैं, जबकि हम स्वयं चमत्कारों के भंडार बन सकते थे, क्योंकि हमें स्वाभाविक रूप से संचार और ज्ञान के एक रेडियोधर्मी क्षेत्र की संभावना से भरपूर बनाया गया था। केवल योगिक प्रशिक्षण ही हमें हमारी खोई हुई इंद्रियों को पुनः प्राप्त करने और स्वाभाविक तथा स्वतः स्फूर्त पूर्व-ज्ञान की क्षमता से प्रेरित कर सकता है।

## सर्प का प्रतीक

"ये साँप भी," उसने जारी रखा, "जानते हैं कि क्या होने वाला है। वे अब बेचैन हैं; और तुम्हारी ही तरह वे भी मुझसे चिपके हुए हैं। इसी प्रकार वे विदाई देते हैं। वे तुम्हारी तरह शोक नहीं मनाते। तुम क्यों शोक मना रहे हो? क्या तुम्हें यह एहसास नहीं कि मैं एक कहीं अधिक बेहतर स्थान की ओर जा रही हूँ? मनुष्य की उच्चतर संभावनाएँ इस जीवन से प्रस्थान के साथ खुलती हैं। चक्र को आगे से आगे घुमाते रहना पड़ता है। केवल चक्र के साथ दौड़ते हुए ही हम बेहतर संभावनाओं के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। बिना चक्र को गतिशील किए कोई मुक्ति नहीं, कोई शांति नहीं।"

मैं रो रहा था। उसने यह महसूस किया। वह मुश्किल से अपने हाथ उठा सकती थी; लेकिन उसके चारों ओर की आभा की गर्मी और तीव्रता बढ़ रही थी। किसी तरह अब मुझे वह रोशनी अपने चारों ओर लिपटी हुई महसूस हो रही थी।

वह लगभग मेरी बाहों में थी। मैं उसे अपने शरीर से जितना हो सके उतना निकट पकड़े हुए था। स्वाभाविक रूप से, वह केवल उन माला से आवृत्त थी, जो शंखों, हड्डियों, बीजों, क्रिस्टलों और तिब्बती मूंगों से बनी थीं। उसका सिर मेरे कंधे पर टिका हुआ था; उसके उलझे हुए बाल मेरी त्वचा को छू रहे थे; उसके शरीर की गर्मी, जो उस समय तेज़ बुखार की तरह बढ़ रही थी, मेरी त्वचा के माध्यम से प्रसारित हो रही थी।

साँपों की जोड़ी ने अपनी स्थिति बदल ली थी और वे हमारे शरीरों को और कसकर लपेट रहे थे। उसके शरीर के तेज़ बुखार ने मुझे पसीने से भिगो दिया, लेकिन मैंने अचेत होने का विचार छोड़ दिया। मुझे पता था कि अंत अब अधिक दूर नहीं था।

मैं आ रहा हूँ

"नहीं; अब बहुत दूर नहीं। मैं निकट आ रही हूँ। मैं आ रही हूँ। लेकिन यह अंत नहीं है। यह केवल एक आरंभ है। यह एक ऐसा आरंभ है जिसके लिए जीवन भर की तैयारी और जन्म-जन्मांतर के अनेक प्रयास केवल एक लंबी श्रृंखला की कड़ियाँ प्रतीत होते हैं।

"वह जीवित रहता है जो यह जानता है कि कब और कैसे छोड़ना है। मृत्यु ही सच्चे जीवन और जीवन के सत्य को उजागर करती है। जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह शाश्वतता का आरंभ है। यह महान अज्ञात की यात्रा के लिए सबसे गंभीर क्षण है। इस क्षण शोक मत करो। इस क्षण को केवल आनंद, सहानुभूति, शुभेच्छा और 'कोई पुनरागमन न हो' की कामना से भर दो। मुझे पुनः आने की कामना मत करो।

"मैंने कहा कोई पुनरागमन नहीं। फिर भी, हमेशा एक प्रकार की वापसी होती है, जो आत्मिक होती है। आध्यात्मिक शक्ति सदैव एक आशीर्वाद, एक कृपा के रूप में उपस्थित रहती है।

"यह मन जो इच्छाओं और निराशाओं का भंडार है, शरीर को रोगग्रस्त बनाता है। मुक्त होने का अर्थ है इस मन से मुक्ति। एक मन-भारित आत्मा ही पीड़ित जीव है; और मन से मुक्त आत्मा ही शाश्वत मूल्यों की आत्मा, ब्रह्मांडीय आत्मा है। इसकी कोई व्यक्तिगत पहचान नहीं होती। लेकिन जब कोई व्यक्ति खोजता और प्रार्थना करता है, जब कोई समर्पित होकर सहायता की याचना करता है, तो वही आत्मा उत्तर देती है, लेकिन एक व्यक्तिगत रूप में।

"कोई देखने का बिंदु नहीं होता; कोई समय का क्षण नहीं होता; कोई संचार नहीं होता, सिवाय एक पहचाने गए व्यक्तित्व के माध्यम से। यही कारण है कि भक्त उन मुक्त आत्माओं को देख और संवाद कर सकते हैं, जो संवाद के लिए समझने योग्य रूपों में प्रकट होती हैं।

"मैंने कहा कोई पुनरागमन नहीं। फिर भी, जब भी तुम्हें आवश्यकता होगी—और कामना है कि तुम्हारी आवश्यकताएँ तुम्हारे सोचने से पहले ही समाप्त हो जाएँ—जब भी तुम्हें इस 'दूसरे मैं' की आवश्यकता होगी, वह आत्मा, जो सभी की सहायता करती है, तुम्हारे सामने एक पहचाने गए रूप में प्रकट होगी। यह मुक्ति में किसी बाधा का संकेत नहीं है। यह वास्तव में मुक्ति का ही संकेत है। केवल मुक्त आत्माएँ ही प्रकाशमय रूप में प्रकट होकर प्रार्थनाओं का उत्तर दे सकती हैं। इस दिव्यता को प्राप्त करने के लिए स्वयं को सदैव शांत, स्वच्छ, पवित्र और सरल बनाए रखना आवश्यक है। सरलता अधिक शीघ्रता से आकर्षित करती है, जबकि जटिलता और औपचारिकता नहीं।"

## जहाँ इसे जाना है

"शीघ्र ही यह सब समाप्त हो जाएगा। तब यह शरीर तुम्हारे लिए एक भार बन जाएगा। इसे वहाँ ले जाओ जहाँ इसका स्थान है। मणिकर्णिका, अग्नि और राख के हवाले, गंगा की धारा में, जो खुले समुद्र की ओर बहती है।

"श्मशान पर तुम्हारी मौसी को सब जानकारी है। वह तैयार हो रही है। वह चिता की तैयारी में व्यस्त है। तुम इस शरीर को त्रिपुरा-भैरवी गली से ले जाओ। मानस कुंड पर इसे थोड़ा विश्राम दो। फिर मणिकर्णिका गली के अंत तक बढ़ो, जहाँ सीढ़ियाँ दाएँ मुड़ती हैं। वहाँ मृत्यु पंजीकरण कार्यालय में सब कुछ तैयार मिलेगा। लेकिन यह सब केवल दो बातों के लिए। इन्हें ध्यान से समझ लो।

"इस शरीर को कोई अन्य हाथ नहीं छूएगा। केवल तुम और तुम ही इसे ले जाओगे। उस कोने को देखो। वहाँ दो बाँस और कुछ रस्सियाँ रखी हैं। मुझे वहाँ पड़े कपड़ों से ढक दो और शरीर को बाँसों से बाँध दो। फिर इन बाँसों को घसीटते हुए ले चलो। मैं हर कदम पर तुम्हारी सहायता करूँगी।"

उसने की भी।

"मुझे इस बार मरने दो," वह आगे बोली। "मैं तब समय का हो जाऊँगी। तुम मुझे पंचतत्वों को सौंप दोगे। न कोई भय, न कोई शोक। वादा करो?"

मुझे कोई उत्तर देने की आवश्यकता नहीं थी। मैंने शरीर को थाम लिया और वह पहला दिन याद आया जब उसने मुझे चतुषष्टि गली के शिव मंदिर में ले जाकर अपने ऊपर बैठाया था, अपने शरीर को एक आसन बनाकर।

साँप अदृश्य हो चुके थे; और मुझे लगा कि कमरा अचानक अनगिनत स्वरों की रोशनी से भर गया है, जो गा भी रही थी और उजागर भी कर रही थी। उत्तेजना की लहरें मेरी गहराइयों तक प्रवाहित हुईं, जिससे मेरी आत्मा उत्साह, विस्तार और गहराई से भर गई। मुझे लगा जैसे मैं अंतरिक्ष के अंतिम छोर पर सूर्य का पड़ोसी बन गया हूँ। मैंने अनगिनत आत्माओं को इस एक यात्रा करती आत्मा से शांति माँगते देखा और उसकी यात्रा से उत्पन्न ऊर्जा ने मुझे अद्वितीय प्रेरणा और उत्साह से भर दिया।

यद्यपि साँप अदृश्य हो चुके थे, मैंने उनकी कुंडलीबद्ध पकड़ को अपनी कमर और नाभि के नीचे महसूस किया। पेल्विक हड्डियों के दोनों ओर कंपन ने मेरी रीढ़ को विद्युतीकृत कर दिया; और बार-बार मैं उस स्थिति से बाहर कूदने को तत्पर था। लेकिन मैंने शरीर को त्वचा से त्वचा जोड़कर पकड़े रखा। इस स्वाधिष्ठान चक्र की हलचल ने मुझे अत्यधिक तीव्र गति से घूमती दुनिया को देखने पर विवश कर दिया।

बाहर एक मद्धिम चाँदनी प्रतीक्षा कर रही थी। खंडहर और मलबे के ढेर चंद्रमा पर स्थित पर्वतों की तरह दिखाई दे रहे थे, अनपहचाने, लेकिन महिमामंडित।

## एक देवी का जन्म

पूर्ण शून्यता के बिना वास्तविकता की अनुभूति नहीं हो सकती। मन की एक शून्यता होती है और चेतना की भी। एक बार जब यह अनुभूत होती है, तो इस शून्यता की पृष्ठभूमि के विरुद्ध इच्छित विषय वस्तु एक ठोस आकार ग्रहण करने लगती है। तभी और केवल तभी एक देवी जन्म लेती है और प्रकट होती है। क्योंकि यह किसी भी वर्णन से परे है, इस भावना को व्यक्त करने का एकमात्र तरीका प्रतीकों और संकेतों की भाषा का सहारा लेना है, अमूर्तता को इंगित करने के लिए अमूर्त अभिव्यक्तियों का उपयोग करना। ये मुद्राएँ, यंत्र, मंत्र, आसन, मंडल और निश्चित रूप से प्रतिमा हैं। लेकिन स्वयं देवी केवल मन की होती है, और केवल एक शून्य मन ही उसे धारण कर सकता है।

एक शून्यता धीरे-धीरे मुझ पर हावी हो गई। यह एक आकारहीन, सीमाहीन, बिना गंध, बिना स्पर्श, बिना ध्वनि और बिना रंग का शून्य था। अचानक मैंने केसरिया वस्त्रधारी देवी का प्रिय स्वरूप इस शून्य में विलीन होते देखा। वह कुछ समय तक एक सूक्ष्म आकार में तैरती रही, जब तक कि वह एक चाँद रहित उष्णकटिबंधीय आकाश में एक तारे के रूप में चमकने न लगी।

तब मुझे यह अहसास हुआ कि एक उज्ज्वल वस्त्रधारी और आभूषित, लालिमा से दमकती युवा देवी मुझ पर मुस्कुरा रही थी। उसकी भौहों के बीच उसका तीसरा नेत्र स्पष्ट रूप से चमक रहा था। मैंने इस रूप को देवी मातंगी के रूप में पहचाना, लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं उस प्रकाश बिंदु की खोज कर रहा था जो केसरिया वस्त्रधारी देवी थी। मेरी केसरिया वस्त्रधारी देवी।

"हाँ," एलएस की आवाज़ प्रतीत हुई, "यही सब होने वाला है। सब कुछ मैं हूँ; सब कुछ मुझमें था। तुम्हें अकेला छोड़ना न मेरा उद्देश्य है, न मेरी क्षमता। मैं यह कभी नहीं करूँगी। तुम जिन कष्टों से गुजरे हो, उससे निराश मत हो। सभी प्रकृतियाँ मेरी ही प्राकृतिक रूप हैं। तुम जिन कठिनाइयों और संघर्षों से गुजरे हो, उन्होंने तुम्हें ही सशक्त बनाया है, क्योंकि तुमने मुझसे संपर्क कभी नहीं खोया। कभी निराश मत होना। 'नो रिटर्न' का मार्ग आत्मा में कभी नहीं पाया गया है।"

अचानक मैंने उसकी आवाज़ गाते हुए सुनी। और मैं सुनता रहा, जब तक कि मैं उसके साथ न गाने लगा।

पूरे इस प्रार्थना और भजन के दौरान, मैं उसकी सभी निर्देशों का पालन करने में व्यस्त था। मैंने बाँस नीचे रखे। वे लाल रेशमी वस्त्रों से लिपटे थे। मैंने उसके शरीर पर सिंदूर मल दिया। मैंने मोतियों को व्यवस्थित किया। अंततः मैंने उसे बाँस की चिता पर लिटाया और रस्सियों से बाँध दिया। फिर मैंने इसे खींचने की पेशकश की। शरीर न केवल बहुत हल्का लगा, बल्कि ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं एक पहिए वाली गाड़ी खींच रहा हूँ। सफर सहज था, और दिशाएँ स्पष्ट।

अकेले मैंने मलबे के ढेर पर चढ़ाई की। जैसे ही मैंने शव को खींचा, कुछ ईंटें और मलबे गिरे और आवाज़ हुई, जिससे रात्रिचर पक्षी उड़ने लगे। मैं गलियों के अपेक्षाकृत समतल भाग में पहुँचा। वाराणसी जैसे शहर में, जहाँ प्रतिदिन अजीबोगरीब लोग अजीबोगरीब कार्यों में लगे रहते हैं, किसी ने ध्यान नहीं दिया कि मैं अकेले एक मृत शरीर को घसीट रहा था। किसी भी स्थिति में, रात के उस पहर में शायद ही कोई मेरे रास्ते में आया हो। किसी अज्ञात कारण से कुत्ते, जो मेरे साथ चल रहे थे, पूरे इस एकाकी सफर में कभी नहीं भौंके।

## आनंद स्वयं अपना पुरस्कार है

मैं अपने जीवन पर चिंतन कर रहा था। मैंने जाना कि मनुष्य के लिए किसी न किसी प्रकार की आध्यात्मिक साधना में संलग्न रहना कितना आवश्यक है। केवल एक आध्यात्मिक अनुशासन के प्रभाव में ही मनुष्य विश्व नाटक के परिवर्तनों का मूल्यांकन कर सकता है। मुझे महसूस हुआ कि शरीर की कोई भी अवस्था अपवित्र, मृत या नीरस नहीं हो सकती। कोई भी कर्म पूर्णतः शुद्ध या अशुद्ध, उचित या अनुचित नहीं कहा जा सकता। इन सभी भेदों से परे, शरीर एक आसन है, एक पीठ है परम तत्व का। यह इससे भिन्न हो ही नहीं सकता।

फिर ईश्वर में सदैव बने रहने में क्या आपत्ति हो सकती है? आत्मा के आह्वान के लिए विशेष तैयारी क्यों? विशेष रूप, विशेष मंदिर, विशेष संदेशवाहक की आवश्यकता क्यों? प्रत्येक स्थिति में, मनुष्य ईश्वर में ही स्थित है: इससे बचने का कोई उपाय नहीं। अंतर केवल इस मूल और अटल सत्य के प्रति हमारी अनुभूति में उत्पन्न होता है। कोई भी शारीरिक क्रिया वास्तव में अपवित्र, बुरी या पापपूर्ण नहीं होती। किसी कार्य को ऐसा कहने से पहले, यह शरीर में स्थित आत्मा को दूषित कर देता है, जो सभी विचारों और कर्मों का स्रोत है।

जो चीज देने और साझा करने से बढ़ती है, वह आनंद है; जो अपने आप में ही अपना पुरस्कार होती है, वह आनंद है; जो न केवल व्यक्ति को, बल्कि उसके समाज, उसके युग, उसके समय को भी उन्नत करती है, वह आनंद है। लेकिन जो एक निराशा की श्रृंखला, हताशा और असंतोष उत्पन्न करती है, उसे दुख कहा जाना चाहिए। निराशा पाप है, क्योंकि निराशा कोई गुण नहीं है। निराशा निषेधात्मक होती है, और निषेध पाप है। केवल सकारात्मक ही शुभ है, केवल सकारात्मक ही पुण्य है। पाप भय है; भय ही पाप है। भय की खोज कोई नहीं करता, फिर भी यह मन के गुप्त कोनों में पनपता है। निराशा भी ऐसी ही है—कोई इसे नहीं चाहता, फिर भी यह हमें घेर लेती है।

जब मनुष्य निराशा से लड़ता है, तो वह स्वयं को नष्ट करने का एक तरीका विकसित कर लेता है। लेकिन वह अपने भीतर से ही एक अन्य मार्ग निकाल सकता है, जिससे वह इस संकट का मुकाबला कर सके। यह मार्ग इस बात पर निर्भर करता है कि वह नकारात्मकता को हराने के लिए किस हद तक सही और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकता है। जब सही सकारात्मक तरीका मिल जाता है, तब यह माँ का आशीर्वाद प्रतीत होता है। इस शक्ति का गुणगान करो। उसकी स्तुति में गाओ। गाओ, गाओ, गाओ। भयभीत आत्मा गा नहीं सकती। पापी अपने आंतरिक अस्तित्व को प्रसन्न करने के लिए नहीं गा सकते। केवल वही लोग जो ईश्वर के प्रिय हैं, गाते और प्रार्थना करते हैं, चित्र बनाते हैं, सृजन करते हैं। ये सभी मातृ कृपा के संकेत और उपहार हैं।

## निरंतर गति उपलब्धियों की ओर ले जाती है

लेकिन मुक्त आत्मा अपने मार्ग के अंत तक नहीं पहुँची है; उसने केवल वास्तविक प्रारंभिक बिंदु को प्राप्त किया है। क्या वह वहीं रुक जाती है? क्या साक्षात्कार की अवस्था में श्वास को रोकना (कुंभक) उचित होगा?

नहीं! निरंतर गति ही उपलब्धियों की कुंजी है। दिव्य स्पंदन ही आनंद का सार है। मुक्ति की अवस्था से कोई पीछे नहीं हट सकता। उसे आगे और आगे बढ़ते रहना होता है, और सामान्य जन तक पहुँचना होता है। जनता प्रेरणा की प्रतीक्षा करती है। मुक्त आत्मा जनता को छोड़ नहीं सकती क्योंकि वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर चुकी है। कोई भी तब तक स्वतंत्र नहीं जब तक अंतिम व्यक्ति भी स्वतंत्र नहीं होता।

मैं त्रिपुरा भैरवी की गलियों से प्रार्थना गाते हुए और मुक्त आत्माओं के मार्ग पर विचार करते हुए गुज़रा। मैंने मानसा काली के मंदिर के प्रांगण में रुककर भैरव के आशीर्वाद का अनुभव किया।

## पानी ठंडा था

मैं मणिकर्णिका घाट पहुँचा। मौसी ने सब कुछ पहले से तैयार कर रखा था, और मुझे अपनी केसरिया वस्त्रधारी देवी को अग्नि को समर्पित करने में अधिक समय नहीं लगा।

सूर्योदय से पहले की ठंडी हवा ने मेरी चेतना को मोहित कर लिया। मैंने सोचा कि इस देवी के बिना संसार कैसा लगेगा। आग की लपटें उसके शरीर को अपनी तीव्र भूख से घेर रही थीं। मैं तब स्तब्ध रह गया जब दो बड़े साँप राख से ढकी रेत पर रेंगते हुए चिता के पास पहुँचे। वे जलते शरीर के चारों ओर लिपट गए। और मैंने केसरिया वस्त्रधारी देवी को देखा—बैठी हुई, दोनों हाथों में अग्नि के पात्र और एक पात्र सिर पर रखे हुए।

क्या मैं कोई भ्रम देख रहा था? क्या यह केवल मेरी इच्छाओं का एक चित्रण था? यदि ऐसा था, तो भी क्या? यह एक पवित्र अनुभूति थी, और इसका अपना एक संदेश था। वही संदेश मेरा पुरस्कार था।

मणिकर्णिका की मौसी ने कहा, "उसे ध्यान से देखो। वह तुम्हारी है, यदि तुम चाहो। वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकती।"

नहीं, यह केवल एक भ्रम नहीं था। वास्तव में, उसने मुझे कभी नहीं छोड़ा। जब मैं गुयाना के घने जंगलों में अपने परिवार के साथ एक निराशाजनक स्थिति में था, मैंने उसे काँगरुमा नदी के जल में मुस्कुराते हुए देखा था। एक और बार, जब मैं कंबोडिया के परित्यक्त जंगलों में शिव मंदिर के दर्शन के लिए अवैध रूप से प्रवेश कर चुका था, और जब मुझे लगा कि मैं

मर रहा हूँ, तब मैंने उसे देखा, जो मुझे एक पगडंडी पर बुला रही थी। और जब मैं आगे बढ़ा, तो एक बौद्ध भिक्षु मिला, जिसने मेरी जान बचाई।

फिर भी, यह अंत नहीं था। मैंने उसे फिर जापान के एक मंदिर के पास पहाड़ियों से निकलते हुए देखा। मैं केवल एक क्षण को रुका, और वह मेरे पास थी।

एक बार, काहिरा में, जब विमान देर से था और हमें कोई ठहरने का स्थान नहीं मिला, मैं नील नदी के किनारे खड़ा था। थका हुआ और असहाय महसूस कर रहा था। जब मैं कार में बैठा, तो मैंने उसे अपने पास देखा। और हमने सही स्थान पर विश्राम पाया।

सूरज की पहली किरणों तक शरीर जलता रहा। उसकी दिव्यता गंगा के दूसरी ओर के जंगलों से झलक रही थी। घाट स्नान करने वालों से भर गए थे। वाराणसी के हज़ारों मंदिरों की घंटियाँ बज उठीं।

नंगे पाँव, नंगे शरीर, मैं उस घाट तक गया, जहाँ वह शाम को बैठकर गाती थी। मैंने गंगा में प्रवेश किया।

पानी ठंडा था।

# शब्दकोष

1. आसन **(Asana):** ध्यान और साधना के लिए लंबे समय तक स्थिर बैठने की एक सुविधाजनक मुद्रा। यह शारीरिक 'व्यायाम' की एक श्रृंखला को भी संदर्भित करता है, जिससे शरीर को सहनशीलता और एकाग्रता के लिए सक्रिय और सक्षम बनाया जाता है।

2. अश्वत्थामान **(Asvatthämän):** महाभारत का एक पात्र, जिसने दिव्य अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आत्मोत्सर्ग करने का प्रयास किया।

3. अघोर **(Aghoras):** भैरव संप्रदाय का एक उग्र पंथ।

4. अर्हत **(Arhat):** एक बौद्ध संत।

5. अवलोकितेश्वर **(Avalokiteśvara):** तिब्बत में पूजित भगवान बुद्ध का एक रूप।

6. अभय मुद्रा **(Abhaya Mudra):** खुली दाहिनी हथेली जिसमें उंगलियाँ सीधी और ऊपर की ओर होती हैं, 'सुरक्षा' दर्शाने के लिए।

7. अनंत शयन **(Ananta Sayanam):** अनंत काल का शय्या (शिव या विष्णु के संदर्भ में प्रयुक्त)।

8. अस्मिता **(Asmi-tā):** 'अस्मि' का अर्थ 'मैं हूँ'; 'अस्मिता' का अर्थ 'अहंभाव' है, जो आत्मचेतना को सर्वोच्च अहंकार के रूप में बनाए रखता है।

9. अवतार **(Avatāra):** जीवन रूप में दिव्य अवतरण। जैन, बौद्ध और हिंदू विचारधारा में इसकी गहरी मान्यता है।

10. भैरव **(Bhairava):** तांत्रिक संत जो अपनी पवित्र जीवनशैली और साधना के लिए जाने जाते हैं।

11. ब्रह्म **(Brahman):** ब्रह्मांडीय चेतना, जो ब्राह्मण (विद्वान, संतुलित और ज्ञानयुक्त व्यक्ति) से भिन्न होती है।

12. भगीरथ **(Bhagiratha):** एक पौराणिक राजा, जिन्होंने हिमालय से गंगा को पृथ्वी पर लाने का प्रयास किया।

13. ब्रह्मचारी **(Brahmacharin):** संयम और आत्मसंयम का पालन करने वाला व्यक्ति।

14. बीज **(Bija):** 'बीज' का शाब्दिक अर्थ है 'बीज ध्वनि', जो ध्यान और साधना में दोहराने के लिए प्रयोग की जाती है।

15. बंधन **(Bandha):** शाब्दिक रूप से 'गाँठ'; तांत्रिक साधना में इसे विशेष आसन के रूप में प्रयोग किया जाता है, जिसमें पूर्ण आत्मनियंत्रण द्वारा चेतना को सर्वोच्च अवस्था तक पहुँचाया जाता है।

16. भद्रासन **(Bhadrasana):** एक योगासन, जिसमें क्रॉस-लेग होकर एड़ी को विपरीत जंघाओं के नीचे दबाया जाता है।

17. चित्त-शक्ति **(Cit-power):** चेतना की शक्ति।

18. छंद **(Chhanda):** लयबद्धता या काव्यगत प्रवाह।

19. चक्र **(Cakra):** तांत्रिक अनुष्ठानिक सत्र, जिसमें साधना हेतु पुरुष और स्त्री मिलकर ध्यान करते हैं।

20. दत्तात्रेय **(Dattatreya):** ऋषि अत्रि के पुत्र, जो महान तांत्रिक सिद्ध माने जाते हैं।

21. दुर्योधन **(Duryodhana):** महाभारत का प्रमुख विरोधी पात्र।

22. दशरथ **(Dasaratha):** भगवान राम के पिता।

23. दुर्गा **(Durga):** दस भुजाओं वाली देवी, जिन्होंने राक्षस महिषासुर का वध किया।

24. दुर्गा सप्तशती **(Durga Saptasati):** मार्कंडेय पुराण में वर्णित 700 श्लोकों का पवित्र ग्रंथ।

25. गृहस्थ **(Grhastha):** पारिवारिक जीवन अपनाने वाला व्यक्ति।

26. गीता **(Gita):** महाभारत के भीतर सम्मिलित 'ईश्वरीय गान', जो हिंदू आध्यात्मिकता में सर्वोच्च स्थान रखता है।

27. गति **(Gati):** गति या चाल।

28. गुण **(Gunas):** तीन प्राकृतिक अवस्थाएँ – (1) सात्त्विक (शुद्धता और ज्ञान), (2) राजसिक (सक्रियता और संघर्ष), (3) तामसिक (अलसीपन और अज्ञानता)।

29. गणेश **(Ganesa):** हाथी-शीर्ष वाले देवता, जो सफलता के प्रतीक हैं।

30. हठयोगी **(Hatha-yogi):** योग का अभ्यास करने वाला व्यक्ति, जो शरीर पर संपूर्ण नियंत्रण स्थापित करता है।

31. जप **(Japa):** किसी मंत्र या बीजाक्षर का बार-बार उच्चारण, जिससे ध्यान केंद्रित किया जाता है।

32. जीव **(Jiva):** शरीर में स्थित आत्मा, जिसे 'आत्मन' भी कहा जाता है।

33. कुंडलिनी **(Kundalini):** सुप्त चेतना की शक्ति, जो जागृत होने पर आत्मबोध कराती है।

34. कृष्ण **(Krsta):** महाभारत के नायक, जो बाद में एक पूजनीय देवता बने।

35. कुरुक्षेत्र **(Kurukshetra):** महाभारत का अंतिम युद्धक्षेत्र।

36. काली **(Kali):** समय की देवी, जिन्हें तांत्रिक परंपरा में पूजा जाता है।

37. लोटस **(Lotus):** सात चक्रों में अंतिम और उच्चतम चक्र – सहस्रार।

38. लिंगम **(Lingam):** शिव का प्रतीक, आमतौर पर पत्थर का बना होता है।

39. मंत्र **(Mantra):** आध्यात्मिक और तांत्रिक साधना में प्रयुक्त पवित्र ध्वनियाँ।

40. मंडल **(Mandala):** रंगों से बनाए गए जटिल आध्यात्मिक चित्र, जो ध्यान में सहायता करते हैं।

41. महाभारत **(Mahābhārata):** संस्कृत का सबसे लंबा महाकाव्य।

42. महायान **(Mahāyāna):** बौद्ध धर्म का एक प्रमुख संप्रदाय।

43. मुद्रा **(Mudra):** हाथ और उँगलियों के विशिष्ट इशारे, जो आध्यात्मिक संकेत देते हैं।

44. योग **(Yoga):** आत्मा और परमात्मा को जोड़ने की क्रिया।

45. यंत्र **(Yantra):** तांत्रिक साधना में प्रयुक्त विशेष ज्यामितीय चित्र।

46. यज्ञ **(Yajña):** अग्नि को समर्पित पवित्र अनुष्ठान।

यह शब्दकोष योग, तंत्र, हिंदू और बौद्ध आध्यात्मिकता से संबंधित गहरे अर्थ प्रदान करता है।

# उपाख्यानों की सूची

यहाँ दी गई घटनाओं (Anecdotes) की सूची उनके शीर्षकों के साथ प्रस्तुत है:

यह सूची कथाओं और अनुभवों का संग्रह है जो आध्यात्मिक, रहस्यमय, और दार्शनिक जीवन दृष्टिकोण को प्रकट करती हैं। इन कथाओं के माध्यम से लेखक ने जीवन, मृत्यु, आध्यात्मिक साधना, और मानवीय भावनाओं को गहनता से चित्रित किया है।

# संबंधित रुचि की पुस्तकें

संबंधित रुचि की पुस्तकें

1. शाक्त धर्म का इतिहास - नरेंद्र नाथ भट्टाचार्य
2. शाक्त हिंदू धर्म में मिथक**,** पंथ और प्रतीक - भारतीय मातृ देवी का अध्ययन - वेन्डेल चार्ल्स बीन
3. शैववाद और फालिक विश्व **(2** खंड**)** - वाराणसी पुनर्खोज - बी. भट्टाचार्य
4. शाक्त साधक - एक प्रारंभिक और तुलनात्मक अध्ययन - अर्नेस्ट ए. पावने
5. शक्ति की क्रांति - भारतीय उग्र देवी-देवताओं की उत्पत्ति और इतिहासलेखन - डोना जॉर्डन
6. तीन नगरों का रहस्य - हिंदू शाक्त तंत्र का परिचय - डगलस रेनफ्रू ब्रूक्स
7. श्रीमद देवी भागवत - स्वामी विज्ञानानंद
8. तंत्र योग - निक डगलस
9. तंत्र - उनका दर्शन और गूढ़ रहस्य - डी.एन. बोस (संपादक); संशोधित - हीरालाल हलदार
10. मंत्र का सिद्धांत और अभ्यास - मू-सैंग घिम

प्रकाशक**:**

मुनशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
www.mrmlbooks.com
**ISBN:** 978-81-215-0968-8 / 9788121509688

Books of related interest
History of the Sakta Religion
Narendra Nath Bhattacharyya
Myth, Cult and Symbols in Sakta Hinduism
A Study of the Indian Mother Goddess
Wendell Charles Beane
Saivism and the Phallic World, 2 vols.
Varanasi Rediscovered
B. Bhattacharya
The Saktas
An Introductory and Comparative Study
Ernest A. Payne
Sakti's Revolution
Origins and Historiography of Indic Fierce Goddesses
Donna Jordan
The Secret of the Three Cities
An Introduction to Hindu Sakta Tantrism
Douglas Renfrew Brooks
The Srimad Devi Bhagavatam
Swami Vijnanananda
Tantra Yoga
Nik Douglas
Tantras
Their Philosophy and Occult Secrets
D.N. Bose, ed.; Revised by Hiralal Haldar
The Theory and Practice of Mantra
Moo-Saeng Ghim
ISBN 978-81-215-0968-8
Munshiram Manoharlal
Publishers Pvt. Ltd.
New Delhi
www.mrmlbooks.com
₹ 795